हिन्दी उपन्यास कोश

[खंड १]

१८७०-१९१७

लेखक
गोपाल राय
एम० ए०, डी० लिट०
हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय

ग्रन्थ निकेतन, पटना-६



प्रथम संस्करण : दिसम्बर १९६८



मूल्य : तीस रुपये



प्रकाशक : ग्रन्थ निकेतन, रानीघाट, पटना-६



मुद्रक : रचना प्रेस, पटना-६

अद्वितीय सरलता और

विद्या के धनी

पूज्यचरण पं० जगन्नाथ राय शर्मा

को

पुरोवाक्

हिन्दी में 'कोश' का अर्थ 'शब्दार्थकोश' ही प्रचलित रहा है किन्तु 'हिन्दी उपन्यास कोश' जैसे ग्रन्थ कोश के अर्थ-विस्तार के निमित्त बन रहे हैं। 'हिन्दी उपन्यास कोश' को मैं उल्लेख्य और महत्वपूर्ण उपलब्धि मानता हूँ। इसमें सन् १८०० ई० से १९१७ ई० तक के हिन्दी उपन्यासों के लेखक, प्रकाशक, रचना-काल, प्रकाशन-काल एवं विषय का विवरण संकलित है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह विवरण किसी विधा के वैज्ञानिक अध्ययन के लिये कितना आवश्यक है।

हिन्दी में एक तो ग्रन्थकोशों का अभाव है और जो हैं भी उनकी प्रामाणिकता के विषय में विद्वान् आश्वस्त नहीं हैं। वस्तुतः ग्रन्थकोश का प्रणयन इतना कठिन और श्रमसाध्य कार्य है कि थोड़ी भी अनवधानता से बड़ी भूलें हो जाती हैं। मैं प्रस्तुत कोश की प्रामाणिकता के विषय में आश्वस्त हूँ क्योंकि डॉ० गोपाल राय की कार्य-पद्धति से परिचित हूँ। डॉ० राय ने जिस श्रम और निष्ठा से यह कोश तैयार किया है उसके लिये वे हिन्दी जगत् के साधुवाद के पात्र हैं। श्रम और निष्ठा के साथ उनमें उपन्यास साहित्य का वह व्यापक ज्ञान भी है जो ऐसे ग्रन्थ की प्रामाणिकता के लिये अपेक्षित है। मैं इस कोश के उत्तरार्ध की भी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिसमें १९१७ ई० के बाद के हिन्दी उपन्यासों का विवरण रहेगा।

मुझे विश्वास है कि यह अनन्यसाधारण कृति विद्वानों, अनुसन्धाताओं और प्रबुद्ध पाठकों के बीच समादृत होगी।

देवेन्द्रनाथ शर्मा

६-१२-६८

प्राक्कथन

आज से लगभग बारह वर्ष पूर्व, १९५७ ई० में, जब मैंने हिन्दी पाठकवर्ग के विकास और उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिन्दी उपन्यास के उद्‌गम और विकास के परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन आरम्भ किया तो मेरे समक्ष एक जटिल समस्या उपस्थित हुई। मैंने पाया कि हिन्दी में मौलिक और अन्य भाषाओं से अनूदित कथा-पुस्तकों की कोई सर्वांगपूर्ण, प्रामाणिक और वर्गीकृत तालिका उपलब्ध नहीं है, जिसके अभाव में जो 'प्रतिज्ञा' मेरे सामने थी, उसका सम्यक् निरूपण सम्भव नहीं था।

ज्ञान-विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में अनुसन्धान-कार्य में प्रवृत्त होने के लिए आधार-भूत सामग्री का प्रामाणिक संकलन, चयन और वर्गीकरण अनिवार्य है। साहित्यिक अनुसन्धान की आधारभूत सामग्री मूल ग्रन्थ हैं, अतः साहित्यविषयक शोध की दिशा में तब तक कोई प्रयत्न सम्भव ही नहीं है, जब तक आधारभूत मूल ग्रन्थों का प्रामाणिक पाठ-निर्धारण एवं रचित ग्रन्थों की प्रामाणिक एवं वर्गीकृत तालिकाएँ निर्मित न हो जाएँ। अँगरेजी और अन्य युरोपीय भाषाओं में विस्तृत, प्रामाणिक और वर्गीकृत पुस्तक-तालिकाएँ प्रस्तुत करने के अनेक श्लाघ्य प्रयत्न हुए हैं। परिणामस्वरूप उन भाषाओं में उच्चस्तरीय शोधकार्य सुकर है।

हिन्दी में इस प्रकार के बहुत थोड़े प्रयत्न हुए हैं, और जो हुए हैं, वे सर्वथा प्रामाणिक और विश्वसनीय नहीं हैं। परिणामतः हिन्दी के शोधकर्ता अँधेरे में तीर चलाने का प्रयास करते दीखते हैं। जिसको, जहाँ से, जो भी ग्रन्थ सुविधापूर्वक प्राप्त हो जाते हैं, उन्हीं को प्रतिनिधि रचना मानकर वह अपना शोधकार्य सम्पन्न कर लेता है। विस्तृत प्रामाणिक तालिकाओं के न रहने से हिन्दी में प्रस्तुत अधिकांश शोधप्रबन्ध सामान्य कोटि के समीक्षाग्रन्थ बन कर रह जाते हैं।

इस अभाव ने मुझे इस दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा दी। लगभग चार वर्षों तक मैं आर्यभाषा पुस्तकालय (नागरी प्रचारिणी सभा), काशी, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता, चैतन्य पुस्तकालय, पटना, पटना कॉलेज और पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय, पटना तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना में संगृहीत कथापुस्तकों की छानबीन करता रहा। मैंने उक्त पुस्तकालयों में उपलब्ध समस्त कथापुस्तकों के आवरणपृष्ठों एवं मुखपृष्ठों तथा भूमिकाओं की प्रतिलिपियाँ तैयार कीं, जो मेरे पास सुरक्षित हैं। इस प्रसंग में एक कठिनाई यह सामने आयी कि अनेक प्राचीन कथापुस्तकों के आवरणपृष्ठ, मुखपृष्ठ और भूमिकाएँ नष्ट हो गयी हैं। फलस्वरूप उन पुस्तकों से सम्बद्ध सूचनाएँ नहीं मिलतीं। कई पुस्तकालयों में ग्रन्थों की तुलना करने से उक्त बाधा एक सीमा तक दूर हुई; किन्तु, फिर भी, कुछ ग्रन्थ ऐसे रह गये जिनके सम्बन्ध में प्रामाणिक सूचनाएँ उपलब्ध न हो सकीं। तब मैंने एक अन्य साधन की शरण ली और तत्कालीन पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित पुस्तक-समीक्षाओं और विज्ञापनों से कथापुस्तकों से सम्बद्ध सूचनाएँ संकलित

करना आरम्भ किया। इस प्रसंग में मैंने 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', 'हिन्दी प्रदीप', 'सार सुधानिधि', 'बिहार बन्धु', 'भारतेन्दु', 'धर्म दिवाकर', 'रसिक पंच', 'देवनागर', 'सरस्वती', 'मर्यादा', 'नागरी पचारिणी प्रत्रिका', 'नागरी प्रचारक', 'इंदु', 'नागरी हितैषिणी', 'निगमागम चंद्रिका', 'भारत भविष्य', 'प्रभा', 'प्रताप', 'आर्य महिला', 'गंगा', 'कल्पवृक्ष', 'चाँद', 'अग्रवाल', 'अबला हितकारक', 'आत्मविद्या', 'आर्य', 'आशा', 'उपन्यास सागर', 'उषा', 'औदुंबर', 'कथामुखी', 'कर्मयोगी', 'माधुरी', 'मतवाला', 'विशाल भारत', आदि के आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, चैतन्य पुस्तकालय, पटना और बिहार राष्ट्रभापा परिषद् पुस्तकालय में उपलब्ध सभी अंको की छानबीन की और जो भी कथापुस्तकविषयक समीक्षा या विज्ञापन मिले, उन सबकी प्रतिलिपि कर ली। अन्ततः मैंने पुस्तकों के मुखपृष्ठों, आवरणपृष्ठों, भूमिकाओं, पुस्तक समीक्षाओं और विज्ञापनों की सहायता से हिन्दी कथा साहित्य की विवरणात्मक तालिका निर्मित की, जो इस ग्रन्थ के रूप में आपके सामने है। प्रस्तुत खंड में केवल १८०० से लेकर १९१७ के बीच रचित-प्रकाशित कथापुस्तकों की सूचना दी गयी है। दूसरे खंड में, जो निकट भविष्य में प्रकाशित होनेवाला है, १९१८ से १९३६ के बीच प्रकाशित उपन्यासों का विवरण है।

इस विवरणात्मक तालिका में कथापुस्तकों का विवरण जिस पद्धति पर दिया गया है, उसका उल्लेख आवश्यक है। पहले प्रेमचन्दपूर्व युग के समस्त कथा साहित्य को तीन युगों में——(१) किस्सा कहानियों का युग (१८०१-१८६९), (२) हिन्दी उपन्यास का उद्भव और शैशवकाल (१८७०-१८८९) और (३) प्रेमचन्दपूर्व युग (१८९०-१९१७)——विभाजित किया गया है। तत्पश्चात् मौलिक और अनूदित कथा-पुस्तकों को अलग अलग कर लिया गया है। तदनन्तर मौलिक और अनूदित दोनों प्रकार की कथापुस्तकों को विषय की दृष्टि से कतिपय वर्गों में विभाजित कर प्रत्येक वर्ग की कथापुस्तकों का विवरण——पहले प्रमुख लेखकों और तदुपरान्त अन्य फुटकल लेखकों और उनकी कृतियों का——दिया गया है। विवरण में ग्रन्थ के लेखन-काल, प्रथम प्रकाशन-काल (पत्र-पत्रिकाओं में धारावाहिक रूप में तथा पुस्तक रूप में), लेखक या अनुवादक, प्रकाशक, पृष्ठसंख्या, मूल्य, विषय, कथा-संक्षेप (प्रायः) और उसके अन्य संस्करणों के प्रकाशन-काल तथा प्रकाशक आदि से सम्बद्ध सूचनाएँ दी गयी हैं। सूचनाओं की प्रामाणिकता के लिए——इसलिए भी कि प्राचीन पुस्तकों के मुखपृष्ठों के दीमकों का आहार बन जाने या पाठकों के हाथों नष्ट हो जाने के बाद, जिसकी सम्भावना पूरी है, ये प्रतिलिपियाँ ऐतिहासिक महत्त्व की सिद्ध होंगी——पादटिप्पणियों में प्रत्येक कथापुस्तक का प्राप्ति-स्थान तथा उसके मुखपृष्ठ या आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि, ज्यों की त्यों, दे दी गयी है। जहाँ पुस्तकों के मुखपृष्ठ या आवरणपृष्ठ प्राप्त नहीं हो सके हैं वहाँ प्रदत्त विवरणों की प्रामाणिकता अन्य स्रोतों से सिद्ध की गयी है।

इस प्रकार इस ग्रन्थ में हिन्दी कथा साहित्य की यथासम्भव प्रामाणिक विवरणात्मक तालिका निर्मित करने का प्रयत्न किया गया है। सम्भव है कि पूरी सतर्कता

बरतने पर भी इस ग्रन्थपुटी में यत्र-तत्र त्रुटियाँ रह गयी हों, फिर भी यह मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि एक साथ इतने उपन्यासों का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करनेवाला यह पहला कोशग्रन्थ है।

इस प्रसंग में केवल एक ही ग्रन्थ का—डा० माताप्रसाद गुप्त कृत 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' का—नाम लिया जा सकता है। इस सन्दर्भ ग्रन्थ में १८६७ ई० से लेकर १९४२ ई० के बीच प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की विषयक्रम, तिथिक्रम और लेखकक्रम से तालिकाएँ प्रस्तुत की गयी हैं; किन्तु जहाँ तक कथा-साहित्य विषयक विवरणों का प्रश्न है, 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में प्रदत्त सूचनाएँ अपर्याप्त और अनेकत्र अप्रामाणिक तथा भ्रामक हैं। डॉ० गुप्त द्वारा प्रदत्त सूचनाओं का आधार बहुत प्रामाणिक नहीं है। उन्होंने गजटों में प्रकाशित त्रैमासिक सूचियों के आधार पर पुस्तकों के प्रकाशन काल तथा विषय सम्बन्धी सूचनाएँ दी हैं, जो सदा निर्भ्रान्ति और प्रामाणिक नहीं होतीं। प्रस्तुत ग्रन्थ में अधिकतर प्रत्यक्ष प्रमाणों को आधार बनाया गया है। अधिकतर सूचनाएँ पुस्तकों के मुखपृष्ठ से ली गयी हैं। अप्रत्यक्ष स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं की प्रामाणिकता भी जाँच ली गयी है। एक और बात। जहाँ 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में १९१७ ई० के पूर्व प्रकाशित केवल (लगभग) ३०० मौलिक और ६० अनूदित कथापुस्तकों की ही सूचना दी गयी है वहाँ प्रस्तुत ग्रन्थ में ५८० मौलिक और ४४० अनूदित कथापुस्तकों से सम्बद्ध सूचनाएँ संकलित की गयी हैं। साथ ही 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में कथा-पुस्तकों के प्रकाशन-काल, विषय, लेखक, प्रकाशक और मौलिकता-अमौलिकता के सम्बन्ध में भी अनेक भ्रामक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। प्रस्तुत प्रबन्ध में हिन्दी पुस्तक साहित्य की भ्रान्तियों का यथास्थान उल्लेख कर उनके निराकरण का प्रयत्न किया गया है।

मुझे आशा है, इस कोशग्रन्थ से हिन्दी उपन्यास साहित्य के अध्येताओं और शोधार्थियों की बहुत सी मुश्किलें आसान हो जाएँगी और भावी शोध तथा समालोचना का मार्ग प्रशस्त होगा।

इस अवसर पर पूज्य चरण आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के चरणों में प्रणति अर्पित करने की इच्छा स्वभावतः बलवती हो उठती है। इस कार्य से उन्हें कितनी प्रसन्नता है, यह मैं ही जानता हूँ। आचार्य शर्मा इस प्रकार के ठोस और आधारभूत कार्यों को प्रोत्साहन ही नहीं देते, उनके निर्देशन में पटने से कई ऐसी साहित्यिक योजनाएँ सम्पन्न होने की प्रक्रिया में हैं जो भावी शोध और समालोचना की नींव बनेंगी। मैं स्वयं यह कार्य आचार्य जी की प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता से ही कर सका हूँ, एतदर्थ उनका चिर आभारी हूँ।

पूज्यचरण आचार्य पं० जगन्नाथ राय शर्मा को यह ग्रन्थ सादर समर्पित है। उनसे मैंने कितना और क्या पाया है, इसका लेखा जोखा लेने का यह उपयुक्त अवसर नहीं है। मैं आज जो भी हूँ, उनके स्नेह और कृपा से। उन्हें मेरा सादर नमन।

प्रस्तुत ग्रन्थ के निर्माण में मुझे आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना, चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी, सम्मेलन पुस्तकालय, इलाहाबाद, पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय, पटना, सिन्हा पुस्तकालय, पटना तथा माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना के कर्मचारियों और अधिकारियों का अमूल्य सहयोग मिला है। मैं उनके समक्ष कृतज्ञतावनत हूँ। पटना विश्वविद्यालय का भी, जिसने इस कार्य के लिए समय समय मुझे आर्थिक अनुदान दिया है, मैं आभारी हूँ।

मेरे प्रिय शिष्य सकलदेव शर्मा ने ग्रन्थ के अन्त में दी गयी सूचियों के निर्माण में मेरी पूरी सहायता की है। पर उन्हें धन्यवाद देना अपने किसी अंग को धन्यवाद देना है। अन्त में मैं श्री गिरीश प्रसाद सिंह, (संचालक, ग्रन्थनिकेतन, पटना एवं रचना प्रेस, पटना) के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने दिनरात एक कर तथा अनेक असुविधाएँ उठाकर इस ग्रन्थ को इतने सुन्दर और सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित किया है।

२ दिसम्बर, १९६८ गोपाल राय

संकेत और संक्षेप

तलटिप्पणियों में निर्दिष्ट पुस्तकों के आगे दिये हुए कोष्ठकान्तर्गत अंक सन्दर्भ-ग्रन्थ-तालिका की पुस्तकों और पत्रिकाओं को सूचित करते हैं।

नवीन संस्करण	न० सं०
अनुवादक	अनु०
आर्यभाषा पुस्तकालय (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)	आ० भा० पु०
चैतन्य पुस्तकालय, पटनासिटी	चै० पु०
तृतीय संस्करण	तृ० सं०
द्वितीय संस्करण	द्वि० सं०
पटना कॉलेज पुस्तकालय	प० का० पु०
पटना विश्वविद्यालय, पुस्तकालय	प० वि० पु०
पृष्ठ संख्या	पृ० सं०
प्रथम संस्करण	प्र० सं०
प्राप्ति स्थान	प्रा० स्था०
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना	बि० रा० भा० प० पु०
माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय पटना-६	मा० पु० पटना
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता	रा० पु०
सम्पादक	सं०
हिन्दी पुस्तक साहित्य	हि० पु० सा०

विषय सूची

किस्सा कहानियों का युग

हिन्दी उपन्यास : उद्भव और शैशव

मौलिक कथा पुस्तकें

अनूदित कथा पुस्तकें

भोज प्रबन्ध सार ४३, नीति दीपिका ४४, मनोहर उपाख्यान ४४, आख्यान मंजरी ४५, रीति रत्नाकर ४५, मोहिनीचरित्र ४५, मोहिनी चरित्र अर्थात् फसाने अजायव ४६, कादम्बरी ४७, सीता वनवास ४७, सुजन विनोद ४९, सुवुध्या-व्याख्यान ४९, मालती माधव की कथा ४९, स्त्री विचार २९, मनसुखी और सुन्दर सिंह का वृत्तान्त ५०, अलिफ लैला ५०, चतुर सभा ५१, गुलसनोवर ५१, सैंडफोर्ड और मरटन ५२, त्रियाचरित्र ५२, नीति कथा संग्रह ५३, अमीर हमजा की दास्तान ५३, वंगविजेता ५३, नल चरितामृत अर्थात् ढोला मारू ५४, वीरवरनामा ५४, अपूर्व कारावास ५४, एक जोड़ा अँगूठी ५४, कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश ५४, मधुमती ५८, दुर्गेशनन्दिनी, ५८ हास विलास ५८, सतीत्व रक्षिणी ५९, टेल्स फ्रॉम शेक्सपीयर (खंड १) ५९, राधारानी ५९, मरता क्या न करता अर्थात् रामेश्वर का अदृष्ट ६०, टेल्स फ्रॉम शेक्सपीयर (खंड २) ६०, वाराह पुराण भाषा (पूर्वार्ध) ६०, सालिगा सलैवृज ६१, किस्सा शाहरूम ६१, भाषा रामायण, ६१, हर्षचरित्र ६२, सभा शीरी फरहाद ६२, मनफूल की कहानी ६२, छवीली भटियारी ६३, शिवपुराण भाषा ६३, सौन्दर्यमयी ६३, रामकथा (खंड १) ६३, वालवोध रामायण ६४, वृहन्नारदीय पुराण भाषा ६४, संसार सुख ६५, रणधीर सुन्दरी उपन्यास ६५, महाभारत (आदि पर्व) ६५, हिकायते अकवर ६६, राजा भोज का स्वप्न ६६, वेनिस का वाँका ६६, धोखे की टट्टी ६७, द्रौपदी सत्यभामा ६७, लावण्यमयी ६७, महाभारत भाषा ६७, ठग वृत्तान्तमाला ६८, महारामायण ६८, श्रीमद्वाराण पुराण ६८, प्रेममयी ६८, छल दर्पण ६९

प्रेमचन्दपूर्व युग
(मौलिक कथा पुतस्कें)

ऐयारी तिलस्मप्रधान रोमांस

देवकीनन्दन खत्री, चन्द्रकान्ता ७४, चन्द्रकान्ता सन्तति ७८, भूतनाथ ८२,

हरिकृष्ण जौहर, कुसुमलता ८४, भयानक भ्रम ८४, नारी पिशाच ८४, मयंक मोहिनी या मायामहल ८५, कमल कुमारी वा तिलस्म नीलम ८५, जादूगर ८५, निराला नकावपोश, भयानक खून ८६

निहाल चन्द वर्मा, मोतीमहल या लक्ष्मी देवी ८६, जादू का महल या रूपवती ८७,

अन्य ऐयारी प्रधान रोमांस

माया विलास अथवा सत्यजित प्रकाश ८७, कामिनी ८७, राजेन्द्र मोहिनी ८८, राजकुमारी ८८, आनन्द सुन्दरी ८८, चन्द्रभागा ८८, कटे मूड़ की दो दो वातें ८९, रमा या

अपराध प्रधान तथा जासूसी कथाएँ

गोपाल राम गहमरी

सच्चा मित्र या जिन्दे की लाश अथवा रहस्यमय गुप्तचर १५६, रंग में भंग १५६, बनारसी दुपट्टा या गुलरूजरीना १५६, एक औरत की वकालत या किस्सा दिलफरोश १५६, मधुपलतिका वा इश्क की आग १५६, प्रेम का फल या मिस जौहरा १५७, लैला मजनू १५७

उपन्यास

किशोरीलाल गोस्वामी

प्रणयिनी परिणय १५८, त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी १५८, स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी १५९, लीलावती १६०, चपला वा नव्य समाजचित्र १६१, चन्द्रिका वा जड़ाऊ चम्पाकली १६१, चन्द्रावली वा कुलटा कुतूहल १६१, तरुण तपस्विनी वा कुटीर वासिनी १६१, इन्दुमती वा वन विहंगिनी १६२, पुनर्जन्म वा सौतियाडाह १६२, माधवी माधव वा मदन मोहिनी १६२, अँगूठी का नगीना १६२

भुवनेश्वर नाथ मिश्र, घराऊ घटना १६३, बलवन्त भूमिहार १६४

अयोध्या सिंह उपाध्याय, प्रेमकान्ता १६४, ठेठ हिन्दी का ठाट १६५, अधखिला फूल १६५

व्रजनन्दन सहाय, राजेन्द्रमालती १६५, अद्भुत प्रायश्चित्त १६७, सौन्दर्योपासक १६८, आरण्यबाला १६९

मेहता लज्जाराम शर्मा

धूर्त रसिकलाल १६९, स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी १७०, हिन्दू गृहस्थ १७०, आदर्श दम्पती १७१, सुशीला विधवा १७१, बिगड़े का सुधार अथवा सती सुखदेवी १७१, विपत्ति की कसौटी १७१, आदर्श हिन्दू १७२

गोपाल राम गहमरी, देवरानी जेठानी १७२, तीन पतोहू १७२

चन्द्रशेखर पाठक, रमाबाई १७३, वारांगना रहस्य वा स्त्री वैचित्र्य १७३,

ईश्वरी प्रसाद शर्मा, हिरण्यमयी १७४, स्वर्णमयी वा जैसी करनी वैसी भरनी १७५, नलिनी बाबू १७५, मागधी कुसुम वा सरला सुन्दरी १७५

फुटकल उपन्यास

सुहासिनी १७५, सौदामिनी १७६, सौ अजान एक सुजान १७६, सच्चा मित्र १७७, हमारी घड़ी १७७, रसातल यात्रा उपन्यास १७७, धर्मराज की कहानी १७७, चन्द्रकला १७८, हुकुम देवी १७८, वचन तरंगिणी १७८, समुद्र में गिरीन्द्र १७८, पुष्पवती १७९, चतुरा अर्थात् साधवी सुरेन्द्र १७९, सुवामा १७९, ललित लता १७९, भाग्य की परख १८०, इलामती १८०, नीलमणि १८०, राजकुमारी चन्द्रमुखी १८०, अपूर्व संन्यासी १८१, सरस्वती १८१, वसन्त मालती १८१, जन्माष्टमी १८२, दीनानाथ वा गृह चरित्र १८२, सुधामुखी १८२, उपन्यास भंडार १८२, अपना यथार्थ हक १८२, सत्कुलाचार १८२, शीला १८२, कर्कशा सास १८३, सती सुखदेई १८३,

सामान्य उपन्यास

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, राधारानी २५०, देवी चौधरानी २५१, इन्दिरा २५३, युगलांगुलीय २५४, कृष्णकान्त का दानपत्र, २५५, कपाल कुण्डला २५६, आनन्द मठ २५७, विषवृक्ष २५८, मृणालिनी २५९, रजनी २६०, बंकिम ग्रन्थमाला २६१

एक अज्ञातनाम लेखक, शिक्षिता हिन्दूबाला २६२, गंजा गोपाल २६३, चन्द्रभूषण चरितामृत २६३, राजलक्ष्मी २६३, शशि महल २६४, काला चाँद २६४

योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, कुली कहानी २६५, वनकन्या २६५, मानवती २६५

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मुकुट २६६, राजर्षि २६६, नौका डूबी २६७, आँख की किरकिरी २६७, बऊ ठाकुरानीर हाट २६८

दामोदर मुखोपाध्याय, राजभक्ति २६८, मृण्मयी २६९, दो बहन २६९, नवाब नन्दिनी वा आयेशा २७०, स्वर्ण कमल वा भयानक भंडाफोड़ २७०, शरद कुमारी २७०

रमेशचन्द्र दत्त, संसार २७१, समाज २७१, प्राणनाथ २७२, सुधा २७२

सुरेन्द्रमोहन भट्टाचार्य, प्रतिमा २७२, मिलनमन्दिर २७३, प्रेत तर्पण २७४

अन्य फुटकल अनूदित उपन्यास

पुलिस वृत्तान्त माला २७४, विरजा २७४, स्वर्ण बाई २७५, सुख सर्वरी २७५, स्वर्णलता २७५, चतुर चंचला २७६, नये बाबू २७६, उथेलो २७६, अमला वृत्तान्त माला अथवा समरे दियानत २७७, संसार दर्पण२७७, महाश्वेता२७८, वीरेन्द्र२७८, चन्द्रकला२७८, मधुमालती २७८, कुलटा २७८, दलित कुसुम २७८, सास पतोहू २७९, रमा और माधव २७९, मनहरण २७९, कपटी मित्र २८०, भाग्य का फेर २८०, प्रणयी माधव २८०, भूतो का मकान २८०, श्री या अवश्य माननीय २८१, विचित्र स्त्री चरित्र २८१, सत्यवती या हीरे की अँगूठी २८२, बदरुन्निसा की मुसीबत २८२, स्वर्णबाई २८२, माया २८३, गिरिजा २८३, वीर बालिका २८३, कथा सरित्सागर २८३, दशकुमार चरित २८४, फूल में काँटा २८४, याकूती तख्ती वा यमज सहोदरा २८४, प्रायश्चित्त तथा अपूर्व सम्मिलन २८५, परिणाम २८५, सती उपन्यास २८५, कौशल किशोर २८५, प्राणघातक माला २८६, वसन्तलता २८६, कर्मवीर २८७, जाली कुंजलाल २८७, दिया तले अँधेरा २८७, हेमलता २८८, अर्थ में अनर्थ या प्रवाल दीप २८८, असभ्य रमणी २८८, निर्मला की कथा २८९, चुड़ैल २८९, विमला २८९, पार्वती और यशोदा २९०, चाची २९०, लक्ष्मी बहू २९०, स्वर्णलता २९१, भैरवी अर्थात् वीर कुमारी २९१, चोर सुलतान २९१, रोमियो जुलिएट २९२, वीर हरि सिंह २९२, रमाबाई २९२, युगल मालती २९२, पारस्य उपन्यास २९२, भूलभुलैया या धोखे की टट्टी २९३, प्रतिमा २९३, राबिन्सन क्रूसो २९४, वनवासिनी २९४, सती लक्ष्मी २९५, शेक्सपीयर ग्रन्थावली २९५, लवंगलता २९५, सुरेन्द्र सुन्दरी २९५, सरस्वती २९६, हृदय कंटक २९६, अभागे का भाग्य २९६, गैलबाला अथवा आदर्श बहू २९७, कुमारी २९७, शान्तिकुटीर २९७, मँझली बहू २९८, अन्नपूर्णा का मन्दिर २९८, सावित्री २९८, मन्दार कुसुम २९८, दिशाभूल २९९, राजपथ का पथिक २९९, जापान रहस्य २९९, कालग्रास या अद्भुत हरकारा ३००, शारदा ३००, छोटी बहू ३०१,

अनूदित ऐतिहासिक उपन्यास

फुटकल अनूदित ऐतिहासिक उपन्यास

अनूदित धार्मिक-पौराणिक कथाएँ

स्त्री शिक्षा प्रधान पुस्तकें

प्रथम अध्याय

किस्सा कहानियों का युग

१८००-१८६६

किस्सा कहानियों का युग

(१८००-१८६६)

कहानी सुनने-सुनाने की अभिलाषा मनुष्य की आदिम प्रवृत्तियों में से एक है, और उसकी मौखिक एवं लिखित परम्परा का इतिहास बहुत लम्बा तथा रोचक है। विस्तार-भय से हम संस्कृत कथा-साहित्य की व्यापक और समृद्ध परम्परा का विवरण न देकर, केवल लिखित हिन्दी गद्यकथा की परम्परा का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य उन्नीसवीं शताब्दी की गद्यकथाओं का सविस्तर परिचय देना है।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व लिखित गद्यकथाओं के नाम पर, हिन्दी में, इनी गिनी पुस्तकें ही मिल पाती हैं। इस तरह की पहली गद्यकथा, सं० १६२७ वि० के लगभग किसी नन्ददास लिखित 'नासकेत पुराण भाषा' मानी जा सकती है।[1] संवत् १६८० वि० में जटमल कवि रचित 'गोरा बादल की बात' दूसरी गद्यकथा है।[2] इस पुस्तक में खड़ी बोली से मिलती हुई गद्यभाषा का प्रयोग हुआ है तथा गद्य के बीच बीच में खड़ी बोली के पद्य आये हैं। श्री हरिमोहन श्रीवास्तव ने राजस्थान में लिखित 'बातों' को कहानियाँ मानते हुए कुछ प्रमुख 'बातों', जैसे 'राणा उदै सिंह री बात', 'हाड़े सूरजमल री बात', 'राणा कथा', 'चितभर मिथा री बात', 'राव बी फोजी री बात', 'बाबूजी री बात', 'राव लूणाकरण री बात', 'जेसलमेर री बात', 'मोठा री बात' आदि का उल्लेख किया है, किन्तु इनका रचनाकाल उन्होंने नहीं दिया है।[3]

ब्रजभाषा गद्य में लिखित 'नासिकेतोपाख्यान' नाम की कथा भी, जिसके लेखक का नाम ज्ञात नहीं होता, प्राप्त होती है। इसका रचना-काल सं० १७६० के उपरान्त माना जाता है।[4] सं० १७६७ ई० के लगभग सूरति मिश्र ने संस्कृत की 'वेतालपञ्च-विंशति' के आधार पर ब्रजभाषा गद्य में 'बैताल पचीसी' की रचना की।[5] आक्सफोर्ड की बोडलियन लाइब्रेरी के प्राच्य हस्तलिखित ग्रन्थ भांडार में 'माक्समूएलर स्मारक' नामक शृंखला में 'पंचतंत्र', 'सिंहासन बत्तीसी' और 'शुकबहत्तरी' का एक संग्रह उपलब्ध है, जिसका प्रतिलिपि-काल सं० १७७६ वि० है।[6] सं० १८१८ वि० में लिखित पं० दौलतराम

---

१. मिश्रबन्धु, प्राचीन हिन्दी में गद्य, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १७, सं० ५, (नवम्बर १६१२, पृ० १२५-३७)

२. उपरिवत्

३. हरिमोहन श्रीवास्तव, मध्यकालीन हिन्दी गद्य, (६), पृ० ४७

४. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास (३), पृ० ४०५

५. उपरिवत्

६. मोती लाल गुप्त, ब्रिटेन के पुस्तकालयों में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ, हिन्दी अनुशीलन, वर्ष १४, अंक २, अप्रैल-जून १६६१ ई०, पृ० ४६

के रविषेणाचार्यकृत **जैन पद्मपुराण** के भाषानुवाद[१] का उल्लेख भी गद्यकथा के रूप में किया जा सकता है।

१९ वीं शताब्दी के पूर्व हिन्दी में लिखित गद्यकथाओं का साहित्य इतना अल्प है, इसे देखकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। इस समय तक गद्यकथा को साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग नहीं माना जाता था। इसका एकमात्र उद्देश्य मनोरंजन होता था। यह स्मरण रखना चाहिए कि उस समय तक भारत में मुद्रणयन्त्रों का प्रसार नहीं हुआ था और इस कारण सामान्य जनता के मनोरंजन के साधन के रूप में मुद्रित गद्यकथाओं का व्यापक और व्यावसायिक उपयोग सम्भव नहीं था। कथा सुनने-सुनाने की मौखिक परम्परा का प्रचलन सारे देश में खूब था। न केवल ग्रामवासी और साधारण स्तर के लोग कथा-वाचकों की धार्मिक कथाओं और कहानी कहने वालों की लोकप्रचलित कथाओं को सुनकर अपना मनोरंजन करते थे, वरन् राजदरबारों तक में किस्सागोई मनोरंजन का साधन बन चुकी थी। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "मुगल दरबार में किस्सागो नाम की एक विशेष प्रकार की कला का जन्म हो चुका था। मुगल काल के अन्तिम दिनों में तो किस्सागोई या दास्तानगोई एक पेशे का रूप धारण कर चुकी थी। किस्सागो लोग अवकाश के क्षणों में बादशाहों, नवाबों और अन्य रईसों का मनोरंजन किया करते थे। इन कहानियों का प्रधान विषय प्रेम हुआ करता था और अतिरंजित एवं आकस्मिक घटनाओं से वर्ण्य विषय को आकर्षक बनाने की चेष्टा भी होती थी। राजपूत दरबारों में भी इनका थोड़ा बहुत अनुकरण होने लगा, इसी कारण राजस्थानी भाषा में भी किस्सागोई का साहित्य बनता रहा।"[२]

१८ वीं शताब्दी के आते आते भारतवर्ष के एक बड़े भाग पर अँगरेजों का आधिपत्य हो चुका था। मुगल शासन की समाप्ति से किस्सागोई के पेशे को धक्का लगा, पर धनीमानी हिन्दू सामन्तों और बचे खुचे नवाबों के यहाँ यह परम्परा जीवित रही। सामान्य जनता तो कहानियों से अपना मनोरंजन पूर्ववत् करती ही रही। इसी समय देश में मुद्रण-यंत्र के प्रचलन से कथा-कहानियों के भविष्य का नवीन द्वार खुल गया।

मुद्रणयन्त्रों ने यह सुविधा प्रदान कर दी कि श्रोता को स्वयं कहानी (कथाकार या किस्सागो) के पास न जाना पड़े, बल्कि कहानी ही उसके हाथ में पहुँच जाए। कथा-कहानियों के मुद्रण-प्रकाशन में व्यावसायिक सफलता की अनन्त सम्भावनाएँ थीं, क्योंकि स्वभावतः इनके पाठक अधिक होते हैं। यही कारण है कि १९वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, मुख्यतः दो ही तरह की पुस्तकें छपी मिलती हैं: कथा-कहानी की पुस्तकें और धर्मप्रचार सम्बन्धी पुस्तिकाएँ। धर्मप्रचार सम्बन्धी पुस्तिकाएँ अधिकतर ईसाई धर्मप्रचारक प्रकाशित करते थे। इन पुस्तिकाओं के मुद्रण में पाठकों का उत्साह उतना नहीं था, जितना धर्मप्रचारकों का। ये पुस्तिकाएँ विदेशी सहायता से छपती थीं और अधिकतर मुफ्त वितरित की जाती थीं। इधर कथा-कहानियों की माँग हिन्दी पाठकों

---

१. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास (३), पृ० ४११

२. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य (८), पृ० ३६७

के बीच बहुत ज्यादा थी। इनके प्रकाशन में मुद्रणयन्त्रों के स्वामियों को लाभ ही लाभ था। परिणामतः १९वीं शताब्दी में ब्रजभाषा, संस्कृत और फारसी में लिखित अनेक कथा-कहानियों को खड़ी बोली में रूपान्तरित किया गया तथा अनेक मौखिक कथाओं को लिखित रूप मिला। प्रस्तुत परिच्छेद में हमें इस परम्परा का अवलोकन करना है।

१९वीं शताब्दी के प्रथम दशक में ही 'रानी केतकी की कहानी', 'सिंहासन बत्तीसी', 'बैताल पचीसी', 'प्रेमसागर', 'नासिकेतोपाख्यान' आदि कई गद्य कथापुस्तकें लिखी गयीं जो इस शताब्दी में बहुत लोकप्रिय हुई। आज भी हिन्दी में एक ऐसा पाठकवर्ग विद्यमान है, जो इन कहानियों को बड़े चाव से पढ़ता है। इन कहानियों में 'रानी केतकी की कहानी' इसलिए प्रथम उल्लेख्य है कि यह हिन्दी की प्रथम मौलिक गद्यकथा मानी जाती है।

रानी केतकी की कहानी

'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं सैयद इंशा अल्ला खाँ। 'रानी केतकी की कहानी' का ठीक रचना-काल ज्ञात नहीं है। श्री ब्रजरत्न दास के अनुसार [1] इसका लेखन-काल सं० १८६० वि० (सन् १८०३ ई०) के लगभग है। बाबू श्याम सुन्दर दास इसका रचनाकाल वि० सं० १८५६ और १८६५ के बीच मानते हैं।[2] सैयद इंशा अल्ला खाँ द्वारा लिखित प्रति का कहीं कोई उल्लेख नहीं प्राप्त होता, इस कारण इस कथा की ठीक रचना-तिथि आज तक ज्ञात नहीं हो पायी है। इस कथा को सर्वप्रथम मुंशी हरीराम पंडित ने देवनागरी में छापा था। यह संस्करण भी आज अलभ्य है। पर इसका उल्लेख 'रानी केतकी की कहानी' के दूसरे संस्करण में प्राप्त होता है, [3] पर मुद्रण-काल नहीं ज्ञात हो पाता। इसका दूसरा संस्करण 'पौष सुदी ईकम संवत् १९०३ वि०' (दिसम्बर १८४६ अथवा जनवरी १८४७ ई०) में श्री विष्णु नारायण पंडित द्वारा मुद्रित हुआ। इस प्रति की पूरी सूचना और इसके मुखपृष्ठ की पूरी नकल ब्रजरत्न दास ने अपनी पुस्तक 'इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी' में दी है।[4] यह कहानी तीसरी बार सन्

---

१. ब्रजरत्नदास; इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी (५)

२. रानी केतकी की कहानी (१०)।

३. "यह कहानी बहुत दिन पहिले मुंशी हरिराम पंडित जी ने देवनागरी अक्षर में छापी थी पर अब नहीं मिलती और बहुत लोगों को ठेठ हिन्दी बोली में इन दिनों कहानी पढ़ने की चाह रहती है इसलिए मुंशी जी की मूल कहानी को दूसरी बेर छ सौ चालीस पुस्तक छपवाया।"—रानी केतकी की कहानी, संवत् १९०३ पौष सुदी ईकम, के आवरणपृष्ठ से प्राप्त सूचना (ब्रजरत्नदास लिखित 'इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी' की भूमिका से उद्धृत]।

४. "कहानी रानी केतकी की ठेठ हिन्दुस्तानी भाषा में. जो आगे मुंशी हरीराम पंडित जी लखनऊ वासी ने संग्रह कियी थी सो अब कहीं देख नहीं पड़ती और गुणग्राहकों को ऐसे पदार्थ पढ़ने सुन्ने की बड़ी चाहत रहती है इसलिए श्रीयुक्त कृपाकर दयावर श्रीमधुसूदन जी जयपुर निवासी स्कूल बुक सुसैटी के ग्रन्थ शोधक और परम मित्र अति सुबुद्धि श्रीयुक्त लक्ष्मी नारायण पंडित इसटाम्प मुन्शी जी की इच्छा से श्री विष्णुनारायण पंडित ने मुद्रांकित करवाया। काश्मीरी यंत्रालय......संवत् १९०३, पौष सुदी ईकम।"—ब्रजरत्नदास लिखित 'इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी' की भूमिका से उद्धृत।

१८५२ ई० में बंगाल एसियाटिक सोसाइटी के जर्नल के इक्कीसवें भाग में-फारसी अक्षरों में, अँगरेजी अनुवाद के साथ अपूर्ण रूप में प्रकाशित हुई। जर्नल ऑफ एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के २४वें भाग में यह पूरी हुई।[1] तदनन्तर १८६७ ई० में **'हिन्दी सलेक्शन्स'** नामक पुस्तक में यह कहानी संक्षिप्त रूप में (पृ० १९६-१९८) प्रकाशित हुई।[2] १८७४ ई० में राजा शिव प्रसाद ने इसे अपने गुटके में **'कहानी ठेठ हिन्दी में'** शीर्षक से थोड़े परिवर्तन के साथ प्रकाशित किया।[3] १९०५ ई० में यह कहानी **उदैभान चरित** शीर्षक से ऐंग्लो ओरिएंटल प्रेस, लखनऊ द्वारा प्रकाशित हुई, जिसकी एक प्रति आर्य भापा पुस्तकालय काशी में उपलब्ध है। १९२५ ई० में बाबू श्याम सुन्दर दास ने दो प्राचीन प्रतियों के आधार पर इस कहानी का सम्पादन किया तथा यह पुस्तक नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित की गयी।[4] १९२८ ई० में बाबू ब्रजरत्न दास ने ६ प्राचीन प्रतियों के आधार पर 'रानी केतकी की कहानी' का नवीन सम्पादित संस्करण प्रकाशित कराया।[5]

'रानी केतकी की कहानी' के उपर्युक्त संस्करणों को देखने से सिद्ध होता है कि यह १९ वी शताब्दी की एक महत्त्वपूर्ण गद्यकथा समझी जाती थी और कदाचित् सामान्य जनता में इसका प्रचार भी बहुत था। किशोरी लाल गोस्वामी ने नवम्बर १९११ ई० की 'मर्यादा' मे प्रकाशित अपने 'सैयद इंशा अल्लाह खाँ' शीर्षक निबन्ध में लिखा था : "आज कल हिन्दी लेखक कदाचित् लल्लू लाल जी के 'प्रेमसागर' या इंशा अल्लाह खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' से पूरे परिचित न हों या उन्होंने इन्हें देखा भी न हो, पर आज से तीस चालीस वर्प पहले इन पुस्तकों का बड़ा प्रचार था, और ये स्कूलों में पढ़ाई जाती थी, जिन्हें पढ़कर लोग हिन्दी पढ़ना-लिखना सीखते थे। राजा शिवप्रसाद के पुराने गुटके में 'प्रेमसागर' के साथ साथ 'रानी केतकी की कहानी' भी संग्रह की गई थी, पर अब इधर कदाचित् हिन्दी जानने वालों में इस पुस्तक का नाम कम ही सुनाई देता होगा।"[6] इसके सं० १९०३ वि० वाले मुद्रित संस्करण के मुखपृष्ठ पर छपी विज्ञप्ति भी इस कहानी की लोकप्रियता की घोषणा करती है।[7] पं० केदार नाथ पाठक के कथनानुसार किसी समय इस कहानी का इतना प्रचार था कि कुछ लोग इसे याद कर आल्हा की तरह लोगों को सुनाया करते थे और उसी से अपना जीविकोपार्जन करते थे।[8] ये तथ्य 'रानी केतकी की कहानी' की लोकप्रियता सिद्ध करते हैं।

---

१. ब्रजरत्नदास, इंशा उनका काव्य……(५), भूमिका
२. हिन्दी सलेक्शन्स, कम्पाइल्ड वाइ दि आर्डर ऑफ दि गवर्नमेंट ऑफ इंडिया इन मिलिटरी डिपार्टमेंट नं० १७५ डेटेड टेंथ सेप्टेम्बर १८६४ टू एरेंज फॉर दि प्रेपेरेशन ऑफ हिन्दुस्तानी क्लास बुक्स देज लैंग्वेज टेस्ट्स टू वी पास्ड वाइ जुनियर सिविल सर्वेन्ट्स एण्ड मिलिटरी ऑफिसर्स, बनारस, प्रिन्टेट ऐट दि मेडिकल हॉल प्रेस १८६७ (प्रा० रथा०-रा० पु० कलकत्ता)
३. ब्रजरत्नदास, इंशा, उनका काव्य (५), भूमिका
४. रानी केतकी की कहानी (१०)
५. ब्रजरत्नदास, इंशा उनका काव्य (५)
६. मर्यादा, भाग ३, सं० १, नवम्बर १९११, पृ० १७
७. द्रष्टव्य, पृ० ३ की पादटिप्पणी।
८. ब्रजरत्नदास, इंशा उनका काव्य (५), भूमिका

१९ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में मौलिक गद्यकथा के रूप में 'रानी केतकी की कहानी' एक अपवाद ही है। इस युग में हिन्दी में अनूदित गद्यकथाओं की ही भरमार दिखाई पड़ती है। भारत पर अच्छी तरह से शासन करने के लिये अँगरेजों ने यहाँ की भाषाओं को सीखना आवश्यक समझा। खड़ी बोली उस समय तक व्यापकतर सामान्य व्यवहार की भाषा बन चुकी थी। पर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच खड़ी बोली के भी दो रूप प्रचलित थे। जो खड़ी बोली मुसलमान बोलते थे, उस पर फारसी शब्दावली और वाक्यशैली की छाप रहती थी; इधर हिन्दुओं की खड़ी बोली संस्कृत शब्दावली से प्रभावित थी। मुसलमानों की खड़ी बोली 'उर्दू', 'रेख्ता', या 'हिन्दुस्तानी' के नाम से प्रचलित थी, जबकि हिन्दुओं की खड़ी बोली 'हिन्दी' या 'हिन्दवी' नाम से पुकारी जाती थी। फिर भी उस समय की उर्दू और हिन्दी में बहुत कम फर्क दिखाई पड़ता है। उस समय की उर्दू भी हिन्दी के इतनी निकट है कि उसे सहसा हिन्दी से भिन्न भाषा कहने की जरूरत महसूस नहीं होती।

अँगरेजों ने इन दोनों भाषाओं, अथवा एक भाषा की दोनों शैलियों, को सीखना आवश्यक समझा। उस समय इन दोनों भाषाओं में से किसी में भी गद्य साहित्य नहीं था। फलतः अँगरेज अधिकारियों ने दोनों जातियों के लेखकों को पुस्तक-निर्माण के कार्य के लिए नियुक्त किया।

सिंहासन बत्तीसी

सन् १८०१ ई० में काजिम अली जवाँ और लल्लू जी लाल कवि ने, जो अब लल्लू लाल के नाम से विख्यात हैं, संस्कृत की प्रसिद्ध गद्यकथा 'सिंहासन द्वात्रिंशतिका' का अनुवाद 'सिंहासन बत्तीसी' नाम से किया। इन लेखकों ने मूल संस्कृत से अनुवाद न करके सुन्दर कवीश्वर की ब्रजभाषा में लिखित 'सिंहासन बत्तीसी' का अनुवाद किया।[१] कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय पुस्तकालय के प्राच्य विभाग में सन् १६८६ ई० की लिखी 'सिंघासन बत्तीसी' की प्रति सुरक्षित है। श्री मोतीलाल गुप्त ने अपने निबन्ध 'ब्रिटेन के पुस्तकालयों में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ' में इस पुस्तक की सूचना देने के साथ साथ इसके गद्य का उदाहरण भी दिया है।[२] सम्भव है, यह सुन्दर कवीश्वर लिखित 'सिंहासन बत्तीसी' ही हो यद्यपि श्री गुप्त ने इसका कोई संकेत नहीं दिया है।

---

१. सिंहासन बत्तीसी, हिन्दुस्तानी प्रेस, कलकत्ता, १८०५, के आरम्भ में ये सूचनाएँ निम्नलिखित रूप में दी गयी हैं—"यिह कहानी सिंहासन बत्तीसी की संस्कृत में थी—शाहजहाँ बादशाह की फर्माइश से—सुन्दर कवीश्वर ने ब्रज की बोली में कही। अब शाहआलम बादशाह के अहद में मुवाफिकि इरशादि जनाबि जान गिलक्रिस्त साहिबिवाला मनाकिब—सनि बारह सौ पन्दरह हिजरी—मुताबिक सनि अठारह सौ एक ईसवी—काजिम अली शाइर ने (जिसका तख़ल्लुस जवाँ है) श्री लल्लू जी लाल कवि की मदद से महावरये खास वो आम अहलिहिंद के लिखी—इसलिए कि नौसिख साहिबों के सीखने और समझने को सहज हो और हर एक के रोजमर्रे की उन्हें समझ हो—हिन्दू मुसलमान शहरी बेरुंजाती अहला अदना के कलाम को जानें दूसरे के समझाने के मुहताज न हों

२. मोती लाल गुप्त, 'ब्रिटेन के पुस्तकालयों में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ', हिन्दी अनुशीलन, वर्ष १४, अंक २, अप्रील-जून १९६१ ई०, पृ० ४६

काजिम अली जवाँ और लल्लू जी लाल कवि का अनुवाद १८०२ ई० में हरकारू प्रेस, कलकत्ता से अपूर्ण रूप में प्रकाशित हुआ ।[१] १८०५ ई० में यह अनुवाद हिन्दुस्तानी प्रेस, कलकत्ता से, पूर्ण रूप में, प्रकाशित हुआ ।[2] इसका दूसरा संस्करण १८१६ ई० में कलकत्ता से ही प्रकाशित हुआ । यह संस्करण ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में उपलब्ध है ।[३] 'सिंहासन बत्तीसी' का एक अन्य संस्करण १८३९ ई० में कलकत्ता से 'श्रीमान् विक्रमादित्य ······महाराजा की सिंहासन बत्तीसी की पोथी' शीर्षक से प्रकाशित हुआ । यह प्रति भी ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में सुरक्षित है ।[४] 'कैटलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इण्डिया ऑफिस' नामक पुस्तक में उपर्युक्त गद्यकथा के २३ संस्करणों का उल्लेख हुआ है, जो इण्डिया ऑफिस पुस्तकालय, लन्दन में उपलब्ध हैं ।[५]

इन संस्करणों का प्रकाशन-स्थान, प्रकाशन-काल और पृष्ठ-संख्या क्रमशः निम्नलिखित हैं :—

(१) आगरा, १८४२, पृ० सं० १९० (२) कलकत्ता, १८४७, पृ० संख्या २२६ (३) इन्दौर, १८४९, पृ० सं० २२६, (४) बनारस, १८५०, पृ० सं० २०८ (५) इन्दौर, १८५५, पृ० सं० १३२ (६) लाहौर, १८६७, पृ० सं० १४४ (गुरुमुखी अक्षरों में) (७) दिल्ली, १८६८, पृ० सं० १६८ (८) दिल्ली, १८६९, पृ० सं० १६८ (९) लन्दन, १८६९, पृ० सं० १६+२१६ (सैयद अब्दुल्लाह की टिप्पणियों के साथ नवीन संस्करण) (१०) लखनऊ, १८७०, पृ० सं० १०५ (११) कलकत्ता, १८७२, पृ० संख्या २+१२२ (१२) दिल्ली, १८७२, पृ० संख्या १४४ (गुरुमुखी अक्षरों में) (१३) आगरा, १८७३, पृष्ठ संख्या १५९ (१४) दिल्ली, १८७३, पृष्ठ संख्या १६८ (१५) लखनऊ, १८७३, पृष्ठ संख्या १०५, (१६) मेरठ, १८७४, पृष्ठ संख्या १६८, (१७) दिल्ली, १८७५, पृष्ठ संख्या १६८, (१८) मेरठ, १८७५, पृष्ठ संख्या १५९ (१९) लाहौर, १८७६, पृष्ठ संख्या १४४ (गुरुमुखी अक्षरों में), (२०) दिल्ली, १८७७, पृ० सं० १६०, (२१) लाहौर, १८७७, पृ० सं० १४४ (गुरुमुखी अक्षरों में), (२२) दिल्ली, १८७८, पृ० सं० ८८ (फारसी अक्षरों मे) और (२३) लाहौर, १८७८, पृ० सं० १४४ (गुरुमुखी अक्षरों में) ।

---

१. काजिम अली जवाँ और लल्लू जी 'लाल कवि', सिंहासन बत्तीसी, कलकत्ता, हरकारू प्रेस १८०२, ३६ पृ०, अपूर्ण, ५०० प्रतियाँ मुद्रित । २८३ पृष्ठ में छपने का अनुमान था, हिन्दी मैनुअल में सम्मिलित (हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ, लल्लू जी युग, पृ० १)

२. प्रा० स्था०—राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता । आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—सिंघासन बत्तीसी, एनेक्डोट्स ऑफ दि सेलिब्रेटेड विक्रमाजीत, रिलेटेड बाइ द थर्टी टू इमेजेज ह्विच सप्पोर्टेड दि थ्रोन ऑफ दैट प्रिन्स, ट्रान्सलेटेड इन्टू हिन्दुस्तानी फ्रॉम दि ब्रिजभाषा ऑफ सुन्दर कवीश्वर बाई मीर्जा काजिम अली जवाँ एण्ड श्री लल्लू लाल कव, मुन्सीज इन दि कॉलेज ऑफ फोर्ट विलियम, कलकत्ता, प्रिंटेड ऐट दि हिन्दुस्तानी प्रेस १८०५ पृ० सं० २५२

३. कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ (१), पृ० ४

४. उपरिवत्, पृ० २६

५. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० ६५

१८५२ ई० में वम्वई से भी इस गद्यकथा का एक संस्करण 'सिंघासन वत्तिशी' शीर्पक मे प्रकाशित हुआ था।[१] इसका एक संस्करण 'सिंहासन वत्तीसी अर्थात् लल्लू लाल कृत भाषा में 'वत्तीस पुतली की कथा' शीर्षक से शकाव्द १७८५ (सन् १८६३ ई०) में चैतन्य चन्द्रोदय यन्त्र, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।[2] इसका छठा संस्करण (सम्भवत:) १२९२ साल (सन् १८८५ ई०) में कलकत्ता एन० एल० शील के यन्त्रालय से प्रकाशित हुआ।[3]

१८६९ ई० में लन्दन से प्रकाशित 'सिंहासन वत्तीसी' का संस्करण, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता में सुरक्षित है।[४] १८८० ई० के पूर्व 'सिंहासन वत्तीसी' का एक संस्करण श्री नाथ दास और कम्पनी, कलकत्ता, गिरानहट्टा, नं० ३६ से भी मुद्रित हुआ था। जुलाई १८८० ई० के 'सार सुधानिधि' में इसका विज्ञापन निकला था। 'सिंहासन वत्तीसी' का एक दूसरा संस्करण सन् १२९९ साल (सन् १८९२ ई०) में कलकत्ता से शशिभूषण घोष एण्ड ब्रदर्स द्वारा प्रकाशित किया गया।[५]

इस प्रकार सन् १८०१ ई० से लेकर १८९२ ई० के वीच 'सिंहासन वत्तीसी' के कम से कम ३५ संस्करण, जिनकी सूचना ऊपर की पंक्तियों में दी गयी है, प्रकाशित हो चुके थे। वाद में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से इसके कितने संस्करण निकले इसका पता दे पाना असम्भव प्राय है, क्योंकि यहाँ से प्रकाशित इस पुस्तक के संस्करणों पर प्रकाशन काल देखने को नहीं मिलता। यह इस वात का प्रमाण है कि १९ वीं शताव्दी में यह गद्यकथा हिन्दी पाठकों के वीच अत्यन्त लोकप्रिय थी और आज भी हिन्दी का नामम‍ा को शिक्षित पाठकसमुदाय इससे अपना मनोरंजन करता ही है।

---

१. कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ, पृ० १४०
२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सिंहासन वत्तीसी अर्थात् ल्लू ल कृत भाषा में वत्तीस पुतली की कथा। वह्न (?) पंडित ने शोधकर कलकत्त श्री मट्ठ के शील के चैतन्य चन्द्रोदय यन्त्र में छापा भया। शकाव्द: १७८५। यह केताव जिको इस इच्छा होवे उन्हें महानगर कलकत्ते शोभावाजार के वट तल्ले की २४५ संख्या छापेखाने में तल्लाश करने से मिलेगा
३. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सिंहासन वत्तीसी राजा विक्रम की वत्तीस कहानियाँ। कविवर श्री लल्लू लाल जी ने संस्कृत से हिन्दी में उल्था किया। श्री नृत्यलाल शील को आदेश में ६ दफे। कलकत्ते एवं एन० एल० का यन्त्र में छापा भया। नम्बर ६९ आहीरी टोला सन् १२९२ साल, पृ० ११६
४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सिंघासन वत्तीसी ऑर दि थर्टी टू टेल्स ऑफ वि जीत, ट्रान्सलेटेट इन्टू हिन्दी फ्रॉम दि संस्कृत, वाई लल्लू लाल कवि, लेट भाखा मुन्शी ऑ कॉलेज ऑफ फोर्ट विलियम, ए न्यू एडीशन, रिवाइज्ड, ऐंड एकम्पेनीड विथ कोपियस नो वाई सैयद अब्दुल्लाह, प्रोफेसर ऑफ ओरियन्टल लैंग्वेज, लन्दन, विलियम एच० एलेन कं०, १३ वाटर लू प्लेस, एस० डब्लू० १८६९
५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि सिंहासन वत्तीसी, कविवर श्री लल्लू लाल कृत भापा में। श्री मन्महाराजाधिराज विक्र जीत की वत्तीस कहानियाँ, श्री शशिभूपण घोप ऐंड व्रादार द्वारा प्रकाशित। पहेली दफे १२९९ साल

बैताल पचीसी

सन् १८०१ ई० में ही मजहर अली 'विला' और लल्लूजी 'लाल कवि' ने संस्कृत की प्रसिद्ध गद्यकथा 'वेताल पञ्चविंशति' का अनुवाद हिन्दुस्तानी भाषा में 'बैताल पचीसी' शीर्षक से प्रस्तुत किया[1] जो सर्वप्रथम १८०२ ई० में मिरर प्रेस, कलकत्ता से अपूर्ण रूप में प्रकाशित हुआ।[2]

डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के अनुसार, 'बैताल पचीसी' की रचना १८०१ ई० में हो चुकी थी।[3] गिलक्राइस्ट द्वारा १२ जनवरी १८०२ को लिखित पत्र में इस पुस्तक का उल्लेख हुआ है।[4] १८०५ ई० में यह अनुवाद हिन्दुस्तानी प्रेस, कलकत्ता से सम्पूर्ण प्रकाशित हुआ।[5] इसका दूसरा संस्करण १८०९ ई० में प्रकाशित हुआ, जिसकी एक प्रति ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में सुरक्षित है।[6] 'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया आफिस' नामक पुस्तक में, इन्डिया ऑफिस लाइब्रेरो में विद्यमान 'बैताल पचीसी' के ३७ संस्करणों की सूचना दी गयी है।[7] इन संस्करणों का प्रकाशन-स्थान, प्रकाशन-काल तथा पृष्ठसंख्या क्रमशः निम्नलिखित हैं—

(१) आगरा, १८४३, पृ० संख्या १३१ (२) इन्दौर, १८४८, पृ० सं० २३६, (३) इन्दौर, १८५१, पृ० सं० ९८ (४) कलकत्ता, १८५२, पृ० सं० ६+१४१ (ईश्वर चन्द्र विद्यासागर द्वारा सम्पादित) (५) हर्टफोर्ड १८५५, पृ० सं० १०+३६९ (उर्दू लिप्यन्तरण डब्ल्यू० बार्कर द्वारा प्रस्तुत अँगरेजी अनुवाद तथा टिप्पणियों सहित, ई० बी० इस्टविक द्वारा संपादित) (६) मेरठ, १८५५, पृ० सं० १२६ (७) लन्दन, १८५७, पृ० ८१+१४०+

---

१. इन लेखकों ने अपना अनुवाद मूल संस्कृत से नहीं, वरन् सूरत कवीश्वर के व्रजभाषा अनुवाद से किया था। प्रमाणस्वरूप १८६९ में प्रकाशित इस अनुवाद के एक संस्करण की आरम्भिक पंक्तियाँ उद्धृत हैं—"श्री गणेशाय नमः इवत्तिदाय दास्तान यों है कि महमद शाह वादशाह के जमाने में राजा जै सिंघ सवाई ने जो मालिक जैनगर का था शूरत नाम कवीश्वर से कहा कि वैताल पचीसी को जो जवानि संस्कृत में है तुम व्रजभाषा में कहो तब उसने वमुजी वहुकुम राजा के ब्रज की वोली में कही सो अब उसको जवान उर्दू में छापा करते हैं जो खास और आम के समझ में आवे"

२. मजहर अली 'विला' और लल्लू जी 'लाल कवि', बैताल पचीसी, कलकत्ता, मिरर प्रेस, १८०२, 'हिन्दी मैनुअल' में सम्मिलित, अपूर्ण (कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ, पृ० २)

५३, (डंकन फोरवस द्वारा संपादित) (८) लखनऊ, १८६५, पृ० सं० १०० (९) कलकत्ता, १८६७, पृ० सं० २+१५८ (१०) कलकत्ता, १८६७, पृ० सं० १२० (११) लाहौर, १८६७, पृ० सं० १२७ (गुरुमुखी अक्षरों में) (१२) कानपुर, १८६८, पृ० सं० १०९ (१३) कलकत्ता, १८७०, पृ० सं० १०२ (१४) वम्वई, १८७०, पृ० सं० १६६ (१५) फतेहगढ़, १८७०, पृ० सं० १०८ (१६) लाहौर, १८७०, पृ० सं० १२७ (गुरुमुखी अक्षरों में) (१७) दिल्ली, १८७३, पृ० सं० १०४) (१८) लाहौर, १८७३, पृ० सं० ११२ (गुरुमुखी, अक्षरों में) (१९) कलकत्ता, १८७४, पृ० सं० ९९ (२०) दिल्ली, १८७५, पृ० सं० १०४ (२१) कलकत्ता, १८७६, पृ० सं० ६+११२ (रोमन अक्षरों में लिप्यन्तरण तथा जे० एफ० वानेस द्वारा अँग्रेजी अनुवाद और टिप्पणियों के साथ) (२२) दिल्ली, १८७६, पृ० सं० १०४, (२३) लाहौर, १८७६, पृ० सं० ११२ (गुरुमुखी अक्षरों में) (२४) मेरठ, १८७६, पृ० सं० १०४ (२५) दिल्ली, १८७७, पृ० सं० १०४ (२६) लखनऊ, १८७७, पृ० सं० १०४ (२७) कलकत्ता, १८७८, पृ० सं० ९९, (२८) कलकत्ता, १८७८, पृ० सं० १०४ (२९) दिल्ली, १८७८, पृ० सं० १०४ (३०) लाहौर, १८७८, पृ० सं० ११२ (गुरुमुखी अक्षरों में) (३१) दिल्ली, १८७९, पृ० सं० ८४ (३२) कलकत्ता, १८४८, पृ० सं० १०+१२८ (कैप्टेन डब्ल्यू० होलिंग्स द्वारा अँगरेजी में अनूदित (३३) इलाहाबाद, १८९४, पृ० सं० १०५, (३४) लन्दन, १८७१, पृ० सं० ८+१८१ (जॉन प्लाट्स द्वारा अँगरेजी में अनूदित) (३५) लाइप्त्सिग, १८७३, पृ० २१८ (हर्म्मन ओएस्टर्ली द्वारा जर्मन अनुवाद) (३६) बम्बई, १८७९, पृ० सं० १८२, (३७) बम्बई, १८७९।

'बैताल पचीसी' की सन् १८४५ ई० में लिखित, एक हस्तलिखित प्रति बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में सुरक्षित है।[१] इसका एक संस्करण १८५५ ई० में गणपत कृष्णा जी प्रेस बम्बई मे प्रकाशित हुआ था।[२] १८५६ ई० में इसका एक अन्य संस्करण हरनारायण चौबे छापाखाना, बनारस मे प्रकाशित हुआ।[३] इस संस्करण की एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में सुरक्षित है। 'बैताल पचीसी' का १८५९ ई० में दिवाकर छापाखाना, बनारस से प्रकाशित एक संस्करण बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[४] इसका एक अन्य संस्करण, जो १८६२ ई० में

१. पोथी के अन्त की दो पंक्तियाँ जिनसे इसका लेखन-काल ज्ञात होता है--"इती श्री पोथी बैताल पचीसी समापत सम्पुरन समत १९०२ साल मीती सावन वदी पंचमी गुरुवार को तइयार हुआ। पोथी के मालिक ओरीलाल वो पेसर हीरालाल मोकाम दानापुर को म्ठो

२. कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, पृ० १४३

३. बनारस, हरनारायण चौबे छापाखाना, १८५६, पृ० संख्या १४५, आकार २२ से०, नागरी, बंगला मैनसुख, लिपिकार गयादत्त पाण्डेय (कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० १४३)।

४. इस प्रति के अन्त की कुछ उल्लेखनीय पंक्तियाँ—"इति बैताल पचीसी समाप्तम् शुभम् भूयात् यः पोथी सदर बनारस दिवाकर छापाखाना में बैताल पचीसी की पुस्तक छपी [illegible] साकीन मुहल्ले भदैनी काली महल के पास यः पोथी बाकलम [illegible] वाले माता दयाल कारीगर यः पोथी जिसको लेना हो सो चाँदनी चौक में [illegible] फाटक के सामने रामचरन के दुकान पर मिलेगी संमत १९१६ मिति पूस सुदी ११ [illegible]।

बैताल पचीसी

सन् १८०१ ई० में ही मजहर अली 'विला' और लल्लूजी 'लाल कवि' ने संस्कृत की प्रसिद्ध गद्यकथा 'वेताल पञ्चविंशति' का अनुवाद हिन्दुस्तानी भाषा में 'बैताल पचीसी' शीर्षक से प्रस्तुत किया[1] जो सर्वप्रथम १८०२ ई० में मिरर प्रेस, कलकत्ता से अपूर्ण रूप में प्रकाशित हुआ।[2]

डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के अनुसार, 'बैताल पचीसी' की रचना १८०१ ई० में हो चुकी थी।[3] गिलक्राइस्ट द्वारा १२ जनवरी १८०२ को लिखित पत्र में इस पुस्तक का उल्लेख हुआ है।[4] १८०५ ई० में यह अनुवाद हिन्दुस्तानी प्रेस, कलकत्ता से सम्पूर्ण प्रकाशित हुआ।[5] इसका दूसरा संस्करण १८०९ ई० में प्रकाशित हुआ, जिसकी एक प्रति ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में सुरक्षित है।[6] 'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया आफिस' नामक पुस्तक में, इन्डिया ऑफिस लाइब्रेरी में विद्यमान 'बैताल पचीसी' के ३७ संस्करणों की सूचना दी गयी है।[7] इन संस्करणों का प्रकाशन-स्थान, प्रकाशन-काल तथा पृष्ठसंख्या क्रमशः निम्नलिखित हैं—

(१) आगरा, १८४३, पृ० संख्या १३१ (२) इन्दौर, १८४८, पृ० सं० २३६, (३) इन्दौर, १८५१, पृ० सं० ९८ (४) कलकत्ता, १८५२, पृ० सं० ६+१४१ (ईश्वर चन्द्र विद्यासागर द्वारा सम्पादित) (५) हर्टफोर्ड १८५५, पृ० सं० १०+३६९ (उर्दू लिप्यन्तरण डब्ल्यू० बार्कर द्वारा प्रस्तुत अँगरेजी अनुवाद तथा टिप्पणियों सहित, ई० बी० इस्टविक द्वारा संपादित) (६) मेरठ, १८५५, पृ० सं० १२६ (७) लन्दन, १८५७, पृ० ८१+१४०+

---

१. इन लेखकों ने अपना अनुवाद मूल संस्कृत से नहीं, वरन् सूरत कवीश्वर के ब्रजभापा अनुवाद से किया था। प्रमाणस्वरूप १८६९ में प्रकाशित इस अनुवाद के एक संस्करण की आरम्भिक पंक्तियाँ उद्धृत हैं—"श्री गणेशाय नमः इबत्तिदाय दास्तान यों है कि महमद शाह बादशाह के जमाने में राजा जै सिंघ सवाई ने जो मालिक जैनगर का था शूरत नाम कवीश्वर से कहा कि बैताल पचीसी को जो जबानि संस्कृत में है तुम ब्रजभापा में कहो तब उसने बमुजी बहुकुम राजा के ब्रज की बोली में कही सो अब उसको जबान उर्दू में छापा करते हैं जो खास और आम के समझ में आवे"

२. मजहर अली 'विला' और लल्लू जी 'लाल कवि', बैताल पचीसी, कलकत्ता, मिरर प्रेस, १८०२, 'हिन्दी मैनुअल' में सम्मिलित, अपूर्ण (कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ, पृ० २)

३. फोर्ट विलियम कॉलेज (४), पृ० ५१

४. उपरिवत्, पृ० ४८

५. सूरत कवीश्वर, बैताल पचीसी, बीइंग ए कलेक्शन ऑफ ट्वेंटीफाइव स्टोरीज रिलेटेड बाई दि डेमन बेताल टू द राजा विक्रमाजित ट्रान्सलेटेड इन्टू हिन्दुस्तानी फ्रॉम द ब्रजभाखा ऑफ सूरत कवीश्वर बाई मजहर अली खान विला ऐंड श्री लल्लू लाल कवि मुन्शीज इन द कॉलेज ऑफ फोर्ट विलियम, कलकत्ता, हिन्दुस्तानी प्रेस १८०५, १७८ पृ०, ३०×२२ से०। इस संस्करण की एक प्रति एसियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता के पुस्तकालय में संगृहीत है

६. कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ (१) पृ० १६

७. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (२) पृ० ६०

५३, (डंकन फोरवस द्वारा संपादित) (८) लखनऊ, १८६५, पृ० सं० १०० (९) कलकत्ता, १८६७, पृ० सं० २+१५८ (१०) कलकत्ता, १८६७, पृ० सं० १२० (११) लाहौर, १८६७, पृ० सं० १२७ (गुरुमुखी अक्षरों में) (१२) कानपुर, १८६८, पृ० सं० १०१ (१३) कलकत्ता, १८७०, पृ० सं० १०२ (१४) वम्बई, १८७०, पृ० सं० १६६ (१५) फतेहगढ़, १८७०, पृ० सं० १०८ (१६) लाहौर, १८७०, पृ० सं० १२७ (गुरुमुखी अक्षरों में) (१७) दिल्ली, १८७३, पृ० सं० १०४) (१८) लाहौर, १८७३, पृ० सं० ११२ (गुरुमुखी, अक्षरों में) (१९) कलकत्ता, १८७४, पृ० सं० ९१ (२०) दिल्ली, १८७५, पृ० सं० १०८ (२१) कलकत्ता, १८७६, पृ० सं० ६+११२ (रोमन अक्षरों में लिप्यन्तरण तथा जे० एफ० वानेस द्वारा अँग्रेजी अनुवाद और टिप्पणियों के साथ) (२२) दिल्ली, १८७६, पृ० सं० १०४, (२३) लाहौर, १८७६, पृ० सं० ११२ (गुरुमुखी अक्षरों में) (२४) मेरठ, १८७६, पृ० सं० १०४ (२५) दिल्ली, १८७७, पृ० सं० १०४ (२६) लखनऊ, १८७७, पृ० सं० १०४ (२७) कलकत्ता, १८७८, पृ० सं० ९१, (२८) कलकत्ता, १८७८, पृ० सं० १०४ (२९) दिल्ली, १८७८, पृ० सं० १०४ (३०) लाहौर, १८७८, पृ० सं० ११२ (गुरुमुखी अक्षरों में) (३१) दिल्ली, १८७९, पृ० सं० ८४ (३२) कलकत्ता, १८४८, पृ० सं० १०+१२८ (कैप्टेन डब्ल्यू० होलिंग्स द्वारा अँगरेजी में अनूदित (३३) इलाहाबाद, १८९४, पृ० सं० १०५, (३४) लन्दन, १८७१, पृ० सं० ८+१८१ (जॉन प्लाट्स द्वारा अँगरेजी में अनूदित) (३५) लाइप्सिग, १८७३, पृ० २१८ (हर्म्मन ओएस्टर्ली द्वारा जर्मन अनुवाद) (३६) वम्बई, १८७९, पृ० सं० १८२, (३७) वम्बई, १८७९ ।

'वैताल पचीसी' की सन् १८४५ ई० में लिखित, एक हस्तलिखित प्रति विहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में सुरक्षित है ।[1] इसका एक संस्करण १८५५ ई० में गणपत कृष्णा जी प्रेस वम्बई मे प्रकाशित हुआ था ।[2] १८५६ ई० में इसका एक अन्य संस्करण हरनारायण चौवे छापाखाना, वनारस मे प्रकाशित हुआ ।[3] इस संस्करण की एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में सुरक्षित है । 'वैताल पचीसी' का १८५९ ई० में दिवाकर छापाखाना, वनारस से प्रकाशित एक संस्करण विहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है ।[4] इसका एक अन्य संस्करण, जो १८६२ ई० में

१. पोथी के अन्त की दो पंक्तियाँ जिनसे इसका लेखन-काल ज्ञात होता है--"इती श्री पोथी वैताल पचीसी समापत सम्पुरन समत १९०२ साल मीती सावन वदी पंचमी गुरुवार को तइयार हुआ। पोथी के मालिक ओरीलाल वो पेसर हीरालाल मोकाम दानापुर की भट्ठी

२. कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, पृ० १४३

३. वनारस, हरनारायण चौवे छापाखाना, १८५६, पृ० संख्या १४५, आकार २२ से०, लीथो, यंत्रकार मैनसुख, लिपिकार गयादत्त पाण्डेय (कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० १४३)।

४. इस प्रति के अन्त की कुछ उल्लेखनीय पंक्तियाँ—"इति वैताल पचीसी समाप्तम् सुभम् भूयात् यः पोथी सदर वनारस दिवाकर छापाखाना में वैताल पचीसी की पुस्तक छपी शिवचरण के यहाँ साकीन मुहल्ले भदैनी काली महल के पास यः पोथी वाकलम खगेश दास कृष्णभक्त ओ छापने वाले माता दयाल कारीगर यः पोथी जिसको लेना हो सो चाँदनी चौक में कुंज गली के पश्चिम फाटक के सामने रामचरन के दुकान पर मिलेगी संमत् १९१६ मिति पूस सुदी ११ वार वुद्ध के समाप्त ।

बनारस, मुफाद हिन्द यन्त्रालय से मुद्रित हुआ था, चैतन्य पुस्तकालय, (गायघाट, पटना सिटी) में है।[1] विहार राष्ट्रभापा परिपद् के ग्रन्थानुसन्धान विभाग में 'वैताल पचीसी' का शकाव्द १८०१ में (१८७९ ई०) प्रकाशित एक संस्करण सुरक्षित है।[2] 'वैताल पचीसी' का एक दूसरा संस्करण १८८४ ई० में कलकत्ता, एन० एल० शील के यन्त्र में छपकर प्रकाशित हुआ था।[3] इस संस्करण की एक प्रति आर्य भापा पुस्तकालय, काशी में सुरक्षित है। 'वैताल पचीसी' का एक अन्य संस्करण १८९२ ई० में दयानन्द प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[4] इस संस्करण की एक प्रति आर्य भापा पुस्तकालय, काशी में सुरक्षित है। आर्य भापा पुस्तकालय में हरि प्रकाश यन्त्रालय से प्रकाशित 'वैताल पचीसी' का एक संस्करण है, पर उसमें प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है। १९१९ ई० में श्री रामेश्वर प्रेस, दरभंगा से प्रकाशित 'वैताल पचीसी' का एक संस्करण भी आर्य भापा पुस्तकालय में प्राप्त होता है।

इस प्रकार सन् १८०२ ई० से लेकर १८९२ ई० के वीच 'वैताल पचीसी' के कम से कम ५२ संस्करण, जिनकी सूचना ऊपर की पंक्तियों में दी गयी है, प्रकाशित हो चुके थे। इससे सिद्ध है कि 'वैताल पचीसी' १९ वीं शताव्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय कहानियों में से है। २० वीं शताव्दी में इसकी लोकप्रियता घट गई हो, ऐसी बात नहीं। अव तक नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, मास्टर खिलाड़ी लाल, कचौड़ी गली, बनारस सिटी तथा अनेक अन्य प्रकाशन-संस्थाओं से 'वैताल पचीसी' के सैकड़ों संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। चूँकि इन संस्करणों के प्रकाशकों ने संस्करण-संख्या, प्रकाशन-काल आदि की सूचना देना आवश्यक नहीं समझा है, इस कारण इन संस्करणों की संख्या वता पाना असम्भवप्राय है। इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि 'वैताल पचीसी' आज भी अर्धशिक्षित हिन्दी पाठकों की सर्वाधिक प्रिय पुस्तकों में से है।

माधोनल

सन् १८०१ ई० में ही[5] मजहर अली खाँ 'विला' ने मोतीराम कवीश्वर लिखित

---

१. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—वैताल पचीसी बनारस में यंत्रालय मुफाद हिन्द महल्ले सोनारपुरा। यह तिमाम से मुन्शी हरवन्स लाल के छपी, सन् १८६२ ई०॥

२. विहार राष्ट्रभापा परिपद् का वार्षिक कार्य-विवरण, (अप्रैल १९५७ से मार्च १९५८ तक) पृ० ६८। मैंने परिपद् पुस्तकालय की यह प्रति देखी है, किन्तु इसके आरम्भिक और अन्तिम पृष्ठ फट गये हैं, जिससे इसके प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता। मालूम होता है कि वार्षिक कार्य-विवरण तैयार होने के वाद प्रकाशन-काल वाला पृष्ठ फटा है।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वैताल पचीसी अर्थात् राजा विक्रम की पच्चीस कहानियाँ। संस्कृत से हिन्दी भापा में लल्लू लाल जी कवि ने उलथा किया। श्री नृत्य लाल शील को आदेश में कलकत्ते एन० एल० शील का यंत्र में छापा भया। नम्बर ६९ आहीरी टोला सन् १२९१ साल।

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वैताल पचीसी पं० कृपारामजी के प्रवन्ध से दयानन्द प्रेस, प्रयाग में छपी। यह पुस्तक काशी तिमिर नाशक प्रेस से मिलेगी। सन् १८९२, पहली वार, पृ० सं० ८७

५. डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के अनुसार १८०१ ई० में इस ग्रन्थ की रचना हो चुकी थी (फोर्ट विलियम कॉलेज, सं० २००४ वि०, पृ० ४६)। १२ जनवरी १८०२ को गिल क्राइस्ट द्वारा लिखित पत्र में इसका उल्लेख आया है। (फोर्ट विलियम कॉलेज, पृ० ४८)

'माधवानल और काम कन्दला की कथा' का, जो ब्रजभाषा में थी, अनुवाद प्रस्तुत किया जो 'माधोनल' शीर्षक से हिन्दुस्तानी प्रेस, कलकत्ता मे १८०५ ई० में प्रकाशित हुआ।[१] इस पुस्तक का कोई और संस्करण मेरी दृष्टि में नहीं आया है।

राजनीति

१८०२ ई० में ही श्री लल्लू जी 'लाल कवि' ने नारायण पंडित रचित संस्कृत 'हितोपदेश' का अनुवाद ब्रजभाषा में 'राजनीति' शीर्षक से किया, जो सर्वप्रथम १८०९ ई० में हिन्दुस्तानी प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[२] ग्रन्थ की आरम्भिक पंक्तियों में रचनाकाल दिया हुआ है।[३] 'राजनीति' का द्वितीय संस्करण १८२७ ई० में एजूकेशन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। उसकी एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में उपलब्ध है।[४]

सन् १८५१ या १८५२ ई० में वदरी लाल ने 'हितोपदेश' का एक दूसरा अनुवाद इसी शीर्षक से प्रस्तुत किया जो आरफन स्कूल प्रेस, मिर्जापुर मे इसी वर्ष प्रकाशित हुआ।[५] इस ग्रन्थ की एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में सुरक्षित है। लल्लूजी

---

१. मोतीराम कवीश्वर, माधोनल, ए टेल ट्रांसलेटेड इन्टू द हिन्दुस्तानी लैंग्वेज फ्रॉम द ब्रजभाखा, वाइ मजहर अली खाँ 'विला' ए लर्नेड नेटिव अटेच्ड टू द कॉलेज ऑफ फोर्ट विलियम, कलकत्ता, प्रिंटेड ऐट द हिन्दुस्तानी प्रेस, १८०५, २० पृ०, आकार ८.५"+६.५" सम्पूर्ण पुस्तक आदि से अन्त एक ही अवतरण में। छठी पंक्ति "यह किस्सा माधोनल और काम कन्दला का कि जवानि ब्रज में मोतीराम कवीश्वर ने कहा है वमूजिब गिलक्रिस्त साहिब—व मुहावर ए जवानि उर्दू वयान करता है। (कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, पृ० ४)

२. नारायण पंडित, राजनीति, ऑर टेल्स एक्जिविटिंग द मोरल डॉक्ट्रिंस ऐन्ड द सिविल ऐन्ड मिलिटरी पॉलिसी ऑफ द हिन्दूज, ट्रांसलेटेड फ्रॉम ओरिजिनल संस्कृत......ऑफ नारायण पंडित इन टू ब्रजभाखा वाइ श्री लल्लू लाल ऑफ दि कॉलेज ऑफ फोर्ट विलियम, कलकत्ता, हिन्दुस्तानी प्रेस, १८०९, २५४ पृ०, आकार २२ से०, रचनाकाल १८०२। इसकी एक प्रति एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में उपलब्ध है। (कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ पृ० ५-६)

३. राजनीति के १८२७ वाले संस्करण के ग्रन्थारम्भ की पंक्तियाँ—"गजमुख सुखदाता जगत सुखदायक गणईश पूरन अभिलाषा करौ शम्भु सुत जगदीश। काहू समें श्री नारायण पंडित ने नीति शास्त्रनि कथानि को संग्रह करि, संस्कृत में एक ग्रन्थ बनाया, वाको नाम हितोपदेश धर्‌यो, सो संवत् १८५९ में श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वारे ने वाको आशय ले ब्रजभाषा करि नाम राजनीति राख्यो।"

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजनीति ऑर टेल्स एक्जिविटिंग दि मोरल डॉक्ट्रिंस एन्ड दि सिविल एन्ड मिलिटरी पॉलिसी ऑव दि हिन्दूज, ट्रांसलेटेड फ्रॉम दि ओरिजिनल संस्कृत ऑफ नारायण पंडित इन्टू ब्रजभाषा, वाई श्री लल्लू लाल कव, प्रिन्टेड अंडर द सेंक्शन ऑफ द जेनरल कमिटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन, ऐट दि एजूकेशन प्रेस, कलकत्ता, १८२७, आकार २२.५ से०, पृ० ११+ २४२।

५. नारायण पंडित, हितोपदेश, अनु० वदरीलाल, मिर्जापुर, आरफन स्कूल प्रेस, १८५२, ६३ पृ० आकार-२२ से० (कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० ७६)
'कैटलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इण्डिया ऑफिस' (२) में पृष्ठ ६२ पर इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचना प्राप्त होती है—हितोपदेश, हिन्दी वर्शन वाइ पं० वदरी लाल, हुक।, एडिटेड विथ ऐन इंगलिश प्रिफेस वाइ जे० आर० वैलेन्टाइन, पृ० सं० ६३, मिरजापुर १८५१।

'लाल' द्वारा अनूदित 'राजनीति' का एक संशोधित संस्करण प्रोस्वटेरियन मिशन प्रेस, इलाहावाद से १८५४ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] इसीका एक दूसरा संस्करण वनारस अखवार प्रेस, वनारस से १८५४ ई० में छपा।[2] इसकी एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में उपलब्ध है। 'राजनीति' के व्रजभाषा संस्करण का हिन्दी रूपान्तर १८५४ ई० में वम्वई से प्रकाशित हुआ।[3] सन् १८६६ ई० में **हितोपदेश** का एक अन्य अनुवाद वनारस से प्रकाशित हुआ। अनुवादक थे श्री रामजसन।[4] इस अनुवाद की एक प्रति ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में भी विद्यमान है। **कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इण्डिया आफिस** नामक पुस्तक में लल्लू जी 'लाल कवि' द्वारा अनूदित 'राजनीति' के ११ संस्करणों का उल्लेख है।[5] इन संस्करणों का प्रकाशन-स्थान, प्रकाशन-काल और पृ० संख्या निम्नांकित है - (१) कलकत्ता, १८०९, पृ० २५४+२ (२) कलकत्ता, १८२७, पृ० सं० १४२, (३) कलकत्ता, १८४३, पृ० सं० ११७ (४) जयनगर, १८५१, पृ० सं० १९२ (५) इलाहाबाद, १८५४, पृ० सं० ७+१६७+२८ (फित्ज एडवर्ड हाल द्वारा लिखित भूमिका, टिप्पणियों और शब्दावली सहित नूतन संस्करण) (६) वनारस, १८५४, पृ० सं० ११०, (७) लखनऊ, १८७३, पृ० १६८+१३ (डॉ० हाल के नये संस्करण से, शब्दसूची के साथ) (८) वम्वई, १८७६, पृ० संख्या २४८ (९) कलकत्ता, १८७८, पृ० सं० ११६ (१०) कलकत्ता, १८८६, पृ० सं० ११६ (तीसरा संस्करण) (११) कलकत्ता, १८६९, पृ० सं० १३६ (सी० डब्ल्यू० वोल्डर वेल द्वारा अँगरेजी अनुवाद)।

सन् १८८० ई० में या उसके ईपत् पूर्व **हितोपदेश** का एक हिन्दी अनुवाद श्री नाथ दास और कम्पनी, कलकत्ता, गिरानहट्टा, न० ३६ से मुद्रित हुआ था। ५ जुलाई सन् १८८० ई० के **सारसुधानिधि** में इसका विज्ञापन निकला था।

नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित **राजनीति भाषा** का चौथा संस्करण, जो १८८७ ई० में प्रकाशित हुआ था, आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में संगृहीत है।[6]

---

१. राजनीति, ए कलेक्शन ऑफ हिन्दू एपोलोग्स इन दि व्रजभाखा लैंग्वेज, रिवाइज्ड एडीशन विद ए प्रीफेस, नोट्स एण्ड सप्लीमेंटल ग्लॉसरी, इलाहावाद, प्रोस्वटेरियन मिशन प्रेस, १८५४, पृ० सं० ८+१६७+२४ आकार—२३ से०
फिट्स एडवर्ड हालकृत अँगरेजी भूमिका, टिप्पणी और कोशसहित (कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० ७६)।

२. वनारस, वनारस अखवार प्रेस, १८५४, ११० पृष्ठ, लीथो कलम रामन्ना भटट।
—कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृष्ठ ७६

३. राजनीति या पंचोपाख्यान, लल्लूजी 'लाल कवि' कृत व्रजभाषा संस्करण का हिन्दी रूपान्तर, वम्वई, १८५४ (कृणाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृष्ठ ७६)

४. संस्कृत हितोपदेश चारों भाग और खड़ी वोली में उसका उलथा, अनु० रामजसन, वनारस, १८६६ पृष्ठ सं० २+२५५ (कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ' पृष्ठ ७६)

५. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इण्डिया ऑफिस (२), पृ० सं० ६४।

६. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजनीति भाषा जिसको आगरे के रहने वाले श्री लल्लू लाल कवि सहस्र अवदीच गुजराती ब्राह्मण ने संस्कृत हितोपदेश का आशय लेकर व्रजभाषा वोली में वनाया। ……चौथी वार, लखनऊ, मुन्शी नवल किशोर के छापेखाने में छापी गयी। मई सन् १८८७ ई०, पृ० सं० १५७

इस प्रकार १८०२ ई० से लेकर १८८७ ई० के बीच प्रकाशित 'हितोपदेश के विभिन्न संस्करणों की संख्या कम से कम १७, जिनकी सूचना ऊपर दी गई है, अवश्य थी। वर्तमान शताब्दी में भी इस गद्यकथा के अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं, किन्तु उनकी क्रमबद्ध सूचना संगृहीत नहीं हो सकी है।

प्रेमसागर

सन् १८०३ ई० में ही श्री लल्लू जी 'लाल कवि' ने जान गिलक्राइस्ट की आज्ञा से चतुर्भुज मिश्र द्वारा व्रजभाषा में, दोहा चौपाई में, लिखित श्री मद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध की कथा का अनुवाद "दिल्ली आगरे की खड़ी बोली में" प्रस्तुत किया और उसका नाम 'प्रेमसागर' रखा।[1] जॉन गिलक्राइस्ट के बीच में ही चले जाने के कारण यह ग्रन्थ १८०३ ई० में अधूरा ही छपकर रह गया। वंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता में प्रेमसागर का यह अंशतः प्रकाशित संस्करण उपलब्ध है।[2]

सन् १८१० ई० में 'प्रेमसागर' का पहला पूर्ण संस्करण संस्कृत प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] 'प्रेमसागर' का १८२५ ई० में कलकत्ता से प्रकाशित एक संस्करण ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन में सुरक्षित है।[4] इसका १८३४ ई० में कलकत्ता के राधा माधव भगत के क्षीरोदय सागर यंत्र में मुद्रित एक संस्करण एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता के

१. 'प्रेमसागर' के १८१० वाले संस्करण के आरम्भ में इस ग्रन्थ के रचनाकाल आदि के सम्बन्ध में सूचनाएँ निम्नांकित पंक्तियों में दी गयी हैं—"एक समे व्यासदेव कृत श्रीमत भागवत के दशम स्कन्ध की कथा को चतुर्भुज मिश्र ने दोहे चौपाई में व्रजभाषा में किया सो पाठशाला के लिये श्री महाराजाधिराज सकल गुणनिधान पुण्यवान महाजान मारकुइस वलिजलि गवर्नर जनरल प्रतापी के राज में······और श्रीयुत······जान गिलकिरिस्त महाशय की आज्ञा से संवत् १८६० में श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरेवाले ने विसका सार ले यामनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ी बोली में कह नाम प्रेमसागर धरा पर श्रीयुत जान किरिस्त महाशय के जाने से बना अधबना, छपा अधछपा रह गया था सो अब······गिलबर्ट लार्ड मिंटो प्रतापवान के राज में औ······श्री जान उलियम टेलर प्रतापी की आज्ञा से और······डाक्टर उलियम हंटर नक्षत्री की सहायता से और······लिफ्टन अबराहम लाकिट रतीवन्त के कहे से उसी कवि ने संवत् १८६६ में पूरा कर छपवाया पाठशाला के विद्यार्थियों के पढ़ने को।"

२. "प्रेमसागर बना खड़ी बोली में श्री भागवत के दशम स्कंध से जो व्रजभाषा में है, पाठशाला के लिये श्री महाराजाधिराज······वलिजलि······के राज में······श्री लल्लूजी लाल कवि का—..गिलकिरिस्त....की आज्ञा से....(कलकत्ता), संवत् १८६० औ अंगरेजी १८०३ में हिन्दुस्तानी छापेघर में छापा किया हुआ मुन्शी महम्मद अहसन का, १७६ पृष्ठ। (भूमिका से)– "संवत् १८६० में श्री लल्लूजी लाल कवि ने तिसका सार ले—यामिनी भाषा छोड़—दिल्ली आगरे की खड़ी बोली में कह नाम प्रेमसागर धरा।" (कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृष्ठ सं० २-३।)

३. प्रा० स्था०—रा० पु० कलकत्ता, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमसागर ऑर दि हिस्टरी ऑफ दि हिन्दू डेटी श्री कृष्ण कन्टेनिंग इन दि टेन्थ चैप्टर ऑफ श्री भागवत ऑफ व्यासदेव, ट्रांसलेटेड इन्टू हिन्दवी फ्रॉम दि ब्रिजभाषा ऑफ चतुर्भुज मिश्र बाई श्री लल्लू लाल कव, भाषा मुन्शीज इन दि कॉलेज ऑफ फोर्ट विलियम, कलकत्ता, प्रिन्टेड ऐट दि संस्कृत प्रेस, १८१०।

४. कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० १८

पुस्तकालय में प्राप्त है।[१] सन् १८४२ ई० में सार सुधानिधि प्रेस, कलकत्ता से **'प्रेमसागर'** का एक सम्पादित संस्करण प्रकाशित हुआ।[२] इसके अन्त में १४३ पृष्ठों की शब्दसूची और अँगरेजी में उन शब्दों का अर्थ दिया गया है। सन् १८५१ ई० में **'प्रेमसागर'** का एक नया संस्करण श्री एडवर्ड वी० इस्टविक द्वारा तैयार की हुई शब्द-सूची के साथ हर्टफोर्ड से प्रकाशित हुआ।[३] सन् १८६७ ई० में **'प्रेमसागर'** का एक संशोधित संस्करण संवाद ज्ञान रत्नाकर यंत्र, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ, जिसकी एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में प्राप्य है।[४] **'प्रेमसागर'** के तीन संस्करण बम्बई से सन् १८५४ ई० (गुजराती लिपि में), १८६२ ई० और १८६८ ई० में, प्रकाशित हुए थे।[५] ये संस्करण ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में सुरक्षित हैं।[६] **'प्रेमसागर'** के तीन और संस्करण—१८६६ ई० में पटना से प्रकाशित, १८६७ ई० में दिल्ली से प्रकाशित और १८६४ ई० में मेरठ से प्रकाशित—ब्रिटिश म्यूजियम में संगृहीत हैं।[७] इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी, लन्दन में **'प्रेमसागर** के लखनऊ से, १८६६ ई० और १८६९ ई० में, प्रकाशित दो संस्करण उपलब्ध हैं।[८]

सन् १८७५ ई० (१९३२ वि०) में 'प्रेमसागर' का एक संस्करण मतबअ ईजाद किशन, आगरा से प्रकाशित हुआ।[९] सन् १८८० ई० में, या उसके कुछ पूर्व 'प्रेमसागर' का एक संस्करण श्री नाथ दास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, गिरानहट्टा, नं० ३६ से मुद्रित हुआ था। ५ जुलाई सन् १८८० ई० के **'सार सुधानिधि'** में प्रकाशित विज्ञापन से यह सूचना प्राप्त होती है।

१८९३ ई० में जगदीश्वर छापाखाना बम्बई से 'प्रेमसागर' का एक संस्करण प्रकाशित हुआ।[१०] इसका एक अन्य संस्करण बंगवासी प्रेस, २ भवानी चरण दत्त स्ट्रीट,

---

१. कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ पृ० २३
२. प्रा० स्था०—रा० पु० कलकत्ता,
३. प्रा० स्था०—रा० पु० कलकत्ता; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दि प्रेमसागर ऑर दि ओसन ऑफ लव, वीइंग ए हिस्टरी ऑव कृष्ण, एकार्डिंग टू दि टेन्थ चैप्टर ऑफ दि भागवत ऑफ व्यास देव, ट्रांसलेटेड इन्टू हिन्दी फ्रॉम ब्रजभाखा ऑफ चतुर्भुज मिश्र वाई लल्लू लाल.........एन्यू एडीशन विथ ए वोकेबुलरी वाई एडवर्ड वी० इस्टविक.........हर्टफोर्ड प्रिन्टेड वाई स्टीफेन ऑस्टिन बुक-सेलर, MDCCCLI (१८५१ ई०)
४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमसागर अर्थात् दशम स्कन्ध भागवत की भाषा जिसमें श्री कृष्ण चरित कहा गया उसी को श्री भुवनचन्द्र वसाक ने पंडित श्री जगन्नाथ सुकुल से अच्छी तरह संशोधन करवाय के छापा। कलकत्ता नीमतला गली ३२ नम्बर मकान के संवाद ज्ञान रत्नाकर यंत्र से छपी, संवत् १९२४
५. कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० ५०
६. उपरिवत्
७. उपरिवत्
८. उपरिवत्
९. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।
१०. आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची।

कलकत्ता से सं० १९६१ वि० (१९०४ ई०) में प्रकाशित हुआ।[1] राम नारायण लाल, प्रयाग ने सं० १९७० वि० (१९१३ ई०) में 'प्रेमसागर' का एक संस्करण प्रकाशित किया।[2] सं० १९७५ वि० (१९१८ ई०) में 'प्रेमसागर' का एक संस्करण वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ। १९२१ ई० में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से 'प्रेमसागर' का बाबू ब्रजरत्नदास द्वारा सम्पादित संस्करण प्रकाशित हुआ।[3] सं० १९८१ वि० (१९२४ ई०) में हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, १२६ हरिसन रोड, कलकत्ता से भी 'प्रेमसागर' का एक संस्करण प्रकाशित किया गया।[4]

इस प्रकार १८०३ ई० से लेकर १९२४ ई० तक 'प्रेमसागर' के कम से कम २२ संस्करण, जिनके सम्बन्ध में आवश्यक सूचनाएँ ऊपर के पृष्ठों में संगृहीत की गयी हैं, प्रकाशित हो चुके थे। यह तथ्य इस गद्यकथा की लोकप्रियता का प्रमाण है।

सन् १८६५ ई० में श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध का भोपत कवि कृत एक दूसरा अनुवाद मुंशी रामसरूप छापाखाना, फतहगढ़ से प्रकाशित हुआ।[5] इसकी एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता से उपलब्ध है। श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध का एक दूसरा अनुवाद गिरि प्रसाद ने प्रस्तुत किया, जो बनारस से १८६९ ई० में प्रकाशित हुआ।[6] श्री माखन लाल ने सम्पूर्ण भागवत पुराण का अनुवाद **'सुखसागर'** शीर्षक से प्रस्तुत किया था। सर्वप्रथम यह किस वर्ष प्रकाशित हुआ, इसका पता प्रस्तुत पंक्तियों को लेखक को नहीं चल सका है। तासी के अनुसार इसका दूसरा संस्करण १८६४ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसका तीसरा संकरण १८७० ई० में लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[7]

नासिकेतोपाख्यान

सं० १८६० वि० (१८०३ ई०) में सदल मिश्र ने, जो फोर्ट विलियम कॉलेज में भाषा मुंशी थे, 'नासिकेतोपाख्यान' का अनुवाद खड़ी बोली में 'चन्द्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान' शीर्षक से प्रस्तुत किया।[8] इस पुस्तक की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों

---

१. आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची
२. उपरिवत्।
३. उपरिवत्।
४. उपरिवत्।
५. पुराण, भागवत पुराण दशम स्कन्द, श्रीमत् भागवत, अनु० भोपत कवि, फतहगढ़, मुंशी राम सरूप छापाखाना, १८६५, २१२ पृ०, २८५ से०, लीथो व्रजभाषा में, रा० पु० कलकत्ता। (कृष्णाचार्यकृत 'हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ', पृ० ८४ से)
६. भागवत दशम स्कंध पूर्वार्ध प्रारम्भ, अनु० गिरि प्रसाद, २ भाग, बनारस, १८६९ (मूल सहित हिन्दी अनुवाद) ब्रि० म्यू० में उपलब्ध। [कृष्णाचार्य कृत 'हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ' पृ० ८४ से]
७. सुखसागर, ३रा संस्करण, अनु० माखनलाल, लखनऊ, १८७०; ११६० पृ०—तासी (पृ० ७७) के अनुसार २रा संस्करण १८६४ में, ६०६ पृ०, इं० आफिस में प्राप्त (कृष्णाचार्य, 'हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ पृ० ८५।]
८. चन्द्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान (७), भूमिका।

का पता नहीं चलता। इन्डिया ऑफिस पुस्तकालय की पुस्तकसूची में,[1] जहाँ १९वीं शताब्दी में प्रकाशित अनेक हिन्दी पुस्तकों और उनके विभिन्न संस्करणों की सूचना मिलती है, 'चन्द्रावती' की एक भी प्रति का उल्लेख नहीं मिलता। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, चैतन्य पुस्तकालय, पटना, मन्नू लाल पुस्तकालय, गया तथा राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में भी इस पुस्तक की कोई प्राचीन हस्तलिखित या मुद्रित प्रति उपलब्ध नहीं होती। जान पड़ता है, यह पुस्तक कॉलेज के अधिकारियों को बहुत पसन्द नहीं आयी, और न पाठकों में ही इसे लोकप्रियता मिल सकी। डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने 'फोर्ट विलियम कॉलेज' नामक पुस्तक में लिखा है कि कलकत्ते के बाहर यदि हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता होती थी तो लल्लूजी लाल के ही ग्रन्थ भेजे जाते थे। सदल मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' का सिवाय एक सूची के और कहीं उल्लेख नहीं मिलता। न तो कॉलेज के पाठ्यक्रम में इसका जिक्र है और न कहीं बाहर भेजी जानेवाली पुस्तकों में। जून १८२५ ई० में आगरा और दिल्ली की सरकारी पाठशालाओं में भेजी जानेवाली पुस्तकों में 'प्रेमसागर' 'बैताल पचीसी', 'सिंहासन बत्तीसी', 'माधोनल' आदि पुस्तकों के नाम तो हैं, किन्तु 'नासिकेतोपाख्यान' का उल्लेख नहीं है। बाद में और भी कई बार पुस्तकें बम्बई और मद्रास की संस्थाओं को भेजी गयीं, पर 'नासिकेतोपाख्यान' को यह सौभाग्य कभी नहीं मिला। कॉलेज तोड़ देने के बाद बोर्ड ऑफ एग्जामिनर्स ने जो पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया उसमें भी 'नासिकेतोपाख्यान' को कोई स्थान न मिला।[2] १९०१ ई० में बाबू श्यामसुन्दर दास ने इसका सम्पादन कर नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित कराया।[3] सभा से ही इसका दूसरा संस्करण १९२५ ई० में, चौथा संस्करण १९४५ ई० में, पाँचवाँ संस्करण १९४७ ई० में और ६ठा संस्करण १९५० ई० में प्रकाशित हुआ।[4] बाबू श्यामसुन्दर दास द्वारा लिखित भूमिका से ज्ञात होता है कि "चन्द्रावती उपाख्यान की हस्तलिखित प्रति पहले फोर्ट विलियम कालिज में थी, पर अब एशियाटिक सुसाइटी में है।"[5]

लतायफे हिन्दी

सन् १८१० ई० में लल्लूजी लाल कवि द्वारा रचित 'लतायफे हिन्दी' नामक हास्यप्रधान कहानियों का संग्रह इंडिया गजट प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[6]

---

१. कैटेलग ऑव दि लाइब्रेरी ऑव दि इंडिया आफिस (२)

२. फोर्ट विलियम कॉलेज (४), पृ० १४२

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचनाएँ—सदल मिश्र अनुवादित चन्द्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान जिसे श्यामसुन्दर दास बी० ए० ने सम्पादित किया और काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रकाशित किया। १९०१ ई०

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी

५. चन्द्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान (७), भूमिका, पृ० २

६. प्रा० स्था०—रा पु०, कलकत्ता। आवरण पृष्ठ की प्रतिलिपि (रोमन अक्षरों में): लल्लू जी लाल कवि, लतायफे हिन्दी ऑर दि न्यू साइक्लोपेडिया हिन्दुस्तानिका ऑफ विट, कंटेनिंग ए च्वायस कलेक्शन ऑफ ह्यूमरस स्टोरीज इन दि परसियन ऐंड नागरी कैरेक्टर्स इन्टरस्प्रेस्ड विथ एप्रोप्रिएट प्रोवर्ब्स ऐंड विलियम जेस्ट्स ब्रिलिएंट वाटमोटस ऐंड रैलींग रिपार्टीज इन

माधव विलास

सन् १८१७ ई० में श्री लल्लू जी 'लाल कवि' ने 'क्रिया योग सार' नामक ग्रन्थ के आधार पर गद्य-पद्य में 'माधव विलास' नामक कथापुस्तक की रचना की, जो संस्कृत प्रेस, कलकत्ता से इसी वर्ष प्रकाशित हुई।[1] पुस्तक का एक अन्य संस्करण आगरा से १८४६ ई० में प्रकाशित हुआ।[2]

नीतिकथा

सन् १८२२ ई० में बैप्टिस्ट मिशन प्रेस, कलकत्ता से 'नीतिकथा' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसमें स्कूल के छात्रों के लिए नीतिप्रधान कथाओं का संग्रह किया गया है।[3] 'कैटेलग ऑव दि लाइब्रेरी ऑव इंडिया आफिस' में इस पुस्तक के चार संस्करणों का उल्लेख है।[4] इन संस्करणों के प्रकाशन-स्थान, प्रकाशन-काल तथा पृष्ठ-संख्या निम्न-लित हैं—

(१) कलकत्ता, १८२२, पृ० सं० ३४, (२) कलकत्ता, १८४६, पृ० सं० २४ (भाग १), (३) आगरा, १८४६-४७ (दो भाग), (४) बनारस, १८७० (दो भाग)

गोरा बादल की बात

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार सं० १८८१ (सन् १८२४ ई०) में किसी ने 'गोरा बादल की बात' का, जिसे राजस्थानी गद्य में जटमल ने संवत् १६८० में लिखा था, खड़ी बोली में अनुवाद प्रस्तुत किया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को या इसके किसी संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।[5]

दि रेखता एंड ब्रिजभाषा डाइलेक्ट्स टू ह्विच इज ऐडेड ए वेकेबूलरी ऑफ दि प्रिंसपल वर्ड्स इन हिन्दुस्तानी एंड इंगलिश, बाइ लल्लू लाल कवि, कलकत्ता, प्रिंटेड ऐट द इंडिया गजट प्रेस, १८१०

१. प्रा० स्था०—राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता। आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—लल्लू लाल कवि, माधव विलास बाइ लाल कवि, कलकत्ता, प्रिंटेड ऐट संस्कृत प्रेस, १८१७ (१८७४ वि०) स्टोरी ऑफ माधव सुलोचना बेस्ड ऑन क्रियायोग सार।
ग्रन्थारम्भ की पंक्तियाँ—"श्री गणेशाय नमः" श्री सरस्वतै नमः "श्री गुरवे नमः" माधव विलास ग्रन्थ लिख्यते......"श्री गुरुदेव के चरण कमल को ध्यान पर क्रियायोग सार ग्रन्थ ते माधव सुलोचना की कथा निकारि श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्त्र अवदीच्य आगरेवारे ने युक्तियुक्ति करि गद्य-पद्य ब्रजभाषा में ग्रन्थ बनाय माधव सुलोचना की कथा या में है या सों या को नाम माधव विलास राख्यो अरु निज छापेघर में छपवायो। संवत १८७४ आश्विन मास में इति".

२. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, लन्दन, १९०२, पृ० ६२.

३. नीतिकथा, भाग २, कलकत्ता बैप्टिस्ट मिशन प्रेस, (स्कूल बुक सोसाइटी के लिए) १८२२, ३४ पृ०—कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, पृ० १७.

४. कैटेलग ऑव दि लाइब्रेरी ऑव दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० ६३.

५. हिन्दी साहित्य का इतिहास (३), पृ० ४२३.

उपदेश कथा और इंगलैंड की उपाख्यान का चुम्बक

सन् १८२५ ई० में टी० डब्ल्यू० आदम द्वारा अँगरेजी से अनूदित 'उपदेश कथा और इंगलैंड की उपाख्यान का चुम्बक' नामक कथासंग्रह, दो भागों में, स्कूल बुक सोसाइटी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] इस पुस्तक में छोटी छोटी उपदेशप्रद कथाएँ, जैसे 'पुण्य का फल', 'यौवन काल में विद्या उपार्जन की कथा', 'कृतघ्नताई' 'सद्गुण की कथा', 'अहंकार की वात' आदि संकलित हैं। इसका दूसरा संस्करण १८३५ ई० में उपर्युक्त प्रेस से और तीसरा संस्करण १८३७ में मेडिकल हाल प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। ये दोनों संस्करण राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में उपलब्ध हैं।

किस्सा हातिमताई

सन् १८३८ ई० में योगध्यान मिश्र, माखन लाल भंडारी और विष्णु नारायण द्वारा 'हिन्दुस्तानी' से अनूदित 'किस्सा हातिमताई' का प्रकाशन कलकत्ता से हुआ। ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन में इसकी एक प्रति विद्यमान है।[2] सन् १८४२ ई० में वनारस अखवार प्रेस, वनारस से प्रकाशित 'हातिमताई' की एक प्रति, जिसकी भाषा उर्दू और लेखक मीर मुंशी लक्ष्मी दास वताये गये हैं, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में उपलब्ध है।[3] इस कथा का १८५१ ई० में प्रकाशित संस्करण भी राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में संगृहीत है।[4]

'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस' में 'हातिमताई' के दो अनुवादों और उनके विभिन्न संस्करणों की सूचनाएँ दी हुई हैं।[5]

(१) हातिमताई, दि ऐडवेन्चर्स ऑफ हातिमताई, ट्रान्सलेटेड फ्रॉम दि परसियन, पृ० सं० २७२, कलकत्ता १८७४।

---

१. प्रा० स्था०—रा० पु० कलकत्ता, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उपदेश कथा और इंगलैंड की उपाख्यान का चुम्बक ष्टुयार्ट साहेव ने किया हुआ। स्टेवार्ट्स हिस्टोरिकल एनेक्डोटस, विथ ए स्केच ऑफ दि हिस्टरी ऑव इंगलैंड ऐंड हर कनेक्शन विथ इंडिया, ट्रांसलेटेड वाई रेवरेण्ड डब्ल्यू० टी० एडम, कलकत्ता, प्रिंटेड ऐट दि कलकटा स्कूल वुक सोसाइटीज प्रेस, सरकुलर रोड, १८२५।

२. किस्सा हातिमताई का, अनु० योगध्यान मिश्र, माखनलाल भंडारी और विष्णुनारायण, कलकत्ता, १८३८, २८० पृ०, हिन्दुतानी से अनूदित [कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, पृ० २५]

३. लक्ष्मीदास मीरमुन्शी, हातमताई, वनारस, वनारस अखवार प्रेस, १८४२, १६४ पृ०, आकार २७ से०। प्रा० स्था० राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता [कृष्णाचार्य 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ']

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—"स्वस्ति श्री ५ महाराजाधिराज सुरेन्द्र विक्रम शाहदेव संसेर जंग वहादुर तखतनशीन नेपाल के उदारत्व से श्री ३ कमेंडर इन चिफ जनरल वमवहादुर कुँवर राणाजी साहेव की सहायता और मेहरवानी से यह किताव हातमताई मीर मुन्शी लक्ष्मी दास के कोशिश से दुरुस्त जवान उर्दू में हुआ है "सम्वत् १९०८".

ईश्वर के गोविन्द रघुनाथ थत्ते ने इस किताव को वनारस अखवार के छापखाने में आम के फायदे के वासते छपवाया। नक्शे के वरक छोड़कर १९६ सफा में तमाम है इस किताव का ग्रन्थ अन्दाज में ५५००.

५. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० ६२.

(२)— — पृ० सं० २१०, कलकत्ता १८८५।

(३) हातिमताई का किस्सा, ट्रांसलेटेड वाई जीवाराम जाट फ्रॉम दि हिन्दुस्तानी आराइशे महफिल ऑफ हैदर वख्श, पृ० सं० १७२, लखनऊ १८७७।

(४)— — पृ० सं० २४४, दिल्ली, १८७८।

(५)—तीसरा संस्करण, पृ० सं० २३०, लखनऊ १८८५।

(६)—ट्रान्सलेटेड वाइ यशवंत गणेश वटवणोकर, पृ० सं० ६, ३७७, वम्बई १८८९।

'हातिमताई' की कहानी का एक दूसरा अनुवाद कृष्णालाल ने हैदरवख्श लिखित 'आराइशे महफिल' नामक उर्दू पुस्तक से प्रस्तुत किया और इसका नाम सभा शृंगार रखा। इसका पहला संस्करण आगरा से १८७१ ई० और दूसरा संस्करण १८७४ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका एक संस्करण (गुरुमुखी अक्षरों में) लाहौर से १८७५ ई० में प्रकाशित हुआ।[1]

इस प्रकार 'हातिमताई' के किस्से के कम से कम १० संस्करण १८३८ ई० से १८८९ ई० के वीच हुए थे। नवल किशोर प्रेस, लखनऊ और कचौड़ी गली, वनारस से इस किस्से के अब तक कितने अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं, यह वता पाना असम्भवप्राय है, क्योंकि वाद के प्रकाशित संस्करणों में प्रकाशनकाल नहीं दिया हुआ है। इन तथ्यों से इस कथा की लोकप्रियता प्रमाणित होती है।

कथासार

सन् १८३९ ई० में मार्शमैन लिखित 'ब्रीफ सर्वे ऑव ऐन्सिएंट हिस्टरी' का पं० रतन लाल द्वारा प्रस्तुत 'कथासार' शीर्षक अनुवाद स्कूल बुक सोसाइटी, आगरा से प्रकाशित हुआ।[2] इस पुस्तक में प्राचीन ऐतिहासिक कथाएँ रोचक शैली में प्रस्तुत की गयी हैं

मनोरंजन इतिहास

सन् १८४६ ई० में रेवरेंड एम० डी० ऐडम द्वारा अनूदित 'मनोरंजन इतिहास' नामक गद्यकथा कलकत्ता से प्रकाशित हुई। 'कैटेलग ऑव दि लाइब्रेरी ऑव दि

---

१. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० ६४ पर 'सभाशृंगार' के विभिन्न संस्करणों की सूचना निम्नलिखित रूप में दी हुई है: सभा शृंगार, दि स्टोरी ऑफ हातिमताई, ट्रान्सलेटेड वाई कृष्णा लाल फ्रॉम दि आराइशे महफिल ए हिन्दुस्तानी वर्सन वाइ हैदरवख्श (हैदरी) ऑफ दि परसियन ओरिजिनल, पृ० सं० २७०, आगरा, १८७१: पृ० सं० २७७, आगरा १८७४ (गुरुमुखी कैरेक्टर), पृ० सं० २८०, लाहौर १८७५.

२. प्रा० स्था०—रा० पु० कलकत्ता। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
मार्शमैन्स ब्रीफ सर्वे ऑव ऐन्सिएंट हिस्टरी, ट्रान्सलेटेड इन टू हिन्दी फॉर दि आगरा स्कूल बुक सोसाइटी, वाइ पंडित रतन लाल, एडीटेड वाइ दि रेवरेंड जे० जे० मूर (नागराक्षरों में)—कथासार, पंडित रतन लाल ने आगरा स्कूल बुक सोसाइटी के लिए मार्शमन साहव के प्राचीन इतिहास का हिन्दी भाषा में उलथा कर कथासार नाम धरा और पादरी मोर साहव ने इस पुस्तक की पुनः परीक्षा की। दिसम्बर सन् ई० १८३९ मार्गशिर संवत् १८९६, यह पुस्तक आगरा स्कूल

इंडिया ऑफिस' में इस पुस्तक के विभिन्न संस्करणों की सूचना निम्नलिखित रूप में दी हुई है।[१]

(१) मनोरंजन इतिहास, प्लीजिंग टेल्स, ट्रान्सलेटेड वाइ दि रेव० एम० टी० — ऐडम, पृ० सं० २३, कलकत्ता १८४६।
(२) — — पृ० सं० ३६, आगरा १८४७।
(३) — — इंगलिश एन्ड हिन्दी, पृ० सं० ५९, बनारस १८७७।

सुखसागर

श्री व्रजरत्नदास के अनुसार सन् १८४६ ई० (सं० १९०३) में ही काशी निवासी राय मक्खन लाल ने श्रीमद्भागवत का भावानुवाद 'सुखसागर' के नाम से किया। किन्तु यह अनुवाद मूल संस्कृत से न होकर अबुल फैज फैजी के फारसी अनुवाद से किया गया था। इस 'सुखसागर' के कई संस्करण नवल किशोर प्रेस से निकल चुके हैं। इसमें फारसी अरबी के शब्द कहीं-कहीं ऐसे आ गये थे कि कम शिक्षित लोगों को समझने में कठिनाई होती थी, अतः लेखक के समय में ही वे निकाल दिये गये। सन् १८७४ ई० में 'सुखसागर' का उर्दू लिपि में भी एक संस्करण नवल किशोर प्रेस से प्रकाशित हुआ था।[2] इससे इस ग्रन्थ की लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है।

चहार दरवेश

सन् १९०१ ई० में ही जान गिल क्राइस्ट ने दिल्ली निवासी मीर अम्मन से 'अमीर खुसरू दिल्ली वाले' द्वारा फारसी भाषा में रचित 'चहार दरवेश' नामक प्रसिद्ध कथा का 'बागो बहार' शीर्षक से उर्दू अनुवाद कराया था।[3] यह पुस्तक हिन्दुस्तानी प्रेस से १८०२ ई० में फारसी लिपि में छपी थी। सन् १८४७ ई० में लक्ष्मी नारायण नामक लेखक ने इसका नागरी लिप्यंतर करके इसे 'किस्सा चार दरवेश का' शीर्षक से काश्मीर यन्त्रालय, कलकत्ता से प्रकाशित कराया।[४] इसके बाद १८७७ ई० में जीवाराम जाट ने मीर अम्मन के 'बागोबहार' का हिन्दी अनुवाद 'चहार दरवेश' शीर्षक से प्रस्तुत किया, जो नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[५] १८८५ ई० में इसका दूसरा संस्करण[६] तथा १९२१ ई० में दसवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ।[७] 'बागोबहार' का एक

बुक सोसाइटी के छापेखाने में छपी।

१. कैटेलग ऑव दि लाइब्रेरी ऑव दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० ६२.
२. हिन्दी उपन्यास साहित्य (६), पृ० १२४-२५.
३. चहार दरवेश, अनु० जीवाराम जाट, प्र० नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, दसवाँ संस्करण १९२१, भूमिका।
४. किस्सा चार दरवेश का, कलकत्ता काश्मीरी यन्त्रालय, १८४७, लक्ष्मी नारायण ने नागरी लिप्यन्तर किया। पृ० सं० १६०, आकार २६ से०, प्रा० स्था०—राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता।
५. कैटेलग ऑव दि लाइब्रेरी ऑव दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० सं० ६१.
६. उपरिवत्।
७. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चहार दरवेश, इसमें चार योगियों के

दूसरा अनुवाद श्रीधर भट्ट ने १८८३ ई० में प्रस्तुत किया, जो सुधानिधि यन्त्र, कलकत्ता से उसी वर्ष प्रकाशित हुआ।[1] इस कथा का एक अन्य हिन्दी अनुवाद वासुदेव त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया, जो १८८५ ई० के पूर्व चितपुर रोड, कलकत्ता से श्री नृत्यलाल शील द्वारा मुद्रित हुआ था।[2] इस अनुवाद का एक 'नूतन संस्करण' १९०० ई० में कलकत्ते से नृत्यलाल शील द्वारा मुद्रित किया गया।[3] इसका दूसरा संस्करण बिजली प्रेस ने एस० सी० शील द्वारा प्रकाशित हुआ।[4]

'चहार दरवेश' का एक दूसरा संस्करण १८९२ ई० के पूर्व भूषण घोष ऐंड ब्रादार, सोनागाछी १ नम्बर, देवान पाड़ा, कलकत्ता, से भी प्रकाशित हो चुका था।[5]

'चहार दरवेश' के उपर्युक्त विभिन्न अनुवादों और उनके दशाधिक संस्करणों से उसकी लोकप्रियता सिद्ध होती है।

क्रेस्टोमैथी हिन्दी एट हिन्दुई

सन् १८४९ ई० में एम० गार्सां द तासी द्वारा संकलित 'क्रेस्टोमैथी हिन्दी एट हिन्दुई' नामक गद्यसंग्रह इम्प्रिमेरी नेशनल, पेरिस से प्रकाशित हुई। यह पुस्तक नागराक्षरों में है तथा इसमें 'सिंहासन वत्तीसी,' 'भक्तमाल,' 'राजनीति,' 'हितोपदेश,' 'प्रेमसागर,' 'उषा चरित' और गोकुल नाथ रचित 'महाभारत' के चुने हुए अंश संकलित किये गये हैं। इस पुस्तक की रचना हिन्दी सीखने की इच्छा रखने वाले विदेशी छात्रों को ध्यान में रख कर की गयी थी।[6]

देशाटन की विविध कहानियाँ हैं। अनुवादक—जीवाराम जाट, लखनऊ, केसरी दास के द्वारा नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित, सन् १९२१ ई०, दसवीं बार।

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चहार दुरवेश, श्री श्रीधर भट्ट ने उरदू से नागरी में तरजमा किया, श्री श्रीनाथ साहा और श्री शशीभूषण घोष ऐंड ब्रदर के आदेश से कलकत्ता सुधानिधि यन्त्र में छापा भया, चितपुर रोड, वटतल्ला, ३१७ नम्बर भवने श्री कालिचरण दास द्वारा मुद्रित, सन् १२९० साल, किमत १ रोपैया।
अन्तिम पृष्ठ से प्राप्त सूचना—"संपूर्णम् शुभमस्तु ले० श्री श्रीधर भट्ट, संवत् १९४०"

२. इस संस्करण की सूचना १८८५ ई० में नृत्यलाल शील द्वारा मुद्रित सिंहासन वत्तीसी के अन्तिम आवरणपृष्ठ के विज्ञापन से प्राप्त होती है।

३. चहार दरवेश, अर्थात् चार योगियों के देशाटन की मनोहर कहानी। श्रीयुत पंडित वासुदेव त्रिपाठी द्वारा अनुवादित। श्री नृत्यलाल शील के आदेश से प्रकाशित। नूतन संस्करण कलकत्ते एन० एल० शील के यन्त्र में छापा गया। न० ६६ आहीरी टोला १३०७ (१९०० ई०) [यह पुस्तक मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय में है]

४. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—चाहार दरवेश, दूसरा संस्करण, बिजली प्रेस में एम० सी० शील से छापा गया। नं० ९८।३ आहीरी टोला, १३२३.

५. इस संस्करण की सूचना शशिभूषण घोष ऐंड ब्रादार द्वारा १८९२ ई० में मुद्रित सिंहासन वत्तीसी के अन्तिम पृष्ठ पर प्रकाशित विज्ञापन से प्राप्त होती है

६. प्रा० स्था०—रा० पु० कलकत्ता। मुख पृ० की प्रतिलिपि—
GARCIN DE TASSY, M., Chrestomathie Hindie et Hindouie Paris Imprimerie Nationale 1849 130 P., 22 Cm. Contents :

धर्म सिंह का वृत्तान्त

सन् १८५३ ई० में श्री लाल लिखित 'धर्म सिंह का वृत्तान्त' नामक गद्यकथा का तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। २० पृष्ठों की इस पुस्तक में एक सत्यनिष्ठ जमींदार की कहानी वर्णित की गयी है। 'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस' में इसके विभिन्न सस्करणों की सूचना निम्नलिखित रूप में दी हुई है।[१]

(१) धर्म सिंह का वृत्तान्त, दि स्टोरी ऑफ ऐन ऑनेस्ट जमींदार, वाई श्रीलाल, थर्ड एडीशन, पृ० सं० २०, आगरा १८५३

(२)	...	...	...	पृ० सं० १६, लाहौर १८७०
(३)	१२वाँ सस्करण			पृ० सं० १२, इलाहाबाद १८७३
(४)	...	...	—	पृ० सं० १६, दिल्ली १८७३
(५)	...	...	—	पृ० सं० १६, दिल्ली १८७४
(६)	...	...	—	पृ० सं० २६, १२ मो० लाहौर १८७४
(७)	... १३वाँ सस्करण,			पृ० सं० १२, इलाहाबाद १८७५
(८)	...	...	—	पृ० सं० २६, १२ मो० लाहौर १८७५
(९)	...	...	—	पृ० सं० १६, दिल्ली १८७६
(१०)	...	...	—	पृ० सं० २६, १२ मो० लाहौर १८७७

इस प्रकार 'धर्म सिंह का का वृत्तान्त' के कम से कम २३ संस्करण, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है, १८७७ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुके थे। यह तथ्य इस कथा की लोकप्रियता का असंदिग्ध प्रमाण है।

सूरजपुर की कहानी

सन् १८५३ ई० में श्री लाल ने 'सूरजपुर की कहानी' (भाग १) नामक गद्यकथा की रचना की, जिसमें एक बेईमान पटवारी की कथा वर्णित है। यह कथा सर्वप्रथम १८५३ ई० में आगरा से प्रकाशित हुई थी। इसका १०वाँ संस्करण १८६९ ई० में और ११वाँ संस्करण १८७५ ई० में प्रकाशित हुआ था। 'सूरजपुर की कहानी', भाग २, की रचना मुंशी नज्म अलदीन ने की थी जिसका द्वितीय संस्करण १८६६ ई० में इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इसका तीसरा संकरण १८७१ ई० में और पाँचवाँ संकरण १८७५ ई० में प्रकाशित हुआ था। इस गद्यकथा को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है। 'कैटेलग ऑफ दि इंडिया आफिस' से इसके सम्बन्ध में

Simhasan Battisi, Bhaktmal, Rajciti, Hitopadesa Fremasagar, Usacarit and Mohabharat by Gokulanath Vocabulaire Hindi-Hindoui-Francois as appendix, P. P. 1-144 in Nagari—Roman charactrs.

१. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, (२), पृ० ६२.

उपर्युक्त सूचनाएँ प्राप्त होती हैं।[1] तासी के अनुसार एच० एल० रीड ने अपनी इस रचना का अनुवाद श्री लाल से कराया था।

वीर सिंह का वृत्तान्त—

सन् १८५५ ई० में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द द्वारा लिखित 'वीर सिंह का वृत्तान्त' शीर्षक पुस्तक बनारस से प्रकाशित हुई।[2] इस कथा की रचना डब्ल्यू० एडवर्ड एस्क्वायर के अनुरोध से राजपूताने के राजपूतों में प्रचलित शिशुहत्या की बुराइयाँ दिखाने के लिए की गयी थी। इस कथा में शास्त्रवचनों को उद्धृत कर शिशुहत्या के दोषों और पापों का वर्णन किया गया है।[3]

वामा मनरंजन

राजा साहब की 'वामा मनरंजन' नामक पुस्तक भी बनारस से ही १८५६ ई० में प्रकाशित हुई, जिसमें दयमन्ती, अहल्या बाई, रानी भवानी आदि की महिलोपयोगी कथाएँ संकलित हैं। इस पुस्तक के अन्य संस्करणों की सूचना श्री कृष्णाचार्य ने अपने 'हिन्दी के अदिमुद्रित ग्रन्थ' में निम्नलिखित रूप में दी है—

वामा मनरंजन, बनारस, १८५६, ६८ पृ० (तासी)
... ... २रा सं०, बनारस, १८५९ ६८ पृ०
... ... ३रा सं० इलाहाबाद गवर्नमेंट प्रेस, १८६७ (ब्रि० म्यू०)

'कैटेलग ऑव दि लाइब्रेरी ऑव दि इण्डिया ऑफिस में (पृ० ६०) 'वामा मनरंजन' के निम्नलिखित संस्करणों की सूचना प्राप्त होती है :

वामा मनरंजन—टेल्स फॉर वीमेन बाइ बाबू शिव प्रसाद
पीपी ४८ इलाहाबाद १८६०
... ... थर्ड एडीशन, पीपी ४८, इलाहाबाद १८६९
... ... चतुर्थ एडीशन, पीपी ४८ इलाहाबाद १८७५

'वामा मनरंजन' का १८७५ ई० में प्रकाशित चौथा संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[4]

---

१. सूरजपुर की कहानी, दि स्टोरी ऑफ ए डिजॉनेस्ट पटवारी बाई
श्री लाल, पार्ट १, पृ० सं १२ आगरा, १८५३
.........टेन्थ एडीशन, पृ० सं १० इलाहाबाद, १८६६
.........एलेवेन्थ एडीशन, पृ० सं० १० इलाहाबाद, १८७५
सूरजपुर की कहानी, भाग २, बाई मुन्शी नज्म
अलदीन सेकेण्ड एडीशन, पृ० सं १४ इलाहाबाद, १८६६
... थर्ड एडीशन, पृ० सं० १४ इलाहाबाद, १८७१
फिफ्थ एडीशन, पृ० सं० १४ इलाहाबाद, १८७५

२. वीर सिंह का वृत्तान्त, बनारस, १८५५, ४१ पृ०, (ब्रि० म्यू०)
—कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, पृ० १२७

३. हिन्दी सलेक्शंस, बनारस मेडिकल हॉल प्रेस, १८६७, 'वीर सिंह का वृत्तान्त' के आरम्भ की टिप्पणी।

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वामा मनरंजन, टेल्स फार वीमेन, श्री मन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तर

लड़कों की कहानी

राजा शिवप्रसाद की 'लड़कों की कहानी' नामक पुस्तक का दूसरा संस्करण इलाहाबाद से १८६१ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] इसका तीसरा संस्करण १८७६ में मेडिकल हाल प्रेस, बनारस से छपा।[2]

शुकबहत्तरी

सन् १८५९ ई० में दिवाकर छापाखाना, बनारस से 'शुकबहत्तरी भाषा' नामक गद्यकथा प्रकाशित हुई।[3] यह संस्कृत गद्यकथा 'शुक सप्तति' का अनुवाद है। 'शुक सप्तति' का एक दूसरा अनुवाद 'शुक बहोत्तरी चित्र सहित' शीर्षक से (अ० भैरव प्रसाद) बम्बई से १८६४ ई० में प्रकाशित हुआ।

'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इण्डिया ऑफिस', पृ० ६५ में 'शुक बहत्तरी' के छह संस्करणों की सूचना निम्नलिखित रूप में दी हुई है—

शुक बहत्तरी, सेवेन्टी टू टेल्स ऑफ ए पैरोट एडेप्टेड फ्रॉम दि संस्कृत शुक सप्तति,

—	—	—पृ० सं० ८०,	दिल्ली, १८७४
—	—	—पृ० सं० ८०,	लखनऊ, १८७४
—	—	—पृ० सं० ८०,	दिल्ली, १८७७
—	—	—पृ० सं० ८०,	दिल्ली, १८७७
—	—	—पृ० सं० ८०,	दिल्ली, १८७९

शुक बहोत्तरी ए हिन्दी वर्सन ऑफ दि संस्कृत शुकसप्तति टेल्स ऑफ ए पैरोट बाई भैरव प्रसाद; पृ० सं० २१४, १६ मो० बम्बई १८७८।

'शुकबहत्तरी' का एक अन्य संस्करण १८८४ ई० में मतबै शिगूफै गुलजार अवध से प्रकाशित हुआ।[4]

देशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार राजा शिव प्रसाद ने बनाई। ....इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापी गई, सन् १८७५ ई० चौथी बार ५००० पुस्तकें।

१. लड़कों की कहानी, २ रा० सं० इलाहाबाद, १८६१. ५० पृ० [ब्रि० म्यू०]—कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, पृ० १२८।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। गुटका आकार १२ से०×८ से० मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लड़कों की कहानी, वलियम इडवार्ड्स साहिब बहादुर की आज्ञानुसार बनाई, बनारस मेडिकल हाल के छापाखाने में तीसरी बार छापी गई। १८७६, पृ० सं० ५०।

३. शुकबहत्तरी भाषा, बनारस, दिवाकर छापाखाना (शिवचरण के इहाँ), १८५९ ई० (१९१६ वि०), ६१ पृ०, २६.५ से०। लीथो, कलम—खगेनदास, छापने वाले-बदल कारीगर (रा० ग्र०) [कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ, पृ० ७६५]

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-शुक बहत्तारी मतबै शिगूफे गुलजार अवध में छपी। (अन्तिम पृष्ठ) इति शुक बहत्तरी संपूर्णम्, सं० १९४१, पृ० सं० ८०।

तोता कहानी

सन् १८०४ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता की तरफ से 'तोता कहानी' नामक कथापुस्तक फारसी लिपि में प्रकाशित हुई थी ।[1] यह कादिर बख्श की फारसी रचना का मुन्शी हैदरबख्श द्वारा किया गया अनुवाद था ।[2] सम्भवत: कादिरबख्श ने संस्कृत की 'शुक सप्तति' कथा के आधार पर ही इसकी रचना की थी । बहुत दिनों तक यह कहानी उर्दू भाषा और फारसी लिपि में जनता के बीच प्रचलित रही । सन् १८९७ ई० में रामभजन मिश्र 'स्वतंत्र' द्वारा प्रस्तुत किया हुआ इसका 'तोता कहानी' शीर्षक अनुवाद मुलतान मल प्रिंटिंग प्रेस, छावनी, नीमच मे प्रकाशित हुआ ।[3]

शुक सारिका दर्शन उर्फ तोते मैने का किस्सा

सम्भवत: 'शुक सप्तति' के आधार पर ही किसी युगलानन्द जी ने 'शुक सारिका दर्शन उर्फ तोते मैने का किस्सा' (बारह भाग) लिखा जो १९०७ ई० में लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ ।[4] बाद में चल कर किसी पंडित रंगीलाल ने भी 'किस्सा तोता मैना' लिखा जो आजकल ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, बुकसेलर, वाराणसी के यहाँ से प्रकाशित होकर फुटपाथों पर विकता है । आजकल 'तोता मैना' के जो किस्से प्रकाशित होते हैं, उन पर संस्करण-संख्या या प्रकाशन-वर्ष नहीं दिया रहता । पर यह असंदिग्ध है कि साक्षरमात्र हिन्दी पाठकों में इस कथा का आज भी बहुत प्रचार है ।

इस प्रकार १८५९ ई० से लेकर १९०७ ई० तक के बीच 'शुक सप्तति' के आधार पर लिखित कथापुस्तकों के कम से कम ११ संस्करण अवश्य छप चुके थे । यह इस कथा की लोकप्रियता का असंदिग्ध प्रमाण है ।

फूलों का हार

सन् १८५९ ई० में आर्फन प्रेस, मिर्जापुर से, 'फूलों का हार' नामक कथापुस्तक ८ भागों में प्रकाशित हुई । इस पुस्तक के सम्बन्ध में और कोई सूचना नहीं मिलती ।[5]

---

१. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, फोर्ट विलियम कॉलेज; प्र० इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, सं० २००४ वि०, पृ० २६३.

२. उपरिवत ।

३. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-तोता कहानी, प्रथम भाग, दिलचस्प कहानियों का समूह, रामभजन मिश्र स्वतंत्र अनुवादित जिसे बाबू दीपचन्द मैनेजर ने निज प्रबंध से छापकर प्रकाशित किया; "मुलतान मल प्रिंटिंग प्रेस" छावनी नीमच, विक्रमाब्द १९५४, पृ० सं० ३२, पुस्तक चार भागों में समाप्त ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शुकसारिका दर्शन उर्फ तोते मैने का किस्सा, बारह भाग (रसीदपुर शिवहर वाले) कबीरपंथी भारत पथिक स्वामीपर्मी श्री युगलानन्द जी विरचित जिसको गंगा विष्णु श्री कृष्णदास ने अपने "लक्ष्मी वेंकटेश्वर" छापेखाने में छाप कर प्रसिद्ध किया, संवत १९६४, शकाब्द: १८२९, कल्याण. मुम्बई । पृ० सं० ३३८ ।

५. फूलों का हार—बालकों के लिए, ८ भाग, मिर्जापुर, आर्फन प्रेस १८५९—छठा भाग, मिर्जापुर, १८५० नीति सम्बन्धी बाल साहित्य (ब्रि० म्यू०) [कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ; पृ० ८७]

नल प्रसंग

श्री व्रजरत्न दास के अनुसार सन् १८६० ई० (सं० १९१७ वि०) में दाऊ जी अग्निहोत्री रचित 'नल प्रसंग' नामक गद्यकथा काशी से मुद्रित-प्रकाशित हुई थी। इस कथा की रचना नल-दमयन्ती के प्रेमाख्यान को लेकर की गयी है।[१]

राविन्सन क्रूसो का इतिहास

सन् १८६० ई० में पं० वदरी लाल ने डैनियल डीफो रचित अँगरेजी के प्रसिद्ध उपन्यास 'रॉविन्सन क्रूसो' का अनुवाद 'रॉविन्सन क्रूसो का इतिहास' शीर्षक से प्रस्तुत किया, जो इसी वर्ष काशी के मेडिकल हाल प्रेस से प्रकाशित हुआ। पं० वद्रीलाल जी ने यह अनुवाद मूल अँगरेजी से न करके उसके वँगला अनुवाद से किया था।[२] इसका दूसरा संस्करण १८७३ ई० में प्रकाशित हुआ था।[३] 'राविन्सन क्रूसो का इतिहास' हिन्दी का पहला अनूदित उपन्यास है।

नया काशी खंड

सम्भवतः १८६० में ही वनारस से 'नया काशी खंड' नामक गद्यकथा प्रकाशित हुई थी, जिसमें कहानी के रूप में ईसाई धर्म के प्रभाव से वनारस तथा भारत के अन्य भागों में होने वाले भावी परिवर्तनों का वर्णन किया गया है। 'कैटलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इण्डिया ऑफिस' में इसकी सूचना दी हुई है।[४]

राजदूतों की कथा

सन् १८६१ ई० में डब्ल्यू० एडम्स लिखित 'दि किंग्स मेसेंजर' का अनुवाद 'राजदूतों की कथा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। पं० कालीचरण की सहायता से मुंशी शिव नारायण ने यह अनुवाद मूल ग्रन्थ के उर्दू अनुवाद से प्रस्तुत किया था। इण्डिया ऑफिस पुस्तकालय के कैटेलग में इसकी सूचना दी हुई है।[५] इस गद्यकथा की एक प्रति आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[६]

---

१. हिन्दी उपन्यास साहित्य (६), पृ० १२६।
२. ये सूचनाएँ द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी द्वारा अनूदित राविन्सन क्रूसो, प्र० नेशनल प्रेस, कटरा, प्रयाग, प्र० सं० १९१३ के उपोद्घात से प्राप्त होती हैं।
३. राविन्सन क्रूसो का इतिहास, दि ऐडवेन्चर्स ऑफ राविन्सन क्रूसो ट्रान्सलेटेड वाई वदरी लाल फ्रॉम ए वंगाली वर्शन, पृ० सं० ४५५, वनारस, १८६० ।—सेकेंड एडीशन, पृ० सं० २१२, १२ मो०, वनारस १८७३ [कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० ६६ से]
४. नया काशी खंड, ए टेल इन दि फॉर्म ऑफ ए डिसक्राइविंग दि फ्यूचर चेंजेज इन वनारस एण्ड अदर पार्ट्स ऑफ इंडिया अंडर दि सिविलाइजिंग इनफ्लुएंस ऑफ क्रिस्चियानिटी, पृ० सं० ८+२११, ६ भाग, वनारस १८६०। [कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, पृ० ६२]
५. राजदूतों की कथा, दि किंग्स मेसेंजर्स, ट्रांसलेटेड वाइ मुन्शी शिवनारायण एसिस्टेड वाइ पं० कालीचरण फ्रॉम दि हिन्दुस्तानी वर्शन ऑफ दि इंगलिश ओरिजिनल ऑफ डब्ल्यू० एडम्स, पृ० सं० ६२, आगरा, १८६१। [कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, पृ० ६४ से]
६. आ० भा० पु०, काशी में उपलब्ध प्रति के आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—विद्या शक्ति रास्त राजदूतों की

फूलमणि और करुणा का वृत्तान्त

सन् १८६५ ई० में मिशन प्रेस, इलाहाबाद से 'फूलमणि और करुणा का वृत्तान्त' नामक ईसाई धर्मोपदेशप्रधान गद्यकथा उर्दू से अनूदित होकर प्रकाशित हुई। इस पुस्तक की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में संगृहीत है।[1]

शनैश्चर जी की कथा

सन् १८६५ ई० में ही जोरावर मल लिखित '(श्री) शनैश्चर जी की कथा' बम्बई से प्रकाशित हुई। श्री कृष्णाचार्य के अनुसार १८६० ई० में आगरा से प्रकाशित 'शनैश्चर कथा', जिसका दूसरा संस्करण १८७० ई० में प्रकाशित हुआ था, की प्रतियाँ इण्डिया ऑफिस पुस्तकालय, लंदन में उपलब्ध हैं।[2]

सिकन्दरशाह पातशाह शहजादे रमनशाह का किस्सा

सन् १८६५ ई० में बनारस से 'सिकन्दरशाह पातशाह के शहजादे रमनशाह का किस्सा' नामक गद्यकथा प्रकाशित हुई। राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में इस पुस्तक की एक प्रति है, पर आवरणपृष्ठ के फटे रहने के कारण लेखक और मुद्रक का पता नहीं चलता।

प्रह्लाद चरित्र

सन् १८६६ ई० में तुकाराम लिखित 'प्रह्लाद चरित्र' बम्बई से प्रकाशित हुआ। इसकी एक प्रति ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में उपलब्ध है।[3]

बुद्धि फलोदय

सन् १८६७ ई० में पं० कृष्णदत्त लिखित 'बुद्धि फलोदय' का छठा संस्करण इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इसका आठवाँ संस्करण १८७५ ई० में प्रकाशित हुआ।[4]

कृष्ण जन्म (खंड)

सन् १८६७ ई० में श्री बलदेव दास ने ब्रह्मवैवर्त पुराण के आधार पर 'कृष्णजन्म

कथा......मुन्शी शिवनारायण ने अँगरेजी से उर्दू में उलथा किया और फिर पं० कालीचरण की सहायता से हिन्दी में उलथा करके......सन् १८६१ ई० में छापेखाने मुफीद खलायक आगरे में छापी गई। पहली दफे ३०००।

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-फुलमणि और करुणा का वृत्तान्त, खिष्टीय स्त्रियों की शिक्षा के लिए, दि हिस्ट्री ऑफ फूलमणि एण्ड करुणा, ए बुक फॉर नेटिव क्रिस्चियन वुमेन ट्रान्सलेटेड फ्रॉम दि उर्दू, एलाहाबाद, प्रिंटेड ऐट दि मिशन प्रेस फॉर दि नार्थ इंडिया ट्रैक्ट सोसाइटी, १८६५, फर्स्ट एडीशन ३००० कॉपीज, पृ० सं० २६६।

२. जोरावर मल (श्री) शनैश्चरजी की कथा बम्बई १८६५, १८ पृ०, लीथो
—शनैश्चर कथा, आगरा, १८६० और १८७०, ४० पृ० (इ० ऑफिस)
[कृष्णाचार्य लिखित 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ' से]

३. तुकाराम, (अथ) प्रह्लाद चरित्र प्रारम्भ, बम्बई १८६६, ४३ पृ० लीथो (ब्रि० म्यू०) [कृष्णाचार्य लिखित 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० ५८ से]

४. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑव दि इंडिया ऑफिस, (२) पृ० ६१ से उद्धृत—बुद्धि फलोदय, मॉरल

खंड' नामक पुस्तक लिखी जो आगरा से प्रकाशित हुई ।[१]

हिन्दी सलेक्शन

सन् १८६७ ई० के लगभग जूनियर सिविल सर्वेंट्स को हिन्दी सिखाने के लिए सरकार द्वारा नियुक्त एक आयोग के निर्देशन में 'हिन्दी सलेक्शन' नामक पुस्तक तैयार की गयी जो १८६७ ई० में मेडिकल हॉल प्रेस, बनारस मे मुद्रित हुई । इस पुस्तक में प्रेमसागर, वीरसिंह का वृत्तान्त, वामा मनरंजन, राजा भोज का सपना, शकुन्तला कहानी ठेठ हिन्दी में, बिहारी की सतसई, रामायण बालकाण्ड, सभाविलास, कबीर की साखी तथा पद्मावत के चुने हुए अंश संकलित किये गये हैं ।[२]

यात्रा स्वप्नोदय

सन् १८६७ ई० में जॉन बन्यन लिखित प्रसिद्ध अँगरेजी उपन्यास 'पिलिग्रिम्स प्रोग्रेस' का अनुवाद 'यात्रा स्वप्नोदय' शीर्षक से लाजरस कम्पनी, बनारस से प्रकाशित हुआ। इसकी एक प्रति इंडिया ऑफिस पुस्तकालय, लन्दन में संगृहीत है । जान पड़ता है 'पिलिग्रिम्स प्रोग्रेस' का एक अन्य अनुवाद भी **'यिसुई यात्री की यात्रा'** शीर्षक से लुधियाना से, १८६७ में ही, प्रकाशित हुआ था ।[३]

'यात्रा स्वप्नोदय' का दूसरा संस्करण नार्थ इंडिया क्रिश्चियन ट्रैक्ट एण्ड बुक सोसाइटी द्वारा १८८५ ई० में प्रकाशित हुआ । आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी मे संगृहीत प्रति के आवरणपृष्ठ से ज्ञात होता है कि यह मूल अँगरेजी ग्रन्थ के बँगला अनुवाद का हिन्दी अनुवाद है ।[४] इस अनुवाद का एक दूसरा संस्करण १९०६ ई० में प्रकाशित हुआ जिसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में संगृहीत है ।

गुलबकावली

सन् १८६८ ई० में बनारस लाइट छापाखाना, बनारस से इज्जत अल्लाह लिखित

टेल्स बाई पंडित कृष्णदत्त, सिक्स्थ एडीशन, पृ० सं० १६, इलाहाबाद १८६७
—एर्थ एडीशन. पृ० सं० १६, इलाहाबाद १८७५.

१. पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खंड, अनु० बलदेव दास, आगरा १८६७, ६५६ पृ० (इंडिया ऑफिस) [कृष्णाचार्य लिखित 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० ८४ से]

२. प्रा० स्था०—रा० पु० कलकत्ता । मुखपृष्ठ कीप्रतिलिपि—
हिन्दी सलेक्शन, कम्पाइल्ड अंडर दि डाइरेक्शन ऑफ दि कमीशन एप्वाइंटेड बाई दि आर्डर ऑफ दि गवर्नमेंट ऑफ इंडिया इन दि मिलिटरी डिपार्टमेंट नं० १७५ डेटेड टेन्थ सेप्टेम्बर १८६४ टु एरेंज फॉर दि प्रेपेरेशन ऑफ हिन्दुस्तानी क्लास बुक्स ऐज लैंग्वेज टेक्स्ट्स टु बी पास्ड बाई जूनियर सिविल सर्वेन्ट्स ऐण्ड मिलिटरी ऑफिसर्स, बनारस, प्रिंटेड ऐट दि मेडिकल हाल प्रेस, १८६७.

३. बन्यन, जॉन, यात्रा स्वप्नोदय, बनारस, लाजरस कम्पनी १८६७, ४+३८० पृ० (इं० ऑफिस)
यिसुई यात्री की यात्रा जो स्वप्न के भाँति बयान किई गई । लुदेहाना, मिशन प्रेस १८६७, १०७ पृ० (ब्रि० म्यू० तथा इं० ऑफिस) [कृष्णाचार्य लिखित 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० ८८ से]

४. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
यात्रा स्वप्नोदय अर्थात् नाशनगर से स्वर्गपुर लों त्राणार्थी पुरुष की यात्रा का वृत्तान्त जो जान

'गुलबकावली' का अनुवाद प्रकाशित हुआ।[1] चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी में इस गद्यकथा की एक प्रति संगृहीत है। १८७४ ई० में 'गुलबकावली' का एक दूसरा अनुवाद, जिसे वैजूसिंह वर्मा ने '**बकावली सुमन**' नाम से अनूदित किया था, प्रकाशित हुआ।[2] 'गुलबकावली' का एक दूसरा अनुवाद १८८५ ई० के पूर्व नृत्यलाल शील द्वारा चितपुर रोड, कलकत्ता से मुद्रित किया गया था। इसकी सूचना १८८५ ई० में नृत्यलाल शील द्वारा कलकत्ते से प्रकाशित 'सिंहासन बत्तीसी' के अंतिम पृष्ठों पर प्रकाशित विज्ञापन से प्राप्त होती है।

'गुलबकावली' के अनुवाद का एक अन्य संस्करण ('गोले बकावली' शीर्षक से) श्रीशशिभूषण घोष एण्ड ब्रादार, सोनागाछि १ नम्बर, देवान पाड़ा, कलकत्ता, से १८९२ ई० के पूर्व मुद्रित हो चुका था। इसकी सूचना १८९२ ई० में शशिभूषण घोष एण्ड ब्रादार, कलकत्ता द्वारा मुद्रित 'सिंहासन बत्तीसी' के अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित विज्ञापन से प्राप्त होती है। यह अनुवाद हिन्दी पाठकों में इतना प्रिय हुआ कि इसके अनेक संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ तथा अन्य प्रकाशन-संस्थाओं से प्रकाशित हुए। चूंकि इनके प्रकाशकों ने इनकी संस्करण-संख्या तथा प्रकाशन-काल देना आवश्यक नहीं समझा है, इस कारण इनके संबंध में कोई प्रामाणिक सूचना दे पाना संभव नहीं है। 'किस्सा गुल-बकावली' के दो संस्करण जिन पर संस्करण-संख्या और प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, माहेश्वर पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध हैं। इनमें से एक नवल किशोर प्रेस, लखनऊ और दूसरा गदाधर प्रसाद, बुकसेलर, चौक, बनारस सिटी द्वारा प्रकाशित है।

रामाश्वमेध

सन् १८६९ ई० में मधुसूदन दास द्वारा 'पद्मपुराण' के आधार पर निर्मित '**रामाश्वमेध**' नामक पुस्तक बनारस से प्रकाशित हुई।[3] इसी वर्ष हिन्दी संस्कृत यंत्रालय, कलकत्ता से **किस्सा अफीमची** नामक गद्यकथा प्रकाशित हुई।[4] सन् १८६९ ई० में

बन्यन धर्मोपदेशक से रचा गया और हिंदी भाषा में उल्था किया गया है। ट्रांसलेटेड फ्रॉम दि बंगाली वर्सन ऐंड कम्पेयर्ड विथ दि इंगलिश, पब्लिश्ड बाइ दि नार्थ इंडियन क्रिश्चियन टैक्ट एण्ड बुक सोसाइटी, प्रिंटेड बाइ इ० जे० लाजरस एण्ट कों०, बनारस, ३०००, १८८५।

१. चैतन्य पुस्तकालय में संगृहीत प्रति के आवरण पृष्ठ की प्रतिलिपि—
गुलबकावली, उर्दू किताब से देवनागरी में उल्था करके छापी जिसे बहुत श्रम से शोभि के उज्जलता से मुंशी हरबंश लाल बाबू अविनाशी लाल और बाबू भोलानाथ की मरमति से बनारस लाइट छापेखाना में गोपीनाथ पाठक ने छापा, संवत् १९२४, बनारस, प्रिंटेड एट दि लाइट प्रेस, बाई गोपीनाथ पाठक, १८६८.

२. बकावली सुमन, द गुलेबकावली, ट्रांसलेटेड बाई वेजू सिंह वर्मा फ्रॉम दि हिन्दुस्तानी वर्सन ऑफ इज्जत अल्लाह, पृ० सं० ७८, लखनऊ, १८७४।—कैटलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया आफिस (२) पृ० ६१

३. पुराण, पद्मपुराण—रामाश्वमेध, अनु० मधुसूदन दास, बनारस, १८६९, २४१ पृ० लीथो. [ब्रि० म्यू०]

४. श्रीधर भट्ट, किस्सा अफीमची, कलकत्ता. हिंदी संस्कृत यंत्रालय, १८६९, ४३ पृ०, २३ सें०

खंड' नामक पुस्तक लिखी जो आगरा से प्रकाशित हुई ।[1]

हिन्दी सलेक्शन

सन् १८६७ ई० के लगभग जूनियर सिविल सर्वेंट्स को हिन्दी सिखाने के लिए सरकार द्वारा नियुक्त एक आयोग के निर्देशन में 'हिन्दी सलेक्शन' नामक पुस्तक तैयार की गयी जो १८६७ ई० में मेडिकल हॉल प्रेस, बनारस मे मुद्रित हुई । इस पुस्तक में प्रेमसागर, वीरसिंह का वृत्तान्त, वामा मनरंजन, राजा भोज का सपना, शकुन्तला कहानी ठेठ हिन्दी में, बिहारी की सतसई, रामायण बालकाण्ड, सभाविलास, कबीर की साखी तथा पद्मावत के चुने हुए अंश संकलित किये गये हैं ।[2]

यात्रा स्वप्नोदय

सन् १८६७ ई० में जॉन बन्यन लिखित प्रसिद्ध अँगरेजी उपन्यास 'पिलिग्रम्स प्रोग्रेस' का अनुवाद 'यात्रा स्वप्नोदय' शीर्षक से लाजरस कम्पनी, बनारस से प्रकाशित हुआ। इसकी एक प्रति इंडिया ऑफिस पुस्तकालय, लन्दन में संगृहीत है। जान पड़ता है 'पिलिग्रम्स प्रोग्रेस' का एक अन्य अनुवाद भी **'यिसुई यात्री की यात्रा'** शीर्षक से लुधियाना से, १८६७ में ही, प्रकाशित हुआ था ।[3]

'यात्रा स्वप्नोदय' का दूसरा संस्करण नार्थ इंडिया क्रिश्चियन ट्रैक्ट एण्ड बुक सोसाइटी द्वारा १८८५ ई० में प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी मे संगृहीत प्रति के आवरणपृष्ठ से ज्ञात होता है कि यह मूल अँगरेजी ग्रन्थ के बँगला अनुवाद का हिन्दी अनुवाद है ।[4] इस अनुवाद का एक दूसरा संस्करण १९०६ ई० में प्रकाशित हुआ जिसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में संगृहीत है ।

गुलबकावली

सन् १८६८ ई० में बनारस लाइट छापाखाना, बनारस से इज्जत अल्लाह लिखित

टेल्स बाई पंडित कृष्णदत्त, सिक्स्थ एडीशन, पृ० सं० १६, इलाहाबाद १८६७
—एर्थ एडीशन. पृ० सं० १६, इलाहाबाद १८७५.

१. पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खंड, अनु० बलदेव दास, आगरा १८६७, ६५६ पृ० (इंडिया ऑफिस) [कृष्णाचार्य लिखित 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० ८४ से]

२. प्रा० स्था०—रा० पु० कलकत्ता । मुखपृष्ठ कीप्रतिलिपि—

हिन्दी सलेक्शन, कम्पाइल्ड अंडर दि डाइरेक्शन ऑफ दि कमीशन एप्वाइंटेड बाई दि आर्डर ऑफ दि गवर्नमेंट ऑफ इंडिया इन दि मिलिटरी डिपार्टमेंट नं० १७५ डेटेड टेन्थ सेप्टेम्बर १८६४ ड एरेंज फॉर दि प्रेपेरेशन ऑफ हिन्दुस्तानी क्लास बुक्स ऐज लैंग्वेज टेस्ट्स टु बी पास्ड बाई जूनियर सिविल सर्वेन्ट्स ऐण्ड मिलिटरी ऑफिसर्स, बनारस, प्रिंटेड ऐट दि मेडिकल हाल प्रेस, १८६७.

३. बन्यन, जॉन, यात्रा स्वप्नोदय, बनारस, लाजरस कम्पनी १८६७, ४+३८० पृ० (इं० ऑफिस)
यिसुई यात्री की यात्रा जो स्वप्न के भाँति बयान किई गई । लुदेहाना, मिशन प्रेस १८६७, १०७ पृ० (ब्रि० म्यू० तथा इं० ऑफिस) [कृष्णाचार्य लिखित 'हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ', पृ० ८८ से]

४. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
यात्रा स्वप्नोदय अर्थात् नाशनगर से स्वर्गपुर लों त्राणार्थी पुरुष की यात्रा का वृत्तान्त जो जान

'गुलबकावली' का अनुवाद प्रकाशित हुआ ।[1] चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी में इस गद्यकथा की एक प्रति संगृहीत है। १८७४ ई० में 'गुलबकावली' का एक दूसरा अनुवाद, जिसे वैजूसिंह वर्मा ने **'बकावली सुमन'** नाम से अनूदित किया था, प्रकाशित हुआ ।[2] 'गुलबकावली' का एक दूसरा अनुवाद १८८५ ई० के पूर्व नृत्यलाल शील द्वारा चितपुर रोड, कलकत्ता से मुद्रित किया गया था। इसकी सूचना १८८५ ई० में नृत्यलाल शील द्वारा कलकत्ते से प्रकाशित 'सिंहासन वत्तीसी' के अंतिम पृष्ठों पर प्रकाशित विज्ञापन से प्राप्त होती है।

'गुलबकावली' के अनुवाद का एक अन्य संस्करण ('गोले बकावली' शीर्षक से) श्रीशशिभूषण घोष एण्ड ब्रादार, सोनागाछि १ नम्बर, देवान पाड़ा, कलकत्ता, से १८९२ ई० के पूर्व मुद्रित हो चुका था। इसकी सूचना १८९२ ई० में शशिभूषण घोष एण्ड ब्रादार, कलकत्ता द्वारा मुद्रित 'सिंहासन वत्तीसी' के अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित विज्ञापन से प्राप्त होती है। यह अनुवाद हिन्दी पाठकों में इतना प्रिय हुआ कि इसके अनेक संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ तथा अन्य प्रकाशन-संस्थाओं से प्रकाशित हुए। चूँकि इनके प्रकाशकों ने इनकी संस्करण-संख्या तथा प्रकाशन-काल देना आवश्यक नहीं समझा है, इस कारण इनके संबंध में कोई प्रामाणिक सूचना दे पाना संभव नहीं है। 'किस्सा गुलबकावली' के दो संस्करण जिन पर संस्करण-संख्या और प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, माहेश्वर पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध हैं। इनमें से एक नवल किशोर प्रेस, लखनऊ और दूसरा गदाधर प्रसाद, वुकसेलर, चौक, बनारस सिटी द्वारा प्रकाशित है।

रामाश्वमेध

सन् १८६९ ई० में मधुसूदन दास द्वारा 'पद्मपुराण' के आधार पर लिखित **'रामाश्वमेघ'** नामक पुस्तक बनारस से प्रकाशित हुई ।[3] इसी वर्ष हिन्दी संस्कृत यंत्रालय, कलकत्ता से **किस्सा अफीमची** नामक गद्यकथा प्रकाशित हुई।[4] सन् १८६९ ई० में

बन्यन धर्मोपदेशक से रचा गया और हिंदी भाषा में उल्था किया गया है। ट्रांसलेटेड फ्रॉम दि बंगाली वर्सन ऐंड कम्पेयर्ड विथ दि इंगलिश, पब्लिश्ड बाइ दि नार्थ इंडियन क्रिस्चियन टैक्ट एण्ड बुक सोसाइटी, प्रिंटेड वाइ इ० जे० लाजरस एण्ड को०, बनारस, ३०००, १८८५।

१. चैतन्य पुस्तकालय में संगृहीत प्रति के आवरण पृष्ठ की प्रतिलिपि—
गुलबकावली, उर्दू किताब से देवनागरी में उल्था करके छापी जिसे बहुत श्रम से शोधि के उज्जलता से मुंशी हरवंश लाल बाबू अविनाशी लाल और बाबू भोलानाथ की सम्मति से बनारस लाइट छापेखाना में गोपीनाथ पाठक ने छापा, संवत् १९२४, बनारस, प्रिंटेड एट दि लाइट प्रेस, बाई गोपीनाथ पाठक, १८६८.

२. बकावली सुमन, द गुलेबकावली, ट्रांसलेटेड बाई वैजू सिंह वर्मा फ्रॉम दि हिन्दुस्तानी वर्शन ऑफ इज्जत अल्लाह, पृ० सं० ७९, लखनऊ, १८७४।—कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया आफिस (२) पृ० ६१

३. पुराण, पद्मपुराण—रामाश्वमेघ, अनु० मसुसूदन दास, बनारस, १८६९, २५१ पृ० लीथो, [ब्रि० म्यू०]

४. श्रीधर भट्ट, किस्सा अफीमची, कलकत्ता, हिंदी सस्कृत यंत्रालय, १८६९, २१ पृ०, २१ से०

ही पं० गौरीदत्त कृत 'दि स्टोरी ऑफ दि थ्री जाएंट्स' नामक अँगरेजी कथापुस्तक का 'तीन देवों की कहानी' शीर्षक अनुवाद मेरठ से प्रकाशित हुआ।[१] इस गद्यकथा का दूसरा संस्करण १८७० ई० में मेरठ से प्रकाशित हुआ जिसकी एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में उपलब्ध है।[२]

(रा० ग्र०), [कृष्णाचार्य लिखित, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ से]

१. तीन देवों की कहानी, दि स्टोरी ऑफ दि थ्री जाएंट्स, ट्रांसलेटेड फ्रॉम दि इंगलिश बाइ पंडित गौरीदत्त, पृ० सं० ४८, १२ मो०, मेरठ १८६९। [कैटलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ इंडिया ऑफिस, खंड २, भाग ३, पृ० ६९]

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—

तीन देवों की कहानी, जीविका परिपाटी के विषय में पंडित गौरी दत्त ने पंडित पालीराम की सहायता से अपने अंगरेजी से उल्था किये हुए 'तीन देवों के किस्से' से हिन्दी भाषा में उल्था किया। छापेखाने हाश्मी में छापी गई, मेरठ, सन् १८७० ई०, सेकेन्ड एडीशन ८०० कॉपीज, दूसरी बार ८००, पुस्तक मोल एक पुस्तक का ≡)

द्वितीय अध्याय

हिन्दी उपन्यास का उद्भव और शैशव

१८७०-१८८६

हिन्दी उपन्यास का उद्भव और शैशव

(१८७०-१८८९)

हिन्दी गद्यकथा साहित्य के इतिहास में १८७० ई० का साल बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इस वर्ष हिन्दी में, लगभग ७० वर्षो के बाद, एक मौलिक कथापुस्तक लिखी गयी, जो अनेक दृष्टियों से प्राचीन कहानियों से सर्वथा नवीन तथा एक नये प्रकार के साहित्यरूप का, जिसे बाद में उपन्यास की संज्ञा दी गयी, आरम्भविन्दु है। यह कथापुस्तक है, पं० गौरी दत्त लिखित **'देवरानी जेठानी की कहानी'**। इस कथापुस्तक से, जैसे मौलिक-कथा-पुस्तकों की रचना का द्वार ही खुल गया। अगले बीस वर्षो तक हिन्दी पाठकों की अल्पता के बावजूद, मौलिक गद्यकथाएं लिखी जाती रहीं और कथासाहित्य में विषय और शिल्प सम्बन्धी नये नये प्रयोग होते रहे। इन्हीं प्रयोगों से हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास हुआ।

१८८९ ई० तक मौलिक कथासाहित्य की धारा बहुत क्षीण रूप में प्रवाहित होती रही। अचानक १८९० ई० में कुछ ऐसे प्रतिभाशाली कथाकारों का उदय हुआ जिन्होंने हिन्दी कथासाहित्य को देखते देखते परिमाणतः बहुत समृद्ध बना दिया। इस प्रकार १८९० ई० हिन्दी कथासाहित्य का दूसरा महत्त्वपूर्ण वर्ष है। प्रस्तुत परिच्छेद में १८७०-१८८९ ई० के मौलिक और अनूदित हिन्दी कथासाहित्य का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

मौलिक कथा साहित्य

देवरानी जेठानी की कहानी

जैसा कहा जा चुका है. हिन्दी गद्य कथासाहित्य के इतिहास में सन् १८७० ई० का साल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसी वर्ष **पं० गौरीदत्त** लिखित 'देवरानी जेठानी की कहानी', जो अपने ढंग की पहली मौलिक गद्यकथा है, मेरठ, छापाखाना जिमाई मे छपकर प्रकाशित हुई। राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में इस पुस्तक की एक प्रति संगृहीत है।[१]

वामा शिक्षक

इसके दो वर्ष बाद, सन् १८७२ ई० में, **मुंशी ईश्वरी प्रसाद** और **मुंशी कल्याण राय**

---

१. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि —देवरानी जेठानी की कहानी, एक वृद्ध और पढ़ी लिखी स्त्री की सम्मति में पंडित गौरीदत्त ने बनाई; श्री एम० केमसन साहिब बहादुर डेरेक्टर ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन के द्वारा श्री मन्महाराजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारी श्रीयुत लेफटिनेंट गवर्नर बहादुर के यहाँ से १०० रुपये इनाम मिले, मेरठ छापेखाने जिमाई में छापी गई, सन् १८७०।

ने मिलकर 'वामा शिक्षक' नामक एक स्त्रीशिक्षा प्रधान मौलिक गद्यकथा की रचना की, जो लिखे जाने के ११ वर्ष बाद, १८८३ ई० में, विद्या दर्पण छापाखाना, मेरठ से मुद्रित हुई। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस पुस्तक की एक प्रति संगृहीत है।[1]

स्त्री दर्पण

सन् १८८६ ई० प्रकाशित **स्त्री उपदेश** (**ले० पं० माधव प्रसाद**) की 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि उक्त लेखक ने १८७५ ई० के पूर्व इसी ढंग की 'स्त्री दर्पण' नामक कथा पुस्तक लिखी थी, जो नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुई थी।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मालती (उपन्यास)

सन् १८७५ में 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के दो अंकों में (फरवरी और मार्च १८७५ ई०) 'मालती' नामक उपन्यास अपूर्ण रूप में प्रकाशित हुआ।[3] इस गद्यकथा के शीर्षक (मालती) के आगे कोष्ठक में 'उपन्यास' शब्द दिया हुआ है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, इसके पूर्व किसी गद्यकथा को 'उपन्यास' संज्ञा नही दी गयी थी। दुर्भाग्यवश इस उपन्यास के रचयिता का पता नहीं चलता।

भाग्यवती

सन् १८७७ ई० में **श्रद्धाराम फिल्लौरी** ने 'भाग्यवती' शीर्षक गद्यकथा की रचना की। श्री विजय शंकर मल्ल के अनुसार इसका प्रकाशन दस वर्ष बाद सन् १८८७ मे हुआ।[4] श्री मल्ल ने यद्यपि अपने कथन के समर्थन में कोई प्रमाण नहीं दिया है, पर उनकी सूचना सही जान पड़ती है। 'हिन्दी प्रदीप', जिल्द १०, सं० ८, अप्रील १८८७ में 'भाग्यवती' की संक्षिप्त समीक्षा प्रकाशित हुई थी, जिससे इसके १८८७ ई० में प्रकाशित होने का अनुमान किया जा सकता है। 'भाग्यवती' का प्रथम मुद्रित संस्करण मुझे उपलब्ध नहीं हो सका है। इसका पाँचवा संस्करण, जो १९१२ ई० मे प्रकाशित हुआ था, आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी मे उपलब्ध है।[5] इसकी भूमिका के नीचे, जो स्वयं

---

१. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—वामा शिक्षक,—अर्थात् दो भाई और चार बहनों की कहानी जिसको मुन्शी ईश्री प्रसाद मुदर्रिस रियाजी और मुन्शी कल्याण राय मुदर्रिस अव्वल उर्दू मदरसेदस्तूर तालीम मेरठ जाति काईस्त क्षत्रिवर्ण ने सन् १८७२ ई० में बनाई और खाक पाय कल्याण राय ने छापेखाने विद्या दर्पण मेरठ में छपवाई, सन् १८८३ ई०, पहली बार ५०० पुस्तक और नौछावर प्रति पुस्तक १० आने।

२. स्त्री उपदेश, द्रष्टव्य, पृ० ३९

३. द्रष्टव्य, आ० भा० पु० काशी में संगृहीत 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' के फरवरी और मार्च १८७५ ई० के अंक।

४. विजय शंकर मल्ल, (सं०) भाग्यवती, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, (जेबी पुस्तक संस्करण) सितम्बर १९६०, परिचय।

५. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भाग्यवती, स्त्री शिक्षा की अपूर्व पुस्तक, श्रीमत् पं० श्रद्धाराम जी फुल्लौर निवासी रचित। स्वदेशीय बालिकाओं के उपकारार्थ, श्री पं० जी की विधवा पं० महताव कौर

लेखक द्वारा लिखित है, संवत् १९३४ वि० तिथि अंकित है,' जिससे इसके रचनाकाल का पता चलता है।

विजय शंकर मल्ल के अनुसार १८८७ ई० में 'भाग्यवती' के प्रकाशित होने पर इसकी बड़ी सराहना हुई थी। प्राय: सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी प्रशंसा में टिप्पणियाँ लिखीं।[2] १८८७ ई० से लेकर १९१२ ई० तक इसके पाँच संस्करणों का प्रकाशित होना इसकी लोकप्रियता का सूचक है, यद्यपि हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यह बालिकाओं के लिए पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकृत थी।

तपस्विनी

सन् १८७९ ई० में 'सारसुधानिधि' के २८ अप्रैल और १२ मई के अंकों (भाग १, अंक १६ तथा १८) में 'तपस्विनी' शीर्षक कथापुस्तक के प्रथम अध्याय के दो परिच्छेद प्रकाशित हुए।[3] 'सारसुधानिधि' के अन्य अंकों में, जो आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध हैं, यह पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई। सम्भवत: यह कथा पूरी नहीं हो सकी।

रहस्यकथा उपन्यास

इसी वर्ष पं० बालकृष्ण भट्ट लिखित 'रहस्यकथा उपन्यास' 'हिन्दी प्रदीप' (जिल्द ३, सं० ३, नवम्बर १८७९ ई०) में प्रकाशित होना आरम्भ हुआ और 'हिन्दी प्रदीप' के जिल्द ५, सं० ९, मई १८८२ ई० तक प्रकाशित होता रहा। यह उपन्यास भी अपूर्णत: प्रकाशित होकर ही रह गया।[4]

एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती

सम्भवत: इसी दशक में (१८७०—७९) **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** लिखित 'एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती' नामक उपन्यास का केवल 'प्रथम खेल', श्री ब्रजरत्न दास के अनुसार, एक पत्र में प्रकाशित हुआ था।[5] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रकाशन-

---

द्वारा प्रकाशित श्री मन्महाराजाधिराज पंजाब देशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की प्रेरणा से श्रीमान् डाइरेक्टर साहिब शिक्षा विभाग पंजाब की आज्ञानुसार पुत्री पाठशालाओं में स्वीकृत और भारत खण्ड के अन्य शिक्षा विभागों में भी प्रचलित, सर्व अधिकार स्वाधीन है। संवत् १९६९ सन् १९१२ ई०, पंचम आवृत्ति, २००० प्रति, मूल्य ।।।) बाम्बे मैशीन प्रेस, लाहौर, पृ० सं० १०० ।

1. उपरिवत्, भूमिका।
2. विजय शंकर मल्ल (सं०), भाग्यवती, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी (जेबी पुस्तक संस्करण) १९६० परिचय।
3. प्रा० स्था०—मा० पु० काशी।
4. रहस्यकथा उपन्यास, हिन्दी प्रदीप, के निम्नलिखित अंकों में छपा था—जिल्द ३, सं० ३ से ६ (नवम्बर १८७९ से फरवरी १८८०), सं० ९-१० (मई-जून १८८०), सं० १२ (अगस्त १८८०) जिल्द ४, सं० ४-५ (दिसम्बर १८८०—१ जनवरी १८८१), सं० ८ (अप्रैल १८८१), सं० १२ (अगस्त १८८१), जिल्द—५, सं० ९ (मई १८८२)।
5. ब्रजरत्न दास, हिन्दी उपन्यास साहित्य, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, संवत् २०१३ वि०, पृ० १२९।

काल, तथा जिस पत्र में यह प्रकाशित हुआ था, उसका पता लगाने में असमर्थ रहा है। भारतेन्दु इस उपन्यास को पूरा न कर सके थे।

अमृत चरित्र

जून १८८१ के 'हिन्दी प्रदीप' में मुद्रित एक 'कृतज्ञता स्वीकार'[१] से ज्ञात होता है कि अगस्त १८८० ई० में दरभंगा नरेश श्री लक्ष्मीश्वर सिंह ने एक घोषणा की थी कि "हिन्दी भाषा में सबसे उत्तम पदार्थविद्या की पुस्तक बनाने वाले को २००) गद्यकाव्य उपन्यास (नोवेल) बनाने वाले को १५०) और पद्यकाव्य बनाने वाले को भी १५०) कोई देशोपकारी प्रबन्ध (ऐसे) बनाने वाले को १००) पारितोषिक मिलैंगे यदि १ ली फरवरी के पूर्व ही हमारे पास पहुँच जावैं।" इस घोषणा के उत्तर में प्रयाग के श्री **देवकीनन्दन त्रिपाठी** ने 'अमृत चरित्र' नामक 'एक नवीन उपन्यास' लिख कर महाराजाधिराज की सेवा में प्रेषित किया था और उन्हें पुरस्कारस्वरूप एक सौ पचास रुपये प्राप्त हुए थे। उक्त 'कृतज्ञता स्वीकार' के अनुसार इस उपन्यास का भाव संस्कृत का निम्नलिखित श्लोक था।

येषां विद्या बुद्धिर्नचभारतस्य भीति भिन्नतायै
अमृतचरित्रेतेपांमृतसम विदुषां चरित्रमस्ति

प्रस्तुत प्रबन्ध का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर उपर्युक्त 'कृतज्ञता स्वीकार' से इसका रचना काल १८८० ई० का अन्त अथवा १८८१ ई० का प्रारम्भ सिद्ध होता है। यह उपन्यास अद्यावधि अप्रकाशित है।

निस्सहाय हिन्दू

सन् १८८१ ई० में **राधाकृष्ण दास** ने भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की आज्ञा से 'निस्सहाय हिन्दू' की रचना की जो ९ वर्ष बाद, सन् १८९० ई० में, विक्टोरिया प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[2] हिन्दी के आलोचकों ने इसका प्रकाशन-काल और रचना-काल एक मानकर इसका विवेचन १८९० में लिखित पुस्तक के रूप में किया है, जो इस ग्रन्थ के प्रति अन्याय है। प्रकाशन का सौभाग्य न प्राप्त होने मात्र से किसी पुस्तक की प्राचीनता नष्ट नहीं हो जाती। यह पुस्तक १८८१ ई० में लिखी गयी थी। इसका प्रमाण व्यास रामशंकर शर्मा द्वारा २७ नवम्बर १८८१ को लिखित वह प्रशंसापत्र है जो पुस्तक के अन्त में संलग्न है। व्यास जी ने लिखा था "मेरे परम प्रिय मित्रवर बाबू राधाकृष्ण दास जी ने 'निःसहाय हिन्दू' नामक एक नवीन उपन्यास लिखा है ० उन्होंने स्नेहवश से मुझे उस उपन्यास को आद्योपान्त देखने के लिए दिया ० ......भगवान इनको यह सुबुद्धि दे कि ये सदा सत्कर्म तथा हमलोगों के मान्यवर श्री भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी की भक्तिपूर्वक सेवा करते रहें जिसमें इनका असंख्य लाभ सम्भव है ० इस प्रशंसा पत्र के नीचे "२७/११/८१"

---

१. हिन्दी प्रदीप, जिल्द ४, सं० १०, जून १८८१, पृ० २२।

२. प्रा० स्था०--प० का० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-निःसहाय हिन्दू, एक वियोगान्त उपन्यास स्वर्गीय भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की आज्ञानुसार श्री राधाकृष्णदास लिखित, बनारस, विक्टोरिया प्रेस, सन् १८९०, प्रथम वार १०००, मूल्य ।), पृ० सं० १२०।

मानमन्दिर" मुद्रित है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का उल्लेख भी इसमें एक जीवित व्यक्ति के रूप में किया गया है, जिसका अर्थ यह है, कि जब यह प्रशंसापत्र लिखा गया था, उस समय भारतेन्दु जीवित थे। पुस्तक के 'निवेदन' में राधाकृष्णदास ने भी लिखा है कि 'यह ग्रन्थ पूज्यपाद स्वर्गीय भाई साहब बाबू हरिश्चन्द्र जी की आज्ञानुसार बनाया किन्तु कई कारणों से बिना छपा ही इतने दिनों तक पड़ा रहा······यह ग्रन्थ जैसा लिखा गया था अक्षर अक्षर वैसा ही छपा है।"[१] इन साक्ष्यों से सिद्ध है कि यह उपन्यास १८८१ ई० में रचा गया था, और १८९० ई० में, जैसा लिखा गया था वैसा ही, छपा। अतः १८८१ ई० की रचना के रूप में इसका विवेचन न किये जाने का कोई कारण नहीं है।

'निस्सहाय हिन्दू' का दूसरा संस्करण १९४० ई० में गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[२]

परीक्षा गुरु

सन् १८८२ ई० में **लाला श्रीनिवास दास** लिखित 'परीक्षा गुरु', जिसे अधिकांश हिन्दी आलोचक हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानते हैं, सदादर्श प्रेस, दिल्ली से छपकर प्रकाशित हुआ।[३] 'परीक्षा गुरु' का प्रथम संस्करण श्री उदयशंकर शास्त्री (हिन्दी विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा) के पास है, जिसके मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि उन्होंने अत्यन्त कृपापूर्वक मेरे पास भेज दी थी। 'हिन्दी प्रदीप', जिल्द ६, सं० ४, (दिसम्बर १८८२) में 'परीक्षा गुरु' की आलोचना प्रकाशित हुई थी, जिससे ज्ञात होता है कि लाला श्रीनिवास दास ने प्रथम बार इसे स्वयं प्रकाशित कर 'सारसुधानिधि' पत्र के पाठकों के बीच बिना मूल्य वितरित किया था।[४] इससे भी 'परीक्षा गुरु' का दिसम्बर १८८२ ई० से पूर्व प्रकाशित होना सिद्ध होता है।

---

१. राधाकृष्ण दास, निस्सहाय हिन्दू, प्रथम बार, १८९०, निवेदन।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
परीक्षा गुरु, अर्थात् अनुभव द्वारा उपदेश मिलने की एक संसारी वार्त्ता, लाला श्रीनिवास दास प्रणीत, "ऐश्वर्यमद पापिष्ठा मदा मान मदादयः। ऐश्वर्य मदमत्तो हि नापतित्वा विबुध्यते॥" भावार्थ, "और मदन ते विभव मद अति पापिष्ठ लखाय। वह उतरै अपने समय यह बिन बिपति न जाय।" —विदुर प्रजागरे, दिल्ली, सदादर्श प्रेस, में छपी, सं० १९३९ विक्रमी में पहली बार, मूल्य १२ आने मात्र। पृ० सं० १७४.
[इसका समर्पण, (डेडिकेशन) लाला श्री राम, एम० ए०, अलवर को अँगरेजी भाषा और रोमन अक्षरों में २५ नवम्बर १८८२ को किया गया था।]

४. हिन्दी प्रदीप, जिल्द ६, सं० ४ (दिसम्बर १८८२), पृ० १२-१३ में प्रकाशित 'परीक्षा गुरु' की आलोचना के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश—
"प्रथम तो हमें हर्ष इस बात का है कि महाजनों में एक ऐसा चमत्कारी प्रतिभासम्पन्न पुरुष हो निकला······। इस उपन्यास की भाषा और 'प्लाट' वन्दिश दोनों बहुत कुछ सराहने के योग्य हैं ग्रन्थकर्त्ता ने अंगरेजी फारसी संस्कृत और विज्ञान में अपनी लियाकत जहाँ तक हो सका भरपूर इसमें प्रगट किया है पर न जानिये क्यों हमें इस लेख में एक प्रकार का न्खापन

हिन्दी के कतिपय शोधकर्त्ताओं ने 'परीक्षा गुरु' के रचना और प्रकाशन काल के सम्बन्ध में मौलिक उद्भावनाएँ प्र.तुत कर बहुत भ्रम पैदा कर दिया है। १९६२ ई० में प्रकाशित डॉ कैलाश प्रकाश कृत 'प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास' शीर्षक शोधप्रबन्ध' में 'परीक्षा गुरु' की रचना और प्रकाशन तिथि के सम्बन्ध में निम्नलिखित विचार व्यक्त किये गये हैं—

"परीक्षा गुरु की प्रकाशन तिथि सन् १८८२ मानी जाती है। द्वितीय मुद्रण से पूर्व लेखक का ·वर्गवास (सन् १८८७) हो चुका था, क्योंकि 'द्वितीय वार' प्रकाशित प्रति में लेखक का नाम स्वर्गीय लाला श्री निवास दास लिखा है। ......यह अनुमान युक्तिसंगत होगा कि 'परीक्षा गुरु' का प्रकाशन सन् १८८२ में प्रारम्भ होकर सन् १८८४ तक पूरा हुआ था। ......इस प्रकार 'परीक्षा गुरु' सन् १८८२ में छप गया होगा, परन्तु उसका पुस्तकाकार प्रकाशन सन् १८८४ में पूर्ण हुआ होगा।"[2]

ऊपर दी गयी सूचनाओं के प्रकाश में यह उद्धरण कितना अनर्गल है, इसके सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। पता नहीं, शोधकर्त्री महोदया ने 'परीक्षा गुरु' का कौन-सा दूसरा संस्करण देखा है, जिसमें 'स्वर्गीय लाला श्री निवास दास' लिखा हुआ है। 'परीक्षा गुरु' का दूसरा सं·करण लाला जी के जीवनकाल में ही, संवत् १९४१ वि० (१८८४ ई०) में, मुंबई गणपत कृष्णा जी छापाखाना में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ था, जिसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी (ना० प्र० स०) में विद्यमान है।[3]

जंचता है पदों का वह लालित्य और माधुर्य नहीं आया जैसा बाबू हरिश्चन्द्र के लेख में होता है नाटक वा उपन्यास के प्रधान अंग श्रृंगार हास्य कभी २ वीर और करुण होते हैं सो उन सबों की इसमें कहीं झलक भी नहीं है क्या निरा विदुर प्रजागर और ठौर ठौर बैलून आदि वैज्ञानिक बातों ही के भर देने से समस्त लेख चातुरी समाप्त हो गई. नोवेल राइटिंग उपन्यास सम्बन्धी लेख और विज्ञान तथा नीति से क्या सरोकार बहुत लोग नोवेल जैसा मिस्टरीज आदि किताबें हैं उनका पढ़ना बुरा समझते हैं और उपन्यासों को 'इम्मारल' असत् उपदेशक कह कर बदनाम कर रक्खा है पर सच पूछो तो बुराइयों का परिणाम दिखाकर अपनी लेखशक्ति के द्वारा पढ़ने वालों का जी आकर्षण करते जाना जैसा संस्कृत में कादंबरी में है अन्त को एक अपूर्व उपदेश निकालना उपन्यास ही में है सो बातें इसमें नहीं पाई जातीं; अस्तु फिर भी जहाँ कोई पेड़ नहीं वहाँ रेंड़ ही रुख हिन्दी में अब तक कोई उत्तम उपन्यास नहीं छपे इसलिए यह अवश्य उत्तमोत्तम है क्योंकि कवि की उक्ति है "सतुतत्रविशेषदुर्लभ : सदुपन्यस्यतिकृत्यवर्त्मयः" दूसरी बात लाला श्री निवास दास की यह अति प्रशंसनीय है कि सा० सु० नि० के ग्राहकों में इसे मुफ्त बाँटा जिस्से कितने लोगों को उपन्यास पढ़ने का शौक हो जायगा और देखा-देखी कदाचित् और लोग भी नोवेल लिखने का मन करें तो क्या अचरज है अन्त को श्रीनिवास दास को अनेक धन्यवादपूर्वक हम इस ग्रन्थ को स्वीकार करते हैं।"

१. डॉ० कैलाश प्रकाश, प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली–पटना, १९६२ ई०।

२. उपरिवत्, पृ० ६०।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
परीक्षा गुरु : अर्थात् अनुभव द्वारा उपदेश मिलने की एक संसारी वार्ता, लाला श्रीनिवास दास प्रणीत "ऐश्वर्य मद पापिष्ठा मदा : मान मदादयः ऐश्वर्य मदमत्तो हि नापतित्वा विबुध्यते ॥"

इसी प्रकार का एक भ्रम डॉ॰ राजेन्द्र शर्मा ने अपने शोधप्रबन्ध 'हिन्दी गद्य के निर्माता पं० बालकृष्ण भट्ट' में उत्पन्न किया है। उन्होंने उक्त पुस्तक के पृष्ठ ४५ पर 'परीक्षा गुरु' की बालकृष्ण भट्ट कृत एक आलोचना उद्धृत की है और पादटिप्पणी में इस उद्धरण को 'हिन्दी प्रदीप', जनवरी १८८२, पृ० १८ से लिया गया बताया है।[1] उद्धृत आलोचना को पढ़ने से जान पड़ता है कि 'परीक्षा गुरु' के प्रकाशित होने पर भट्ट जी ने उसकी आलोचना की थी, जिससे 'सार सुधानिधि' के सम्पादक को कुछ बुरा लगा था और उन्होंने उसके जवाब में कुछ लिखा था। भट्ट जी ने उसका प्रत्युत्तर, डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद शर्मा द्वारा उद्धृत 'आलोचना' में दिया था। पर ऐसा होने पर परीक्षा गुरु' का प्रकाशन-काल १८८१ में चला जाएगा जो किसी भी हालत में सही नहीं हो सकता। वास्तव में डॉ० शर्मा की सूचना ही गलत है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक 'हिन्दी प्रदीप' जनवरी, १८८२ के पृ० १८ की बात तो दूर रहे उस अंक की पंक्ति पंक्ति देख गया पर कहीं भी यह 'आलोचना' नहीं मिली। यह दुर्भाग्य ही है कि शोधप्रबन्धों में भी ऐसी उत्तरदायित्वहीन सूचनाएँ दी जाती हैं जिनके कारण परवर्त्ती शोधकर्ताओं को भ्रान्त होकर अपनी शक्ति और समय का अपव्यय करना पड़ता है।

'परीक्षा गुरु' का तीसरा संस्करण १९१८ ई० में मारवाड़ी ट्रेड्स एसोसियेशन, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2]

गुप्त वैरी

सन् १८८२ में ही बालकृष्ण भट्ट लिखित 'गुप्त वैरी' नामक उपन्यास के थोड़े से अंश 'हिन्दी प्रदीप' (जिल्द ५; सं० ९,१० और १२, (मई, जून और अगस्त १८८२ ई०) में प्रकाशित हुए। यह उपन्यास पूरा नहीं छप सका। पुरानी कहानियों की तरह इसमें एक राजकुमार के विपत्तिग्रस्त होने, उसी विपत्ति की अवस्था में एक राजकुमारी से प्रेम होने और अनेक कठिनाइयों के बाद उसके द्वारा अपनी प्रेमिका को प्राप्त करने का वर्णन है।

भावार्थ—"और मदन ते विभव मद अति पापिष्ठ लखाय। वह उतरें अपने समय यह बिन विपति न जाय। विदुर प्रजागरे" मुंबई गणपत कृष्णाजी के छापेखाने के मालिक आत्माराम कान्होबाजे छपी सं० १९८२ विक्रमीय। दूसरी बार। मूल्य १२ आने मात्र।

१. डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद शर्मा कृत 'हिन्दी गद्य के निर्माता पं० बालकृष्ण भट्ट' में उद्धृत 'आलोचना' निम्नलिखित है—
"हमलोग जैसा और और बातों में अँग्रेजों की नकल करते आते हैं वैसा ही उपन्यास का लिखना भी उन्हीं के दृष्टांत पर सीख रहे हैं। हाल में लाला श्री निवास दास जी का परीक्षा गुरु नामक ग्रन्थ जिसे हम उपन्यास ही गिनते हैं और जिसकी समालोचना से हमारे प्रिय शुभचिन्तक सा० सु० नि० के सुयोग्य सम्पादक महाशय हमसे कुछ अनमने से हो गये हैं अलबत्ता कुछ कुछ अंग्रेजी नाविल के ढंग पर है परन्तु नोविल प्रौढ़ बुद्धिवालों के लिए लिखे जाते हैं कि निरे स्कूलों में क ख सीखने वालों के लिये। ग्रन्थकर्ता महाशय को अनेक प्रकार के उपदेश वाक्य और विज्ञान चातुरी प्रकट करना था तो गुलदस्ते अखलाक या विद्यांकुर के ढंग की कोई पुस्तक बनाते यदि से सब ठौर ठौर के अनुवाद निकाल दिए जाएं तो (ओरिजिनल पोर्शन) असली हिस्सा उस पुस्तक का कुछ रही न जायगा।"

२. प्रा० स्था० पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना (भूल से मुखपृष्ठ पर इसे दूसरा संस्करण कहा

नूतन चरित्र

सन् १८८३ ई० में 'हिन्दी प्रदीप' के सात अंकों में रत्नचंद्र प्लीडर लिखित 'नूतन चरित्र' के कतिपय परिच्छेद प्रकाशित हुए।[१] इससे भी पहले उक्त उपन्यास के कुछ अंश 'चित्रकला और विवेकराम का नूतन चरित्र' शीर्षक से 'नाटक प्रकाश' नामक पत्र में, जो मुंशी इमदाद अली के प्रबन्ध से ज्ञान रत्नाकर यंत्रालय में छपता था, प्रकाशित हो चुके थे।[२] पर जान पड़ता है २२ अप्रील १८८७ के पूर्व रत्नचन्द्र जी अपने उपन्यास को अन्तिम रूप नहीं दे सके, क्योंकि सन् १८९३ ई० में इण्डियन प्रेस से प्रकाशित 'नूतन चरित्र' के अन्त में इस उपन्यास का रचनाकाल निम्नलिखित दोहे के रूप में दिया गया है।[३]

सात आठ अरु आठ इक सन ईसाई जान।
बाइस अप्रैल के दिवस पूरण पुस्तक मान।

इस दोहे से ज्ञात होता है कि 'नूतन चरित्र' **२२ अप्रैल १८८७ ई०** को पूरा हुआ था। यह उपन्यास पुस्तक रूप में १८९३ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी के 'द्विवेदी संग्रह' में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है।[४] 'नूतन चरित्र' का दूसरा संस्करण १९१३ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से ही प्रकाशित हुआ।[५]

उचित दक्षिणा

दिसम्बर, सन् १८८४ ई० में **पं० बालकृष्ण भट्ट** द्वारा लिखित **'उचित दक्षिणा'**

गया है।)

१. द्रष्टव्य, हिन्दी प्रदीप, जिल्द-५, सं० ७-१२ (मार्च-अगस्त १८८३) तथा जिल्द-६, सं० २ (अक्टूबर १८८३) प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।

२. द्रष्टव्य, हिन्दी प्रदीप, जि० ४, सं० ३, नवम्बर १८८० में प्रकाशित सूचना :
"नाटक प्रकाश—नम्बर १ से ६ तक इसमें शेक्सपियर के नाटक तथा नावेलों की छाया लेकर अपूर्व रचना संकलित नाटक और उपन्यास छापे जाते हैं अबतक इसमें भ्रमजाल और प्रपंच नाटक ये दो रूपक और चित्रकला और विवेक राम का नूतन चरित्र नामक उपन्यास के थोड़े थोड़े भाग छपे हैं यह सब बाबू रतन चन्द वकील हाईकोर्ट की रचनाएँ हैं और यहाँ ज्ञान रत्नाकर यन्त्रालय में मुनशी इमदाद अली के प्रबन्ध से छपता है हमारे ग्राहकों में से बहुत से लोग नये नाटकों के लिए बहुधा हमें लिख चुके हैं उनके लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी होगी—मूल्य फी न० २)।

३. नूतन चरित्र, ले० बाबू रत्नचन्द्र, इंडियन प्रेस, सन् १८९३, अन्तिम पृष्ठ।

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-नूतन चरित्र, प्रथम खंड, जिस्को अंगरेजी नोविल्स की रीति पर बाबू रत्नचन्द्र बी० ए० वकील हाइकोर्ट इलाहाबाद ने बनाया, और जिस्में धर्म्मयुक्त सांसारिक व्यवहार विषयक शिक्षा एक अति मनोहर स्वभाव शोधक कहानी के द्वारा बाल वृद्ध युवा स्त्री और पुरुषों को प्राप्ति होती है। प्रयाग नगर में 'इंडियन प्रेस' के द्वारा प्रकाशित किया सन् १८९३।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

नामक उपन्यास 'हिन्दी प्रदीप', जिल्द ८, सं० ४, (दिसम्बर, १८८४) में प्रकाशित होना शुरु हुआ, पर यह एक अंक के बाद फिर नहीं प्रकाशित हुआ।

स्त्री उपदेश

सन् १८८५ ई० में पं० माधव प्रसाद ने 'स्त्री उपदेश' नामक एक स्त्रीशिक्षा विषयक कथा की रचना की जो १८८६ ई० में लखनऊ से प्रकाशित हुई।[1] भूमिका में पुस्तक का रचना-काल दिया हुआ है।[2] इस पुस्तक का ६ठा संस्करण रूपनारायण पांडेय द्वारा संपादित होकर १९२८ ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[3]

श्यामास्वप्न

सन् १८८५ ई० में ही ठाकुर जगन्मोहन सिंह ने 'श्यामास्वप्न' नामक 'गद्यप्रधान कल्पना' की रचना की,[4] जो सन् १८८८ ई० में एजूकेशन सोसाइटी प्रेस, बाइकुला से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[5] इस पुस्तक में स्वप्न के माध्यम से एक प्रेम कहानी का वर्णन किया गया है।

नूतन ब्रह्मचारी

सन् १८८६ ई० में 'हिन्दी प्रदीप', जिल्द ९, सं० ६ (फरवरी, १८८६) से पं० बालकृष्ण भट्ट लिखित 'नूतन ब्रह्मचारी' नामक कथापुस्तक का प्रकाशन आरम्भ हुआ और संख्या ८ (अप्रैल १८८६ ई०) तक के तीन अंकों में यह लगातार प्रकाशित होती

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुख पृष्ठ की प्रतिलिपि—
स्त्री उपदेश जिसमें अत्यन्त नाट्य नाटक भाव से रोचक शब्दों में व चातुर्य चटकीली वार्ताओं की शिक्षा व पाठशाला विषयक उपदेश व यथातथ्य बुद्धिमानी से हास विलास के प्रश्न व उत्तर से आनन्दीय चुटकुलों में वर्णित है जिसको श्री पं० माधव प्रसाद ऐक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर जिला बाँदा ने बड़ी उक्ति व युक्ति की रचना से अति चमत्कारयुक्त व बहुत उत्तम पद पदार्थों में निर्मित किया है। पहिली बार, स्थान लखनऊ, मई सन् १८८६ ई०।

२. उपरिवत्, भूमिका।

३. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना।

४. पुस्तक के अन्त में निम्नलिखित पंक्तियों में रचनाकाल दिया हुआ है—

"पूस बदी गुरुवार तीज दिन शिशिर रामपुर माहीं
नैनबेद ग्रहचन्द वर्ष यह संवत्सर दरपाहीं।"

पुस्तक के साथ संलग्न समर्पण के अन्त में भी २५ दिसम्बर १८८५ तिथि मुद्रित है।

५. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
श्री श्यामापातु श्यामा स्वप्न अर्थात् गद्य प्रधान चार खंडों में एक कल्पना, ऋतु संहार, मेघदूत, कुमार सम्भव, देवयानी, श्यामालता, प्रेम सम्पत्तिलता, सज्जनाष्टक इत्यादि काव्यों के अनुवादक और प्रणेता विजय राघवगढ़ाधिपात्मज श्री ठाकुर जगन्मोहन सिंह एम० आर० ए० एस० ग्रेट ब्रिटेन और आयर लैंड विरचित। (रोमन अक्षरों में) श्यामास्वप्न ऐन ओरिजिनल नावेल इन हिन्दी प्रोज बाइ ठाकुर जगमोहन सिंह एम० आर० ए० एस० ऑव ग्रेट ब्रिटेन एंड आयर लैंड, सन ऑव दि लेट चीफ ऑव विजयराघोगढ़, सेन्ट्रल प्राविन्सेज बम्बे, प्रिन्टेड ऐट दि एजुकेशन सोसाइटीज प्रेस, बाइकुला, १८८८, प्राइस पर कॉपी वन रूपी, मूल्य १)।

रही।[1] इसके बाद 'हिन्दी प्रदीप' में इसका छपना वन्द हो गया। पर इसी वर्ष भट्ट जी ने इसे पुस्तकाकार प्रकाशित किया और 'हिन्दी प्रदीप' के ग्राहकों के वीच उपहार स्वरूप वितरित किया। इस पुस्तक के 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि यह पाठकों में लोकप्रिय न हो सकी थी।[2] 'सरस्वती' के दिसम्वर १९११ के अंक में प्रकाशित 'नूतन ब्रह्मचारी' की समालोचना से ज्ञात होता है कि इसके निकट अतीत में इस पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ था।[3] 'नागरी हितैषिणी पत्रिका', वर्ष ७, अंक ९-१०, (दिसम्बर १९१२-जनवरी १९१३) में प्रकाशित 'नूतन ब्रह्मचारी' की समालोचना से ज्ञात होता है कि यह संस्करण पं० महादेव भट्ट द्वारा अभ्युदय प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत लेखक 'नूतन ब्रह्मचारी' के प्रथम दोनों संस्करणों में से एक को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। सन् १९४१ ई० में हिन्दी प्रदीप कार्यालय, सूड़िया, काशी से इस पुस्तक का तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ, जिसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[4]

प्रणयिनी परिणय

सन् १८८७ ई० में **किशोरीलाल गोस्वामी** का प्रथम उपन्यास **'प्रणयिनी परिणय'** रचा गया, जो १८९० में भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[5]

त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी

सन् १८८८ ई० में **गोस्वामी जी** ने **'त्रिवेणी वा सौभाग्यश्रेणी'** नामक उपन्यास की रचना की जो १८९० ई० के 'विहार बन्धु' नामक पत्र में प्रकाशित हुआ।[6]

---

१. द्रष्टव्य, हिन्दी प्रदीप, जिल्द ९, सं० ६, ७ और ८ (फरवरी-अप्रील १८८६),–प्रा० स्था०-चै० पु० पटना।

२. "यह उपन्यास सन् १८८६ की हिन्दी प्रदीप की कुछ जिल्दों के कुछ अंकों में ४ या ५ अध्याय निकलकर पुस्तकाकार छपकर उस समय के ग्राहकों को उपहार में वाँट दिया गया था। जो बचा था उसके खरीदार कोई भी न हुए विना मूल्य लेने को सव ही हिन्दी रसिक वन गये।"
—नूतन ब्रह्मचारी, ले० पं० वालकृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी प्रदीप कार्यालय, सूड़िया, काशी, सन् १९४१, तृतीय संस्करण, निवेदन।

३. सरस्वती, भाग १२, अंक १२, दिसम्बर १९११ ई०, नूतन ब्रह्मचारी की समालोचना।

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
नूतन ब्रह्मचारी, उपन्यास, एक सहृदय के हृदय का विकास हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय पंडित वालकृष्ण भट्ट रचित.

भीमं वनं भवति तस्य पुरप्रधानम्।
सर्वे जनाः सुजनतामुपयान्ति तस्य॥
कृत्स्ना च भूर्भवति सन्निधि रत्नपूर्णा।
यस्यास्ति शुभ्र चरितं विपुलं नरस्य॥

प्रकाशक-हिन्दी प्रदीप, कार्यालय सूड़िया, काशी, सन् १९४१, तृतीय संस्करण १५००

५. विशेष सूचना के लिए द्रष्टव्य प्रस्तुत ग्रन्थ तृतीय परिच्छेद (किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यास)

६. द्रष्टव्य, तृतीय परिच्छेद (किशोरी लाल गोस्वामी के उपन्यास)

विधवा विपत्ति

सन् १८८८ ई० में ही देवी प्रसाद शर्मा लिखित 'विधवा विपत्ति' नामक उपन्यास रसिक काशी यन्त्रालय, दिल्ली से मुद्रित हुआ, जिसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[1]

स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी

सन् १८८९ ई० में गोस्वामी जी ने 'स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी' नामक उपन्यास की रचना की, जो पुस्तक रूप में १९०१ ई० में प्रकाशित हुआ।[2]

सद्भाव का अभाव

सन् १८८९ में ही 'हिन्दी प्रदीप', जिल्द १२ की छठी से लेकर बारहवीं संख्या में (फरवरी-अगस्त १८८९) पं० बालकृष्ण भट्ट लिखित 'सद्भाव का अभाव' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[3] भट्ट जी इस उपन्यास को भी पूरा न कर सके।

परस्पर ठग उपन्यास

इसी वर्ष 'हिन्दी प्रदीप', जिल्द १२, सं० ८ (अप्रील १८८९ ई०) में, ढाई पृष्ठों में, 'परस्पर ठग उपन्यास' शीर्षक एक अधूरी कथा छपी, जिसमें नयन मूदन नामक ग्वाले और सरब लूटन नामक सुनार की ठगवृत्ति का वर्णन है।[4]

अनूदित कथा साहित्य

यद्यपि विवेच्य काल में मौलिक कथापुस्तकें पर्याप्त संख्या में रचित-प्रकाशित हुईं, पर परिमाण और लोकप्रियता की दृष्टि से मौलिक कथापुस्तकों की अपेक्षा अनूदित कथापुस्तकों का ही पलरा भारी रहा। परवर्ती पृष्ठों में हिन्दी के अनूदित कथासाहित्य का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

भोज प्रबन्ध सार

सन् १८७० ई० में किसी वंशीधर द्वारा संकलित 'भोज प्रबन्ध सार' नामक पुस्तक का पाँचवाँ संस्करण इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक के प्रथम संस्करण के सम्बन्ध में कोई सूचना प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
विधवा विपत्ति (उपन्यास) जिसको अपने परम मित्र श्री राधाचरण गोस्वामी वृन्दावन निवासी की सहायता से देवी प्रसाद शर्मा लेखाध्यक्ष कार्यालय हरिद्वार गोरक्षिनी सभा मुकाम कानपुर ने बाबू रामचन्द्र के प्रबन्ध से देहली, रसिक काशी यन्त्रालय, में छपवाई, सम्वत् १९४५ विक्रमीय, संस्करण, ५०० प्रति, मूल्य प्रति पुस्तक –) ।।, पृ० सं० २७

२. द्रष्टव्य प्रस्तुत प्रबन्ध, तृतीय परिच्छेद (किशोरी लाल गोस्वामी के उपन्यास)।

३. प्रा० स्था०–चै० पु० पटना।

४. प्रा० स्था०–चै० पु० पटना।

इस गद्यकथा में बल्लाल रचित संस्कृत ग्रन्थ 'भोज प्रबन्ध' के आधार पर राजा भोज से सम्बद्ध कहानियाँ संकलित की गयी थीं। 'भोज प्रबन्ध सार' का ६ठा संस्करण १८७५ ई० में, और सातवाँ संकरण १८७७ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका एक अन्य संस्करण लखनऊ से १८७२ ई० में भी प्रकाशित हुआ, जिसका दूसरा संस्करण १८७५ ई० में, तीसरा संस्करण १८७६ ई० में और ६ठा संस्करण १८८२ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] इस तथ्य से इस गद्यकथा की लोकप्रियता सिद्ध होती है।

नीति दीपिका

सन् १८७० ई० में ही बरेली से 'नीति दीपिका' नाम की पुस्तक का तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। इसमें स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियों को ध्यान में रखकर नैतिक और उपदेशात्मक कथाएँ संकलित की गयी हैं।[2]

मनोहर उपाख्यान

सन् १८७१ ई० में कलकत्ता से 'मनोहर उपाख्यान' नाम की पुस्तक प्रकाशित हुई। 'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस' में इसे कथाओं का संकलन बताया गया है।[3] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने अपने ग्रन्थ 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में १८७१ ई० में प्रकाशित हिन्दी के प्रथम उपन्यास '**मनोहर उपन्यास**' का उल्लेख किया है। इस सम्बन्ध में डॉ० गुप्त की निम्नोद्धृत पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं:

"यद्यपि साधारणतः श्रीनिवासदास इसके जन्मदाता माने जाते हैं और उनका 'परीक्षा गुरु' (१८८४, द्वितीय) हिन्दी का पहला मौलिक-उपन्यास माना जाता है, किन्तु यह धारणा ठीक नहीं है, क्योंकि १८७१ ई० से भी पूर्व उपन्यास-रचना के प्रमाण मिलते हैं। इस प्रकार का पहला उपन्यास, जिसका उल्लेख मिलता है, 'मनोहर उपन्यास' (१८७१) है, जिसके सम्पादक हैं सदानन्द मिश्र तथा शम्भुनाथ मिश्र। लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है, किन्तु यह अनुवाद नहीं ज्ञात होता क्योंकि यह सम्पादकों द्वारा केवल संगृहीत और संशोधित कहा गया है। इसकी कथावस्तु के सम्बन्ध में भी कोई संकेत नहीं है यह

---

१. भोज प्रबन्ध सार, टेल्स ऑफ किंग भोज ट्रैंस्लेटेड फ्रॉम दि संस्कृत ऑफ बल्लाल बाई वंशीधर फिफ्त एडीशन, पृ० सं० २+८२ इलाहाबाद, १८७०
——सिक्स्थ एडीशन, पृ० सं० ८२ इलाहाबाद १८७५
——सेवेन्थ एडीशन, पृ० ४+८२ इलाहाबाद १८७७
——पृ० सं० ६४ लखनऊ १८७२
——सेकेंड एडीशन, पृ० सं० २+८१ लखनऊ १८७५
——थर्ड एडीशन, पृ० सं० ८१ लखनऊ १८७६
——सिक्स्थ एडीशन, पृ० सं० ६४ लखनऊ १८८२
[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ इंडिया ऑफिस, (१) पृ० ६१ से उद्धृत]

२. नीति दीपिका, मोरल ऐंड इंस्ट्रक्टिव एनेक्डोट्स फॉर यूज इन फीमेल स्कूल्स, थर्ड एडीशन, पृ० सं० ३६, बरेली, १८७०—[कैटेलग ऑफ द लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१) पृ० ६२]

३. 'मनोहर उपाख्यान', ए कलेक्शन ऑफ एनेक्डोट्स, पृ० सं० २४, कलकत्ता १८७१ —[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१), पृ० ६२]

अवश्य खेदजनक है।"[1] जैसा कि 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' की 'प्रस्तावना से ज्ञात होता है, डॉ० गुप्त ने पुस्तकों की प्रकाशन-तिथियाँ, जो उनके मतानुसार केवल गजटों में प्रकाशित त्रैमासिक सूचियों में प्राप्त होती हैं, दी हैं।[2] पुस्तकों के सम्बन्ध में जो अन्य सूचनाएँ उन्होंने दी हैं, उनका आधार भी सम्भवतः वे गजट ही होंगे। इसका स्पष्टीकरण डॉ० गुप्त ने नहीं, किया है। 'मनोहर उपाख्यान' और 'मनोहर उपन्यास' में नाम साम्य और प्रकाशन-तिथि के साम्य से यह सन्देह होता है कि कहीं 'मनोहर उपाख्यान' ही तो गजट में 'मनोहर उपन्यास' के रूप में नहीं छप गया है। डॉ० गुप्त ने 'मनोहर उपन्यास' की कथावस्तु आदि के सम्बन्ध में जो सूचनाएँ दी हैं, उनसे उक्त सन्देह की पुष्टि ही होती है।

आख्यान मंजरी

सन् १८७२ ई० में **श्रीराम प्रसाद तिवारी** ने **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर** लिखित बँगला कथासंग्रह 'आख्यान मंजरी' का अनुवाद इसी शीर्षक से प्रस्तुत किया, जिसका पहला संस्करण मेरठ से प्रकाशित हुआ। 'आख्यान मंजरी' का दूसरा संस्करण १८७३ ई० में, चौथा संस्करण १८७५ ई० में और पाँचवाँ संस्करण १८७६ ई० में छपा।[3] जान पड़ता है, पं० सरयू प्रसाद मिश्र ने भी 'आख्यान मंजरी' का अनुवाद किया था, जो १८७९ ई० में या उसके निकट पूर्व में कभी प्रकाशित हुआ था। २२ सितम्बर सन् १८७९ ई० के 'सारसुधानिधि' में उपर्युक्त अनूदित 'आख्यान मंजरी' की समीक्षा प्रकाशित हुई थी। इससे प्रतीत होता है कि यह गद्यकथा भी अपने समय में काफी लोकप्रिय थी।

रीति रत्नाकर

सन् १८७२ ई० में ही **पं० रामप्रसाद तिवारी** लिखित 'रीति रत्नाकर' नामक गद्यकथा इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। इसके सम्बन्ध में इससे अधिक कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।[4]

मोहिनी चरित्र

सन् १८७३ ई० में **मिर्जा रज्जब अली सरूर** लिखित उर्दू की प्रसिद्ध गद्य-कथा **'फसाने अजायब'** का हिन्दी अनुवाद, जिसे **प्राणकृष्ण** ने **'मोहिनी चरित्र'** शीर्षक से प्रस्तुत किया था, सर्वप्रथम १८७३ ई० में कानपुर से प्रकाशित हुआ। 'कैटेलग ऑफ दि

---

१. हि० पु० सा० (६), पृ० ६२।
२. हि० पु० सा० (६), प्रस्तावना, पृ० १०।
३. आख्यान मंजरी मोरल ऐंड इन्स्ट्रक्टिव टेल्स ट्रांसलेटेड, फ्रॉम दि बंगाली ऑफ ईश्वर चन्द्र विद्यासागर बाई रामप्रसाद तिवारी, पृ० सं० १०३, बरेली १८७२
——सेकेंड एडीशन, पृ० सं० १०३, बरेली १८७३
——फोर्थ एडीशन, पृ० सं० १०८, बरेली १८७५
——फिफ्थ एडीशन, पृ० सं० १०४, बरेली १८७६
——[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१), पृ० ६०]
४. रीति रत्नाकर बाइ पंडित रामप्रसाद तिवारी पी० पी० ३,१३, १६, इलाहाबाद १८७२
[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया आफिस (१) पृ० ६४]

लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, 'लन्दन' में 'मोहिनी चरित्र' के पाँच संस्करणों का उल्लेख है।[1] सन् १८८६ ई० में 'मोहिनी चरित्र' का एक संस्करण मतवअ गुलजार मोहम्मदी मेरठ से भी मुद्रित हुआ था।[2] सन् १८९५ ई० में 'मोहनी चरित्र' का एक दूसरा संस्करण श्री वेंकटेश्वर प्रेस, वम्बई से प्रकाशित हुआ। इसकी एक प्रति चैतन्य पुस्तकालय, गाय घाट, पटना सिटी में उपलव्ध है।[3] इसमें प्रदत्त सूचना से ज्ञात होता है कि इसका कोई संस्करण इन्दौर से भी प्रकाशित हो चुका था।[4]

वेंकटेश्वर प्रेस, वम्वई से 'मोहिनी चरित्र' के और भी अनेक संस्करण प्रकाशित हुए होंगे, पर उनके सम्वन्ध में प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को कोई सूचना नहीं प्राप्त हो सकी है। सन् १९३४ ई० में इसका एक संस्करण **मोहिनी चरित्र अर्थात् फिसाने अजायब** शीर्षक से वावू वैजनाथ प्रसाद वुक्सेलर, राजा दरवाजा, वनारस सिटी से भी प्रकाशिन हुआ। इस संस्करण की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में संगृहीत है।

'फसाने अजायव' का एक अन्य अनुवाद पं० रामरत्न वाजपेयी ने **'अपूर्वकथा'** शीर्षक से प्रस्तुत किया, जो सर्वप्रथम १८७५ ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। सन् १८८१ ई० में इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। इन दोनों संस्करणों की सूचना 'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस' में दी हुई हैं।[5] सन् १९२७ में प्रकाशित इस अनुवाद का १०वाँ संस्करण चैतन्य पुस्तकालय, गाय घाट, पटना सिटी में उपलव्ध है।[6] इस प्रकार सन् १८७३ ई० से लेकर १९३४ ई० तक 'फसाने

---

१. मोहिनी चरित्र ए ट्रांसलेशन वाइ प्राणकृष्ण ऑफ दि हिन्दुस्तानी फसाने अजायव ऑफ राजा अली बेग (सुरसूर) पी० पी० १२, १३९ कानपुर १८७३

——पी० पी० १५२·········दिल्ली १८७५
——पी० पी० १५२·········दिल्ली १८७७
——पी० पी० १५२·········दिल्ली १८७९
——पी० पी० १३५·········दिल्ली १८८६

२. पुस्तक सूची, आ० भा० पु०, काशी।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीफिसाना अजायव अर्थात् मोहिनी चरित्र जिसको पं० प्राण किशन साह वभाजी, सुपरिंटेंडेंट मदारिस इन्दौर ने हिन्दी किया वही रसिकों के अवलोकनार्थ शिवकरण रामरतन इन्दौर वाले की सम्मती से खेमराज श्रीकृष्ण दास ने मुम्बई, स्वकीय "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना में छाप कर प्रसिद्ध किया। आश्विन विजयादशमी सं० १९५२, वि०।

४. श्रीफिसाना अजायव अर्थात् मोहिनी चरित्र, श्री वेंकटेश्वर छापाखाना, वम्बई, सं० १९५२ वि०, सूचना।

५. अपूर्व कथा ए ट्रान्सलेशन ऑफ दि फसाने अजायव ऑर हिन्दुस्तानी टेल्स ऑफ रज्व अली वेग (सुरसूर), वाई पंडित रामरत्न।

——पी० पी० १०६·········लखनऊ, १८७५
——पी० पी० ८२·········लखनऊ, १८८१

[द्रष्टव्य कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, (२), पृ० ६०.]

६. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—फिसाना अजायव, अर्थात् अपूर्व कथा, मूल लेखक मिर्जारज्जव अली सरर

अजायव' के हिन्दी अनुवादों के कम से कम १९ संस्करण, जिनकी सूचना ऊपर की पंक्तियों में दी गयी है, मुद्रित हो चुके थे। निश्चय ही इस गद्यकथा के अनेक ऐसे संस्करण हुए होंगे, और आज भी हो रहे हैं, जिनका पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। इन तथ्यों से इस गद्यकथा की लोकप्रियता सहज अनुमेय है।

कादम्बरी

वावू गदाधर सिंह ने सन् १८७३ ई० के लगभग वाणभट्ट की 'कादम्बरी' का हिन्दी अनुवाद मूल संस्कृत से नहीं, वरन् उसके वँगला अनुवाद से किया। इसकी अनुक्रमणिका सर्वप्रथम 'हरिश्चन्द्र मैगजिन' के १५ अक्तूवर, १८७३ ई० के अंक में छपी। तव से लेकर जून १८७४ ई० तक के अंकों में, किसी किसी अंक को वाद देकर, 'कादम्बरी' का प्रकाशन लगातार होता रहा।[1] इसके वाद इसका छपना अचानक वन्द हो गया। सन् १८७९ ई० में इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग से 'कादम्वरी' पुस्तक रूप में प्रकाशित हुई।[2] इसके 'निवेदन' में इसके लेखन-काल, 'हरिश्चन्द्र मैगजिन' में प्रथम प्रथम छपने आदि का संकेत किया गया है।[3] आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से ज्ञात होता है कि इसका दूसरा संस्करण १९२० ई० में और तीसरा संस्करण १९२२ ई० में हुआ था।[4] इससे प्रमाणित होता है कि 'कादम्वरी' का यह अनुवाद लोकप्रिय नहीं हुआ। १९२१ ई० में 'कादम्वरी' का दूसरा अनुवाद (अनु० श्री ऋषीश्वर नाथ भट्ट) गाँधी पुस्तक भंडार, वम्वई द्वारा मुद्रित हुआ।[5] इसका दूसरा संस्करण १९५० ई० में भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहावाद से प्रकाशित हुआ।[6] आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से ज्ञात होता है कि मनोहर लाल वर्मा द्वारा लिखित 'कादंवरी कथासार' नामक पुस्तक वी० एम० एंड सन्स, काशी से १९०५ ई० में प्रकाशित हुई थी।

सीता वनवास

सन् १८७४ ई० में ईश्वरचंद्र विद्यासागर लिखित 'सीतार वनवास' नामक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद 'सीता वनवास' (अनुवादक मुन्शी हरिवंश लाल) लाइट

लखनवी हिन्दी अनुवादक पं० रामरत्न जी वाजपेयी, प्रकाशक नवलकिशोर प्रेस, (बुक डिपो) लखनऊ, सेल एजेंट भार्गव पुस्तकालय काशी, सन् १९२७ ई० में, दसवीं वार, प्रतियाँ ६०००, आकार रॉयल अठपेजी, मोटे अक्षर, पृ० सं० १२४।

१. द्रष्टव्य आ० भा० पु०, काशी में संगृहीत हरिश्चन्द्र मैगजिन के अंक।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुख पृष्ठ की प्रतिलिपि—कादम्वरी प्राचीन संस्कृत उपन्यास जिसका अनुवाद गदाधर सिंह ने वंग भाषा से आर्यभाषा में उल्था किया प्र० इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, निवेदन।
४. पुस्तकें कदाचित् आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी से गायव हो गयी है; इस सूचना की प्रामाणिकता असंदिग्ध नहीं है।
५. कादंवरी, अ० श्री ऋषीश्वर नाथ भट्ट, द्वितीय संस्करण, सं० २००७, प्र० भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहावाद, निवेदन।
६. प्राप्ति स्थान—वि० रा० भा० प० पु०, पटना।

यन्त्रालय, बनारस से मुद्रित हुआ। इस संस्करण की एक प्रति आर्य भाषा पुस्तकालय काशी में संगृहीत है।[१] 'सीतार वनवास' का एक अनुवाद 'सीता वनवास' शीर्षक से इंडियन प्रेस, प्रयाग से भी छपा था, जिसका १९१४ ई० में प्रकाशित तीसरा संस्करण आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[२]

सन् १९१७ ई० में ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने 'सीतार वनवास' का एक अन्य अनुवाद 'सीता वनवास' शीर्षक से प्रस्तुत किया,[३] जो सर्वप्रथम १९१९ ई० में वर्मन कम्पनी, मुजफ्फरपुर से 'रमणी रत्न माला' के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ।[४] इस अनुवाद का नूतन संशोधित संस्करण १९२३ ई० में प्रकाशित हुआ, जिसकी एक प्रति आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[५]

सन् १९२१ ई० में 'सीतार वनवास' का एक अन्य अनुवाद (अनुवादक प्रो० रामस्वरूप कौशल विद्याभूषण) राजपाल, मैनेजर, आर्य पुस्तकालय, लाहौर से प्रकाशित हुआ।[६] इसका दूसरा संस्करण १९३१ ई० में आर्य पुस्तकालय, बरेली से प्रकाशित हुआ था।[७] 'सीतार वनवास' का एक दूसरा अनुवाद्र मुंशी हरिवंश लाल ने भी प्रस्तुत किया था, जो १९२१ ई० में काशी से बाबू अविनाशी लाल द्वारा प्रकाशित किया गया।[८] इस प्रकार हम देखते हैं कि १९वीं शताब्दी तो नहीं, पर बीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश में विद्यासागर कृत 'सीतार वनवास' के अनेक अनुवाद और उनके अनेक संस्करण प्रकाश में आये। इसका कारण इस ग्रन्थ की सामान्य पाठकों के बीच लोकप्रियता उतना नहीं था, जितना इसका बिहार और उड़ीसा में नवें और दसवें वर्गों में पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकृत होना।

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अथ सीता वनवास, बंगला से स्वदेशीय भाषा में मुन्शी हरिवंश लाल ने पंडित तारा चरण तर्करत्न की सहायता से अनुवाद किया। श्री बाबू अविनाशी लाल की आज्ञानुसार से गोपीनाथ पाठक ने दशाश्वमेध बनारस लाइट यन्त्रालय में मुद्रित किया। सम्वत १९३१, पृ० सं० ८२।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सीता वनवास, पंडित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर कृत सीतार वनवास का हिन्दी अनुवाद, प्रकाशक इंडियन प्रेस, प्रयाग, १९१४, तृतीयावृति, पृ० सं० १२०।

३. सीता वनवास, ईश्वर प्रसाद शर्मा, प्र० वर्म्मन कम्पनी, मुजफ्फरपुर, नूतन संशोधित संस्करण १९२३, पूर्वकथन।

४. आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में जो प्रति उपलब्ध है, उसका मुखपृष्ठ फटा हुआ है, किन्तु प्रकाशकीय वक्तव्य के नीचे १-१-१९१९ तिथि दी हुई है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि इसका प्रकाशन काल १९१९ ई० होगा।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सीता वनवास, बंगाल के सुविख्यात सुधारक स्वनाम धन्य स्वर्गीय पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक प्रो० रामस्वरूप कौशल विद्याभूषण, प्रकाशक राजपाल मैनेजर आर्य पुस्तकालय, लाहौर, सन् १९२१ ई०, प्रथमवार २०००, पृ० सं० १२८।

७. द्रष्टव्य पुस्तक सूची, आ० भा० पु० काशी।

८. उपरिवत्।

पंडित देवदत्त त्रिवेदी ने वाल्मीकीय रामायण के आधार पर **'सीता वनवास'** नामक एक पुस्तक लिखी थी, जो कलकत्ता से १८७८ ई० में प्रकाशित हुई।[1] सन् १८७४ ई० में ही **मन्ना लाल** लिखित **'सुजन विनोद'** नामक कथासंग्रह बनारस से प्रकाशित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सुबुध्या व्याख्यान

सन् १८७५ ई० में **हीरालाल** लिखित **'सुबुध्या व्याख्यान'** नामक महिलोपयोगी गद्यकथा फरुखाबाद से मुद्रित हुई।[3] इसी वर्ष **बदरी सिंह** लिखित **'स्वप्नमय संसार'** नामक प्रेमकथा आगरा से छपी।[4]

मालती माधव की कथा

सन् १८७५ ई० में ही पं० शालग्राम मिश्र ने 'मालती माधव की कथा' नामक गद्य प्रेमाख्यान लिखा। इस पुस्तक की मुद्रित प्रति आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है, पर दुर्भाग्यवश इसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण प्रकाशन सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त नहीं होतीं। इसका रचना-काल पुस्तक के अन्त की निम्नलिखित पंक्ति से ज्ञात होता है—"इति श्री पण्डित शालग्राम मिश्र विरचिता मालती माधव कथा समाप्त संवत् १९३१।" 'क्षत्रिय पत्रिका' आश्विन, विजया दशमी, सं० १९३८ (१८८१ ई०) के 'समालोचना' स्तम्भ[5] में 'मालती और माधव' की आलोचना प्रकाशित हुई थी। उक्त आलोचक ने इसे 'उपन्यास' की संज्ञा दी थी। सम्भवतः पं० शालग्राम मिश्र रचित 'मालती माधव' १८८१ ई० में ही प्रकाशित हुआ था। डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार उक्त कथा पुस्तक १८८१ ई० में स्वयं लेखक द्वारा अलीगढ़ से प्रकाशित हुई थी।[6]

'मालती माधव की कथा' भवभूति के 'मालती माधव' नामक प्रसिद्ध नाटक का हिन्दी रूपान्तरण है।

स्त्री विचार

सन् १८७६ ई० में **हरिहर हीरालाल** द्वारा संगृहीत 'स्त्री विचार' नामक पुस्तक

---

१. सीता वनवास एडैप्टेड फ्रॉम दि रामायण बाइ पंडित देवदत्त त्रिवेदी पीपी २+१२३, कलकत्ता १८७८।

२. सुजन विनोद, ए कलेक्शन ऑफ टेल्स एंड एनेक्डोट्स, बाइ मन्ना लाल, पीपी ८६, बनारस, १८७४, [कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी दि इंडिया आफिस (१), पृ० ६५।]

३. सुबुध्या व्याख्यान, ए टेल फॉर वुमेन बाइ हीरालाल, पीपी २४, फरुखाबाद, १८७५।
[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१), पृ० ६५।]

४. स्वप्नमय संसार ए लव टेल इन ह्विच आर इंट्रोड्यूस्ड वर्सेज सलेक्टेड फ्रॉम दि वर्क्स ऑफ वेरियस पोएटस बाइ बदरी सिंह ऑफ हुमायूँ पुर, पी० पी० ३२, आगरा, १८७५
[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१) पृ० ६५।]

५. आ० भा० पु० में उपलब्ध।

६. हि० पु० सा० (६), पृ० ६२५

का दूसरा संस्करण मेरठ से प्रकाशित हुआ।[१] इसके प्रथम संस्करण का पता मुझे नहीं है। सम्भवतः इसका प्रथम संस्करण १८७२ ई० में प्रकाशित हुआ था।[2]

मनसुखी और सुन्दर सिंह का वृत्तान्त

सन् १८७६ ई० में ही 'रसूमे हिन्द' नामक उर्दू कथापुस्तक के द्वितीय परिच्छेद का हिन्दी अनुवाद 'मनसुखी और सुन्दर सिंह का वृत्तान्त' लाहौर से प्रकाशित हुआ।[३] आ० भा० पु० काशी में इस गद्यकथा की एक प्रति संगृहीत है।[४] १८७६ ई० में ही उर्दू 'रुस्तमे हिन्द' के तीसरे परिच्छेद का हिन्दी अनुवाद **खुशहाल चंद और हीरा** शीर्षक से लाहौर से ही प्रकाशित हुआ।[५]

अलिफ लैला

इसी वर्ष प्यारे लाल रुग्गू ने उर्दू से **अलिफ लैला** का हिन्दी अनुवाद **सहस्त्र रजनी चरित्र** शीर्षक से प्रस्तुत किया, जो नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[६] इस अनुवाद का पाँचवाँ संस्करण (१८९५) चैतन्य पुस्तकालय (गाय घाट, पटना सिटी) में उपलब्ध है।[७] सन् १९२६ ई० में इसका दसवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ।[८]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-स्त्री विचार हिन्दी भाषा में जिस्को हरिहर हीरालाल नाजिर सब जज कोर्ट मेरठ में संग्रह किया। इस किताब पर बमूजिब चिट्ठी गवर्नमेंट नंबर ८३ आलिफ लिखी हुई २४ अगस्त सन् १८७२ ई० के इनाम मिला। छापेखाने चश्म फैज मेरठ में दूसरी बार ४०० जिल्द छपी, सन् १८७६ ई०, पृ० सं० ६४।

२. द्रष्टव्य मुखपृष्ठ, उपरिवत्।

३. मनसुखी और सुन्दर सिंह, ए टेल ऑफ हिन्दू सोसल लाइफ, बीइंग ट्रान्सलेशन ऑफ दि सेकेन्ड चैप्टर ऑफ दि हिन्दुस्तानी 'रस्तमें हिन्द' पीपी० ८०, लाहौर, १८७६।
—[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (पूर्वोधृत) पृ० ६२।]

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-मनसुखी और सुंदर सिंह का वृतान्त, पंजाब देश की सरकारी पाठशालाओं के अधिकारी श्रीयुत मेजर हौल राईट साहिब वहादुर की आज्ञानुसार उर्दू भाषा से चालित हिन्दी भाषा में उल्था किया गया सन् १८७६ ई०, मास्टर प्यारे लाल साहिब क्यूटर के अधिकारी से सरकारी यंत्रालय में छपा, पृ० सं० ८०।

५. खुशहाल चंद और हीरा विथ टू अदर टेल्स ऑफ हिन्दू सोसल वीइंग ए ट्रांसलेशन ऑफ दि थर्ड चैप्टर ऑफ दि हिन्दुस्तानी रुस्तमे हिन्द, पीपी ११४, लाहौर, १८७६।
—[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१) पृ० ६२।]

६. सहस्त्र रजनी चरित्र दि अरेबियन नाइट्स ट्रांसलेटेड बाइ पं० प्यारे लाल फ्रॉम दि हिन्दुस्तानी वर्शन ऑफ अब्दुल करीम, पीपी ४, ५०४+४ से०, लखनऊ,—१८७६।
—[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१) पृ० ६४।]

७. आवरण पृष्ठ की प्रतिलिपि—सहस्त्र रजनी चरित्र अर्थात् अलिफ लैला जिसमें रसिक पुरुषों के चित्तआह्लादक सर्वरसानुवर्द्धित सहस्त्र इतिहास सहस्त्र रीत्रि प्रति एक दूसरे के परस्परालाप में वर्णन किये गये हैं जिसको······मुंशी नवल किशोर जी ने प्रथम अरबी से उर्दू में उल्था कराया था पुनः उक्त महाशय की आज्ञानुसार नागरी भाषानुरागियों के अवलोकनार्थ पं० प्यारे लाल कश्मीरी ब्राह्मण वैकुण्ठवासी ने लालित्य शब्दों से ब्रजभाषा में उल्था किया। पाँचवी वार, लखनऊ, मुन्शी नवल किशोर के छापेखाने में छपी, सितम्बर १८९५ ई०

८. प्रा० स्था०—पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय, पटना।

सन् १८९९ ई० में 'अलिफ लैला' का एक अन्य अनुवाद अलफ लैला अर्थात् हजार दास्तां' शीर्षक से वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ, जिसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[1] सन् १९१० ई० में 'अलिफ लैला' का चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा कृत, 'हिन्दी आरब्योपन्यास' शीर्षक अनुवाद नेशनल प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस संस्करण की एक प्रति उपलब्ध है।[2] 'अलिफ लैला' का हरिदास वैद्य कृत एक दूसरा अनुवाद हरिदास एण्ड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद का १९१९ ई० में प्रकाशित दूसरा संस्करण उपलब्ध है।[3] इन अनुवादों के, विशेषकर नवल किशोर प्रेस, लखनऊ और वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित अनुवादों के, अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं, पर उनकी प्रामाणिक सूचना प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं प्राप्त हो सकी है। इन तथ्यों से इस कथा की लोकप्रियता प्रमाणित होती है।

चतुर सभा

सन् १८७७ ई० में फारसी 'नक्ले मजलिस' का शिव गोपाल कृत हिन्दी अनुवाद 'चतुर सभा' दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण १८८४ ई० में छपा। ये दोनों संस्करण इंडिया ऑफिस पुस्तकालय, लन्दन में संगृहीत हैं।[4]

गुलसनोवर

इसी वर्ष जीवाराम जाट द्वारा उर्दू से अनूदित 'गुल सनोवर' नामक गद्यकथा लखनऊ से (सम्भवत नवल किशोर प्रेस, लखनऊ) प्रकाशित हुई। इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १८८१ ई० में प्रकाशित हुआ। ये दोनों संस्करण इंडिया ऑफिस पुस्तकालय,

---

१. अलफ लैला अर्थात् हजारदास्तां व सहस्त्र रजनी विलास, पुस्तक मिलने का पता—
खेमराज श्रीकृष्ण दास श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, दोहा—

चन्द्रे ग्रह पांडिय शिवज संवत विक्रम जान
कृष्ण कार्तिक अष्टमी ग्रन्थ समाप्त महान्

पृ० सं० ६१६

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि हिन्दी—आरब्योपन्यास यानी अलफ लैला या अरेबियन नाइट्स की कहानियों का सार संग्रह, (प्रथम खंड), संग्रहकर्ता चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, प्रकाशक नेशनल प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्करण, १९१०, पृ० सं० १८७

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सचित्र अलिफ लैला, अनुवादक-हरिदास वैद्य, प्रकाशक हरिदास एण्ड कम्पनी, कलकत्ता, २०१ हरिसन रोड, के नरसिंह प्रेस, में बाबू राम प्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१९ ई०, पृ० सं० २०६।

४. चतुर सभा, एनक्डोट्स ऑफ दि परसियन कोर्ट, ट्रान्सलेटेड फ्रॉम दि परसियन नक्ले मजलिस बाइ शिव गोपाल।

पी० पी० ६४,	१२ मो०,	दिल्ली १८७७
पी० पी० ४७,		दिल्ली १८८४

—[कैटलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० ६२।]

लन्दन में संगृहीत हैं।[1] इस अनुवाद के अनेक संस्करण बाद में भी नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुए, पर इन संस्करणों में संस्करण-संख्या तथा प्रकाशन-काल न दिये रहने के कारण इस सम्बन्ध में अधिक सूचना दे पाना कठिन है। इससे इतना सिद्ध है कि बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में विशेष रूप से, और आज भी आंशिक रूप से, यह गद्यकथा, हिन्दी के एक विशेष पाठकवर्ग में लोकप्रिय थी।

'गुल सनोवर' का एक अन्य अनुवाद श्री रामभजन मिश्र ने **'किस्सा गुल व सनोवर'** शीर्षक से प्रस्तुत किया जिसका १९०० ई० में मुलतानमल प्रिंटिंग प्रेस, नीमच से प्रकाशित तीसरा संस्करण चैतन्य पुस्तकालय, गाय घाट, पटना सिटी में उपलब्ध है।[2]

सैंर्डफोर्ड और मरटन

सन् १८७७ ई० में ही राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द द्वारा अँगरेजी से अनूदित 'सैंर्डफोर्ड और मरटन' नामक गद्यकथा बनारस से प्रकाशित हुई।[3] इस कथा का दूसरा संस्करण १९१२ ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[4] इसी वर्ष बँगला से अनूदित **'सुखी परिवार'** नामक गद्यकथा लाहौर से प्रकाशित हुई।[5] १८७७ ई० में ही बँगला से अनूदित **तपस्विनी राबिया'** नामक गद्यकथा अहमदाबाद से मुद्रित हुई।[6]

त्रियाचरित्र

-सन् १८७९ ई० में श्रीधर भट्ट द्वारा उर्दू से अनूदित 'त्रियाचरित्र' नामक गद्यकथा

---

१. गुल सनोवर ट्रांसलेटेड बाइ जीवाराम जाट फ्रॉम दि हिन्दुस्तानी ऑफ नेमचंद,
पी० पी० ६४ लखनऊ १८७७
पी० पी० ६४ लखनऊ १८८१
—[कैटलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१), पृ० ६२।]

२. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—
किस्सा गुल व सनोवर बाबू दीपचन्द मैनेजर मुलतान मल प्रिंटिंग प्रेस, ने निज प्रबन्ध से छापकर प्रकाशित किया, मुलतान मल प्रिंटिंग प्रेस, नीमच, सन् १९०० ई०, तीसरी बार ४०००

३. सैंर्डफोर्ड एंड मरटन, ट्रांसलेटेड बाइ राजा शिवप्रसाद, पोपी १२६, बनारस १८७७—[कैटलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१) पृ० ६४।]

४. प्रा० स्था०— आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
सैन्डफोर्ड और मरटन की कहानी, श्रीमन्महाधिराज पश्चिमोत्तर देशाधिकारी श्रीयुत नवाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार राजाशिवप्रसाद सितारे हिन्द (३) ने बनायी। पहला हिस्सा लखनऊ सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहर लाल भार्गव बी० ए० के प्रबन्ध से मुंशी नवल किशोर सी० आई० ई० के छापेखाने में छपी, सन् १९१२ ई० सेकंड एडीशन ६०० कॉपीज, दूसरी बार ६०० जिल्द छपी।

५. सुखी परिवार और दि हैप्पी फेमिली ए ब्राह्मिस्ट टेल ट्रांसलेटेड फ्रॉम दी बंगाली, पी पी० ३५१६ मो०, लाहौर, १८७७।
—(कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (१) पृ० ६५।)

६. तपस्विनी राबिया दि, स्टोरी ऑफ ए मुहम्मद फीमेल सेंट ट्रांसलेटेड फ्रॉम दि बंगाली पोपी० २१३२ मो०, अहमदाबाद, १८७७
—(कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ इण्डिया ऑफिस (१) पृ० ६६।)

का दूसरा संस्करण कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इस संस्करण की प्रति राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[1] इसका पहला संस्करण कब प्रकाशित हुआ था, इसकी सूचना प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं प्राप्त हो सकी है।

नीतिकथा संग्रह

सन् १८७९ ई० में मुंशी रामजीवन लिखित 'नीतिकथा संग्रह' नामक नैतिक कथाओं का संग्रह लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[2]

अमीर हमजा की दास्तान

इसी वर्ष नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से पं० कालीचरण और महेश दत्त द्वारा उर्दू से अनूदित 'अमीर हमजा की दास्तान' प्रकाशित हुई। इस संस्करण की एक प्रति चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी में उपलब्ध है।[3] इस अनुवाद का सातवाँ संशोधित संस्करण, जो १९२५ ई० में प्रकाशित हुआ, आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[4] इस प्रकार ४५ वर्षों की अवधि में इस ६-७ सौ पृष्ठों की पुस्तक के सात संस्करणों का प्रकाशित होना भी इस कथा की लोकप्रियता का ही प्रमाण है। उस समय हिन्दी के पाठक कितने कम थे, यह भी हम जानते हैं।

वंगविजेता

'सार सुधानिधि' नामक पत्र के २६ मई १८७९ और ११ अगस्त १८७९ ई० के दो अंकों में (भाग १, अंक ३०, ३१) प्रसिद्ध बँगला उपन्यासकार रमेशचन्द्र दत्त के 'वंगविजेता' नामक उपन्यास का बाबू गदाधर सिंह कृत हिन्दी अनुवाद अंशतः प्रकाशित

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-क्रिया चरित्र अर्थात् आच्छिक इतिहास श्रीधर भट्ट ने उर्दू से नागरी तरजमा किया। श्री नाथ लाल का आदेश से श्री नृत्यलाल.........से प्रकाशित भया।
द्वितीय संस्करण, कलकत्ते, एन्० एल्० शील का यंत्र से छपा नं० ६६ आहीरी टोला शक १८०१

२. नीतिकथा संग्रह, मोरल एनेक्डोटस बाइ मुन्शी रामजीवन, पी० पी० २+४१, १६ मो० लखनऊ १८७०

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
अमीर हमजाकी दास्तान जिसमें आल्हा ऊदल की सी शूरता वीरता विख्यात है यह प्रसिद्ध दास्तान ईरान के बादशाह नेशेरवाँ के समय की है, यद्यपि यह प्रसिद्ध किस्सा उर्दू भाषा में फार्सी से उल्था होय नवल किशोर प्रेस में बहुत बार छपकर संसार में प्रसिद्ध हुआ। है तथापि नागरी के रसिकों और किस्से के अभिलाषियों को ऐसी अपूर्व दास्तान से ज्ञान और लौकिक रीति में उपयोग के हेतु सकलगुण अलंकृत समय के आचार्य पंडित कालीचरण और महेशदत्त के द्वारा सरल हिन्दी बोलचाल में बहुत परिश्रम से नागरी में उल्था होय लखनऊ मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में शुद्धतापूर्वक छपा। जुलाई सन् १८७९ ई०

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दास्तान अमीर हमजा (अपूर्व कहानी) संशोधित संस्करण, हिन्दी अनुवादक—कैनिंग कॉलेज, लखनऊ के भूतपूर्व संस्कृत प्रोफेसर पं० कालीचरण जी शर्मा एवं पं० महेशदत्त जी शर्मा, सातवीं बार, १९२५ ई०, लखनऊ, केसरी दास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा नवलकिशोर प्रेस, में मुद्रित और प्रकाशित पृ०, सं० ६३२।

हुआ ।[1] पुस्तक रूप में यह अनुवाद १८८६ ई० के लगभग प्रकाशित हुआ ।

नल चरितामृत अर्थात् ढोला मारू

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १८७९ ई० में श्री श्याम लाल 'स्यामल' द्वारा लिखित **'नल चरितामृत अर्थात् ढोला मारू'** नामक गद्यकथा मथुरा से कन्हैया लाल वंशीधर द्वारा प्रकाशित की गयी ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस कथा को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

बीरवरनामा

सन् १८८० ई० में किसी महानारायण द्वारा संगृहीत **'बीरवरनामा'** नामक पुस्तक दिल्ली से प्रकाशित हुई । इसमें अकबर और बीरबल से सम्बद्ध ३९ कथाएँ संकलित हैं । इस पुस्तक का दूसरा संस्करण १८८८ ई० में प्रकाशित हुआ । ये दोनों संस्करण इंडिया ऑफिस के पुस्तकालय में प्राप्त हैं ।[3]

अपूर्व कारावास

सन् १८८० ई० में ही दीपनारायण सिंह वर्मा द्वारा अनूदित **अपूर्व कारावास** नामक उपन्यास 'सार सुधानिधि' के अक्तूबर अंक से प्रकाशित होना शुरु हुआ, जो फरवरी १८८१ ई० तक प्रकाशित होता रहा ।[4]

एक जोड़ा अँगूठी

हिन्दी प्रदीप, जिल्द ४, सं० ३, नवम्बर १८८० ई० के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि श्री केशवराम भट्ट बँगला से अनूदित 'एक जोड़ा अँगूठी' (ए पेयर ऑफ रिंग्स) नामक उपन्यास विहार बंधु प्रेस, बाँकीपुर से इसके कुछ ही पहले प्रकाशित हुआ था । विज्ञापन में इसकी भाषा खड़ी बोली उर्दू बतायी गयी है ।[5] ८ नवम्बर के 'सारसुधा-निधि' के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि यह अनूठा किस्सा सर्वप्रथम 'बिहार बंधु' में क्रमशः प्रकाशित होने के बाद उसी प्रेस से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ था ।

कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश

'चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश' एक ऐसा उपन्यास है, जिसकी रचना-तिथि, मौलि-

---

१. द्रष्टव्य 'सारसुधानिधि' के उपर्युक्त अंक, प्रा० स्था०-आ० भा० पु० काशी ।

२. डॉ० माता प्रसाद गुप्त, हि० पु० सा० (६), पृ० २२९ तथा ६४५ ।

३. बीरवरनामा थर्टी नाइन एने क्डट्स ऑफ अकबर एंड हिज मिनिस्टर बिरबल कंपाइल्ड बाइ महा नारायण, पीपी ८०, १६ मो० दिल्ली १८८०,
पीपी ८०, १६ मो० दिल्ली १८८८ ।
—[कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (२) पृ० ६१ ।]

४. द्रष्टव्य आ० भा० पु० काशी में उपलब्ध 'सारसुधानिधि' के ११ अक्तूबर १८८०, २४ जनवरी १८८१ और ७ फरवरी १८८१, के अंक (भाग २, अंक २७, ४० और ४२) ।

५. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना ।

कता-अमौलिकता, तथा अनुवादक, सब कुछ विवाद्य है। यहाँ तक कि इसके नाम के सम्बन्ध में भी लोग एकमत नहीं हैं। इस उपन्यास की जो प्रतियाँ उपलब्ध हैं उनमें से किसी में भी रचना-काल का संकेत नहीं दिया हुआ है। सन् १८८९ ई० में खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर से इस उपन्यास का एक संस्करण 'पूर्णप्रकाश चंद्रप्रभा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। उक्त संस्करण में इसे "भारत भूषण 'भारतेन्दु' श्री हरिश्चन्द्र" (लिखित) कहा गया है।[1] इसके पहले भी यह उपन्यास कहीं से प्रकाशित हुआ था, इसकी प्रामाणिक सूचना प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

'पूर्णप्रकाश-चन्द्रप्रभा' का द्वितीय संस्करण १९२१ ई० में खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास का एक भिन्न संस्करण, जो हरिप्रकाश यंत्रालय, बनारस से मुद्रित है, आर्य भाषा पुस्तकालय काशी में उपलब्ध है।[3] उल्लेखनीय यह है कि इन दोनों प्रतियों में उपन्यास के शीर्षक भिन्न भिन्न हैं। खड्ग विलास प्रेस से प्रकाशित प्रति में 'पूर्णप्रकाश चन्द्रप्रभा' शीर्षक मिलता है और हरिप्रकाश यंत्रालय से प्रकाशित प्रति में 'कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश'। यह कहना बड़ा मुश्किल है कि इन दोनों शीर्षकों में से कौन वास्तविक है। हरिप्रकाश यन्त्रालय से मुद्रित प्रति में मुद्रणकाल नहीं दिया हुआ है इस कारण उसकी प्राचीनता, के सम्बन्ध में कुछ राय देना खतरे से खाली नहीं है। श्री व्रजरत्न दास के अनुमान से यह उपन्यास १८८० ई० के आस पास प्रकाशित हुआ था।[4] जहाँ तक शीर्षक का प्रश्न है, 'कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश' शीर्षक ही भारतेन्दुकालीन प्रतीत होता है। भारतेन्दु काल तथा उसके ईषत् परवर्ती काल में अनूदित उपन्यासों के ऐसे शीर्षक देखने को मिलते हैं। उदाहरणतः भारतेन्दु के आदेशानुसार अनूदित 'मरता क्या न करता अर्थात् रामेश्वर का अदृष्ट (१८८४), पंडित किशनलाल श्रीधर द्वारा अनूदित 'मुद्राकुलीन अर्थात् इतिहास चन्द्रोदय' (१८९२), सतीशचन्द्र बसु लिखित 'चतुरा अर्थात् साधवी सुरेन्द्र' (१८९४), पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी द्वारा अनूदित 'संसार चक्र अर्थात् एक विलक्षण और मनोहर उपन्यास' (१८९९) आदि। श्री व्रजरत्न दास ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास साहित्य' में

---

१. डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, हिन्दी साहित्य का विकास (४) पृ० १७७।

२. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना। आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि–पूर्णप्रकाश चन्द्रप्रभा (मनोहर उपन्यास) भारत भूषण भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र लिखित जिसको हिन्दी भाषा के प्रेमियों तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिए क्षत्रिय पत्रिका सम्पादक स्व० म० कु० बाबू रामदीन सिंह ने संकलित किया। प्रकाशक "खड्ग विलास" प्रेस बाँकीपुर, बाबू राम प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित हरिश्चन्द्राब्द-३७, १९२१, दूसरी बार।

३. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि–कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश कुलीन विवाह सम्बन्धी एक छोटी सी आख्यायिका-बंग भाषा का आशय लेकर हिन्दी में प्रकाश की गई। बनारस महल्ला नेपाली खपरा हरि प्रकाश यंत्रालय में अमीर सिंह ने मुद्रित किया।

४. श्री व्रजरत्न दास, चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश, साहित्य, जुलाई १९६१।

'चन्द्रप्रभा पूर्णप्रकाश' शीर्षक का[१] तथा श्री राधाकृष्ण दास ने[२] 'चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश' का प्रयोग किया है। इन लेखकों ने हरि प्रकाश यन्त्रालय से मुद्रित प्रति में दिये हुए शीर्षक को ही अपनाया है, ऐसा जान पड़ता है। दूसरी तरफ खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर से १८८९ ई० की मुद्रित प्रति की 'पूर्णप्रकाश-चन्द्रप्रभा' शीर्षक दिया हुआ है; अत: उसकी प्राचीनता एवं प्रामाणिकता भी मान्य है। इस प्रकार उक्त उपन्यास के वास्तविक शीर्षक के सम्बन्ध में कोई निश्चित मत दे पाना कठिन प्रतीत होता है। विजय शंकर मल्ल ने अपने एक निबन्ध में इस उपन्यास का शीर्षक 'पूर्णप्रभा-चन्द्रप्रकाश' दिया है,[३] जो असावधानी और प्रमाद का परिणाम है। मेरा विश्वास है कि इस पुस्तक का मूल नाम 'कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश' ही रहा होगा, क्योंकि पुस्तकों के नामकरण सम्बन्धी तत्कालीन प्रचलन के अनुरूप यही नाम है।

'चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश' के सम्बन्ध में दूसरी समस्या इसकी मौलिकता-अमौलिकता को लेकर है। राधाकृष्ण दास ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवनचरित्र में लिखा है कि उन्होंने (भारतेन्दु ने) 'चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश' को अनुवाद करा के स्वयं शुद्ध किया था।[४] डॉ० रामविलास शर्मा ने अपनी पु तक 'भारतेन्दु युग' में श्री शिवनन्दन सहाय का साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए लिखा है, खड्ग विलास प्रेस से 'पूर्णप्रकाश-चन्द्रप्रभा' नाम का जो उपन्यास भारतेन्दु के नाम से प्रकाशित हुआ था वह शिवनन्दन सहाय के अनुसार किसी दूसरे व्यक्ति का अनुवाद किया हुआ है, भारतेन्दु ने उसमें जहाँ तहाँ संशोधन भर किए थे।[५] ब्रजरत्न दास के अनुसार 'राधारानी' (सन् १८८३ ई०), 'चन्द्रप्रभा-पूर्णप्रकाश' तथा 'सौन्दर्यमयी' को श्रीमती मल्लिका देवी 'चन्द्रिका' ने अनूदित किया था।[६] इन प्रमाणों से यह असंदिग्ध है कि यह उपन्यास अनूदित है। इसके मौलिक होने का भ्रम १८८९ ई० में खड्ग विलास प्रेस से मुद्रित संस्करण के कारण उत्पन्न हुआ था, जिसके मुखपृष्ठ पर "भारत भूषण भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र लिखित" वाक्यखंड मुद्रित था। पर ऐसे वाक्यांश तो उस युग की अनेक अनूदित पुस्तकों के आवरणपृष्ठों पर मुद्रित मिलते हैं। ऐसे वाक्यांशों को प्रमाण मानना सर्वथा दोषरहित नहीं है। फिर शिवनन्दन सहाय ने, जिनका साक्ष्य राम विलास शर्मा ने प्रस्तुत किया है, इस भ्रम का निवारण करने का भी प्रयास किया है।

दूसरा प्रश्न यह उठता है, कि 'पूर्णप्रकाश चन्द्रप्रभा' किस भाषा से अनूदित है। हिन्दी के कई शोधकर्ता और आलोचकों ने, जिनमें डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय[७],

---

१. हिन्दी उपन्यास साहित्य (५) पृ० १२९।

२. उपरिवत्, पृ० १२८-२९।

३. विजय शंकर मल्ल, आलोचना (७), पृ० ६५।

४. बाबू राधा कृष्ण दास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सरस्वती, भाग १, सं० ५, मई १९००, पृ० १४२।

५. भारतेन्दु युग (३), पृ० १२५।

६. हिन्दी उपन्यास साहित्य (५), पृ० १२५।

७. आधुनिक हिन्दी साहित्य (४) पृ० १७८

शिवनारायण श्रीवास्तव,[1] डॉ० ओम प्रकाश,[2] डॉ० देवराज उपाध्याय[3], डॉ विजय शंकर मल्ल[4] आदि प्रमुख हैं, इसे मराठी से अनूदित माना है, किन्तु इनमें से किसी ने भी इसके लए कोई प्रमाण नहीं दिया है। जान पड़ता है, इन आलोचकों की इस मान्यता का आधार 'पूर्णप्रकाश' और 'चन्द्रप्रभा' नाम हैं, जो प्रायः बंगाली समाज में नहीं पाये जाते। पर 'पूर्णप्रकाश-चन्द्रप्रभा' को मराठी से अनूदित मानने का यह आधार बड़ा दुर्बल है। हरिप्रकाश यंत्रालय, काशी से मुद्रित 'कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश' के मुखपृष्ठ पर एक वाक्यांश "बंगभाषा का आश्रय लेकर हिन्दी में प्रकाश की गई" मुद्रित है। यदि इस पुस्तक के १८८० ई० में प्रकाशित होने का, तथा बंगाली महिला मल्लिका देवी द्वारा इसके अनूदित होने का, श्री ब्रजरत्न दास का अनुमान सही है, तो मानना होगा कि मूल उपन्यास बँगला का ही रहा होगा। क्योंकि, मल्लिका देवी ने १८८३ ई० के लगभग 'राधारानी' और 'सौन्दर्यमयी' नामक उपन्यासों का बँगला से अनुवाद किया था और सम्भावना इसी बात की अधिक है कि 'चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश' बँगला से ही अनूदित हुआ होगा। बाबू ब्रजरत्न दास ने भी इसे बँगला से ही अनूदित माना है, मराठी से नहीं।[5] मुखपृष्ठ पर उद्धृत वाक्यांश से प्रतीत होता है कि 'पूर्णप्रकाश चन्द्रप्रभा' अविकल अनुवाद न होकर किसी बँगला उपन्यास के आधार पर हिन्दी में लिखित स्वतन्त्र उपन्यास है। इस प्रकार के मुक्त अनुवादों या इतर भाषा के उपन्यासों के आधार पर लिखित उपन्यासों की बहुलता १९०० ई० के पूर्व हिन्दी में पायी जाती है। ऐसे उपन्यासों में मूल उपन्यास की घटनाएँ भर ले ली जाती थीं और उसके पात्रों के नाम तथा घटनाओं आदि में थोड़ा परिवर्तन कर, प्रकृति या अन्य प्रकार के कुछ वर्णनों की योजना कर, नया उपन्यास प्रस्तुत कर दिया जाता था। मेरा अनुमान है कि इस उपन्यास की रचना बँगला के किसी 'कुलीन कन्या' नामक उपन्यास के आधार पर की गयी है। इसी कारण इसका शीर्षक 'कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश' रखा गया है। सम्भव है, मूल उपन्यास में चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश नाम न हों, और ये हिन्दी अनुवादक द्वारा मूल उपन्यास के नायक तथा नायिका के लिए दिए गए नाम हों। उपन्यास में आये अन्य पात्रों के नाम भी जैसे आनन्द विग्रह, गुण मंजरी, मदिरानन्द, मधुरिमा, गोकुलोत्सव, ढुंढिराज आदि कल्पित प्रतीत होते हैं। ऐसे नाम बँगला उपन्यासों में प्रायः नहीं मिलते। पर इसी आधार पर 'चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश' को मराठी उपन्यास का अनुवाद मान बैठना जल्दबाजी का सूचक है।

'पूर्ण प्रकाश-चन्द्रप्रभा' का अनुवाद-काल नितान्त अनिश्चित है। खड्गविलास प्रेस, पटना से यह सर्वप्रथम १८८९ ई० में मुद्रित हुआ था। हरिप्रकाश यन्त्रालय, बनारस में मुद्रित प्रति में मुद्रण-काल की सूचना नहीं दी गयी है। श्री राधाकृष्ण दास और शिवनन्दन

१. हिन्दी उपन्यास (७), पृ० ५३
२. डॉ० ओम प्रकाश, आलोचना की ओर, पृ० १४१
३. हिन्दी साहित्य कोश (२), १४५
४. विजय शंकर मल्ल (७), पृ० ६४
५. ब्रजरत्न दास, चन्द्रप्रभा और पूर्णप्रकाश, साहित्य, जुलाई १९६१, पृ० १०

सहाय के अनुसार, जो भारतेन्दु के समकालीनों में थे, भारतेन्दु ने इस उपन्यास का अनुवाद किसी से कराकर उसे स्वयं संशोधित किया था। अतः वावू व्रजरत्न दास के इस अनुमान को, कि "सन् १८८० ई० के आस पास यह उपन्यास प्रथम वार प्रकाशित हुआ था," मान लेने में कोई विशेष आपत्ति नहीं दिखाई पड़ती।

मधुमती

सन् १८८१ ई० में श्री व्यास रामशंकर शर्मा ने भारतेन्दु वावू हरिश्चन्द्र की सम्मति से वँगला से 'मधुमती' नामक उपन्यास का अनुवाद किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वयं इस उपन्यास को प्रकाशित करना चाहते थे पर उनके जीवनकाल में यह प्रकाशित न हो सका।[1] पाँच वर्ष बाद सन् १८८६ ई० में यह उपन्यास खड्ग विलास प्रेस, वाँकीपुर से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलव्ध है।[2] वावू व्रजनन्दन सहाय के अनुसार 'मधुमालती' के मूल लेखक वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के भाई वावू पूर्णचन्द्र चट्टोपाध्याय थे, जिन्होंने 'शैशव सहचरी' और 'मधुमती' इन दो उपन्यासों की रचना की थी।[3] १९१२ ई० में इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण "खड्ग विलास" प्रेस, वाँकीपुर से प्रकाशित हुआ, जिसकी एक प्रति वि० रा० भा० प० पु० में उपलव्ध है।

दुर्गेश नन्दिनी

सन् १८८२ ई० में वंकिमचन्द्र चटर्जी के 'दुर्गेश नन्दिनी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का वावू गदाधर सिंह कृत हिन्दी अनुवाद (प्रथम खंड) वनारस से प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद का द्वितीय खंड १८८४ ई० में प्रकाशित हुआ।

हास विलास

सन् १८८२ ई० में ही राम चरित्र सिंह द्वारा संगृहीत हास विलास नामक कथा-

---

१. "..........."मधुमती" आजकल की परम सौभाग्यवती वंगभाषा का एक प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसे उस भाषा के रसज्ञ वड़ी चाह से पढ़ते हैं। सन् १८८१ ई० के सितम्वर मास में........ श्रीमान् भारतेन्दु वावू हरिश्चन्द्र जी ने मुझे इसके अनुवाद करने की सम्मति दी और उनके आज्ञानुसार मैंने उसी महीने में उसका अनुवाद करके उनको समर्पण कर दिया। अनुवाद को अवलोकन कर उक्त गोलोकवासी ने अपनी विशेष प्रसन्नता प्रकट की थी, जिसका मैं सदा के लिए वाधित हूँ। वावू साहिव ने स्वयं उसको छपाना चाहा था परन्तु ईश्वरेच्छा वड़ी प्रवल होती है ऐसी साईत न आई कि उनके आगे छप जाती"—मधुमती, अनु० श्री व्यास रामशंकर शर्मा, खड्ग विलास प्रेस, वाँकीपुर, १८८६ ई०, निवेदन।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मधुमती वंग भाषा का एक उत्तम उपन्यास जिसका हिन्दी अनुवाद खगोल दर्पण, वाक्य पंचाशिका, नेपोलियन का जीवन चरित्र, वात की करामात, चन्द्रास्त औ नीति कथामृत प्रणेता श्री व्यास रामशंकर शर्मा ने किया, "खड्ग विलास" प्रेस, वाँकीपुर, सन् १८८६ ई०, हरिश्चन्द्र सं० २, पहली वार १००० कापी, पृ० २९।

३. वावू व्रजनन्दन सहाय, चन्द्रशेखर, खड्ग विलास प्रेस, वाँकीपुर, १९०७, भूमिका।

संग्रह पटना से प्रकाशित हुआ।[1]

सतीत्व रक्षिणी

सन् १८८३ ई० के फरवरी महीने में बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री ने किसी अँगरेजी पुस्तक के आधार पर 'सतीत्व रक्षिणी' नामक उपन्यास की रचना की, जो 'भारतेन्दु मासिक पत्र' द्वारा प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की एक प्रति आ० भा० पु० काशी में उपलब्ध है।[2] आवरणपृष्ठ पर इस उपन्यास को 'संगृहीत' कहा गया है। उपन्यास में आये पात्रों तथा स्थानों के नाम इंगलैंडीय हैं। इससे यह अनुमान होता है कि यह उपन्यास या तो किसी अँगरेजी उपन्यास का अनुवाद है, अथवा किसी अँगरेजी उपन्यास के आधार पर इसकी रचना हुई है। यह केवल २९ पृष्ठों का एक लघु उपन्यास है, जिसमें यूरोप के प्रसिद्ध सम्राट् एडवर्ड तृतीय के जीवन से सम्बद्ध कथा का वर्णन किया गया है।

टेल्स फ्रॉम शेक्सपीयर (खंड १)

सन् १८८३ ई० में ही बाबू काशीनाथ खत्री ने चार्ल्स लैम्ब द्वारा रूपान्तरित 'टेल्स फ्रॉम शेक्सपीयर' से नौ कहानियों का हिन्दी अनुवाद करके उन्हें अपनी पुस्तक के प्रथम खंड के रूप में प्रकाशित कराया। इस खंड को प्राप्त करने में मैं असमर्थ रहा हूँ, पर १८८४ ई० में प्रकाशित इस अनुवाद के द्वितीय खंड की भूमिका से उपर्युक्त सूचना प्राप्त होती है।[3]

राधारानी

सन् १८८३ ई० में बंकिम चन्द्र चटर्जी के 'राधारानी' नामक उपन्यास का 'किसी पतिप्राणा अबला' कृत हिन्दी अनुवाद चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस से मुद्रित और मल्लिक चन्द्र

---

१. हास विलास, एम्युजिंग ऐनेक्डोट्स कंपाइल्ड बाइ रामचरित्र सिंह, पार्ट २, पी पी ७६, पटना, १८८२ [कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, पृ० ६२]

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सतीत्व रक्षणी, ऐतिहासिक उपन्यास, श्री कार्तिक प्रसाद द्वारा संगृहीता भारतेन्दु मासिक पत्र द्वारा प्रकाशित, लाहौर, लाला रामदास द्वारा आर्य यंत्रालय में मुद्रित हुअ १००० पहली बार मोल-)॥ (पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर रचनाकाल दिया हुआ है : ९ फरवरी, १८८३, कार्तिक प्रसाद खत्री) पृ० सं० २९

३. "......शेक्सपीयर के सब असल नाटकों के अनुवाद करने में ग्रन्थ का बहुत विस्तार हो जाता और हिन्दी भाषा की वर्तमान दशा देखकर पूर्ण आशा न होती थी कि अधिक मूल्य के ग्रन्थ होने पर देश में उसका यथोचित प्रचार होगा, इस कारण मैंने मेरी लेम्बस सम्पादित ग्रन्थ से प्रथम नौ नाटकों को, जो सुगमता के अर्थ उपन्यास की रीति पर लिखे हुए हैं, अनुवाद करके १८८३ में प्रकाशित किया, मुझे तनिक निश्चय न था कि सर्व साधारण में मेरे अनुवाद को इतना अधिक आदर मिलेगा, और लोग इतने अधिक चाव और रुचि से उसको पाठ करेंगे कि आठ मास के अन्दर उस ग्रन्थ के १) मूल्य होने पर भी एक सहस्र प्रतियाँ बिक जायँगी और कई देश के भूषण महराजे और रईस उसको पसन्द करके मुझे पारितोषिक प्रदान करेंगे, और कई सरकारी कर्मचारी उसकी सैकड़ों प्रतियाँ मोल लेकर मेरे विद्योत्साह को बढ़ायेंगे, मेरी निर्बल लेखनी में सामर्थ्य नहीं है कि उन सब सहायक महानुभावों का यथावत् धन्यवाद कर सकूँ।"—टेल्स फ्रोम शेक्सपीयर, दूसरा भाग, अनु० लाला काशीनाथ खत्री, संवत् १९४१, भूमिका।

और कम्पनी द्वारा प्रकाशित हुआ।[१] बाबू ब्रजरत्न दास के अनुसार यह 'पतिप्राणा अबला' और कोई नहीं, भारतेन्दु की प्रतिपालिता 'बंग महिला' देवी थीं। मल्लिक चन्द्र और कम्पनी भी उन्हीं की थी।[२]

मरता क्या न करता अर्थात् रामेश्वर का अदृष्ट

सन् १८८४ ई० में राधाकृष्ण दास द्वारा बँगला से अनूदित उपन्यास 'मरता क्या न करता अर्थात् रामेश्वर का अदृष्ट' भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की एक प्रति चैतन्य पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[३] 'स्वर्णलता' के उपक्रम से ज्ञात होता है कि राधाकृष्ण दास ने उपर्युक्त उपन्यास का अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के आदेश से किया था।[४]

टेल्स फ्रॉम शेक्सपीयर (खंड २)

सन् १८८४ में ही श्रीयुत लाला काशीनाथ खत्री ने चार्ल्स और मेरी लैम्ब कृत 'टेल्स फ्रॉम शेक्सपीयर' की शेप ११ कहानियों का अनुवाद प्रस्तुत किया, जो 'टेल्स फ्रॉम शेक्सपीयर-दूसरा खंड' शीर्षक से वैदिक यन्त्रालय में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ। इसका पहला खंड १८८२ ई० में ही प्रकाशित हो चुका था।[५] दूसरे खंड की प्रति चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी में उपलब्ध है।[६]

वाराह पुराण भाषा (पूर्वार्द्ध)

सन् १८८५ ई० में श्री दुर्गा प्रसाद द्वारा अनूदित 'श्री वाराह पुराण भाषा (पूर्वार्द्ध)' का दूसरा संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ। इस ग्रन्थ की एक प्रति

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राधारानी वंग भाषा से किसी पतिप्राणा अबला द्वारा अनुवादित, इसके मुद्रणादि का अधिकार केवल मल्लिक चन्द्र और कम्पनी को प्राप्त है। (रोमन अक्षरों में) बनारस दि चन्द्रप्रभा प्रेस, १८८३, पृ० सं० ३९।

२. ब्रजरत्न दास, पूर्णप्रभा और चन्द्रप्रकाश, साहित्य, जुलाई १९६१।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मरता क्या न करता अर्थात् रामेश्वर का अदृष्ट जिसे काशी निवासी बाबू राधा कृष्णदास ने रसिक जनों के चित्तविनोदार्थ वंग भाषा में उल्था किया। यह पुस्तक काशी भारत जीवन प्रेस में बाबू रामकृष्ण खत्री के पास मिलेगी। बनारस, भारत जीवन प्रेस, १८८४. प्रथम बार १०००, (मूल्य=), पृ० सं० २३

४. स्वर्णलता, अनु० राधाकृष्ण दास, उपक्रम

५. द्रष्टव्य पृ० ५९

६. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
अँगरेजी कवि शिरोमणि शेक्सपीयर के परम मनोहर नाटकों के आशय, टेल्स फ्रॉम शेक्सपीयर दूसरा भाग, मेरी चार्ल्स लैम्ब-सम्पादित (रोमन अक्षरों में बाइ चार्ल्स एण्ड मेरी लैम्ब) जिनको अपने देशीय सुजनों के चित्तविनोद और उपदेशार्थ श्रीयुक्त लाला काशी नाथ खत्री सिरसा जिला इलाहाबाद ने सरल और स्वच्छ हिन्दी में अनुवाद किया। और जो भाषा संवर्द्धिनी सभा से पसंद होकर श्रीमन्महाराजाधिराज अलवर की सहायता से प्रकाश किया गया, मुंशी समर्थदास के प्रबन्ध से वैदिक यंत्रालय में छपा, संवत् १९४१, प्रथम बार १२५०।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[1] प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को न तो इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण, न उसका प्रकाशन काल प्राप्त हो सका है।

सालिगा सलैबृज

सन् १८८५ ई० में पं० भेदीराम ने सारंगा सदैवृज की प्रेम कथा को, जो लोक-जीवन में खूब प्रचलित थी, 'सालिगा सलैबृज' शीर्षक पुस्तक के रूप में लिखित रूप प्रदान किया। यह गद्यकथा १८८५ ई० में मुद्रित हुई। इसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है।[2] सन् १८८९ ई० में यह कथा नवीन रूप में, आगरा से, चार खंडों में मुद्रित हुई। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस कथा के दो खंड (प्रथम और चतुर्थ) उपलब्ध हैं।[3] बाद में इस कथा के अनेक संस्करण, अनेक प्रकाशन-संस्थाओं से, प्रकाशित हुए हैं, पर उनकी संस्करण-संख्या तथा प्रकाशन-वर्ष बताना असम्भवप्राय है, क्योंकि उनके प्रकाशकों ने ये सूचनाएँ देना आवश्यक नहीं समझा है। जहाँ तक इस कथा की लोकप्रियता की बात है, यह आज भी गाँवों में खूब प्रचलित है।

किस्सा शाहरूम

इसी वर्ष (सन् १८८५ ई०) मतबअ़ जैब काशी से 'किस्सा शाहरूम' नामक गद्य-कथा प्रकाशित हुई, जिसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[4] यह गद्यकथा उतनी लोकप्रिय नहीं हुई।

भाषा रामायण

सन् १८८६ ई० में पंडित काली प्रसाद त्रिपाठी द्वारा वाल्मीकि, अध्यात्म और तुलसी कृत रामायणों के आधार पर लिखित 'भाषा रामायण' नामक गद्यकथा का चौथा

---

१. आवरण पृ० की प्रतिलिपि—
श्री बाराह पुराण भाषा पूर्वार्द्ध······जिसको पंडित श्री दुर्गा प्रसाद ने आर्यभाषा में अनुवाद किया। दूसरी बार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छापा गया, अगस्त सन् १८८५ ई०, पृ० सं० ३१८

२. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—
सालिंगा सलैबृज का दरमत वा नूरजहूरी में व एहतमाम हुसैनुद्दीन के छापा गया। सं० १९४२ वि०। पृ० सं० ३२, इश्तिहार—प्रगट होय कि सालिंगा सलैबृज के किस्से के चारो भाग पं० भेदीराम ने बनाये सिवाई मुसन्निफ की इजाजत बगैर कोई साहब छापने का इरादा न करें।

३. आवरण पृष्ठों की प्रतिलिपि—सालिंगा सदावृज का वृत्तान्त, प्रथम खंड, आगरा, बिल्लोचपुरा में अबुल उल्लई प्रेस के बीच खुदाबख्श के प्रबन्ध से छापा गया। सन् १८८९ ई०, पृ० सं० ३२, सालिंगा सदावृज बड़ा, आगरा बिल्लोचपुरा अबुल उल्लई प्रेस में छपा, द्वितीय बार १०००-मू०।।=)—चतुर्थ खंड, सन १८८९ ई०, पृ० सं० २८।

४. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—
किस्सा शाहरूम, मतबअ जैब काशी में मुन्शादी लाल के प्रबन्ध से छापा गया। सं० १९४२. पृ० सं० २०।

संस्करण १८८६ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इसके प्रथम संस्करण के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त हो सकी है। इसके चार संस्करणों तथा चौथे संस्करण में मुद्रित प्रतियों की संख्या को देखने से पाठकों के बीच इसकी लोकप्रियता सिद्ध होती है।

हर्षचरित्र

सन् १८८६ ई० में ही बाणभट्ट कृत 'हर्षचरित' के प्रथम उच्छ्वास का अनुवाद 'हर्षचरित्र' शीर्षक से धर्म प्रकाश प्रेस, बाँकीपुर मे प्रकाशित हुआ। इसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में संगृहीत है।[2]

सभा शीरी फ़रहाद

१८८६ ई० में ही शेख इबादे उल्लाह उर्फ बादल लिखित 'सभा शीरी फ़रहाद' नामक कहानी कानपुर से मुद्रित हुई। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस कथा की एक प्रति उपलब्ध है।[3] सन् १८९९ ई० में शीरी और फरहाद की प्रेमकथा पर बाबू हरिकृष्ण जौहर द्वारा लिखित **'शीरी फरहाद'** नाम की कथापुस्तक हरिप्रकाश प्रेस, बनारस से मुद्रित हुई। इस ग्रन्थ की भी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तलालय, काशी में उपलब्ध है।[4]

मनफूल की कहानी

सन् १८८६ ई० में ही 'मनफूल की कहानी' नामक गद्यकथा इलाहाबाद से प्रकाशित हुई।[5]

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भाषा रामायण जिसे काशीवासी पाटलीपुत्रस्थ राजकीय पाठशाला के हिन्दी संस्कृताध्यापक पं० काली प्रसाद त्रिपाठी ने वाल्मीकि अध्यात्म ओर तुलसी कृत आदि रामायणों का आशय लेकर लोकोपकार के लिए सरल हिन्दी में बनाया। प्रिंटेड बाइ साहिब प्रसाद सिंह "खड्ग विलास" प्रेस, बाँकीपुर, चौथी बार, २००० पुस्तक, फोर्थ एडीशन २००० कॉपीज, प्राइस एट अनाज, १८८६।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
हर्षचरित्र, प्रथम उच्छ्वास, बाँकीपुर धर्म प्रकाश प्रेस में छापा गया, का० प्र० ने छापा, १८८६ ई० पृ० सं० ४२।

३. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—
सभा शीरी फरहाद, तसनीफ शेख इबादे उल्लाह उरफ बादल हस्ब फारमाइस मुंशी तेग बहादुर साहेब व मुहम्मद अब्दुल अजीज महबै अजीजी कानपुर में छपी। "इश्तिहार" के नीचे "दः मुहम्द् अब्दुल अजीज मालिक महबाआ अजीजी कानपुर सन् १८८६ ई०" छपा हुआ है।

४. आवरण पृष्ठकी प्रतिलिपि—
शीरी फरहाद, अगाध प्रेम का सच्चा और चित्त विनोद वाला अपूर्व वृत्तांत ऐतिहासिक रत्नों से जोड़कर बाबू हरिकृष्ण (जौहर) द्वारा बनाया गया जिसे बाबू विशेश्वर प्रसाद वर्मा ने ग्रन्थकार से केवल एक बार छापने का अधिकार लेकर निज व्यय से छपवाकर प्रकाशित किया (रोमन अक्षरों में) बनारस, हरिप्रकाश प्रेस, १८९९, प्रथम बार १००० मूल्य ≡), पृ० सं० ९९।

५. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ इंडिया ऑफिस, पृ० ६२।

छबीली भटियारी

इसी वर्ष 'छबीली भटियारी' नामक गद्यकथा आगरा से मुद्रित हुई ।[१]

शिवपुराण भाषा

१८८६ ई० में ही पं० प्यारेलाल रुग्गू द्वारा अनूदित 'शिवपुराण भाषा ग्यारहों खंड' नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर इसके छठे संस्करण (मई १९०२ ई०) के आवरणपृष्ठ पर यह सूचना दी हुई है कि इस पुस्तक की रजिस्ट्री २३ नवंबर सन् १८८६ ई० को १४०३ नंबर पर हुई ।" इस सूचना से इस ग्रन्थ के प्रथम संस्करण का मुद्रणकाल अनुमित होता है ।

'शिवपुराण भाषा' का ६ठा संस्करण मई १९०२ ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ । इसकी एक प्रति बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है ।[२]

सौन्दर्यमयी

सन् १७८७ ई० में श्रीमती मल्लिका देवी द्वारा बंगभाषा से अनूदित उपन्यास 'सौन्दर्यमयी' अमर यंत्रालय, काशी से प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास की एक प्रति चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट,पटना सिटी में उपलब्ध है ।[३]

रामकथा (खंड १)

सन् १८८७ ई० में, अथवा इससे कुछ पूर्व, पं० छोटूराम तिवारी लिखित 'राम कथा' (प्रथम खंड) प्रकाशित हुआ था । 'रामकथा' के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है, पर मुंशी संकटा प्रसाद द्वारा रचित 'बाल बोध रामायण' के पक्ष में उपनिरीक्षक मोती लाल द्वारा लिखित प्रशंसापत्र से, जो १ जून १८८७ ई० को लिखा गया था, तथा जो 'बाल बोध रामायण' के साथ संलग्न है,

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० । आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—छबीली भटियारी, आगरा मुहल्ला गुलाबखाने में मीरबक्त के छपी, पृ० सं० ४८ । अन्त की पंक्तियाँ—इति सिकन्दरशाह बादशाह के शाहजादे रमनशाह और छबीली भटियारी और विचित्र कुंवरि का किस्सा, सम्पूर्णम् संवत् १९४३, सन् १८८६ ई० इति ।

२. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—शिव पुराण भाषा ग्यारहों खंड जिसका......शिव सिंह साहब इन्सपेक्टर पुलिस रायबरेली स्वर्गवासी ने उर्दू में उल्था किया था उससे......मुंशी नवल किशोर साहब ने काश्मीरी पंडित प्यारे लाल रुग्गू स्वर्गवासी को बहुत द्रव्य दे भाषान्तर कराया; ६ठी बार लखनऊ मुन्शी नवल किशोर के छापाखाने में छापी गयी, मई सन् १९०२ ई०, इस पुस्तक की रजिस्ट्री २३ नवम्बर सन् १८८६ ई० को १४०३ नम्बर पर हुई । पृ० सं० १०१० ।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सौन्दर्यमयी, वियोगांत उपन्यास, बंगभाषा से श्रीमती मल्लिका देवी द्वारा अनुवादित, श्रीअम्बिका चरण चट्टोपाध्याय द्वारा काशी दशाश्वमेधस्थ अमर मन्त्रालय में मुद्रित, श्रीहरिश्चन्द्र संवत् ३, गुरुपूर्णिमा १९४४ मूल्य ।)

इसका प्रथम मुद्रणकाल अनुमित होता है ।[१] इस प्रशंसा-पत्र की एक पंक्ति, जिससे 'राम कथा' का प्रथम मुद्रण-काल ज्ञात होता है, निम्नलिखित है—"दि लैंग्वेज ऑफ दि बुक इज गुड ऐंड इज ऑन दि मॉडेल ऑफ प्रेमसागर वाई लल्लू लाल एण्ड राम कथा वाई पंडित छोटू राम तिवारी ।"

सन् १८८८ ई० में 'रामकथा' का दूसरा संस्करण खड्गविलास प्रेस, वाँकीपुर से मुद्रित प्रकाशित हुआ । इस संस्करण की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है ।[2]

बालबोध रामायण

सन् १८८७ ई० में ही **मुन्शी संकटा प्रसाद** लिखित **'बालबोध रामायण'** (अयोध्या-कांड प्रकाशित हुआ । इस पुस्तक के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है, पर इसके तृतीय संस्करण के साथ संलग्न विद्यालयों के उपनिरीक्षक श्री मोतीलाल के प्रशंसापत्र से, जो १ जून १८८७ ई० को लिखा गया था, ज्ञात होता है कि इसका रचना-काल अथवा मुद्रण-काल, या दोनों, १८८७ ई० है । वालवोध रामायण का दूसरा संस्करण भारत भूषण प्रेस, वनारस से १८९४ ई० में और तीसरा संस्करण अमर प्रेस, बनारस से १८९९ ई० में मुद्रित हुआ था । इन दोनों संस्करणों की एक एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है ।[३]

बृहन्नारदीय पुराण भाषा

सन् १८८७ ई० में ही **शुक्लदेवी सहाय शर्मा** द्वारा अनूदित "बृहन्नारदीय पुराण भाषा" नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ । इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त नहीं हो सका है, पर इसके दूसरे संस्करण के आवरणपृष्ठ पर मुद्रित पंक्ति से इसका प्रथम मुद्रण-काल संकेतित होता है—"प्रकट हो कि इस पुस्तक की रजिस्ट्री न० ६०६ मवर्सखे २५ अगस्त सन् १८८७ ई० को हुई है इसलिए इसके छापने का कोई इरादा न करे।"

इस ग्रन्थ का दूसरा संस्करण अक्तूबर १८९२ ई० में, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ

---

१. वालवोध रामायण, ले० मुंशी संकटा प्रसाद, अमर प्रेस वनारस, तीसरा संस्करण १८९९ । मोतीलाल लिखित प्रमाण पत्र ।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रामकथा, प्रथम खंड, जिसको पंडित छोटू राम तिवारी ने वाल्मीकि रामायण आदि ग्रन्थों की छाया ले हिन्दी में वनाया, पटना, "खड्ग विलास" प्रेस, वाँकीपुर साहब प्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया, १८८८ दूसरी वार, ३००० कॉपी, दाम चार आना, पृ० सं० १४१ ।

३. मुखपृष्ठों की प्रतिलिपि—वालवोध रामायण, अयोध्या कांड, जो कि वाल्मीकि अध्यात्म अग्नि-वेश और तुलसी कृत आदि रामायणों के आशय से वालकों के निमित्त मुंशी संकटा प्रसाद हेडमास्टर स्कूल सदीसोपुर जिला पटना ने वनाया, प्रिंटेड वाई जे० पी० निगम ऐंड को०, ऐजेन्ट भारत भूषण प्रेस, वनारस, १८९४, दूसरी वार, १०००पुस्तकें, दाम ☰)
तीसरा संस्करण अन्य (सूचनाएँ, उपरिवत्) वनारस, प्रिंटेड, एड दि अमर प्रेस, १८९९ तीसरी वार, १००० पुस्तकें दाम ☰)

न प्रकाशित हुआ। इस संस्करण की एक प्रति बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[१]

संसार सुख

सन् १८८७ ई० में लक्ष्मीनाथ भट्ट द्वारा गुजराती से अनूदित शिक्षाप्रधान किस्सों का एक संग्रह 'संसार सुख' बिहार बन्धु प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है, पर हिन्दी प्रदीप, जिल्द १०, संख्या १२ (अगस्त १८८७ ई०)[२] में प्रकाशित निम्नलिखित समालोचना से इसका प्रथम मुद्रण-काल अनुमित होता है :

"संसार सुख—तीन हिस्सों में गुजराती से लक्ष्मीनाथ भट्ट कृत अनुवादित—इसमें सरल भाषा में छोटे २ किस्से लिखे गये हैं जिनमें एक २ शिक्षा संसार के सुख के सम्बन्ध में पायी जाती है—इन पुस्तकों में एक उत्तम गुण यह है कि यह स्त्रियों के पढ़ने योग्य भी है—बिहार बन्धु बाँकीपुर में छपी है।"

रणधीर सुन्दरी उपन्यास

इसी वर्ष हिन्दी प्रदीप, जिल्द १०, संख्या ७, ११ और १२ में (मार्च, जुलाई और अगस्त १८८७) बाबू हरदेव प्रसाद द्वारा सम्पादित 'रणधीर सुन्दरी उपन्यास' प्रकाशित हुआ।[३] यह उपन्यास हिन्दी प्रदीप के केवल तीन ही अंकों में अधूरा प्रकाशित होकर रह गया। बाबू हरदेव प्रसाद को उपन्यास का लेखक न कहकर सम्पादक कहा गया है। सम्भव है कि यह अनुवाद हो।

महाभारत (आदि पर्व)

सन् १८८८ ई० में कुंज बिहारी लाल शर्मा द्वारा अनूदित 'महाभारत (आदि पर्व)' नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त नहीं हो सका है, पर इसके तीसरे संस्करण के आवरणपृष्ठ पर मुद्रित पंक्ति से—"जनवरी सन् १८८८ ई० को रजिस्ट्री हुई है"—इसका प्रथम मुद्रण-काल अनुमित होता है।

इस ग्रन्थ का तीसरा संस्करण १९०७ ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ। इसकी एक प्रति बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[४]

---

१. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—बृहन्नारदीय पुराण भाषा……जिसको……श्री मुन्शी नवलकिशोर जी की आज्ञानुसार शुक्लदेवी सहाय शर्मा, नारनवालीय ने संपूर्ण विद्वज्जनों के मनोरंजनार्थ रचना किया दूसरी बार लखनऊ, मुन्शी नवलकिशोर के छापाखाने में छपी, अक्तूबर सन् १८९२ ई० प्रकट हो कि इस पुस्तक की रजिस्ट्री नं० ६०६, मवर्रुखे २५ अगस्त, सन् १८८७ ई० को हुई है इसलिए इसके छापने का कोई इरादा न करे।

२. प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

३. उपरिवत्।

४. आवरण पृष्ठ की प्रतिलिपि—महाभारत भाषा वार्तिक आदि पर्व……जिसको……मुन्शी नवल-

हिकायते अकबर

सन् १८८८ ई० में अकबर के जीवन से सम्बद्ध सोलह कथाओं का संकलन 'हिकायते अकबर' नाम से, दिल्ली से, मुद्रित हुआ ।[१]

राजा भोज का स्वप्न

इसी वर्ष मुश्री सी० एम० टक्कर लिखित 'राजाज ड्रीम' का राजा शिवप्रसाद कृत अनुवाद **'राजा भोज का स्वप्न'** नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इसकी एक प्रति उपलब्ध है ।[२] इसका तीसरा संस्करण १९०५ ई० मे छपा ।[३]

वेनिस का बाँका

सन् १८८८ ई० मे ही **पं० अयोध्याय सिंह उपाध्याय हरिऔध** ने अँगरेजी में लिखित किसी पुस्तक का रूपांतर 'वेनिस का बाँका' शीर्षक से प्रस्तुत किया था और कदाचित् उसी वर्ष मुद्रित भी हुआ था। प्रस्तुत प्रबन्ध का लेखक इस अनुवाद के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसके दूसरे संस्करण के 'निवेदन' तथा 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि सन् १८८८ ई० में उर्दू की 'काशीपत्रिका' में 'वेनिस का बाँका' नामक एक रोचक उपन्यास अँगरेजी से अनुवादित होकर निकला और हरिऔध जी ने उसी को हिन्दी भाषा के साँचे में ढाल कर प्रस्तुत किया ।[४] इस उपन्यास की कथावस्तु शेक्सपीयर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' की कथावस्तु से इतनी मिलती जुलती है कि 'काशी पत्रिका' में प्रकाशित उपन्यास शेक्सपीयर के नाटक का ही रूपान्तर प्रतीत होता है।

इसका दूसरा संस्करण १९२८ ई० में पाठक एण्ड सन, भाषा पुस्तकालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ ।[५] पुस्तक के आवरणपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ

किशोर जी की आज्ञानुसार······श्रीपंडित गोकुलचन्द्रात्मज, श्री पं० मोहन लाल सूनु, पं० कुंजविहारी लाल शर्मा, ने संस्कृत महाभारत से यथातथ्य पूरा श्लोक श्लोक का भाषा किया। तीसरी बार लखनऊ, मुंशी नवलकिशोर के छापखाने में छापा गया। मार्च सन् १९०७ ई०······ जनवरी, सन् १८८८ ई० को रजिस्ट्री हुई है।

१. हिकायते अकबर, सिक्स्टीन ऐनेक्डोट्स ऑफ अकबर, पीपी ६४, १६ मो०. डेलही, १८८८, [कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, पृ० ६२]
२. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजाभोज का स्वप्न, राजाज ड्रीम बाइ मिस सी० एम० टक्कर ट्रान्सलेटेड बाइ राजा शिवप्रसाद सी० एस० आइ० फॉर एच० सी० टक्कर एस्क्वायर बी० सी० एस०—राजा शिवप्रसाद (सितारे हिन्द) ने बनाया; लखनऊ, मुन्शी नवलकिशोर के छापाखाने में छपी. जून, सन् १८८८ ई०, पहली बार, ६००, मोल फी पुस्तक –)।। पृ० सं० ३१।
३. प्रा० स्था०—आ०भा० पु० काशी।
४. वेनिस का बाँका, अ० पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, पाठक ऐंड सन, बनारस सिटी, दूसरा संस्करण, १९२८, प्रकाशक का निवेदन, तथा दूसरे संस्करण की भूमिका।
५. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना, आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—वेनिस का बाँका अनुवादक—पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, प्रकाशक—पाठक ऐंड सन, भाषा भंडार पुस्तकालय, राजा दरवाजा, बनारस सिटी। दूसरी बार, १०००।

है, पर 'प्रकाशक का निवेदन' और 'दूसरे संस्करण की भूमिका' के नीचे क्रमशः सं० १९८५ और ८-१-२८ तिथियाँ अंकित है, जिससे इस संस्करण का प्रकाशन-काल अनुमित होता है।

धोखे की टट्टी

१८८८ ई० में ही श्री **ब्रज मोहन लाल श्रीवास्तव** द्वारा, चार्ल्स लैम्ब द्वारा प्रस्तुत किसी कहानी के आधार पर, रचित 'धोखे की टट्टी' नामक 'एक मनोहर उपन्यास,' कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[1]

द्रौपदी सत्यभामा

सन् १८८८ ई० में **लक्ष्मी नाथ भट्ट** द्वारा लिखित 'द्रौपदी सत्यभामा' नामक १४ पृष्ठों की कथा विहार बन्धु छापाखाना, पटना से प्रकाशित हुई।[2]

लावण्यमयी

सन् १८८८ ई० में ही **किशोरी लाल गोस्वामी** ने वंग भाषा के आश्रय से 'लावण्यमयी' नामक उपन्यास की रचना की।[3] सन् १८९१ ई० में इसका प्रथम संस्करण भारत जीवन प्रेस (काशी) से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास का दूसरा संस्करण सन् १९१६ ई० में सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन से मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[5]

महाभारत भाषा

सन् १८८९ ई० में पं० कालीचरण द्वारा अनूदित 'महाभारत भाषा (मौप्तिक पर्व, स्त्री पर्व) नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ। इसका प्रथम संस्करण मुझे नहीं मिल सका है, पर इसके दूसरे संस्करण के आवरणपृष्ठ पर मुद्रित पंक्ति से, जो अग्रांकित है, इसका प्रथम मुद्रणकाल अनुमित होता है : "इस पुस्तक की रजिस्टरी २९ मार्च १८८९ ई० में नं० २४६ पर हुई है।"

इस पुस्तक का दूसरा संस्करण जनवरी १८९८ ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ

---

१. आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—धोखे की टट्टी एक मनोहर उपन्यास जिसको ब्रजमोहन लाल श्रीवास्तव ने लैम्ब साहित्य की पुस्तकों के आशय से सरल हिन्दी भाषा में तैयार करके प्रकाशित किया। नं० २०७, दरमाहट्टा स्ट्रीट, बड़ा बाजार, कलकत्ता, १८८८।

२. प्राप्ति स्थान—माहेश्वर पुस्तकालय पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—द्रौपदी सत्यभामा जिसे लक्ष्मीनाथ भट्ट ने (हिन्दी भाषा में) लिखा, पटना, विहार बन्धु छापखाना, १८८८।

३. किशोरी लाल गोस्वामी, लावण्यमयी, द्वितीय संस्करण १९१६ ई०, द्वितीय संस्करण की भूमिका।

४. प्रा० स्था०—आ० भा पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लावण्यमयी उपन्यास, (अद्भुत और रहस्य पूर्ण घटनावली का समूह) श्रीकिशोरी लाल गोस्वामी, सम्पादक (आर्य पुस्तकालय आरा), में वंग भाषा के आश्रय से विशुद्ध आर्यभाषा में लिखा। काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित, सन् १८९१ ई० में प्रथम वार, १०००, मूल्य =), पृ० सं० ४०।

५. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना।

से मुद्रित हुआ ।[१]

ठग वृत्तान्तमाला

सन् १८८९ ई० में ही **राम कृष्ण वर्मा** द्वारा अनूदित 'ठग वृत्तान्त माला' नामक कथापुस्तक प्रकाशित हुई ।[२] मैं इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा हूँ, किन्तु १८९० ई० में प्रकाशित 'पुलिस वृत्तान्त माला' के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात होता है कि मूल पुस्तक अँगरेजी में थी तथा उसके लेखक कर्नल मेडीज टेलर थे ।[३] इस पुस्तक में शेर अली नामक ठग के द्वारा, जो अँगरेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया, अमीर अली ठग तथा उसके दल के कारनामों का वर्णन कराया गया है ।

महारामायण

सम्भवत: सन् १८८९ ई० तक **कृष्ण वल्लभ पंडित** द्वारा संगृहीत 'महारामायण' नामक गद्यकथा प्रकाशित हो चुकी थी । इस कथा का तृतीय संस्करण १८९३ ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ था ।[४] इससे इसके प्रथम संस्करण के १८८९ के पूर्व छपने का अनुमान किया जा सकता है ।

श्रीमद्वाराह पुराण

सन् १८८९ ई० में **पं० माधव प्रसाद शर्मा** द्वारा अनूदित 'श्रीमद्वाराह पुराण (उत्तरार्द्ध)' का दूसरा संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ ।[५] इस पुस्तक के प्रथम संस्करण का पता मुझे नहीं है ।

प्रेममयी

१८८९ ई० में ही **किशोरी लाल गोस्वामी** ने बँगला के किसी उपन्यास का 'प्रेम

---

१. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु०, पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-महाभारत भाषा, (सौप्तिक पर्व, स्त्री पर्व)······जिसको······मुंशी नवलकिशोर जी······ने पं० कालीचरण जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक-श्लोक का भाषानुवाद कराया । दूसरी बार, लखनऊ, मुंशी नवलकिशोर के छापखाने में छपा, जनवरी, सन् १८८८ ई० में—इस पुस्तक की रजिस्टरी २९ मार्च १८८९ ई० में नम्बर २४६ पर हुई है ।

२. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास, सरस्वती मन्दिर, वाराणसी, सं० २०१६, पृ० ५३ ।

३. रामकृष्ण वर्मा, पुलिस वृत्तान्त माला, अन्तिम पृष्ठ का विज्ञापन ।

४. महारामायण, विशूचिका आख्यान जिसमें सर्वोपकारार्थ कर्कटी राक्षसी का आख्यान मन्त्रादि विधि सहित है, जिसके पठन पाठन श्रवण इत्यादि से विशूचिका अर्थात् हैजे इत्यादि का भय नहीं होता । श्रीपाटर्नी मल्ल की आज्ञानुसार भट्टपती कृष्णवल्लभ पंडित महराज की संग्रह की हुई । तीसरी बार, लखनऊ, मुंशी नवलकिशोर, (सी० आई ई०) के छापखाने में छापी गई । जुलाई, सन् १८९३ ई० । पृ० सं० ३० ।

५. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीमद्वाराह पुराण उत्तरार्द्ध का भाषानुवाद जिसका पं० माधव प्रसाद शर्मा, जयपुर स्थायी ने संस्कृत से आर्यभाषा में किया और श्रीमत्पंडितवर दुर्गा प्रसाद और सरयू प्रसाद ने शुद्ध किया । दूसरी बार, अक्तूबर,

मयी' शीर्षक से हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया, जो सर्वप्रथम बूँदी से निकलने वाले 'सर्व-हित' नामक पत्र में, जिसके सम्पादक पं० लज्जाराम शर्मा थे, सन् १८८९ ई० में ही लगभग छप चुका था।[1] पुस्तकाकार छपने का अवसर इसे सन् १९०४ ई० के लगभग प्राप्त हुआ। सन् १९०४ ई० के कुछ पूर्व इसका पहला संस्करण प्रकाशित हो चुका था, क्योंकि सन् १९०४ ई० में प्रकाशित 'चन्द्रावली वा कुलटा कुतूहल' के अन्तिम पृष्ठ पर इस पुस्तक का उल्लेख है। इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में मैं असमर्थ रहा हूँ।

'प्रेममयी' का दूसरा संस्करण १९१४ ई० में श्री सुदर्शन यन्त्रालय (वृन्दावन) से प्रकाशित हुआ। इस संस्करण के निवेदन में मूल उपन्यासकार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए गोस्वामी जी ने लिखा है :

"जिस पुस्तक के आधार पर यह लिखा गया है, उस पर ग्रन्थकर्त्ता का नाम न था, क्योंकि उसके टायटल का कुछ हिस्सा फट गया था, परन्तु हम शुद्धान्तःकरण से इसके प्रणेता के कल्पान्तपर्यन्त कृतज्ञ रहेंगे। वह उपन्यास वियोगान्त है, पर हमारी रुचि वियोगान्त पर नहीं है, इसलिए हमने अनुवाद में वियोगान्त को संयोगान्त बना डाला।[2]

छल दर्पण

सन् १८८९ ई० में हिन्दी प्रदीप, जिल्द १३, संख्या २-७ (अक्टूबर १८८९-मार्च १८९० ई०) में तफरीहुल उकला की छाया पर पं० राम प्रसाद तिवारी लिखित 'छल दर्पण' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[3] जान पड़ता है, यह उपन्यास पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हुआ था। हिन्दी प्रदीप, जिल्द १३, सं० ९, १० (मई, जून १८९० ई०) में इस उपन्यास का निम्नलिखित विज्ञापन छपा था—छल दर्पण (कहानी) धूर्त-विद्या विशारद, घाऊघप, परधनहारी, परपंचकारी का चरित्र और निरपराधियों के फंसाने वाले छल-कर्मियों के कपट की कुंजी और उचित दंड होने का दृष्टान्त और भोले-भाले मनुष्यों के चेताने की चैतन्य गुटिका दाम ≡)

१८८८ ई०, पृ० सं० ३०० ।

१. किशोरी लाल गोस्वामी, प्रेममयी, दूसरा संस्करण १९१४ ई०, निवेदन ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
प्रेममयी सामाजिक उपन्यास, श्री किशोरी लाल गोस्वामी कर्त्तृक वंगभाषा के आश्रय पर विशुद्ध आर्यभाषा में लिखित "पीत्वा प्रेममयी प्रसाद मदिरामुन्मतभूतज्जगत्" श्री छबीले लाल गोस्वामि द्वारा स्वकीय "श्रीसुदर्शन यन्त्रालय"—वृन्दावन में मुद्रित और प्रकाशित, सन् १९१४ ई० में दूसरी वार, १०००, मूल्य तीन आने ।

३. प्रा० स्था०—चैं० पु० पटना ।

तृतीय अध्याय

हिन्दी उपन्यास का विकास

प्रेमचन्दपूर्व युग

१८६०-१६१७

हिन्दी उपन्यास का विकास

प्रेमचन्दपूर्व युग

(१८९०-१९१७)

गत परिच्छेद के आरम्भ में जैसा संकेतित किया जा चुका है, सन् १८९० ई० का वर्ष हिन्दी कथासाहित्य के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण कालविन्दु है। इस वर्ष के बाद कथा-पुस्तकों की जैसे बाढ़ आ गयी। अगले २७ वर्षों में विविध प्रकार की, और बहुत बड़े परिमाण में, कथापुस्तकें लिखी तथा अन्य भाषाओं से अनूदित की गयीं। प्रायः प्रेमचन्द-पूर्व युग का हिन्दी कथासाहित्य आलोचकों और शोधकर्त्ताओं द्वारा उपेक्षित होता रहा है। यही कारण है कि उपन्यास साहित्य पर इतने शोधप्रबन्ध लिखे जाने के बावजूद, प्रेमचन्द-पूर्व युग के कथासाहित्य के वैविध्य और विस्तार का सम्यक् ज्ञान अभी हमें नहीं हो सका है। प्रस्तुत परिच्छेद में हमें १८९०-१९१७ ई० की अवधि में लिखित-अनूदित हिन्दी कथा-साहित्य का विवरण प्रस्तुत करना है। इस काल का अन्तिम छोर १९१७ को इसलिए माना गया है कि १९१८ ई० प्रेमचन्द के प्रथम उपन्यास 'सेवासदन' का प्रकाशन-काल है, जहाँ से प्रेमचन्द युग का आरम्भ होता है। यद्यपि विवेच्य काल में भी प्रेमचन्द का एक हिन्दी उपन्यास ('प्रेमा', १९०७) प्रकाशित हुआ, पर यह उपन्यास उनके अन्य उप-न्यासों की तुलना में इतना भिन्न और शिल्प की दृष्टि से अविकसित है कि इसे प्रेमचन्द युग का आरम्भविन्दु नहीं माना जा सकता। फिर यह उपन्यास (प्रेमा) १९०७ ई० में प्रकाशित हुआ, और उसके बाद ११ वर्षों तक प्रेमचन्द का कोई उपन्यास नहीं निकला। १९१८ ई० के बाद हिन्दी में प्रेमचन्द के उपन्यास एक के बाद एक प्रकाशित होने लगे, और लगभग १८ वर्षों तक, जब तक वे जीवित रहे, हिन्दी उपन्यास साहित्य के एकछत्र सम्राट् बने रहे। इन कारणों से १९१८-१९३६ की अवधि को हिन्दी कथासाहित्य का 'प्रेमचन्द युग' कहना युक्तिसंगत है।

विवेच्य काल को सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित उपखंडों में बाँटा जा सकता है। यह विभाजन विषय और शिल्प को ध्यान में रख कर किया गया है।

(१) ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस (२) अपराधप्रधान और जासूसी कथाएँ
(३) ऐतिहासिक रोमांस और इतिहासाश्रित कथाएँ (४) सामान्य कोटि के रोमांस
(५) सामाजिक उपन्यास (६) मनःकल्पनात्मक कथाएँ (७) धार्मिक कथाएँ

प्रस्तुत परिच्छेद में उपर्युक्त प्रत्येक प्रकार के कथासाहित्य का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मौलिक कथा साहित्य

ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस

देवकी नन्दन खत्री

हिन्दी उपन्यास के विकास में देवकीनन्दन खत्री की देन अविस्मरणीय है। उस जमाने में, जब हिन्दी के पाठक बहुत कम थे और हिन्दी क्षेत्र में भी उर्दू का बोलबाला था, देवकीनन्दन खत्री ने अपने उपन्यासों के द्वारा हिन्दी को असंख्य पाठक दिए थे। खत्री जी के समकालीन तथा परवर्ती हिन्दी लेखकों ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि हिन्दी उपन्यास को लोकप्रिय बनाने का श्रेय देवकीनन्दन खत्री को ही है। खत्री जी के उपन्यास, छपते ही, इतने लोकप्रिय हुए कि अनेक उर्दू जानने वालों ने केवल उनके उपन्यासों को पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी। 'चन्द्रकान्ता' और 'चन्द्रकान्ता सन्तति' के जितने संस्करण आज तक प्रकाशित हो चुके हैं उतने संस्करण हिन्दी के किसी अन्य उपन्यास के नहीं। परवर्ती पृष्ठों में देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों के रचना-काल तथा उनके विभिन्न संस्करणों के प्रकाशन-काल का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

चन्द्रकान्ता

देवकीनन्दन खत्री के प्रथम उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' के रचना-काल या उसके प्रथम मुद्रण-काल के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रचलित हैं। 'चन्द्रकान्ता' के तीसवें संस्करण में प्रथम संस्करण की भूमिका मुद्रित है, जिसके नीचे 'आषाढ़ संवत् १९४४' लिखा हुआ है। यदि मुद्रण की भूल नहीं हो तो इससे 'चन्द्रकान्ता' का रचना-काल १८८७ ई० सिद्ध होता है। भूमिका को पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह प्रथम भाग की रचना के समय ही लिखी गयी थी। 'चन्द्रकान्ता' (तीसवाँ संस्करण)[1] के आरम्भ में संलग्न 'बाबू देवकीनन्दन खत्री की संक्षिप्त जीवनी' के अनुसार, जिसके लेखक बाबू श्यामसुन्दर दास और संशोधक श्री गिरीशचन्द्र त्रिपाठी हैं, 'चन्द्रकान्ता' का पहला भाग काशी, नेपाली खपड़ा, के हरिप्रकाश यन्त्रालय में बाबू अमीर सिंह वर्मा द्वारा सन् १८८८ में छापा गया। इससे ज्ञात होता है कि 'चन्द्रकान्ता' के पहले भाग का रचना-काल १८८७ ई० और प्रथम मुद्रण-काल १८८८ ई० है।

पर प्रस्तुत प्रबन्ध के लेखक को कुछ ऐसी सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं, जिनसे उपर्युक्त रचना-काल के विषय में सन्देह होना नितान्त स्वाभाविक है। चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी में 'चन्द्रकान्ता' की एक प्राचीन प्रति उपलब्ध है, जिसमें चारो भाग एक साथ ग्रथित हैं। इस प्रति के आरम्भ और अन्त के पृष्ठ गायब हैं। इस कारण पहले भाग की संस्करण-संख्या नहीं ज्ञात हो पाती। पर पहले भाग के अन्त में संवत् १९४८ स्पष्ट रूप में लिखा हुआ है। अब यदि चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध 'चन्द्रकान्ता' का पहला

---

१ यह पुस्तक मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय में उपलब्ध है।

भाग उसका प्रथम संस्करण हो—पहले भाग के साथ ग्रथित दूसरे, तीसरे और चौथे भाग तो प्रथम संस्करण वाले हैं ही—तो उसका प्रथम मुद्रण-काल १८९१ सिद्ध होता है, जो गिरीशचन्द्र त्रिपाठी द्वारा प्रदत्त काल से भिन्न है। यदि यह माना जाए कि चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध प्रथम भाग उसका प्रथम संकरण नहीं है, तो यह भी मानना पड़ेगा कि 'चन्द्रकान्ता' के दूसरे भाग के छपने के पूर्व पहले भाग का दूसरा या तीसरा संस्करण हो चुका था। ऐसा मानने का आधार यह है कि चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध चन्द्रकान्ता के प्रथम भाग के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर मुद्रित विज्ञापन में निम्नलिखित पंक्तियाँ प्राप्त होती हैं :

"चन्द्रकांता का दूसरा हिस्सा भी छप रहा है।······इस पहले हिस्से में सब सामान इकट्ठा हो गया है मजे का वक्त अब आता है दूसरे हिस्से में आपलोग देखेंगे कि कैसे चंद्रकांता का पता लगता है वो क्या मजे में लड़ाई होती है और कैसी ऐयारियाँ होती हैं, तिलस्म का भी मजा इसमें आवेगा।"

इस उद्धरण से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि १८९१ ई० में प्रकाशित 'चन्द्रकान्ता' के प्रथम भाग के अनन्तर तुरत ही दूसरा भाग मुद्रित हुआ था।

चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध 'चन्द्रकान्ता' की प्रति को देखने से प्रतीत होता है कि इसके चारों भाग, एक दूसरे के बाद, त्वरित अनुक्रम में, मुद्रित हुए थे। पहले भाग की तरह दूसरे भाग के अन्तिम पृष्ठ पर सूचना दी हुई है कि "तीसरा हिस्सा भी छप रहा है।" इसी प्रकार तीसरे भाग के अन्तिम पृष्ठ पर बताया गया है कि "चौथा हिस्सा भी छपना शुरू हो गया है।" चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध 'चन्द्रकान्ता' के दूसरे, तीसरे और चौथे हिस्सों के आवरणपृष्ठों पर उन्हें "पहली बार मुद्रित" बताया गया है।[1] इससे स्पष्ट है कि चन्द्रकान्ता के दूसरे, तीसरे और चौथे हिस्से प्रथम बार १८९१ ई० में या उसके कुछ बाद मुद्रित हुए।

हिन्दी प्रदीप, जिल्द १५, संख्या ३-४ (नवम्बर-दिसम्बर १८९१ ई०) में पं० बालकृष्ण भट्ट ने 'चन्द्रकान्ता' के पहले हिस्से की निम्नोद्धृत प्रशंसात्मक समीक्षा प्रकाशित की थी :[2] "'चन्द्रकान्ता' उपन्यास, पहला हिस्सा, काशी निवासी बाबू देवकीनन्दन कृत-इस उपन्यास की भाषा और प्लाट दोनों सराहना के योग्य हैं और हिन्दी के साहित्य के भंडार भरने के लिये अत्यन्त उपयुक्त हैं हरि प्रकाश यंत्रालय बनारस में छपी है मूल्य मै डाक महसूल ।।) है।" इस समीक्षा को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि १८९१ ही 'चन्द्रकान्ता' के प्रथम भाग का प्रथम मुद्रण-काल है।

---

१. चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध चन्द्रकान्ता के दूसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
"चन्द्रकान्ता (उपन्यास), दूसरा हिस्सा जिसे काशी निवासी श्रीयुत् लाला ईश्वर दास जी खत्री के पुत्र देवकीनन्दन ने बनाया। बनारस, बाबू अमीर सिंह की सम्मति से जगनाथ प्रसाद वर्मा, ने निज हरिप्रकाश यन्त्रालय में पहिली बार मुद्रित किया।"
तीसरे ओर चौथे हिस्सों की सूचनाएँ उपरिवत्।

२. हिन्दी प्रदीप, जिल्द १५, सं० ३-४, नवम्बर-दिसम्बर१८९१ (प्रा० स्था०—चै० पु० पटना)

१८८८ ई० को 'चन्द्रकान्ता' के प्रथम भाग का प्रथम मुद्रण-काल मानने में एक कठिनाई यह भी प्रतीत होती है कि जब 'चन्द्रकान्ता' का एक भाग छपते ही इतना लोकप्रिय हुआ कि तुरत उसका दूसरा संस्करण निकालना पड़ा, तब उसके अन्य तीन भागों को छपने में, जिनके बिना पुस्तक अधूरी रहती, तीन वर्षो की देर क्यों हुई। इतना ही नहीं, तीन भागों के छपने के पूर्व १८९१ में पहले भाग का दूसरा संस्करण हो गया और उसके बाद शेष भाग लगातार छपे, यह विश्वसनीय नहीं लगता। इससे 'चन्द्रकान्ता' के प्रथम भाग का मुद्रण-काल १८८८ ई० संदिग्ध है। पर किसी प्रत्यक्ष प्रमाण के अभाव में इस तिथि को अशुद्ध सिद्ध करना कठिन है, जबकि श्री रुद्र काशिकेय ने भी 'चन्द्रकान्ता' का रचनाकाल १८८८-१८९२ ही बताया है।[१] श्री गिरीशचन्द्र त्रिपाठी ने सम्पूर्ण 'चन्द्रकान्ता' का प्रथम मुद्रणकाल १८९१ ई० बताया है। उनके शब्दों में "चंद्रकान्ता सर्वप्रथम सन् १८९१ में बाबू अमीर सिंह वर्मा के हरि प्रकाश यन्त्रालय से प्रकाशित हुई।"[2]

डॉ० माताप्रसाद गुप्त 'चन्द्रकान्ता' का प्रकाशन-काल १८९२ ई० बताते हैं।[३] डॉ० गुप्त ने गजटों में प्रकाशित पुस्तक-सूचियों से पुस्तकों की प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचनाएँ दी हैं, जिनमें कभी कभी एक दो महीने का अन्तर भी हो जाया करता है।[४] अतः यदि 'चन्द्रकान्ता' का मुद्रण-काल १८९१ ई० का अन्त हो तो उसका गजट-काल १८९२ ई० का आरम्भ हो सकता है। 'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इण्डिया ऑफिस' में १८९२ ई० में मुद्रित 'चन्द्रकान्ता' (चारो भाग एक साथ) की सूचना मिलती है।[५]

इन विभिन्न परस्परविरोधी प्रमाणों के प्रकाश में 'चन्द्रकान्ता' का प्रथम मुद्रण-काल निश्चित करना बड़ा कठिन प्रतीत होता है। श्री गिरीशचन्द्र त्रिपाठी तथा रुद्र काशिकेय का मत यदि प्रमाणपुष्ट है, तो उन्हें उन प्रमाणों को प्रस्तुत करना चाहिए था। यदि उनकी जानकारी में 'चन्द्रकान्ता' के प्रथम भाग का १८८८ ई० में प्रकाशित प्रथम संस्करण तथा १८९१ ई० में प्रकाशित 'चन्द्रकान्ता' (चारों भाग एक साथ) कहीं है तो उन्हें उनकी सूचना देनी चाहिए। इसके अभाव में उनके मत संदिग्ध प्रतीत होते हैं।

'चन्द्रकान्ता' उपन्यास पाठकों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। १८९१ ई० से लेकर अब तक (१९६३) इस के लगभग ४५ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। आरम्भ में यह उपन्यास डिमाई आकार में मुद्रित हुआ था, जिसका छठा संस्करण १९०४ ई० में और ८वाँ संस्करण १९२१ ई० में लहरी प्रेस, काशी से निकला था।[६] बाबू देवकीनन्दन

---

१. रुद्र काशिकेय, 'देवकीनन्दन खत्री: व्यक्तित्व और कृतित्व,' श्रीदेवकीनन्दन खत्री, की शतवार्षिक जन्मतिथि के अवसर पर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित और प्रचारित, ४ जुलाई, १९६१ ई०।

२. गिरीशचन्द्र त्रिपाठी, 'हिन्दी के ताजमहल', नवजीवन (साहित्यिक परिशिष्टांक) लखनऊ, रविवार १२ जून, सन् १९५५।

३. हि० पु० सा०, पृ० ४७६।

४. उपरिवत्, भूमिका।

५. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस (२), पृ० ६१।

६. बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री से प्राप्त सूचना।

खत्री के सुपुत्र बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री के अनुसार १९०६ ई० के लगभग 'चन्द्रकान्ता' का गुटका आकार का संस्करण निकलना आरम्भ हुआ, और यह संस्करण इतना लोकप्रिय हुआ कि १९०४ और १९२१ ई० के बीच डिमाई आकार वाली 'चन्द्रकान्ता' के केवल दो संस्करण निकल पाये। गुटका आकार वाली 'चन्द्रकान्ता' के अब तक कुल मिलाकर ३७ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। यदि प्रत्येक संस्करण में मुद्रित प्रतियों की संख्या औसत रूप से ४००० भी मान ली जाए,[१] तो 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास की अबतक १ लाख ८० हजार प्रतियाँ मुद्रित और पाठकों में वितरित हो चुकी हैं।

बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री के पास 'चन्द्रकान्ता' डिमाई आकार के दो प्राचीन संस्करण हैं, जिनके मुखपृष्ठों की प्रतिलिपि निम्नलिखित है :

पहली प्रति—(प्रथम दो भागों के मुखपृष्ठ नष्ट हो चुके हैं) 'चन्द्रकान्ता' सचित्र उपन्यास, तीसरा हिस्सा, बाबू देवकीनन्दन खत्री, छठवीं बार, १९०४ ई०, लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित। (चौथे हिस्से की प्रतिलिपि उपरिवत्)

दूसरी प्रति—(पहले भाग का मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है। तीसरे और चौथे भाग के प्रथम संस्करण हैं जिन पर प्रकाशन-काल नहीं दिया गया है)। दूसरे हिस्से की प्रतिलिपि निम्नलिखित है—चन्द्रकान्ता उपन्यास (सचित्र) दूसरा हिस्सा, बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित और बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित लहरी प्रेस देवकीनन्दन खत्री—बनारस सिटी प्रिंटेड बाइ पन्ना लाल राय ऐट दि लहरी प्रेस बनारस सिटी, आठवीं बार, १९२१ ई०।

चन्द्रकान्ता (गुटका आकार) के विभिन्न संस्करण

(बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री से प्राप्त सूचना)

११वाँ संस्करण	१९१४ ई०	१२वाँ संस्करण	१९१९ ई०
१३वाँ संस्करण	१९२० ई०	१४वाँ संस्करण	१९२२ ई०
१५वाँ संस्करण	१९२३ ई०	१६वाँ संस्करण	१९२८ ई०
१९वाँ संस्करण	१९३२ ई०	२०वाँ संस्करण	१९३५ ई०
२१वाँ संस्करण	१९४१ ई०	२२वाँ संस्करण	१९४४ ई०
२३वाँ संस्करण	१९४६ ई०	२४वाँ संस्करण	१९४८ ई०
२५वाँ संस्करण	१९४९ ई०	२६वाँ संस्करण	१९५० ई०
२७वाँ संस्करण	१९५३ ई०	२८वाँ संस्करण	१९५५ ई०
२९वाँ संस्करण	१९५६ ई०	३०वाँ संस्करण	१९५८ ई०
३१वाँ संस्करण	१९५९ ई०	३२वाँ संस्करण	१९५९ ई०
३३वाँ संस्करण	१९५९ ई०	३४वाँ संस्करण	१९६१ ई०
३५वाँ संस्करण	१९६१ ई०	३६वाँ संस्करण	१९६१ ई०
३७वाँ संस्करण	१९६१ ई०		

१, चन्द्रकान्ता का तीसवाँ संस्करण मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय में उपलब्ध है जिससे सम्बद्ध सूचनाएँ

बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री के पास उपर्युक्त सूचनाएँ लेखबद्ध हैं। प्रथम ग्यारह संस्करणों के प्रकाशन-काल का अभिलेख उनके पास नहीं है।

चन्द्रकान्ता सन्तति

खत्री जी का 'चन्द्रकान्ता संतति' नामक ऐयारी-तिलस्मी रोमांस उन्हींके द्वारा सम्पादित-प्रकाशित 'उपन्यास लहरी' नामक मासिक पत्र में मई १८९४ ई० से प्रकाशित होना शुरू हुआ।[१] 'चन्द्रकान्ता सन्तति' का आठवाँ हिस्सा 'उपन्यास लहरी' वर्ष ३, संख्या १ (जनवरी सन् १८९७ ई०) में[२], ११वाँ हिस्सा 'उपन्यास लहरी', वर्ष ३, सं० ११-१२ (नवंबर-दिसम्बर सन् १८९७ ई० में)[३] तथा १३वाँ हिस्सा सं० १९५६ वि० (१८९९ ई०) में मुद्रित हुआ।[४] 'सन्तति' के सत्रहवें और अठारहवें हिस्से १९०० ई० में, उन्नीसवें और बीसवें हिस्से १९०१ ई० में, इक्कीसवाँ हिस्सा १९०२ ई० में, बाईसवें और तेईसवें हिस्से १९०४ ई० में तथा चौबीसवाँ हिस्सा १९०५ ई० में प्रकाशित हुआ।[५]

इस प्रकार 'चन्द्रकान्ता सन्तति' का मुद्रण-काल १८९४-१९०५ ई० है। 'चन्द्रकान्ता' की भाँति 'चन्द्रकान्ता सन्तति' भी पाठकों में अत्यन्त लोकप्रिय हुई।

बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री के पास चन्द्रकान्ता सन्तति (गुटका संस्करण) के विभिन्न संस्करणों की प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचनाएँ लेखबद्ध है। आगे दी हुई सारणी में प्रदत्त सूचनाएँ आदरणीय खत्री जी की कृपा से प्राप्त हुई हैं।

निम्नलिखित हैं—

पहिला हिस्सा	—	१९५८ ई०	—	तीसवाँ संस्करण	७००० प्रति
दूसरा हिस्सा	—	१९५८ ई०	—	इकतीसवाँ संस्करण	२००० प्रति
तीसरा हिस्सा	—	१९५७ ई०	—	इकतीसवाँ संस्करण	६५०० प्रति
चौथा हिस्सा	—	१९५८ ई०	—	बत्तीसवाँ संस्करण	६००० प्रति

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
उपन्यास लहरी, मासिक पत्र, देवकीनन्दन खत्री द्वारा रचित और प्रकाशित, नम्बर १, मई १८९४ ई०, चन्द्रकान्ता सन्तति (पहिला हिस्सा), मूल्य सर्वत्र १ ।।) साल एक कॉपी का–)।। दाम ठिकाना लाहौरी टोला, बनारस, प्रिंटेड ऐट दि हरि प्रकाश प्रेस, बनारस, १८९४।

२. चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध प्रति के आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—
उपन्यास लहरी मासिक पुस्तक, देवकीनन्दन खत्री द्वारा रचित और प्रकाशित, चन्द्रकान्ता सन्तति, आठवाँ हिस्सा, वर्ष ३, जनवरी, सन् १८९७ ई० (नं० १ प्रियपाठक महोदय—उपन्यास लहरी का तीसरा वर्ष जनवरी से शुरू किया जाता है। अब ठीक समय पर आप लोगों के पास नम्बर पहुँचा करेगा—देवकीनन्दन प्रिंटेड ऐट दि हरिप्रकाश प्रेस, बनारस।

३. चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध प्रति के आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—उपन्यास लहरी मासिक पुस्तक, देवकीनन्दन खत्री द्वारा रचित और प्रकाशित, चन्द्रकान्ता सन्तति (ग्यारहवाँ हिस्सा) वर्ष ३, नवम्बर-दिसम्बर १८९७ ई०, ११-१२ प्रिंटेड ऐट दि हरिप्रकाश प्रेस, बनारस

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. चैतन्य पुस्तकालय, गाय घाट, पटना सिटी, मेंचन्द्रकान्ता सन्तति के ये सभी भाग उपलब्ध हैं। जिन हिस्सों का प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, वे या तो चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं हैं अथवा उनके मुखपृष्ठ फटे रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिल पाती।

इसके अतिरिक्त बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री के पास 'चन्द्रकान्ता सन्तति' के कुछ प्राचीन संस्करण उपलब्ध हैं, जिनके मुखपृष्ठों की प्रतिलिपियाँ नीचे दी जाती हैं।

चन्द्रकान्ता संतति—पहला हिस्सा—(मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है)

चन्द्रकान्ता संतति—दूसरा हिस्सा—बाबू देवकी नन्दन खत्री रचित काशी लहरी प्रेस में दूसरी बार मुद्रित, संवत् १९५५ दाम ।।)

चन्द्रकान्ता संतति—तीसरा हिस्सा—प्रतिलिपि उपरिवत्

चौथा हिस्सा—प्रतिलिपि उपरिवत्—दूसरी बार सं० १९५६

पाँचवाँ हिस्सा—(मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है)

छठा हिस्सा—काशी लहरी प्रेस में दूसरी बार मुद्रित हुई, सन् १८९९ ई० (शेष प्रतिलिपि दूसरे हिस्से के समान)

सातवाँ हिस्सा—प्रतिलिपि उपरिवत्, संवत् १९५६

चन्द्रकान्ता संतति—आठवाँ हिस्सा—बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित काशी हरि प्रकाश में मुद्रित संवत् १९५५ दाम ।।)

चन्द्रकान्ता संतति—तेरहवाँ हिस्सा—बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित काशी लहरी प्रेस में मुद्रित हुआ, संवत् १९५६, दाम आठ आना

चौदहवाँ हिस्सा—उपरिवत्

चन्द्रकान्ता संतति—पन्द्रहवाँ हिस्सा—बाबू देवकी नन्दन खत्री रचित, बनारस लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित हुई, संवत् १९५६।

चन्द्रकान्ता संतति—सोलहवाँ हिस्सा—बाबू देवकी नन्दन खत्री रचित, काशी लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित हुई, संवत् १९५६

सत्रहवाँ हिस्सा—बनारस लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित हुई, संवत् १९५७

अठारहवाँ हिस्सा—बनारस लहरी प्रेस में दूसरी बार मुद्रित

उन्नीसवाँ हिस्सा—मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है।

बीसवाँ हिस्सा—मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है।

चन्द्रकान्त संतति—इक्कीसवाँ हिस्सा—बाबू देवकी नन्दन खत्री रचित, बनारस लहरी प्रेस महल्ला लाहौरी टोला में मुद्रित प्रथम बार २०००, सन् १९०२, मूल्य ।।)

तेईसवाँ हिस्सा—मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है।

चौबीसवाँ हिस्सा—बाबू देवकी नन्दन खत्री रचित, बनारस लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित, सन् १९०५ ई०

इन संस्करणों को देखने से पता चलता है कि १९५६ ई० तक 'चन्द्रकान्ता सन्तति' के सभी भागों के कम से कम ३० संस्करण अवश्य प्रकाशित हो चुके थे। यह उसकी लोकप्रियता का असंदिग्ध प्रमाण है।

भूतनाथ

देवकीनन्दन खत्री ने अपने जीवन के अन्तिम काल में 'भूतनाथ' नामक तिलस्मी रोमांस लिखना आरम्भ किया था, जिसके छह भाग ही वे लिख पाये थे कि काल के कठोर हाथों ने उन्हें हमसे छीन लिया। 'भूतनाथ' का पहला भाग कब प्रकाशित हुआ इसकी सूचना प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं मिल सकी है। डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने 'भूतनाथ' का प्रकाशन काल १९०९ ई० लिखा है,[1] जो भ्रामक है। सम्भव है, यह 'भूतनाथ' के किसी भाग का प्रकाशन-काल हो। श्री रुद्र काशिकेय ने एक पुस्तिका, 'देवकी नन्दन खत्री: व्यक्तित्व और कृतित्व', में 'भूतनाथ' का रचनाकाल १९०७-१९१३ लिखा है।[2] इससे अनुमान होता है कि 'भूतनाथ'का प्रथम भाग १९०७ ई० में और छठा भाग १९१३ ई० में प्रकाशित हुआ था। चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी में 'भूतनाथ' के प्रथम खण्ड (प्रथम चार भाग) का १९१२ ई० में प्रकाशित तृतीय संस्करण उपलब्ध है। चैतन्य पुस्तकालय में भूतनाथ के छठे हिस्से का प्रथम संस्करण उपलब्ध है, जिसका प्रकाशन-काल १९१२ ई० दिया हुआ है।

देवकीनन्दन खत्री भूतनाथ को अधूरा छोड़ कर दिवंगत हो गये। उनके पुत्र श्री दुर्गा प्रसाद खत्री ने इस उपन्यास को पूरा किया। 'भूतनाथ' के सातवें से इक्कीसवें भाग दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा ही लिखे गये हैं। 'भूतनाथ' का सातवाँ हिस्सा १९१५ ई० में, आठवें और नौवें हिस्से १९१६ ई० में तथा दसवाँ हिस्सा १९१८ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसके दसवें से पन्द्रहवें भागों के प्रथम संस्करण के प्रकाशन-काल की सूचना प्रस्तुत प्रबन्ध के लेखक को नहीं मिल सकी है। 'भूतनाथ' का सोलहवाँ हिस्सा १९२९ ई० में तथा इक्कीसवाँ हिस्सा १९३५ ई० में, प्रथम बार, प्रकाशित हुआ। **इस प्रकार सम्पूर्ण 'भूतनाथ' का रचना-काल १९०७-१९३५ ई० है।**

खत्री जी के अन्य तिलिस्मी उपन्यासों की तरह 'भूतनाथ' भी अत्यन्त लोकप्रिय हुआ, यह इसके विभिन्न संस्करणों को देखने से ज्ञात होता है।

'भूतनाथ' के विभिन्न भागों के विभिन्न संस्करणों के प्रकाशन-काल की सूचना

भाग १— प्रथम संस्करण १९०७, तृतीय संस्करण १९१२, आठवीं बार १९२८ (२००० प्रतियाँ) ,सोलहवाँ संस्करण १९५२ (२००० प्रतियाँ), सतरहवाँ संस्करण १९५५ (२००० प्रतियाँ),

भाग २— प्रथम संस्करण (प्रकाशन काल अज्ञात), तृतीय संस्करण १९१२, पन्द्रहवाँ

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०६।

२. रुद्र काशिकेय, 'देवकीनन्दन खत्रीः यक्तित्व और कृत्तित्व', श्रीदेवकीनन्दन खत्री की शतवार्षिक

सं० १९५३ ई०—२००० प्रतियाँ, १७ वाँ सं० १९५७—१५०० प्रतियाँ ।

भाग ३— प्रथम संस्करण (प्रकाशन काल अज्ञात), तृतीय संस्करण १९१२, सोलहवाँ संस्करण १९५७—१००० प्रतियाँ ।

भाग ४— प्रथम संस्करण (प्रकाशन काल अज्ञात), तृतीय संस्करण १९१२, तेरहवाँ सं० १९५३ ई०—२००० प्रतियाँ, १६ वाँ सं० १९५७—१००० प्रतियाँ ।

भाग ५— प्रथम संस्करण (प्रकाशन काल अज्ञात) चौदहवाँ संस्करण १९५३ ई०—२००० प्रतियाँ, पन्द्रहवाँ संस्करण १९५७—१००० प्रतियाँ

भाग ६— प्रथम वार १९१३—२००० प्रतियाँ, वारहवाँ संस्करण १९५२ ई०—२००० प्रतियाँ, तेरहवाँ संस्करण १९५६ ई०—१००० प्रतियाँ ।

भाग ७— प्रथम वार १९१५, गुटका ग्यारहवाँ संस्करण १९५२ ई०—२००० प्रतियाँ, वारहवीं वार १९५६—१००० प्रतियाँ ।

भाग ८— प्रथम वार १९१६—२००० प्रतियाँ, ग्यारहवाँ संस्करण १९५२—२००० प्रतियाँ, वारहवीं वार १९५६—१००० प्रतियाँ ।

भाग ९— प्रथम वार १९१६—२००० प्रतियाँ, वारहवीं वार १९५७—१००० प्रतियाँ ।

भाग १०— प्रथम वार १९१८—२००० प्रतियाँ, सतरहवाँ संस्करण १९५३ ई०—२००० प्रतियाँ, अठारहवाँ संस्करण १९५६ ई०—१००० प्रतियाँ ।

भाग ११— १० वाँ सं० १९५३ ई०—२००० प्रतियाँ, ११ वाँ सं० १९५६ ई०—१००० प्रतियाँ ।

भाग १२— ग्यारहवाँ संस्करण १९५७—१००० प्रतियाँ ।

भाग १३— चौदहवाँ संस्करण १९५६—१००० प्रतियाँ ।

भाग १४— दसवाँ संस्करण १९५७—१००० प्रतियाँ ।

भाग १५— इसका एक संस्करण १९२८ में हुआ था । संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है । नौवाँ संस्करण १९५६ ई०—१००० प्रतियाँ ।

भाग १६— प्रथम वार १९२९ ई०, आठवाँ संस्करण १९५६—१००० प्रतियाँ ।

भाग १७— इसका एक संस्करण १९३५ ई० में हुआ था । संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है । ७ वाँ सं० १९५३ ई०—२००० प्रतियाँ, ८ वाँ सं० १९५६, १००० प्रतियाँ ।

भाग १८— दूसरा संस्करण १९३५ ई०, गुटका, छठा संस्करण १९५२—२१००—प्रतियाँ, सातवाँ संस्करण १९५१—१००० प्रतियाँ ।

भाग १९— दूसरी वार १९३६ ई०—२००० प्रतियाँ, छठा संस्करण १९५३ ई०—२००० प्रतियाँ, आठवाँ संस्करण १९५६—१००० प्रतियाँ ।

भाग २०— दूसरी वार १९३६—२००० प्रतियाँ, छठा संस्करण १९५३—२००० प्रतियाँ आठवाँ संस्करण १९५६—१२०० प्रतियाँ ।

जन्मतिथि के अवसर पर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित और प्रचारित, ४ जुलाई, १९६१ ई०, पृ० ७ ।

भाग २१ — प्रथम संस्करण १९३५ ई०, छठा संस्करण १९५३ ई०—२२०० प्रतियाँ, सातवाँ संस्करण १९५६—१००० प्रतियाँ।[१]

हरिकृष्ण जौहर

देवकीनन्दन खत्री के तिलस्म और ऐयारी प्रधान रोमांसों की लोकप्रियता देखकर बहुत से हिन्दी लेखकों का ध्यान इस प्रकार के रोमांसों की रचना की ओर आकृष्ट हुआ। इस काल में अनेक लेखकों ने तिलस्म-ऐयारी प्रधान रोमांस लिखे जिसमें हरिकृष्ण जौहर और निहालचन्द्र वर्मा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

कुसुमलता

सन् १८९८-१९०० ई० में **हरिकृष्ण जौहर** ने **'कुसुमलता'** नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस की रचना की, जो चार भागों में, भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[२] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १८९९ ई० दिया है, जो भ्रामक है।[३] वस्तुतः इसका पहला भाग १८९८ ई० में, दूसरा भाग १८९९ ई० में और चौथा भाग १९०० ई० में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का दूसरा संस्करण १९०९ ई० में भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित हुआ।[४]

भयानक भ्रम : नारी पिशाच

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०० ई० में हरिकृष्ण जौहर का '**भयानक**

---

१. देवकीनन्दन खत्री के तिलस्मी उपन्यासों के विभिन्न संस्करणों से सम्बद्ध सूचनाएँ संकलित करने में उनकी अतिशय लोकप्रियता भी बाधक सिद्ध हुई है। ये उपन्यास पाठकों के बीच इतने लोकप्रिय रहे हैं, और आज भी हैं, कि पुस्तकालयों में उपलब्ध प्रतियों के आरम्भिक पृष्ठ, जिनपर संस्करण या प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचनाएँ रहती हैं, प्रायः फट कर गायब हो चुके हैं। उपर्युक्त सूचनाएँ मैंने आर्यभाषा पुस्तकालय (ना० प्र० स० काशी), चैतन्य पुस्तकालय (गायघाट, पटना सिटी), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय (पटना), तथा पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय में संगृहीत प्रतियों के आवरणपृष्ठों, तथा मुखपृष्ठों से संकलित की हैं।

२. प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना सिटी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुसुमलता, प्रथम भाग, जिसे काशीनिवासी बाबू हरिकृष्ण उपनाम (जौहर) कवि ने उपन्यास प्रेमियों के लिए रचा, श्रीमान् राजासाहब बहादुर राजा विजयचन्द जी वलिये रियासत विलासपुर के व्यय से प्रकाश किया गया। इस ग्रन्थ का अधिकार भारत जीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्मा और ग्रन्थकार को भी है। काशी, भारत जीवन प्रेस, में छपी, सन् १८९८ ई० में, प्रथम बार १०००।
दूसरा भाग—सन् १८९९ ई० : अन्य सूचनाएँ उपरिवत्।
तीसरा भाग—आवरणपृष्ठ नष्ट हो गया है।
चौथा भाग—सन् १९०० ई० : अन्य सूचनाएँ प्रथम भाग की तरह।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६८५।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

भ्रम'[1] तथा सन् १९०१ ई० में 'नारी पिशाच' नामक[2] ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास भारत जीवन प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुए थे। प्रस्तुत प्रबन्ध का लेखक इन पुस्तकों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मयंक मोहिनी या मायामहल

डॉ० गुप्त के अनुसार जौहर का 'मयंक मोहिनी या मायामहल' नामक ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास १९०१ ई० में हितचिन्तक प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3] चैतन्य पुस्तकालय, पटना सिटी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर आवरणपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त हो पाती। 'भूमिका' के अन्त में "बनारस १-४-१९०४" मुद्रित है, जिससे डॉ० गुप्त द्वारा प्रदत्त सूचना की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

कमल कुमारी वा तिलिस्म नीलम

हरिकृष्ण जौहर का 'कमल कुमारी वा तिलिस्म नीलम' नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस सर्वप्रथम 'उपन्यास दर्पण' नामक मासिक पत्र में, १९०१-०२ ई० में, (वर्ष १, अंक १, जुलाई १९०१ ई० से लेकर वर्ष २, अंक १, जुलाई १९०२ ई० तक के अंकों में) प्रकाशित हुआ।[4] इस कथापुस्तक का बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित दूसरा संस्करण १९१० ई० में प्रकाशित हुआ।[5] आ० भा० पु० काशी में इस पुस्तक का एक और संस्करण उपलब्ध है, जिस पर प्रकाशन या संस्करण सम्बन्धी कोई सूचना नहीं है। केवल कागज के नयेपन से यह अनुमान होता है कि यह सम्भवतः विवेच्य रोमांस का तीसरा संस्करण है।

जादूगर

सन् १९०१-०२ ई० में ही हरिकृष्ण जौहर का 'जादूगर' नामक अपराध, ऐयारी और जादूगरी प्रधान रोमांस विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा काशी से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० में यह पुस्तक उपलब्ध है पर प्रथम भाग के आवरणपृष्ठ और मुखपृष्ठ के फटे रहने के कारण इस भाग के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। दूसरे और तीसरे भागों के मुखपृष्ठ भी नष्ट हो गये हैं। सौभाग्यवश चौथे भाग का मुखपृष्ठ बचा हुआ है, जिस

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३२ तथा ६८५।

२. उपरिवत्, पृ० ३२ तथा ६८६।

३. उपरिवत्।

४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना सिटी; उपन्यास दर्पण के एक अंक के आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—कमल कुमारी या तिलिस्म नीलम, उपन्यास दर्पण (एक अपूर्व उपन्यास मासिक पत्र) बाबू विश्वेवर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित तथा बाबू हरिकृष्ण जौहर रचित, वर्ष १, जुलाई १९०१ ई०, अंक १।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पुस्तक काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—(प्रथम भाग का मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है) श्रीगुटका कमल कुमारी वा तिलस्म नीलम, दूसरा भाग, श्रीहरिकृष्ण (जौहर) लिखित

पर प्रकाशन-काल १९०२ ई० मुद्रित है।[1] डा० गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९०१ ई० दिया है।[2] सम्भव है डॉ० गुप्त ने विवेच्य रोमांस के किसी एक भाग की सूचना दी हो, पर इसका संकेत उन्होंने नहीं दिया है। अतः डॉ० गुप्त की सूचना या तो अधूरी है, या अशुद्ध और दोनों ही स्थितियों में यह भ्रामक है।

निराला नकाबपोश : भयानक खून

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार जौहर लिखित **निराला नकाबपोश** हित चिन्तक प्रेस, बनारस से १९०२ में तथा **भयानक खून** वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से १९०३ में प्रकाशित हुआ।[3] डॉ० गुप्त ने इन दोनों रोमांसों को ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास की संज्ञा दी है। मैं इन पुस्तकों को प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो सका हूँ।

निहालचन्द वर्मा

मोतीमहल या लक्ष्मी देवी

सन् १९१२-१९१४ ई० की अवधि में **श्री निहालचन्द्र वर्मा** द्वारा लिखित 'मोती महल या लक्ष्मी देवी' नामक तिलस्मी रोमांस पाँच भागों में उपन्यास भंडार, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में एक स्थान पर इसका प्रकाशन-काल १९१२ ई० और दूसरे स्थान पर १९१४ ई० दिया है, जो भ्रमोत्पादक है।[४] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में विवेच्य रोमांस के प्रथम दो भागों के प्रथम संस्करण नहीं हैं। शेष तीन भागों के मुखपृष्ठों को देखने से ज्ञात होता है कि इसका तीसरा भाग १९१२ ई० में[५], चौथा भाग १९१३ ई० में[६] और पाँचवाँ भाग १९१४ ई० में[७] प्रकाशित हुआ था। सन् १९१६ ई० में इस कथापुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस पुस्तक के केवल द्वितीय भाग का दूसरा संस्करण उपलब्ध है।[८]

जिसे काशी उपन्यास दर्पण ऑफिस के मालिक बा० विश्वेवर प्रसाद वर्मा ने मैनेजर दीपचन्द्राचार्य द्वारा काशी केशव यन्त्रालय में प्रकाशित किया। दूसरी वार २०००, सन् १९१०, दाम ।–) तीसरे और चौथे भागों के मुखपृष्ठों की प्रतिलिपियाँ उपरिवत्।

१ मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जादूगर उपन्यास, चौथा भाग, श्रीहरिकृष्ण जौहर लिखित जिसे काशीस्थ उपन्यास दर्पण के संपादक बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा ने उपन्यास प्रेमियों के चित्तविनोदार्थ छपवा कर प्रकाशित किया, १९०२, प्रथम बार १९०२।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६८६।

३. उपरिवत्, पृ० ३२ तथा ६८६।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० २३५ तथा पृ० ४९७।

५. मोती महल या लक्ष्मी देवी, तीसरा भाग, एक ऐयारी और तिलस्मी ढंग का अनूठा उपन्यास बाबू निहालचन्द वर्मा प्रोप्राइटर······उपन्यास पुस्तकालय काशी द्वारा लिखित और प्रकाशित, बी० एल० पावगी द्वारा हितचिन्तक प्रेस, काशी रामघाट बनारस सिटी में मुद्रित, प्रथम बार, २०००, सं० १९६९।

६. चौथा भाग, प्रथम बार, २०००, संवत् १९७० (अन्य सूचनाएँ उपरिवत्)

७. पाँचवाँ भाग, प्रथम बार, २०००, संवत् १९७१, (अन्य सूचनाएँ उपरिवत्)

८. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मोती महल या लक्ष्मी देवी, दूसरा भाग, एक ऐयारी और तिलस्मी ढंग का अनूठा उपन्यास, बाबू निहालचन्द वर्मा प्रोप्राइटर उपन्यास भंडार कलकत्ता द्वारा लिखित और

जादू का महल या रूपवती

निहालचन्द वर्मा द्वारा लिखित 'जादू का महल या रूपवती' नामक तिलस्मी रोमांस निहालचन्द एण्ड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] आर्यभाषा पुस्तकालय-काशी में इस कथापुस्तक की एक प्रति उपलब्ध है। इस उपन्यास के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, इस कारण इस सम्बन्ध में कोई सूचना दे पाना नितान्त कठिन है।

अन्य ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस

देवकीनन्दन खत्री, हरिकृष्ण जौहर और निहालचन्द वर्मा विवेच्यकाल के ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांसों के प्रमुख लेखक थे। इनकी देखादेखी अन्य कुछ लेखकों ने भी इस प्रकार की पुस्तकें लिखीं, जिनका परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

माया विलास अथवा सत्यजित् प्रकाश

सन् १८९९ ई० में ही **पं० मदनमोहन पाठक** ने 'माया विलास अथवा सत्यजित् प्रकाश' नामक ऐयारी-तिलस्मी रोमांस लिखा, जिसका पहला भाग हितचिन्तक प्रेस, काशी से मुद्रित होकर बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ। इसका चौथा भाग १९०४ ई० में उपर्युक्त प्रकाशक द्वारा ही प्रकाशित हुआ।[2]

कामिनी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०० ई० में **बालमुकुन्द वर्मा** ने 'कामिनी' नामक ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास की रचना की, जिसे स्वयं लेखक ने कचौड़ी गली,

---

प्रकाशित, कलकत्ता नं० २५/२ ए मछुया बाजार स्ट्रीट के ललित प्रेस, में बाबू ललित मोहन राय द्वारा मुद्रित, संवत् १९७३, दूसरी बार २०००।

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
जादू का महल या रूपवती, प्रथम भाग, एक ऐयारी तिलिस्म और जादूगरी का विचित्र उपन्यास, बाबू निहालचन्द वर्मा द्वारा लिखित और निहालचन्द ऐंड कम्पनी द्वारा प्रकाशित, पृ० सं० १२८

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
मायाविलास अथवा सत्यजित् प्रकाश, प्रथम भाग, के आवरणपृष्ठ पर रचना-काल सन् १८९९ ई० अंकित है। इसका मुखपृष्ठ नहीं है। दूसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माया विलास अथवा सत्यजित् प्रकाश, दूसरा भाग, पं० मदन मोहन पाठक लिखित श्रीमति महाराणी साहिब शाहपुराधीश्वरी की पूर्ण सहायता से बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा सम्पादक उपन्यास दर्पण काशी ने प्रकाशित किया। हितचिन्तक प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम बार २०००, आवरणपृष्ठ का निचला अंश फटा रहने के कारण प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता। तृतीय भाग का मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है। चौथे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि दूसरे भाग के समान। केवल रचना-काल १९०४ ई० (विशेष सूचना) है। पाँचवें और छठे भाग के मुखपृष्ठों की प्रतिलिपि दूसरे भाग के समान, पर प्रकाशन—काल किसी में भी नहीं है। पृ० सं० ७५+८४+८२+८६+८०+५०।

बनारस से प्रकाशित किया।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असफल रहा है।

राजेन्द्र मोहनी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०१ ई० में **बाल मुकुन्द वर्मा** लिखित 'राजेन्द्र मोहनी' नामक ऐयारी-तिलस्मी कथा लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याणपुर, बम्बई से प्रकाशित हुई।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

राजकुमारी

सन् १९०२ ई० में **किशोरी लाल गोस्वामी** रचित 'राजकुमारी' नामक तिलस्मी रोमांस हरिप्रकाश यन्त्रालय, बनारस से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[३] इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण सन् १९१६ ई० में सुदर्शन प्रेस (वृन्दावन) से छबीलेलाल गोस्वामी द्वारा प्रकाशित किया गया।[४] इस संस्करण की भूमिका में गोस्वामी जी का कथन है कि "अब तक इसके कई संस्करण हो चुके होते, पर कई झंझटों से इसके संस्करण की आज बारी आई।"[५] इस पुस्तक की लोकप्रियता इससे भी प्रमाणित होती है कि 'किसी प्रतिष्ठित महिला' ने इसका अनुवाद मराठी भाषा में प्रस्तुत किया था।[६]

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने प्रमादवश इसे 'ऐतिहासिक उपन्यास' की संज्ञा दी है।[७] वस्तुतः यह एक तिलस्मी रोमांस है।

आनन्द सुन्दरी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०२ ई० में **मदन मोहन पाठक** लिखित **'आनन्द सुन्दरी'** नामक ऐयारी-तिलस्मी रोमांस बनारस से विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ।[८]

चन्द्रभागा

डॉ० गुप्त के अनुसार सन् १९०४ ई०में **बिनायक लाल दादू** लिखित 'चन्द्रभागा'

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ५२२ तथा ३२।
२. हि० पु० सा०, पृ० ५२२।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
राजकुमारी, विचित्र घटना समन्वित एक अपूर्व उपन्यास, हिन्दी रसिकों के मनोविनोदार्थ कर्तृक, किशोरी लाल गोस्वामी लिखित और प्रकाशित (एक सुभाषित) हरिप्रकाश यन्त्रालय, बनारस, सन् १९०२, मूल्य बारह आने, पृ० सं० २६४।
४. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना।
५. उपरिवत्, दूसरा संस्करण (निवेदन)।
६. उपरिवत्।
७. हि० पु० सा०, पृ० ३०।
८. हि० पु० सा०, पृ० ३२ और ५४०।

नामक ऐयारी-तिलस्मी रोमांस भारत जीवन प्रेस, वनारस से प्रकाशित हुआ।[1] माहेश्वर पुस्तकालय, पटना में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्वन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।

कटे मूड़ की दो दो वातें

सन् १९०४ ई० में ही **किशोरी लाल गोस्वामी** रचित **'कटे मूड़ की दो दो वातें या तिलिस्मी सीसमहल'** नामक तिलस्मी रोमांस वावू वालमुकुन्द वर्मा द्वारा काशी से प्रकाशित किया गया।[2] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९०५ ई० दिया है, जो अशुद्ध है।[3] इसका दूसरा संस्करण सन् १९१४ ई० में सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन से प्रकाशित हुआ।[4]

रमा या पिशाचपुरी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०५ ई० में **रूपनारायण पांडेय** लिखित 'रमा या पिशाचपुरी' नामक रोमांस जयनारायण वर्मा द्वारा लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[5] आर्य-भाषा पुस्तकालय, काशी में इसकी एक प्रति है, जिसके लेखक रूपनारायण शर्मा हैं, न कि रूपनारायण पाण्डेय।[6] डॉ० माताप्रसाद गुप्त की सूचना निश्चय ही भ्रामक है। आ० भा० पु० की प्रति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशक, तथा प्रकाशनकाल सम्वन्धी सूचना नहीं हैं।

यह एक ऐयारी और तिलस्म प्रधान रोमांस है।

धूर्त ऐयारा

सन् १९०६ ई० में **कुँवर लक्ष्मीनारायण गुप्त** लिखित 'धूर्त ऐयारा' नामक ऐयारी प्रधान रोमांस जगद्विनोद यन्त्रालय, अलीगढ़ में मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[7] इसकी 'भूमिका' में लेखक ने लिखा है : "यह उपन्यास हमारे पाठकों को धोखेवाजों की चालाकी से वचावेगा और अपनी सच्ची ऐयारी की वहार दिखाकर झूठी ऐयारियों का मुँह काला करेगा। मैं इसकी अधिक प्रशंसा न कर सिर्फ इतना ही कहूँगा कि इस कलिकाल में आपका सच्चा

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ६११ तथा २३२।
२. प्रा०स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
कटे मूड़ की दो दो वातें वा तिलस्मी सीसमहल उपन्यास······श्रीकिशोरी लाल गोस्वामी लिखित और वावू वालमुकुंद वर्मा द्वारा प्रथम वार प्रकाशित (एक सुभाषित) इसके वाद का मुखपृष्ठ का हिस्सा फटा हुआ है जिससे प्रकाशन-तिथि नहीं ज्ञात होती। आ० भा० पु० की पुस्तक पंजी पर इसका प्रकाशन वर्ष १९०४ अंकित है।
३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३२
४. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना।
५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५६७।
६. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीरूपनारायण शर्मा द्वारा लिखित—रमा वा पिशाचपुरी उपन्यास, पुस्तक मिलने का पता— उपन्यास वहार आफिस राजघाट—वनारस, प्रथम वार, पृ० सं० १४९।
७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-धूर्त ऐयारा उपन्यास जिसको ············कुँवर लक्ष्मीनारायण गुप्त सिकन्दरा राउ जिला अलीगढ़ निवासी रचित और

सहायक और दुष्टों से बचाने वाला यदि कोई है तो यही है।[१]

वीरेन्द्रकुमार वा चाँदी का तिलिस्म

डॉ० गुप्त के अनुसार सन् १९०७ ई० में **श्री विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा** द्वारा लिखित 'वीरेन्द्र कुमार वा चाँदी का तिलिस्म' नामक ऐयारी-तिलस्मी रोमांस हितचिन्तक प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[2] डॉ० गुप्त ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में ही पृष्ठ ३२ तथा २३३ पर इसका प्रकाशन-काल १९०६ ई० दिया है।[3] पता नहीं दोनों तिथियों में कौन तिथि सही है। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास के दूसरे, तीसरे और चौथे भाग उपलब्ध हैं, पर प्रथम भाग के न रहने से इसके लेखक, प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।

शेर सिंह

'वीरेन्द्र कुमार वा चाँदी का तिलिस्म' के अन्त में संलग्न 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि इस पुस्तक की समाप्ति के बाद विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा ने **'शेर सिंह'** नामक तिलस्मी कथा लिखने की योजना बनायी थी। स्वयं लेखक के शब्दों में "पाठक ! प्राय: सभी गुप्त विषय जो इस उपन्यास से सम्बन्ध रखते हैं क्रमश: खुल गये शेष जो कुछ बाकी है उनका शेर सिंह नामक उपन्यास से सम्बन्ध जानियेगा। उस उपन्यास में वीरेन्द्र कुमार के पुत्र शेर सिंह पहाड़ी पर का कठिन वन्धन तिलिस्म जो चान्दी के तिलिस्म से कहीं कारीगरी में बड़ा चढ़ा था तोड़ेंगे। यदि पाठकों ने थोड़ा सा भी हमारे उत्साह को बढ़ाया तो मैं इस उपन्यास को अवश्य ही लिखने का साहस करूँगा।" पता नहीं, यह उपन्यास लिखा गया अथवा नहीं। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

राजेन्द्र कुमार या बसंत कुमारी

सन् १९०७ ई० में **ठाकुर जंगबहादुर सिंह** लिखित 'राजेन्द्र कुमारी' नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[४] पुस्तक के 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि इसकी रचना के समय इसका लेखक नवें वर्ग का छात्र था।[५]

प्रकाशित, जगद्विनोद यन्त्रालय अलीगढ़ में बलदेवप्रसाद लखनऊनिवासी के प्रवन्ध से मुद्रित। प्रथम बार १००० प्रति, १९०६, पृ० सं० ३३।

१. उपरिवत्।
२. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६१६।
३. उपरिवत्, पृ० ३२ तथा २३३।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
राजेन्द्र कुमार या वसन्त कुमारी जिसको प्रताप गढ़ (अवध) निवासी ठाकुर जंगवहादुर सिंह ने सव लोगों के चित्तविनोदार्थ वनाया और जिसे भारत जीवन के अध्यक्ष श्रीकृष्ण वर्मा ने निज व्यय से छापकर प्रकाशित किया। काशी, भारत जीवन प्रेस, में मुद्रित हुआ। १९०७ ई०, प्रथम वार १०००।
५. उपरिवत्।

महेन्द्र कुमार वा मदनमंजरी

डा० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९०८ ई० में ही शंकरदयाल श्रीवास्तव रचित 'महेन्द्र कुमार वा मदन मंजरी' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण बनारस से रामलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया।[1] आर्यभाषा पुस्तकालय में इस कथापुस्तक के विभिन्न भाग उपलब्ध हैं जिनके प्रकाशक, संस्करण-संख्या तथा प्रकाशन-वर्ष निम्नलिखित हैं----

भाग	प्रकाशक	संस्करण संख्या	प्रकाशन वर्ष
१	रामलाल वर्मा, कलकत्ता	५	चैत सं० १९८१ (सन् १९२४ ई०)
१	,,	३	सं० १९७३ (१९१६ ई०)
३	,,	३	,,
४	बालमुकुंद वर्मा कलकत्ता	५	१९२९ ई०
५	मुखपृष्ठ के फटे रहने से कोई सूचना नहीं मिलती		
६	रामलाल वर्मा, कलकत्ता	४	सन् १९२२

यह एक ऐयारी तिलिस्म प्रधान रोमांस है।

पुतली महल या गुलाब कुँवरी

सन् १९०८ ई० में बाबू राम लाल वर्मा 'रचित 'पुतली महल या गुलाव कुँवरी' नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस हितचिन्तक प्रेस, काशी मे मुद्रित तथा स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[2] इसका दूसरा संस्करण १९१२ ई० में न्यू सरस्वती प्रेस से प्रकाशित हुआ[3]

दो नकाबपोश

सन् १९१० ई० बाबू वृन्दावन बिहारी सिंह द्वारा रचित 'दो नकावपोश' नामक ऐयारी-तिलस्मी रोमांस कई भागों में बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास का केवल पाँचवाँ भाग उपलब्ध है। इस कारण यह नहीं ज्ञात हो पाता कि यह रोमांस कितने भागों में समाप्त हुआ है तथा इसके प्रथम और अन्तिम भाग का प्रकाशन-काल क्या है।[4]

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६३१।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—

पुतली महल या गुलाव कुँवरी, पहिला भाग, एक ऐयारी और तिलिस्मी ढंग का नया उपन्यास, बाबू राम लाल वर्मा, प्रोप्राइटर उपन्यास सागर कलकत्ता वा बनारस द्वारा लिखित और प्रकाशित, काशी हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित, दाम ।।) संवत १९६५ विक्रमीय, पृ० सं० ११४ (दूसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि उपरिवत्), पृ० सं० १००।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
दो नकावपोश, पाँचवाँ भाग, एक बड़ा ही चित्ताकर्षक प्रेम सम्बन्धी उपन्यास जिसको सिला

प्रेमा का खून

सन् १९११ ई० में **पं० ब्रह्मदत्त शर्मा** द्वारा रचित 'प्रेमा का खून' नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस बम्बई मशीन प्रेस, आगरा से छपकर प्रकाशित हुआ।[1]

शशिबाला वा भयंकर मठ

सन् १९११ ई० में ही **पं० चन्द्रशेखर पाठक** लिखित 'शशिबाला वा भयंकर मठ' नामक तिलस्म प्रधान रोमांस रामलाल शर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया।[2]

मदन मोहिनी

सन् १९११ ई० में **पं० गोविन्द राव तैलंग** लिखित 'मदन मोहिनी' नामक रोमांस का पहला भाग गया से, स्वयं लेखक द्वारा, प्रकाशित हुआ।[3] सम्भवतः इस रोमांस का प्रथम भाग ही प्रकाशित हो पाया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके अन्य भागों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मधुपलतिका वा इश्क की आग

सन् १९१२ ई० में **पं० जगन्नाथ मिश्र** रचित 'मधुप लतिका वा इश्क की आग' नामक ऐयारी प्रधान रोमांस केशव प्रेस, काशी से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[4]

सूर्यकुमार संभव

डा० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१२ ई० में ही **रूप किशोर जैन** लिखित 'सूर्यकुमार संभव' नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान कथा स्वयं लेखक द्वारा अलीगढ़ से प्रकाशित हुई[5]

गाजीपुर, परगना सैदपुर, मौजा रावल निवासी बाबू वृन्दावन विहारी सिंह गार्ड ने रचा और उपन्यास दर्पण के अध्यक्ष बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा ने प्रकाशित किया। मैनेजर दीपचन्द्राचार्य द्वारा काशी केशव प्रेस में छापा गया। पहिली बार २०००, सन् १९१०, मूल्य ।), पृ० सं० १०३।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
नवीन उपन्यास, प्रेमा का खून, अर्थात रौद्र वीभत्स और अद्भुत रस अपूर्व सौन्दर्य, पी० ब्रह्म दत्त शर्मा "सन्त", प्रिन्टेड बाई एल० वंसीधर दुदानी एट दि "बाम्बे मशीन प्रेस, सिवका बाजार आगरा, फर्स्ट एडीसन ३०००, १९११, पृ० सं० ११४।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
शशिबाला वा भयंकर मठ, एक रहस्यमय नवीन उपन्यास·· पं० चन्द्रशेखर पाठक रचित, रामलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १०००, सं० १९६८, मूल्य ॥≡) पृ० सं० ११२।

३. प्राप्ति स्थान–आर्यभाषा पुस्तकालय काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि–मदन मोहिनी, पहिला हिस्सा, पं० गोविन्द राव तैलंग गया जी निवासी द्वारा लिखित और प्रकाशित। प्रथम वार १०००, १९११, पृ० सं० १३५।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उपन्यास, मधुपलतिका वा इश्क की आग, प्रथम भाग, पं० जगन्नाथ मिश्र रचित, मैनेजर धर्मदत्त भेदशास्त्री द्वारा काशी, केशव प्रेस, में मुद्रित हुआ, प्रथम वार १०००, सन् १९१२ ई०, पृ० सं० ६२।

५. हि० पु० सा०, पृ० ५६७, पृ० २३५ तथा पृ० १०८।

सोमलता

सन् १९१३ ई० में प्रसू सरस्वती प्रिय द्वारा रचित, 'सोमलता' नामक ऐयारी तिलस्मी रोमांस का प्रथम भाग शुभचिन्तक छापाखाना, जबलपुर में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ[1]। इस रोमांस की भूमिका में उपन्यासकार ने इसकी रचना के उद्देश्य तथा इसके विषय के सम्बन्ध में निम्नलिखित विचार व्यक्त किये हैं---

"प्रायः ऐसा देखने में आया है कि बड़े आदमियों के लड़के पढ़ने लिखने के बाद ऐश आराम में पड़ जाते हैं, और जो गरीब हैं वे भी विद्या की ओर कुछ ध्यान न देकर नीच कामों को ग्रहण करते हैं जिमसे उन्होंने जो कुछ पढ़ा लिखा होता है वो सब भी चौपट हो जाता है। इसलिये उनका अभ्यास रहने के लिये दिलचस्प उपन्यास नाटक वगैरह होना आवश्यक है, यह सोचकर मैंने अपनी तुच्छ लेखनी से जो कुछ हो सका मात्रि-भाषा की उन्नति के लिये यह उपन्यास लिखा है·······यह उपन्यास यद्यपि इतिहासिक नहीं है, तब भी इसकी कई घटनाएँ इतिहासिक रक्खी गई हैं, इसमें ऐयारी तिलिस्मी विषय भी (जो कि लोग आजकल पसन्द करते हैं) रक्खा है और इसी के साथ २ धर्म की जय, और पाप की क्षय बदमाशों को उनके कर्म का उचित दंड और सच्चे हक्क वालों को उनका हक्क तथा वीर रस का भी पूरा पूरा सीन बतलाया गया है, जिमसे कि तमाम दुनिया चलती है।"[2]

इस पुस्तक का दूसरा भाग छपा या नहीं, इसका ज्ञान प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। प्रथम भाग की भूमिका में दूसरे भाग के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचना प्राप्त होती है--"इस समय में इस उपन्यास का पहिला हिस्सा पाठकों की सेवा में उपस्थित करता हूँ और अगर ईश्वर की कृपा हुई तो और भी इसके हिस्से शीघ्र ही बनाकर आपकी सेवा में उपस्थित करूँगा। प्रथम भाग को तो पाठक केवल भूमिका मात्र समझें।"[3]

सूरजमुखी

सन् १९१३ ई० में ज्योतिषी हरदेव प्रसाद मुदर्रिस लिखित 'सूरजमुखी' नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस श्यामलाल अग्रवाल द्वारा श्याम काशी प्रेस, मथुरा से प्रकाशित हुआ।[4]

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सोमलता उपन्यास, प्रथम भाग, एक बड़ा ही दिलचस्प मन को खुश कर देनेवाला ऐयारी और तिलस्मी संयोगांत और वियोगांत के रहस्यों से भरा हुआ अति उत्तम उपन्यास अवश्य देखें। लेखक प्रसू सरस्वती प्रिय, जबलपुर सी० पी० शुभचिंतक छापाखाना में मुद्रित हुआ। प्रथम बार १०००, जिल्द १९१३।

२. उपरिवत्, भूमिका।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—एक बिलकुल नया उपन्यास, सूरजमुखी, जिसमें कोई विषय भी प्राचीन नहीं लिखा गया; चक्रवर्ती, काम कौतुक, सरला, सीता जी और रावण की बातचीत इत्यादि कई गद्य और पद्य पुस्तकों के

हवाई महल

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१४ ई० में **चतुर्भुज औदीच्य** द्वारा लिखित '**हवाई महल**' नामक ऐयारी-तिलस्मी कथा स्वयं लेखक द्वारा, मथुरा से प्रकाशित हुई।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

हेमलता

सन् १९१४ ई० में ही **पं० चन्द्रशेखर पाठक** लिखित 'हेमलता' नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांस प्रकाशित होना शुरू हुआ। इसका प्रथम भाग १९१४ ई० में स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित किया गया। इसके तीसरे और चौथे भाग १९२४ ई० में निहालचन्द एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुए तथा इसका पाँचवाँ भाग १९२७ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[2]

स्वर्णकान्ता

सन् १९१५ ई० में **पं० नन्दलाल शर्मा** लिखित 'स्वर्णकान्ता' नामक ऐयारी और तिलस्म प्रधान रोमांस, दो भागों में, जयरामदास गुप्त द्वारा उपन्यास वहार ऑफिस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3] इसका चौथा भाग १९२२ ई० में उपन्यास वहार ऑफिस से प्रकाशित हुआ।[4] इस प्रकार इस पुस्तक का प्रकाशन काल १९१५-२२ ई० माना जा सकता है। स्वयं लेखक ने तीसरे भाग के निवेदन में स्वीकार किया है कि, "आज आठ नौ वर्ष से अधिक समय मुझे इस पुस्तक को आरम्भ किये होता है।"[5]

रचयिता ज्योतिषी हरदेव प्रसाद मुदर्रिस ने रचा और श्याम लाल अग्रवाल ने अपने श्याम काशी प्रेस, मथुरा में छापकर प्रकाशित किया, सन् १९१३ ई०, प्रथमावृत्ति २२००, पृ० सं० ६८।

१. हि० पु० सा०, पृ० ४३७।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
हेमलता, ऐयारी और तिलिस्मी घटनापूर्ण विचित्र उपन्यास, पहला भाग, चन्द्रशेखर पाठक द्वारा लिखित और प्रकाशित, १९७१, प्रथम वार १०००; दूसरा भाग—मुखपृष्ठ फटा रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिलती; तीसरा भाग—प्रकाशक निहालचन्द एंड कम्पनी नं० १ नारायण प्रसाद वावू लेन, कलकत्ता, प्रथम वार १०००, सं० १९८१ वि०; चौथा भाग—प्रथम वार १०००, सं० १९८१ वि० (अन्य सूचनाएँ उपरिवत्); पाँचवाँ भाग—प्रथम वार १०००, सं० १९८४ (अन्य सूचनाएँ उपरिवत्), पृ० सं० १८६+१६८+१२८+११८.

३. प्रा० स्था०—चै० पु० गायघाट, पटना सिटी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
स्वर्णकान्ता, चन्द्रकान्ता की वरावरी करने और कहीं कहीं पर उसे भी मात कर देनेवाला ऐयारी और तिलस्म का उपन्यास, काशी निवासी पं० नन्दलाल शर्मा लिखित जिसे उपन्यास वहार आफिस राजघाट से वावू जयरामदास गुप्त ने प्रकाशित किया। प्रथम वार १०००, जुलाई १९१५ ई०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
स्वर्णकान्ता उपन्यास, चौथा भाग, लेखक पं० नन्दलाल शर्मा, काशी, वनारस। प्रकाशक उपन्यास वहार आफिस, काशी, बनारस, प्रथम वार १९२२।

५. उपरिवत्, निवेदन।

तिलस्माती सुन्दरी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१६ ई० में **श्रीधर पाठक** लिखित 'तिलस्माती सुन्दरी' नामक रोमांस पद्मकोट, इलाहाबाद से लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[1] 'सरस्वती', भाग १७, संख्या ७, जून १९१६ ई० में पं० श्रीधर पाठक लिखित और गिरिधर पाठक, लूकरगंज, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित **'तिलस्माती सुन्दरी'** नामक रोमांस का निम्नलिखित परिचय प्रकाशित हुआ था----"तिलस्माती सुन्दरी या कश्मीर के राजा की लड़की, बोलचाल की बोली में एक अति मनोहर कहानी। यह विशेषकर लड़कियों के लिए लिखी गयी है।"[2]

सूर्यकान्ता

सन् १९१८ ई० के पूर्व 'सूर्यकान्ता' नामक कोई तिलिस्मी रोमांस **बालमुकुन्द वर्मा** द्वारा, उपन्यास तरंग, नेपाली खपरा, बनारस से प्रकाशित किया गया था। लाला कृष्ण लाल लिखित 'माधवी' नामक कथापुस्तक (१९१८ ई०) के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर इसका निम्नलिखित विज्ञापन छपा था।[3]

" सूर्यकान्ता उपन्यास-आज तक हिन्दी में कितने ही उपन्यास छपे और बराबर छपते जा रहे हैं किन्तु पाठकों का ध्यान कुछ ऐयारी व तिलिस्म की ओर ऐसा झुकता हुआ है कि उन्हें दूसरी पुस्तक अच्छी ही नहीं लगती यही सोचकर इस ढंग पर यह उपन्यास लिखा गया है। पता-बालमुकुन्द वर्मा, मालिक उपन्यास तरंग, नेपाली खपरा, बनारस।"

शैतान या पत्थर की खोह : तिलस्मी बुर्ज : सुन्दरी : चन्द्रप्रभा

सन् १९१८ ई० के पूर्व प्रकाशित कुछ और भी ऐयारी तिलस्मी-रोमांस प्राप्त होते हैं, जिसका ठीक प्रकाशन-काल ज्ञात नहीं होता। पं० जगन्नाथ प्रसाद अग्निहोत्री द्वारा लिखित **'शैतान या पत्थर की खोह'** नामक रोमांस इसी काल में प्रकाशित हुआ था।[4] इसी अवधि में बाबू गुलाब दास द्वारा लिखित **'तिलस्मी बुर्ज'** नामक रोमांस हितचिंतक प्रेस, बनारस से मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[5] इसी समय बाबू बालमुकुन्द वर्मा द्वारा रचित **'सुन्दरी'** नामक ऐयारी प्रधान रोमांस कल्पतरु प्रेस, काशी से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[1] श्री रामनारायण दीक्षित कृत **'चन्द्रप्रभा'** नामक ऐयारी प्रधान रोमांस भी तीन भागों में, इसी काल में हितचिंतक प्रेस, काशी से छपा।[2]

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६४९।
२. सरस्वती, भाग १७, सं० ६, जून १९१६।
३. लाला कृष्ण लाल, माधवी, १९१८, अन्तिम पृष्ठ का विज्ञापन।
४. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्कालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—तिलस्मी शैतान या पत्थर की खोह, लेखक पं० जगन्नाथ शर्मा अग्निहोत्री, प्रकाशक भारतभूषण पुस्तकालय, राजा दरवाजा, काशी, प्रथम संस्करण १००० (प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है) पहला भाग, पृ० सं० १२३।
५. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-तिलस्मी बुर्ज, एक मनोरंजक उपन्यास, स्पेन के इतिहास के एक बयान के आधार पर लिखित काशी निवासी बाबू जयराम दास द्वारा संशोधित व बाबू गुलाब दास लिखित और बाबू जयराम दास व गुलाब दास द्वारा प्रकाशित

अपराध प्रधान तथा जासूसी कथाएँ

हिन्दी के अपराध प्रधान जासूसी उपन्यासों के सम्बन्ध में सबसे दुर्लंघ्य कठिनाई उनके मूल का पता लगाना है। हिन्दी में ऐसे अनेक अपराध प्रधान उपन्यास हैं, जो वस्तुतः अनुवाद हैं, पर उनके अनुवाद होने की कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। अनेक ऐसे उपन्यास हैं, जो अँगरेजी या बँगला उपन्यासों के रूपान्तर मात्र हैं; मूल उपन्यास की समस्त बातें ले ली गयी हैं, केवल स्थानों और पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं। कुछ उपन्यास विदेशी उपन्यासों की कथावस्तु को आधार बनाकर मौलिक रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। कठिनाई यह है कि इन उपन्यासों के रूपान्तरकार अपनी पुस्तकों के मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास अथवा उपन्यासकार का उल्लेख करना आवश्यक नहीं समझते। पाठकों की जेब से अधिकाधिक पैसे ऐंठने के उद्देश्य से ये लेखक अनूदित या रूपान्तरित उपन्यासों को भी मौलिक उपन्यास के रूप में ही प्रस्तुत करते हैं। इनके द्वारा अनूदित पुस्तकों में मूल लेखक, प्रकाशन-काल तथा संस्करण सम्बन्धी सूचनाएँ न दिये जाने का एक कारण यह भी होता है कि ये लेखक इन पुस्तकों का अनुवाद या रूपान्तर साहित्य-सेवा के किसी महदुद्देश्य से नहीं करते। इनका दृष्टिकोण व्यावसायिक होता है। केवल द्रव्योपार्जन के लिए अपराध प्रधान और जासूसी उपन्यास लिखे और प्रकाशित किये जाते हैं। स्वयं इन उपन्यासों के रचयिताओं को भी यह भ्रम नहीं रहता कि उनकी पुस्तकें साहित्यिक मूल्य की दृष्टि से भविष्य में महत्त्वपूर्ण होंगी। परिणामतः वे अपनी पुस्तकों की प्रकाशन सम्बन्धी सूचनाओं के विषय में अधिक सतर्क नहीं रहते।

प्रस्तुत अध्याय में अपराध प्रधान तथा जासूसी उपन्यासों का मौलिक उपन्यासों के रूप में जो विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है, वह सर्वथा प्रामाणिक है, ऐसा दावा करने का साहस प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। गोपाल राम गहमरी के, जो इस कोटि के कथाकारों में मूर्द्धन्य हैं, अनेक उपन्यास, जिन्हें उन्होंने अनुवाद नहीं कहा है, अनुवाद सिद्ध होते हैं। ऐसी पुस्तकों को अनुवाद की श्रेणी में रखा गया है, पर जिनके अनुवाद होने का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता उन्हें मौलिक मानने के सिवा और कोई चारा नहीं दिखाई पड़ता। सम्भव है, इन तथाकथित मौलिक उपन्यासों में से अनेक अनुवाद, रूपान्तर या

किसी विदेशी उपन्यास पर आधृत सिद्ध हों। यह बात केवल गहमरीजी ही नहीं, बल्कि इस खेवे के सभी उपन्सकारों के विषय में सत्य है।

गोपाल राम गहमरी

गोपाल राम गहमरी हिन्दी के प्राक्प्रेमचन्द युगीन उपन्यासकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, पर आज तक हम इस तथ्य से नितान्त अनभिज्ञ हैं कि उन्होंने कितने और किन उपन्यासों की रचना की थी, उनके मौलिक उपन्यास कितने हैं और बँगला के किन उपन्यासों के उन्होंने अनुवाद किये थे। गहमरी जी के उपन्यासों से सम्बद्ध सूचनाएँ प्रस्तुत करने वाली पुस्तकों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', डॉ० माताप्रसाद गुप्त का 'हिन्दी पुस्तक साहित्य', व्रजरत्न दास का 'हिन्दी उपन्यास साहित्य' तथा शिवनारायण श्रीवास्तव का 'हिन्दी उपन्यास' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें सर्वाधिक महत्व की पुस्तक डॉ० माताप्रसाद गुप्त का 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' है, जिसमें गहमरी जी के ६४ उपन्यासों की सूचना प्राप्त होती है। किन्तु 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' की सूचनाएँ भी पूर्णतया निर्भ्रान्ति नहीं है। इस पुस्तक में जहाँ गहमरी जी के केवल ६४ उपन्यासों से सम्बद्ध सूचनाएँ प्रस्तुत की गयी हैं, वहाँ प्रस्तुत परिच्छेद में गहमरी जी के १५० उपन्यासों की सूचना और परिचय दिया गया है।[1] यही नहीं, डॉ० गुप्त की पुस्तक में प्रकाशन-काल सम्बन्धी भ्रान्तियाँ भी बहुत हैं। कुछ उपन्यासों का प्रकाशन-काल अशुद्ध दिया हुआ है, कुछ का प्रकाशन-काल देकर उनके सामने प्रश्नचिह्न लगा दिया गया है और कुछ उपन्यासों के भिन्न भिन्न पृष्ठों पर, भिन्न भिन्न प्रकाशन-काल दिये हुए हैं। उदाहरणतः पृ० २३० पर 'जमुना का खून' का प्रकाशन-काल १९०० और पृ० ४२६ पर १९०१ दिया हुआ है; पृ० २३२ पर 'जासूस पर जासूस', 'डाक पर डाका', और 'डाक्टर की कहानी' का प्रकाशन-काल १९०३ और पृ० ४२७ पर १९०४ बताया गया है; पृ० २३२ पर 'लाइन लाश', 'चक्करदार चोरी', 'यारों की लीला', और 'मृत्यु विभीषिका' का प्रकाशन-काल १९०४ ई० (?), किन्तु २३३ पर इनका प्रकाशन-काल १९०६ (?) और पृ० ४२७ पर १९१० (?) ई० बताया गया है; पृ० २३३ पर 'आँखों देखी घटना', 'इन्द्र-जालिक जासूस', 'किले में खून', 'केतकी की शादी', 'खूनी का भेद' और 'खूनी की खोज' का प्रकाशन-काल १९०६ (?) ई० और पृ० ४२७ पर १९१० बताया गया है। उपन्यासों के नाम और विषय के सम्बन्ध में भी 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में यत्र-

---

भाग, कन्नौज निवासी रामनारायण दीक्षित कृत, जिसमें ऐयारों की ऐयारी, बेईमानों व निमकहरामों को उचित दंड, व्यभिचारिणी स्त्री की तबाही इत्यादि २ ऐसी बातें दिखाई गई हैं जो पढ़ने से विदित होंगी। श्रीकाशी हितचिन्तक यन्त्रालय में छपा। पृ० सं० ६६+८०+८८।

१. गहमरी जी द्वारा लिखित और अनूदित कथापुस्तकों की संख्या २०० के आसपास है, पर शेष पुस्तकों का प्रकाशन-काल १९१७ ई० के बाद पड़ता है, अतः उनकी सूचना हिन्दी उपन्यास कोश, खंड २ में दी गयी है।

तत्र भ्रान्त सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। आज तक किसी भी आलोचक या शोधकर्त्ता का ध्यान गहमरी जी की समस्त कथापुस्तकों का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करने की तरफ नहीं गया है। अतः प्रस्तुत परिच्छेद में गहमरी जी के उपन्यासों के प्रकार, प्रकाशन-काल, संस्करण, प्राप्ति-स्थान आदि के सम्बन्ध में प्रामाणिक सूचनाएँ संगृहीत करने का प्रयत्न किया गया है।[१]

गहमरी जी के सम्बन्ध में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्या इसका निर्णय करना है कि उनके कौन उपन्यास मौलिक हैं और कौन अनूदित। उन्होंने प्राय: अपने अनूदित उपन्यासों में मूल उपन्यास तथा उपन्यासकार के नाम नहीं दिये हैं। यदि कहीं उन्होंने मूल उपन्यास और उपन्यासकार का नाम दिया भी है तो इस प्रकार कि उस पर पाठक की दृष्टि विना विशेप ध्यान दिये नहीं जा सकती। ऐसे अनूदित उपन्यासों को, आवरणपृष्ठ या मुख-पृष्ठ पर, 'जासूस सम्पादक वावू गोपालराम गहमरी निवासी' लिखित वताया जाता है और प्रथम पृष्ठ या अन्तिम पृष्ठ की पादटिप्पणी में महीन ठाइप में मूल लेखक और मूल रचना की सूचना इस प्रकार दी जाती है कि साधारण पाठक उसे जानने भी न पाए और काम भी वन जाए। यदि सौभाग्यवश इन उपन्यासों के द्वितीय संस्करण निकलने की वारी आती है तो महीन टाइप वाली टिप्पणी भी गायव हो जाती है और प्रकाशन-काल के भी दर्शन नहीं होते। गहमरी जी के ऐसे अनूदित उपन्यासों की संख्या ज्यादा है जिनमें मूल उपन्यास या उपन्यासकार के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। इन उपन्यासों का इस शान के साथ निकाला जाता है, मानों वे मौलिक उपन्यास हों। उदाहरण के लिए विज्ञापन जासूस (मई १९१४ ई०) में प्रकाशित 'नीलम परी' का, जो वाबू पाँचकौड़ी दे लिखित 'नील वसना सुन्दरी' का अनुवाद मात्र है, विज्ञापन दर्शनीय है :

"इस छोटे से इश्तिहार में इस (नील वसना सुन्दरी) का पूरा हाल कहाँ लिख सकते हैं। इसकी घटना के अगम्य जाल में खूनी ऐसा छिपा है कि ज्यों-ज्यों पढ़िये त्यों-त्यों वह सरकता जाता है। और जो सामने आता है वही आसामी मालूम होता है, लेकिन दो चार वयान आगे पढ़ते ही वह सफाई देकर निकल जाता है और बुद्धि काम नहीं करती। इसी तरह घटना पर घटना, रहस्य पर रहस्य और मामलों का जाल ऐसा जकड़ा हुआ है कि यह कई सौ पन्ने की पुस्तक पूरा पढ़े विना असल भेद नहीं मिल सकता। गरज कि इस पुस्तक की घटना जैसी मजेदार है, भाषा जैसी फड़कती हुई है, शव्दों की सजावट जैसी मधुर है, छपाई कागज जैसी खूवी के हैं वैसे ही विकट खूनी की चालाकी जासूस की चतुराई और वूढ़े जासूस का सिखापन सव एक से एक वढ़कर हैं।"

इस विज्ञापन को देखकर धारणा वनती है कि यह उपन्यास मौलिक है, किन्तु है यह अनुवाद ही। इस प्रकार के विज्ञापन 'जासूस' पत्रिका के विभिन्न अंकों में सैकड़ों की संख्या में प्राप्त होते हैं। ऐसी स्थिति में इस वात का निर्णय करना वहुत ही कठिन है कि गहमरी जी के कौन उपन्यास मौलिक हैं और कौन अनूदित। प्रस्तुत लेखक ने यथासम्भव प्रामा-

---

१. प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने आर्यभापा पुस्कालय (आ० भा० पु० काशी), चैतन्य पुस्तकालय (गायघाट, पटना सिटी), पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय, मन्नूलाल

णिक आधारों पर गहमरी जी के अनूदित उपन्यासों को उनके तथाकथित मौलिक उपन्यासों से अलग करने का प्रयत्न किया है। फिर भी नितान्त निश्चय के साथ यह नहीं कहा जा सकता कि गहमरी जी का अमुक उपन्यास मौलिक है ही।

श्री कृष्णानन्द जोशी ने 'प्रतिभा' के फरवरी १९१८ के अंक में[1] 'हिन्दी उपन्यासों में डाकेजनी' शीर्षक से एक रोचक तथा महत्त्वपूर्ण चिट्ठी प्रकाशित की थी, जिसमें उन्होंने गहमरी जी की कठोर आलोचना करते हुए लिखा था कि "मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि आपके (गोपाल राम गहमरी के[2]) सब उपन्यास बँगला या अँगरेजी भाषा के उपन्यासों भद्दे अनुवाद मात्र हैं।" जोशी जी ने अपनी चिट्ठी में यह भी सिद्ध किया था कि गहमरी जी जिन पाँचकौड़ी दे के बँगला उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद करते थे, वे भी अँगरेजी के जासूसी उपन्यासों की कथावस्तु उड़ाकर अपने उपन्यासों का निर्माण किया करते थे। उदाहरणार्थ गहमरी जी का 'गोविन्दराम' पाँचकौड़ी दे के 'गोविन्द राम' का रूपान्तर है, पर जोशी जी के अनुसार दे साहब का 'गोविन्द राम' अँगरेजी के सर ए० कॉनन डायल के 'ए स्टडी इन स्कार्लेट' का रूपान्तर मात्र है। "फर्क है तो केवल इतना कि अँगरेजी उपन्यास का प्रसिद्ध पात्र शर्लक होम्स बँगला और हिन्दी में गोविन्द राम हो गया है और उसका मित्र डाक्टर वाट्सन डाक्टर बोस के रूप में आ गया है। न मालूम कि इस नाम और रूप के परिवर्तन से बँगला के प्रसिद्ध डिटेक्टिव औपन्यासिक वा उसके ग्रन्थों के अनुवादक बाबू गोपाल राम जी ने सिवाय इसके कि इन ग्रन्थों के रचयिता आप बन बैठे और क्या लाभ सोचा है।"[3]

यदि सचमुच 'गोविन्दराम' 'सर्लक होम्स' के और 'डा० बोस' 'डा० वाट्सन' के नामान्तरण मात्र हैं तब तो गहमरी जी को वे सभी कथाएँ, जिनमें जासूस गोविन्द राम और डाक्टर बोस पात्ररूप में आते हैं, संदिग्ध हो जाती हैं। गहमरी जी ने इन कथा-पुस्तकों को अनुवाद नहीं कहा है, पर इन कथाओं के अधिकांश पात्र बंगाली, और घटनास्थल बंगाल के विभिन्न स्थान हैं। इस कारण भी ये कथापुस्तकें पाँचकौड़ी दे की पुस्तकों के अनुवाद प्रतीत होती हैं। ये पुस्तकें किन पुस्तकों के अनुवाद हैं, यह तब तक निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, जब तक पाँचकौड़ी दे की बँगला जासूसी कथाओं और कॉनन डायल की अँग्रेजी जासूसी कथाओं का सावधानी पूर्वक अध्ययन न किया जाए।

गहमरी जी की कथापुस्तकों के सम्बन्ध में दूसरी कठिन समस्या उनकी संख्या और

पुस्तकालय (गया), राष्ट्रीय पुस्तकालय (कलकत्ता), राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय (पटना) में उपलब्ध गहमरी जी के सभी उपन्यासों तथा 'जासूस' के सभी अंकों को पढ़कर तथा अनेक पत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापनों के आधार पर, जिनका यत्र तत्र उल्लेख हुआ है, अपनी मान्यताएँ स्थिर करने का प्रयास किया है। फिर भी यह दावा करना निरर्थक होगा कि गहमरी जी के उपन्यासों का यह अध्ययन अन्तिम है।

१. 'प्रतिभा' के अंक आर्यभाषा पुस्तकालय (नागरी प्र० स० काशी) में उपलब्ध हैं।

२. कोष्टक के शब्द मेरे हैं।

३. कृष्णानन्द जोशी, हिन्दी उपन्यासों में डाकेजनी—एक चिट्ठी, प्रतिभा, फरवरी १९१८।

प्रकाशन-काल का निर्णय करना है। इनकी अधिकांश कथाएँ इन्हीं के द्वारा सम्पादित 'जासूस' पत्रिका में प्रकाशित हुई थीं, पर जासूस के सभी अंक उपलब्ध नहीं हैं। 'जासूस' में प्रकाशित कथाओं के जब दूसरे संस्करण हुए तो उनमें प्रथम संस्करण का समय देना तो दूर की बात है, उनका अपना प्रकाशन-काल भी नहीं दिया गया। आर्यभाषा पुस्तकालय (ना० प्र० स० काशी) में गहमरी जी की बहुत सी कथापुस्तकें उपलब्ध हैं, पर पाठकों की कृपा से अधिकांश पुस्तकों के आवरणपृष्ठ और मुखपृष्ठ, जिनपर प्रकाशन-काल तथा संस्करण सम्बन्धी सूचनाएँ रहती हैं, गायब हो गये हैं। ऐसी स्थिति में गहमरी जी को कथापुस्तकों के काल-निर्णय की कठिनाई सहज अनुमेय है।

प्रस्तुत लेखक का काम चैतन्य पुस्तकालय (गायघाट, पटना सिटी) में संगृहीत १९१५ ई० तक की 'जासूस' की फाइलों के विद्यमान रहने से बहुत कुछ सरल हो गया।[1] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में भी 'जासूस' की कुछ फाइलें सुलभ हो गयीं।[2] इसके अतिरिक्त इन उपन्यासों के काल-निर्णय में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित गहमरी जी के उपन्यासों के विज्ञापनों और पुस्तक-समीक्षाओं की सहायता भी ली गयी है। 'हिन्दी पुस्तक साहित्य'[3] और 'हिन्दी में उच्चतर साहित्य'[4] को भी सामने रखा गया है, यद्यपि काल-निर्णय में इनसे सहायता कम ही मिल पायी है।

गहमरी जी की बिलकुल मौलिक पुस्तकें कौन हैं यह बताना टेढ़ी खीर है। उनकी अनूदित पुस्तकों को देखने से यह स्पष्ट है कि वे अनूदित पुस्तकों को भी मौलिक रूप में ही प्रस्तुत करते हैं। अतः गहमरी जी की वे पुस्तकें, जिनके अनुवाद होने की कोई सूचना लेखक ने नहीं दी है, वस्तुतः मौलिक हैं, यह कहना कठिन है। प्रस्तुत निबन्ध में गहमरी जी की उन सभी कथा-पुस्तकों को मौलिक मान लिया गया है, जिनके अनुवाद होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। जिन पुस्तकों की मौलिकता के सम्बन्ध में सन्देह है, उनके सम्बन्ध में सन्देह व्यक्त करने के साथ-साथ सन्देह का कारण देने का भी प्रयत्न किया

---

१. चैतन्य पुस्तकालय में 'जासूस' के वर्ष १, अंक १ (मई १९००), जून-अगस्त १९०२, अक्तूबर-दिसम्बर १९०३, जून-जुलाई १९०४, फर०-अक्तूबर १९०६, जून-नव० १९१३, फर०-अप्रील १९१४, अक्तूबर-दिस० १९१४, जन०-जुलाई १९१५, को छोड़कर १९०० ई० से १९१५ ई० तक के सभी अंक

२. संयोगवश चैतन्य पुस्तकालय में अनुपलब्ध 'जासूस' के अंकों में मई १९००, जून-अगस्त उपलब्ध हैं। १९०२, अक्तूबर-दिसम्बर १९०३, जनवरी-जुलाई १९०४, सितम्बर-अक्तूबर १९१३, अप्रील १९१४, अक्तूबर-दिसम्बर १९१४, जनवरी १९१५, अप्रील-मई १९१५ के अतिरिक्त शेष अंक आर्यभाषा पुस्तकालय में सुरक्षित हैं: १९१५ ई० के बाद के 'जासूस' के निम्नलिखित अंक आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध हैं: जनवरी-मार्च १९१६, जुलाई १९१७, अक्तूबर-नवम्बर १९१७, अगस्त-सितम्बर १९१८, मई-अक्तूबर १९१९, सितम्बर-दिसम्बर १९२०, जुलाई १९२३, मार्च-दिसम्बर १९२७, जनवरी-सितम्बर १९२८, नवम्बर १९२८। जासूस के शेष अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध नहीं हो सके हैं। हिन्दी के शोधकर्त्ताओं से निवेदन है कि यदि 'जासूस' के ये अंक किसी संग्रहालय में उपलब्ध हों तो उनमें प्रकाशित गहमरी जी के उपन्यासों की सूचना हिन्दी संसार को दें।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य।

४. डॉ० राजबली पांडेय, हिन्दी में उच्चतर साहित्य।

गया है। सम्भव है, वे सन्देह निराधार हों और यह भी सम्भव है कि संदिग्ध पुस्तकें सचमुच अनुवाद हों। सच तो यह है कि कभी-कभी मुझे भी, श्री कृष्णानन्द जोशी की तरह,[1] सन्देह होता है कि कहीं गहमरी जी की सभी कथापुस्तकें बँगला या अँगरेजी पुस्तकों की घटनाओं में केवल फेरबदल करके ही तो नहीं लिखी गयी हैं?

अजीब लाश : जासूस : जोड़ा जासूस

गहमरी जी ने अधिकतर अपराधप्रधान या जासूसी कथाएँ ही लिखी हैं। अपनी कथा-पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए उन्होंने मई १९०० ई० में 'जासूस' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके पूर्व उनकी तीन पुस्तकें, अजीब लाश, जासूस और **जोड़ा जासूस**, बम्बई से निकलने वाले 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' में प्रकाशित हुई थीं। उक्त कथापुस्तकें मुझे उपलब्ध नहीं हो सकी हैं, पर 'वेंकसूर की फाँसी' की भूमिका से इनके सम्बन्ध में उपर्युक्त सूचनाएँ प्राप्त हो जाती हैं।[2] डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १८९६ ई० में गहमरी जी का '**अद्भुत लाश**' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ था।[3] सम्भव है, अजीब लाश' और 'अद्भुत लाश' दोनों एक ही उपन्यास के विभिन्न नाम हों।

सन्दूक का मुरदा

'जासूस' में, जो गहमरी जी के जीवन-काल तक और शायद उसके बाद भी प्रकाशित होता रहा, एकाध अपवाद को छोड़कर, केवल गहमरी जी द्वारा लिखित कथा-पुस्तकें ही प्रकाशित होती थीं। 'जासूस' के प्रथम अंक में गहमरी जी की '**सन्दूक का मुरदा**' नामक कथापुस्तक प्रकाशित हुई। यह पुस्तक प्रस्तुत लेखक को उपलब्ध नहीं हो सकी है। जासूस, वर्ष ३, अंक १, मई १९०२ ई० में ही प्रकाशित गहमरी जी की पुस्तकों के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि यह पुस्तक सर्वप्रथम जासूस में प्रकाशित हुई थी।

सन् १९०० ई० में जासूस के जून के अंक में **वेकसूर की फाँसी**[4], जुलाई में **सिर-कटी लाश**[5], अगस्त में **डबल जासूस**[6], सितम्बर-अक्टूबर में **डबल चोर**[7], नवम्बर में **खूनी कौन है**[8] तथा **गाड़ी में खून**[9] और दिसम्बर में **वेगुनाह का खून**[10] नामक कथापुस्तकें प्रकाशित

---

१. द्रष्टव्य कृष्णानन्द जोशी, हिन्दी उपन्यासों में डाकेजनी, प्रतिभा, फरवरी १९१८।
२. वेकसूर की फाँसी, जासूस, जून १९००, भूमिका।
३. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३३।
४. वेकसूर की फाँसी, जासूस, भाग १, अंक २, जून, सन् १९००, पृ० सं० ५०, प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी।
५. सिरकटी लाश, जासूस, भाग १, अंक ३, जुलाई १९००, पृ० सं० ५२, प्रा० स्था०—चै० पु०।
६. डबल जासूस, जासूस, भाग १, अंक ४, अगस्त १९००, पृ० सं० ६३, प्रा० स्था०—चै० पु०।
७. डबल चोर, जासूस, भाग १, अंक ५-६, सितम्बर-अक्तूबर १९००, पृ० सं० ८२, प्रा० स्था०—चै० पु०।
८. खूनी कौन है, जासूस, भाग १, अंक ७, नवम्बर १९००, पृ० सं० १६, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
९. गाड़ी में खून, पृष्ठ संख्या २४, शेष उपरिवत्।
१०. वेगुनाह का खून, जासूस, भाग १, अंक ८, दिसम्बर १९०० ई०, पृ० सं० ४२, प्रा० स्था०—चै० पु०।

हुईं। इनमें से 'सिरकटी लाश' को डॉ० गुप्त[१] और श्री शिवनारायण श्रीवास्तव ने[२] **'सरकती लाश'** कहा है, जो भ्रामक है। १९०० ई० के पूर्व प्रकाशित 'जोड़ा जासूस' कथापुस्तक ही शायद 'डबल जासूस' के नाम से जासूस में पुनः प्रकाशित हुई। 'बेगुनाह का खून' १९३० ई० में पुनः प्रकाशित हुआ था।[३] इन कथापुस्तकों में 'बेकसूर की फाँसी', 'डबल जासूस' तथा 'डबल चोर' की मौलिकता थोड़ी संदिग्ध इस कारण मालूम पड़ती है कि इनके कुछ पात्र बंगाली तथा घटनास्थल बंगाल के हैं। पर केवल इस आधार पर उन्हें अनुवाद कहना भी उचित नहीं जान पड़ता।

सन् १९०१ ई० में 'जासूस' के जनवरी के अंक में **लड़की की चोरी**[४], फरवरी-मार्च में **फिरोजा बीबी**[५], अप्रैल-मई में **वाह रे जासूस**[६], जून में **जमना का खून**,[७] जुलाई-अगस्त में **काशी की गोलकधन्धारी**,[८] सितम्बर में **जासूस की भूल**,[९] अक्टूबर-नवम्बर में **भयंकर चोरी**[१०] तथा दिसम्बर में **थाना की चोरी**[११] नामक कथाएँ प्रकाशित हुईं। डॉ० गुप्त ने 'जमना का खून' का रचना-काल १९०० ई० दिया है, जो अशुद्ध है।[१२] श्री शिव नारायण श्रीवास्तव ने तो डॉ० गुप्त का अनुकरणमात्र किया है।[१३]

१९३० ई० में 'जमना का खून' थोड़े नाम-परिवर्तन के साथ **'जमना बेगम'** शीर्षक से स्वयं लेखक द्वारा, जासूस ऑफिस, गहमर से प्रकाशित किया गया।[१४]

---

१. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३३।
२. हिन्दी उपन्यास, पृ० ४८।
३. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।
४. लडकी की चोरी, जासूस, भाग १, अंक ९, जनवरी १९०१ ई०, पृ० सं० ५०, प्रा० स्था०—चै० पु०, गायघाट, पटना सिटी।
५. फिरोजा बीबी, जासूस, भाग १, अंक १०-११, फरवरी-मार्च १९०१, पृ० सं० ५०, प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय पटना।
६. वाह रे जासूस, जासूस, भाग १, अंक १२, भाग २, अंक १३, अप्रील-मई १९०१, पृ० सं० ४६, प्राप्ति स्थान —चै० पु० पटना।
७. जमना का खून, जासूस, भाग २, अंक २, जून १९०१ ई०, पृ० सं० ४४, प्रा० स्था०—चै० पु०।
८. काशी की गोलकधंधारी, जासूस, भाग २, अंक ३-४, जुलाई-अगस्त १९०१, पृ० सं० ८८, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।
९. जासूस की भूल, जासूस, भाग २, अंक ५, सितम्बर १९०१ ई०, पृ० सं० ४६, प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना।
१०. भयंकर चोरी, जासूस, भाग २, अंक ६-७, अक्तूबर-नवम्बर १९०१ ई०, पृ० सं० ८८, प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना।
११. थाना की चोरी, जासूस, भाग २, अंक ८, दिसम्बर १९०१ ई०, पृ० सं० २०, प्राप्ति स्था०—चै० पु०, पटना।
१२. उपरिवत्।
१३. हिन्दी उपन्यास, पृ० ४८।
१४. मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना—जमना बेगम, प्र० श्रीगोपाल राम, जासूस ऑफिस, गहमर, सन् १९३० ई०, प्राप्त स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र० स०, काशी।

उपर्युक्त कथापुस्तकों में 'लड़की की चोरी', 'वाह रे जासूस', 'काशी की गोलक-धंधारी' की मौलिकता संदिग्ध जान पड़ती है। इन उपन्यासों में आये पात्रों के नाम बंगाली हैं, पर निश्चय ही इसे प्रमाण नहीं माना जा सकता।

सन् १९०२ ई० में 'जासूस' के जनवरी के अंक में **अंधे को आँख**[1], फरवरी में **जाल काका**[2], मार्च में **जाल राजा**[3], अप्रैल में **जासूस की चोरी**[4], मई में **हरिदास की गिरफ्तारी**[5], सितम्बर में **इन्द्रजालिक जासूस**[6], अक्टूबर में **माल गोदाम में चोरी**[7] तथा नव०-दिसं० के अंकों में **जाली बीबी और डाकू साहब**[8] नामक कथापुस्तकें प्रकाशित हुईं।[9] डॉ० गुप्त ने 'इन्द्रजालिक जासूस' का प्रकाशन-काल १९१० (?)[10] और 'जाली बीबी और डाकू साहब' का १९१४ ई० दिया है[11], जो भ्रामक है। डॉ० गुप्त के अनुसार १९०२ ई० में ही गहमरी जी का **गश्ती काका** नामक उपन्यास जासूस कार्यालय, गहमर, गाजीपुर मे प्रकाशित हुआ था।[12] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

इन उपन्यासों में से केवल 'जाली बीबी और डाकू साहब' की मौलिकता के विषय में मुझे सन्देह है; क्योंकि इस उपन्यास के घटनास्थल तो भारतीय हैं किन्तु पात्रों में से अधिकांश अंग्रेज हैं।

१९०२ ई० में ही गहमरी जी की **डबल बीबी**[13] नामक कथापुस्तक प्रकाशित हुई।

---

१. अन्धे को आँख, जासूस, वर्ष २, अंक ९, जनवरी १९०२, पृ० सं० ३५, प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी।

२. इस उपन्यास को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है। 'हरिदास की गिरफ्तारी' (जासूस, वर्ष ३, अंक १, मई १९०२ ई०) की सूचना से ज्ञात होता है कि 'अंधे को आँख' के बाद और 'जाल राजा' के पहले 'जाल काका' नामक उपन्यास छपा था। 'जाल काका' का प्रकाशन-काल इसी आधार पर निश्चित किया गया है।

३. जाल राजा, जासूस, वर्ष २, अंक ११, मार्च १९०२, पृ० सं० १८, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

४. जासूस की चोरी, जासूस, वर्ष २, अंक १२, अप्रील १९०२, पृ० सं० १५, प्राप्ति स्थान—चै० पु० तथा आ० भा० पु०।

५. हरिदास की गिरफ्तारी, जासूस, वर्ष ३, मई १९०२, पृ० सं० १७, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

६. इन्द्रजालिक जासूस, वर्ष ३, अंक ५, सितम्बर १९०२ ई०, पृ० सं० ५६, प्रा० स्था०—चै० पु०।

७. माल गोदाम में चोरी, जासूस, वर्ष ३, अंक ६, अक्तूबर १९०२ ई०, पृ० सं० ३७। प्राप्ति स्थान—चै० पु०, पटना।

८. जाली बीबी और डाकू साहब, जासूस, वर्ष ३, अंक ७-८, नवम्बर-दिसम्बर १९०२, पृ० सं० ११० प्राप्ति स्थान—चै० पु०, पटना।

९. १९०२ ई० के जासूस के जून-जुलाई और अगस्त के अंकों में 'मायावी' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ था, जो अनुवाद है।

१०. हि० पु० सा०, पृ० ४२७

११. उपरिवत्, पृ० ४२८।

१२. उपरिवत्।

१३. इस उपन्यास को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त (हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२६) के अनुसार यह उपन्यास १९०२ ई० में वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई

१९०३ ई० में 'जासूस' के जनवरी के अंक में **सती सोभना**[१], फरवरी में **जासूस पर जासूस**[२], मार्च में **डाक्टर की कहानी**,[३] अप्रील में **किले में खून**[४], जुलाई-अगस्त में **डाक पर डाका**[५] तथा सितम्बर में **घर का भेदी**[६] नामक कथाएँ प्रकाशित हुई।[७] 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में 'जासूस पर जासूस' के स्थान पर 'जासूस पर जासूसी', तथा 'डाक पर डाका' के स्थान पर 'डाके पर डाका' मुद्रित है, जो अशुद्ध है।[८] 'जासूस की जासूसी', 'डाक्टर की कहानी' तथा 'डाके पर डाका' का रचना-काल डॉ गुप्त ने १९०४ ई० और 'किले में खून' का रचना-काल १९१० (?) ई० दिया है[९], जो भ्रामक है।

इन पुस्तकों में 'डाक्टर की कहानी', 'किले में खून' तथा 'डाक पर डाका' की मौलिकता सदिग्ध प्रतीत होती है। कारण इन कथाओं में आये पात्रों और घटनास्थलों के नामों का बंगाली होना है।

'जासूस' के अक्टूबर १९०३ ई० से लेकर जुलाई १९०४ तक के १० अंकों में गहमरी जी की **चक्करदार चोरी** नामक कथा प्रकाशित हुई। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस कथा-पुस्तक की एक प्रति है, किन्तु उसके आरम्भिक पृष्ठों के फटे रहने के कारण प्रकाशन-काल आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।[१०] पर 'जासूस', अंक ६५, सितम्बर १९०५ ई० के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर 'जासूस' में छपे उपन्यासों की सूची दी हुई है, जिससे पता चलता है कि 'जासूस' के अंक ४२ से लेकर ५१ तक में (अर्थात् अक्टूबर १९०३ से जुलाई १९०४) यह कथापुस्तक प्रकाशित हुई थी। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'चक्करदार चोरी' का रचना-काल १९०१ ई० दिया है, जो भ्रामक प्रतीत होता है।[११] पढ़ने पर इस कथा की मौलिकता भी संदिग्ध जान पड़ती है।

से प्रकाशित हुआ था।

१. सती सोभना, जासूस, वर्ष ३, अंक ९, जनवरी १९०३, पृ० सं० २१, प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी।

२. जासूस पर जासूस, जासूस, वर्ष ३, अंक १०, फरवरी १९०३ ई०, पृ० सं० ७४, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

३. डाक्टर की कहानी, जासूस, वर्ष ३, अंक ११, मार्च १९०३ ई०, पृ० सं० ४२, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

४. किले में खून, जासूस, वर्ष ३, अंक १२, अप्रील १९०३ ई०, पृ० सं० ६६, प्रा० स्था०—चै० पु०।

५. डाक में डाका, जासूस, वर्ष ४, अंक ३९-४०, जुलाई-अगस्त १९०३, पृ० सं० ६५, प्रा० स्था०—चै० पु०।

६. घर का भेदी, जासूस, वर्ष ४, अंक ४१, सितम्बर १९०३ ई०, पृ० सं० ५५, प्रा० स्था०—चै० पु०।

७. १९०३ ई० के 'जासूस' के मई और जून के अंकों में 'खूनी की खोज' और 'यारों की लीला', नामक उपन्यास छपे थे, जो अनुवाद हैं। द्रष्टव्य पृष्ठ ११।

८. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२७।

९. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२७।

१०. चक्करदार चोरी, पृ० सं० ४८२। प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

११. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२६।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९०३ ई० में गहमरी जी का **दो बहन** नामक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ था।[१] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसका रचना-काल सं० १९५९ वि० दिया है।[२] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

१९०४ ई० में 'जासूस' के अगस्त के अंक में **लड़का गायब**[३], सितम्बर-अक्टूबर में **केतकी की शादी**[४] तथा नवम्बर-दिसम्बर में **रूप संन्यासी**[५] नामक कथाएँ प्रकाशित हुई थीं। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने **केतकी की शादी** का रचना काल १९०१ (?) ई० दिया है,[६] जो भ्रामक है। उपर्युक्त पुस्तकों में 'केतकी की शादी' और 'रूप संन्यासी' दोनों की मौलिकता संदिग्ध प्रतीत होती है।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९०४ ई० में गहमरी जी की **देवी सिंह** नामक कथा-पुस्तक मैनेजर, जासूस, गहमर द्वारा प्रकाशित हुई।[७] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक-सूची के अनुसार यह पुस्तक १९०४ ई० में, पाँच भागों में, विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा, नेपाली खपरा, काशी से प्रकाशित हुई थी। पता नहीं, दोनों में से प्रकाशकसम्बन्धी कौन सूचना सही है। मैं इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा हूँ।

सन् १९०५ ई० में 'जासूस' के जनवरी-फरवरी अंक में **मेरी और मेरीना**,[८] मार्च अप्रैल में **लटकती लाश**,[९] जून में **सुमित्रा देवी**,[१०] अक्टूबर में **कोचवान का खून**,[११] नवम्बर में **हम हवालात में**[१२] और दिसम्बर में **खूनी गायब**[१३] नामक कथाएँ प्रकाशित हुई[१४]।

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ४२७
२. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ४६७
३. लड़का गायब, जासूस, वर्ष ५, अंक ५५, अगस्त १९०४ ई०, पृ० सं० ३८, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
४. केतकी की शादी, वर्ष ५, अंक ५३-५४, सितम्बर-अक्तूबर १९०४, पृ० सं० ८४ (३९-१२३), प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
५. रूप संन्यासी, जासूस, वर्ष ५, अंक ५५-५६, नवम्बर-दिसम्बर १९०४, पृ० सं० ८८, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
६. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४१७।
७. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२७
८. मेरी और मेरीना, जासूस, वर्ष ५, अंक ५७-५८, जनवरी-फरवरी १९०५, पृ० सं० ६६, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
९. लटकती लाश, जासूस, वर्ष ५, अंक ५९-६०, मार्च-अप्रील १९०५, पृ० सं० ६४, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
१०. सुमित्रा देवी, जासूस, वर्ष ६, अंक ६२, जून १९०५, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
११. कोचवान का खून, जासूस, वर्ष ६, अंक ६६, अक्तूबर १९०५, पृ० सं० २४, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
१२. हम हवालत में, जासूस, वर्ष ६, अंक ६७, नवम्बर १९०५, पृ० सं० २४, प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी।
१३. खूनी गायब, जासूस, वर्ष ६, अंक ६८, दिसम्बर १९०५, पृ० सं० ३८, प्रा० स्था०—चै० पु०।
१४. १९०५ के 'जासूस' के मई, जुलाई, अगस्त और सितम्बर के अंकों में क्रमशः 'कपट रूपवाला' और 'गोविन्द राम' नामक उपन्यास प्रकाशित हुए थे।

डॉ०गुप्त ने इनसे किसी भी पुस्तक का उल्लेख नहीं किया है। इन पुस्तकों में 'मेरी और मेरीना' की मौलिकता संदिग्ध प्रतीत होती है।

१९०६ ई० में 'जासूस' के जनवरी अंक में **खूनी गिरफ्तार**[१] नामक कथा प्रकाशित हुई। सन् १९०७ ई० में 'जासूस' के मार्च अंक में **साहब जासूस** और **विकट खूनी**,[२] अप्रील-मई में **वजीरन बीबी**[३], जून-जुलाई-अगस्त में **जय-पराजय**[४] और सितम्बर-नवम्बर में **कटा सिर**[५] नामक कथाएँ प्रकाशित हुईं।[६] फरवरी १९०७ के अंक में गहमरी जी का **ठगों का ठाट** नामक कहानी-संग्रह (छोटी छोटी अपराधप्रधान घटनाओं का संग्रह) प्रकाशित हुआ था। इसमें **'रंगीला ठग'**, **'बहादुर ठग'**, **'फकीर'**, **'भभूतिया बाबा'** और **'साहब ठग'** नामक पाँच लघु घटनाओं का वर्णन किया गया है। इनमें से कोई भी घटना सात पृष्ठों से अधिक में समाप्त नहीं हुई है। 'साहब जासूस' को भी कहानी कहना ज्यादा अच्छा है। इसमें भी केवल सात पृष्ठों में एक जासूसी घटना का वर्णन किया गया है।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने उपर्युक्त कथापुस्तकों में से केवल 'कटा सिर' का उल्लेख किया है, पर उन्होंने उसका रचना-काल नहीं बताया है।[७] उपर्युक्त पुस्तकों में 'जय पराजय' की मौलिकता मुझे संदिग्ध प्रतीत होती है।

'जासूस', दिसम्बर १९०७ से लेकर अप्रील १९०८ तक के ५ अंकों में गहमरी जी की **प्रतिज्ञा पालन** नामक कथा प्रकाशित हुई।[८] यद्यपि इस पुस्तक के अनुवाद होने का संकेत कहीं नहीं मिलता पर इसके पात्रों, घटनास्थलों और घटनाओं को पढ़कर इसके अनुवाद होने का अनुमान दृढ़ होता है।[९]

---

१. खूनी गिरफ्तार, जासूस, वर्ष ६, अंक ६६, जनवरी १९०६ ई०, पृ० सं० ३०, प्राप्ति स्थान—चौ पु०।

२. (१) साहब जासूस (२) विकट खूनी, जासूस, वर्ष ७, अंक ८३, मार्च १९०७, पृ० सं० क्रमशः ७ और २९; प्राप्ति स्थान—चौ० पु०।

३. वजीरन बीबी, जासूस, वर्ष ७, अंक ८४, वर्ष ८, अंक ८५, अप्रील-मई १९०७, पृ० सं० ६५, प्राप्ति स्थान—चौ० पु०।

४. जय पराजय, जासूस, वर्ष ८, अंक ८६-८८, जून-अगस्त १९०७, पृ० सं० १३५, प्राप्ति स्थान—चौ० पु०।

५. कटा सिर, जासूस, वर्ष ८, अंक ८९-९१, सितम्बर-नवम्बर १९०७, पृ० सं० १२९, प्राप्ति स्थान—चौ० पु०।

६. जासूस के जनवरी-अक्तूबर १९०६ के अंकों में 'अद्भुत खून' तथा नवम्बर १९०६ से लेकर जनवरी १९०७ के अंकों में 'जासूस चक्कर में' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ था। ये दोनों उपन्यास अनुवाद हैं।

फरवरी १९०७ में प्रकाशित 'ठगों का ठाट' उपन्यास न होकर अपराधप्रधान कहानियों का संग्रह है।

७. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०९।

८. प्रतिज्ञा पालन, जासूस, वर्ष ८, अंक ९२-९६, दिसम्बर १९०७, अप्रील १९०८ ई०, पृ० सं० २३१

९. जासूस के मई-अगस्त १९०८ के अंकों में 'विलायती जासूस' और सितम्बर-नवम्बर १९०८ के

दिसम्बर १९०८ के 'जासूस' में लाश किसकी है नामक कथा प्रकाशित हुई।[१]

सन् १९०९ ई० के 'जासूस' फरवरी के अंक में मरियम,[२] मार्च में विफल प्रयास,[३] मार्च-अप्रील में लीलाधर का खून,[४] अप्रील में गुप्त फोटू तथा हीरों का कंठा[५] नामक कथाएँ प्रकाशित हुई थीं।[६] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इनमें से किसी का भी उल्लेख नहीं किया है। इन उपन्यासों में 'विफल प्रयास', 'लीलाधर खून' तथा 'गुप्त फोटू' की मौलिकता इस कारण सन्दिग्ध जान पड़ती है कि इनमें जासूस गोविन्दराम तथा अन्य बंगाली पात्रों की बहुलता दिखायी पड़ती है।

सन् १९१० ई० में 'जासूस' के अप्रील अंक में केंचुए के बिल में साँप[७], नवम्बर अंक में त्रिवेणी[८] तथा दिसम्वर अंक में विन्दा[९] नामक कथाएँ प्रकाशित हुई थीं।[१०] डॉ० ने इनमें से किसी का भी उल्लेख नहीं किया है।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९१० ई० में गहमरी जी का खूनी का भेद नामक उपन्यास 'जासूस', गहमर, गाजीपुर से प्रकाशित हुआ था।[११] पर डा० गुप्त के ही अनुसार गहमरी जी के जिन उपन्यासों की ठीक तिथियाँ ज्ञात नहीं हैं, उनमें 'खूनी का भेदी' नामक उपन्यास भी है।[१२] डा० गुप्त की पुस्तक (हिन्दी पुस्तक साहित्य) में प्राप्त इस

अंकों में 'लाख रुपया' नामक उपन्यास प्रकाशित हुए थे। दोनों अनुवाद हैं। (द्रष्टव्य पृ० १४)।

१. लाश किसकी है, जासूस, वर्ष ९, अंक १०४, दिसम्बर १९०८ ई०, पृ० ४४, प्रा० स्था० चै० पु०।

२. मरियम, जासूस, भाग ९, सं० १०६, फरवरी १९०९, पृ० सं० ५४, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

३. विफल प्रयास, जासूस, वर्ष ९, अंक १०७, मार्च १९०९, पृ० सं० २१, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

४. लीलाधर का खून, जासूस, वर्ष ९, अंक १०७-१०८, मार्च-अप्रील १९०९, पृ० सं० १-१३, १४-१७, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

५. जासूस, वर्ष ९, अंक १०८, अप्रील १९०९, गुप्त फोटू, पृ० सं० २४, हीरों का कंठा, पृ० सं० १५। प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

६. जासूस के १९०९ ई० के जनवरी के अंक में 'आँखों देखी घटना', मई जून के अंक में 'खूनी का भेद', जुलाई अंक में 'शठ शिरोमणि', सितम्बर के अंक में 'चिट्ठी की चोरी' और 'वैरी का चक्र,' सितम्बर अक्टूबर के अंक में 'रमणी रहस्य,' अक्टूबर के अंक में 'सर्व्वनाशिनी' और अक्टूबर १९०९ से फरवरी १९१० तक के अंकों में 'लाइन पर लाश' नामक उपन्यास प्रकाशित हुए। ये सभी अनुवाद हैं।

७. केंचुए के बिल में साँप, जासूस, भाग १०, सं० १२०, अप्रील १९१० ई०, पृ० सं० ३७, प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी।

८. त्रिवेणी, जासूस, वर्ष ११, अंक १२७, नवम्बर १९१०, पृ० सं० ४१, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

९. विन्दा, 'जासूस,' वर्ष ११, अंक १२८, दिसम्बर १९१०, पृ० सं० १४, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

१०. १९१० ई० के 'जासूस' के मार्च अंक में 'भयंकर भूल' तथा 'सफेद ठग', जून-सितम्बर के अंकों में 'मृत्यु विभीषिका' तथा 'सूम का मंत्र', अक्तूबर के अंक में 'देव टीका समाज' और 'खून का चक्र' तथा दिसम्बर १९१०—जुलाई १९११ के अंकों में 'अद्भुत जासूस' नामक उपन्यास प्रकाशित हुए थे। ये सभी अनुवाद हैं।

११. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४१७।

१२. उपरिवत्, पृ० १०९।

स्वतोव्याघात दोष का कारण समझ में नहीं आता। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त कर पाने में असमर्थ सिद्ध हुआ है। मई १९१४ ई० के 'जासूस' के अंक में 'खूनी का भेद' का एक विज्ञापन छपा है, जिससे उसकी कथावस्तु तथा पृष्ठसंख्या का पता चलता है।

सन् १९११ ई० में 'जासूस' के जुलाई अंक में **हत्या,**[1] अगस्त में **कृष्णा**[2] तथा सितम्बर-नवम्बर में **योग महिमा**[3] नामक कथाएँ प्रकाशित हुई थीं। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'हत्या' और 'कृष्णा' दोनों का उल्लेख एक पुस्तक 'हत्या और कृष्णा' के रूप में किया है। सम्भव है, इसके दूसरे संस्करण में गहमरी जी ने दोनों को एक नाम से प्रकाशित किया हो। 'हत्या' में एक माँ की कहानी है और 'कृष्णा' में उसी की वेटी कृष्णा की, अतः इन्हें मिलाकर एक कथापुस्तक भी कहा जा सकता है। इसके द्वितीय संस्करण का प्रकाशन-काल डा० गुप्त ने १९१२ वताया है।[4] प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इन पुस्तकों का दूसरा संस्करण नहीं प्राप्त हो सका है; अतः इनके प्रकाशन-काल के सम्वन्ध में कुछ कहना कठिन है। डॉ० गुप्त ने 'योग महिमा' का प्रकाशन-काल १९१२ ई० वताया है, जो अशुद्ध है।[5] आर्यभाषा पुस्तकालय में 'योग महिमा' का एक अन्य संस्करण भी उपलब्ध है, जो चन्द्रप्रभा प्रेस, काशी में मुद्रित वताया गया है, पर संस्करण या प्रकाशन-काल सम्वन्धी कोई सूचना नहीं दी हुई है। अनुमानतः 'जासूस' के ही वचे हुए अंकों पर नया आवरणपृष्ठ और मुखपृष्ठ लगाकर यह संस्करण तैयार कर दिया गया है।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९११ ई० में ही गहमरी जी की **भोजपुर की ठगी** नामक कथापुस्तक उपन्यास वहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुई थी।[6] इस कथापुस्तक की एक प्रति चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी में है, पर उसके मुखपृष्ठ पर अन्य सूचनाएँ तो हैं, प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।[7] १९१२ ई० में प्रकाशित 'नवाव नन्दिनी वा आयशा'[8] के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर इस उपन्यास का एक विज्ञापन छपा है जिससे इतना निश्चित हो जाता है कि १९१२ ई० के पहले यह उपन्यास छपा होगा। इसी प्रकार जनवरी १९११ ई० में प्रकाशित 'जहर का प्याला वा राजराजेश्वरी' (ले० जयरामदास)

---

१. हत्या, जासूस, जुलाई-अगस्त १९११, पृ० सं० २८, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
२. कृष्णा, जासूस, अगस्त १९११, पृ० सं० ३८, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
३. योग महिमा, जासूस, वर्ष १२, अंक १३७-१३९, सितम्वर-नवम्वर १९११ ई०, पृ० सं० ११०, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
४. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२७।
५. उपरिवत्, पृ० ४२८।
६. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२७।
७. प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी, मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना—भोजपुर की ठगी (अपूर्व जासूसी उपन्यास) गहमर निवासी श्री गोपाल राम लिखित जिसे अपने उपन्यास ग्रन्थ माला के प्रेमियों के लिये उपन्यास वहार आफिस के मालिक राजघाट काशी निवासी वावू जयराम दास ने प्रकाशित किया। प्रथम वार ११००।
८. ले० दामोदर मुखोपाध्याय, अनु० ईश्वरी प्रसाद शर्म्मा।

के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर निम्नलिखित विज्ञापन छपा हुआ है—"उपन्यास ग्रन्थमाला में प्रसिद्ध उपन्यास लेखक बाबू गोपाल राम लिखित "भोजपुर की ठगी" नामक उपन्यास निकलेगा"। इस विज्ञापन से सिद्ध होता है कि 'भोजपुर की ठगी' जनवरी १९११ ई० के बाद ही प्रकाशित हुआ होगा। डॉ० गुप्त ने जो प्रकाशन-काल (१९११ ई०) दिया है, वह ठीक प्रतीत होता है।

'जासूस' के नवम्बर १९११ ई० से ले कर अप्रील १९१२ ई० तक के ६ अंकों में **हत्या रहस्य** नामक कथा प्रकाशित हुई।[१]

सन् १९१२ ई० में 'जासूस' के अप्रील-मई के अंकों में **बलिहारी बुद्धि**,[२] और अगस्त--अक्तूबर के तीन अंकों में **नेमा**[३] नामक कथाएँ प्रकाशित हुई।[४] डॉ० गुप्त ने 'बलिहारी बुद्धि' के प्रकाशक का नाम मीठा लाल ब्यावर, राजपुताना बताया है।[५] पता नहीं, यह कोई दूसरा संस्करण है, या सूचना ही गलत है। मैंने मीठा लाल द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास का कोई संस्करण नहीं देखा है। 'नेमा' का रचनाकाल डॉ० गुप्त ने १८९४ ई० दिया है,[६] जो पता नहीं, कहाँ तक ठीक है।[७] इन उपन्यासों में 'नेमा' स्पष्टतः अनुवाद प्रतीत होता है, यद्यपि स्वयं गहमरी जी ने इसे कहीं स्वीकार नहीं किया है। इस कथा के पात्र, घटनास्थल और घटनाएँ सभी इसके अनुवाद होने का अनुमान दृढ़ करते हैं।

'जासूस' के नवम्बर १९१२ से लेकर जनवरी १९१३ तक के अंकों में गहमरी जी की **अर्थ का अनर्थ** नामक कथा प्रकाशित हुई।[८] डॉ० गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९१३ ई० देने के साथ-साथ इसे "वस्तुप्रधान सामाजिक उपन्यास" माना है,[९] किन्तु गहमरी जी की यह पुस्तक भी उनकी अन्य कथापुस्तकों की तरह अपराधप्रधान या जासूसी कथा है।

सन् १९१३ ई० में 'जासूस' के फरवरी अंक में **खूनी को रिहाई**[१०] तथा मार्च-मई

---

१. हत्या रहस्य, जासूस, वर्ष १२, अंक १३९-१४४, नवम्बर १९११-अप्रील-१९१२, पृ० सं०२४६, प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी।
२. बलिहारी बुद्धि, जासूस, अप्रील-मई १९१२, पृ० सं० ४२, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
३. नेमा, जासूस, वर्ष १३, अंक १४८-१५०, अगस्त-अक्तूबर, १९१२, पृ० सं० ७७, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।
४. 'जासूस' के मई–अगस्त १९१२ के अंकों में क्रमशः 'विद्यासागर विद्रोह', 'सहधर्मिणी' और 'पिशाच पिता' तथा अक्तूबर–नवम्बर १९१२ के अंकों में 'मरे हुए की मौत' उपन्यास प्रकाशित हुए थे। ये अनुवाद हैं।
५. हिन्दी पुस्तक साहित्य, ४२८।
६. उपरिवत्, पृ० २८।
७. द्रष्टव्य, प्रस्तुत निबन्ध, पृ० ७।
८. अर्थ का अनर्थ, जासूस, वर्ष १३, अंक १५१-१५३, नवम्बर, १९१२-जनवरी १९१३ ई०, पृ० सं० ६५, प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, पटना सिटी।
९. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०४।
१०. खूनी को रिहाई, जासूस, फरवरी १९१३ ई०, पृ० सं० ४०, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

के अंकों में **भयंकर जाल या जोड़ा जासूस**[१] नामक कथाएँ प्रकाशित हुईं ।[2] गहमरी जी की 'जोड़ा जासूस' नामक एक कथापुस्तक मई १९०० ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुकी थी ।[3] सम्भव है उसी कथा को गहमरी जी ने पुन: 'जासूस' के इन अंकों में प्रकाशित किया हो ।

'जासूस', भाग १५, अंक १६९ (मई १९१४) में गहमरी जी की **केशिनी बाई** नामक कथापुस्तक का विज्ञापन निम्नलिखित रूप में दिया गया है—"यह एक जालसाज स्त्री की चक्करदार घटना है । और साथ ही एक दागी बदमाश का अकल चकराने वाला साहस पढ़ने ही योग्य है ।" 'भयंकर जाल या जोड़ा जासूस' में केशिनी बाई नाम की एक पात्री है तथा इसकी कथा भी 'केशिनी बाई' के विज्ञापन से मिलती जुलती है । सम्भव है, कि केशिनी गहमरी जी का कोई स्वतन्त्र उपन्यास न होकर 'भयंकर जाल या जोड़ा जासूस' का ही नामांतरण हो । मैं इस विज्ञापित उपन्यास को प्राप्त नहीं कर सका हूँ । 'वे बादल का वज्र' (प्रकाशन-काल दिसम्बर १९१३--जनवरी १९१४) के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर गहमरी जी के '**घटना घटाटोप-तस्वीरदार जासूस**' का एक विज्ञापन है, जिससे पता चलता है कि यह 'वे बादल का वज्र' के निकट अतीत में, अर्थात् १९१३ ई० में, प्रकाशित हुआ होगा ।[४]

'जासूस' के दिसम्बर १९१३ और जनवरी १९१४ के अंकों में गहमरी जी की '**वे बादल का वज्र**' नामक कथापुस्तक प्रकाशित हुई ।[५] पुस्तक रूप में यह कथा १९१४ में प्रकाशित हुई । प्रथम बार इसकी १००० प्रतियाँ छपी थीं । सम्भव है, 'जासूस' के ही अंकों पर नया आवरणपृष्ठ और मुखपृष्ठ लगाकर नयी पुस्तक तैयार कर ली गयी हो ।[६]

सन् १९१३ ई० में ही गहमरी जी की **गुप्तभेद** नामक कथापुस्तक वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुई ।[७]

---

१. भयंकर जाल जोड़ा जासूस, जासूस मार्च-मई, १९१३, पृ० सं० १३४, प्राप्ति स्थान—चौ० पु० ।

२. जासूस के जून-अगस्त १९१३ ई० के तीन अंकों में 'पान का नहला' नामक उपन्यास छपा था । यह अनुवाद है । सितम्बर-नवम्बर १९१३ के तीन अंकों में 'वनवीर नाटक' नामक एक नाटक प्रकाशित हुआ था । (द्रष्टव्य नवम्बर १९१३ का अंक, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी)

३. द्रष्टव्य, पृ० १०१ ।

४. "जासूस सम्पादक का लिखा यह उपन्यास अभी तैयार होकर आया है । पुस्तक बड़े बड़े ४०० पन्नों में पूरी हुई है ।"

५. वे बादल का वज्र, जासूस, भाग २, वर्ष १४, अंक १६५, जनवरी १९१४, पृ० सं० ४७—८६, प्राप्ति स्थान—चौ० पु० ।

६. वे बादल का वज्र, चन्द्रप्रभा प्रेस, काशी में मुद्रित और मैनेजर, जासूस, गहमर (गाजीपुर) द्वारा प्रकाशित, १९१४ ई०, पृ० सं० ८६, प्राप्ति स्थान—चौतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी ।

७. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र० स०, काशी ।—मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचनाएँ-गुप्तभेद (जासूसी उपन्यास) बाबू गोपाल राम गहमर निवासी रचित जिसको खेमराज श्रीकृष्ण दास ने बम्बई, खेतवाड़ी, ७वीं गली खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम मुद्रण यन्त्रालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया । सम्वत् १९६९, पृ० सं० २७,

सन् १९१४ ई० में 'जासूस' के फरवरी अंक में **मत्तो और पत्तो** नामक कथापुस्तक का पहला भाग प्रकाशित हुआ।[१] इस वर्ष के 'जासूस' के मार्च और अप्रैल के अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध नहीं हो सके हैं, पर आर्यभाषा पुस्तकालय में इस पुस्तक का एक अन्य संस्करण, जिसमें प्रकाशन-काल आदि कुछ नहीं दिया गया है,[२] उपलब्ध है, जिसकी पृष्ठसंख्या १३५ है। पृष्ठसंख्या देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'मत्तो और पत्तो' कम से कम 'जासूस' के तीन अंकों में, फरवरी-अप्रील १९१४ में, प्रकाशित हुआ होगा।

सन् १९१४ ई० में ही 'जासूस' के मई अंक में **जासूस का झोपड़ा**[३], मई-जून के अंकों में **जासूस की ऐयारी**[४] एवं **अटल प्रतिज्ञा**[५] तथा जुलाई-सितम्बर के अंकों में **जासूस की बुद्धि**[६] नामक कथाएं प्रकाशित हुईं।[७] 'अटल प्रतिज्ञा' तथा 'जासूस की बुद्धि' के पुस्तक संस्करण भी प्रकाशित हुए थे।[८]

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९१४ ई० में गहमरी जी का **प्रेम मूल** नामक 'वस्तु प्रधान उपन्यास' प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सन् १९१५ ई० के 'जासूस' के फरवरी और मार्च के अंकों में **तीन जासूस** के प्रथम दो भाग प्रकाशित हुए।[९] अप्रील-मई १९१५ ई० के 'जासूस' के अंक मुझे नहीं प्राप्त हो सके हैं। सम्भव है, इन अंकों में उपर्युक्त कथा के ही शेष भाग प्रकाशित हुए हों।

---

१. मत्तो और पत्तो—१, जासूस, वर्ष १४, अंक १६६, फरवरी १९१४, पृ० सं० ४८, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०।

२. मत्तो पत्तो, एक रंग रूप के दो मर्दों का भयंकर जाल (बड़ी विकट घटनाओं का जमघट), श्रीगोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित, जासूस से उद्धृत, पृ० सं० १३२, प्रा० स्था०—आ० भा० पु०।

३. जासूस का झोपड़ा, जासूस, वर्ष १५, अंक १६९, मई १९१४, प्राप्ति स्थान—चौ० पु०।

४. जासूस की ऐयारी, जासूस, मई-जून १९१४, पृ० सं० ८२, प्रा० स्था०—चौ० पु०।

५. मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना-अटल प्रतिज्ञा, जासूस, जून सन् १९१४ से उद्धृत, श्रीगोपाल राम गहमर निवासी लिखित, काशी, चन्द्रप्रभा प्रेस, से मुद्रित, पहली बार २०००, सन् १९१४ ई०, पृ० सं० ११। प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०।

६. जासूस की बुद्धि, जासूस, वर्ष १५, अंक १७१-१७३, जुलाई-सितम्बर, १९१४, पृ० सं० १८३, प्रा० स्था०—चौ० पु० तथा आ० भा० पु०।

७. अक्तूबर-दिसम्बर, १९१४ तथा जनवरी, १९१५ ई० के 'जासूस' के तीन अंक मुझे उपलब्ध नहीं हो सके हैं। न ही किसी दूसरे प्रमाण से ज्ञात हो पाया है कि इन अंकों में कौन सा उपन्यास निकला था।

८. चैतन्य पुस्तकालय, पटना सिटी में 'जासूस की बुद्धि' की एक प्रति है, जिसमें प्रकाशनकाल आदि नहीं दिया हुआ है। इसे 'चन्द्रप्रभा प्रेस से मुद्रित' तथा 'जासूस मासिक पत्र से उद्धृत' बताया गया है। यह भी ज्ञात होता कि पहली बार इसकी १५०० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं।

९. तीन जासूस—१, जासूस, वर्ष १५, अंक १७८, फरवरी, १९१५ ई०, पृ० सं० १-६४; तीन जासूस—२, जासूस, वर्ष १५, अंक १७८, मार्च, १९१५ ई०, पृ० सं० ६५-१२६। प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी।

सन् १९१५ ई० में 'जासूस' के जून अंक में **मुहम्मद सरवर की जासूसी**[1], जुलाई अंक मे **घड़े में थाली**[2] तथा अगस्त में **लँगड़े की सैर**[3], नामक कथाएँ प्रकाशित हुईं।

'जासूस' के अगस्त १९१५ से लेकर फरवरी १९१६ तक के अंकों में **चक्करदार खून** नामक कथा प्रकाशित हुई। मैं 'जासूस' के इन अंकों में से केवल दो, अगस्त १९१५ और दिसम्बर १९१५ के अंक, देख पाया हूँ।[4] अगस्त के अंक में, प्रथम १० पृष्ठों में, **'लँगड़े की सैर'** प्रकाशित हुआ है और उसके बाद पृष्ठ १-४७ में 'चक्करदार खून'। दिसम्बर १९१५ में 'चक्करदार खून' का पाँचवाँ भाग प्रकाशित हुआ है, पर उसके साथ **हीरे की धुकधुकी** और **लंगट बाबा** नाम की छोटी-छोटी अपराध सम्बन्धी दो घटनाएँ भी, कदाचित् पृष्ठ पूरा करने के लिए, जोड़ दी गयी हैं। इधर मुझे चैतन्य पुस्तकालय में 'चक्करदार खून' की एक प्रति प्राप्त हुई है[5] जो 'काशी चन्द्रप्रभा प्रेस में मुद्रित' तथा "बाबू गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित और प्रकाशित" है। इस प्रति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, किन्तु इसके १ से लेकर ४७ तक के प्रत्येक पृष्ठ पर १ अगस्त १९१५ ई०, ४८ से ९९ तक के पृष्ठों पर १ सितम्बर १९१५ ई०, १०० से १३१ तक के पृष्ठों पर १ अक्टूबर १९१५ ई०, १३२ से १६१ तक के पृष्ठों पर १ नवम्बर १९१५ ई०, १६२ से २०० तक के पृष्ठों पर १ दिसम्बर १९१५ ई०, २०१ से २४५ तक के पृष्ठों पर १ जनवरी १९१६ ई० और २४६ से २९९ तक के पृष्ठों पर १ फरवरी १९१६ ई० लिखा हुआ है। इससे स्पष्ट है कि 'जासूस' के जिन अंकों में 'चक्कर दार खून' छपा था और जो बिक न पाये उन्हीं के पन्नों को एक साथ जिल्द में बाँध कर और नया आवरणपृष्ठ तथा मुखपृष्ठ लगा कर यह पुस्तक-संस्करण तैयार कर लिया गया है। 'जासूस' के उपर्युक्त अंकों की पृष्ठ संख्या देखने से अनुमान होता है कि अक्टूबर और नवम्बर १९१५ के अंकों में 'चक्करदार खून' के साथ एक एक जासूसी घटना अवश्य छपी पर उन अंकों को प्राप्त न कर पाने के कारण निश्चयपूर्वक कुछ कहना कठिन है।

'चक्करदार खून' जासूस के अंकों में अकेले नहीं प्रकाशित हुआ था, बल्कि उसके साथ प्रत्येक अंक में एक छोटा उपन्यास, या कहानी (जो कहें), भी प्रकाशित होती थी। एवं विधि अगस्त १९१५ में **लँगड़े की सैर** (पृष्ठ संख्या १०), सितम्बर १९१५ में **थानेदार को थप्पड़** (पृ० सं० १६), अक्टूबर १९१५ में **चोर की बुद्धि** (पृ० सं० २२), नवम्बर १९१५ में **लंगटू बाबा** (पृ० सं० १३), दिसम्बर १९१५ में **हीरे की धुकधुकी** (पृ० सं० १६), जनवरी १९१६ में **माता** (पृ० सं० १८) और फरवरी १९१६ में **सन्देह भंजन**

---

१. मुहम्मद सरवर को जासूसी, जासूस, जून १९१५ ई०, पृष्ठ संख्या-४२, प्रा० स्था--आ० भा० पु०।

२. घड़े में थाली, जासूस, जुलाई १९१५, पृ० सं० ५२, प्रा० स्था०—आ० भा० पु०।

३. लंगड़े की सैर, जासूस, वर्ष १६, अंक १८४, अगस्त १९१५, पृ० सं० १०, प्रा० स्था—आ० भा० पु०।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०।

५. चक्करदार खून [एक विकट जासूसी उपन्यास] (जासूसवू मासिक से उद्धृत) बा गोपाल राम

(पृ० सं० १९) नामक कथाएँ प्रकाशित हुई थीं। और जिस प्रकार 'जासूस के अगस्त १९१५ से फरवरी १९१६ तक के अंकों को मिला कर 'चक्करदार खून' का पुस्तक संस्करण तैयार किया गया, उसी प्रकार जून १९१५ से फरवरी १९१६ तक के अंकों में प्रकाशित छोटी-छोटी अपराधप्रधान कथाओं को एक साथ संकलित कर 'जासूस की डाली' नामक पुस्तक तैयार की गयी। यह पुस्तक आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी के द्विवेदी संग्रह में उपलब्ध है। उसके मुखपृष्ठ से उपर्युक्त कथाओं का रचना-काल ज्ञात होता है।[1] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'जासूस की डाली' का रचना-काल १९१७ दिया है, जो भ्रामक प्रतीत होता है।

'जासूस' के मार्च १९१६ से लेकर अगस्त १९१६ तक के अंकों में 'ठन ठन जासूस' नामक कथाप्रकाशित हुई।[2] यही कथा १९३४ ई० में 'ठन ठन गोपल' शीर्षक से पुन: प्रकाशित हुई।[3]

सितम्बर १९१६ से लेकर जून १९१७ तक के 'जासूस' के अंक मुझे प्राप्त नहीं हो सके हैं। अत: इन अंकों में कौन कथापुस्तकें प्रकाशित हुई इसका पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। किसी अन्य प्रमाण से भी पता नहीं चल सका है कि इन अंकों में कौन कौन उपन्यास प्रकाशित हुए थे।

'जासूस' वर्ष १८, अंक २०७, जुलाई १९१७ में **कुन्दन लाल** नामक कथा का पहला भाग प्रकाशित हुआ।[4] आर्यभाषा पुस्तकालय में गहमरी लिखित 'कुन्दन लाल' नामक एक पुस्तक है, पर उसका आरम्भिक पृष्ठ, जिस पर प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल आदि से सम्बद्ध सूचनाएँ रहती हैं, गायब है। यह कथापुस्तक २७७ पृष्ठों में छपी है, जिससे अनुमान होता है कि यह 'जासूस' के कम से कम ६ अंकों में छपी होगी। पर सितम्बर १९१७ के 'जासूस' के अंक से गहमरी जी की **परिचय** नामक कथा छपनी शुरु हो गयी थी,

---

गहमर निवासी सम्पादित और प्रकाशित, काशी चन्द्रप्रभा प्रेस, में मुद्रित, पृ० सं० २६६।

१. जासूस की डाली (सन १९१५ और १९१३ ई० में प्रकाशित छोटे छोटे मामलों का संग्रह), श्रीगोपाल राम गहमर निवासी संपादित।(जासूस से उद्धृत), प्रा० स्था०—आ० भा० पु०।

२. जासूस, वर्ष १६, अंक १०१, मार्च १९१६, का अंक आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है। इसके एक से लेकर ५९ पृष्ठों में 'ठन ठन जासूस' प्रकाशित है। मार्च के बाद वाले 'जासूस' के अंक मुझे उपलब्ध नहीं हो सके हैं। पर आर्यभाषा पुस्तकालय में 'ठन ठन जासूस' का एक पुस्तक संस्करण है, जिसे "श्रीगोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित जासूस से उद्धृत" और "काशी चन्द्रप्रभा प्रेस से मुद्रित" बताया गया है। इसका प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है पर प्रत्येक पृष्ठ में छपी तिथियों से ज्ञात होता है कि यह 'जासूस' के मार्च–अगस्त १९१६ के अंकों में प्रकाशित हुआ था।

३. ठनठन गोपाल, एक अनोखी, भेद भरी विकट घटना, श्रीगोपाल राम गहमर निवासी संपादित, जासूस से उद्धृत, सन् १९३४ ई०, पृ० सं० ३१७, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०।

सन् १९१५ ई० में 'जासूस' के जून अंक में **मुहम्मद सरवर की जासूसी**[1], जुलाई अंक में **घड़े में थाली**[2] तथा अगस्त में **लँगड़े की सैर**[3], नामक कथाएँ प्रकाशित हुईं।

'जासूस' के अगस्त १९१५ से लेकर फरवरी १९१६ तक के अंकों में **चक्करदार खून** नामक कथा प्रकाशित हुई। मैं 'जासूस' के इन अंकों में से केवल दो, अगस्त १९१५ और दिसम्बर १९१५ के अंक, देख पाया हूँ।[4] अगस्त के अंक में, प्रथम १० पृष्ठों में, **'लँगड़े की सैर'** प्रकाशित हुआ है और उसके बाद पृष्ठ १-४७ में 'चक्करदार खून'। दिसम्बर १९१५ में 'चक्करदार खून' का पाँचवाँ भाग प्रकाशित हुआ है, पर उसके साथ **हीरे की धुकधुकी** और **लंगट बाबा** नाम की छोटी-छोटी अपराध सम्बन्धी दो घटनाएँ भी, कदाचित् पृष्ठ पूरा करने के लिए, जोड़ दी गयी-हैं। इधर मुझे चैतन्य पुस्तकालय में 'चक्करदार खून' की एक प्रति प्राप्त हुई है[5] जो 'काशी चन्द्रप्रभा प्रेस में मुद्रित' तथा "बाबू गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित और प्रकाशित" है। इस प्रति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, किन्तु इसके १ से लेकर ४७ तक के प्रत्येक पृष्ठ पर १ अगस्त १९१५ ई०, ४८ से ९९ तक के पृष्ठों पर १ सितम्बर १९१५ ई०, १०० से १३१ तक के पृष्ठों पर १ अक्टूबर १९१५ ई०, १३२ से १६१ तक के पृष्ठों पर १ नवम्बर १९१५ ई०, १६२ से २०० तक के पृष्ठों पर १ दिसम्बर १९१५ ई०, २०१ से २४५ तक के पृष्ठों पर १ जनवरी १९१६ ई० और २४६ से २९९ तक के पृष्ठों पर १ फरवरी १९१६ ई० लिखा हुआ है। इससे स्पष्ट है कि 'जासूस' के जिन अंकों में 'चक्करदार खून' छपा था और जो बिक न पाये उन्हीं के पन्नों को एक साथ जिल्द में बाँध कर और नया आवरणपृष्ठ तथा मुखपृष्ठ लगा कर यह पुस्तक-संस्करण तैयार कर लिया गया है। 'जासूस' के उपर्युक्त अंकों की पृष्ठ संख्या देखने से अनुमान होता है कि अक्टूबर और नवम्बर १९१५ के अंकों में 'चक्करदार खून' के साथ एक एक जासूसी घटना अवश्य छपी पर उन अंकों को प्राप्त न कर पाने के कारण निश्चयपूर्वक कुछ कहना कठिन है।

'चक्करदार खून' जासूस के अंकों में अकेले नहीं प्रकाशित हुआ था, बल्कि उसके साथ प्रत्येक अंक में एक छोटा उपन्यास, या कहानी (जो कहें), भी प्रकाशित होती थी। एवं विधि अगस्त १९१५ में **लँगड़े की सैर** (पृष्ठ संख्या १०), सितम्बर १९१५ में **थानेदार को थप्पड़** (पृ० सं० १६), अक्टूबर १९१५ में **चोर की बुद्धि** (पृ० सं० २२), नवम्बर १९१५ में **लंगटू बाबा** (पृ० सं० १३), दिसम्बर १९१५ में **हीरे की धुकधुकी** (पृ० सं० १६), जनवरी १९१६ में **माता** (पृ० सं० १८) और फरवरी १९१६ में **सन्देह भंजन**

---

१. मुहम्मद सरवर की जासूसी, जासूस, जून १९१५ ई०, पृष्ठ संख्या-४२, प्रा० स्था—आ० भा० पु०।
२. घड़े में थाली, जासूस, जुलाई १९१५, पृ० सं० ५२, प्रा० स्था०—आ० भा० पु०।
३. लंगड़े की सैर, जासूस, वर्ष १६, अंक १८४, अगस्त १९१५, पृ० सं० १०, प्रा० स्था—आ० भा० पु०।
४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०।
५. चक्करदार खून [एक विकट जासूसी उपन्यास] (जासूसवू मासिक से उद्धृत) बा गोपाल राम

(पृ० सं० १९) नामक कथाएँ प्रकाशित हुई थीं। और जिस प्रकार 'जासूस के अगस्त १९१५ से फरवरी १९१६ तक के अंकों को मिला कर 'चक्करदार खून' का पुस्तक संस्करण तैयार किया गया, उसी प्रकार जून १९१५ से फरवरी १९१६ तक के अंकों में प्रकाशित छोटी-छोटी अपराधप्रधान कथाओं को एक साथ संकलित कर 'जासूस की डाली' नामक पुस्तक तैयार की गयो। यह पुस्तक आर्यभापा पुस्तकालय, काशी के द्विवेदी संग्रह में उपलब्ध है। उसके मुखपृष्ठ से उपर्युक्त कथाओं का रचना-काल ज्ञात होता है।[1] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'जासूस की डाली' का रचना-काल १९१७ दिया है, जो भ्रामक प्रतीत होता है।

'जासूस' के मार्च १९१६ से लेकर अगस्त १९१६ तक के अंकों में 'ठन ठन जासूस' नामक कथाप्रकाशित हुई।[2] यही कथा १९३४ ई० में 'ठन ठन गोपल' शीर्षक से पुनः प्रकाशित हुई।[3]

सितम्बर १९१६ से लेकर जून १९१७ तक के 'जासूस' के अंक मुझे प्राप्त नहीं हो सके हैं। अतः इन अंकों में कौन कथापुस्तकें प्रकाशित हुई इसका पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। किसी अन्य प्रमाण से भी पता नहीं चल सका है कि इन अंकों में कौन कौन उपन्यास प्रकाशित हुए थे।

'जासूस' वर्ष १८, अंक २०७, जुलाई १९१७ में **कुन्दन लाल** नामक कथा का पहला भाग प्रकाशित हुआ।[4] आर्यभापा पुस्तकालय में गहमरी लिखित 'कुन्दन लाल' नामक एक पुस्तक है, पर उसका आरम्भिक पृष्ठ, जिस पर प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल आदि से सम्बद्ध सूचनाएँ रहती हैं, गायब है। यह कथापुस्तक २७७ पृष्ठों में छपी है, जिससे अनुमान होता है कि यह 'जासूस' के कम से कम ६ अंकों में छपी होगी। पर सितम्बर १९१७ के 'जासूस' के अंक से गहमरी जी की **परिचय** नामक कथा छपनी शुरू हो गयी थी,

---

गहमर निवासी सम्पादित और प्रकाशित, काशी चन्द्रप्रभा प्रेस, में मुद्रित, पृ० सं० २६६।

१. जासूस की डाली (सन् १९१५ ओर १९१३ ई० में प्रकाशित छोटे छोटे मामलों का संग्रह), श्रीगोपाल राम गहमर निवासी संपादित।(जासूस से उद्धृत), प्रा० स्था०—आ० भा० पु०।

२. जासूस, वर्ष १६, अंक २०१, मार्च १९१६, का अंक आर्यभापा पुस्तकालय में उपलब्ध है। इसके एक से लेकर ५६ पृष्ठों में 'ठन ठन जासूस' प्रकाशित है। मार्च के बाद वाले 'जासूस' के अंक मुझे उपलब्ध नहीं हो सके हैं। पर आर्यभाषा पुस्तकालय में 'ठन ठन जासूस' का एक पुस्तक संस्करण है, जिसे "श्रीगोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित जासूस से उद्धृत" और "काशी चन्द्रप्रभा प्रेस से मुद्रित" बताया गया है। इसका प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है पर प्रत्येक पृष्ठ में छपी तिथियों से ज्ञात होता है कि यह 'जासूस' के मार्च-अगस्त १९१६ के अंकों में प्रकाशित हुआ था।

३. ठनठन गोपाल, एक अनोखी, भेद भरी विकट घटना, श्रीगोपाल राम गहमर निवासी संपादित, जासूस से उद्धृत, सन् १९३४ ई०, पृ० सं० ३१७, प्राप्ति स्थान—आर्यभापा पुस्तकालय, काशी।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०।

इस कारण यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि 'जासूस' के किन अंकों में 'कुन्दन लाल' प्रकाशित हुआ था। मेरा अनुमान है कि **जुलाई और अगस्त १९१७ के अंकों** में इस कथा के प्रथम दो भाग प्रकाशित हुए और शेष भाग कभी बाद में निकले, और फिर, सब अंकों को एक साथ मिलाकर इस कथा का पुस्तक संस्करण निकला गया, जो आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है।

'जासूस,' वर्ष १८, अंक २१०, अक्टूबर १९१७ ई० में **परिचय** नामक कथा-पुस्तक का दूसरा भाग प्रकाशित हुआ[1]। इसमें पुस्तक की पृष्ठ-संख्या ४७-९१ दी हुई है, जिससे ज्ञात होता है कि इसका पहला भाग सितम्बर १९१७ ई० के 'जासूस' में प्रकाशित हुआ होगा। १९३५ ई० में प्रकाशित इस कथा का एक पुस्तक संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है, जिसकी पृष्ठ संख्या ९८ है।[2] इस कारण मेरा अनुमान है कि इस पुस्तक के ७ पृष्ठ 'जासूस' के नवम्बर १९१७ के अंक में भी छपे होंगे।

'जासूस', नवम्बर १९१७ में गहमरी जी के दो उपन्यास **साहब की गिरफ्तारी** और **गुप्त भेद** प्रकाशित हुए।[3] गहमरी जी द्वारा लिखित 'गुप्त भेद' नामकी एक कथापुस्तक १९१३ ई० में प्रकाशित हुई थी।[4] पर उसकी पृष्ठसंख्या २७ है और इसकी ११। यदि 'गुप्तभेद' दिसम्बर १९१७ मे भी न छपा हो (दिसम्बर १९१७ का अंक मुझे नहीं प्राप्त हो सका है) तो दोनों कथापुस्तकें एक न होंगी।

'जासूस' के दिसम्बर १९१७ से अगस्त १९१८ तक के अंक मुझे उपलब्ध नहीं हो सके हैं, अतः इन अंकों में गहमरी जी के कौन से उपन्यास छपे थे, इसकी सूचना दे पाना मेरे लिए कठिन है। किसी दूसरे प्रमाण से भी इन अंकों में प्रकाशित गहमरी जी के उपन्यासों की सूचना मुझे नहीं प्राप्त हो सकी है।

इस प्रकार १९१७ ई० तक गहमरी जी की लगभग १०७ मौलिक या मौलिकप्राय अपराध-कथाएँ 'जासूस' के विभिन्न अंकों में प्रकाशित हुईं। इन सभी उपन्यासों की मौलिकता असन्दिग्ध है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, पर निश्चित प्रमाण के अभाव में हमें इन्हें मौलिक मान कर सन्तोष करना पड़ा है।

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, पृष्ठ संख्या ६०–६१

२. परिचय, एक गुप्त मामले का अद्भुत परिचय, श्रीगोपाल राम गहमर निवासी संपादित, जासूस से उद्धृत, प्रथम बार २००० प्रति, सन् १९३५ ई०, पृ० सं० ९८, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०।

३. जासूस, वर्ष १८, अंक २११, नवम्बर १९१७, साहब की गिरफ्तारी (पृ० सं० १–३४), गुप्त भेद (पृ० सं० १–११), प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०। (मेरा खयाल है कि कहीं यह खूनी गिरफ्तारी का पुनः प्रकाशन न हो)।

४. द्रष्टव्य पृ० ११०।

देवकीनन्दन खत्री

वीरेन्द्रवीर अथवा कटोराभर खून

देवकीनन्दन खत्री ने ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांसों के साथ कुछ अपराध-कथाओं की भी रचना की थी। सन् १८९५ ई० में ही उनकी 'वीरेन्द्रवीर अथवा कटोरा भर खून' नामक अपराधकथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हुई।[1]

नौलखाहार

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १८९९ ई० में देवकीनन्दन खत्री की 'नौलखाहार' नामक कथापुस्तक कचौड़ी गली, बनारस से बालमुकुन्द वर्मा द्वारा प्रकाशित हुई।[2] प्रस्तुत प्रबन्ध का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

काजर की कोठरी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९०२ ई० में देवकीनन्दन खत्री रचित 'काजर की कोठरी' नामक कथापुस्तक स्वयं लेखक द्वारा बनारस से प्रकाशित हुई।[3] प्रस्तुत प्रबन्ध का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असफल रहा है। इस कथा की एक प्रति माहेश्वर पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है, पर आरम्भिक पृष्ठों के फटे रहने के कारण इसके प्रकाशन-काल तथा संस्करण का पता नहीं चलता।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस पुस्तक को 'ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास' शीर्षक के अन्तर्गत रखा है,[4] जो भ्रामक है। वस्तुतः 'काजर की कोठरी' एक अपराधप्रधान कथा-पुस्तक है, जिसमें एक जमीन्दार, लाल सिंह, के भतीजों द्वारा एक वेश्या की सहायता से उनकी कन्या सरला को गायब किये जाने तथा उसकी मुक्ति का वर्णन है।

हरिकृष्ण जौहर

छाती का छुरा

हरिकृष्ण जौहर ने ऐयारी और तिलस्म प्रधान रोमांसों के साथ साथ कतिपय अपराध प्रधान और जासूसी कथाओं की रचना भी की थी। सन् १९०१ ई० में उनकी 'छाती का छुरा' नामक कथापुस्तक 'मित्र' मासिक पत्र में प्रकाशित हुई थी।[5] इस पुस्तक का

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
वीरेन्द्रवीर अथवा कटोराभर खून, काशी निवासी बाबू देवकीनन्दन खत्री द्वारा रचित, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित, १८९५।

२. हि० पु० सा०, पृ० ४७६।

३. उपरिवत्, पृ० ३२ तथा ४७६।

४. उपरिवत्, पृ० ३२।

५. प्रा० स्था०—चै० पु० गायघाट, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—छाती का छुरा, 'मित्र' अपने

दूसरा संस्करण बाबू बालमुकुन्द वर्मा द्वारा उपन्यास कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ, पर इसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल न दिये रहने के कारण यह पता नहीं चलता कि यह संस्करण कब प्रकाशित हुआ ।[१]

जवाहरात की पेटी

सन् १९०१ ई० में ही जौहर साहब की 'जवाहरात की पेटी' नामक अपराध कथा 'मित्र' मासिक पत्र में प्रकाशित हुई ।[२] इस पुस्तक का दूसरा संस्करण बालमुकुन्द वर्मा द्वारा नेपाली खपरा, काशी से प्रकाशित हुआ । इस संस्करण के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल की सूचना नहीं दी हुई है ।[३]

निराला नकाबपोश

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०२ ई० में **हरिकृष्ण जौहर** का 'निराला नकाबपोश' नामक उपन्यास हितचिंतक प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ ।[४] चैतन्य पुस्तकालय में बाबू बालमुकुन्द वर्मा, अध्यक्ष 'उपन्यास कार्यालय', काशी द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक का एक संस्करण है, जिसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है ।[५] डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने इस उपन्यास को 'ऐयारी तिलिस्मी, कोटि में रखा है, जो भ्रामक है ।

भयानक खून

सन् १९०३ ई० में **हरिकृष्ण जौहर** द्वारा लिखित 'भयानक खून' नामक कथा-पुस्तक श्री वेंकटेश्वर यंत्रालय, बंबई से प्रकाशित हुई ।[६] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने, 'हिन्दी पुस्तक साहित्य', में इसे ऐयारी तिलस्मी कोटि में रखा है, जो भ्रामक है ।[७]

ढंग का अनूठा मासिक पत्र, वालमुकुन्द वर्मा द्वारा प्रकाशित तथा श्री हरिकृष्ण जौहर द्वारा रचित ।वर्ष १, अंक १, पृ० सं० १४ ।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

२. प्रा० स्था०—चै० पु०, गायघाट, पटना सिटी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
जवाहरात की पेटी, 'मित्र मासिक पत्र' (वर्ष १, अंक ३, ता० १ अगस्त १९०१ ई० में) वालमुकुन्द वर्मा द्वारा प्रकाशित तथा श्रीहरिकृष्ण 'जौहर' लिखित, पृ० सं० १३ ।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी ।

४. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६८६ ।

५. प्रा० स्था०—चै० पु०, गायघाट, पटना सिटी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—निराला नकावपोश या भयानक पिशाचिनी, उपन्यास, श्रीहरिकृष्ण जौहर लिखित और वाबू वालमुकुन्द वर्मा, अध्यक्ष "उपन्यास कार्यालय" काशी द्वारा प्रकाशित ।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भयानक खून, एक अत्यन्त मनोरम उपन्यास जिसको काशी निवासी वाबू हरिकृष्ण जौहर से निर्मित कराय खेमराज श्रीकृष्ण दास ने वम्वई निज "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया । मार्गशीर्ष सम्वत् १९५९, शके १८२४, पृ० सं० ४८ ।

७. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३२ ।

डाकू उपन्यास

आ० भा० पु०, काशी की पुस्तकसूची से ज्ञात होता है कि हरिकृष्ण जौहर का 'डाकू उपन्यास' नामक अपराध प्रधान कथा विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा नवीन पुस्तकालय, काशी से प्रकाशित हुई। आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची में इस उपन्यास का प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।

जयराम दास

विना सवार का घोड़ा

गोपाल राम गहमरी के समकालीन जासूसी कथाकारों में बाबू जयराम दास भी हैं। सन् १९०४ ई० में इनकी प्रथम अपराध-कथा 'विना सवार का घोड़ा' भारत जीवन प्रेस, काशी से मुद्रित-प्रकाशित हुई।[1] इस पुस्तक का दूसरा संस्करण १९३४ ई० में लहरी बुक डिपो, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[2]

चम्पा

सन् १९०४ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार की 'चम्पा' नामक अपराध प्रधान कथा उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुई।[3]

लँगड़ा खूनी

सन् १९०७ ई० में जयराम दास द्वारा लिखित 'लँगड़ा खूनी' नामक अपराधप्रधान कथा स्वयं लेखक द्वारा काशी से प्रकाशित हुई।[4] इसका दूसरा संस्करण १९११ ई० में प्रकाशित हुआ।[5]

भूतों का डेरा व विचित्र खून

सन् १९११ ई० में जयराम दास द्वारा लिखित 'भूतों का डेरा व विचित्र खून' नामक कथा का द्वितीय संस्करण स्वयं लेखक द्वारा काशी से प्रकाशित हुआ।[6] प्रस्तुत

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विना सवार का घोड़ा, काशी निवासी बाबू जयराम दास लिखित, काशी, भारत जीवन यन्त्रालय में मुद्रित, सन् १९०४ ई०, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ५०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०. काशी।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चम्पा, काशी निवासी बाबू जयराम दास लिखित, उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से प्रकाशित, संवत् १९६१, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ६१।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लंगड़ा खूनी, जासूसी उपन्यास, बाबू जयराम दास लिखित और प्रकाशित, फेब्रुअरी १९०७, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ४०।

५. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भूतों का डेरा व विचित्र खून

पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

चन्द्रशाला वा युवती चोरी

सन् १९०७ ई० में ही विवेच्य लेखक द्वारा सम्पादित, परिवर्तित और परिवर्द्धित 'चन्द्रशाला वा युवती चोरी' नामक जासूसी कथा काशी से प्रकाशित हुई।[१] पता नहीं इस कथा का मूल लेखक कौन था ? सम्भव है यह किसी हिन्दीतर भाषा की पुस्तक का अनुवाद हो। इस कथा का दूसरा संस्करण १९११ ई० में बाबू शिवरामदास गुप्त द्वारा काशी से प्रकाशित हुआ।[2]

दो खून

सन् १९०७ ई० में ही जयराम दास की 'दो खून' नामक जासूसी कथा उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुई।[३]

भयानक भेदिया वा विषम रहस्य

सन् १९०८ ई० में विवेच्य उपन्यासकार की 'भयानक भेदिया वा विषम रहस्य' नामक जासूसी कथा स्वयं लेखक द्वारा, काशी से प्रकाशित हुई।[४]

रौशनआरा वा चाँदनी और अँधेरा

विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'रौशनआरा वा चाँदनी और अँधेरा' नामक

उपन्यास, काशी निवासी बाबू जयरामदास लिखित और प्रकाशित, द्वितीय बार १०००, १९६८ वि०, पृ० सं० ३२।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रशाला वा युवती चोरी (एक जासूसी उपन्यास), काशी निवासी बाबू जयराम दास द्वारा सम्पादित, परिवर्तित, परिवर्द्धित और प्रकाशित, पृ० सं० ५८। (मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है पर आवरणपृष्ठ पर उपन्यास बहार मासिक पत्र की नवीं पुस्तक लिखा हुआ है, जिससे इसका प्र० का० १९०७ ई० जान पड़ता है।)

२. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रशाला वा युवती चोरी (एक जासूसी उपन्यास), नव्वाबी परिस्तान, काश्मीर पतन, शूर शिरोमणि, रोशन आरा, मल्का चाँद बीबी, रंग में भंग, फूल कुमारी, प्रभात कुमारी, काला चाँद, किशोरी, कलावती, चम्पा मायारानी, भूतों का डेरा, लंगड़ा खूनी, चन्द्रलोक की यात्रा, बिना सवार का घोड़ा इत्यादि उपन्यासों के रचयिता स्वर्गवासी बाबू जयराम दास गुप्त द्वारा परिवर्तित, परिवर्द्धित और बा० शिवराम दास गुप्त द्वारा प्रकाशित, काशी, दूसरी बार, जनन्नाथ प्रिंटिंग वर्क्स, राजघाट, काशी में बाबू सूर्य नारायण जी द्वारा मुद्रित, मई सन् १९२१।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। आवरणपृष्ठ पर "उपन्यास बहार मासिक पत्र की बारहवीं पुस्तक" लिखा हुआ है, जिससे इसका प्रकाशनकाल दिसम्बर १९०७ ई० सिद्ध होता है। पृ० सं० २४।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भयानक भेदिया वा विषम रहस्य, एक अत्युत्तम जासूसी उपन्यास, काशी निवासी बाबू जयराम दास ने उपन्यास प्रेमी पाठकों के लिए रचकर प्रकाशित किया। प्रथम बार १०००, आवरणपृष्ठ पर "उपन्यास बहार मासिक पत्र

अपराधप्रधान तथा जासूसी कथा उपन्यास दर्पण आफिस, काशी से प्रकाशित हुई।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। इस कारण यह बताना कठिन है कि यह पुस्तक कब प्रकाशित हुई।

कनकलता

विवेच्य उपन्यासकार द्वारा रचित 'कनकलता' नामक एक अपराधप्रधान कथा भी इसी समय के लगभग प्रकाशित हुई। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस पुस्तक की एक प्रति उपलब्ध है पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती।

ठाकुर जंग बहादुर सिंह

विचित्र खून

सन् १९०९ ई० में ठाकुर जंग बहादुर सिंह द्वारा रचित 'विचित्र खून' शीर्षक अपराधप्रधान कथा देवकीनन्दन खत्री द्वारा लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुई।[2]

शेर सिंह विलक्षण जासूस वा सात खून

सन् १९१० ई० में विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित '**शेर सिंह विलक्षण जासूस वा सात खून** नामक अपराधप्रधान कथा विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा काशी से प्रकाशित हुई।[3] इस कथा के मुखपृष्ठ पर विवेच्य कथाकार को '**चाचा का खून व एक नहीं तीन खून**', '**भयानक घटनावली**,' '**राजेन्द्र कुमार अर्थात् चन्द्रकुमारी**, '**संसार चक्र या चन्द्रकुमारी**, तथा '**बूढ़ा जासूस या सन्दूक में लाश**' आदि "जासूसी-ऐयारी तथा सामाजिक उपन्यासों का लेखक" बताया गया है। '**बूढ़ा जासूस**' की एक प्रति आ० भा० पु०, काशी में संगृहीत है, किन्तु उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन उपन्यासों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

की सत्रहवीं पुस्तक" लिखा हुआ है, जिससे इसका रचनाकाल १९०८ ई० सिद्ध होता है। पृ० सं० ९९।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विचित्र खून, प्रताप गढ़ निवासी ठाकुर जंग बहादुर सिंह रचित तथा बाबू देवकीनन्दन खत्री, प्रोप्राइटर, लहरी प्रेस, द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार—२०००, १९०९, पृ० सं० ६३।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शेर सिंह विलक्षण जासूस वा (सात खून) जिसे 'विचित्र खून', 'चाचा का खून व एक नहीं तीन खून', 'भयानक घटनावली', 'राजेन्द्र कुमार अर्थात् चन्द्रकुमारी,' 'संसार चक्र या चन्द्र कुमारी', 'बूढ़ा जासूस या सन्दूक में लाश' आदि जासूसी ऐयारी तथा सामाजिक उपन्यासों के लेखक ठा० श्री जंग बहादुर सिंह वर्मा लिखित जिसे उपन्यास दर्पण के मालिक बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा, नेपाली खपरा, काशी द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार २०००, (मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। पर 'प्रस्तावना' के

दुर्गा प्रसाद खत्री

पाठकों की रुचि-तृप्ति को मुख्य लक्ष्य मानकर उपन्यास लिखनेवालों में दुर्गा प्रसाद खत्री भी उल्लेखनीय हैं। देवकी नन्दन खत्री के अधूरे उपन्यास 'भूतनाथ' को पूरा करके उन्होंने अपने को योग्य पिता का योग्य पुत्र तो सिद्ध किया ही, इसके साथ साथ उन्होंने अनेक तिलस्मी, अपराधप्रधान, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक उपन्यासों की रचना की। यहाँ केवल उनके अपराधप्रधान या जासूसी उपन्यासों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

रामरखा का खून : श्यामा

सन् १९१४ ई० में विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित '**रामरखा का खन**' नामक अपराध प्रधान कथा स्वयं लेखक द्वारा लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुई।[१] इसी वर्ष इनकी '**श्यामा**' नामक दूसरी कथापुस्तक भी प्रकाशित हुई।[2] श्यामा का दूसरा संस्करण १९२६ ई० में श्री कृष्ण हसरत के '**अपमान का बदला**' शीर्षक उपन्यास के साथ लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[३]

अद्भुत भूत

सन् १९१६ ई० में दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित 'अदभुत भूत' नामक कथापुस्तक प्रकाशित हुई।[४]

नीचे "ता० ६ जून सन् १९१० ई०" मुद्रित है।) डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्र० का० १९११ ई० में बताया है। [हि० पु० सा०, पृ० सं० ६०]

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि--

रेलवे सीरीज नं० ३, रामरखा का खून (उपन्यास) बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री लिखित और प्रकाशित, प्रिन्टेड बाइ पन्ना लाल राय, मैनेजर, ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम बार १०००, १९१४, पृ० सं० ६२।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रेलवे सीरीज नं० ४, श्यामा (उपन्यास), बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री लिखित और प्रकाशित। प्रिन्टेड बाइ पन्ना लाल राय, मैनेजर, ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम बार १०००, १९१४, पृ० सं० ६२।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अद्भुत भूत, बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित और प्रकाशित, प्रथम बार १०००, पृ० सं० १४५।

अन्य अपराध प्रधान तथा जासूसी कथापुस्तकें

गोपाल राम गहमरी, देवकीनन्दन खत्री, हरिकृष्ण जौहर, जयरामदास, ठाकुर जंगबहादुर सिंह तथा दुर्गाप्रसाद खत्री आदि प्रमुख अपराधप्रधान लेखकों के अतिरिक्त कुछ अन्य लेखकों ने भी छिटफुट रूप से अपराधप्रधान तथा जासूसी कथापुस्तकों की रचना की। इनका विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

ठगलीला

सन् १८९३ ई० में **गोपाल प्रसाद** लिखित 'ठगलीला' नामक अपराधप्रधान कथा-पुस्तक मथुरा प्रेस, आगरा मे प्रकाशित हुई।[1] पुस्तक के 'विज्ञापन' से रचयिता के नाम का पता चलता है।

सन्दूक में लाश

सन् १८९५ ई० में 'विहार बन्धु' के दो अंकों में 'सन्दूक में लाश' नामक अपराध-प्रधान कथा प्रकाशित हुई।[2] लेखक का नाम ज्ञात नहीं हो पाता।

होनहार

सन् १८९७ ई० में **बाबू उत्तम सिंह वर्मा** रचित 'होनहार' नामक अपराधप्रधान कथापुस्तक जैन प्रेस, लखनऊ से मुद्रित-प्रकाशित हुई।[3]

खूनी डाकू

सन् १९०० ई० में **बाबू बालमुकुंद वर्मा** लिखित 'खूनी डाकू' नामक अपराधप्रधान कथापुस्तक स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुई। आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची में इसका उल्लेख है, पर इसे प्राप्त करने में मैं असमर्थ रहा हूँ। सूचनाएँ उक्त सूची से प्राप्त हुई हैं।

वीर सिंह दारोगा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०० ई० में ही **रुद्रदत्त शर्मा** लिखित 'वीर सिंह दारोगा' नामक जासूसी 'उपन्यास' ठाकुर प्रसाद साहा द्वारा दीनापुर से प्रका-

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ठगलीला, मथुरा प्रेस, आगरा में लाला धन्नोमल कागजी कसेरट बाजार, आगरा के प्रबन्ध से छपी, संवत् १९५०, पहिली बार १००० जिल्द, पृ० सं० २०, मोल फी जिल्द –)।।

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सन्दूक में लाश, एक पुलिस विभाग के कर्मचारी ने यों वर्णन किया है—विहार बन्धु, सेप्टेम्बर १८९५, भाग २४, सं० ९, अक्तूबर १८९५, भाग २४, सं० १०।

३. प्रा० स्था०—चौ० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—होनहार, सत्य घटनापूर्ण एक विचित्र

शित हुआ ।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

भयानक भूल वा कनक कामिनी

सन् १९०४ ई० में **बाबू कमला प्रसाद वर्मा** लिखित **'भयानक भूल वा कनक कामिनी'** नामक अपराधप्रधान कथा बिहार बन्धु प्रेस, बाँकीपुर से छपकर प्रकाशित हुई ।[2]

जासूसी आखेट

सन् १९०५ ई० में **हरिनारायण टंडन** लिखित **'जासूसी आखेट'** नामक कथापुस्तक दामोदर प्रेस, लखनऊ में मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुई ।[३]

जिन्दे की लाश

'हिन्दी पुस्तक साहित्य' से ज्ञात होता है कि सन् १९०६ ई० में **किशोरी लाल गोस्वामी** रचित **'जिन्दे की लाश'** नामक 'जासूसी उपन्यास' प्रकाशित हुआ ।[४] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस (प्रथम) संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'हिन्दी प्रदीप', जिल्द २८, सं० ७, जुलाई सन् १९०६ ई० के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि गोस्वामी जी ने 'गुप्तचर' नामक एक जासूसी उपन्यास मासिक पत्र भी निकाला था, जिसकी पहली संख्या में 'जिन्देकी लाश' नामक जासूसी उपन्यास छपा था। इस पुस्तक का दूसरा संस्करण १९१४ ई० में सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन से प्रकाशित हुआ ।[५]

अद्भुत रहस्य वा विचित्र वारांगना

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०७ ई० में **माधव केसीट** लिखित **'अद्भुत रहस्य वा विचित्र वारांगना'** नामक 'जासूसी उपन्यास' चार भागों में स्वयं लेखक द्वारा जयपुर स्टेट से प्रकाशित किया गया ।[६] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को

उपन्यास, बाबू उत्तम सिंह वर्मा गढ़वाली लिखित, पं० बलदेव प्रसाद मिश्र, मुरादाबाद निवासी द्वारा परिशोधित, लखनऊ, जैन प्रेस, में बाबू भगवान दास जैन द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, सितम्बर सन् १८९७ ई०, पृ० सं० ३३ ।

१. हि० पु० सा०, पृ० ५९६ ।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भयानक भूल वा कनक कामिनी उपन्यास, महाराज की ड्योढ़ी, पटना सिटी निवासी बाबू कमला प्रसाद वर्मा रचित, पता–सेठ प्रतापचन्द बुक्सेलर, महल्ला मिचाई गंज, पटना सिटी, प्रिन्टेड बाइ अकलू लाल, बिहार वंधु प्रेस, बाँकीपुर १९०४, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ३८ ।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जासूसी आखेट, उपन्यास, दूसरा भाग, लखनऊ निवासी हरिनारायण टंडन द्वारा लिखित और प्रकाशित, लखनऊ, दामोदर प्रेस में मुद्रित, सन् १९०५ ई०। पृ० सं० १०६ ।
४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३३ ।
५. प्रा० स्था०—त्रि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जिन्दे की लाश, जासूसी उपन्यास, ले० किशोरीलाल गोस्वामी, श्रीसुदर्शन प्रेस, वृन्दावन १९१४ ई०, द्वितीय बार १०००।
६. हि० पु० सा०, पृ० ३३ तथा ५४८ ।

प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

कोकिला वा पाप का भीषण प्रतिफल

सन् १९०८ ई० में **ईश्वरी प्रसाद शर्मा** लिखित **'कोकिला वा पाप का भीषण प्रतिफल'** नामक 'जासूसी ढंग का उपन्यास' भारत जीवन प्रेस, काशी से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ ।[1]

चोरी है कि दगावाजी : विचित्र जाल

सन् १९०९ ई० में **गौर चरण गोस्वामी** द्वारा लिखित **'चोरी है कि दगावाजी'** नामक कथा श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय, वृन्दावन से प्रकाशित हुई ।[2] यह कथा केवल ६ पृष्ठों की है, फिर भी मुखपृष्ठ पर इसे 'उपन्यास' ही कहा गया है । इसी वर्ष उपर्युक्त गोस्वामी जी की **'विचित्र जाल'** नामक कथापुस्तक श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय, वृन्दावन से प्रकाशित हुई ।[3] यह कथा भी केवल ६ पृष्ठों में समाप्त हुई है, पर पुस्तक के मुखपृष्ठ पर इसे उपन्यास ही कहा गया है ।

अमर सिंह या भूत से टक्कर : चोर चौकड़ी पर

सन् १९१० ई० में 'एक हिन्दी सेवी' द्वारा लिखित **'अमर सिंह या भूत से टक्कर'** नामक अपराधप्रधान कथा श्रीकृष्ण हसरत द्वारा रत्नाकर प्रेस, कलकत्ता से मुद्रित-प्रकाशित हुई ।[4] इसी वर्ष **'चोर चौकड़ी पर'** नामक अपराध प्रधान कथा 'दारोगा दफ्तर' के वर्ष १, अंक २ में प्रकाशित हुई ।[5] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर इसके लेखक का नाम नहीं दिया गया है ।

देवी जालिया

सन् १९१० ई० में ही **श्रीकृष्ण हसरत** लिखित **'देवी जालिया'** नामक

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कोकिला वा पाप का भीषण प्रतिफल !!! एक जासूसी ढंग का उपन्यास, अनेक ग्रन्थों के रचयिता श्री ईश्वरी प्रसाद शर्मा, स० आ० हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय द्वारा विरचित, काशी, भारत जीवन प्रेस में श्रीकृष्ण वर्मा द्वारा मुद्रित, १९०८ ई०, प्रथम वार, १०००, पृ० सं० ५५ ।

२. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चोरी है कि दगावाजी ? (उपन्यास) श्री गौरचरण गोस्वामि विरचित एवं श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय, वृन्दावन से प्रकाशित, प्रथम वार १,००० प्रति, १९०९ ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विचित्र जाल (उपन्यास) श्री गौरचरण गोस्वामी द्वारा लिखित एवं श्रीवृन्दावन श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित, प्रथम वार, ५०० प्रति, जून १९०९ ई०, पृ० सं० ६ ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जासूस अमर सिंह या भूत से टक्कर, एक हिन्दी सेवी लिखित, कलकत्ता ६४, हेरिसन रोड, रत्नाकर प्रेस में श्रीकृष्ण हसरत द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९६७, पृ० सं० ३८ ।

५. प्रा० स्था०—रा० भा० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चोर चौकड़ी पर, दारोगा दफ्तर

'जासूसी उपन्यास' उपन्यास दर्पण कार्यालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[1]

नौलखाहार

सन् १९११ ई० में 'मर्यादा' मासिक पत्र के कतिपय अंकों में **किशोरीलाल गोस्वामी** रचित **'नौलखाहार'** नामक अपराध प्रधान कथा के सात परिच्छेद प्रकाशित हुए।[2] 'मर्यादा' में यह कथा पूर्णत: प्रकाशित नहीं हुई। पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन हुआ या नहीं, यह ज्ञात नहीं।

अमीरअली ठग या ठग वृत्तान्त

सन् १९११ ई० में ही **चन्द्रशेखर पाठक** द्वारा लिखित **'अमीरअली ठग या ठग वृत्तान्त'** नामक अपराध प्रधान कथापुस्तक रामलाल वर्मा द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुई।[3] इस पुस्तक का तीसरा संस्करण, जिसकी दो हजार प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं, उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से ही १९२१ ई० में प्रकाशित हुआ।[4] यह एक अपराध प्रधान कथा है, जिसमें अमीरअली नामक एक ठग अपनी कथा सुनाता है कि किस प्रकार वह ठग बना, कैसे उसने अनेक पथिकों के प्राण लिये तथा किस प्रकार उसने अनेक लोगों को लूटा। अन्त में अभय राम नामक डाकू के अत्याचारों तथा निर्भय राम द्वारा उसके पकड़े जाने का वर्णन है

ताया का खून

सन् १९१३ ई० में **पं० गौरचरण गोस्वामी** लिखित **'ताया का खून'** नामक अपराध प्रधान कथापुस्तक 'दारोगा दफ्तर, कलकत्ता से प्रकाशित हुई।[5]

विलायती डाकू

सन् १९१४ ई० में **चतुर्भुज औदीच्य** लिखित **'विलायती डाकू'** नामक अपराध-

---

(सचित्र मासिक पत्र) के वर्ष १, अंक २, फरवरी १९१० ई० से। पृ० सं० ३४।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—देवी जालिया, नये ढंग का जासूसी उपन्यास, श्रीकृष्ण हसरत लिखित जिसे बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा, मालिक उपन्यास दर्पण, बनारस सिटी, ने उपन्यास प्रेमियों के लिए छपवाकर प्रकाशित किया; १९१०, पहिली बार १०००, पृ० सं० १२८।

२. मर्यादा, भाग, १, १९११ ई०—सं० ३, जनवरी, (पृ० ७९-८४); संख्या ४, फरवरी (पृ० १३५-१३९); संख्या ५, मार्च (पृ० १८५-१९१); संख्या ६, अप्रील (पृ० १५७-२६३); भाग २, १९११ ई०, अंक १, मई (पृ० ३०-३५); अंक २, जून (पृ० ९०-९४); अंक ३, जुलाई (पृ० १३७-१४३)।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अमीरअली ठग या ठग वृत्तांत, विचित्र घटनापूर्ण एक जासूसी उपन्यास······पं० चन्द्रशेखर पाठक लिखित और दारोगा दफ्तर,······ आदि पत्रों के मालिक रामलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित, कलकत्ता २०१ हरीसन रोड, के नरसिंह प्रेस में बाबू राम प्रसाद भार्गव द्वारा मुद्रित, प्रथम बार १०००, सं० १९६८, १९११ ई०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ताया का खून, विचित्र जासूसी उपन्यास. पं० गौरचरण गोस्वामी लिखित, दारोगा दफ्तर सम्पादक द्वारा संशोधित और प्रकाशित,

प्रधान कथापुस्तक रामलाल वर्मा द्वारा, कलकत्ता से प्रकाशित की गयी[1]

जर्मन जासूस

१९१४ ई० में ही पं० सोमेश्वर दत्त शुक्ल लिखित 'जर्मन जासूस' नामक अपराध प्रधान कथापुस्तक अभ्युदय प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुई।[2]

जासूसी कहानियाँ

सन् १९१४ ई० में ही राम लाल वर्मा द्वारा सम्पादित 'जासूसी कहानियाँ' नामक अपराधप्रधान कथा-संग्रह स्वयं सम्पादक द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] इसमें पाँच अपराधप्रधान कथाएँ----'साढ़े आठ खून, (पृष्ठ २६-५०), सती का बदला (पृष्ठ ५२-७०) नीलाम घर का रहस्य (पृष्ठ ७१-११३), घुड़दौड़ का घोड़ा (पृष्ठ १३४-१४३), चोर और चतुर (पृष्ठ १४४)—संकलित हैं।

खूनी औरत का सात खून

सन् १९१८ ई० में किशोरीलाल गोस्वामी रचित "खूनी औरत का सात खून' नामक अपराधप्रधान कथापुस्तक सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन से प्रकाशित हुई।[४]

मायावती : अलकापुरी

आर्यभाषा पुस्तकालय में 'मायावती' और 'अलकापुरी' नामक दो अपराधप्रधान कथापुस्तकें उपलब्ध हैं, पर दोनों में से किसी के भी लेखक, प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल का पता, मुखपृष्ठों के नष्ट हो जाने के कारण, नहीं चलता। अनुमानतः इनका प्रकाशन-काल प्राक्प्रेमचन्द युग में ही होना चाहिए।

निरपराधी'

अनन्त प्रसाद विद्यार्थी कृत 'निरपराधी' शीर्षक जासूसी कथा सम्भवतः इसी युग में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुई।[५] आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, किन्तु पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।

सं० १९७० विक्रमीय, पृ० सं० २९।

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जर्मन जासूस. पं० सोमेश्वर दत्त शुक्ल, बी० ए० रचित, अभ्युदय प्रेस, प्रयाग, सं० १९७१, प्रथम वार २०००, प्रति, पृ० सं० ८२।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जासूसी कहानियाँ, अपूर्व जासूसी उपन्यास, रामलाल वर्मा द्वारा सम्पादित, कलकत्ता ४०१/२ अपर चितपुर रोड, वर्मन प्रेस, में रामलाल वर्मा द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९७१ वि०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—खूनी औरत का सात खून, जासूसी उपन्यास, लेखक श्रीयुत किशोरीलाल गोस्वामी (एक सुभाषित) श्रीयुत छबीले लाल गोस्वामी के आज्ञानुसार "श्री सुदर्शन प्रेस" वृन्दावन से छपकर प्रकाशित, संवत् १९७५, प्रथम वार १०००, सन् १९१८।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रहस्य-रोमांच, निरपराधी,

इतिहासाश्रित कथा साहित्य

विवेच्य काल में इतिहास का आश्रय लेकर अनेक कथापुस्तकें लिखी गयीं। मोटा मोटी रूप में इन इतिहासाश्रित कथापुस्तकों को तीन वर्गो में रखा जा सकता है—(१) **ऐतिहासिक रोमांस**, (२) **ऐतिहासिक उपन्यास**, और (३) **विशुद्ध ऐतिहासिक कथाएँ**। इस काल के प्रमुख ऐतिहासिक रोमांस-लेखकों में किशोरीलाल गोस्वामी, गंगाप्रसाद गुप्त और जयराम दास गुप्त हैं। ऐतिहासिक उपन्यासकारों में मुंशी देवी प्रसाद, पं० बलदेव प्रसाद मिश्र, ठाकुर बलभद्र सिंह तथा बाबू ब्रजनन्दन सहाय आदि प्रमुख हैं। परवर्ती पृष्ठों में इस काल की इतिहासाश्रित कथापुस्तकों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

किशोरीलाल गोस्वामी

हृदयहारिणी वा आदर्श रमणी

किशोरीलाल गोस्वामी खड़ी बोली गद्य मे ऐतिहासिक रोमांस के जन्मदाता हैं। उन्होंने सर्वप्रथम १८९० ई० में पं० प्रताप नारायण मिश्र की प्रेरणा से 'हृदय हारिणी वा आदर्श रमणी' नामक ऐतिहासिक प्रेमाख्यान की रचना की, जो 'हिन्दुस्तान' (जिसके सम्पादक पं० प्रताप नारायण मिश्र थे) के ७ अक्तूबर १८९० ई० के अंक से छपना आरम्भ हुआ और परवर्ती कतिपय अंकों में समाप्त हुआ।[1] पुस्तक रूप में यह कथा चौदह वर्ष बाद, १९०४ ई० में, प्रकाशित हुई।[2] इसका दूसरा संस्करण १९१५ ई० में श्री छबीले लाल गोस्वामी द्वारा प्रकाशित हुआ।

लवंगलता वा आदर्श बाला

गोस्वामी जी का दूसरा ऐतिहासिक रोमांस 'लवंगलता वा आदर्श बाला' भी १८९० ई० में ही, 'हृदयहारिणी' की रचना के ठीक बाद, लिखा गया था और यह भी 'हिन्दुस्तान' में ही छपने वाला था, पर इसी बीच पं० प्रताप नारायण मिश्र ने उक्त पत्र का सम्पादन करना छोड़ दिया और यह उपन्यास "बस्ते में ही बँधा" रह गया।[3] १९०४ ई० में, यानी चौदह वर्ष बाद, 'उपन्यास' मासिक पत्र में इसका पुस्तकाकार प्रकाशन सम्भव हो सका।[4] १९१५

अपराध और शोध के रहस्यों से परिपूर्ण एक उपन्यास, अनन्त प्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०, प्रकाशक-इंडियन प्रेस, प्रयाग, पृ० सं० १९२।

१. कि० ला० गोस्वामी, हृदयहारिणी वा आदर्श रमणी, द्वितीय सं० १९१५, 'प्रथम संस्करण का निवेदन'।

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हृदय हारिणी वा आदर्श रमणी (उपन्यास) श्री किशोरीलाल गोस्वामी लिखित और प्रकाशित, १९०४ ई०।

३. कि० ला० गोस्वामी, लवंगलता वा आदर्श बाला, दूसरा संस्करण, १९१५, प्रथम संस्करण का निवेदन।

४. उपरिवत्।

ई० में इसका दूसरा संस्करण छबीले लाल गोस्वामी द्वारा प्रकाशित किया गया।[1]

गुलबहार वा आदर्श भ्रातृस्नेह

सन् १९०२ ई० में गोस्वामी जी द्वारा रचित 'गुलबहार' नामक ऐतिहासिक कथा 'सरस्वती' के दो अंकों (जुलाई और अगस्त) में प्रकाशित हुई।[2] यह कथा कुल सोलह पृष्ठों में समाप्त हुई है, और इसलिए इसे एक छोटी कथा कहना ज्यादा उचित है। पर जब यह कथा १९०६ ई० में पुस्तक रूप में प्रकाशित हुई तो मुखपृष्ठ पर इसे 'उपन्यास' कहा गया। १९०६ ई० में इसकी "परिवर्तित परिवर्द्धित और संशोधित आवृति", 'गुलबहार वा आदर्श भ्रातृस्नेह' शीर्षक से हितचिंतक प्रेस, काशी में मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुई।[3]

तारा वा क्षत्रकुलकमलिनी

सन् १९०२ ई० में गोस्वामी जी का 'तारा' नामक ऐतिहासिक रोमांस हितचिंतक प्रेस, काशी से मुद्रित और स्वयं लेखक द्‌वारा प्रकाशित हुआ।[4] 'तारा' का दूसरा संस्करण १९१४-१५ ई० में छबीले लाल गोस्वामी द्‌वारा 'श्री सुदर्शन' यन्त्रालय, वृन्दावन से प्रकाशित हुआ।[5] दूसरे संस्करण में इस पुस्तक का नाम **'तारा'** से बदल कर **'तारा वा छत्रकुल कमलिनी'** रख दिया गया।

कनक कुसुम वा मस्तानी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०४ ई० में गोस्वामी जी का 'कनक कुसुम' नामक ऐतिहासिक रोमांस प्रकाशित हुआ।[6] इस कथापुस्तक का दूसरा संस्करण **'कनक कुसुम वा मस्तानी अर्थात् बाजीराव पेशवा और मस्तानी की कहानी'** शीर्षक से

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लवंगलता वा आदर्श बाला अर्थात् [हृदय हारिणी उपन्यास का उपसंहार] उपन्यास, श्री किशोरीलाल गोस्वामी लिखित और श्री छबीले लाल गोस्वामी द्वारा प्रकाशित [एक सुभाषित] दूसरी बार, १०००, सन् १९१५ ई०, मूल्य आठ आने।

२. सरस्वती, १९०२ ई०, जुलाई (पृ० २०७-२१३), अगस्त (पृ० २४०-४८)।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—वर्ष ६, मार्च १९०६, संख्या ३, उपन्यास मासिक पुस्तक, किशोरीलाल गोस्वामि लिखित, संपादित और प्रकाशित, प्रयाग की सरस्वती मासिक पत्रिका से पुनःमुद्रित, गुलबहार वा आदर्श भ्रातृस्नेह, उपन्यास (परिवर्तित, परिवर्द्धित और संशोधित आवृत्ति) काशी हितचिंतक प्रेस में मुद्रित, प्रथम बार १०००, सन् १९०६, ≡)

४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—तारा, ऐतिहासिक उपन्यास, पहला भाग, श्री किशोरीलाल गोस्वामी लिखित और प्रकाशित, काशी, हितचिंतक प्रेस में मुद्रित, सन् १९०२ ई० [दूसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि उपरिवत्]

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

६. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों की प्रकाशन तिथियाँ, 'परिषद्

शित हुआ ।[1] हिन्दी पुस्तक साहित्य में इसका प्रकाशन-काल सन् १९११ दिया हुआ है, जो अशुद्ध है ।[2]

लाल कुँवर वा शाही रंगमहल

सन् १९०९ ई० में ही गोस्वामी जी ने 'लाल कुँवर वा शाही रंगमहल' नामक ऐतिहासिक रोमांस की रचना की,[3] जो १९१३ ई० में इलाहाबाद से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ ।[4]

नूरजहाँ

'लाल कुँवर' की भूमिका से ज्ञात होता है कि गोस्वामी जी का कोई **'नूरजहाँ'** शीर्षक उपन्यास सन् १९०९ ई० में छप रहा था । भूमिका के बाद की टिप्पणी की निम्न-लिखित पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं—"हमारा लिखा हुआ रजिया बेगम उपन्यास छप गया है, उसका दाम सवा रुपया है : **नूरजहाँ उपन्यास छप रहा है ।**"[5] यह पुस्तक मिलती नहीं ।

गुप्त गोदना

देवकीनन्दन खत्री ने 'गुप्त गोदना' नामक एक ऐतिहासिक रोमांस लिखना आरम्भ किया था, पर इसका प्रथम भाग लिखने के बाद ही उनकी मृत्यु हो गयी । गोस्वामी जी ने इस उपन्यास का दूसरा, तीसरा और चौथा भाग लिखकर इसे पूरा किया था । 'गुप्त गोदना' का दूसरा भाग १९२२ ई० में[6] और तीसरा भाग १९२३ ई० में[7] लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ था । इसके चौथे भाग की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है, पर उसके आरम्भिक पृष्ठों के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती ।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सोना और सुगन्ध वा पन्ना बाई, ऐतिहासिक उपन्यास, जिसे किशोरी लाल गोस्वामी ने लिखा और प्रकाशित किया, (एक श्लोक), श्री वृन्दावन, श्री देवकीनन्दन प्रेस में श्री गणेश चन्द्र भट्टाचार्य ने मुद्रित किया, सन् १९०६ ई०, पृ० सं० ३५८ ।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ७ ।

३. लाल कुँवर वा शाही रंगमहल, १९१३, भूमिका ।

४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लाल कुँवर वा शाही रंगमहल, ऐतिहासिक उपन्यास, जिसे......श्री किशोरीलाल गोस्वामी ने लिखा और प्रकाशित किया, इलाहाबाद, लाला रामदयाल अगरवाला ने मुद्रित किया, सन् १९१३ ई० ।

५. उपरिवत्, भूमिका ।

६. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गुप्तगोदना, उपन्यास, दूसरा हिस्सा, श्रीकिशोरीलाल गोस्वामि रचित तथा बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर लहरी प्रेस, द्वारा प्रकाशित (फर्स्ट एडीशन), १९२२ पहिली बार २०००, मूल्य ॥।) प्रिंटेड बाई पन्नालाल राय ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, १९२२ ।

७. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गुप्त गोदना, तीसरा हिस्सा, प्र० लहरी प्रेस, दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रथम संस्करण १९२३ ।

गंगा प्रसाद गुप्त

विवेच्य काल में गंगा प्रसाद गुप्त ने भी किशोरीलाल गोस्वामी के अनुकरण पर तत्कालीन पाठकों की रुचि को ध्यान में रखकर ऐतिहासिक रोमांसों की रचना की थी। उनके ऐतिहासिक रोमांसों का तिथिक्रम और संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

नूरजहाँ वा संसार सुन्दरी

सन् १९०२ ई० में गंगा प्रसाद गुप्त लिखित 'नूरजहाँ वा संसार सुन्दरी' नामक ऐतिहासिक रोमांस हितचिन्तक प्रेस, काशी से मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[1] इसका दूसरा संस्करण १९०८ ई० में (सं० १९६५ वि०) गंगा प्रसाद अरोड़ा, प्रोप्राइटर, कल्पतरु प्रेस द्वारा प्रकाशित हुआ।[2] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस पुस्तक का १९२२ ई० (सं० १९७९ वि०) में प्रकाशित एक संस्करण उपलब्ध है, पर इसके मुखपृष्ठ पर संस्करण अथवा प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचना नहीं दी हुई है। इस प्रकार 'नूरजहाँ' के कम से कम तीन संस्करण १९०२--१९२२ की अवधि में अवश्य निकले थे, जो इसकी लोकप्रियता का परिचायक है।

पूना में हलचल वा वनवासी कुमार

सन् १९०३ ई० में गुप्त जी द्वारा लिखित 'पूना में हलचल वा वनवासी कुमार' नामक "सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास" काशी हिन्दी पुस्तकालय के अध्यक्ष बाबू रामलाल द्वारा प्रकाशित किया गया।[3] इसका दूसरा संस्करण १९०३ ई० में ही अक्तूबर के महीने में उपन्यास दर्पण मासिक के प्रकाशक बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ। उसकी पृष्ठसंख्या ८६ थी।[4] यह परिवर्धित संस्करण था। **पहला संस्करण दुःखान्त था, पर दूसरा संस्करण, 'वेंकटेश्वर समाचार' की सलाह पर सुखान्त कर दिया गया।**

वीरपत्नी

सन् १९०३ ई० में ही विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित 'वीरपत्नी' नामक ऐतिहासिक रोमांस उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी के अध्यक्ष बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया।[5]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नूरजहाँ, ऐतिहासिक उपन्यास, बाबू गंगा प्रसाद गुप्त लिखित, काशी, हितचिंतक प्रेस में मुद्रित, १९०२, पृ० सं० ९६।

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पूना में हलचल वा वनवासी कुमार, सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास, काशी हितचिंतक प्रेस में छपा। काशी हिन्दी पुस्तकालय के अध्यक्ष बाबू रामलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित, १९०३, पृ० सं० ११८।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीरपत्नी, ऐतिहासिक उपन्यास, बनारस निवासी बाबू गंगा प्रसाद गुप्त लिखित, "काशी उपन्यास दर्पण कार्यालय" के अध्यक्ष बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित, सन १९०३ ई०, पृ० सं० ५२।

कुँवर सिंह सेनापति

सन् १९०३ ई० में ही गुप्त जी द्वारा लिखित 'कुँवर सिंह सेनापति' नामक ऐतिहासिक रोमांस काशी से, बावू विश्वेश्वर प्रसाद द्वारा प्रकाशित हुआ।[1] इस कथापुस्तक में औरंगजेब के एक सेनापति कुँवर सिंह की वीरता और प्रणय का वर्णन किया गया है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में इस उपन्यास का शीर्षक 'कुमार सिंह सेनापति' लिखा है, जो अशुद्ध है।[2]

वीर जयमल वा कृष्णकान्ता

सन् १९०३ ई० में ही विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित 'वीर जयमल वा कृष्णकान्ता' नामक ऐतिहासिक रोमांस उपन्यास कार्यालय, काशी के स्वामी वावू वालमुकुन्द वर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल सम्वन्धी सूचना नहीं दी हुई है, पर भूमिका के नीचे "जून सन् १९०३ ई०" अंकित है। इस रोमांस में अकवर की चित्तौर पर चढ़ाई तथा राणा उदय सिंह के प्रधान सेनापति जयमल और राजपूतों की वीरता का वर्णन किया गया है।

हम्मीर

सन् १९०४ ई० में गंगा प्रसाद गुप्त लिखित 'हम्मीर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास वालमुकुन्द वर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल सम्वन्धी सूचना नहीं दी हुई है, पर भूमिका के नीचे "ज्येष्ठ संवत् १९६१ वै०" अंकित होने से इसके प्रकाशन-काल की सूचना प्राप्त हो जाती है। 'सरस्वती' (जनवरी १९०५ ई०) में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस उपन्यास की समीक्षा की थी, जिसमें उन्होने लिखा था कि "इसका वहुत कुछ अंश ऐतिहासिक है। भाषा सरल और रसात्मक है। हम्मीर की देशहितैषिता, पराक्रम और परोपकार का इसमें अच्छा वर्णन है। असम्भव और उटपटांग वातों से भरे हुए उपन्यासों की अपेक्षा ऐसे उपन्यासों का पढ़ना अच्छा है।"[5]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुँवर सिंह सेनापति, ऐतिहासिक उपन्यास, पहला हिस्सा, वनारस निवासी वावू गंगा प्रसाद गुप्त लिखित, जिसे काशी उपन्यास दर्पण और उपन्यास वाटिका के सम्पादक और प्रकाशक वावू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा ने उपन्यास प्रेमियों के चित्तविनोदार्थ छपवा कर प्रकाशित किया; जनवरी १९०३, पृ० सं० ९०। (दूसरा हिस्सा मार्च १९०३ में प्रकाशित)

२. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३१, २३२ तथा ४१४।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीर जयमल वा कृष्णकान्ता [ऐतिहासिक उपन्यास] पहिला भाग, कुँवर सिंह सेनापति, नूरजहाँ, पूना में हलचल, वीरपत्नी, 'रूस और तुर्क' आदि के कर्त्ता वावू गंगा प्रसाद गुप्त रचित। [एक ओर] "उपन्यास कार्यालय काशी" के मालिक वावू वालमुकुन्द वर्मा द्वारा प्रकाशित, प्रथम वार एक हजार, पृ० सं० ४३।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हम्मीर (ऐतिहासिक गद्य काव्य) वावू गंगा प्रसाद गुप्त विरचित और वावू वाल मुकुन्द वर्मा द्वारा प्रकाशित। पृ० सं० ३५।

५. सरस्वती, जनवरी १९०५, भाग ६, सं० १, पुस्तकसमीक्षा (हम्मीर)।

जयराम दास गुप्त

काश्मीर पतन

सन् १००७ ई० में जयराम दास गुप्त लिखित 'काश्मीर पतन' नामक ऐतिहासिक रोमांस, राजघाट, काशी से, स्वयं उपन्यासकार द्वारा प्रकाशित किया गया। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस पुस्तक की एक प्रति उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तकसूची और 'हिन्दी पुस्तक साहित्य', से प्राप्त की गयी हैं।[1] इस रोमांस में काश्मीर के मुसलमान शासक मुहम्मद अजीम खाँ तथा उसके भाई जुब्बार खाँ के हिन्दू प्रजा पर किये जाने वाले अत्याचारों का वर्णन है। अन्त में पंजाब केशरी रणजीत सिंह के द्वारा काश्मीर की प्रजा का अत्याचारी शासक से उद्धार दिखाया गया है।

किशोरी वा वीर बाला

सन् १९०७ ई० में विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित **'किशोरी वा वीर बाला'** नामक ऐतिहासिक रोमांस उपन्यास बहार ऑफिस, काशी में प्रकाशित हुआ।[2] इसका द्वितीय संस्करण १९१७ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[3] इस रोमांस में अकबर द्वारा मेवाड़ की राजकुमारी किशोरी को अपने जाल में फँसाने के असफल प्रयत्न का वर्णन है। अकबर की नीचता तथा किशोरी की वीरता और पतिव्रत्य का चित्रण उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य है।

मायारानी

सन् १९०८ ई० में विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित 'मायारानी' नामक रोमांस उपन्यास बहार ऑफिस, राजघाट, काशी से प्रकाशित हुआ।[4]

नवाबी परिस्तान वा वाजिदअली शाह

सन् १९०८ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व' विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित **'नवाबी परिस्तान वा वाजिद अली शाह'** नामक रोमांस स्वयं लेखक द्वारा उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असफल रहा है। पर 'सरस्वती' (अक्तूबर १९०८) में विवेच्य उपन्यास की 'पुस्तक परीक्षा' से इसके सम्बन्ध में आवश्यक सूचनाएँ, जो ऊपर दी गयी हैं, प्राप्त हो

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ४५२।

२. हि० पु० सा०, पृ० ४५२।

३. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—किशोरी वा वीरबाला (एक ऐतिहासिक उपन्यास) बाबू जयराम दास गुप्त लिखित, प्र० उपन्यास बहार आफिस, द्वितीय बार, जून १९१७ ई०, पृ० सं० ४३।

४. प्रा० स्था० आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माया रानी (ऐतिहासिक उपन्यास), ले० जयराम दास, प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, राजघाट, काशी, १९०८ ई०, पृ० सं० ३७।

जाती हैं।[१] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९०९ ई० दिया है, जो भ्रामक है।[२] इस पुस्तक का दूसरा संस्करण जनवरी १९१२ ई० में लेखक द्वारा ही प्रकाशित किया गया।[३] इस उपन्यास में लखनऊ के प्रसिद्ध विलासी बादशाह वाजिदअली शाह के रंगभोग और विलास का वर्णन किया गया है।

कलावती

सन् १९०९ ई० में विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित 'कलावती' नामक ऐतिहासिक रोमांस भारत जीवन प्रेस, काशी से स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित किया गया।[४] 'रानी पन्ना वा राजललना' की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह अँगरेजी की 'इंडियन शिवेलरी' नामक पुस्तक की एक कहानी के आधार पर लिखा गया है।[५]

प्रभात कुमारी

सन् १९०९ ई० में विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित 'प्रभात कुमारी' नाम रोमांस उपन्यास वहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[६] इस पुस्तक में औरंगजेब के सेनापति मीर जुमला और आसाम के राजा के बीच युद्ध तथा प्रभात कुमारी और अमर सिंह के प्रेम का चित्रण किया गया है।

वीर वरांगना वा आदर्श ललना

सन् १९०९ ई० में ही विवेच्य कथाकार द्वारा लिखित 'वीर वरांगना वा आदर्श ललना' शीर्षक कथापुस्तक उपन्यास वहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुई।[७] इसका दूसरा संस्करण माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।[८] 'रानी पन्ना वा राजललना' की भूमिका से ज्ञात

---

१. सरस्वती, भाग ९, अंक १०, अक्टूबर १९०८, पुस्तक परीक्षा (नवाबी परिस्तान)।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४५२।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नवाबी परिस्तान वा वाजिद अली शाह, उपन्यास, बाबू जयराम दास रचित और प्रकाशित, दूसरी बार ११००, जनवरी सन् १९१२ ई०।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कलावती (ऐतिहासिक उपन्यास), बाबू जयराम दास द्वारा रचित और प्रकाशित, काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित। प्रथम बार १०००, १९०९ ई०, पृ० सं० ४४।

५. रानी पन्ना वा राजललना, ले० जयराम दास गुप्त, भूमिका।

६. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रभात कुमारी, ले० जयराम दास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, प्रथम बार १०००, १९०९ ई०, पृ० सं० ७०।

७. प्राप्ति स्थान— आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उपन्यास बहार मासिक पत्र की दूसरी पुस्तक, वीर वरांगना वा आदर्श ललना (ऐतिहासिक उपन्यास) प्रथम बार ११५०, १९०९ ई०, पृ० सं० ९५।

८. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीर वरांगना वा आदर्श ललना (एक अपूर्व ऐतिहासिक उपन्यास) नवाबी परिस्तान, काश्मीर पतन, शूर शिरोमणि, रौशनआरा, मल्का चाँदबीबी, रंग में भंग,

होता है कि यह उपन्यास अँगरेजी की 'इंडियन शिवेलरी' नामक पुस्तक की एक कहानी के आधार पर लिखा गया था।[१]

इस उपन्यास में सिन्ध प्रदेश स्थित हाड़ी के राजा पर्वत सिंह पर सिन्ध प्रदेश शासक के अहमद शाह की चढ़ाई, राजपूतों की वीरता तथा कनकलता की बहादुरी और स्वधर्म-पालन की कहानी वर्णित है।

रानी पन्ना वा राजललना

सन् १९१० ई० में विवेच्य लेखक द्वारा रचित 'रानी पन्ना वा राजललना' नामक ऐतिहासिक रोमांस उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, किन्तु उसके मुखपृष्ठ के न रहने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। भूमिका के नीचे "उपन्यास बहार ऑफिस ५-१-१९१०" मुद्रित होने से इसके प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल का पता चल जाता है।[2]" भूमिका से पता चलता है कि यह उपन्यास अँगरेजी की 'इंडियन शिवेलरी' नामक पुस्तक की 'रानी पन्ना' शीर्षक कहानी के आधार पर रचित है।[3]

राजरानी

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची के अनुसार विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'राजरानी' नामक उपन्यास, उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। आ० भा० पु० की पुस्तकसूची में इस पुस्तक का प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।

अन्य इतिहासाश्रित कथाएँ और उपन्यास

निहाल दे की पुस्तक

सन् १८९० ई० में **पं० भेदीराम** लिखित 'निहाल दे की पुस्तक' नामक ऐतिहासिक गद्यकथा मतबअ मुस्तफई आगरा में मुद्रित होकर प्रकाशित हुई।[४]

फूल कुमारी, प्रभात कुमारी, काला चाँद, किशोरी, कलावती, चंपा, माया रानी, भूतों का डेरा, लँगड़ा खूनी, चन्द्रशाला, चन्द्रलोक की यात्रा, बिना सवार का घोड़ा इत्यादि उपन्यासों के रचयिता काशी निवासी बाबू जयराम दास रचित और प्रकाशित। भारत जीवन प्रेस में बाबू श्रीकृष्ण वर्मा द्वारा मुद्रित।

१. रानी पन्ना वा राज ललना, ले० जयराम दास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, १९१०, भूमिका।

२. रानी पन्ना वा राजललना (ऐतिहासिक उपन्यास), ले० जयराम दास, भूमिका, प्रा० स्था०-आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

३. उपरिवत्।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—निहाल दे की पुस्तक, आगरा

विद्रोही राजा

सन् १८९० ई० में ही **के० एन० भारद्वाज** लिखित 'विद्रोही राजा' नामक ऐतिहासिक कथा हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुई ।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

महाराज विक्रमादित्य का जीवनचरित्र

सन् १८९३ ई० में **श्री कार्तिक प्रसाद क्षत्री** रचित 'महाराज विक्रमादित्य का जीवन चरित्र' नामक गद्यकथा नारायण प्रेस, मुजफ्फरपुर में मुद्रित तथा बाबू देवकीनन्दन द्वारा प्रकाशित हुई ।[२] इसके 'विज्ञापन' से ज्ञात होता है कि यह कथा पुस्तक रूप में प्रकाशित होने के पूर्व 'पीयूष प्रवाह' नामक पत्र में प्रकाशित हो चुकी थी ।[३]

महाराज छत्रपति शिवाजी का जीवनचरित्र

सन् १८९४ ई० में **कार्तिक प्रसाद** लिखित 'महाराज छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र' नामक ऐतिहासिक कथा 'राज राजेश्वरी मुद्रायंत्र' में मुद्रित और नन्दलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित हुई ।[४]

वीर नारायण

सन् १८९४ ई० में ही **हरिचरण सिंह चौहान** ने टाड लिखित 'राजस्थान के इतिहास' के आधार पर 'वीर नारायण' नामक ऐतिहासिक उपन्यास की रचना की,[५] जो १८९५ ई० में मथुरा भूषण प्रेस, मथुरा से मुद्रित-प्रकाशित हुआ ।[६]

जया

सन् १८९७ ई०, या उसके निकट पूर्व, में **बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री** लिखित 'जया'

महल्ले मनटोले मतबअ मुस्तफई में ठाकुरदास व लाला सूखानन्द की फरमाइश से बहुत शुद्ध करवाकर छापो, पहिली बार १०००, मई सन् १८९० ई०, कीमत -), पृ० सं० १६—इश्तिहार-प्रकट हो कि यह पुस्तक निहाल दे लाला सूखानन्द व ठाकुर दास ने पं० भेदीराम से बनवाई ।

१. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची ।
२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
महाराज विक्रमादित्य का जीवन-चरित्र, श्रीकार्तिक प्रसाद क्षत्री रचित और बाबू देवकीनन्दन द्वारा प्रकाशित, मुजफ्फरपुर, नारायण प्रेस, में मुद्रित, संवत् १९५०, प्रथम बार १००० ।
३. उपरिवत्, विज्ञापन ।
४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
महाराज छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र, श्री कार्तिक प्रसाद लिखित और बाबू नन्दलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित, काशी, राजराजेश्वरी मुद्रायन्त्र में मुद्रित हुआ, सन् १८९४ ई० ।
५. विवेच्य उपन्यास के 'निवेदन' के अन्त में मिति चैत्र शुक्ला प्रतिपदा संवत् १९५१ वि० मुद्रित है ।
६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
वीर नारायण, वीर रसमय ऐतिहासिक नवीन उपन्यास, हरिचरण सिंह चौहान (मथुरा निवासी) अजमेर विरचित संवत् १९५२ वि०, मथुरा भूषण प्रेस, मथुरा में छपा, प्रथमावृति १००० पुस्तक, मूल्य =)॥

नामक ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असफल रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'उपन्यास लहरी मासिक पुस्तक' (नवम्बर-दिसम्बर सन् १८९७ ई०) में प्रकाशित 'जया' के विज्ञापन से प्राप्त होती हैं।[1] 'जया' का दूसरा संस्करण सन् १९०१ ई० में लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित और बाबू नन्दलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ।[2]

अनारकली

सन् १९०० ई० में **पं० बलदेव प्रसाद मिश्र** लिखित 'अनारकली' नामक ऐतिहासिक कथापुस्तक इंडिया लिटरेचर सोसाइटी, मुरादाबाद से प्रकाशित हुई।[3] इस पुस्तक की पृष्ठसंख्या केवल तेरह है, अतः इस दृष्टि से इसे उपन्यास के बदले लघु ऐतिहासिक गद्य-कथा की संज्ञा देना अधिक उचित है। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर इसे उपन्यास ही कहा गया है, जिससे सूचित होता है कि उस समय 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग, सामान्य रूप से सभी गद्यकथाओं के लिए होता था।

इस पुस्तक में अनारकली की लोकप्रचलित कथा नितान्त साधारण शैली में वर्णित है। इस कथा के अनुसार अनारकली जहाँगीर की लौंड़ी थी जिस पर रीझ कर उसने उसके साथ विवाह कर लिया था।

बारहवीं सदी का वीर जगदेव परमार

सन् १९०० ई० में ही श्री **रामजीवन नागर** ने 'बारहवीं सदी का वीर जगदेव परमार' नामक कथापुस्तक की रचना की, जो १९१२ ई० में वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुई।[4] पुस्तक की भूमिका से पता चलता है कि इसकी रचना १९५७ वि० में हुई। इस कथा में धारा नगरी के राजा उदयादित्य के पुत्र जगदेव की वीरता और धर्माचरण का वर्णन किया गया है।

---

१. उपन्यास लहरी मासिक पुस्तक, देवकीनन्दन खत्री द्वारा रचित और प्रकाशित, चन्द्रकान्ता सन्तति (११वाँ हिस्सा) वर्ष ३, नवम्बर-दिसम्बर सन् १८९७ ई० (नं० ११, १२), जया का विज्ञापन।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
जया, उपन्यास, बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री लिखित और बाबू नन्दलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित, काशी लहरी प्रेस में मुद्रित, संवत् १९५८, द्वितीय बार १०००, मूल्य आठ आना। पृ० सं० १५३।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनारकली, उपन्यास, मुरादाबाद निवासी पं० बलदेव प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित, इंडिया लिटरेचर सुसाईटी ने तन्त्र प्रभाकर प्रेस, मुरादाबाद में छपाकर प्रकाशित किया, सन् १९०० ई०, पृ० सं० १३।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
बारहवीं सदी का वीर जगदेव परमार, ऐतिहासिक उपन्यास, जिसको देशी रत्न, वीर मालोजी भोंसले, सती चरित्र संग्रह, भाग पहला तथा दूसरा, कौतुक माला और बोधवचन, दुःख का दरिया अलजलूल और प्यार बड़ा या पैसा के कर्त्ता राम जीवन नागर द्वारा निर्मित कराय, खेमराज श्रीकृष्ण दास ने बम्बई, खेतवाड़ी, ७वीं गली खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम मुद्रणालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया। संवत् १९६९, शक १८३४।

पृथ्वीराज चौहान

सन् १९०१ ई० में **जयन्ती प्रसाद उपाध्याय** रचित 'पृथ्वीराज चौहान' नामक उपन्यास इतिहास प्रकाश पुस्तकालय, मुरादाबाद से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

कोटारानी

सन् १९०२ ई० में **ब्रज बिहारी सिंह** कृत 'कोटा रानी' नामक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में काश्मीर की विधवा रानी, कोटारानी, की सतीत्व-रक्षा तथा उनकी वीरता की कथा वर्णित की गयी है।

ताँतिया भील

इसी वर्ष **पं० मदन मोहन ज्योतिषी** कृत 'तांतिया भील' नामक कथापुस्तक पं जयन्ती प्रसाद उपाध्याय द्वारा इतिहास प्रकाशन, मुरादाबाद से प्रकाशित हुई।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

पानीपत

सन् १९०२ ई० में **पं० बलदेव प्रसाद मिश्र** रचित 'पानीपत' (नाना फड़नवीस) नामक उपन्यास भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3]

पृथ्वीराज चौहान

'हिन्दी पुस्तक साहित्य' के अनुसार **पं० बलदेव प्रसाद मिश्र** रचित 'पृथ्वीराज चौहान नामक उपन्यास १९०२ ई० में के० एन० शर्मा द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

गुप्त गोदना

डॉ० गुप्त के अनुसार **देवकीनन्दन खत्री** लिखित 'गुप्त गोदना' नामक उपन्यास

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कोटारानी (उपन्यास) "ऐतिहासिक घटनावलम्बी" श्री बाबू ब्रजविहारी सिंह—वसन्तपुर निवासी द्वारा "सम्पादित" तथा "आनन्द मिश्र मण्डली" वसंतपुर, मुजफ्फरपुर अनुमोदित जिसे खेमराज श्रीकृष्णादास ने बम्बई निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम प्रेस से मुद्रित कर प्रसिद्ध किया, कार्तिक, संवत् १९५९, शके १८३४, पृ० सं० २३।

२. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पानीपत (नाना फड़नवीस) उपन्यास और इतिहास का अपूर्व सम्मिलन, मुरादाबाद निवासी पंडित बलदेव प्रसाद मिश्र लिखित, 'परिवर्त्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते। स जातो येन जातेन यातिवंश समुन्नतिम्' सन् १९०२ ई०, कलकत्ता, ९७ चोरबागान, मित्र प्रेस, कलकत्ता, पृ० सं० ४१९।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ५१८।

का पहला भाग १९०२ ई० में, और दूसरा भाग १९०६ ई० में, स्वयं लेखक द्वारा बनारस से प्रकाशित हुआ।[1] डॉ० गुप्त की सूचना बिलकुल गलत है।[2]

ताँतिया की बहादुरी

सन् १९०१ ई० में बाबू कम्पनी, कलकत्ता द्वारा 'ताँतिया की बहादुरी' नामक कथापुस्तक प्रकाशित की गयी।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है।

वीर बाला

सन् १९०३ ई० में **बाबू लालजी सिंह** ने 'वीर बाला' नामक एक उपन्यास की रचना की, जो सन् १९०६ ई० में वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[4] 'भूमिका' के अन्त में "संवत् १९६० वि०" मुद्रित है, जिससे इसकी रचना-तिथि ज्ञात होती है।[5] इस उपन्यास में उदयपुर के राणा राजसिंह के प्रधान सरदार चन्दावत जी तथा उनकी वीर पत्नी हाड़ारानी की वीरता और बलिदान की कहानी वर्णित की गयी है।

नरदेव : पद्मा कुमारी : रणधीर सिंह: पंजाब पतन

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०३ ई० में **रामप्रताप शर्मा** लिखित 'नरदेव' नामक ऐतिहासिक उपन्यास, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[6] डॉ० गुप्त के ही अनुसार सन् १९०३-१९०५ ई० की अवधि में **विट्ठलदास नागर** द्वारा लिखित **'पद्माकुमारी'** नामक उपन्यास, दो भागों में, जगन्नाथ भोगीलाल द्वारा लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[7] डॉ० गुप्त ने अन्यत्र इसका प्रकाशनकाल १९०३ ई० दिया है।[8]

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०४ ई० में **मिट्ठूलाल मिश्र** द्वारा रचित **'रणधीर सिंह'** नामक ऐतिहासिक उपन्यास शाहजहाँपुर से और श्यामसुन्दर वैद्य

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ४७९।
२. विशेष के लिए द्रष्टव्य, प्रस्तुत प्रबन्ध, पृ० १३०।
३. प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
ताँतिया की बहादुरी, बाबू कम्पनी द्वारा प्रकाशित, २८ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता, सन् १९०२ ई०, पहली बार २०००।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
वीर बाला, ऐतिहासिक उपन्यास; गाजीपुरान्तर्गत महाईच (पर्गना) चूड़ामणि गहरवार क्षत्रिय वंशावतंस स्वर्गवासी श्रीयुत बाबू लक्ष्मण सिंह जी के कनिष्ठ पुत्र श्रीयुत बाबू लालजी सिंह लिखित जिसको पं० शिवराजबली पांडे के प्रयत्न से खेमराज श्रीकृष्णदास ने निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रेस, बम्बई में मुद्रित वा प्रसिद्ध किया; आषाढ़ संवत् १९६३, शके १८२८, पृ० ९६।
५. उपरिवत्, भूमिका।
६. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ५८९, पृ० २३२ तथा पृ० ३१।
७. उपरिवत्, पृ० ६१०।
८. उपरिवत्, पृ० ३१, तथा पृ० २३२।

लिखित 'पंजाब पतन' नामक उपन्यास लखनऊ से, स्वयं लेखक द्वारा, प्रकाशित हुए।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन उपन्यासों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

रानीभवानी

सन् १९०४ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व, **गंगाराम गुप्त** लिखित 'रानी भवानी' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'हिन्दी प्रदीप' (नवम्बर-दिसम्बर १९०४ ई०) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के 'परिचय' से इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचनाएँ प्राप्त होती हैं—''गंगाराम जी गुप्त ने अपनी थोड़ी उमर में वहुत से उपन्यासों की भरमार कर डाली है उनमें से हाल में उन्होंने एक 'रानी भवानी' लिखा है। वंगाल की वीर सतीसाध्वी रानी भवानी का चरित्र किसके चित्त में अंकित नहीं है हमारे यहाँ की स्त्रियें मनवहलाव औरत मर्द का किस्सा आदि किताबें न पढ़ ऐसी किताबें पढ़ें तो क्या ही अच्छा हो—पर पुस्तक रचयिता ने अपनी पुस्तक में क्लिष्ट शब्द भरने को नहीं मालूम कहाँ का गौरव समझा—यदि कोई स्त्री पढ़ना भी चाहे तो पढ़कर क्या समझेगी।''[२]

नूरजहाँ व जहाँगीर बेगम

सन् १९०५ ई० में **पं० मथुरा प्रसाद** लिखित 'नूरजहाँ बेगम व जहाँगीर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास उपन्यास वहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[३] पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर उसका प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९०५ ई० वताया है।[४]

पद्मिनी

सन् १९०५ ई० में ही **गिरिजानन्दन तिवारी** द्वारा रचित 'पद्मिनी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[५] इस उपन्यास में अलाउद्दीन खिलजी की चित्तौर पर चढ़ाई, पद्मिनी के सतीत्व तथा जौहर व्रत आदि का वर्णन किया गया है। पुस्तक की 'सूचना' के अनुसार इसकी कथावस्तु टॉड के 'राजस्थान' से ली गयी है।

सौतेली माँ या अन्तिम युवराज

सन् १९०६ ई० में **वाबू जयराम लाल रस्तोगी** लिखित 'सौतेली माँ या अन्तिम युवराज' नामक ऐतिहासिक कथापुस्तक भारत जीवन प्रेस, काशी से मुद्रित-प्रकाशित

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० सं० क्रमशः ५४६ और ६४७।

२. हिन्दी प्रदीप, जिल्द २६, सं० ११/१२, नवम्बर-दिसम्बर १९०४।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
लेखक—पं० मथुरा प्रसाद जी, नूरजहाँ वेगम व जहाँगीर, उपन्यास, मिलने का पताः—मैनेजर, उपन्यास वहार ऑफिस, राजघाट, काशी; पृ० सं० ७२।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५३९।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
पद्मिनी, ऐतिहासिक उपन्यास जिसे विहार निवासी गिरिजानन्दन तिवारी ने रचा, काशी,

हुई ।[1] यह कथा अन्तिम मुगल बादशाह बहादुर शाह के जीवन की घटनाओं से सम्बद्ध है ।

रूठी रानी

सन् १९०६ ई० में **मुंशी देवी प्रसाद** लिखित 'रूठी रानी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[2] इस उपन्यास में मेवाड़ के राजा राव मालदेव की पत्नी उमा दे भटानी की आन, वीरता और पातिव्रत्य का वर्णन है, जो पति से जिन्दगी भर रूठी रही, पर जिसके पातिव्रत्य में कहीं कोई खोट न थी । 'सुप्यार दे की आरती' की भूमिका से ज्ञात होता है कि "रूठी रानी' लोगों को कुछ ऐसी प्यारी लगी कि कई जबानों में पूछे बिना ही छप गई । परन्तु गलत छपी ।"[3]

लखनऊ की नवाबी

सन् १९०६ ई० में ठाकुर प्रसाद खत्री कृत 'लखनऊ की नवाबी' नामक उपन्यास लहरी प्रेस, काशी से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ ।[4] इस उपन्यास में लखनऊ के नव्वाब की विलासिता, कायरता और मूर्खता का वर्णन किया गया है ।

ताजमहल या फतहपुरी बेगम

सन् १९०७ ई० में **बाबू जयराम लाल रस्तोगी** लिखित 'ताजमहल या फतहपुरी बेगम' नामक ऐतिहासिक कथापुस्तक बिहार एंजिल प्रेस एण्ड स्टोर्स, भागलपुर से प्रकाशित हुई ।[5]

वीर मालोजी भोंसले : अपराजिता

सन् १९०७ ई० में ही **रामजीवन नागर** लिखित 'वीर मालोजी भोंसले' नामक ऐतिहासिक कथा वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई से तथा **सकल नारायण** और **बजनन्दन सहाय** रचित 'अपराजिता' नामक ऐतिहासिक कथा नागरी प्रचारिणी सभा, आरा से प्रकाशित हुई । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन कथापुस्तकों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं ।

भारत जीवन प्रेस, में मुद्रित हुई, सन् १९०५ ई०, प्रथम बार २००० ।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सौतेली माँ या अन्तिम युवराज, बिहार निवासी बाबू जयराम लाल रस्तोगी लिखित, काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुई संवत् १९६३, प्रथम बार १२५०, पृ० सं० ४६ ।

२. सुप्यार दे की आरती, ले० मुंशी देवी प्रसाद, एक्सप्रेस प्रेस, पटना, १९१९, भूमिका ।

३. उपरिवत् ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—
लखनऊ की नवाबी, सचित्र सच्चा ऐतिहासिक वृत्तांत, ठाकुर प्रसाद खत्री, पदार्थ विज्ञानकोश, रासायनिक कोश, भूगर्भ विद्या, ज्योतिष प्रबन्ध, हमारी प्राचीन ज्योतिष इत्यादि के ग्रन्थकर्त्ता, प्रथम बार २०००, प्रिंटेड ऐट दि एल० पी० काशी, १९०६ ।

५. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
ताजमहल या फतहपुरी बेगम, बिहार निवासी बाबू जयराम लाल रस्तोगी लिखित, जिसके छपवाने इत्यादि का पूर्ण अधिकार बाबू चन्द्रसिंह भट्टनोत, कृष्णगढ़ (राजपूताना) निवासी को

महाराणा प्रताप सिंह की वीरता

सन् १९०७ ई० में **हरिदास माणिक** लिखित 'महाराणा प्रताप सिंह की वीरता' नामक ऐतिहासिक कथापुस्तक सिद्धेश्वर स्टीम प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुई ।[1]

रणवीर

सन् १९०९ ई० में **बाबू चुन्नी लाल खत्री** लिखित 'रणवीर' नामक ऐतिहासिक 'उपन्यास' चार भागों में बाबू देवकीनन्दन खत्री द्वारा लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित किया गया ।[2]

सौन्दर्य कुसुम वा महाराष्ट्र का उदय

सन् १९०९ ई० में ही **ठाकुर बलभद्र सिंह** रचित 'सौन्दर्य कुसुम वा महाराष्ट्र का उदय' नामक उपन्यास भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[3] इस पुस्तक में शिवाजी और बीजापुर के सुलतान के संघर्ष तथा शिवाजी के सहायक नेताजी के अध्यवसाय, साहस और शौर्य की कथा वर्णित है ।

वीरांगना

सन् १९११ ई० में **पं० राम नरेश त्रिपाठी** द्वारा लिखित 'वीरांगना' नामक ऐतिहासिक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा फतेपुर (सीकर) से प्रकाशित किया गया ।[4] सन् १९१७ ई० में यही उपन्यास '**पद्मावती**' शीर्षक से ओंकार प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[5] 'पद्मावती' की 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि उपन्यास का शीर्षक प्रकाशक के इच्छानुसार

है। प्रिंटेड बाई एम० ए० हमीद ऐट दि विहारी एंजील प्रेस एण्ड स्टोर्स, भागलपुर, १९०७, १००० कॉपीज ।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—महाराणा प्रताप सिंह की वीरता (हरिदास माणिक लिखित), सिद्धेश्वर स्टीम प्रेस, बनारस, प्रथम बार ११००, पृ० सं० ३२ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
रणवीर, पहिला हिस्सा (एक ऐतिहासिक और रोचक उपन्यास), लेखक बाबू चुन्नीलाल खत्री, प्रकाशक, बाबू देवकी नन्दन खत्री द्वारा, काशी लहरी प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित, पहिली बार, पृ० २६५; दूसरा हिस्सा—मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि उपरिवत्, पृ० सं० २२८; तीसरा हिस्सा, १९०९, शेष सूचनाएँ उपरिवत्, पृ० सं० २५४; चौथा हिस्सा—कोई सूचना नहीं प्राप्त होती, पृ० सं० ३४४ ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
सौन्दर्य कुसुम वा महाराष्ट्र का उदय, दो भागों में, ठाकुर बलभद्र सिंह लिखित, अमृत लाल चक्रवर्ती द्वारा भारत मित्र प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित, नं० ९७, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता, संवत् १९६६, पृ० सं० ८७ ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीरांगना, लेखक पं० रामनरेश त्रिपाठी, फतेपुर (सीकर) राजपूताना, प्रथम बार १०००, १९११ ई० ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पद्मावती [यह चित्तौड़ की

बदला गया था। इस नाम-परिवर्तन के दो कारण लक्षित होते हैं। प्रथम यह कि पाठकों को उपन्यास का नाम सुनते ही इसकी विषय वस्तु मालूम हो जाए, क्योंकि पद्मावती की कथा उस समय भी लोकप्रचलित थी। दूसरा यह, कि पाठक इसे नया उपन्यास समझें। इस प्रकार यह नाम परिवर्तन व्यावसायिक दृष्टि से पाठकों को ध्यान में रखकर किया गया है।

इस उपन्यास में चित्तौर पर अलाउद्दीन के आक्रमण, पद्मिनी के सतीत्व तथा उसकी वीरता आदि का वर्णन किया गया है।

वीरबाला

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९११ ई० में ही रामनरेश त्रिपाठी लिखित 'वीरबाला' नामक ऐतिहासिक उपन्यास, कलकत्ता से स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित किया गया।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

जयश्री वा वीरबालिका : सौन्दर्य प्रभा वा अदभुत अँगूठी

सन् १९११ ई० में ही **ठाकुर बलभद्र सिंह** लिखित 'जयश्री वा वीर बालिका' नामक उपन्यास, उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से[२] तथा **'सौन्दर्य प्रभा वा अद्भुत अँगूठी'** नामक ऐतिहासिक उपन्यास भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[३]

महारानी पद्मिनी

सन् १९१२ ई० में **बसन्त लाल शर्मा** लिखित 'महारानी पद्मिनी' नामक उपन्यास बम्बई मशीन प्रेस, आगरा से मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[४] इस उपन्यास में चित्तौर के राणा रत्नसेन और रानी पद्मिनी की प्रेमकथा वर्णित है।

यमुनाबाई

सन् १९१२ ई० में **स्वामी अनुभवानन्द सरस्वती** द्वारा रचित 'यमुना बाई' नामक

महारानी पद्मावती का रोचक और औपन्यासिक ढंग पर जीवनचरित लिखा गया है। स्त्रियों के लिए अत्यन्त शिक्षाप्रद है] लेखक पंडित रामनरेश त्रिपाठी, प्रकाशक पंडित ओंकार-नाथ बाजपेयी, ओंकार प्रेस, प्रयाग, सन् १९१७, प्रथम बार।

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २३५ और ५८५।

२. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
जयश्री वा वीर बालिका (ऐतिहासिक उपन्यास), बाबू बलभद्र सिंह, रईस छावनी सीहोर, विरचित जिसे उपन्यास और इतिहास प्रेमियों के चित्तरंजन के लिए उपन्यास बहार ऑफिस, काशी के अध्यक्ष बाबू जयराम दास ने प्रकाशित किया, काशी, चन्द्रप्रभा प्रेस में बाबू गौरीशंकर लाल, मैनेजर, के प्रबन्ध से बाबू जयराम दास ने छपवाकर प्रकाशित किया, सन् १९११ ई०, प्रथम बार ११००।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
सौन्दर्य प्रभा वा अद्भुत अँगूठी, ठाकुर बलभद्र सिंह लिखित, कलकत्ता, नं० ९७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, 'भारत मित्र' प्रेस में बाबू नवल किशोर गुप्त द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, सं० १९६८।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नवीन उपन्यास, महारानी पद्मिनी,

ऐतिहासिक रोमांस भारत बन्धु यंत्रालय, अलीगढ़ से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[1] इस पुस्तक में यमुना बाई नामक एक महाराष्ट्र बालिका की वीरता, साहस और पातिव्रत्य का वर्णन किया गया है।

राणा सांगा और बाबर

सन् १९१२ ई० में **हरिदास माणिक** और **कालिदास माणिक** द्वारा लिखित 'राणा सांगा और बाबर' नामक ऐतिहासिक गद्यकथा तारा यंत्रालय से छपी।[2] शिल्प की दृष्टि से इसे उपन्यास न कहकर गद्यकथा या इतिहास कहना ही ज्यादा उचित है। इसमें राणा सांगा तथा बाबर की लड़ाई का वर्णन किया गया है।

मेवाड़ का उद्धारकर्त्ता

सन् १९१३ ई० में **उपर्युक्त लेखक** द्वारा सम्पादित 'मेवाड़ का उद्धारकर्त्ता' नामक ऐतिहासिक गद्यकथा माणिक कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुई।[3] शिल्प की दृष्टि से इसे उपन्यास के बदले 'गद्यकथा' कहना ज्यादा उचित है। १९२३ ई० में इस गद्यकथा तीसरा संस्करण माणिक कार्यालय काशी से प्रकाशित हुआ।[4]

महाराष्ट्र वीर

डॉ माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१३ ई० में **बाबू रामप्रताप गुप्त** कृत 'महाराष्ट्र वीर' नामक उपन्यास रामलाल वर्मा द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[5] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण १९१८ ई० में रामलाल वर्मा द्वारा वर्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित

पहिला भाग, इसमें महाराजा रत्नसेन और रानी पद्मिनी की इश्क और मुहब्बत को नवीन दिलचस्प मजमून में वर्णन किया गया है। टू ह्विच प्रिंटेड बाई एल० वंशीधर, बम्बई मशीन प्रेस, सिजका बाजार, आगरा, फर्स्ट एडीशन ३०००, १९१२, पृ० सं० ६६।

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
यमुनाबाई, लेखक स्वामी अनुभवानन्द सरस्वती, अलीगढ़, भारतबन्धु यंत्रालय में मुद्रित, प्रथमावृत्ती २००० प्रति, जौलाई, सन् १९१२ ई०, पृ० सं० ३९।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
राणा साँगा और बाबर अर्थात् मुगल बादशाह बाबर और साँगा का भयानक संग्राम, संपादक प्रोफेसर कालीदास माणिक और हरिदास माणिक, तारा यंत्रालय में पंडित बैजनाथ जिज्जा द्वारा छपाया, प्रथम बार १०००, १९१२, पृ० सं० २८।

३. प्राप्ति स्थान— आ भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
मेवाड़ का उद्धारकर्त्ता, अर्थात् मेवाड़ के आदर्श मंत्री भामाशाह का अपूर्व आत्मोत्सर्ग, संपादक प्रो० कालिदास माणिक और हरिदास माणिक, प्रकाशक—माणिक कार्यालय, काशी, १९१३, प्रथम बार १०००, पृ० सं० २८।

४. पुस्तकसूची, आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

५. हि० पु० सा०, पृ० ५८९।

हुआ ।[१] यह उपन्यास शिवाजी के जीवन से सम्बद्ध है ।

पैशाचिक कांड

सन् १९१४ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व, **पैशाचिक कांड** नामक ऐतिहासिक उपन्यास, उपन्यास बहार आफिस, काशी से जयरामदास गुप्त द्वारा प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास का एक विज्ञापन पंडित पारसनाथ त्रिपाठी कृत 'हमारी दाई' नामक उपन्यास के, जो १९१४ ई० में प्रकाशित हुआ था, अन्तिम पृष्ठ पर निकला था। इस विज्ञापन के अनुसार 'पैशाचिक कांड' के लेखक का एक अन्य ऐतिहासिक उपन्यास '**भीषण पाप**' भी इसके पहले 'हिन्दी बंगवासी' में क्रमशः प्रकाशित हुआ था। 'भीषण पाप' का कथानक औरंगजेब के शासन काल के आरम्भिक दिनों से तथा 'पैशाचिक कांड' का कथानक उसके अन्तिम दिनों से सम्बद्ध है।

जुझार तेजा

सन् १९१४ ई० में **मेहता लज्जा राम शर्मा** द्वारा लिखित 'जुझार तेजा' नामक उपन्यास सर्वप्रथम 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में और उसके सद्यः पश्चात् 'सभा' से ही पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ।[2] इसका द्वितीय संस्करण १९२८ ई० में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[3] द्वितीय संस्करण की 'भूमिका' की निम्नलिखित पंक्तियों से विवेच्य उपन्यास की लोकप्रियता पर प्रकाश पड़ता है—

"मेरा सौभाग्य है कि मेरी पुस्तकों में 'जुझार तेजा' का हिन्दी जनता ने सामान्य की अपेक्षा विशेष आदर किया। कोटा, राजपूताना के महाशय गौरी लाल वाचमेकर और बुकसेलर ने 'एक हाड़ौती हृदय' के नाम पर खड़ी बोली के पद्य में एक संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित किया और नाम इसका 'वीरतेजा' रक्खा। यह संस्करण सं० १९७७ में प्रकाशित हुआ था। बूँदी निवासी मेरे मित्र स्व० मुंशी रघुवर दयालु जी के आयुष्मान पुत्र प्रभु दयाल जी ने इसका एक उर्दू संस्करण 'जाँ निसार तेजा' के नाम से प्रकाशित किया।[४]

रजिया बेगम

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१५ ई० में **बाबू ब्रजनन्दन सहाय** द्वारा

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
महाराष्ट्र वीर, वीर रस का ऐतिहासिक उपन्यास, लेखक बाबू रामप्रताप गुप्त, मुद्रक और प्रकाशक, रामलाल वर्मा, मालिक 'वर्मन प्रेस', ३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता, द्वितीयावृत्ति २०००, सं० १९७५ वि०, पृ० सं० १८०।

२. जुझार तेजा, ले० मेहता लज्जाराम शर्मा, प्र० गंगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ, द्वितीयावृत्ति १९८५ वि०, द्वितीय संस्करण की भूमिका।

३. प्राप्ति स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जुझार तेजा, लेखक मेहता लज्जाराम शर्मा, प्रकाशक गंगा पुस्तक माला कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद पार्क, लखनऊ, द्वितीयावृत्ति, सं० १९८५ वि०।

४. उपरिवत्, भूमिका।

लिखित 'रजिया वेगम' नामक ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[1] आश्चर्य की वात यह है कि 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' के पृ० ६२८ पर, जहाँ सहाय जी की सभी पुस्तकों की सूची (प्रकाशक और प्रकाशन-काल के साथ) दी हुई है, इस उपन्यास का उल्लेख नहीं है। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को न तो यह उपन्यास प्राप्त हो सका है, न किसी अन्य स्रोत से ज्ञात हो सका है कि व्रजनन्दन सहाय ने 'रजिया वेगम' नाम का उपन्यास लिखा था। मुझे डॉ० गुप्त की सूचना अशुद्ध मालूम पड़ती है।

प्रणपालन

सन् १९१५ ई० में **सिद्धनाथ सिंह** लिखित 'प्रणपालन' नामक उपन्यास ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा आरा से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में मेवाड़ के राजकुमार चूड़ा जी के त्याग और वीरता की कहानी वर्णित है।

वीर चूड़ामणि

सन् १९१५ ई० में ही **अखौरी कृष्णप्रकाश** लिखित 'वीर चूड़ामणि' नामक ऐतिहासिक उपन्यास कलकत्ता से हरिदास वैद्य द्वारा प्रकाशित किया गया।[3] इस उपन्यास का दूसरा संस्करण हरिदास एण्ड कम्पनी, कलकत्ता से अक्तूबर १९२१ ई० में प्रकाशित हुआ।[4]

भीम सिंह

सन् १९१५ ई० में ही **पं० चन्द्रशेखर पाठक** द्वारा लिखित 'भीम सिंह' नामक ऐतिहासिक उपन्यास चोर वगान, कलकत्ता से, स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास में अलाउद्दीन के महारानी पद्मिनी को प्राप्त करने के उद्देश्य किये गये चित्तौर पर आक्रमण, गोरा वादल की वीरता तथा पद्मिनी के साथ चित्तौर की वीर नारियों के जौहर व्रत आदि का वर्णन किया गया है। अपने 'वक्तव्य' में लेखक ने वतलाया है कि इस उपन्यास की रचना में टाड के 'राजस्थान', वावू क्षीरोद प्रसाद

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० २३५।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
प्रणपालन, ऐतिहासिक उपन्यास, लेखक, आरा निवासी वावू सिद्धनाथ सिंह, प्रकाशक ईश्वरी प्रसाद शर्मा, सम्पादक, मनोरंजन, आरा······कलकत्ता, नं० २०१, हरिसन रोड, के नरसिंह प्रेस, में वावू राम प्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, प्रथमावृत्ति १०००, सन् १९१५ ई०, पृ० सं० ५५।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
वीर चूड़ामणि, ऐतिहासिक उपन्यास······औरंगावाद (गया) निवासी अखौरी कृष्णप्रकाश सिंह लिखित, हरिदास वैद्य द्वारा प्रकाशित, कलकत्ता, २०१ हरिसन रोड, नरसिंह प्रेस में वावू राम प्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१५, प्रथम वार १०००, मूल्य ।=), पृ० सं० १९०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
भीम सिंह, लेखक और प्रकाशक चन्द्रशेखर पाठक, नं० ५३, चोर वगान, कलकत्ता, १९१५, प्रथम

वी० ए० तथा वावू सुरेन्द्र नाथ राय लिखित 'पद्मिनी' नामक ग्रन्थों से विशेष सहायता ली गयी है। इस उपन्यास में लेखक ने इतिहास को ज्यादा और कल्पना को कम महत्त्व दिया है। स्वयं लेखक के शब्दों में "इस ग्रन्थ में इस वात पर विशेष दृष्टि रखी गयी है की ऐतिहासिक वातें ही विशेष कर रहें। औपन्यासिक ढंग पर पात्र पात्रियों का विशद विवरण इसी कारण से नहीं दिया गया है। आशा है, पाठकों को इससे ऐतिहासिक उलझन समझने में सुविधा होगी।"[१]

कृष्णकुमारी वाई

मुंशी देवी प्रसाद का दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास 'कृष्ण कुमारी वाई' १९१६ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास की समीक्षा फरवरी १९१६ ई० की 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी, जिसके अनुसार "इतिहास प्रसिद्ध कृष्णकुमारी का इसमें विश्वसनीय हाल है। तत्सम्वधिनी और भी अनेक सामयिक घटनाओं का उल्लेख इसमें है।"[२]

अनंगपाल

सन् १९१६ ई० में वावू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा रचित 'अनंगपाल' नामक ऐतिहासिक उपन्यास लहरी प्रेस, वनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[३] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९१७ ई० दिया है, जो भ्रामक है।[४]

राजपूत रमणी

सन् १९१६ ई० में ही वावू युगुल किशोर नारायण सिंह रचित 'राजपूत रमणी' नामक उपन्यास वावू देवनन्दन सिंह चौहान द्वारा पोइआवाँ से प्रकाशित हुआ।[५] इस उपन्यास में चित्तौड़ के राणा राजसिंह के प्रधान सरदार चन्दावत की रानी की वीरता की कथा वर्णित की गयी है।

वार १०००, पृ० सं० २५१।

१. उपरिवत्, अपना वक्तव्य।

२. सरस्वती, भाग १७, सं० २, फ़रवरी १९१६।

३. यह उपन्यास वनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा के पास है, जिसे उन्होंने मुझे कृपापूर्वक अवलोकनार्थ दिया।
मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
अनंगपाल (ऐतिहासिक उपन्यास), वावू दुर्गा प्रसाद खत्री लिखित और प्रकाशित, प्रिंटेड वाई पन्नालाल राय, मैनेजर ऐट दि लहरी प्रेस, वनारस सिटी, प्रथम वार १०००, १९१६, पृ० सं० ७४।

४. हि० पु० सा०, पृ० ४७८।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
राजपूत रमणी (एक वीर राजपूत रमणी का आदर्श चरित्र), लेखक राजपूत दोआवा स्कूल पंजाव के भूतपूर्व हेडमास्टर, गौरा राज्य के सेक्रेटरी, श्रीयुत वावू युगुलकिशोर नारायण सिंह, पोईआवां (गढ़) जिला गया, प्रकाशक वावू देवनन्दन सिंह चौहान, पोईआवां गढ़, पो० औरंगावाद, जिला गया, प्रकाशक से प्राप्त, प्रिंटेड वाई डी० पी० तिवारी ऐट दि भारत भूषण प्रेस, लखनऊ, १९१६,

लाल चीन

सन् १९१६ ई० में **व्रजनन्दन सहाय** लिखित 'लाल चीन' नामक ऐतिहासिक उपन्यास श्यामसुन्दर दास द्वारा सम्पादित होकर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित हुआ।[१] इसका दूसरा संस्करण १९२१ ई० में भारत जीवन प्रेस, काशी में मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[२] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। पर 'भूमिका' के अन्त में 'आरा, ता० ३०-५-१६' मुद्रित होने से प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल ज्ञात हो जाता है।

'लाल चीन' उपन्यास की प्रसिद्धि इतनी फैली कि १९२६ ई० में गुजराती भाषा में इसका अनुवाद प्रस्तुत किया गया। अनुवादक थे धीरजलाल अमृतलाल भट्ट।[३]

इस उपन्यास में बहमनी के सुलतान गयासुद्दीन के अपने गुलाम लालचीन द्वारा अन्धा बनाकर कैद किये जाने, गयासुद्दीन के छोटे भाई शमसुद्दीन के गद्दी पर बैठने और लाल चीन के मंत्री बनने, फिर फीरोज खाँ और कासिम खाँ द्वारा इनके पराजित होने, तथा गयासुद्दीन के हाथों लालचीन के बध आदि का वर्णन किया गया है।

विचित्र वीर

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१६ ई० में **पं० मुरारी लाल** लिखित 'विचित्र वीर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास, जो अलाउद्दीन खिलजी के समय के एक कथानक के आधार पर लिखा गया है, जगाधरी से, रुद्रदत्त चंडाना द्वारा प्रकाशित किया गया।[४] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

वीरमणि

सन् १९१७ ई० में **श्याम बिहारी मिश्र** और **शुकदेव बिहारी मिश्र** रचित 'वीरमणि नामक उपन्यास नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित हुआ।[५] इस उपन्यास में चित्तौड़ पर अलाउद्दीन के आक्रमण का वर्णन किया गया है।

प्रथम बार १०००, सं० १९७३।

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६२८; पुस्तकसूची, आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; श्रीहरिहर नाथ, व्रजनन्दन सहाय व्रजवल्लभः जीवन और कृतियाँ।

२. प्राप्ति स्थान—माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
लाल चीन, एक ऐतिहासिक उपन्यास, लेखक—व्रजनन्दन सहाय, १९७८, भारत जीवन प्रेस, काशी में मुद्रित।

३. सरस्वती, भाग १७, संख्या ११, नवम्बर १९२६ ई०।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ५५४, पृ० २३६ तथा पृ० १०७।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
वीरमणि, लेखक श्याम बिहारी मिश्र, एम० ए० और शुकदेव बिहारी मिश्र, बी० ए०, १९१७, लीडर प्रेस, प्रयाग में मुद्रित, सम्पादक श्यामसुन्दर दास, बी० ए०, प्रकाशक-काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

सोने की राख या पद्मिनी

फरवरी १९१७ ई० की 'मर्यादा' में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व **पं० रूपनारायण** जी लिखित 'सोने की राख या पद्मिनी' नामक उपन्यास उपन्यास वहार ऑफिस, राजघाट, काशी से प्रकाशित हो चुका था।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

रानी दुर्गावती

सन् १९१७ ई० में **वाबू श्यामलाल गुप्त** लिखित 'रानी दुर्गावती' नामक उपन्यास उपन्यास वहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[2]

सुप्यार दे की आरती : स्वप्न राजस्थान

सन् १९१७ ई० **मुंशी देवी प्रसाद** ने 'सुप्यार दे की आरती' नामक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा, जो सन् १९१९ ई० में एक्सप्रेस प्रेस, पटना से प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास की भूमिका से ज्ञात होता है कि मुंशी देवी प्रसाद ने सर्वप्रथम **स्वप्न राजस्थान** नामक का ऐतिहासिक उपन्यास लिखा था।[४]

आदर्श वीरांगना दुर्गा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१८ ई० में **शेर सिंह** लिखित 'दुर्गा' नामक ऐतिहासिक उपन्यास मेरठ से, स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[५] सन् १९२२ ई० में इस उपन्यास का दूसरा संस्करण राष्ट्रीय पुस्तकमाला, अजमेर से 'आदर्श वीरांगना दुर्गा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।[६] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने

---

१. मर्यादा, भाग १३, सं० २, फरवरी १९१७।

२. प्राप्ति स्थान—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
रानी दुर्गावती (ऐतिहासिक उपन्यास), ले० मुरार, ग्वालियर निवासी वाबू श्यामलाल गुप्त, सम्पादक, मुनि तथा पाक्षिक ग्रन्थमाला, प्र०—उपन्यास वहार ऑफिस, काशी, १९१७ ई०, पृ० सं० २४।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुप्यार दे की आरती, लेखक—कायस्थकुलभूषण मुंशी देवीप्रसाद मुनसिफ जोधपुर, प्रकाशक कृष्णप्रसाद सिंह चौधरी, पटना एक्सप्रेस प्रेस में श्याम नारायण सिंह द्वारा मुद्रित, प्रथम वार १०००, सन् १९१९ ई०, पृ० सं० ८६।

४. उपरिवत्, भूमिका।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०७।

६. प्राप्ति स्थान—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श वीरांगना दुर्गा, एक क्षत्रिय कुल सुन्दरी की ऐतिहासिक घटना, जिसने अपने हाथ को काटकर फेंक दिया। ले० पं० शेरसिंह काश्यप, पूर्व सम्पादक 'सभ्यता', मन्त्री प्र० बि० प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी, राजपूताना, मध्यभारत तथा अजमेर मारवाड, प्र०—मैनेजर राष्ट्रीय पुस्तकमाला, अजमेर, द्वितीय वार २०००, १९२२ ई०।

में असमर्थ रहा है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार यह उपन्यास सर्वप्रथम १८८८ ई० में (?) स्वयं लेखक द्वारा, मेरठ से प्रकाशित हुआ था।[१] दूसरे संस्करण के 'दो शब्द' से विवेच्य उपन्यास की लोकप्रियता सिद्ध होती है—"मैं यह देखकर अपने परिश्रम को सफल समझता हूँ कि सहृदय पाठक और पाठिकाओं ने इस पुस्तक को बड़े ही चाव से अपनाया है। क्या स्त्री-पुरुषों, क्या बालक-बालिकाओं, और क्या पत्र-पत्रिकाओं में इसकी दिल खोलकर प्रशंसा हुई है।"

पति पत्नि प्रेम

कविराज जै गोपाल विद्याभंडार लिखित 'पति-पत्नि प्रेम' नामक ऐतिहासिक उपन्यास नारायण दत्त सहगल एण्ड संस, लाहौर से प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास के प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता। इसका तीसरा संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[2]

उल्लंघन और प्रायश्चित्त अथवा फैजाबाद की बेगम

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा के व्यक्तिगत संग्रहालय में 'उल्लंघन और प्रायश्चित्त अथवा फैजाबाद की बेगम' नामक ऐतिहासिक उपन्यास है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।

सुरसुन्दरी

प्राक्प्रेमचन्द युग में ही हरे कृष्ण जौहर रचित 'सुरसुन्दरी' नमका कोई ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'चन्द्रकान्ता सन्तति,' भाग १० के छठे संस्करण के साथ विवेच्य उपन्यास का निम्नांकित विज्ञापन संलग्न है।[३]—"सुरसुन्दरी—यदि आप निःस्वार्थ प्रेम, अद्भुत शूरता, मुगलों की दुष्टता, स्त्रियों की सतीत्व रक्षा और राजपूतों के आत्मगौरव का हाल पढ़ना चाहें तो इस उपन्यास को पढ़ें। इसमें मुगलों के उदयपुर पर आक्रमण करने का पूरा ऐतिहासिक विवरण दिया है। इसके पात्र शोभन सिंह का प्रेम और सुरसुन्दरी के आजन्म ब्रह्मचर्य पालन करने का हाल पढ़कर आप मुग्ध हो जायेंगे बहुत से रंगीन और सादे चित्र भी इसमें दिये गये हैं।"

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६४८।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पति पत्नि प्रेम, स्त्री तथा पुरुष दोनों के पढ़ने योग्य एक ऐतिहासिक उपन्यास, वीरता, जासूसी और प्रेम का सच्चा चित्र, लेखक कविराज जैगोपाल विद्याभंडार, प्रकाशक नारायण दत्त सहगल एंड संस, पुस्तक विक्रेता लोहारी गेट, लाहौर, तृतीय बार १०००, पृ० सं० १००० ।

३. चन्द्रकान्ता सन्तति, भाग १०, लहरी बुक डिपो, बनारस, छठा संस्करण के साथ संलग्न विज्ञापन।

सामान्य रूमानी कथाएँ

विवेच्य काल में कुछ ऐसी कथाएँ भी लिखी गयीं जिनमें प्रेम-व्यापारों, अपराध-प्रधान कार्यों और अतिलौकिक तथा अयथार्थ घटनाओं का वाहुल्य है। इन कथाओं में ऐतिहासिक रोमांसों की तरह इतिहास का आश्रय नहीं लिया गया है। इन कथाओं पर संस्कृत के गद्यकाव्यों, इश्क की दास्तानों और हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानों का स्पष्ट प्रभाव है। अतः इन कथाओं को रोमांस या सामान्य रूमानी कथा की संज्ञा दी गयी है।

चतुर सखी उपन्यास

सन् १८९० ई० में काशीनाथ शर्मा लिखित 'चतुर सखी उपन्यास' नामक प्रेमाख्यान भारत दर्शन प्रेस, दिल्ली से प्रकाशित हुआ था।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। शीर्षक से इसके प्रेमाख्यान होने का अनुमान होता है।

कामलता

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १८९० ई० में ही क्षेत्रपाल शर्मा लिखित 'कामलता' नामक 'रसप्रधान उपन्यास' कलकत्ता से महावीर प्रसाद द्वारा प्रकाशित हुआ था।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

कमलिनी

सन् १८९१ ई० में[3] जैनेन्द्र किशोर ने 'कमलिनी' नामक प्रेमकथा की रचना की, जो तीन वर्ष वाद सन् १८९४ ई० में भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुई।[4] मुखपृष्ठ पर प्रदत्त सूचनाओं से ज्ञात होता है कि पुस्तक रूप में प्रकाशित होने के पूर्व यह कथा 'सर्वहित' नामक पाक्षिक पत्र में क्रमशः प्रकाशित हो चुकी थी।[5] सम्भवतः इस कथा का दूसरा संस्करण भारत जीवन प्रेस, काशी से ही १९०६ ई० में प्रकाशित हुआ था। आ० भा० पु०, काशी की पुस्तकसूची में इस संस्करण की सूचना मिलती है। प्रस्तुत पंक्तियों

---

१. आ० भा० पु०, काशी की पुस्तकसूची।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २८ तथा १११।

३. कमलिनी (प्रथम संस्करण) के उपोद्घात के अन्त में "१ जनवरी सन् १८९१ ई०" मुद्रित है।

४. प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कमलिनी, काल्पनिक उपन्यास, श्री जैनेन्द्र किशोर (अगरवाले) विरचित, "सर्वहित" पाक्षिक पत्र से उद्धृत, वाबू रामकृष्ण वर्मा, सम्पादक भारत जीवन ने निज व्यय से छापकर प्रकाशित किया। काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुई, सन् १८९४ ई०, प्रथम वार ११००, मूल्य।)

५. कमलिनी का मुखपृष्ठ, उपरिवत्।

का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असफल रहा है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'कमलिनी' को ऐयारी-तिल्सी उपन्यास की संज्ञा दी है, जो भ्रामक है।[1] इस पुस्तक में ऐयारी और तिलस्म की कहीं चर्चा भी नहीं है।

सुन्दर सरोजिनी

सन् १८९३ ई० में बाबू देवी प्रसाद शर्मा (उपाध्याय) लिखित 'सुन्दर सरोजिनी' नामक प्रेमाख्यान मिशन आर्फनेज प्रेस, गोरखपुर से मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[2] इस पुस्तक का दूसरा संस्करण भारत जीवन प्रेस, काशी से १९०७ ई० में प्रकाशित हुआ।[3] आ० भा० पु०, काशी की पुस्तकसूची में इस कथा के १९२८ ई० में प्रकाशित तीसरे संस्करण का उल्लेख है, पर प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस प्रेमाख्यान को ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास की संज्ञा दी है, जो भ्रामक है। यह गद्य में लिखित सूफी काव्यों के ढंग का एक प्रेमाख्यानक है जिसमें तिलस्म तथा ऐयारी का नाम भी नहीं है।

नरेन्द्र मोहिनी

सन् १८९३ ई० में ही देवकीनन्दन खत्री कृत 'नरेन्द्र मोहिनी' नामक रोमांस प्रकाशित हुआ।[4] इस रूमानी कथा में राजकुमार नरेन्द्र सिंह का दो युवतियों के प्रेमपाश में पड़ने तथा उनकी वीरता, रंभा के सच्चे प्रेम, जगजीत सिंह के भ्रातृस्नेह तथा मोहिनी और गुलाब की कुटिलता आदि का वर्णन किया गया है।[5] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस पुस्तक को ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास की संज्ञा दी है, जो भ्रामक है।[6] इस पुस्तक में ऐयारी और तिलस्म का वर्णन कहीं नहीं आया है।

'उपन्यास लहरी' (नवम्बर-दिसम्बर १८९७) में इस कथापुस्तक के दूसरे संस्करण का विज्ञापन निकला था, जिससे ज्ञात होता है कि १८९७ ई० में 'नरेन्द्र मोहिनी' का दूसरा संस्करण प्रकाशित हो चुका था।[7]

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३२।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुन्दर सरोजिनी (एक अपूर्व उपन्यास) श्रीयुत बाबू देवीप्रसाद शर्म्मा (उपाध्याय) के द्वारा निर्मित और प्रकाशित—(दोहा) घेर विपद को रोकि जग, करि सम्पदा प्रसिद्ध। प्रेम धर्म नहिं कर सके कौन मनोरथ सिद्ध।—गोरखपुर, प्रिंटेड ऐट दि मिशन ऑर्फनेज प्रेस, १८९३, फर्स्ट एडीशन १००० कॉपीज, मूल्य प्रति पुस्तक डाक खर्च सहित ≡)

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३२।

५. माधुरी, ले० गंगा प्रसाद सिंह (१९२५), अन्तिम पृष्ठ का विज्ञापन तथा चन्द्रकान्ता सन्तति, पहला हिस्सा (१९३०) के अन्तिम पृष्ठ का विज्ञापन।

६. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पृ० सा०, पृ० ३२।

७. उपन्यास लहरी, वर्ष ३, अंक ११-१२ नवम्बर-दिसम्बर १८९७।

विचित्र चरित्र

सन् १८९३ ई० में ही कुंजविहारी लाल ने उर्दू-फारसी की रूमानी कथाओं के ढंग पर 'विचित्र चरित्र' नामक १४४७ पृष्ठों की एक दीर्घकाय कथा लिखी, जो नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुई। चैतन्य पुस्तकालय, पटना में इस कथापुस्तक की एक प्रति है, जिसके आवरणपृष्ठ के दीमकों का आहार हो जाने के कारण केवल इतना ही ज्ञात हो पाता है कि यह १८९३ ई० में, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुई थी। इसकी 'भूमिका' से रचयिता का पता चलता है।

भोजदीन महताव

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १८९३ ई० में ही उदयराम कवि लिखित 'भोजदीन महताव' नामक प्रेमकथा प्रकाशित हुई थी।[1] डॉ गुप्त के अनुसार इसमें महताव के प्रेम के कारण फारस के राजकुमार के उत्तराधिकार-त्याग का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

कुसुम कुमारी

देवकीनन्दन खत्री ने १८९४ ई० में 'कुसुम कुमारी' नामक रूमानी कथा की रचना की जिसका पहला और दूसरा हिस्सा १८९४ ई०, में तीसरा हिस्सा १८९७ ई० में और चौथा हिस्सा १८९८ ई० में प्रकाशित हुआ।[2] आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से ज्ञात होता है कि १९५३ ई० तक इस पुस्तक के आठ संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। 'कुसुम कुमारी' एक घटनाप्रधान उपन्यास है, जिसमें मित्र की धोखेबाजी, स्त्री का सच्चा प्रेम, डाकुओं की भयानक लीला आदि का वर्णन किया गया है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस पुस्तक को ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास की संज्ञा दी है[3], जो भ्रामक है।

श्याम कुमारी

सन् १८९६ ई० में पं० रूप नारायण दर लिखित 'श्याम कुमारी' नामक प्रेमाख्यान भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4]

शीरीं फरहाद

सन् १८९९ ई० में वाबू हरिकृष्ण जौहर लिखित 'शीरीं फरहाद' नामक प्रेमाख्यान

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३०।

२. प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुसुम कुमारी, उपन्यास, पहिला हिस्सा, काशी निवासी वावू देवकीनन्दन खत्री रचित, सन् १८९४ ई०, मूल्य ।): दूसरा हिस्सा-सन १८९४ ई०; तीसरा हिस्सा-सन् १८९७ ई०; चौथा हिस्सा संवत् १९५५।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३२।

४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्याम कुमारी, एक निहायत दिलचस्प नावल—जिसको श्रीयुत पं० काशी नारायण साहेव दर, सब जज, पिनशनर के छोटे पुत्र पं० रूप नारायण दर ने तसनीफ किया। वनारस यूनियन प्रेस, इलाहाबाद में पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से छापी गई, १८९६ ई०।

हरिप्रकाश प्रेस, बनारस से मुद्रित और बाबू विशेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ ।[1]

राजकुमार

सन् १९०० ई० में **श्री सरस्वती गुप्ता** लिखित 'राजकुमार' नामक रूमानी कथा महेन्द्र गोस्वामी लेन, शिमला, कलकत्ता से प्रकाशित हुई ।[2] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसे ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास की संज्ञा दी है, जो भ्रामक है । इसमें एक रूमानी ढंग की लोक-कथा वर्णित है ।

कामोद कला

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०३ ई० में **हरिहर प्रसाद जिजल** कृत 'कामोद कला' नामक 'रस प्रधान उपन्यास' स्वयं लेखक द्वारा गया से प्रकाशित हुआ ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

स्वतन्त्र बाला

सन् १९०३ ई० में **श्री पुत्तनलाल सारस्वत** रचित 'स्वतन्त्र बाला' नामक गद्यकथा साहित्य रत्नाकर प्रेस में मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुई ।[4] इस पुस्तक में शूर्पणखा के राम के पास आने, प्रेम-निवेदन करने तथा नाककान कटाकर जाने आदि का वर्णन किया गया है । इस कथा को उदाहृत करके लेखक ने स्त्री-स्वातन्त्र्य के दोष दिखाए हैं ।

मदन किशोरी

सन् १९०४ ई० में **रामेश्वर प्रसाद खत्री** रचित 'मदन किशोरी' नामक प्रेमाख्यान सारन सुधाकर प्रेस में मुद्रित और राम चरित्र प्रसाद की सहायता से प्रकाशित हुई ।[5] इस पुस्तक में किशोरी और मदन के प्रेम, विरह तथा मिलन का वर्णन किया गया है ।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शीरी फरहाद, अगाध प्रेम का सच्चा और चित्त में चुभ जाने वाला अपूर्व वृतांत ऐतिहासिक दिव्य रत्नों से जड़कर बाबू हरिकृष्ण (जौहर) द्वारा बनाया गया, जिसे बाबू विशेश्वर प्रसाद वर्मा ने ग्रन्थकार से केवल एक बार छापने का अधिकार लेकर निज व्यय से छपवाकर प्रकाश किया । बनारस, हरिप्रकाश प्रेस, १८९९, प्रथम बार १००० ।

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजकुमार, उपन्यास, श्री सरस्वती गुप्ता द्वारा प्रणीत, श्री सरस्वती गुप्ता द्वारा प्रकाशित, नं० ५/१ महेंद्र गोस्वामी लेन, शिमला, कलकत्ता ।

३. माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २८ तथा ६८५ ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने । रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्रीस्वातन्त्र्यमर्हति, स्वतन्त्र बाला (उपन्यास), कन्नौज निवासी श्री पुत्तनलाल सारस्वत रचित और प्रकाशित, कन्नौज साहित्य रत्नाकर प्रेस में मुद्रित, संवत् १९६० विक्रमी, प्रथम बार १००० पुस्तकें ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मदन किशोरी (उपन्यास), दोहा

चम्पकवरणी

सन् १९०४ ई० में ही पं० अनिरुद्ध चौबे कृत 'चम्पक वरणी' नामक प्रेमाख्यान लक्ष्मी नारायण यन्त्रालय, मुरादाबाद से मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[1] इस पुस्तक में राजकुमार चन्द्रप्रताप देव और चम्पक तथा वरुणदेव और कुंद के प्रेम, विरह और मिलन का वर्णन प्राचीन प्रेमकथाओं के ढंग पर किया गया है।

चम्पा

सन् १९०४ ई० में ही जयराम दास लिखित 'चम्पा' शीर्षक रोमांस सिद्धेश्वर यंत्रालय में मुद्रित और विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ।[2] इस पुस्तक में धर्म सिंह और चम्पा के प्रेम तथा उनके मिलन-मार्ग की कठिनाइयों का वर्णन किया गया है।

अनूठी बेगम

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०५ ई० में देवकीनन्दन खत्री लिखित 'अनूठी बेगम' नामक उपन्यास फ्रेंड ऐंड कम्पनी, मथुरा से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

कुमारी चन्द्रकिरण

सन् १९०६ ई० में चतुर्भुज सहाय कृत 'कुमारी चन्द्रकिरण' नामक रोमांस किशोरी लाल गोस्वामी द्वारा काशी से प्रकाशित किया गया।[4] इस पुस्तक में मदन नगर के महाराज महेन्द्र सिंह के पुत्र मदन सिंह और महाराज चन्द्रसिंह की पुत्री चन्द्रकिरण के प्रेम और विरह-मिलन का वर्णन किया गया है।

निज अट्ठारह वर्ष के, उमर जान प्रमान। मदन किशोरी ग्रन्थ यह, रचो रसिक परमान; जिसको छपरा, कटरा निवासी रामेश्वर प्रसाद खत्री ने बनाया और रामचरित्र प्रसाद के सहायता से प्रकाशित हुई। छपरा, सारन सुधाकर प्रेस में मुद्रित हुई। सन् १९०४, प्रथम बार १०००।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चम्पक वरणी (उपन्यास), जिसको रामगढ़ निवासी पं० अनिरुद्ध चौबे, हेडमास्टर ने रचा, उसी को शिवलाल गणेशीलाल ने मुंबई टाइप से अपने लक्ष्मीनरायण यन्त्रालय में छपाकर प्रकाशित किया। मुरादाबाद, प्रथम बार, सन् १९०४, गुटका आकार, पृ० सं० ३६।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—चम्पा, उपन्यास, काशी निवासी बाबू जयरामदास रचित और काशी "उपन्यास दर्पण" के अध्यक्ष बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित, श्रीकाशी सिद्धेश्वर यन्त्रालय में मुद्रित हुई। संवत् १९६१, प्रथम बार १०००।

३. हि० पु० सा०, पृ० ४७९।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुमारी चन्द्रकिरण (एक अपूर्व और मनोहर उपन्यास), रचयिता बाबू चतुर्भुज सहाय, खर्जांची, राज्य छतरपुर, मध्य प्रदेश, प्र० श्रीकिशोरी लाल गोस्वामी, सम्पादक "उपन्यास" मासिक पुस्तक, बनारस, सन् १९०६ ई० (पर आवरण पृष्ठ पर १९०७ तिथि दी हुई है), पृ० सं० ६८।

सच्चा मित्र या जिन्दे की लाश अथवा रहस्यमय गुप्तचर

सन् १९०६ ई० में **अम्बिका प्रसाद गुप्त** कृत 'सच्चा मित्र या जिन्दे की लाश अथवा रहस्यमय गुप्तचर' नामक रूमानी कथा हिन्दी पुस्तकालय, काशी से प्रकाशित हुई ।[1] इसमें रत्न सिंह और सौन्दर्यमयी के प्रेम तथा मिलन का वर्णन है ।

रंग में भंग

सन् १९०७ ई० में **जयरामदास गुप्त** कृत 'रंग में भंग' नामक प्रेमाख्यान उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ ।[2] इसमें जादू मन्तर से पूर्ण एक निम्नस्तर का प्रेमाख्यान वर्णित है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसे 'ऐतिहासिक उपन्यास' की संज्ञा दी है, जो भ्रामक है ।[3]

वनारसी दुपट्टा या गुलरूजरीना

सन् १९०८ ई० में **रामलाल वर्मा** रचित 'वनारसी दुपट्टा या गुलरूजरीना' नामक प्रेमाख्यान कल्पतरु प्रेस में मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ ।[4] इस पुस्तक में गुलरू और जरीना के प्रेम, विरह और मिलन का वर्णन किया है ।

एक औरत की वकालत या किस्सा दिलफरोश

१९०८ ई० में ही **श्रीकृष्ण हसरत** लिखित 'एक औरत की वकालत या किस्सा दिलफरोश' नामक रोमांस वाबू माधोप्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया ।[5]

मधुपलतिका वा इश्क की आग

सन् १९१२ ई० में **पं० जगन्नाथ प्रसाद मिश्र** रचित 'मधुप लतिका वा इश्क की आग' नामक प्रेमाख्यान केशव प्रेस, काशी से मुद्रित हुआ ।[6] पुस्तक के अन्तिम आवरण-

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सच्चा मित्र या जिन्दे की लाश अथवा रहस्यमय गुप्तचर (प्रथम भाग, दूसरा भाग) एक शिक्षाप्रद नवीन उपन्यास, काशी निवासी वाबू अम्बिका प्रसाद गुप्त कृत और वाबू रामलाल वर्मा प्रोप्राइटर, हिन्दी पुस्तकालय, काशी, द्वारा प्रकाशित, प्रथम वार १०००, १९०६ ई०, दाम≡), पृ० सं० (भाग १) ५१, (भाग २) ५५ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रंग में भंग, ले० जयराम दास गुप्त, प्र० उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी । प्रथम वार १०००, १९०७ ई० ।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३१ ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वनारसी दुपट्टा या गुलरूजरीना, ऐतिहासिक घटनापूर्ण, प्रेम रस का चुहचुहाता हुआ एक दिलचस्प उपन्यास, रामलाल वर्मा, सम्पादक "उपन्यास सागर" कलकत्ता, द्वारा लिखित और प्रकाशित, गंगाप्रसाद अरोड़ा द्वारा काशी, कल्पतरु प्रेस में मुद्रित, संवत् १९६५ विक्रमीय, प्रथम वार १०००, सं० ३६ ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—एक औरत की वकालत या किस्सा दिलफरोश, श्रीकृष्ण हसरत लिखित और वाबू माधोप्रसाद वर्म्मा द्वारा प्रकाशित, सन् १९०८, पृ० सं० ४२ ।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उपन्यास, मधुप लतिका वा इश्क

पृष्ठ के विज्ञापन से ज्ञात होता है कि उस समय इस कथा का दूसरा भाग भी लिखा जा रहा था। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को दूसरा भाग नहीं प्राप्त हो सका है, अतः यह कहना मुश्किल है कि दूसरा भाग प्रकाशित हुआ या नहीं।

प्रेम का फल या मिस जौहरा

सन् १९१३ ई० में **निहालचन्द वर्मा** कृत 'प्रेम का फल या मिस जौहरा' नामक प्रेमाख्यान कलकत्ता से स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[1] यह शृंगार और अपराध-प्रधान रोमांस है।

लैला मजनू

सन् १९१३ ई० के पूर्व (१९१३ खत्री जी का निधन-वर्ष है) **देवकीनन्दन खत्री** ने 'लैला मजनू' नाम का एक प्रेमाख्यान लिखा, जो हरिप्रकाश यंत्रालय, बनारस से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में है।[2]

की आग, प्रथम भाग, जगन्नाथ प्रसाद मिश्र रचित, मैनेजर धर्मदत्त वेदशास्त्री द्वारा, काशी "केशव प्रेस" में मुद्रित हुआ। इस पुस्तक का सर्वाधिकार ग्रन्थकर्त्ता को है। प्रथम वार १०००, सन् १९१२ ई०।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेम का फल या मिस जौहरा, एक प्रेम रस का चुहचुहाता हुआ अनूठा उपन्यास, मोती महल, सिन्धबाद जहाजी, तिलस्मी चिराग आदि पुस्तकों के रचयिता तथा उपन्यास भंडार, काशी के मालिक बाबू निहालचन्द वर्म्मा द्वारा लिखित और प्रकाशित, कलकत्ता, प्रथम वार १०००, सं० १९७०, मूल्य ॥)

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लैला मजनू, जिसे काशीनिवासी श्रीयुत लाला ईश्वर दास जी खत्री के पुत्र देवकीनन्दन ने हिन्दी रसिकों के लिए चुन के ठीक ठीक वृत्तान्त लिखा, इसका अधिकार मैंने हरिप्रकाश छापेखाने के मालिक को दिया, सिवाय उनके और किसी को छापने का अधिकार नहीं है। बनारस, बाबू अमीर सिंह की सम्मति से जगन्नाथ प्रसाद वर्मा ने निज हरिप्रकाश यन्त्रालय में पहिली वार मुद्रित किया, पृ० सं० ४१।

उपन्यास

विवेच्य काल में यद्यपि ऐयारी-तिलस्म प्रधान रोमांसों और अपराधप्रधान तथा जासूसी कथाओं का ही वोलवाला था, किन्तु उपन्यास की परम्परा भी, जो १८९० के पूर्व क्षीण रूप में विद्यमान थी, विवेच्य काल में विकसित और समृद्ध होती रही। प्रस्तुत प्रसंग में 'सामाजिक उपन्यास' पद का प्रयोग जानवूझ कर नहीं किया जा रहा है। 'उपन्यास' पद का प्रयोग यहाँ उन सभी पुस्तकों के लिए किया गया है, जिनमें एक काल्पनिक, किन्तु यथार्थ संसार की सृष्टि होती है। स्पष्टतः 'सामाजिक उपन्यास', पद 'उपन्यास' की अपेक्षा कम व्यापक है, इसलिए प्रस्तुत विवेचन में उत्तरोक्त को ही चुना गया है।

आगे के पृष्ठों में विवेच्य काल में, हिन्दी में, रचित उपन्यास साहित्य का विवरण प्रस्तुत किया गया है—पहले प्रमुख लेखकों की कृतियों का, तत्पश्चात् फुटकल उपन्यासों का। यह आवश्यक नहीं कि जिन उपन्यासों का विवरण परवर्ती पृष्ठों में दिया गया है, वे सभी उपन्यास की आदर्श कसौटी पर सर्वथा खरे सिद्ध हों। जिन कथाओं में उपन्यास के गुण क्षीण रूप में भी विद्यमान हैं, उन्हें 'उपन्यास' मानकर उनका विवरण दिया गया है।

किशोरीलाल गोस्वामी

प्रणयिनी परिणय

किशोरीलाल गोस्वामी का प्रथम उपन्यास 'प्रणयिनी परिणय' सन् १८८७ ई० में रचा गया था जो सन् १८९० ई० में भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] गोस्वामी जी के अनुसार "यह उस समय हिन्दी में तीसरा उपन्यास माना गया था, अर्थात् वावू गदाधर सिंह की 'कादम्बरी' प्रथम, लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षा गुरु' द्वितीय और हमारा यह (प्रणयिनी परिणय) उपन्यास तृतीय था।"[2] हम जानते हैं कि तथ्य इससे भिन्न है। 'प्रणयिनी परिणय' के पूर्व हिन्दी में मौलिक उपन्यासों की संख्या दशाधिक थी।

'प्रणयिनी परिणय' का दूसरा संस्करण २६ वर्ष वाद सन् १९१६ ई० में प्रकाशित हुआ।[3]

त्रिवेणी वा सौभाग्यश्रेणी

तिथिक्रम की दृष्टि से गोस्वामी जी का दूसरा उपन्यास 'त्रिवेणी वा सौभाग्यश्रेणी'

---

१. प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। प्रथम संस्करण के लेखन-प्रकाशन सम्वन्धी सूचनाएँ इसके द्वितीय संस्करण की भूमिका से प्राप्त होती हैं।

२. प्रणयिनी परिणय, द्वितीय संस्करण, १९१६ ई०, प्र० सुदर्शन प्रेस, वृंदावन, भूमिका।

३. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना।

है, जो सन् १८८८ ई० में लिखा गया और सन् १८९० ई० के 'विहारवन्धु' नामक पत्र में, जो बाँकीपुर (पटना) से निकलता था, एक वर्ष में क्रमशः प्रकाशित हुआ।' इसके 'आभास' से ज्ञात होता है कि गोस्वामी जी के कतिपय मित्रों के इस उपन्यास की बड़ी तारीफ की थी। फिर भी यह उपन्यास १७ वर्षों तक 'विहार वन्धु' की फाइलों के कारागार में वन्दी बना रहा, यह इसके लोकप्रिय न होने का असन्दिग्ध प्रमाण है। सन् १९०७ ई० में 'उपन्यास-प्रेमियों के बड़े आग्रह से' यह 'उपन्यास मासिक पुस्तक' में पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया।[२]

स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी

गोस्वामी जी का तीसरा उपन्यास 'स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी' सन् १८८९ ई० में लिखा गया। पूरा होते ही यह उपन्यास 'सारसुधानिधि' में छपना शुरू हुआ किन्तु दो एक अंकों में छपकर ही रह गया। तत्पश्चात् सन् १८८९ ई० में ही, यह उपन्यास, 'विज्ञ वृन्दावन' नामक मासिक पत्र में छपने लगा, पर इसमें भी पूरा नहीं छप पाया।[३] पुस्तक रूप में यह उपन्यास १९०१ ई० में प्रकाशित हुआ।[४] गोस्वामी जी ने इस उपन्यास के प्रथम संस्करण की भूमिका में थोड़े खेद के साथ लिखा था "समय जो चाहे सो करे! कहाँ तो यह उपन्यास सन् १८८९ ई० में लिखा गया था और कहाँ आज वारह-तेरह वर्ष के पीछे पुस्तकाकार में छपने की इसकी पारी आई।"[५]

सन् १९१६ ई० में 'कुसुम कुमारी' का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ। इस संस्करण की भूमिका में गोस्वामी जी ने लिखा था कि "यह उपन्यास हिन्दी के रसिक और उपन्यास प्रेमियों को ऐसा रुचिकर हुआ था कि इसकी सब कापियाँ थोड़े ही दिनों में बिक चुक गई थीं। इसके बाद उपन्यास-प्रेमियों की धड़ाधड़ माँग पर माँग आने लगी, पर इसका द्वितीय संस्करण हम न निकाल सके।"[६] इससे ज्ञात होता है कि बीसवीं सदी के प्रथम दशक में गोस्वामी जी के उपन्यास लोकरुचि को आकृष्ट करने लगे थे।

'स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी' एक विशेष रुचि के पाठकों के बीच कदाचित् इतना प्रिय हुआ था कि बँगला में भी इस उपन्यास की छाया पर 'कुसुम कुमारी' नामक

---

१. त्रिवेणी वा सौभाग्यश्रेणी, किशोरीलाल गोस्वामी, १९०७, आभास।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वर्ष ७, जुलाई, सन् १९०७ ई०, सं० ७, उपन्यासस्तु वाङ्मुखम्, उपन्यास मासिक पुस्तक, अनेक उपन्यासों के रचयिता किशोरी लाल गोस्वामी ने लिखा, त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी, काशी, प्रभाकरी यन्त्रालय में छपा। प्र० वा० १०००, सन् १९०७ ई०, ३ आने।
३. स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी, प्रथम संस्करण १९०२, भूमिका।
४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी, अपूर्व उपन्यास, हिन्दी रसिकों के मनोविनोदार्थ श्री किशोरी लाल गोस्वमि कर्त्तृक लिखित और प्रकाशित, १९०२ ई०, मूल्य।।।), (आवरणपृष्ठ पर १९०२ ई० और मुखपृष्ठ पर १९०१ ई० मुद्रित हैं)।
५. उपरिवत्, भूमिका।
६. स्वर्गीय कुसुम, द्वितीय संस्करण, १९१६ ई०, भूमिका।

एक उपन्यास लिखा गया। गोस्वामी जी ने क्षुब्ध होकर लिखा था कि "अबतक तो हिन्दी वाले ही बँगला की चोरी किया करते थे, पर अब बँगला वाले भी हिन्दी की चोरी करने लगे हैं। बात यह है कि बँगला में एक बहुत ही छोटा सा—केवल डेढ़ या दो फारम का 'कुसुम कुमारी' उपन्यास देखने में आया है, जिस पर टाइटिल पेज नदारद है। यह बँगला का 'कुसुम कुमारी, उपन्यास उस 'कुसुम कुमारी' उपन्यास की छाया पर लिखा गया है, जो विज्ञ 'वृन्दावन' नामक मासिक पत्र में छपा था।"[१]

'कुसुम कुमारी' का दूसरा संस्करण प्रथम संस्करण का परिवर्द्धित रूप है। स्वयं लेखक के शब्दों मे "अब इस द्वितीय संस्करण का 'कुसुम कुमारी' बिलकुल नया हो गया है।"[2]

डॉ माताप्रसाद गुप्त ने अपने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में 'कुसुम कुमारी' को ऐतिहासिक उपन्यास की संज्ञा दी है, जो प्रमादजन्य है।[3]

लीलावती

सन् १९०१ ई० में **गोस्वामी जी** का 'लीलावती' नामक 'सामाजिक उपन्यास' स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[४] इसके पहले यह उपन्यास गोस्वामी जी द्वारा सम्पादित 'उपन्यास' मासिक पुस्तक में क्रमशः निकल रहा था। नवम्बर-दिसम्बर १९०० के पूर्व यह उपन्यास उक्त पत्रिका के दो अंकों में छप चुका था, पर तब तक अधूरा ही छपा था, यह सूचना नवम्बर-दिसम्बर १९०० के 'हिन्दी प्रदीप' से मिलती है।[५] 'सरस्वती', फरवरी सन् १९०८ ई० के 'पुस्तक-परीक्षा' स्तम्भ से ज्ञात होता है कि इसके निकट अतीत में इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो चुका था।[६] समीक्षाकार के शब्दों में "इसका दुबारा छपना यह सूचित करता है कि उपन्यास प्रेमियों में इसकी चाह हुई है। इसमें हैं भी कितने ही गोरखधन्धे की बातें। जाल फरेब की भी बातें हैं, आशिक माशूकों की भी बातें हैं, भागने और भगा ले जाने की भी बातें हैं, अमीरी गरीबी की बातें हैं, साधुता और असाधुता की भी बातें हैं, बिछुड़े हुओं का मिलाप है, प्रेमियों की मनोरथ सिद्धि है, कुलकलंकिनियों के किये का कुफल है, और लीलावती का आदर्श सतीत्व है। सारांश यह कि उपन्यास पढ़ने वालों के मनोरंजन के लिए इस पुस्तक में बहुत कुछ सामग्री है।"[७] उपन्यास पाठकों की रुचि कैसी थी, इसका पता हमें उपर्युक्त पंक्तियों से साफ साफ चल जाता है।

'लीलावती' का तृतीय संस्करण सन् १९२६ ई० में सुदर्शन प्रेस (वृन्दावन) से

---

१. स्वर्गीय कुसुम, द्वितीय सं०, १९१६ ई०, भूमिका।

२. उपरिवत्।

३. हि० पु० सा०, पृ० ३०।

४. प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लीलावती (सामाजिक उपन्यास), श्रीकिशोरीलाल गोस्वामि कर्त्तृक लिखित और प्रकाशित, सन् १९०१ ई०।

५. हिन्दी प्रदीप, जिल्द २३, सं० ११-१२, नवम्बर-दिसम्बर १९००, समीक्षा (उपन्यास)।

६. सरस्वती, फरवरी १९०८, पुस्तक समीक्षा।

७. उपरिवत्।

प्रकाशित हुआ था।[१] गोस्वामी जी के उपन्यासों में यह उपन्यास अकेला है, जिसके तीन संस्करण हुए।

चपला वा नव्य समाजचित्र

सन् १९०३ ई० में गोस्वामी जी का प्रसिद्ध उपन्यास 'चपला वा नव्य समाज चित्र' चार भागों में हितचिन्तक प्रेस, वनारस से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[२] सन् १९१५-१६ ई० में इसका दूसरा संस्करण (प्रथम दो भाग १९१५ में और अन्तिम दो भाग १९१६ में) सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन से प्रकाशित हुआ।[३]

चन्द्रिका वा जड़ाऊ चम्पाकली

सन् १९०४ ई० में गोस्वामी जी का चन्द्रिका वा जड़ाऊ चम्पाकली नामक उपन्यास कल्पतरु प्रेस, वनारस से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[४] डॉ माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९०५ ई० दिया, है,जो अशुद्ध है।

चन्द्रावली वा कुलटा कुतूहल

सन् १९०४ ई० में ही गोस्वामी जी का 'चन्द्रावली वा कुलटा कुतूहल' नामक उपन्यास कल्पतरु प्रेस, वनारस से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[५]

तरुण तपस्विनी वा कुटीरवासिनी

सन् १९०५ ई० में गोस्वामी जी का 'तरुण तपस्विनी वा कुटीरवासिनी' नामक उपन्यास हितचिन्तक प्रेस, काशी से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[६] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९०६ ई० दिया है, जो अशुद्ध है।[७]

---

१. प्रा० स्था—वि० रा० भा० प० पु०, पटना।
२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—(प्रथम भाग) चपला वा नव्य समाज चित्र (रहस्यपूर्ण सामाजिक उपन्यास), प्रथम भाग ले० श्रीकिशोरी लाल गोस्वामी लिखित और प्रकाशित, वनारस, हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित, १९०३ ई०। (शेष भागों के मुखपृष्ठ उपरिवत्)
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
४. प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रिका वा जड़ाऊ चम्पाकली, उपन्यास, "उपन्यास मासिक पुस्तक" के सम्पादक श्रीकिशोरी लाल गोस्वामी लिखित और प्रकाशित, वनारस, कल्पतरु प्रेस में मुद्रित, सन् १९०४ ई०, प्रथम वार, मूल्य =)
५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रावली वा कुलटा कुतूहल (सामाजिक तूफान) उपन्यास, "उपन्यास मासिक पुस्तक" के सम्पादक श्री किशोरी लाल गोस्वामी लिखित और प्रकाशित, वनारस, कल्पतरु प्रेस में मुद्रित, सन् १९०४ ई०, प्रथम वार, मूल्य दो आने।
६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—तरुण तपस्विनी वा कुटीर वासिनी, उपन्यास, श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी रचित और प्रकाशित······काशी, हितन्चितक प्रेस में मुद्रित, सन् १९०५ ईस्वी।
७. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २८।

इन्दुमती वा वनविहंगिनी

सन् १९०६ ई० में गोस्वामी जी का **'इन्दुमती वा वनविहंगिनी'** नामक उपन्यास हितचिन्तक प्रेस, काशी से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[1] इसके पूर्व यह उपन्यास 'सरस्वती' में केवल सात पृष्ठों की कहानी के रूप में छप चुका था।[2] संशोधित आवृत्ति में इसकी पृष्ठसंख्या बढ़ाकर १५ करके गोस्वामी जी ने इसे 'उपन्यास' शीर्षक के साथ प्रकाशित किया।

पुनर्जन्म वा सौतियाडाह

सन् १९०७ ई० में गोस्वामी जी का **'पुनर्जन्म वा सौतियाडाह'** नामक उपन्यास प्रभाकरी यंत्रालय, काशी से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[3]

माधवी माधव वा मदन मोहिनी

सन् १९०९ ई० में गोस्वामी जी का **'माधवी माधव वा मदन मोहिनी'** नामक उपन्यास दो भागों में प्रभाकरी प्रेस, काशी से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[4] सन् १९१९ ई० में इस उपन्यास का दूसरा संस्करण सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन से प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास के पहले भाग का तीसरा संस्करण ई० १९२६ ई० में और दूसरे भाग का तीसरा संस्करण १९३९ ई० में प्रकाशित हुआ।[6]

अँगूठी का नगीना

सन् १९१८ ई० में गोस्वामी जी का **'अँगूठी का नगीना'** नामक उपन्यास सुदर्शन प्रेस,

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—इंदुमती वा वन विहंगिनी, उपन्यास······ श्री किशोरीलाल गोस्वामी रचित और प्रकाशित, प्रयाग की सरस्वती मासिक पत्रिका से पुर्नमुद्रित, परिवर्तित और संशोधित आवृति, काशी हितचिंतक प्रेस में मुद्रित, सन् १९०६ ई०, मूल्य =)।

२. सरस्वती, भाग १, जून १९०० ई०, पृ० १७८—८५।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वर्ष ७, जून, सन् १९०७ ई०, सं० ६, उपन्यासस्तु वाङ्मुखम्, उपन्यास मासिक पुस्तक, अनेक उपन्यासों के रचयिता श्री किशोरीलाल गोस्वामी ने लिखा, पुनर्जन्म वा सौतिया डाह, काशी प्रभाकरी यन्त्रालय में छपा······प्र० वा० १०००, सन् १९०७ ई०, मूल्य ३ आने।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों की प्रकाशन तिथियाँ, परिषद् पत्रिका, वर्ष २, अंक २; दूसरा भाग (प्रा० स्था०—आ० भा० पु०) मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माधवी माधव वा मदन मोहिनी, दूसरा भाग,······श्री किशोरीलाल गोस्वामी ने लिखा और प्रकाशित किया······बनारस, प्रभाकरी प्रिंटिंग वर्क्स में पं० राममणि आ० दी० द्वारा मुद्रित, सन् १९०९ ईस्वी, मूल्य एक रुपया।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। आवरणपृष्ठ पर प्रकाशन-तिथि १९२६ ई० और मुखपृष्ठ पर १९१९ ई० दी हुई है। पता नहीं, दोनों में से कौन सी तिथि सही है।

६. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना।

वृन्दावन से छपकर प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास की भूमिका से ज्ञात होता है कि इसकी रचना तो १९०१ ई० में ही आरम्भ हो गयी थी, किन्तु इसकी समाप्ति सन् १९१७ ई० में हुई।

भुवनेश्वर मिश्र के उपन्यास

भुवनेश्वर मिश्र ने केवल दो उपन्यासों की रचना की थी, पर केवल इन्हीं के बल पर वे विवेच्य काल के सर्वोत्तम उपन्यासकार माने जा सकते हैं। उनका विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

घराऊ घटना

सन् १८९३ ई० में भुवनेश्वर मिश्र का 'घराऊ घटना' नामक उपन्यास नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं हो पाती। इसकी 'उपक्रमणिका' से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास १९ मार्च, १८९३ ई० के पूर्व लिखा जा चुका था और 'हिन्दी वंगवासी' के कतिपय अंकों में क्रमशः प्रकाशित हो चुका था। पर पुस्तक में ही इस तथ्य के विरोध में भी कुछ सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। पुस्तक के बीच बीच में, पादटिप्पणियों में, विभिन्न परिच्छेदों के 'हिन्दी वंगवासी' में प्रकाशन—काल दिये हुए हैं, जो निम्नलिखित हैं।

(क) पृष्ठ ५६ की पादटिप्पणी से ज्ञात होता है कि यह अंक "ता० २० वीं फ़ेब्रूअरी सन् १८९१ ई०" को छपा था।

(ख) पृष्ठ ६० की पादटिप्पणी से पता चलता है कि दूसरे खंड का दूसरा अध्याय हिन्दी वंगवासी में "ता० ६वीं मार्च सन् १८९३ ई०" को छपा था।

(ग) 'गोटदार चूंदरी', पहला अध्याय, पृ० ६६ की पादटिप्पणी—"हिन्दी वंगवासी १३ वीं मार्च सन् १८९३ ई०।"

(घ) 'गोटदार चूंदरी', दूसरा अध्याय की पादटिप्पणी—"हिन्दी वंगवासी ता० २७वीं मार्च सन् १८९३ ई०।"

(च) तीजव्रत (परिच्छेद), पहला अध्याय की पाद टिप्पणी—"हिन्दी वंगवासी ता० १९वीं अप्रैल सन् १८९३ ई०।"

(छ) तीजव्रत, दूसरा अध्याय की पाद टिप्पणी—"हिन्दी वंगवासी' ता० २४वीं अप्रैल सन् १८९३ ई०।"

इन टिप्पणियों से सिद्ध होता है कि 'घराऊ घटना' कम से कम २४ अप्रैल १८९३ ई० के पूर्व पूर्णतः प्रकाशित नहीं हुआ था।

---

१. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अँगूठी का नगीना, सचित्र एवम् सत्य घटना मूलक गार्हस्थ्य उपन्यास, श्रीयुत किशोरीलाल गोस्वामी रचित······श्रीयुत छबीले लाल गोस्वामी के आज्ञानुसार "श्री सुदर्शन प्रेस" वृन्दावन से छपकर प्रकाशित हुआ। प्रथम बार १०००, संवत् १९७४ वैक्रम, सन् १९१८ मूल्य केवल १।।।=), पृ० सं० २५४।

आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में 'घराऊ घटना' का १९०८ ई० में प्रकाशित चौथा संस्करण उपलब्ध है।[१] इसके अन्त तक के 'निवेदन' के नीचे श्री भुवनेश्वर मिश्र, मिश्रटोला, दरभंगा, ति० सावन बदी ३ या सं० १९५० मुद्रित है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि जुलाई १८९३ के पूर्व 'घराऊ घटना' पुस्तक रूप में पूर्णतः मुद्रित हो चुकी थी। इससे विवेच्य पुस्तक का प्रकाशन-काल भी १८९३ ही अनुमित होता है। डॉ० माताप्रसाद ने इसका प्रकाशन-काल १८९४ ई० दिया है,[२] जो भ्रान्त है।

इस उपन्यास में एक गृहस्थ के दैनिक जीवन की छोटी छोटी समस्याओं का, तत्कालीन रीतिरिवाजों तथा सामाजिक विचारों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है।

बलवन्त भूमिहार

सन् १८९६ ई० में भुवनेश्वर मिश्र ने 'बलवंत भूमिहार' नामक एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास की रचना की[३] जो १९०१ ई० में लहरी प्रेस, लाहौरी टोला, काशी से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[४] इस उपन्यास में मुजफ्फरपुर जिले के दो भूमिहार परिवारों के संघर्ष तथा बलवंत और यमुना के प्रेम की कहानी अत्यन्त विश्वसनीय और यथार्थवादी शैली में वर्णित की गयी है। यह प्राक्प्रेमचन्द युग का सर्वोत्तम उपन्यास है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय

अयोध्या सिंह उपाध्याय ने केवल तीन उपन्यासों की रचना की, जिनका प्रेमचन्द-पूर्व युग की औपन्यासिक परम्परा में उल्लेखनीय स्थान है।

प्रेमकान्ता

डॉ० माताप्रसाद के अनुसार उपाध्याय जी का 'प्रेमकान्ता' नामक उपन्यास १८९४ ई० में भारत जीवन प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[५] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असफल रहा है। डॉ० गुप्त की सूचना भी सन्दिग्ध जान पड़ती है, अन्यथा प्रकाशन-काल के सामने प्रश्नचिह्न लगाने की क्या आवश्यकता थी?

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—घराऊ घटना अर्थात् दस घराऊ घटनाओं के अपूर्व दृश्य श्री झगड़ू लाल के मित्र शहर दरभंगा निवासी श्री भुवनेवर मिश्र ने बड़े परिश्रम से सज्जनों के चित्तानन्दार्थ इस अमूल्य पुस्तक की रचना की। चौथी बार, लखनऊ, मुंशी नवलकिशोर (सी० आई० ई०) के छापे खाने में छपी। सन् १९०८ ई०।

२. डा० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ५३७ तथा २३०।

३. 'भूमिका' के अन्त में "आस्विन बदी १२ शी० संवत १९५३" मुद्रित है।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
बलवन्त भूमिहार, एक उपन्यास, मिश्रटोला, दरभंगा निवासी, तथा 'घराऊ घटना' 'अँगरेजी शिक्षक' आदि ग्रंथों के रचयिता श्री भुवनेश्वर मिश्र द्वारा विरचित, बनारस लहरी प्रेस महल्ला लाहौरी टोला में मुद्रित, सन् १९०१ ई०, संख्या १०००, पृ० सं १६६, आकार २१ से० मी०।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० २७ तथा ५७९।

ठेठ हिन्दी का ठाट

सन् १८९९ ई० में उपाध्याय जी का 'ठेठ हिन्दी का ठाट' नामक उपन्यास खड्गविलास प्रेस, वाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में तत्कालीन वैवाहिक समस्या का चित्रण प्रस्तुत कर स्त्रियों को पातिव्रत्य का उपदेश दिया गया है। इस उपन्यास के लिखे जाने का एक उद्देश्य ठेठ हिन्दी भाषा का उदाहरण प्रस्तुत करना भी था।

इस उपन्यास का दूसरा संस्करण १९०७ ई० में,[2] चौथा संस्करण १९१९ ई० में[3] और छठा संस्करण १९२८ ई० में[4] प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के दूसरे तीसरे और पाँचवें संस्करणों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

अधखिला फूल

अयोध्या सिंह उपाध्याय लिखित 'अधखिला फूल' नामक उपन्यास जून १९०६ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर जून १९०६ ई० की 'सरस्वती' में प्रकाशित समीक्षा से इसके प्रकाशन-काल की सूचना, तनिक अनिश्चित रूप में ही सही, प्राप्त हो जाती है।[5] डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार यह उपन्यास १९०७ ई० में खड्गविलास प्रेस, वाँकीपुर से प्रकाशित हुआ था। उपर्युक्त प्रमाण से डॉ० गुप्त द्वारा दी हुई तिथि की भ्रान्ति स्वतः सिद्ध है।

'अधखिला फूल' का तृतीय संस्करण १९२८ ई० में खड्गविलास प्रेस, वाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[6]

व्रजनन्दन सहाय

प्राक्प्रेमचन्द युग के उपन्यासकारों में, जिन्होंने तत्कालीन पाठकवर्ग की रुचि के द्वारा शासित न होकर उसे परिष्कृत और अभिजात बनाने का प्रयत्न किया था, बाबू व्रजनन्दन सहाय मूर्धन्य हैं। उन्होंने सामाजिक, भावुकताप्रधान और ऐतिहासिक, तीनों प्रकार के उपन्यासों की रचना की थी। व्रजनन्दन सहाय की गणना हिन्दी में भावुकताप्रधान उपन्यास की नींव डालने वाले उपन्यासकार के रूप में की जाती है।

---

१. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
ठेठ हिन्दी का ठाठ अर्थात् ठेठ हिन्दी में लिखी गई एक मन लुभानेवाली कहानी, पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय (हरिऔध) निजामाबाद निवासी की बनाई, 'पटना खड्गविलास प्रेस',—वाँकीपुर साहिब प्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया, १८९९, प्रथम बार, हरिश्चन्द्राब्द १५।
२. ठेठ हिन्दी का ठाठ, चौथा संस्करण १९१९, द्वितीय संस्करण की भूमिका के नीचे 'आजमगढ़—२९-९-१९०७" अंकित है।
३. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० पु० पटना।
४. उपरिवत्।
५. सरस्वती, जून १९०६, पुस्तक समीक्षा (अधखिला फूल)।
६. प्रा० स्था—पु० का० पु० पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अधखिला फूल अर्थात् ठेठ हिन्दी

राजेन्द्रमालती

व्रजनन्दन सहाय का प्रथम उपन्यास 'राजेन्द्र मालती' सर्वप्रथम १८९७ ई० में, जबकि लेखक अभी स्कूल का छात्र था, प्रकाशित हुआ था। प्रथम संस्करण में लेखक ने अपना वास्तविक नाम प्रकाशित नहीं करके उसे **प्रसिद्ध मायावी प्रणीत** घोषित किया था। इसका दूसरा संस्करण सन् १९०६ ई० में (विक्रमाब्द १९६३), लेखक के वास्तविक नाम के साथ प्रकाशित हुआ। डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार 'राजेन्द्र मालती' का द्वितीय संस्करण सिद्धेश्वर नाथ बी० ए०, एल० एल० बी०, आरा द्वारा १९०६ ई० में प्रकाशित किया गया था।[1] पर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना से निकट भविष्य में प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ 'बिहार का साहित्यिक इतिहास' के लिए संकलित सामग्री के अनुसार 'राजेन्द्र मालती' का द्वितीय संस्करण खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, पटना से प्रकाशित हुआ था। पता नहीं, इन दोनों सूचनाओं में से कौन सही है। संप्रति 'राजेन्द्र मालती' ग्रन्थ दुष्प्राप्य है। प्रस्तुत प्रबन्ध के लेखक को यह उपन्यास अद्यावधि उपलब्ध नहीं हो सका है। मेरे प्रिय तथा मेधावी शिष्य और अब प्राध्यापक श्री हरिहर नाथ को विवेच्य उपन्यास के द्वितीय संस्करण की एक खंडित प्रति बाल हिन्दी पुस्तकालय, आरा के शिवनन्दन ग्रन्थागार में कागजों के पुलिन्दों के रूप में प्राप्त हुई थी। श्री हरिहर नाथ के अनुसार "यह प्रति अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी। अन्त के कुछ पृष्ठ तो पूर्णतः लुप्त थे, शेष में भी कुछ के आधे और कुछ के चतुर्थांश दीमकों के उदरस्थ हो चुके थे।" संयोगवश भूमिका बची हुई है, जिसे श्री हरिहर नाथ ने अपने शोधप्रबन्ध में ज्यों का त्यों उद्धृत किया है।[2] इस भूमिका से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास स्कॉटलैंड के प्रसिद्ध कवि तथा उपन्यासकार वाल्टर स्कॉट के 'रॉकेबी' नामक काव्य की छाया पर लिखा गया है। भूमिका की कुछ महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ निम्नोद्धृत है—

"....स्कॉटलैण्डीय सुविख्यात कवि तथा उपन्यास लेखक सर वाल्टर स्कॉट साहिब कृत रॉकेबी नामक काव्य....छाया पर इस उपन्यास की रचना हुई है।

"१८९७ ई० में जबकि मैं स्कूल में पढ़ता था यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी वही संशोधित और परिवर्द्धित होकर पुनः प्रकाशित हुई है। अब बंगाल प्रान्त के शिक्षा विभाग में बिहारादि प्रदेशों के हिन्दी स्कूलों के छात्रों के पुरस्कार एवं स्कूल लाइब्रेरी के लिये इसे स्वीकार करके इसका आदर बढ़ाया है। ....पहिले मैंने अपना नाम नहीं प्रकाश किया था। टाइटिल पेज पर प्रसिद्ध मायावी प्रणीत मुद्रित हुआ था। मैंने केवल अपने कई एक

में लिखी गई एक मन लुभानेवाली कहानी, लेखक—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, रायबहादुर रामरणविजय सिंह द्वारा प्रकाशित, पटना खड्ग-विलास प्रेस,—बाँकीपुर, बाबू राम प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित, १९२८, तृतीय बार।

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६२८।

२. श्री हरिहर नाथ, व्रजनन्दन सहाय, 'व्रजवल्लभ'—जीवनी तथा कृतियाँ (एम० ए० के लिए लिखित शोधप्रबन्ध) पृ० ६५।

मित्रों के अनुरोध से उनके चित्तविनोदार्थ ही ऐसा किया था और उन्हीं लोगों की सम्मति से टाइटिल पेज पर अब अपना नाम प्रकाशित करता हूँ।[१]

विवेच्य उपन्यासकार द्वारा सम्पादित 'समस्या पूर्ति' नामक पत्रिका में प्रकाशित 'राजेन्द्र मालती' के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इस उपन्यास के कई खंडों में प्रकाशित करने की योजना थी। विज्ञापन के अनुसार "राजेन्द्र मालती उपन्यास का, जिसकी सूचना मार्च महीने में दी गयी थी, प्रथम खंड तैयार है। ग्राहकों ही के सुभीता के लिए खंड २ करके छापने का प्रवन्ध हुआ है। छव खंड में ग्रन्थ पूरा होगा। इस खंड का मूल्य केवल =)"[2] पता नहीं, इसके सभी खंड प्रकाशित हो पाये अथवा नहीं। उपर्युक्त पत्रिका के एक अन्य विज्ञापन से हिन्दी पाठकों में उपन्यास पढ़ने की वढ़ती हुई रुचि का पता चलता है—

"यह उपन्यास (राजेन्द्र मालती) छप रहा है। ग्राहक लोग अभी से नाम पता तथा निछावर भी भेज रहे हैं। लोगों का अनुराग देखकर मूल्य भी कम रखा गया है। रायल आठपेजी के प्रायः ३०० पेज (सफा) की किताव है। अग्रिम मूल्य ।।।) पीछे देने से १)"[३]

श्री हरिहर नाथ ने अपने शोधप्रवन्ध में 'राजेन्द्र मालती' की कथा भी संक्षेप में दी है जिससे ज्ञात होता है कि राजेन्द्र कुमार और मालती का प्रेम, प्रणय मार्ग की वाधाएँ और अन्त में दोनों का परिणयसूत्र में वँधना, यही उपन्यास की प्रमुख कथा है।"[४]

अद्‌भुत प्रायश्चित्त

सन् १९०६ ई० के आरम्भ से ही **व्रजनन्दन सहाय** का दूसरा उपन्यास 'अद्‌भुत प्रायश्चित्त' स्वयं लेखक द्वारा आरा से प्रकाशित हुआ।[५] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असफल रहा है, पर इसके दूसरे संस्करण के साथ संलग्न 'निवेदन' के नीचे "ता० २५-१२-१९०५ ई०" मुद्रित है, जिससे उपर्युक्त सूचना की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।[६] 'निवेदन' से यह भी ज्ञात होता है कि **इस उपन्यास की रचना १९०१ ई० में हो चुकी थी**। स्वयं उपन्यासकार के शब्दों में "आज से चार वर्ष पूर्व यह ग्रन्थ लिखा गया था। पर अनेक कारणों से अभी तक यह प्रकाशित नहीं हुआ। मैं ईश्वर को अनन्त धन्यवाद देता हूँ कि जिसकी असीम दया और कृपा से आज मैं इस उपन्यास को आपलोगों के हाथ में देने योग्य हुआ।"[७]

अद्‌भुत प्रायश्चित्त' का द्वितीय संस्करण १९१० ई० में खड्गविलास प्रेस, वाँकीपुर

---

१. हरिहर नाथ, व्रजनन्दन सहाय 'व्रजवल्लभ'—जीवनी तथा कृतियाँ।

२. समस्यापूर्ति, अगस्त १८९७ (श्रीहरिहरनाथ के पूर्वोल्लिखित शोधप्रवंध से उद्धृत, पृ० ९७)।

३. समस्या पूर्ति, मार्च १८९७, (उपरिवत्)।

४. हरिहनाथ, 'व्रजनन्दन सहाय व्रजवल्लभ : जीवनी तथा कृतियाँ (अप्रकाशित) पृ० ९७-९८।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६२८।

६. अद्‌भुत प्रायश्चित, ले० व्रजनन्दन सहाय, खड्गविलास प्रेस, द्वितीय संस्करण १९१०, भूमिका।

७. उपरिवत्।

से प्रकाशित हुआ।[१]

इस उपन्यास में एक परिवार की कहानी है, जिसमें भूपेन्द्र और लवंग के, जो भाई-वहन हैं, दुःख और अध्यवसाय, तथा मदन के, जो भूपेन्द्र का फुफेरा भाई है, पतन और फिर भूपेन्द्र द्वारा उसके सुधार आदि का वर्णन किया गया है।

सौन्दर्योपासक

सन् १९११ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा रचित 'सौन्दर्योपासक' नामक भावुकताप्रधान उपन्यास खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[२] १९१९ ई० में इस का द्वितीय संस्करण खड्गविलास प्रेस से ही प्रकाशित हुआ[३]। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'सौन्दर्योपासक' का प्रकाशन-काल (प्रथम संस्करण, १९१९ ई० लिखा है, जो भ्रमोत्पादक है। वस्तुतः १९१९ ई० उक्त उपन्यास के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन-काल है न कि प्रथम संस्करण का।[४]

सन् १९१२ ई० में **ब्रजनन्दन सहाय** द्वारा लिखित 'राधाकान्त' नामक उपन्यास हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[५] इसका द्वितीय संस्करण हरिदास ऐंड कम्पनी से ही १९१८ ई० में प्रकाशित हुआ।[६] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर भूमिका के नीचे "बाबू बाजार, आरा, ता० ३०-७-१२" मुद्रित है, जिससे 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में प्रदत्त सूचनाओं की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

विवेच्य उपन्यास की भूमिका से ज्ञात होता है कि इस के प्रथम खंड की रचना बँगला नाटककार श्रीयुत गिरीशचन्द्र घोष कृत "बँगाल" नामक एक छोटी सी कहानी के आधार पर की गयी है, पर दूसरे भाग की रचना में किसी ग्रन्थ का आधार नहीं ग्रहण किया गया है।[७]

---

१ प्राप्तिस्थान—माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अद्भुत प्रायश्चित, (एक सामाजिक उपन्यास), बाबू ब्रजनन्दन सहाय (वकील), आरा, द्वारा विरचित तथा प्रकाशित, पटना खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, चंडी प्रसाद ने मुद्रित किया, दूसरी बार।

२. प्राप्ति स्थान—पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सौन्दर्योपासक, एक गद्य काव्य, प्रकाशक खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, १९११, प्रथम बार १२२५।

३. हरिहर नाथ, 'ब्रजनन्दन सहाय ब्रजवल्लभ : जीवनी तथा कृतियाँ'।

४. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० २३६ तथा ६२८।

५. माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६२८।

६. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राधाकान्त, एक सामाजिक उपन्यास, सौन्दर्योपासक, मैथिल कोकिल, अरण्यबाला, लालचीन आदि अनेक ग्रन्थों के रचयिता बाबू ब्रजनन्दन सहाय वकील, आरा द्वारा लिखित, प्रकाशक हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता सन् १९१८ ई०, दूसरी बार १०००।

७. राधाकान्त, ले० ब्रजनन्दन सहाय, प्र० हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण १९१८' भूमिका।

'राधाकान्त' में राधाकान्त और हरेन्द्र नामक दो मित्रों की कथा, जिसमें राधाकान्त के सम्पत्ति पाकर दुराचारी होने, एक महात्मा के उपदेश से सुधरने, हरेन्द्र के विपत्ति में पड़ने तथा राधाकान्त की सहायता से उसके विपत्तिमुक्त होने आदि का वर्णन किया गया है।

आरण्यवाला

सन् १९१५ ई० में ब्रजनन्दन सहाय लिखित 'आरण्यवाला' नामक उपन्यास जयराम दास गुप्त द्वारा काशी से प्रकाशित किया गया।[1] सन् १९२१ ई० में इसका दूसरा संस्करण राजघाट, काशी से शिवराम दास गुप्त द्वारा प्रकाशित किया गया।[2] इस उपन्यास में ईश्वर की सर्वव्यापकता तथा महिमा, प्रेम की महत्ता, मानव जीवन की नश्वरता संयम, सदाचार, सेवा, सत्यभाषण आदि से सम्बद्ध प्रवचनों और उपदेशों की प्रधानता है। उपन्यास का नायक मुकुन्द देव अपने एक मित्र के साथ विन्ध्याचल की पहाड़ियों में जाता है, जहाँ उसकी भेंट प्रेमानन्द नामक महात्मा से होती है। उधर कलकत्ते के करोड़पति ओंकार मल अपना उत्तराधिकारी खोजते खोजते विन्ध्याचल की पहाड़ियों में जा निकलते हैं, जहाँ ब्रजमंजरी नाम की आरण्यवाला उनकी सेवा पुत्री के समान करती है। एक दिन प्रेमानन्द और ब्रजमंजरी भी मिल जाते हैं और दोनों में प्रेम हो जाता है। अन्त में ओंकारमल ब्रजमंजरी को अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाकर उसका विवाह मुकुन्द देव से कर देते हैं।

महता लज्जाराम शर्मा

हिन्दी के प्राक्प्रेमचन्द युगीन मौलिक उपन्यासकारों में महता लज्जाराम शर्मा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। वैसे उनके पूर्व कई उपन्यासकारों ने सामाजिक समस्याओं पर मौलिक उपन्यास प्रस्तुत करने के प्रयत्न किये थे, पर जितनी संख्या में महता जी ने विशुद्ध सामाजिक उपन्यास लिखे, उतनी संख्या में इनके पूर्व का कोई भी उपन्यासकार सामाजिक उपन्यास लिखने में समर्थ नहीं हुआ था। उन्होंने १८९९ ई० से लेकर १९१५ ई० तक ८ उपन्यासों की रचना की, जिनका विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

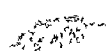
धूर्त रसिकलाल

सर्वप्रथम सन् १८९९ ई० में महता जी कृत 'धूर्त रसिकलाल' नामक उपन्यास

---

१. प्राप्ति स्थान—चै० पु०, गायघाट, पटना सिटी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आरण्यवाला (एक उपदेश प्रधान मनोहर उपन्यास), अख्तियारपुर (आरा) निवासी, बाबू ब्रजनन्दन सहाय, वकील विरचित 'उपन्यास बहार' नामक मासिक पत्र के मालिक अनेक उपन्यासों के रचयिता, काशी निवासी बाबू जयराम दास गुप्त द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १०००, जून सन् १९१५ ई०, पृ० सं० ३२।

२. प्रा० स्था०—मा० प० पटना।



वेंकटेश्वर यंत्रालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में धूर्त रसिकलाल द्वारा अपने भोलेभाले मित्र सेठ मोहनलाल को मद्यपान, वेश्यागमन, नरमैथुन और जूआ जैसे दुर्व्यसनों में फँसा कर उसका सर्वस्व हरण करने, साध्वी सत्यवती पर व्यभिचार का कलंक लगाकर उसे घर से निष्कासित करा देने, सेठ सोहन लाल के मद्यपान तथा वेश्यागमनादि के कारण स्वास्थ्य बिगड़ते बिगड़ते मुमूर्षु हो जाने तथा आत्मघातका प्रयत्न करने; सेठानी को विष देने के प्रयत्न में रसिकलाल के पकड़े जाकर दंड पाने, सेठ और सेठानी के मिलन तथा पुनः उनके सुखी होने आदि का वर्णन किया गया है।

स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी

१८९९ ई० में ही महता लज्जाराम शर्मा कृत 'स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी' शीर्षक उपन्यास वेंकटेश्वर यंत्रालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में स्त्री स्वातंत्र का मखौल उड़ाते हुए दिखाया गया है कि स्वतंत्रता प्राप्त करने से रमा को जीवन में अनेक कष्ट उठाने पड़े जबकि परतंत्र रह कर भी लक्ष्मी ने जीवनपर्यन्त सुख प्राप्त किया।

हिन्दू गृहस्थ

सन् १९०२ ई० में विवेच्य उपन्यासकार ने 'हिन्दू गृहस्थ, नामक उपन्यास लिखा, जो सन् १९०३ में वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[3] भूमिका से ज्ञात होता है कि इस उपन्यास की रचना १९०२ ई० में ही हो चुकी थी तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित होने के पूर्व यह 'वेंकटेश्वर समाचार' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। पाठकों के अनुरोध पर इसे पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया।[4] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन काल १९०९ ई० दिया है, जो भ्रामक है।[5]

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—धूर्त रसिकलाल, एक परम बोधजनक सामाजिक उपन्यास, जिसको "श्रीवेंकटेश्वर समाचार" के सम्पादक महता लज्जाराम जी शर्मा से रचना कराय खेमराज श्रीकृष्ण दास ने, बम्बई, निज 'श्रीवेंकटेश्वर' यन्त्रालय में मुद्रित कर प्रकासित किया, शके १८२१, संवत् १९५६, पृ० सं० ९६।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी, स्त्री शिक्षा-विषयक बोधजनक सामाजिक उपन्यास जिसको "श्रीवेंकटेश्वर समाचार" के सम्पादक महता लज्जाराम जी शर्मा बूँदी निवासी से रचना कराय खेमराज श्रीकृष्णदास ने बम्बई निज श्रीवेंकटेश्वर यंत्रालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया, सके १८२१, संवत १९५६, पृ० सं० १००।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हिन्दू गृहस्थ (एक शिक्षाजंनक सामाजिक उपन्यास), जिसको श्रीवेंकटेश्वर समाचार के सम्पादक महता लज्जाराम शर्मा से रचना कराय खेमराज श्रीकृष्णदास ने बम्बई निज श्रीवेंकटेश्वर (स्टीम) यन्त्रालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया, कार्तिक, संवत् १९६०, शके १८३५, पृ० सं० ८८।

४. हिन्दू गृहस्थ, ले० महता लज्जाराम शर्मा, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, सं० १९६० वि०, भूमिका।

५. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० २३८ तथा ६०२।

आदर्श दम्पती

सन् १९०२ ई० में ही महता लज्जाराम शर्मा ने 'आदर्श दम्पती' शीर्षक उपन्यास की रचना की, जो सन् १९०४ ई० में वेंकटेश्वर प्रेस, वम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास की भूमिका से ज्ञात होता है कि इसकी रचना संवत् १९५९ के कार्तिक मास में हो चुकी थी।[2]

इस उपन्यास में हिन्दू मान्यताओं के अनुरूप पति-पत्नी के आदर्श प्रेम का चित्रण किया गया है।

सुशीला विधवा

सन् १९०७ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'सुशीला विधवा' शीर्षक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, वम्बई से प्रकाशित हुआ।[3]

बिगड़े का सुधार अथवा सती सुखदेवी

सन् १९०७ ई० में ही महता लज्जाराम शर्मा कृत 'बिगड़े का सुधार अथवा सती सुखदेवी' शीर्षक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, वम्बई से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में पातिव्रत्य धर्म के आदर्शस्वरूप एक ऐसी स्त्री के चरित्र का वर्णन है जो अपने पति के अनेक अत्याचार सहकर भी उसे परमेश्वर मानती है और अपने आदर्श चरित्र के प्रभाव से उसे कुमार्ग से निवृत्त कर सुमार्ग पर लाने में सफल होती है।

विपत्ति की कसौटी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९०९ ई० में महता लज्जाराम शर्मा कृत

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श दम्पती, अर्थात् स्त्री शिक्षा विधायक, प्रभावोत्पादक, उपदेशपूर्ण सामाजिक उपन्यास जिसे "श्रीवेंकटेश्वर समाचार" के सम्पादक महता लज्जा राम शर्मा से रचना कराय खेमराज श्रीकृष्ण दास ने अपने "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया, वम्बई, संवत् १९६१, शके १८७६, पृ० सं० १८४।

२. उपरिवत्,

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुशीला विधवा, स्त्री शिक्षा विधायक, उपदेश पूर्ण सामाजिक उपन्यास जिसमें विधवा विवाह निराकरण और विधवा धर्म का वर्णन किया गया है जिसे बूँदी (राजपूताना) निवासी महता लज्जाराम शर्मा से रचना कराय, खेमराज श्रीकृष्ण दास ने वम्बई निज "श्री वेंकटेश्वर" स्टीम यंत्रालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया। संवत् १९६४, सन् १९०७।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बिगड़े का सुधार अथवा सती सुखदेवी, जिसमें एक दुराचारी पति सती पत्नी के सतीत्व से सदाचारी वन गया है, जिसे "श्रीवेंकटेश्वर समाचार" के भूतपूर्व सम्पादक, अनेक ग्रन्थों के रचयिता, बूँदी (राजपूताना) निवासी पं० महता लज्जाराम शर्मा से रचना कराय खेमराज श्रीकृष्णदास ने निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम यंत्रालय, वम्बई में मुद्रितकर प्रकाशित किया, संवत् १९६४, सन् १९०७, पृ० सं० ५६।

'विपत्ति की कसौटी' शीर्षक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, वम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

आदर्श हिन्दू

सन् १९१४-१५ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'आदर्श हिन्दू' शीर्षक उपन्यास, तीन भागों में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित किया गया।[2] इसका दूसरा संस्करण सम्भवतः १९२८ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ था।[3] इस उपन्यास में 'भूमिका' के अनुसार, "तीर्थयात्रा के व्याज से एक वाह्मण कुटुम्ब में सनातन धर्म का दिग्दर्शन, हिन्दूपन का नमूना, आजकल की त्रुटियाँ, राजभक्ति का स्वरूप, परमेश्वर की भक्ति का आदर्श और अपने विचारों की वानगी प्रकाशित करने का प्रयत्न किया गया है"।[4]

गोपाल राम गहमरी

गोपाल राम गहमरी अपराधप्रधान और जासूसी कथापुस्तकों के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं। किन्तु इन्होंने कुछ सामाजिक समस्याप्रधान उपन्यासों की रचना भी की थी, जिनका विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

देवरानी-जेठानी

सन् १९०२ ई० में **गहमरी जी** कृत 'देवरानी जेठानी' नामक सामाजिक समस्या-प्रधान उपन्यास श्री वेंकटेश्वर यंत्रालय, वम्बई से प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास में एक परिवार की दो बहुओं के परस्पर ईर्ष्या-द्वेष तथा छोटी बहू के आदर्श चरित्र का वर्णन किया गया है।

तीन पतोहू

सन् १९०५ ई० में **गहमरी जी** द्वारा लिखित 'तीन पतोहू' शीर्षक उपन्यास "श्री

---

१. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६०२।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श हिन्दू, लेखक महता लज्जाराम शर्मा, पहला भाग, १९१४, लीडर प्रेस, प्रयाग में मुद्रित, पृ० सं० २४२; दूसरा भाग, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, १९२८ (यह सम्भवत: दूसरा संस्करण है, यद्यपि मुखपृष्ठ पर इसका कोई संकेत नहीं मिलता), पृ० सं० २३८; तीसरा भाग, १९१५, लीडर प्रेस, प्रयाग में मुद्रित, पृ० सं० २४९।

३. द्रष्टव्य, दूसरा भाग का मुखपृष्ठ।

४. आदर्श हिन्दू, प्रथम भाग, भूमिका।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—देवरानी-जेठानी (एक सामाजिक उपन्यास), जिसको गहमर निवासी वाबू गोपाल राम द्वारा निर्मित कराय खेमराज श्रीकृष्ण दास

वेंकटेश्वर" प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ ।[1] इस उपन्यास में भी पूर्वोक्त उपन्यास की तरह एक परिवार की तीन बहुओं के परस्पर कलह और छोटी बहू के आदर्श चरित्र का वर्णन किया गया है ।

चन्द्रशेखर पाठक

रमाबाई

प्राक्‌प्रेमचन्द युग के प्रमुख उपन्यासकारों में पं० चन्द्रशेखर पाठक भी उल्लेख्य हैं । सर्वप्रथम सन् १९०७ ई० में उनका 'रमाबाई' नामक उपन्यास दो भागों में जाह्नवी प्रेस, चुनार से प्रकाशित हुआ ।[2] इस पुस्तक की 'अपनी रामकहानी' से ज्ञात होता है कि उस समय उपन्यासकार की अवस्था केवल बीस वर्ष की थी ।[3] इस उपन्यास में प्रेम, आर्थिक विषमता और विवाह की समस्या को कथा का मुख्य आधार बनाया गया है । आर्थिक वैषम्य के कारण इस उपन्यास के प्रेमी प्रेमिका परिणयसूत्र में बँधने में असमर्थ होते हैं ।

वारांगना रहस्य वा स्त्री वैचित्र्य

सन् १९१४ ई० में चन्द्रशेखर पाठक का सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास 'वारांगना रहस्य वा स्त्री वैचित्र्य' प्रकाशित होना शुरू हुआ । यह उपन्यास छह भागों में समाप्त हुआ है । इसके प्रथम दो भाग १९१४ ई० में स्वयं लेखक द्वारा जगमोहन शाह की गली, कलकत्ता से प्रकाशित किये गये ।[4] इसका तीसरा भाग १९१५ ई० में[5], चौथा भाग १९१६ ई० में[6],

---

ने बम्बई निज "श्री वेंकटेश्वर" (स्टीम) यंत्रालय में मुद्रित कर प्रसिद्ध किया, पौष संवत १९५८, शके १८८३, पृ० सं० ११६ ।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—तीन पतोहू, (एक हिन्दू गार्हस्थ्य रोचक उपन्यास) जिसको गहमर निवासी बाबू गोपाल राम द्वारा निर्मित कराय खेमराज श्रीकृष्ण दास ने बम्बई निज श्रीवेंकटेश्वर (स्टीम) प्रेस में मुद्रित कर प्रसिद्ध किया, मार्गशीर्ष सं १९६१, शके १८२६, पृ० सं० २२८ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रमाबाई, एक सामाजिक रोचक उपन्यास, बिहार निवासी पंडित चन्द्रशेखर पाठक, जिसे पं० श्रीकान्त उपासनी—मैनेजर जाह्नवी प्रेस, चुनार ने उपन्यास रसिकों के चित्तविनोदार्थ प्रकाश कर वितरित किया । सन् १९०७ ई०, प्रथमावृत्ति १०००, पृ० सं० ४१ ।

३. उपरिवत्, अपनी रामकहानी ।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठकी प्रतिलिपि—वारांगना रहस्य वा स्त्री वैचित्र्य, ले० पं० चन्द्रशेखर पाठक, पहला भाग, नं० १ जगमोहन शाह की गली, चोर बगान, कलकत्ता से प्रकाशित, ई० सन् १९१४, प्रथम बार १०००; दूसरा भाग, प्रथम बार १०००, १९१४, (अन्य सूचनाएँ उपरिवत्) ।

५. तीसरा भाग, प्रथम बार १५००, १९१५ ई०, अन्य सूचनाएँ उपरिवत् ।

६. चौथा भाग का प्रथम सं० प्राप्त करने में मैं असमर्थ रहा हूँ । प्रकाशन काल आनुमानिक है ।

पाँचवाँ भाग १९१७ ई० में[1] और छठा भाग १९१८ ई० में[2], स्वयं लेखक द्वारा ही कलकत्ता से प्रकाशित किया गया। यह उपन्यास हिन्दी पाठकों में बहुत लोकप्रिय हुआ। इसके छहो भागों के कम से कम तीन संस्करण तो अवश्य प्रकाशित हुए थे। कुछ भागों के चार चार, पाँच पांच संस्करण होने की भी सूचना मिलती है। इसके प्रथम भाग का पाँचवाँ संस्करण १९३५ ई० में पाठक एंड कम्पनी, ५ शिमला स्ट्रीट, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।[3] इसके दूसरे भाग का तीसरा संस्करण १९२३ ई० में[4] और चौथा संस्करण १९२८ ई० में[5] निकला था। तीसरे भाग का तीसरा संस्करण १९२० ई० में[6] और चौथा संस्करण १९२७ ई० में[7] प्रकाशित हुआ। चौथे भाग का दूसरा संस्करण १९२२ ई० में[8] और पाँचवें भाग का दूसरा संस्करण अगस्त १९२६ ई० में[9] निकला। छठे भाग का दूसरा संस्करण १९२२ ई० में[10] तथा तीसरा संस्करण १९२८ ई० में[11] प्रकाशित हुआ। इससे सिद्ध है कि 'वारांगना रहस्य' हिन्दी पाठकों की रुचि के अनुकूल सिद्ध हुआ था। इस उपन्यास में वारांगनाओं के प्रकार तथा उनकी चालों का वर्णन करते हुए पातिव्रत्य का महत्त्व-प्रतिपादन किया गया है।

ईश्वरीप्रसाद शर्मा

हिरण्यमयी

सन् १९०८ ई० में पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा लिखित 'हिरण्यमयी' नामक उपन्यास भारत जीवन यन्त्रालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[12] इस उपन्यास में स्मृतिसम्मत नारी धर्म के उल्लंघन का दुष्परिणाम दिखाया गया है। विधवा हिरण्यमयी धन-वैभव के लोभ में एक वंचक के साथ कलकत्ता जाती है और वहाँ अनेक कष्ट भोगती है। यहाँ तक कि अन्त में उसे अपने प्राणों से भी हाथ धोना पड़ता है।

---

१. पाँचवाँ भाग, प्रथम वार १०००, सं० १९७४ (अन्य सूचनाएँ प्रथम भाग की तरह)
२. छठा भाग का प्रथम संस्करण प्राप्त करने में मैं असमर्थ रहा हूँ। प्रकाशन-काल आनुमानिक है।
३. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
५. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना।
६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
७. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
९. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना।
१०. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
११. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना।
१२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हिरण्यमयी (उपन्यास), श्रीईश्वरी प्रसाद शर्मा, सम्पादक हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय (आरा) द्वारा प्रणीत, काशी, भारत जीवन यन्त्रालय में श्रीकृष्ण द्वारा मुद्रित, सन् १९०८ ई०, प्रथम वार ११००, पृ० सं० ५४।

स्वर्णमयी वा जैसी करनी वैसी भरनी

सन् १९१० ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'स्वर्णमयी वा जैसी करनी वैसी भरनी' नामक सामाजिक उपन्यास बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा केशव यंत्रालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में पातिव्रत्य-महिमा, पाप-परिणाम तथा मैत्री का आदर्श आदि दिखाया गया है।

नलिनी बाबू

सन् १९११ ई० में पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा रचित 'नलिनी बाबू' नामक एक हास्य-पूर्ण छोटा सा सामाजिक उपन्यास बाबू रामलाल वर्मा द्वारा, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' तथा 'सरस्वती' (अगस्त १९१२ ई०) में प्रकाशित पुस्तक-परिचय से प्राप्त की गयी हैं।[2]

मागधी कुसुम वा सरला सुन्दरी

सन् १९११ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'मागधी कुसुम वा सरला सुन्दरी' नामक उपन्यास विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में मुख्यतः जगदीश्वर प्रसाद नामक पात्र के अपनी साली मालती के प्रति असफल प्रेम का चित्रण किया गया है।

फुटकल उपन्यास

विवेच्य अवधि में लिखित-प्रकाशित फुटकल उपन्यासों की संख्या काफी है। परवर्ती पृष्ठों में इनका विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

सुहासिनी

सन् १८९० ई० में **'किसी साध्वी सती प्राणा अबला'** लिखित 'सुहासिनी' नामक उपन्यास धर्मामृत प्रेस, बनारस सिटी से मुद्रित तथा श्री राधिकानाथ बंद्योपध्याय द्वारा

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि--स्वर्णमयी वा जैसी करनी वैसी भरनी, उपन्यास, हिरण्यमयी, मृण्मयी, कोकिला, आदर्श भगिनी आदि उपन्यासों के रचयिता, आरा निवासी पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा (दीनानाथ) प्रणीत, बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा ने काशी, केशव यन्त्रालय में प्रकाशित किया, प्रथम बार २०००, सन् १९१०, पृ० ४९।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३८५; सरस्वती, भाग १२, सं० ८, अगस्त १९१२, पुस्तक परिचय।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मागधी कुसुम वा सरला सुन्दरी (उपन्यास), हिरण्यमयी, मृण्मयी, कोकिला, आदर्श भगिनी, चन्द्रकुमार, मानसिंह, दो बहन, नलिनी बाबू, कमल देवी, स्वर्णमयी प्रभृति उपन्यासों के रचयिता, आरा नगर निवासी पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा लिखित जिसे बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा मालिक उपन्यास दर्पण, काशी ने

प्रकाशित हुआ।[१]

सौदामिनी

सन् १८९०-९१ ई० में ही **राधाचरण गोस्वामी** लिखित 'सौदामिनी' नामक उपन्यास, जिसे स्वयं लेखक ने 'नवन्यास' की संज्ञा दी थी, 'भारतेन्दु मासिक पत्र' के कतिपय अंकों में प्रकाशित हुआ था।[२] बाद में यह उपन्यास पं० भगवानदास शर्मा द्वारा पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ।[३] पुस्तक में मुद्रण-काल नहीं दिये रहने के कारण इसके सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना दे पाना सम्भव नहीं है। चै० पु०, पटना में इस उपन्यास की एक प्रति है, जिस पर पुस्तकालय में प्रवेश-तिथि "११-७-०३" अंकित है। पुस्तक के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर मुद्रित एक विज्ञापन के अन्त में "वे० स० ता० ४-१-१९०१" मुद्रित है। इससे पुस्तक रूप में 'सौदामिनी' का मुद्रण-काल १९०१ और १९०३ ई० के बीच सिद्ध होता है।

सौ अजान एक सुजान

सन् १८९० ई० में ही 'हिन्दी प्रदीप', जिल्द १३, सं० ११-१२ (जून-अगस्त १८९० ई०) से **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित 'सौ अजान एक सुजान' नामक उपन्यास छपना शुरू हुआ और (जनवरी-फरवरी-मार्च १८९५ ई०) तक प्रकाशित होता रहा।[४] पुस्तक रूप में यह उपन्यास १९०६ ई० में स्वयं भट्ट जी द्वारा प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असफल रहा है। भट्ट जी ने जुलाई १९०६ ई० के 'हिन्दी प्रदीप' में इस उपन्यास के पुस्तकाकार प्रकाशित होने की सूचना निम्नांकित पंक्तियों में दी थी :

काशी केशव प्रेस में छपवाकर प्रकाशित किया। सन् १९११ ई०, प्रथम बार १०००।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुहासिनी (उपन्यास), किसी साध्वी सती प्राणा अबला द्वारा लिखित, चौबीस परगनांतर्गत इछापुर निवासी श्रीराधिका नाथ वन्द्योपाध्याय द्वारा प्रकाशित हुआ, वनारस सिटी, धर्मामृत प्रेस, १८९०, मूल्य।), पृ० सं० ५२।

२. सौदामिनी उपन्यास 'भारतेंदु मासिक पत्र' के निम्नलिखित अंकों में प्रकाशित हुआ था :
पुस्तक ५, १ अक्तूबर १८९० ई०, अंक १, १ फरवरी १८९१ ई०, अंक २, १ मार्च, अप्रील-मई-जून १८९१ ई०, अंक ३, ४, ५, ६।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सौदामिनी (नवन्यास), श्री राधाचरण गोस्वामी विद्या वागीश, म्यूनिसिपल कमिश्नर और आनरेरी मेजिस्ट्रेट श्रीवृंदावन रचित, भारतेन्दु मासिक पत्र से उद्धृत, भारतीय नूतन व्यापार मंडली, मेरठ के मैनेजर पं० भगवान दास शर्मा द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण मूल्य =), पृ० सं० २८।

४. सौ अजान एक सुजान 'हिन्दी प्रदीप' की निम्नलिखित संख्याओं में प्रकाशित हुआ था :—
जिल्द १३, संख्या ११-१२ (जुलाई-अगस्त १८९०)
जिल्द १४, संख्या १ से १२ तक लगातार (सितम्बर १८९०-अगस्त १८९१)
जिल्द १५, सं० १ (सितम्बर १८९१), सं० ३-४ (नवम्बर-दिसम्बर १८९१), सं० ६ से १० तक (फरवरी-जून १८९२)
जिल्द १७, संख्या ५ से १० तक (जनवरी-जून १८९४)

"यह एक प्रबन्ध कल्पना है जिसे 'हिन्दी प्रदीप' की पिछली जिल्दों से संग्रहीत कर हमने अलग छपवाया है।"[1]

डॉ० माताप्रसाद गुप्त[2] तथा शिवनारायण श्रीवास्तव ने[3] 'सौ अजान एक सुजान' का प्रकाशन काल १८९२ ई० दिया है, जो अशुद्ध है।

अगस्त १९१५ ई० की 'सरस्वती' में प्रकाशित समीक्षा से ज्ञात होता है कि विवेच्य उपन्यास का दूसरा संस्करण हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से १९१५ ई० में, अथवा उनके कुछ पूर्व प्रकाशित हुआ। समीक्षाकार के शब्दों में "सौ अजान एक सुजान-आकार मँझोला, पृ० सं० १०३। यह एक छोटा सा उपदेशपूर्ण उपन्यास है।...पहले पहल 'हिन्दी प्रदीप' में क्रम-क्रम से छपा था। फिर भट्ट जी ने इसे अलग पुस्तकाकार छपाया था। अब इसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) ने प्रकाशित किया है। इसे पढ़ने से शिक्षा भी मिल सकती है और भट्ट जी की अनोखी रचना शैली का रसास्वादन भी प्राप्त हो सकता है।"[4]

'सौ अजान एक सुजान' का तीसरा संस्करण १९१९ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व, श्री महादेव भट्ट द्वारा प्रकाशित हुआ था, इसकी सूचना सितम्बर १९१९ ई० की 'मर्यादा' में प्रकाशित समीक्षा से प्राप्त होती है।[5] इस उपन्यास का पाँचवाँ संस्करण गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ से सं० १९८५ वि० (१९१८ ई०) में प्रकाशित हुआ।[6]

सच्चा मित्र

डॉ० माताप्रसाद गुप्त[7] के अनुसार १८९१ ई० में किसी देवदत्त लिखित 'सच्चा मित्र' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

हमारी घड़ी : रसातल यात्रा उपन्यास : धर्मराज की कहानी

सन् १८९२ ई० में **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित तीन अधूरी कथाएँ—'हमारी घड़ी' 'रसातल यात्रा उपन्यास' और 'धर्मराज की कहानी'—प्रकाशित हुईं। 'हमारी घड़ी उपन्यास' और 'रसातल यात्रा उपन्यास' एक साथ 'हिन्दी प्रदीप' के केवल एक अंक में—जिल्द १५, सं० ८-९-१० (अप्रील-मई-जून १८९२)---प्रकाशित होकर रह गये। 'हमारी घड़ी' को लेखक ने उपन्यास की संज्ञा दी है, किन्तु इसे उपन्यास कहने की अपेक्षा 'एक बड़ी आत्म-कथा' कहना अधिक युक्तिसंगत है। इस कथा में एक घड़ी अपनी यात्रा की कहानी सुनाती

जिल्द १८, सं० १-२ (सितम्बर-अक्तूबर १८९४), सं० ५-६-७ (जनवरी-फरवरी-मार्च १८९५)

१. हिन्दी प्रदीप, जिल्द २८, सं० ७, जुलाई सन् १९०६ ई०।

२. हि० पु० सा०, पृ० २६।

३. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास, पृ० ३०।

४. सरस्वती, भाग १६, सं० ८, अगस्त १९१५ ई०।

५. मर्यादा, भाग १८, सं० ३, सितम्बर १९१९, हमारा पुस्तकालय स्तम्भ।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सौ अजान और एक सुजान (एक प्रबन्ध कल्पना) लेखक स्वर्गवासी पं० बालकृष्ण भट्ट, (एक श्लोक), प्रकाशक गंगा पुस्तक माला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ, पंचमावृत्ति, सं० १९८५ वि० (१९२८ ई०)।

७. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० २६।

है । लेखक अन्त में कहता है—"यह एक नये प्रकार का लेख है यदि हमारे पढ़नेवाले इसे पसन्द करें तो हम छापते रहें ।" यह इसके वाद के किसी अंक में 'यह लेख' नहीं छपा ।

'धर्मराज की कहानी,' 'हिन्दी प्रदीप' के दो अंकों में—जिल्द १५, सं० ११-१२ (जुलाई-अगस्त १८९२) और जिल्द १६, सं० १ (सितम्बर १८९२) में अंशतः प्रकाशित हुआ ।

चन्द्रकला

सन् १८९३ ई० में **कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी** ने 'चन्द्रकला' नामक उपन्यास की, जिसे 'प्रेमाख्यानक उपन्यास' की संज्ञा देना अधिक उपयुक्त है, रचना की जो भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास का दूसरा संस्करण भी भारत जीवन प्रेस, काशी से ही प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन दोनों में से किसी भी संस्करण को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सका है । उपर्युक्त सूचनाएँ इसके तीसरे संस्करण के 'उपक्रम' ओर 'वक्तव्य' से ज्ञात होती हैं ।[1]

'चन्द्रकला' का तीसरा संस्करण १९०७ ई० में राजपूत ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस, आगरा से प्रकाशित हुआ ।[2] उपन्यास के 'वक्तव्य' में इसे 'संशोधित तृतीयावृत्ति' कहा गया है ।

'चन्द्रकला' में एक साहस प्रधान प्रेमकथा का वर्णन है, यद्यपि तत्कालीन समाज का चित्र भी इसमें निवद्ध है ।

हुकुमदेवी

सन् १८९३ ई० में **श्रीमती हरदेवी** लिखित 'हुकुमदेवी' नामक गद्यकथा इलाहावाद से प्रकाशित हुई ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

वचन तरंगिणी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १८९३ ई० में ही **भवदेव पंडित** लिखित 'वचन तरंगिणी' नामक उपन्यास नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ ।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

समुद्र में गिरीन्द्र

सन् १८९३ ई० में **ल० ना० शर्मा** (पुस्तक के मुखपृष्ठ पर लेखक का नाम नहीं

---

१. चन्द्रकला, कुँवर हनुमंत सिंह रघुवंशी, प्र० राजपूत ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, आगरा, तीसरा संस्करण, उपक्रम तथा वक्तव्य ।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रकला, एक शिक्षापूर्ण उपन्यास, कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी प्रणीत, आगरा, राजपूत ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, सितम्बर १९०७ ई० ।
३. कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, पृ० ६२ में इस पुस्तक की सूचना निम्नलिखित रूप में दी हुई है :
हुकुम देवी, ए ट्रू टेल ऑफ ए वर्चूअस हिन्दू लेडी, बाइ श्रीमती हरदेवी, पी० पी० ६२, १२ मो०, इलाहाबाद, १८९३ ।
४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २३० तथा ५३३ ।

है। 'प्रस्तावना' के अंत में "ल० ना० शर्मा०" मुद्रित है।) रचित 'समुद्र में गिरीन्द्र' नामक उपन्यास 'विहार बन्धु' के कतिपय अंकों में प्रकाशित हुआ।[1] पुस्तक रूप में यह उपन्यास सन् १८९४ ई० में विहार बन्धु छापाखाना, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में गिरीन्द्र नामक लड़के के समुद्र में नाव लेकर निकलने तथा एक निर्जन द्वीप में जाने और दो वर्ष तक वहाँ निवास करने का वर्णन है। इस उपन्यास पर 'राबिंसन क्रूसो' का प्रभाव लक्षित होता है।

पुष्पवती

सन् १८९४ ई० में **पं० गोकुलनाथ शर्मा (औदीच्य)** कृत 'पुष्पवती' नामक उपन्यास हरिप्रकाश यंत्रालय, काशी से मुद्रित हुआ।[3]

चतुरा अर्थात् साधवी सुरेन्द्र

इसी वर्ष **श्री सतीश चन्द्र वसू** प्रणीत 'चतुरा अर्थात् साधवी सुरेन्द्र' नामक उपन्यास मून प्रेस, आगरा से मुद्रित हुआ।[4]

सुवामा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १८९४ ई० में ही किसी **राम गुलाम** लिखित 'सुवामा' नामक 'उद्देश्य प्रधान उपन्यास' वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ, जिसमें नायक और नायिका के प्रेम तथा मातापिता की सम्मति से दोनों के विवाह का वर्णन है।[5]

ललित लता

सन् १८९५ ई० में **बाबू रामप्रकाश लाल** लिखित 'ललित लता' नामक एक 'क्षुद्र

---

१. 'विहार बंधु' के अग्रांकित अंकों में 'समुद्र में गिरीन्द्र' क्रमशः प्रकाशित हुआ था—मई १८९३, बाईसवाँ भाग, नं० ५ (पृ० ६५-८०); जून १८९३, बाईसवाँ भाग, सं० ६ (पृ० ८१-९६); जुलाई १८९३, २२वाँ भाग, नं० ७ (पृ० ९७-१२०); अगस्त-सेप्टेम्बर, २२वाँ भाग, नं० ८-९ (पृ० १२१-१४२)।

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—समुद्र में गिरीन्द्र, अर्थात् एक लड़के का अकेला समुद्र में डेंगी पर निकलना और निर्जन टापू में वास, पहली आवृत्ति ५००, बाँकीपुर, विहार बन्धु छापाखाना, १८९४, दाम नव आना, पृ० सं० १४२।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पुष्पवती, काशी निवासी पं० गोकुल-नाथ-शर्मा (औदीच्य) विरचित, काशी, हरिप्रकाश यंत्रालय में बाबू अमीर सिंह द्वारा मुद्रित, संवत् १९५१, प्रथमवार १०००, मूल्य डाक-व्यय साहित।=)॥, पृ० सं० ६४।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चतुरा अर्थात् साधवी सुरेन्द्र (उपन्यास), श्री सतीशचंद्र वसू प्रणीत, आगरा १८९४, प्रिंटेड ऐट मून प्रेस आगरा, पृ० सं० २८।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २७ तथा ५७९।

उपन्यास' का एक परिच्छेद जून १८९५ के 'हिन्दी प्रदीप' में प्रकाशित हुआ।[1] यह उपन्यास अधूरा ही छपकर रह गया।

भाग्य की परख

सन् १८९५-९६ में **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित "भाग्य की परख—एक मनोरंजक उपन्यास", 'हिन्दी प्रदीप' के कतिपय अंकों में अपूर्ण रूप में प्रकाशित हुआ।[2] 'हिन्दी प्रदीप' में इस उपन्यास के रचयिता का नाम नहीं दिया हुआ है। अनुमानतः इसके लेखक पं० **बालकृष्ण भट्ट** हैं। भाषाशैली पर ध्यान देने से यह भट्ट जी का ही उपन्यास जान पड़ता है।

इलामती

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १८९६ ई० में **श्री तुलसी प्रसाद** रचित 'इलामती' नामक उपन्यास सारन सुधाकर प्रेस, छपरा से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

नीलमणि

सन् १८९६ ई० में **श्री जगन्नाथ शरण (एक ग्रेजुएट)** ने 'नीलमणि' नामक उपन्यास की रचना की[4], जो १८९७ ई० में 'सारन सुधाकर' प्रेस, छपरा से प्रकाशित हुआ।[5] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर लेखक को 'एक ग्रेजुएट' बताया गया है, तथा भूमिका के अन्त में" 'जगन्नाथ शरण', मुद्रित है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस उपन्यास का प्रकाशन-काल १८९६ ई० दिया है, जो अशुद्ध है।[6]

राजकुमारी चन्द्रमुखी

सन् १८९८ ई० में **बाबू रामदास वर्मा** लिखित 'राजकुमारी चन्द्रमुखी' नामक उपन्यास वेंकटेश्वर मुद्रणालय, बम्बई से मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[7]

---

१. हिन्दी प्रदीप, जिल्द १८, सं० ८-९-१० अप्रील-मई-जून १८९५।

२. भाग्य की परख-एक मनोरंजक उपन्यास, हिन्दी प्रदीप के अग्रांकित अंकों में प्रकाशित हुआ था—जिल्द १८, सं० ११-१२, जुलाई-अगस्त १८९५; जिल्द १९, सं० १-४, सितम्बर-दिसम्बर १८९५; जिल्द १९, सं० ५-८, जनवरी-अप्रैल १८९६।

३. हि० पु० सा०, पृ० २३० तथा ४७१।

४. पुस्तक की भूमिका के अन्त में 'जगन्नाथ शरण' और "ता० १-४-९६" मुद्रित है।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नीलमणि (एक नवीन उपन्यास) जिसमें नीलमणि तथा चन्द्रकला का परस्पर प्रेम और चन्द्रकला का दृढ़ सतीत्व भली भांति से वर्णित है; बाइ ए ग्रेजुएट, छपरा, छपरा, सारन सुधाकर प्रेस में मुद्रित हुई, संवत् १९५४ साल, फर्स्ट एडीशन ५०० कौपीज, पृ० सं० १०५।

६. माता प्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २३० तथा ४४८।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजकुमारी चन्द्रमुखी, श्रृंगार,

अपूर्व संन्यासी

१८९८ ई० में ही **पं० रुद्रदत्त शर्मा** लिखित 'अपूर्व संन्यासी' नामक उपन्यास श्रीयुत बाबू ठाकुर प्रसाद द्वारा दानापुर से प्रकाशित किया गया ।[1]

सरस्वती

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १८९८ ई० में **श्री दुर्गादत्त मिश्र** लिखित 'सरस्वती' नामक उपन्यास बनारस से स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असफल रहा है ।

वसन्त मालती

सन् १८९९ ई० में **पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी** ने 'वसन्त मालती' नामक उपन्यास की रचना की, जो इसी वर्ष प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर इसके दूसरे संस्करण के साथ संलग्न प्रथम संस्करण के 'पाठकों के प्रति निवेदन' के अन्त में "१४-४-१८९९ ई०" तिथि मुद्रित है । डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार यह उपन्यास १८९९ ई० में चतुर्वेदी भोलानाथ शर्मा द्वारा मुक्ताराम स्ट्रीट, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[3]

'वसन्त मालती' का दूसरा संस्करण १९१५ ई० में कलकत्ता से चतुर्वेदी भोलानाथ शर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, पर 'दूसरी बार का निवेदन' के अन्त में 'शिवरात्रि सं० १९७१' मुद्रित है ।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'वसन्त मालती' को ऐयारी-तिलिस्मी उपन्यास की संज्ञा दी है[5] जो नितान्त भ्रामक है । इस उपन्यास में ऐयारी और तिलस्म की कहीं चर्चा भी नहीं है । पति-पत्नी के एकनिष्ठ प्रेम का चित्रण इस उपन्यास का मुख्य विषय है ।

वीर, करुण तथा नैराश्य रसपूरित एक प्रभावोत्पादक उपन्यास, "श्री वेंकटेश्वर समाचार" के सम्पादक बाबू रामदास वर्मा द्वारा निर्मित कराय, खेमराज श्रीकृष्ण दास ने बम्बई निज "श्री वेंकटेश्वर" मुद्रणालय में छापकर प्रसिद्ध किया । संवत् १९५५, १८९८ ई० ।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अपूर्व्व संन्यासी, अर्थात् शिक्षा विषयक मनोहर उपन्यास जिसे श्रीयुत पंडितवर रुद्रदत्त शर्म्मा जी से निर्माण करा के—श्रीयुत बाबू ठाकुर प्रसाद शाह ने साहित्य प्रेमियों के अवलोकनार्थ छपवाकर प्रकाशित किया । दानापुर सृष्ट्यब्द १९७२४८९९९ प्रथमावृत्ति : १००० प्रति, संवत् १९५५, पृ० सं० ६२ ।

२. हि० पु० सा०, पृ० २३० तथा ४७८ ।

३. उपरिवत्, पृ० ४४७

४. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वसंत मालती, अर्थात् एक अद्भुत और मनोहर उपन्यास, पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी रचित, प्र० चतुर्वेदी भोला नाथ शर्मा, १०३ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता । द्वितीय बार २००० प्रतियाँ ।

५. हि० पु० सा०, पृ० ३२ ।

जन्माष्टमी

सन् १८९९ ई० में ही **पं० बलदेव प्रसाद मिश्र** रचित 'जन्माष्टमी' नामक उपन्यास लक्ष्मी नारायण प्रेस, मुरादाबाद से मुद्रित तथा मैनेजर, तंत्रोद्धार कार्यालय द्वारा प्रकाशित हुआ।[1]

दीनानाथ वा गृह चरित्र

१८९९ ई० में ही **कार्तिक प्रसाद खत्री** रचित 'दीनानाथ वा गृह चरित्र' नामक उपन्यास फ्रेंड ऐंड कम्पनी, मथुरा से प्रकाशित हुआ।[2] इसका दूसरा संस्करण १९०७ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[3]

सुधामुखी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १८९९ ई० में **श्री राम स्वरूप शर्मा** लिखित 'सुधामुखी' शीर्षक उपन्यास मुरादाबाद से स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

उपन्यास भंडार : अपना यथार्थ हक्क : सत्कुलाचार

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०० ई० में **कन्हैया लाल श्याम सुन्दर त्रिपाठी** लिखित 'उपन्यास भंडार' नामक उपन्यास प्रेम संचारक कम्पनी, मुरादाबाद से[4], **हनुमान प्रसाद** लिखित 'अपना यथार्थ हक्क' लालता प्रसाद फलहा द्वारा मिर्जापुर से[5] तथा **मुरलीधर शर्मा** लिखित 'सत्कुलाचार' शीर्षक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से[6] प्रकाशित हुए। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन उपन्यासों को प्राप्त करने में असफल रहा है।

शीला

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०१ ई० में **श्री हरिहर प्रसाद जिजल** द्वारा लिखित 'शीला' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा गया से प्रकाशित हुआ।[7] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जन्माष्टमी (उपन्यास), मुरादाबाद निवासी स्वर्गीय सुखानन्द मिश्रात्मज पं० बलदेव प्रसाद मिश्र द्वारा रचित जिसको मैनेजर तन्त्रोद्धार कार्यालय ने "लक्ष्मी नारायण" प्रेस में मुद्रित कराकर प्रकाशित किया। मुरादाबाद, १८९९ ई०, पृ० सं० १५।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दीनानाथ वा गृहचरित्र, श्रीकार्तिक प्रसाद खत्री लिखित और नन्दलाल वर्मा, मैनेजर, फ्रेंड ऐंड कम्पनी, मथुरा द्वारा प्रकाशित; संवत् १९५६ वि०, प्रथमवार १०००।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. हि० पु० सा०, पृ० २३० तथा ३९३।

५. उपरिवत्, पृ० २३१ तथा ६७५।

६. उपरिवत्, पृ० २३१ तथा ५५३।

७. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ६८५।

कर्कशा सास

सन् १९०१-०२ ई० में 'पांचाल पंडिता' के खंड ५ और ६ में लाला देवराज लिखित 'कर्कशा सास' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[1] सन् १९०४ ई० में यह उपन्यास पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ।[2] इस कथा में हिन्दू बहुओं पर सासों द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन करके इस बात का उपदेश दिया गया है कि बहुओं तथा सासों को किस प्रकार आपस में अच्छा सम्बन्ध बनाये रखना चाहिए।

सती सुखदेई

डॉ० गुप्त के अनुसार सन् १९०२ ई० में अमृतलाल चक्रवर्ती द्वारा लिखित 'सती सुखदेई' नामक उपन्यास कृष्णानन्द शर्मा द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'सती सुखदेई' का दूसरा संस्करण, जो भारत मित्र प्रेस से श्री कृष्णानन्द शर्मा द्वारा मुद्रित और प्रकाशित हुआ था, आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में उपलब्ध है।[4] पुस्तक की 'भूमिका' के अनुसार 'सती सुखदेई'[5] उपन्यास कई वर्ष पहले पति की स्त्री नाम से "भारतमित्र" के कई अंकों में प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् किसी सज्जन ने उसको काशी के "भारत जीवन" प्रेस से पुस्तकाकार छपाकर प्रकाशित किया था। किन्तु प्रकाशक की रुचि के अनुसार उसमें ऐसे परिवर्तन किये गये थे तथा प्रूफ शोधने के दोष से ऐसी ऐसी त्रुटियाँ रह गयी थीं कि····पुनर्वार उसे छापकर प्रकाशित करने की बड़ी इच्छा हुई थी। वह इच्छा इतने दिनों के पीछे पूरी करने का अवकाश मिला।"

चम्पा

सन् १९०२ ई० में श्री श्याम लाल चक्रवर्ती द्वारा लिखित 'चम्पा' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा आलमगंज से प्रकाशित हुआ।[6] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

श्याम विनोद

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०३ ई० में ही श्याम जी शर्मा काव्यतीर्थ

---

१. लाला देवराज, कर्कशा सास, १९०४, भूमिका।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कर्कशा सास, लाला देवराज, प्रधान कन्या महाविद्यालय, जालन्धर विरचित, अक्तूबर सन् १९०४, पहिली बार २०००।
३. हि० पु० सा०, पृ० ३७४। हि० पु० सा० के पृ० २७ पर इसका प्र० का० १९०२ और पृ० ३७४ पर १९०३ दिया हुआ है।
४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सती सुखदेई, भारतमित्र सम्पादक अमृत लाल चक्रवर्ती लिखित, कलकत्ता, ९७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, भारत मित्र प्रेस, से श्रीकृष्णानन्द शर्मा द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९६५, पृ० सं० ५२।
५. उपरिवत्, भूमिका।
६. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची तथा हि० पु० सा०, पृ० ६४५।

रचित 'श्याम विनोद' शीर्षक उपन्यास माखन लाल वसु द्वारा मोतिहारी से प्रकाशित हुआ ।[१]

चन्द्रावली

सन् १९०२ ई० में ही **लालजी सिंह** द्वारा लिखित 'चन्द्रावली' नामक उपन्यास काशी से बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ ।[२] इस उपन्यास में चन्द्रावली नामक पतिव्रता स्त्री की धर्मनिष्ठा और सतीत्व का चित्रण किया गया है ।

उपन्यास कुसुम : हृदय का कोना

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०३ ई० में **अमृत लाल चक्रवर्ती** द्वारा लिखित 'उपन्यास कुसुम' नामक उपन्यास श्री नारायण लाल चतुर्वेदी द्वारा इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ ।[३] सन् १९०३ ई० में ही **अनन्त प्रसाद विद्यार्थी** द्वारा लिखित 'हृदय का कोना' नामक उपन्यास हिन्दुस्तानी पब्लिकेशंस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ ।[४] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन उपन्यासों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

दुनिया अर्थात् संसार की कुछ बातें

सन् १९०३ ई० में ही **पं० गया प्रसाद** मिश्र लिखित 'दुनिया अर्थात् संसार की कुछ बातें' नामक उपन्यास खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर, पटना से प्रकाशित हुआ ।[५] इस उपन्यास में तत्कालीन रुचि के अनुरूप आदर्श स्त्री का स्वरूप प्रस्तुत किया गया है ।

नरदेव

सं० १९०३ ई० में ही **पं० राम प्रताप शर्मा** द्वारा रचित 'नरदेव' नामक उपन्यास श्री वेंकटेश्वर यंत्रालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ ।[६] इस उपन्यास में यह दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि सदाचारी मनुष्य अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहता है तथा दृढ़ रूप से ईश्वर पर भरोसा रखने वाले व्यक्ति विपत्ति से घबराते नहीं और अन्त में उन्हें सफलता मिलती है ।

प्रेमपथ

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०३ ई० में **शारदा प्रसाद वर्मा** लिखित

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ६४४ । पृ० ६४८ पर इसका प्र० का० १९०१ और पृ० २८ पर १९०२ दिया हुआ है ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रावली, उपन्यास, श्रीलालजी सिंह रचित, जिसे काशीस्थ उपन्यास दर्पण सम्पादक बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा ने उपन्यास प्रेमियों के चित्तविनोदार्थ छपवाकर प्रकाशित किया । १९०२, प्रथम बार १०००, हितचिंतक प्रेस, बनारस, पृ० सं० २४ ।

३. हि० पु० सा०, पृ० ३७४ ।

४. आ० भा० पु० काशी, पुस्तक सूची ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दुनिया अर्थात् संसार की कुछ बातें, पंडित गयाप्रसाद मिश्र लिखित, पटना "खड्गविलास" प्रेस, बाँकीपुर, १९०३ ।

६. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि,—नरदेव (एक उपदेशजनक रोचक

'प्रेमपथ' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'हिन्दी प्रदीप', अगस्त १९०३ में इस उपन्यास का एक संक्षिप्त परिचय प्रकाशित हुआ था, जिसके अनुसार "उपन्यास के आकार में यह पुस्तक निस्संदेह प्रेम का सुगम पैंड़ा कहा जा सकता है—गृहस्थी में रहकर पति-पत्नी में प्रेमभाव किस प्रकार होना चाहिए इसका एक उदाहरण इसमें अच्छा दिखाया गया है।[2]

विद्याधरी

सन् १९०४ ई० में **पं० गिरिजानन्दन तिवारी** लिखित 'विद्याधरी' नामक उपन्यास भारत जीवन यंत्रालय, काशी से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में वेश्यागमन की हानियों का चित्रण किया गया है।

कुलवन्ती

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०४ ई० में **रामचीज सिंह** द्वारा लिखित 'कुलवन्ती' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा, चक्रधरपुर, सिंहभूमि से प्रकाशित हुआ।[4] मा० पु० पटना में इस उपन्यास की एक प्रति है, किन्तु आवरणपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। इस उपन्यास का उद्देश्य सतीत्व का महत्व-दर्शन और धर्म और नीति का उपदेश देना है।

कनक सुन्दर

डॉ० गुप्त के अनुसार सन् १९०४ ई० में ही **शिवचन्द्र भारतिया** लिखित 'कनक सुन्दर' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ[5]। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

चतुरा की चतुराई

सन् १९०४ ई० में **स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती** द्वारा रचित और पं० बालकृष्ण भट्ट द्वारा संशोधित 'चतुरा की चतुराई' नामक उपन्यास शिवराम औषधालय प्रेस, प्रयाग

उपन्यास) जिसको पंडित रामप्रताप शर्मा बूंदी निवासी से निर्मित कराय खेमराज श्री कृष्णदास ने बम्बई निज "श्री वेंकटेश्वर" (स्टीम) यंत्रालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया, माघ संवत १९५९, शके १८२४, पृ० सं० ९६ (प्रस्तावना के अन्त में "ता० १७ जनवरी १९०३" मुद्रित है।)

१. हि० पु० सा०, पृ० ६३५।
२. हिन्दी प्रदीप, जिल्द २५, सं० ५।६।७।८, अगस्त १९०३ ई०, पुस्तक परिचय (प्रेमपथ)।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विद्याधरी, पं० गिरिजानन्दन तिवारी लिखित, काशी, भारत जीवन यन्त्रालय में मुद्रित, सन् १९०४ ई०, प्रथम बार १०००।
४. हि० पु० सा०, पृ० ५८२।
५. उपरिवत्, हि० पु० सा०, पृ० ६३६।

से प्रकाशित हुआ ।[१] इस उपन्यास में लेखक ने एक ऐसी वेश्या की कल्पना की है, जो सौजन्य और शिष्टता का आदर्श है । वह अपने प्रेमी को बुरे कर्मों से बचाती है ।

चम्पा दुर्दशा

सन् १९०४ ई० में **रामफेरन सिंह** द्वारा रचित 'चम्पा दुर्दशा' नामक उपन्यास श्री माखनलाल बोस द्वारा मोतिहारी से प्रकाशित हुआ ।[2] इस उपन्यास में तिलक-दहेज के कुपरिणाम दिखाये गये हैं ।

कान्ति माला

इसी वर्ष **बाबू मनोहर लाल** लिखित 'कान्ति माला' नामक उपन्यास लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ ।[३]

दो मित्र

सन् १९०४ ई० में ही **पांडेय लोचन प्रसाद** ने 'दो मित्र' नामक उपन्यास की रचना की थी, जो १९०६ ई० में शिवलाल गणेशी लाल द्वारा लक्ष्मी नारायण प्रेस, मुरादाबाद से प्रकाशित हुआ ।[४] 'भूमिका' के अन्त में '२० जुलाई १९०४' मुद्रित है, जिससे इस उपन्यास का रचना-काल ज्ञात होता है ।[५]

किस्मत का खेल

सन् १९०५ ई० में **पं० विट्ठल दास नागर** द्वारा लिखित 'किस्मत का खेल' नामक

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चतुरा की चतुराई, एक अनोखा उपन्यास, जिसको स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती ने बनाकर पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक 'हिन्दी प्रदीप' द्वारा शुद्ध कराय शिवराम औषधालय प्रेस, प्रयाग में छपवा के प्रकाश किया, प्रथम बार सन् १९०४ ई०, पृ० सं० २४३ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चम्पा दुर्दशा, एक सामाजिक उपन्यास अथवा तिलक दहेज के अत्याचार का एक सत्य निदर्शन जिसको देशानुरागियों के चित्त विनोदार्थ सर्वसाधारण की शिक्षा के लिए चम्पारन जिलान्तर्गत जिहुली ग्राम निवासी श्री रामफेरन सिंह ने बनाया, मोतिहारी, श्री मक्खनलाल बोस द्वारा क्राउन यंत्रालय से प्रकाशित, १९०४, पहिली बार १००० पुस्तक, पृ० सं० २७ ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कान्तिमाला, उपन्यास, बाबू मनोहर लाल (गुजराती) विरचित और लहरी प्रेस, द्वारा प्रकाशित, काशी, लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित, १९०४ ई० ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दो मित्र, (एक कल्पित उपन्यास) बालपुर निवासी पाण्डेय लोचन प्रसाद लिखित और शबरी नारायण निवासी कविवर श्री पंडित मालिक राम भोगहा (अलंकारी) द्वारा संशोधित जिसको शिवलाल गणेशी लाल ने अपने "लक्ष्मी नारायण" प्रेस, मुरादाबाद में छपवाकर प्रकाशित किया । प्रथम बार सन् १९०६ ।

५. उपरिवद्, भूमिका ।

उपन्यास पं० भोगीलाल भार्गव द्वारा लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस से प्रकाशित हुआ ।[1]

सरला

सन् १९०५ ई० में ही **चक्रपाणि त्रिपाठी** द्वारा लिखित 'सरला' नामक उपन्यास बाबू रामकृष्ण वर्मा द्वारा भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ ।[2]

तीन शिक्षामय कहानियाँ

इसी वर्ष लाला देवराज लिखित 'तीन शिक्षामय कथाएँ' नामक कथासंग्रह प्रकाशित हुआ ।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशक की सूचना नहीं दी हुई है । सम्भवतः लेखक ही इसका प्रकाशक भी है । इन कथाओं का उद्देश्य पाठकों को धर्माचरण, कर्त्तव्य-पालन, सद्व्यय और सुशिक्षा का उपदेश देना है ।

कुलकलंकिनी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०५ ई० में **कमला प्रसाद वर्मा** द्वारा लिखित 'कुल कलंकिनी' नामक उपन्यास बालमुकुन्द वर्मा द्वारा कचौड़ी गली, बनारस से प्रकाशित हुआ ।[4] आ० भा० पु०, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती । उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से ली गयी हैं । इस उपन्यास का विषय स्त्री स्वातंत्र्य का विरोध और परदा प्रथा का समर्थन है ।

उर्दू बेगम

सन् १९०५ ई० में ही **एक बी० ए०** लिखित 'उर्दू बेगम' नामक रूपक कथा, जिसे लेखक ने उपन्यास की ही संज्ञा दी है, एडवर्ड प्रेस, इलाहाबाद में छपकर प्रकाशित हुई ।[5]

---

१. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—किस्मत का खेल, लेखक श्रीमान् पं० विट्ठलदास नागर, प्रकाशक श्रीयुत् पं० भोगीलाल भार्गव, 'लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस' में मुद्रित होकर प्रकाशित, प्रथम बार १९०५ ई०, पृ० सं० ८० ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सरला उपन्यास, जिसको सराय मीरा निवासी चक्रपाणि (केदारज) त्रिपाठी ने पाठकों के विनोदार्थ रचा और जिसको बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारत जीवन ने निज व्यय से छापकर प्रकाशित किया; काशी, सन १९०५, ई०, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ४८ ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्त्री शिक्षा साहित्य भंडार सिरीज, तीन शिक्षामय कथाएँ, लाला देवराज, प्रधान कन्या महाविद्यालय, जालंधर विरचित, १९०५ ई०, प्रथम बार २००० ।

४. हि० पु० सा०, पृ० ३३६ (हि० पु० सा० के पृष्ठ २७ पर इस उपन्यास का प्र० का० १९०५ तथा ३९६ पर १९४२ दिया है ।)

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की की प्रतिलिपि—उर्दू बेगम, एक नये ढंग का मनोहर उपदेशप्रद उपन्यास, जिसमें उर्दू बीबी के चरित्र के चित्र खींचे गये हैं और रूपक द्वारा उर्दू और हिन्दी में मेल और हिन्दी की उन्नति के उपाय बताये गये हैं । एक बी० ए० लिखित

इस उपन्यास में हास्यपूर्ण रूपकात्मक शैली में उर्दू भाषा के दोषों, उर्दू और हिन्दी के सहअस्तित्व तथा हिन्दी की उन्नति के उपायों का वर्णन किया गया है। डॉ० गुप्त ने इसे 'रूमानी ऐतिहासिक' उपन्यास बताया है, जो भ्रामक है।[१]

रम्भा : तीन बहिन : मनमोहिनी : किस्मत का खेल

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०५ ई० में ही **रामनारायण दीक्षित** लिखित रंभा (भाग १-३) नामक उपन्यास विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा, बनारस से प्रकाशित हुआ।[२] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। डॉ० गुप्त के अनुसार इसी वर्ष **हजारी लाल** लिखित 'तीन बहिन' नामक उपन्यास कन्हैया लाल बुक्सेलर, पटना से प्रकाशित हुआ।[३] डॉ० गुप्त के अनुसार इसी वर्ष **शीतल प्रसाद** लिखित 'मनमोहिनी' नामक उपन्यास रामरत्न वाजपेयी द्वारा लखनऊ से[४] तथा **बिट्ठल दास नागर** लिखित 'किस्मत का खेल' नामक उपन्यास जगन्नाथ भोगी लाल द्वारा लखनऊ से[५] प्रकाशित हुआ।

निर्मला

सन् १९०५ ई० में **श्री एस० एन० गुप्त जैनी** द्वारा लिखित 'निर्मला' नामक उपन्यास खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[६] डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार यह उपन्यास जे० एन० गुप्त द्वारा कारा बाजार, छपरा से प्रकाशित हुआ।[७]

अलबेला रागिया

फरवरी १९०६ ई० के निकटपूर्व में जौनपुर निवासी **गोपाल लाल खत्री** द्वारा लिखित 'अलबेला रागिया' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा भारत जीवन प्रेस, बनारस से छपकर प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपर्युक्त सूचनाएँ सरस्वती, फरवरी १९०६ ई० में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की 'पुस्तक परीक्षा' से प्राप्त की गयी हैं।[८] इस उपन्यास में एक एक परिवार की चरित्रहीनता का अश्लील वर्णन है।

और पं० अमर नाथ शर्मा के प्रबन्ध से इलाहाबाद, एडवर्ड प्रेस में मुद्रित, सन् १९०५ ई०, प्रथम बार ५००, पृ० सं० १३३।

१. हि० पु० सा०, पृ० ३१।

२. उपरिवत्, पृ० ५८८।

३. उपरिवत्, पृ० ६७४।

४. उपरिवत्, पृ० ६४२।

५. उपरिवत्, पृ० ६१०।

६. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

७. हि० पु० सा०, पृ० ६७४।

८. सरस्वती, भाग ७, अंक २, फरवरी १९०६, पुस्तक परीक्षा।

विचित्र उपन्यास अर्थात् बुढ़ापे का व्याह

सन् १९०६ ई० में **बाबू चन्द्रसेन जैनी** द्वारा लिखित 'विचित्र उपन्यास अर्थात् बुढ़ापे का विवाह' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा ब्रह्म प्रेस, इटावा में छपकर प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में वृद्धविवाह के दुष्परिणाम दिखाये गये हैं। इस उपन्यास के आरम्भ और अन्त में आक्षेपयुक्त दवाओं के अश्लील विज्ञापन छपे हैं। जान पड़ता है इन दवाओं के विज्ञापन के लिए ही इस कथा की रचना की गयी है। इन विज्ञापनों को देखते हुए इस युग के बहुसंख्यक उपन्यास-पाठकों की रुचि का अनुमान करना सहज है।

पवित्र जीवन : मोती

सन् १९०६ ई० में ही **बाबू गोकुलानन्द प्रसाद वर्मा** प्रणीत 'पवित्र जीवन' नामक उपन्यास कायस्थ इंस्टिट्यूट, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[2] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्र० का० १९०७ ई० दिया है। इसी वर्ष, 'पवित्र जीवन' के प्रकाशित होने के ठीक बाद, गोकुलानन्द प्रसाद वर्मा का 'मोती' नामक उपन्यास कायस्थ इंस्टिट्यूट के हिन्दी सीरीज संख्या १२ में प्रकाशित हुआ। 'पवित्र जीवन' ११वीं संख्या में प्रकाशित हुआ था। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर उसके मुख-पृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उपर्युक्त सूचनाएँ उपन्यास के 'पब्लिशर्स फोरवर्ड' से प्राप्त की गयी हैं। डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार यह उपन्यास १९०६ ई० में कायस्थ इंस्टिट्यूट, पटना से प्रकाशित हुआ।[3]

सुलोचना

१९०६ ई० में ही **पं० गिरिजानन्दन तिवारी** द्वारा लिखित 'सुलोचना' नामक उपन्यास भारत जीवन यंत्रालय, काशी से छपकर प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में वेश्यागमन की बुराइयाँ तथा पाप का परिणाम चित्रित किया गया है।

भयानक भूल

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०६ ई० में **रूपनारायण पांडेय** लिखित

---

१. प्राप्ति स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विचित्र उपन्यास, अर्थात् बुढ़ापे का विवाह, जिसको बाबू चन्द्रसेन जैनी इटावा निवासी ने सर्वसाधारण के हितार्थ ब्रह्म प्रेस, इटावा में छपवाकर प्रकाशित किया, प्रथमावृत्ति २०००, सन् १९०६ ई०, पृ० सं० २४।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पवित्र जीवन, श्री बाबू गोकुलानन्दन वर्म्मा प्रणीत........प्रकाशक कायस्थ इंस्टिट्यूट, ...लखनऊ...... १९०६ ई०। पृ० सं० ८५।

३. हि० पु० सा०, पृ० ४२४।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलोचना, एक सामाजिक उपन्यास, जिसे बिहार निवासी पंडित गिरिजानन्दन तिवारी ने लिखा, काशी. भारत जीवन यंत्रालय में मुद्रित हुआ, सन् १९०६ ई०, प्रथम बार २०००, पृ० सं० ३६।

'भयानक भूल' नामक उपन्यास जयनारायण वर्मा द्वारा लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

फूल में काँटा

सन् १९०६ ई० में **रामजीदास वैद्य** लिखित 'फूल में काँटा' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा लश्कर, ग्वालियर स्टेट से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में दिखाया गया है कि लाड़ प्यार से साहूकारों के लड़के किस प्रकार बिगड़ जाते हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्यों का अच्छा बुरा फल अवश्य मिलता है।

मेरी सूरज

मार्च १९०७ ई० के निकट अतीत में 'मेरी सूरज' नामक गद्यकथा प्रकाशित हुई थी। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे पाने में असमर्थ रहा है। सरस्वती, मार्च १९०७ की 'पुस्तक समीक्षा' में विवेच्य कथा की निम्नलिखित समीक्षा प्रकाशित हुई थी : "मेरी सूरज' ५८ पृष्ठों की एक कहानी है। कुँवर श्यामसुन्दर पुरोहित, पुरानी बस्ती, जयपुर से ३ आने को मिलती है। इसमें एक वारवनिता प्रेमी के शाद और बरबाद होने की बातें हैं। कहानी में कई जगह अस्वाभाविकता है।"

मंजरी

सन् १९०६ ई० में **कुँवर लक्ष्मी नारायण** कृत 'मंजरी उपन्यास' एस० एल० एण्ड को अलीगढ़ द्वारा प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास (?) के प्रत्येक पृष्ठ के लगभग एक चौथाई भाग में; जगत् विनोद यंत्रालय से प्रकाशित पुस्तकों का विज्ञापन छपा हुआ है। सरस्वती, मार्च १९०७ में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की 'समीक्षा' के अनुसार इसके प्रत्येक पृष्ठ के नीचे किताबों और दवाइयों वगैरह के विज्ञापन हैं। अन्त के २४-२५ पृष्ठ बिलकुल ही विज्ञापनमय है। इसलिए यह बिना मूल्य है। उपन्यास की कहानी कैसी है और उसमें क्या है सो बतलाने की जरूरत नहीं, क्योंकि उससे शायद उपन्यासकार का उत्साह भंग हो जायगा और हमें यह अभीष्ट नहीं।"

लक्ष्मी कान्ता

सन् १९०७ ई० में ही **लाला प्यारेलाल वृष्णी** रचित 'लक्ष्मी कान्ता' नामक उपन्यास (?) डी० पी० बुक डिपो तथा आयुर्वेदिक औषधालय, अलीगढ़ के अध्यक्ष मेसर्स

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ५९७।

२. उपरिवत्, पृ० ५८२। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से कोई सूचना नहींमिलती। भूमिका के अन्त में "३० जनवरी १९०६ ई०" मुद्रित है। शेष सूचनाएँ पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मंजरी उपन्यास, तथा संवत् १९६३ का सूची-पत्र, कुँवरलक्ष्मी नारायण सिकन्दराराऊ निवासी रचित और एस० एल०

बृजलाल विश्वम्भर दयाल द्वारा प्रकाशित हुआ।[1] इस पुस्तक को उपन्यास कहने की अपेक्षा विज्ञापन-पुस्तिका कहना अधिक उचित है। इसके आधे पृष्ठ में कथा और आधे में दवाओं का विज्ञापन दिया हुआ है।

नलिनी वा चितचोर

इसी वर्ष **श्री लक्ष्मी नारायण गुप्त** कृत 'नलिनी वा चितचोर' नामक उपन्यास डी० पी० कम्पनी अलीगढ़ के अध्यक्ष मेसर्स बृजलाल विश्वम्बर दयाल द्वारा प्रकाशित हुआ।[2] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस उपन्यास का प्र० का० १९०८ ई० लिखा है जो भ्रामक है।[3] इस उपन्यास में अशिक्षा के दोषों का चित्रण किया गया है।

गुलेनार

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०७ ई० में **श्री जैनेन्द्र किशोर** लिखित 'गुलेनार' नामक उपन्यास बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा, उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है,[5] पर उसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। डॉ० गुप्त ने इस उपन्यास को 'रूमानी ऐतिहासिक' कोटि में रखा है,[6] जो भ्रामक है। यह पातिव्रत्य की महिमा सिद्ध करने वाला एक सामाजिक उपन्यास है।

अपराजिता

डॉ० गुप्त के अनुसार सन् १९०७ ई० में **सकलनारायण पांडेय** लिखित 'अपरा-

---

आर्य ऐंड को० द्वारा प्रकाशित, जगत् किशोर यंत्रालय, अलीगढ़ में मुद्रित, १९०६।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लक्ष्मी कान्ता तथा नवयौवन उपन्यास, प्रथमांक, अलीगढ़ निवासी लाला प्यारे लाल विष्णी विरचित, डी० पी० बुकडिपो तथा आयुर्वेदिक औषधालय अलीगढ़ के अध्यक्ष मेसर्स बृजलाल विश्वंभर दयाल द्वारा प्रकाशित, फर्स्ट एडीशन, जगद्विनोद यंत्रालय, अलीगढ़, संवत् १९६४, पृ० सं० २७।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नलिनी वा चितचोर, कल्पना युक्त सामाजिक उपन्यास, नीति रत्नोदय ब्रह्मचर्य ट्रैक्ट, मंजरी उपन्यास, धूर्त ऐय्यारा उपन्यास और चन्द्रमुखी उपन्यास के रचयिता श्रीलक्ष्मी नारायण गुप्त, सिकन्दरा राऊ (अलीगढ़) निवासी लिखित और डी० पी० कम्पनी के अध्यक्ष मेसर्स बृजलाल विश्वंभर दयाल अलीगढ़ द्वारा प्रकाशित, १०००, नवम्बर १९०७।

३. हि० पु० सा०, पृ० ६००।

४. डॉ माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४५७।

५. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गुलेनार, एक सामाजिक उपन्यास, कोकिलानांस्वरोरूपं स्त्रीरूपं पतिव्रतं (चाणक्य) आरा निवासी श्रीजैनेन्द्र किशोर (अग्रवाल जैन) विरचित जिसे काशी उपन्यास दर्पण मासिक पुस्तक के सम्पादक बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्म्मा ने निज व्यय से छपवाकर प्रकाशित किया।

६. हि० पु० सा०, पृ० ३१।

जिता' नामक उपन्यास नागरी प्रचारिणी सभा, आरा से प्रकाशित हुआ।[१]

दो स्त्री का पति

सन् १९०७ ई० में ही **मुंशी हजारी लाल** लिखित 'दो स्त्री का पति' नामक उपन्यास बाबू कन्हैया लाल बुकसेलर द्वारा पटना सिटी से प्रकाशित हुआ।[२] इस उपन्यास में एक नीच जाति की दुश्चरित्र स्त्री को रखेलिन बनाकर रखने के कारण एक सेठ की दुर्दशा का वर्णन किया गया है।

धोखे की टट्टी

इसी वर्ष **बाबू रामजी दास वैश्य** लिखित 'धोखे की टट्टी' नामक उपन्यास इंडिया प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[३] डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार इसमें भारतीय विद्यार्थी जीवन की कथा रखकर उसके सुधार का यत्न किया गया है।[४]

वीर बाला वा अपूर्व नारीत्व

डॉ० गुप्त के अनुसार सन् १९०७ ई० में **कुमार प्रतिपाल सिंह** द्वारा लिखित 'वीरबाला वा अपूर्व नारीत्व' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा पहरा, छतरपुर से प्रकाशित हुआ।[५]

प्रेमा अथात् दो सखियों का विवाह

सन् १९०७ ई० में ही **बाबू नवाब राय बनारसी** (जो बाद में प्रेमचन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए) रचित 'प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह' नामक उपन्यास इंडियन प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[६] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस उपन्यास के सम्बन्ध में अपने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में जो सूचना दी है, वह भ्रान्त है। डॉ० गुप्त ने उपन्यास का नाम 'प्रेम' और उपन्यासकार का नाम 'नवल राय' लिखा है।[७]

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ६५३।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मो० माऊर, जि० मुंगेर निवासी मुंशी हजारी लाल लिखित, दो स्त्री का पति, उपन्यास, बाबू कन्हैयालाल, बुकसेलर, पटना सिटी द्वारा प्रकाशित, सन् १९०७ ई०, पहली बार १०००, पृ० सं० ६३।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—धोखे की टट्टी, (उपन्यास) लेखक बाबू रामजी दास वैश्य, इंडियन प्रेस, प्रयाग से छपकर प्रकाशित, प्रथम संस्करण १९०७, पृ० सं० १४५।

४. हि० पु० सा०, पृ० २७।

५. उपरिवत्, पृ० ५०७।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह; रोचक, शिक्षाप्रद और नूतन उपन्यास; लेखक-बाबू नवाब राय बनारसी; प्रकाशक-इंडियन प्रेस, इलाहाबाद; प्रथम बार १००० कापी, सन् १९०७ ई०, मूल्य ॥=), आकार गुटका, पृ० सं० २३६।

७. हि० पु० सा०, पृ० २३३ तथा ४९३।

जुलाई १९०७ ई० के 'हिन्दी प्रदीप' में इस उपन्यास की एक बड़ी रोचक संक्षिप्त समीक्षा प्रकाशित हुई थी, जो निम्नलिखित है :

"प्रेमा—एक उपन्यास........दो विधवाओं के विवाह का प्रस्ताव इसमें है। ...लिखने...वाले ने तो अपने समय में विधवा विवाह के अनुमोदन में इसे लिखा है पर तो नहीं विधवा विवाह की जीट इससे भले ही उड़ती है। इंडियन प्रेस के मालिक को चाहिये कि ऐसी पुस्तक न छापा करें।"[१]

हिन्दी के आलोचकों ने 'प्रेमा' की प्रकाशन-तिथि के सम्बन्ध में जो उत्तरदायित्व-हीन सूचनाएँ दी हैं, उनके कुछ नमूने दर्शनीय हैं। श्री हंसराज रहवर के अनुसार "यह उपन्यास भी १९०६ में लिखा गया था।"[२] श्री ब्रजरत्न दास ने एक स्थान पर इसकी प्रकाशन-तिथि सं० १९६४ वि०[३] और दूसरे स्थान पर १९०५ ई० दी है।[४] सम्भव है दूसरी तिथि मुद्रण की भूल हो, फिर भी यह चिन्त्य तो है ही। श्री रामदीन गुप्त ने इसकी प्रकाशन-तिथि "सं० १९०४ या १९०५" बतायी है।[५] डॉ० रामरतन भटनागर इसका रचना-काल १९०५ ई० के लगभग मानते हैं।[६] प्रेमचन्द पर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करने वाले और डॉक्टर की उपाधि प्राप्त करने वाले डॉ०राजेश्वर गुरु इस उपन्यास का रचना-काल १९०२ ई० तथा इसे "अप्राप्य अप्रकाशित" घोषित करते हैं।[७] स्पष्ट है कि उपर्युक्त आलोचकों में से किसी ने भी मूल पुस्तक को देखने का कष्ट नहीं उठाया है।

'प्रेमा' हिन्दी में रचित मौलिक उपन्यास न होकर १९०६ ई० अथवा उसके ईषत्पूर्व प्रकाशित 'हम खुर्मा व हमसवाब' का हिन्दी रूपान्तर है। दयानारायन निगम के नाम १७ जुलाई १९२६ को लिखित अपने एक पत्र में प्रेमचन्द ने खुद 'प्रेमा' का प्रकाशन-काल १९०४ ई० बताया था।[८] अपने एक दूसरे पत्र में, जो ८ जुलाई १९२७ को श्री विनोदशंकर व्यास को लिखा गया था, प्रेमचन्द ने 'प्रेमा' का रचना-काल १९०० ई० लिखा था। इनमें पहली, यानी प्रकाशन-तिथि, तो अवश्य ही गलत है, क्योंकि इंडियन प्रेस से प्रकाशित 'प्रेमा' के प्रथम संस्करण में १९०७ तिथि मुद्रित है। दूसरी, यानी रचना तिथि, के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। प्रेमचन्द ने ये तिथियाँ अपनी स्मृति के आधार पर दी होंगी, और उनकी 'मेमोरी' कमजोर थी, इसे उन्होंने खुद एक स्थान पर स्वीकार किया है।[९]

---

१. हिन्दी प्रदीप, जिल्द २९, सं० ७, जुलाई १९०७, प्रेमा
२. हंसराज रहवर, प्रेमचन्द—जीवन और कृतित्व (११), पृ० २१६।
३. ब्रजरत्नदास, हिन्दी उपन्यास साहित्य, (९), पृ० १८५।
४. उपरिवत्, पृ० १८६।
५. रामदीन गुप्त, प्रेमचन्द और गाँधीवाद, (४), पृ० १४५।
६. डॉ० राम रतन भटनागर, प्रेमचन्द—एक अध्ययन, पृ० ३५।
७. डॉ राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द : एक अध्ययन (८), परिशिष्ट।
८. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, चिट्ठी—पत्री १ (१), पृ० १६१।
९. कमल का सिपाही, विविध प्रसंग-३ (१), पृ०७१।

'प्रेमा' का अपने मूल रूप में दूसरा संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ।

सुशीला विधवा

डॉ० गुप्त के अनुसार सन् १९०८ ई० में **लोलाराम शर्मा** लिखित 'सुशीला विधवा' नामक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सुशीला

सन् १९०८ ई० में श्री **गोपाल दास वरैया** द्वारा सम्पादित 'सुशीला' नामक उपन्यास जैन मित्र कार्यालय, वम्वई से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में पातिव्रत्य की महिमा प्रतिपादित की गयी है।

मनोरमा

सन् १९०८ ई० में **जैनेन्द्र किशोर** द्वारा लिखित 'मनोरमा' नामक उपन्यास पन्ना लाल वाकलीवाल द्वारा निर्णय सागर प्रेस, वम्वई से छपकर प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में एक प्राचीन कथा के आधार पर पातिव्रत्य का चित्रण किया गया है।

लक्ष्मी

अगस्त १९०८ ई० के निकट पूर्व में **श्रीमती प्रियंवदा देवी** लिखित 'लक्ष्मी' नामक स्त्रीशिक्षा प्रधान उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'सरस्वती', अगस्त १९०८ ई० के 'पुस्तक परीक्षा' स्तम्भ में इस उपन्यास का परिचय प्रकाशित हुआ था। उपन्यास की भूमिका के अनुसार इस पुस्तक में यह दर्शाने का प्रयत्न किया गया है कि विदुषी स्त्रियाँ किस प्रकार अपने धर्म और पातिव्रत्य का पालन करती हुई सौतिया डाह से बच सकती हैं।[4]

राजवीर

मार्च १९०८ ई० के आसपास 'सहायक मंत्री **बदरीनाथ**' लिखित 'राजवीर' नामक उपन्यास 'कवीन्द्र वाटिका' नामक पत्रिका में प्रकाशित हो रहा था। 'कवीन्द्र वाटिका',

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ६०७।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुशीला, उपन्यास, जैन मित्र से उद्धृत और जैन मित्र कार्यालय, वम्वई द्वारा प्रकाशित, सम्पादक गोपाल दास वरैया, श्रीवीर वि० संवत् २४३४, पृ० सं० १६७।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मनोरमा, उपन्यास, (पातिव्रत धर्म का नमूना) आरा निवासी वावू जैनेन्द्र किशोर जैन ने जैन समाज के उपकारार्थ रचा, जिसको जैन हितैषी से उद्धृत करके पन्नालाल वाकलीवाल ने वम्वई के निर्णयसागर प्रेस में छपाया। वीर निर्वाण संवत् २४३४ ई०, ईस्वी सन् १९०८, प्रथमावृत्ति, पृ० सं० ११४।

४. सरस्वती, अगस्त १९०८, पुस्तक परीक्षा।

भाग ४, सं० ३, मार्च १९०८ ई० में इस उपन्यास का एक अंश छपा है,[१] जिससे ज्ञात होता है कि यह उपन्यास पहले से छपता रहा होगा। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक उक्त पत्रिका के अन्य अंकों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

झगड़ू लाल की करतूत

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९०८ ई० में **महादेव प्रसाद मिश्र** लिखित 'झगड़ू लाल की करतूत' नामक कथापुस्तक, जिसमें "चरित्र और समाज सुधार को ध्यान में रखते हुए हास्य तथा व्यंग्यप्रधान समाज का चित्रण किया गया है, प्रकाशित हुई।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

वीर सिंह या बहादुर

सन् १९०९ ई० में **श्रीकृष्ण हसरत** लिखित 'वीर सिंह या बहादुर' नामक उपन्यास बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[३]

मिस्ट्रीज ऑफ शेखावाटी

इसी वर्ष **पं० चुन्नी लाल ज्योतिषी** लिखित 'मिस्ट्रीज ऑफ शेखावाटी', नामक उपन्यास का प्रथम भाग स्वयं लेखक द्वारा गोवर्धन प्रेस, कलकत्ता से छपकर प्रकाशित हुआ।[४] यह एक कामोत्तेजक अश्लील उपन्यास है। इसमें शेखावाटी के पुजारियों और मारवाड़ी स्त्रियों के गुप्त प्रेम तथा व्यभिचार की कथाएँ वर्णित है।

पार्वती

सन् १९०९ ई० में ही **श्रीमती कुन्ती देवी** द्वारा लिखित 'पार्वती नामक एक सामाजिक कथा ओंकार प्रेस, इलाहाबाद में मुद्रित होकर पं० काशीनाथ वाजपेयी द्वारा प्रकाशित हुई।[५]

गृहस्थ चरित्र

सन् १९०९ ई० में ही **कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी** लिखित 'गृहस्थ चरित्र' नामक

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५४२।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीरसिंह या बहादुर उपन्यास, श्रीकृष्ण हसरत लिखित और उपन्यास दर्पण के अध्यक्ष बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित, काशी, सन् १९०९, प्रथम बार २०००, पृ० सं० ६०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मिस्ट्रीज ऑफ शेखावाटी, पहिला भाग, महेन्द्रगढ़ (पटियाला) निवासी, कलकत्ता प्रवासी पं० चुन्नीलाल ज्योतिषी द्वारा लिखित और प्रकाशित, कलकत्ता, ८०/१ नं० मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, 'गोवर्द्धन प्रेस' में श्रीगोवर्द्धन पान ने छापा, सन् १९०९ ई०, प्रथम बार २०००, प्रति, पृ० सं० ९३।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पार्व्वती, जिसको श्रीमती कुन्ती देवी, धर्मपत्नी श्रीमान बाबू बलदेव प्रसाद जी स्टेशन मास्टर, शंकर गढ़ ने स्त्रियों के हितार्थ रचकर प्रकाशित किया, इलाहाबाद, पं० काशीनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस

कथापुस्तक स्वयं लेखक द्वारा राजपूत ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस, आगरा से प्रकाशित हुई।[१]

त्रैलोक्य सुन्दरी

सन् १९०९ ई० में ही बाबू **आत्माराम देवकर** लिखित 'त्रैलोक्य सुन्दरी' नामक "हितोपदेशक उपन्यास" उपन्यास बहार आफिस, काशी के अध्यक्ष बाबू जयरामदास गुप्त द्वारा प्रकाशित हुआ।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल मुद्रित नहीं है, पर 'भूमिका' के अन्त में २५-३-०९ तिथि दी हुई है, जिससे इसका प्रकाशन-काल अनुमित होता है। इस उपन्यास में अँगरेजी शासन के प्रति राजभक्ति का उपदेश दिया गया है।

खुदीराम या गरीबदास

सन् १९०९ ई० में ही **श्री इन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय** रचित 'खुदीराम या गरीबदास' नामक उपन्यास 'हिन्दी बंगवासी इलेक्टरी मशीन प्रेस' से श्री नटवर चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित हुआ।[३] मुखपृष्ठ की सूचनाओं से यह मौलिक उपन्यास ज्ञात होता है, पर लेखक के बंगाली नाम से इसके बँगला उपन्यास अनुवाद होने का भ्रम होता है।

प्रेमलता

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९०९ ई० राम प्रसाद सत्याल लिखित 'प्रेमलता' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा, दूध विनायक, बनारस से[४] प्रकाशित हुआ।

किरण शशी

सन् १९०९ ई० में ही **पुरोहित राम प्रसाद सत्याल** लिखित 'किरण शशी' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा हितचिंतक प्रेस, काशी से मुद्रित होकर, प्रकाशित हुआ।[५]

में छपी, प्रथम वार १०००, १९०९, पृ० सं० १६।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गृहस्थ चरित्र, कुँवर हनुमंत सिंह, सम्पादक पंडित पन्नालाल, सरकारी सम्पादक (स्वदेश बान्धव, आगरा) लिखित, कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी अध्यक्ष राजपूत ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, आगरा द्वारा मुद्रित व प्रकाशित, जनवरी १९०९ ई०, प्रथमावृत्ति, मूल्य ।।)

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—त्रैलोक्य सुन्दरी, (हितोपदेशक उपन्यास) फतेहपुर, जिला दमोह निवासी बाबू आत्माराम देवकर, महाराष्ट्र क्षत्रिय रचित जिसे काशीस्थ उपन्यास बहार ऑफिस के अध्यक्ष बाबू जयराम दास गुप्त ने प्रकाशित किया, काशी चन्द्रप्रभा यंत्रालय में मुंशी गौरीशंकर लाल द्वारा मुद्रित, प्रथम वार।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—खुदीराम या चरण गरीबदास, गालगल्प (उपन्यास) श्रीइन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय विरचित कलकत्ता ३८/२ भवानी चरण दत्त स्ट्रीट हिन्दी बंगवासी इलेक्टरी मेशीन प्रेस में श्रीनटवर चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९६६, पृ० सं० १०९।

४. हि० पु० सा०, पृ० ५८६ (प्रेमलता का प्रकाशन काल, पृ० २३४ पर १९०९ और, पृ० ५८६ पर १९०९–११ दिया हुआ है।)

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—किरण शशी, एक औपदेशिक

यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसकी एक बड़ी ही कड़वी आलोचना, जिसके लेखक श्रीयुत माधव केसीट थे, अप्रील १९१३ ई० के 'मनोरंजन' मासिक पत्र में प्रकाशित हुई थी। आलोचक ने इस उपन्यास में अश्लीलता तथा असंगति आदि के दोष दिखाये थे।

अनन्त

सन् १९०९ ई० में ही श्री राम प्रसाद सत्याल लिखित 'अनन्त' नामक उपन्यास हितचिन्तक प्रेस, बनारस से मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[1] डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार इसमें "अँगरेजों के शासन के पूर्व का चित्र प्रस्तुत किया गया है।[2]"

भीषण भविष्य

इसी वर्ष गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य लिखित 'भीषण भविष्य' नामक उपन्यास श्री राघवेन्द्र प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में आर्य समाज द्वारा अनुमोदित स्त्रीशिक्षा तथा स्त्रीस्वातंत्र्य के दोष दिखाये गये हैं।

वन विहंगिनी

१९०९ ई० में ही श्री रामधीन सिंह वल्लभ रचित 'वन विहंगिनी' नामक उपन्यास बाबू देवकीनन्दन खत्री द्वारा लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[4]

चन्द्रकुमारी

इसी वर्ष बाबू झावरमल दारुका लिखित 'चन्द्रकुमारी' नामक उपन्यास गजानन्द मोदी द्वारा नागरी प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[5]

उपन्यास, पुरोहित रामप्रसाद सत्याल द्वारा रचित और प्रकाशित, बी० एल० पावगी द्वारा काशी "हितचिन्तक प्रेस" में मुद्रित, प्रथम वार १०००, १९०९।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनन्त, उपन्यास, पु० श्री रामप्रसाद सत्याल रचित व प्रकाशित, बी० एम० पावगी द्वारा हितचिन्तक प्रेस रामघाट बनारस में मुद्रित, प्रथम वार १०००, १९०९, पृ० सं० ४४।

२. माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० १०७।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भीषण भविष्य, अर्थात् एक सामाजिक उपाख्यान, मथुरानिवासी गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य द्वारा कल्पित, श्री बाबू विजय नारायण सिंह, मैनेजर, के प्रबन्ध से श्रीराघवेन्द्र प्रेस, प्रयाग में छपाकर प्रकाशित किया, प्रथम वार १०००, (आवरणपृष्ठ पर प्रकाशन तिथि १९०९ ई० मुद्रित है।) पृ० सं० ९३।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वन विहंगिनी, बलिया भरसर निवासी श्रीरामधीज सिंह 'वल्लभ' विरचित और बाबू देवकी नन्दन खत्री, प्रोप्राइटर लहरी प्रेस द्वारा प्रकाशित, प्रिंटेड बाइ मन्ना लाल राय, मेनेजर ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी १९०९, पृ० सं० ६०।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रकुमारी (सामाजिक उपन्यास) जसरापुर निवासी कलकत्ता प्रवासी—श्रीयुत बाबू झावर मल दारुका (गुप्त) लिखित, गजानन्द

जहर का प्याला वा राजराजेश्वरी : राजदुलारी

इसी समय के लगभग **बाबू जयराम दास** लिखित दो सामाजिक उपन्यास 'जहर का प्याला वा राज राजेश्वरी' और 'राजदुलारी' प्रकाशित हुए। 'जहर का प्याला वा राज राजेश्वरी' का तृतीय संस्करण, जो जुलाई १९२१ ई० में उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ था, आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में उपलब्ध है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम या द्वितीय संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास में वेश्यागमन के दोष दिखाकर पाठकों को वेश्याओं से बचने का उपदेश दिया गया है। 'राजदुलारी' की एक प्रति आ० भा० पु० काशी में उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। केवल इतनी ही ज्ञात होता है कि यह तीसरा संस्करण है। यह पातिव्रत्य, सत्यता, ईमानदारी, सज्जनता, दयालुता, धर्मपालन आदि का महत्त्व सिद्ध करने वाला सामाजिक उपन्यास है।

असभ्य रमणी

अगस्त १९१० ई० के निकट अतीत में **गोस्वामी ब्रजनाथ शर्मा** द्वारा सम्पादित 'असभ्य रमणी' नामक उपन्यास आर्य भास्कर यंत्रालय, आगरा से मुद्रित होकर हिन्दी साहित्य समिति, आगरा से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'नागरी प्रचारक', अगस्त १९१० में छपे विवेच्य उपन्यास के विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं। इस विज्ञापन में गोस्वामी ब्रजनाथ शर्मा को लेखक न कहकर सम्पादक कहा गया है। पता नहीं इसका क्या कारण है। इस उपन्यास में स्त्रीस्वातंत्र्य के पाश्चात्य आदर्शों को भारत के लिए अनुपयुक्त सिद्ध किया गया है।

लक्ष्मी देवी

सन् १९१० ई० में **बाबू गंगा प्रसाद गुप्त** लिखित 'लक्ष्मी देवी' नामक सामाजिक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास का दूसरा संस्करण बाबू निहालचन्द वर्मा द्वारा नैपाली खपरा, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[२] पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है। इस उपन्यास में स्त्री शिक्षा और परदा प्रथा के लाभ दिखाये गये हैं।

मोदी ने स्वकीय नागरी प्रेस, बम्बई नं० ४ में छपाकर प्रकाशित किया, १९६६, प्रथमावृत्ति १०००, पृ० सं० ४२।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लक्ष्मी देवी (गृहस्थ स्त्रियों, पुरुषों, युवतियों और युवकों के पढ़ने योग्य नये ढंग का उपन्यास) लेखक और प्रकाशक बाबू गंगा प्रसाद गुप्त, श्रावण सं० १९६७ वि०, अगस्त सन् १९१० ई०, प्रथमवार ११००, प्रिन्टेड बाई पी० एल० राय ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस, पृ० सं० ८४।

२. प्राप्ति स्थान—बि० रा० भा० प० पु०, पटना।

चपला

सन् १९१० ई० में **परानमल सारस्वत ओझा** लिखित 'चपला' नामक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

चन्द्रावती

सन् १९१० ई० में ही **पं० वृजमोहन लाल** झा रचित 'चन्द्रावती' नामक उपन्यास का प्रथम भाग स्वयं लेखक द्वारा नवलकिशोर प्रेस, कानपुर से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[2] इसके दूसरे भाग के सम्बन्ध में प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को कोई सूचना प्राप्त नहीं हो सकी है।

प्रेम का फल

सन् १९१० ई० में ही **ह० स० गुप्त** द्वारा लिखित 'प्रेम का फल' नामक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

लक्ष्मी

सन् १९११ ई० में ही **पं० रामनरेश त्रिपाठी** ने 'लक्ष्मी' नामक उपन्यास की रचना की थी जिसका प्रथम संस्करण १९२४ ई० में इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग से प्रकाशित हुआ था।[4] इसका द्वितीय संस्करण १९३९ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[5] प्रथम संस्करण के 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि इसकी रचना १९११ ई० में हुई थी।[6]

आदर्श रमणी

सन् १९११ ई० में ही **शालिग्राम गुप्त** लिखित 'आदर्श रमणी' नामक उपन्यास

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५०२। (पृ० १०१ पर इस उपन्यास का प्रकाशन काल १९१० और पृ० ५०२ पर १९११ दिया है)।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रावती, उपन्यास, प्रथम, भाग, लेखक व प्रकाशक मिश्र श्री मुनीश्वरस्य शिष्य पं वृजमोहन लाल झा अस्यग्रन्थस्य पुनर्मुद्रणादि विषये सर्वथा ग्रन्थकर्तुरेवाधिकार: वैक्रमास्वदा: १९६७, मुंशी भगवान दयाल एजेन्ट के प्रबन्ध से मुंशी नवल किशोर प्रेस, कानपुर में मुद्रित हुआ, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ७६।

३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लक्ष्मी, स्त्री शिक्षा सम्बन्धी बढ़िया उपन्यास, लेखक पंडित रामनरेश त्रिपाठी, प्र० इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९२४।

५. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी।

६. उपरिवत्, निवेदन।

ब्रह्म प्रेस, इटावा से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में स्त्रीशिक्षा, स्त्रीस्वातंत्र्य तथा विधवा विवाह का विरोध और सनातन धर्म, पातिव्रत्य आदि की प्रशंसा की गयी है।

सच्चा पतिप्रेम

इसी वर्ष **श्रीमती यशोदा देवी** रचित 'सच्चा पतिप्रेम' नामक उपन्यास का तृतीय संस्करण स्वयं लेखिका द्वारा कर्नल गंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में भी पातिव्रत्य का महत्त्व प्रदर्शित किया गया है।

किशोरी नरेन्द्र

सन् १९११ ई० में ही **ब्रह्मदत्त शर्मा 'शान्त'** द्वारा लिखित 'किशोरी नरेन्द्र' नामक उपन्यास बम्बई मशीन प्रेस, आगरा से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास द्वारा पाठकों को धर्माचरण की शिक्षा देने तथा सामाजिक कुरीतियों की हानियाँ दिखाने का प्रयत्न किया गया है।

प्रेम वा प्राण समर्पण

इसी वर्ष **पं० रामनाथ पांडे** द्वारा रचित 'प्रेम वा प्राण समर्पण' नामक उपन्यास हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4]

माधवी

सन् १९११ ई० में ही **रूप किशोर जैन** लिखित 'माधवी' नामक उपन्यास लाला श्यामलाल अग्रवाल द्वारा श्याम काशी प्रेस, मथुरा से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[5] यह एक अपराध प्रधान उपन्यास है जिसमें सतीत्व और पातिव्रत्य की महिमा दर्शायी गयी है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श रमणी, उपन्यास, बा० शालिग्राम गुप्त, बैंकर पटना निवासी रचित, प्रिंटेड ऐंड पब्लिश्ड बाइ बी० डी० एस०, ऐट दि ब्रह्म प्रेस इटावा, प्रथमबार १०००, सन् १९११, सं० १९६८।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सच्चा पतिप्रेम, जिसको श्रीमती यशोदा देवी सम्पादिका—स्त्री-धर्म-शिक्षक, कर्नल-गंज, प्रयाग ने स्त्री जाति के उपकारार्थ छपाकर प्रकाशित किया, तीसरी बार ११०० (आवरण पृष्ठ पर 'स्त्री धर्म शिक्षक का संवत् १९६८ का उपहार" मुद्रित है), पृ० सं० ८७।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नवीन उपन्यास, किशोरी नरेन्द्र, अर्थात् उपन्यास चटनी का एक लजीज मसाला, और रसिकों को आनन्द देने वाला पवित्र प्रेम प्याला, पं० ब्रह्मदत्त शर्मा "शान्त", प्रिंटेड बाइ एल० वंशीधर डुडानी, ऐट दि "बम्बई मशीन प्रेस", शिव का बाजार, आगरा, फर्स्ट एडीशन ३०००, १९११।

४. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेम वा प्राणसमर्पण, लेखक पंडित रामनाथ पांडे, प्रकाशक हरिदास एंड कम्पनी कलकत्ता, नं० २०१, हरीसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में बाबू राम प्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, प्रथम बार २०००, १९११ ई०, पृ० सं० ४६।

५. प्रा० स्था०—आ० आ० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माधवी(एक विचित्र घटना)सम्पादक

तारामती

सन् १९११ ई० में पं० केदार नाथ शर्मा द्वारा लिखित 'तारामती' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा मथुरा से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, किन्तु मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण उसके प्रकाशन-काल आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। पर हिन्दी पुस्तक साहित्य,[1] आ० भा० पु० की पुस्तक सूची तथा 'सरस्वती' (१ सितम्बर १९११) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की 'पुस्तक परीक्षा' से[2] इसका प्रकाशन काल १९११ ई० ही सिद्ध होता है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि पिता को अपनी पुत्री के लिए वर खोजने में किस प्रकार की देख-जाँच करनी आवश्यक है और इस बात पर ध्यान न देने से अन्त में कैसा पश्चात्ताप होता है। कुसंगति का दोष भी उपन्यास में दिखाया गया है।

गौहर जान

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९११ ई० में ही काशी प्रसाद लिखित 'गौहर जान' नामक उपन्यास बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर द्वारा बनारस से[3] प्रकाशित हुआ।

लक्ष्मी

सन् १९१२ ई० में प० ओंकार नाथ वाजपेयी द्वारा लिखित 'लक्ष्मी' नामक उपन्यास का तीसरा संस्करण ओंकार प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम दो संस्करणों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

शान्ता

सन् १९१२ ई० में पं० ओंकार नाथ वाजपेयी रचित 'शान्ता' नामक उपन्यास ओंकार प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास में एक आदर्श सच्चरित्र कन्या का जीवन वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया है।

माधवी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१२ ई० में कृष्ण लाल गोस्वामी लिखित

श्री रूप किशोर जैन, विजयगढ़, प्रान्त अलीगढ़, जिसको लाला श्याम लाल अग्रवाल ने अपने श्याम काशी प्रेस, मथुरा में छपवा कर प्रकाशित किया। वीरान्त २४३७, प्रथमावृत्ति २२००; पृ० सं० ३४। (पुस्तक के अन्त में "११।१।११" तिथि मुद्रित है)।

१. माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४०६।

२. सरस्वती, भाग १२, सं० ९, १ सितम्बर १९११ ई०, पुस्तक-परीक्षा।

३. हि० पु० सा०, पृ० ४०२।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लक्ष्मी, पं० ओंकार नाथ वाजपेयी, संवत् १९६९ (सितम्बर १९१२), तृतीय बार २०००।

५. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शान्ता, लेखक पं० ओंकारनाथ वाजपेयी, प्र० ओंकार प्रेस, प्रयाग, प्रथमवार १०००, सन् १९१२, पृ० सं० १५६।

'माधवी' नामक उपन्यास बाल मुकुन्द वर्मा द्वारा बनारस से प्रकाशित हुआ।[१] आ० भा० पु० में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है।[2] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका दो पृष्ठों पर, भिन्न भिन्न प्रकाशन काल देकर उसे सन्दिग्ध बना दिया है। हि० पु० सा० के पृ० २३५ और ४०८ पर इसका प्रकाशन काल १९१२ ई० तथा पृ० १०२ पर १९१८ ई० दिया हुआ है।[३]

दिया तले अँधेरा

सन् १९१२ ई० में ही **श्री नाथू राम प्रेमी** लिखित 'दिया तले अँधेरा' नामक एक शिक्षाप्रद कहानी का दूसरा संस्करण जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[४]

मूर्ख और बुद्धिमान

सन् १९१२ ई० में ही **चुन्नी लाल खत्री** द्वारा लिखित 'मूर्ख और बुद्धिमान' नामक उपन्यास लहरी प्रेस, काशी से मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[५]

लालू और कालू

सन् १९१२ ई० में ही **पं० देवी प्रसाद तिवारी** द्वारा सम्पादित 'लालू और कालू' नामक कथा अहरौरा निवासी बाबू रामखेलावन सिंह द्वारा प्रकाशित हुई।[६] पुस्तक की प्रस्तावना से ज्ञात होता है कि यह कथा १९११ ई० में ही लिखी गयी थी। इस उपन्यास में संसार की अनित्यता, संगति का प्रभाव तथा समाज की कुरीतियों और उनसे उत्पन्न हानियों का वर्णन किया गया है।

---

१. हि० पु० सा०, पृ० २३५ तथा ४०८।

२. मुखपृष्ठ की की प्रतिलिपि—माधवी, एक अत्यन्त रोचक, शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास, दिल्ली निवासी श्रीयुत लाला कृष्ण लाल लिखित और बाबू बाल मुकुन्द वर्मा, मालिक उपन्यास तरंग द्वारा प्रकाशित, काशी. पृ० सं० ४२।

३. हि० पु० सा०, सा, पृ० १०२।

४. प्रा० स्थान—आ० भा० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दिया तले अँधेरा (एक शिक्षाप्रद कहानी), देवरी निवासी नाथूराम प्रेमी, सम्पादक 'जैन हितैषी' द्वारा मराठी मासिक मनोरंजन की एक कहानी के आधार से लिखित और श्री जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, वम्बई द्वारा निर्णय सागर प्रेस में प्रकाशित, जनवरी सन् १९११ ई०, श्रीवीर वि० सं० २४३८, द्वितीयावृति, पृ० सं० ३३।

५. प्रा० स्थान—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मूर्ख और बुद्धिमान (उपन्यास), लेखक और प्रकाशक श्री चुन्नी लाल खत्री प्रिंटेड बाई पन्ना लाल राय, मैनेजर ऐट लहरी प्रेस, बनारस सिटी प्रथमबार १०००, १९१२ ई०, पृ० सं० ५८।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लालू और कालू, शिवदान सिंह के जीवन यात्रा की कहानी, सम्पादक पं० देवी प्रसाद तिवारी, भुआलपुर सीखड़ जिला मिर्जापुर, प्रकाशक बाबू रामखेलावन सिंह, अहरौरा निवासी, प्रथम वार १०००, संवत् १९६९।

प्रेमलता वा आदर्श दम्पती

सन् १९१२ ई० में ही **उमराव सिंह गुप्त** लिखित 'प्रेमलता वा आदर्श दम्पती' नामक उपन्यास पं० सुदर्शनाचार्य द्वारा गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1]

आदर्श कन्या पाठशाला

सन् १९१२ ई० में ही श्री **ओंकार नाथ वाजपेयी** कृत 'आदर्श कन्या पाठशाला' नामक कहानी प्रकाशित हुई।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशक का नाम नहीं दिया हुआ है।

मारवाड़ी और पिशाचिनी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१२ ई० में **पं० राम नरेश त्रिपाठी** लिखित 'मारवाड़ी और पिशाचिनी' नामक उपन्यास राधामोहन गोकुल जी द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है,[3] पर उसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है। यह एक उपदेश और अपराध-प्रधान उपन्यास है। कर्कशा और मूर्ख स्त्रियाँ किस प्रकार परिवार का जीवन नारकीय बना देती है, यही इस उपन्यास का मुख्य विषय है।

कल्यानी

सन् १९१२ ई० में **बाबू शंकर लाल अग्रवाल** लिखित 'कल्यानी' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा इंडियन प्रेस, कानपुर से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में पवित्र प्रेम क्या है, सच्चरित्र और मर्यादाबद्ध पुरुषों की ईश्वर किस प्रकार सहायता करता है, तथा दुष्टों को वह किस प्रकार दंड देता है, आदि का वर्णन है।

आदर्श माता

दिसम्बर १९१२ ई० के निकट पूर्व में **श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरी** लिखित

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमलता वा आदर्श दम्पती, स्त्री पाठ्य अपूर्व उपन्यास, उमराव सिंह गुप्त, प्रकाशक पं० सुदर्शनाचार्य, गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१२, पृ० सं० ११४।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श कन्या पाठशाला, लेखक ओंकारनाथ वाजपेयी, प्रथम बार १०००, सन् १९१२ ई०, पृ० सं० १६।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मारवाड़ी और पिशाचिनी (उपन्यास), पं० रामनरेश जी त्रिपाठी लिखित प्रथम बार १००० प्रति, प्रिंटेड ऐंड पब्लिश्ड बाई राधामोहन गोकुलजी ऐट दि देवनागरी प्रेस, नं० १७ पगैया पट्टी, कलकत्ता (गुटका साइज)।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कल्यानी, अर्थात् अमूल्य अनूठी शिक्षा का विकास जिसको बाबू शंकर लाल अग्रवाल, स्टेशन मास्टर कवरई, जिला हमीरपुर ने निर्मित कर पं० मनोहर लाल मिश्र के प्रबन्ध से कानपुर इंडियन प्रेस में मुद्रित कराया १९१२, पृ० सं० १५६।

'आदर्श माता' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती', दिसम्बर १९१२ में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की 'पुस्तक परीक्षा' से प्राप्त की गयी हैं। उपर्युक्त 'परीक्षा' में प्रकाशक की सूचना नहीं दी गयी है। इसमें "उपन्यास के ढंग पर आदर्श माता के कर्त्तव्य बतलाये गये हैं"।[1]

दुर्भाग्य परिवर्तन

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१२ ई० में ही **जमुना प्रसाद** लिखित 'दुर्भाग्य परिवर्तन' नामक उपन्यास, आर० एन० श्रीवास्तव ब्रदर्स, नरसिंहपुर द्वारा प्रकाशित हुआ।[2]

भुवन कुमारी

सन् १९१२ ई० में **विश्वंभर दयाल गुप्त** लिखित 'भुवन कुमारी' नामक उपन्यास ओंकार प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3]

ठन ठन बाबू

इसी वर्ष **रामदत्त ज्योतिर्विद** लिखित 'ठनठन बाबू' नामक उपन्यास पं० ब्रह्मदत्त शर्मा द्वारा ब्रह्म प्रेस, इटावा से प्रकाशित हुआ।[4]

धूल भरा हीरा

सन् १९१२ ई० में ही **बाँकेलाल चतुर्वेदी** कृत 'धूल भरा हीरा' नामक उपन्यास बम्बई मशीन प्रेस, आगरा से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास में सरकारी नौकरियों के उम्मीदवारों की दुर्दशा तथा नौकरी प्राप्त करने पर उनके दुष्कार्यों का वर्णन किया गया है।

आदर्श बहू

सन् १९१३ ई० में **उमराव सिंह गुप्त** लिखित 'आदर्श बहू' नामक उपन्यास का

---

१. सरस्वती, भाग १३, संख्या १२, दिसम्बर १९१२, पुस्तक परीक्षा।

२. हि० पु० सा०, पृ० ४५१। हि० पु० सा० के पृ० १०४ पर इस उपन्यास का प्र० का० १९१२ ई० तथा पृ० ४५१ पर १९१३ ई० दिया हुआ है।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भुवन कुमारी, लेखक विश्वम्भर दयाल गुप्त, बी० ए०, प्रकाशक ओंकार प्रेस, प्रयाग, प्रथम बार, सन् १९१२, पृ० सं० ७६।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ठन ठन बाबू, एक सामाजिक उपन्यास, उपहार "ब्राह्मण सर्वस्व", रामदत्त ज्योतिर्विद, प्रिंटेड ऐंड पब्लिश्ड बाइ पी० ब्रह्मदत्त शर्मा ऐट दि ब्रह्म प्रेस, इटावा, प्रथम बार १०००, सं० १९६९, पृ० सं० ५०।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नवीन उपन्यास, धूल भरा हीरा और आजकल की नौकरी के उम्मेदवारों की हालत, बांकेलाल चतुर्वेदी कृत, इसमें महकमों

दूसरा संस्करण गृहलक्ष्मी कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

छोटी बहू

४ फरवरी १९१३ ई० के निकट पूर्व में **श्री गिरिजा कुमार घोष** लिखित 'छोटी बहू' नामक उपन्यास पं० सुदर्शनाचार्य द्वारा गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ ४ फरवरी १९१३ के 'आत्मविद्या' नामक मासिक पत्र में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की 'समीक्षा' से प्राप्त की गयी हैं।

इस समीक्षा से ज्ञात होता है कि गिरिजा कुमार घोष बंगाली होते हुए भी एक हिन्दी लेखक थे। उपर्युक्त समीक्षा के अनुसार "जब से श्री बाबू चिन्तामणि घोष ने हिन्दी भाषा को अपनाया है और इसकी सेवा में तत्पर हुए हैं तब से बहुत से बंगाली सज्जन हिन्दी भाषा के प्रेमी और सेवक हो गये हैं। बाबू गिरिजा कुमार इसी उपवन के एक पुष्प हैं। बहुत दिनों तक 'सरस्वती' के पृष्ठों में आप 'पार्व्वती नन्दन' नाम से प्रख्यात थे"।

देवकली

सन् १९१३ ई० में ही **अनचित लाल** लिखित 'देवकली' नामक उपन्यास कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। भूमिका के अन्त में "२६ जुलाई १९१३, कलकत्ता" मुद्रित होने से इसके प्रकाशन-काल तथा स्थान का पता चलता है।

राजभक्ति

अगस्त १९१३ ई० के निकटपूर्व में **लाला राधेलाल अग्रवाल** रचित 'राजभक्ति' नामक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'नागरी प्रचारक', अगस्त १९१३ ई० में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं। उक्त विज्ञापन के अनुसार विवेच्य उपन्यास में अँगरेजी शासन के प्रति राजभक्ति का उपदेश दिया गया है।

मृगांक लेखा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१३ ई० में **शिवनाथ शर्मा** द्वारा लिखित

का हाल है कि किस तरह ईमानदार आदमी नौकरी कर अपने भाइयों पर टूटता है पर उपन्यास के हीरो सब महकमों में रह कर सब आफतों से बरी रहा, प्रिंटेड बाई एल० बी० बम्बई मशीन प्रेस, सिव का बाजार, आगरा, प्रथमबार ३०००, सन् १९१२, पृ० सं० ३१।

१, प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श बहू, स्त्रियों की स्थिति

'मृगांक लेखा' नामक उपन्यास दामोदर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास की एक प्रति आ० भा० पु० काशी में है, पर उसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।[२]

सत्य प्रेम : मिस्टर व्यास की कथा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१३ ई० में **जगतचन्द रमोला और कुन्दन लाल** लिखित 'सत्य प्रेम' नामक उपन्यास गढ़वाली प्रेस देहरादून से[३] तथा **शिवनाथ शर्मा** लिखित 'मिस्टर व्यास की कथा' नामक उपन्यास दामोदर प्रेस, लखनऊ से[४] प्रकाशित हुआ।

जवाकुसुम अथवा नई सृष्टि

सन् १९१३ ई० में ही **पं० लक्ष्मीदत्त जोशी** कृत 'जवाकुसुम अथवा नई सृष्टि' नामक उपन्यास, स्वयं लेखक द्वारा, मुरादाबाद से प्रकाशित हुआ।[५] यह एक असामान्य और अतिलौकिक घटनाप्रधान कथा है, जिसमें दिखाया गया है कि साधारण मनुष्यों की बातों में आकर हमें अपने मन को चंचल न करना चाहिए तथा गृहस्थ धर्म का पालन करना चाहिए।

लवंगलता

मई १९१४ ई० के पूर्व **बाबू प्यारे लाल गुप्त** लिखित 'लवंगलता' नामक उपन्यास हरिदास एंड कम्पनी, १०१, हरीसन रोड, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास की समीक्षा मई-जून १९१४ के 'मनोरंजन' मासिक पत्र में प्रकाशित हुई थी, जिससे उपर्युक्त सूचनाएँ प्राप्त की गयी हैं। उक्त समीक्षा के अनुसार इस उपन्यास में लवंगलता नामक एक स्त्री के निष्फल प्रेम, उसके अपना धर्म छोड़कर दूसरा धर्म स्वीकार करने, अहंकार, धूर्तता, पाप आदि के भयानक परिणामों का वर्णन किया गया।[६]

दर्शाने वाली एक छोटी सी कहानी, जिसमें सास के अत्याचार, बहू की सहनशीलता और सदाचार तथा पुरुषों के प्रेम के झूठे व्यवहार अच्छी तरह अंकित किये गये हैं; लेखक उमराव सिंह गुप्त, बी० एस० सी०, मिलने का पता—मैनेजर गृहलक्ष्मी कार्यालय, इलाहाबाद १९१३, द्वितीय संस्करण, पृ० सं० ३४।

१. हि० पु० सा०, पृ० ३६६।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मृगांक लेखा, उपन्यास, पंडित शिवनाथ शर्मा द्वारा विरचित, लखनऊ, श्रीदामोदर प्रेस में मुद्रित, प्रथम आवृत्ति, पृ० सं० ४४।
३. हि० पु० सा०, पृ० ४०४।
४. उपरिवत्, पृ० ६३९ (प्रश्न वाचक चिह्न हि० पु० सा० का ही है।)
५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जवाकुसुम अथवा नई सृष्टि उत्कृष्टता का आगम और प्रयोग, पंडित लक्ष्मीदत्त जोशी, बी० ए०, डिपुटी कलेक्टर रचित, फर्स्ट एडीशन १०००, १९१३।
६. मनोरंजन, मई १९१४, लवंगलता।

मनमोहिनी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१४ ई० में **आत्माराम देवकर** लिखित 'मनमोहिनी' नामक उपन्यास लहरी ग्रन्थमाला कार्यालय, जबलपुर से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास की समीक्षा जुलाई, १९१४ ई० को 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी। यह एक स्त्रीशिक्षा विषयक उपन्यास है।

आदर्श मित्र

जुलाई १९१४ ई० की 'सरस्वती' में ही **आत्माराम देवकर** लिखित 'आदर्श मित्र' नामक उपन्यास की समीक्षा प्रकाशित हुई थी। उक्त समीक्षा के अनुसार 'आदर्श मित्र' और 'मनमोहिनी' दोनों पुस्तकें उपन्यास प्रकाशक सोसाइटी, खुरई, जिला सागर से प्रकाशित हुई थीं। उक्त समीक्षा के अनुसार इस उपन्यास में आदर्श मैत्री, राजभक्ति, न्यायपरता, दुर्व्यसन-त्याग, सुकीर्ति-संपादन आदि का चित्रण किया गया है।[2]

चम्पाफूल

सन् १९१४ ई० में **श्रीयुत अनादिधन वन्द्योपाध्याय** द्वारा लिखित 'चम्पा फूल' नामक उपन्यास पं० सुदर्शनाचार्य द्वारा गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3] इसके लेखक नाम से बंगाली जान पड़ते हैं, पर उपन्यास अनुवाद नहीं जान पड़ता। पुस्तक की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास पहले 'गृहलक्ष्मी' नामक मासिक पत्र में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में प्रेम-विवाह का समर्थन किया गया है।

हमारी दाई

सन् १९१४ ई० में ही **पंडित पारसनाथ त्रिपाठी** रचित 'हमारी दाई' नामक उपन्यास बाबू जयराम दास गुप्त द्वारा उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में एक दाई का चरित्र प्रस्तुत किया गया है, जो गाँव से अपने मालिक के साथ कलकत्ते जाती है और वहाँ अन्य दाइयों के संगदोष से चरित्रभ्रष्ट हो जाती है।

चंडूलदास

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१४ ई० में **शिवनाथ शर्मा** लिखित

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ३८०।

२. सरस्वती, भाग १५, अंक ७, जुलाई १९१४ ई०।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चम्पा फूल, ले० श्रीयुत अनादिधन वंद्योपाध्याय, प्र०—पं० सुदर्शनाचार्य, बी० ए०, गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग, प्रथम सं० १९१४।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हमारी दाई (एक मनोरंजन औपदेशिक उपन्यास), बिहार निवासी पंडित पारसनाथ त्रिपाठी लिखित, जिसे उपन्यास बहार ऑफिस, राजघाट; काशी से अनेक पुस्तकों के लेखक बाबू जयराम दास गुप्त ने अपने प्रेमी पाठकों के लिए प्रकाशित किया। काशी चन्द्रप्रभा प्रेस में मैनेजर मुंशी गौरी शंकर लाल द्वारा मुद्रित, प्रथम बार १०००, अक्तूबर १९१४ ई०, पृ० सं० ९२।

'चंडूलदास' नामक उपन्यास दामोदर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, किन्तु मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल मुद्रित नहीं है।[2] इस उपन्यास में बालविवाह और वृद्धविवाह की बुराइयाँ दिखायी गयी हैं।

सौभाग्यवती

सन् १९१४ ई० में **पंडित प्राणनाथ** कृत 'सौभाग्यवती' नामक गद्यकथा का पाँचवाँ संस्करण इंडियन प्रेस, प्रयाग से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[3] इसका सातवाँ संस्करण १९२२ ई० में प्रकाशित हुआ।[4]

सौन्दर्य कुमारी

सन् १९१४ ई० में ही **श्रीमती ब्रह्म कुमारी भगवान देवी दुबे** लिखित 'सौन्दर्य कुमारी' नामक गद्यकथा ओंकारनाथ वाजपेयी द्वारा प्रयाग से प्रकाशित हुई।[5] इस कथा में स्त्रियों को धैर्य और स्त्रीधर्म की शिक्षा दी गयी है।

केसर

इसी वर्ष **बाबू झावरमल दारुका** लिखित 'केसर' नामक उपन्यास श्री ब्रजवल्लभ हरिप्रसाद द्वारा बम्बई से प्रकाशित हुआ।[6]

अघट घटना

इसी वर्ष **लाला भगवान दीन** लिखित 'अघट घटना' नामक उपन्यास बाबू हरिहर

---

१. हि० पु० सा०, पृ० ६३८।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चंडूलदास, एक सामाजिक कुरीतियों की सूचना देने वाली नवीन कथा, शिवनाथ शर्मा द्वारा लिखित, "बच्चे, बूढ़ों की जो यह शादी है। याद रक्खो गुनाह की दादी है।" श्रीदामोदर प्रेस, लखनऊ से एस० एन० शर्मा द्वारा मुद्रित व प्रकाशित। पृ० सं० ६१।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सौभाग्यवती, जिसको पंडित प्राणनाथ, प्रिन्सिपल, विक्टोरिया कालिज, ग्वालियर ने कन्याओं के विद्योत्साह बढ़ाने के लिए लिखकर कन्याधर्मवर्द्धिनी सभा, लश्कर को प्रदान किया। इंडियन प्रेस, प्रयाग से छपकर प्रकाशित हुई, पाँचवीं बार १९१४, पृ० सं० ४८।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सौन्दर्य कुमारी, लेखिका श्रीमती ब्रह्म कुमारी भगवान् देवी दुबे, पुत्री पं० राम गोपाल दुबे, मुरादाबाद, प्रकाशक ओंकार नाथ वाजपेयी, प्रयाग, प्रथम बार १०००, सन् १९१४, पृ० सं० ८७।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—केसर (सामाजिक उपन्यास), लेखक खेतड़ी राज्यान्तर्गत असरापुर निवासी वैश्यकुल सम्भूत बाबू बालकृष्ण दास जी के पुत्र बाबू झावरमल दारुका, प्रकाशक श्रीब्रजवल्लभ हरिप्रसाद, ३३१ कालबादेवी रोड, मुम्बई, मुद्रक मणि लाल इच्छा राम देसाई, 'गुजराती' प्रिंटिंग प्रेस, मुम्बई कोर्ट, सरकल सासून बिल्डिंग, नं० ८, संवत् १९७१, सन् १९१४, पृ० सं० २२।

नाथ द्वारा कृष्ण यन्त्रालय, वनारस से प्रकाशित हुआ ।[1]

रामलाल

१९१४ ई० में ही **मन्नन द्विवेदी गजपुरी** ने रामलाल नामक एक आंचलिक उपन्यास की रचना की जो १९१७ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[2] इस उपन्यास में मुख्यतः ग्रामीण जीवन का—गोरखपुर के एक गाँव का—चित्र प्रस्तुत किया गया है । कदाचित् यह हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास कहलाने का अधिकारी है ।

मालती

सन् १९१५ ई० में **बाबू बालमुकुन्द वर्मा** द्वारा लिखित 'मालती' नामक उपन्यास का दूसरा संस्करण स्वयं लेखक द्वारा हितचिंतक प्रेस, काशी में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

माया मरीचिका

१९१५ ई० में **आत्माराम देवकर** लिखित 'माया मरीचिका' नामक उपन्यास नरमदा लहरी रायल प्रिंटिंग प्रेस, जवलपुर से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ ।[4]

चंचला

मार्च १९१५ ई० के पूर्व **म० कृष्ण अमृतसरी आर्य्योदेशक** रचित 'चंचला' नामक एक 'सच्चा उपन्यास' प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । 'उषा' मार्च १९१५ ई० के पुस्तक-परिचय से उपर्युक्त सूचनाएँ प्राप्त की गयी हैं ।

आदर्श विद्यार्थी

नवम्बर १९१५ ई० के पूर्व **पं० सिद्धनाथ द्विवेदी** लिखित 'आदर्श विद्यार्थी' नामक

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अघट घटना, एक सचित्र शिक्षाप्रद उपन्यास, जो एक विचित्र और सच्ची घटना को लेकर हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक लाला भगवान् दीन (सम्पादक 'लक्ष्मी' और 'राजभक्त' तथा उपसम्पादक 'शब्द सागर' काशी नागरी प्रचारिणी सभा) द्वारा लिखा गया है । जिसको बाबू हरिहरनाथ, बी० ए० ने लेखक से सम्पूर्ण अधिकार लेकर निज कृष्ण यन्त्रालय में छपवाकर प्रकाशित किया, प्रथम वार १०००, १९१४, पृ० सं० १०७ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रामलाल (ग्रामीण जीवन का एक सामाजिक उपन्यास) लेखक मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी' बी० ए०, एम० आर० ए०, एस० प्रकाशक इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्रथम वार, १९१७, पृ० सं० २२८ ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मालती, गार्हस्थ्य उपन्यास, बाबू बालमुकुंद वर्मा, मालिक उपन्यास तरंग कार्यालय, नेपाली खपरा, काशी द्वारा लिखित और प्रकाशित, बी० एल० पावगी द्वारा हितचिन्तक प्रेस, मो० रामघाट, काशी में मुद्रित, दूसरी वार १०००, १९१५, पृ० सं० १३ ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० (द्विवेदी संग्रह); मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माया मरीचिका, गंभीर

उपन्यास दीक्षित और द्विवेदी द्वारा दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। यह सूचना 'सरस्वती', नवम्बर १९१५ की पुस्तक-समीक्षा से प्राप्त की गयी है। उक्त समीक्षा के अनुसार "इसमें एक विद्यार्थी के चरित्र द्वारा यह बात कथा के रूप में समझा दी गयी है कि गृहस्थ स्थिति की प्रतिकूलता मनस्वियों की महत्त्वाकांक्षा रोक नहीं सकती।"[1]

विमला

सन् १९१५ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व हरिदास एंड कंपनी, २०१ हरिसन रोड कलकत्ता से 'विमला' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ फकीर मोहन सेनापति लिखित 'लक्ष्मी' नामक उपन्यास के हिन्दी अनुवाद के साथ संलग्न विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं।[2] इस उपन्यास में सतीत्व-पालन का महत्त्व सिद्ध किया गया है।

सुशीला : भारत माता

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१५ ई० में देवेन्द्र लिखित 'सुशीला' नामक उपन्यास इन्द्रप्रस्थ आर्य ऐजेन्सी, दिल्ली से तथा हरस्वरूप पाठक लिखित 'भारत माता' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन उपन्यासों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मेरी दुःख गाथा

सन् १९१५ ई० में ही कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी लिखित 'मेरी दुःख गाथा' नामक उपन्यास राजपूत ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, आगरा से मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[4]

तरल तरंग

फरवरी १९१६ ई० के पूर्व सोमेश्वर दत्त शुक्ल रचित 'तरल तरंग' नामक पुस्तक इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुई। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'सरस्वती', फरवरी १९१६ में प्रकाशित पुस्तक-समीक्षा के अनुसार "यह पुस्तक संग्रह रूप में है। ...इसमें—अपूर्ण शिक्षक और अधम लक्षण—एक बढ़िया

पारमार्थिक शिक्षा का अपूर्व (उपन्यास), पढ़ने से लोकोत्तर आनन्द प्राप्त होता है। नरमदा लहरी रायल प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, रचयिता बाबू आत्माराम देवकर महाराष्ट्र क्षत्रिय, जिला—दमोह निवासी, प्रथमावृत्ति १०००, सितम्बर १९१५; पृ० सं० ६२।

१. सरस्वती, भाग १६, अंक ११, नवम्बर १९१५, पुस्तक समीक्षा।

२. फकीर मोहन सेनापति, लच्छमा, प्र० का० १९१५, अन्तिम पृष्ठों का विज्ञापन।

३. हि० पु० सा०, पृ० ४८२ तथा २३६।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मेरी दुःख गाथा, एक शिक्षापूर्ण उपन्यास, लेखक व प्रकाशक, कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी, सम्पादक—'स्वदेश बान्धव' 'व राजपूत'

उपन्यास है। और सावित्री सत्यवान नाटक तथा चन्द्रहाल नाटक ये दो नाटक हैं।'[१]

श्यामा श्याम

फरवरी १९१६ ई० के पूर्व पं० शंकर प्रसाद मिश्र लिखित 'श्यामा श्याम' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'सरस्वती', भाग १७, अंक २ (फरवरी १९१६) में 'पुस्तक प्राप्ति', स्तम्भ में इसका उल्लेख मात्र हुआ है।

शिरोमणि

जून १९१६ ई० के निकट पूर्व में बाबू शंकर दयाल श्रीवास्तव रचित 'शिरोमणि' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसका उल्लेख 'सरस्वती', भाग १७, अंक ६ (जून १९१६) में 'पुस्तक-प्राप्ति' स्तम्भ में हुआ है।

रोहिणी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९१६ ई० में पांडेय नवल किशोर सहाय लिखित 'रोहिणी' नामक उपन्यास अखौरी सच्चिदानन्द सिंह द्वारा सरस्वती भंडार, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। १९-६-१९१६ के 'प्रताप' के 'प्राप्ति स्वीकार' स्तम्भ से उपर्युक्त सूचनाओं की पुष्टि होती है।[3] उपन्यास का द्वितीय संस्करण भी उपर्युक्त प्रकाशक द्वारा प्रकाशित किया गया था,[४] पर उसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिये रहने के कारण इसके प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता। इस उपन्यास में पातिव्रत्य, धर्मपालन तथा स्त्रीशिक्षा आदि विषयों को उपजीव्य बनाया गया है।

सदाचारी बालक

जनवरी १९१६ ई० में ही श्रीयुत शय्यद अमीर अली (मीर) लिखित 'सदाचारी बालक' नामक एक शिक्षाप्रद कहानी हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीरा बाग, बम्बई से प्रकाशित हुई।[५] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन काल १९१७ ई० लिखा है, जो

राजपूत एंग्लो ओरियन्टल प्रेस, आगरा में कुँवर हमुमन्त सिंह यन्त्राध्यक्ष के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ। प्रथमावृत्ति सं० १९७२, पृ० सं० ९८।

१. सरस्वती, भाग १७, सं० २, फरवरी १९१६, इंडियन प्रेस का विज्ञापन।

२. हि० पु० सा०, पृ० ४९३।

३. प्रताप, १९-६-१९१६, प्राप्ति स्वीकार (रोहिणी)

४. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि,—रोहिणी, ले० पांडे नवल किशोर सहाय, प्र० अखौरी सच्चिदानन्द सिंह, सरस्वती भंडार, बाँकीपुर द्वितीय बार २०००।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सदाचारी बालक (एक शिक्षाप्रद

भ्रामक है।[१] इसका एक और संस्करण जो, सम्भवतः तीसरा संस्करण होना चाहिए, (पुस्तक के मुखपृष्ठ पर संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है) दिसम्बर १९१७ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकार कार्यालय, वम्बई से प्रकाशित हुआ।[२] इस पुस्तक में एक सदाचारी वालक की कथा वर्णित है, जो अध्यवसाय के बल पर अपना अध्ययन चालू रखता है तथा अपनी माता का पालनपोषण भी करता है।

नकली साधु

सन् १९१६ ई० में ही **पं० अयोध्या प्रसाद शुक्ल** द्वारा रचित 'नकली साधु' नामक कथा पं० नरदेव शर्मा द्वारा सरस्वती पुस्तकालय, काशी से छपकर प्रकाशित हुई।[३]

जावित्री

सन् १९१६ ई० में ही **छबीले लाल गोस्वामी** लिखित 'जावित्री' नामक आख्यायिका सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन से छपकर प्रकाशित हुई।[४]

कैसा अन्धेर

सन् १९१६ ई० में ही **पं० अनादिघन वंद्योपाध्याय** लिखित 'कैसा अन्धेर' नामक उपन्यास देवेन्द्र प्रसाद जैन द्वारा दी सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, आरा से प्रकाशित हुआ।[५] उपन्यासकार का नाम वंगाली है पर उपन्यास मौलिक ही प्रतीत होता है।

विमाता

सन् १९१६ ई० में ही **श्री अवध नारायण** द्वारा लिखित 'विमाता' नामक उपन्यास वावू रामावतार प्रसाद द्वारा शुभंकर पुर, दरभंगा से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है पर इसकी आलोचना जून १९१६ की 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी जिससे उपर्युक्त सूचनाएँ प्राप्त की

कहानी), लेखक देवरी निवासी श्रीयुत शय्यद अमीर अली (मीर), डिपुटी इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल, उदयपुर (सी० पी०) स्टेट, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीरावाग, वम्बई, द्वितीयावृत्ति, पौष १९७२ वि०, जनवरी १९१६ ई०, पृ० सं० २३।

१. हि० पु० सा०, पृ० ३७४।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

३. प्रा० स्था०— आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नकली साधु, जिसे पं० अयोध्या प्रसाद शुल्क ने रचा और अध्यक्ष पं० नरदेव शर्मा, सरस्वती पुस्तकालय, काशी ने हमारे परोपकारार्थ छपवाया, २०००, सन् १९१६, पृ० सं० २३।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जावित्री (आख्यायिका), स्त्री दर्पण से उद्धृत श्रीमन्निम्वार्कसम्प्रदायाचार्य श्रीछवीले लाल गोस्वामि लिखित एवं प्रदीप श्री, श्रीसुदर्शन प्रेस, वृन्दावन से छपकर प्रकाशित, सन् १९१६ ई०, प्रथम वार १०००, पृ० सं० ५५।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कैसा अन्धेर (उपन्यास), लेखक

गयी हैं।[१] इस उपन्यास का छठा संस्करण १९५१ ई० में पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय और पटना से प्रकाशित हुआ।[२] छठे संस्करण में पहले संस्करण की भूमिका संलग्न है जिसके अन्त में "वसंत पंचमी संवत् १९७२" तिथि दी हुई है। मा० पु० पटना में उपलब्ध विमाता के षष्ठ संस्करण में इसके छहों संस्करणों के प्रकाशन-काल दिये हुए हैं। इसके अनुसार विमाता का प्रथम संस्करण १९१६ ई० में, द्वितीय संस्करण १९२२ ई० में, तृतीय संस्करण १९२८ ई० में, चतुर्थ संस्करण १९३५ ई० में, पंचम संस्करण १९४६ ई० में और षष्ठ संस्करण १९५१ ई० में प्रकाशित हुआ था।[३] इससे सिद्ध है कि यह उपन्यास पाठकों में काफी लोकप्रिय हुआ।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने विमाता के प्रथम संस्करण का प्रकाशन काल १९२३ ई० दिया है,[४] जो भ्रामक है।

रामप्रताप

सन् १९१६ ई० में ही बाबू जालिम सिंह द्वारा लिखित 'राम प्रताप' नामक उपन्यास बाबू मनोहर लाल भार्गव द्वारा नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से छपकर प्रकाशित हुआ।[५]

कॉलिज होस्टल

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१६ ई० में ही चाँदकरण सारदा लिखित 'कॉलिज होस्टल' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा अजमेर (?) से प्रकाशित हुआ।[६] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास का दूसरा संस्करण सन् १९२३ ई० में महेश पुस्तकालय, अजमेर से प्रकाशित हुआ।[७] इस उपन्यास में विद्यार्थियों के छात्रावास जीवन की कहानी वर्णित की गयी है।

पंडित अनादिधन वन्द्योपाध्याय, "वन कुसुम", "चम्पाफूल", "रामलीला" (अंगरेजी) इत्यादि ग्रन्थों के रचयिता, प्र० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन, दी सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, आरा, प्रथम वार १९१६।

१. सरवस्ती, भाग १७, सं० ६, जून १९१६ ई०।

२. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विमाता, एक करुणापूर्ण मौलिक सामाजिक उपन्यास, संशोधित एवं सुसम्पादित षष्ठ संस्करण, अवध नारायण, पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय और पटना।

३. उपरिवत्।

४. हि० पु० सा०, पृ० ३७९।

५. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रामप्रताप, उपन्यास, जिसको रायबहादुर बाबू जालिम सिंह साहब, निवासी ग्राम अकबरपुर, जिला फैजाबाद, पोस्ट मास्टर जनरल रियासत ग्वालियर ने सकल जन हितार्थ निर्माण किया, प्रथम बार, लखनऊ, बाबू मनोहर लाल भार्गव, बी० ए०, सुपरिन्टेन्डेन्ट के प्रबन्ध से मुंशी नवल किशोर सी० आई० ई० के छापेखाने में छपा, सन् १९१६ ई०।

६ हि० पु० सा०, पृ० ४८२।

७. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विद्यार्थी मनोरंजन ग्रन्थमाला, संख्या १,

जोगी की फेरी

सन् १९१६ ई० में ही **बाबू रामविलास जी शारदा** लिखित 'जोगी की फेरी' नामक उपन्यास का प्रथम भाग स्वयं लेखक द्वारा अजमेर से प्रकाशित हुआ।[1]

आचरण परिशोध

अक्टूबर १९१७ ई० के निकटपूर्व में **श्रीयुत गुरु नारायण खन्ना** द्वारा लिखित 'आचरण परिशोध' नामक उपन्यास समाज सुधार ग्रन्थमाला कार्यालय, ४० जानसेन गंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ १-१०-१९१७ के 'प्रताप' के 'प्राप्ति स्वीकार' स्तम्भ से प्राप्त की गयी हैं।

सदाचारिणी

अक्टूबर १९१७ ई० के निकट अतीत में **श्रीमती कुमुद बाला देवी** लिखित 'सदाचारिणी' नामक उपन्यास जननी कार्यालय, शिवठाकुरगली, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ अक्टूबर १९१७ ई० की 'सरस्वती' में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की पुस्तक-समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं। उक्त समीक्षा के अनुसार इस उपन्यास में सदाचार की पराकाष्ठा दिखायी गयी है। तथा यह स्त्रीशिक्षा का सर्वश्रेष्ठ उपन्याम" है।[2]

अलका मन्दिर

सन् १९१७ ई० में **महथा देवनारायण प्रसाद सिंह** द्वारा लिखित 'अलका मन्दिर' अथवा 'अलका ज्योति' नामक उपन्यास हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] मुखपृष्ठ पर "बंगला रंगमहल से" वाक्यखंड मुद्रित रहने से इसके अनुवाद होने का भी अनुमान होता है। पता नहीं यह उपन्यास मौलिक है या अनूदित। इस उपन्यास में 'पत्नी-व्रत' का महत्त्व दिखाया गया है।

कॉलेज होस्टल, अर्थात् विद्यार्थी जीवन की लीला का अछूता उपन्यास, लेखक कुँवर चाँदकरण जी शारदा बी० ए०, प्रकाशक—चौधरी श्रीचन्द्र, प्रबन्धकर्त्ता महेश पुस्तकालय, ढसेटी बाजार अजमेर, द्वितीयावृत्ति २०००। सन् १९२३।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जोगी की फेरी (प्रथम भाग), जिसमें हिन्दू जाति की क्षति व अधोगति के मूलकारणों को उपन्यास द्वारा बतलाया गया है, लेखक बाबू राम विलास जी शारदा म्युनिसिपल कमिश्नर व रचयिता आर्य धार्मेन्द्र जीवन अजमेर, प्रति १०००, सं० १९७३, पृ० सं० ९६।

२. सरस्वती, अक्तूबर १९१७, पुस्तक परीक्षा।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अलका मन्दिर, अथवा अलका ज्योति (बँगला रंग महल से) गया जिलान्तर्गत परसा ग्राम निवासी चित्रगुप्तवंशीय महथा गोरक्षनाथात्मज महथा देव नारायण प्रसाद सिंह, भूतपूर्व सम्पादक "शिक्षा", संयुक्त सम्पादक

सुभद्रा

सन् १९१७ ई० में ही रामनरेश त्रिपाठी लिखित 'सुभद्रा' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा हिन्दी प्रेस, प्रयाग से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।[1] इसका दूसरा संस्करण १९२४ ई० में प्रकाशित हुआ।[2]

दो कान्ता

फरवरी १९१७ ई० के पूर्व धन्ना लाल जैन लिखित 'दो कान्ता' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'सरस्वती', भाग १८, अंक २ (फरवरी १९१७) में इस उपन्यास का उल्लेख पुस्तक-प्राप्ति स्तम्भ में हुआ है।

प्रेम

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१७ ई० में श्री कृष्ण मिश्र द्वारा लिखित 'प्रेम' नामक उपन्यास हरिनारायण चौधुरी द्वारा नाथनगर, भागलपुर से प्रकाशित हुआ[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

पीयूषधारा

सन् १९१७ ई० में ही पं० गुरुदत्त जी शर्मा लिखित 'पीयूषधारा नामक उपन्यास (?) बाबू लालसिंह वर्मा द्वारा गया से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास (?) का तृतीय संस्करण १९२६ ई० में प्रकाशित हुआ।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। पर तृतीय संस्करण के समर्पण से ज्ञात होता है कि यह १९१७ ई० में पंचम सिंह वर्म्मा द्वारा लिखी गयी थी, पर बाद में गुरु दत्त जी ने अपना नाम दे दिया!

यह उपन्यास न होकर पीयूषधारा नामक दवा का विज्ञापन है। कहानी है कि यमलोक में हलचल मची हुई है, यमराज चिंतित है कि पृथ्वी से कोई मनुष्य उनके यहाँ

"कलकत्ता समाचार" द्वारा लिखित, प्रकाशक हरिदास एंड कम्पनी, २०१ हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, प्रथम बार संवत् १९७४, पृ० सं० ६१।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुभद्रा (एक सुन्दर शिक्षाप्रद कहानी), लेखक और प्रकाशक रामनरेश त्रिपाठी, संवत् १९७४, पुस्तक मिलने का पता—साहित्य भवन, प्रयाग, पंडित रामजी लाल शर्मा के प्रबन्ध से हिन्दी प्रेस, प्रयाग में मुद्रित, पृ० सं० ८२।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

३. हि० पु० सा०, पृ० ६४८।

४. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पीयूषधारा प्रताप, एक शिक्षाप्रद अपूर्व मनोहर उपन्यास, लेखक—खेतड़ी निवासी पं० गुरुदत्त जी शर्मा, प्रकाशक बाबू लालसिंह वर्मा, अध्यक्ष पीयूषधारा मेडिकल हाल, जम्हौर, गया, तृतीय बार १५००, १९२६, कीमत तीन आना।

क्यों नहीं आता। वे सभी बीमारियों को दंड देने लगते हैं। बीमारियाँ निवेदन करती हैं कि पीयूषधारा नामक औषधि ने हमलोगों को पराजित कर दिया है।

मोहनी

सन् १९१७ ई० में ही **अखौरी राधा प्रसाद सिंह** कृत 'मोहनी' नामक उपन्यास सरस्वती भंडार, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में कुसंगति का दुष्परिणाम तथा सामाजिक कुरीतियों के दोष दिखाये गये हैं।

अद्भुत रहस्य वा सचित्र विचित्र वारांगना

सन् १९१७ ई० में ही **माधव केसीट** रचित 'अद्भुत रहस्य वा सचित्र विचित्र वारांगना' नामक उपन्यास चार भागों में पं० काशी नाथ शर्मा द्वारा श्री भैरव विहारी कार्यालय, मथुरा से प्रकाशित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके केवल दो भागों को (भाग ३-९) प्राप्त करने में समर्थ हो सका है। इस उपन्यास में वेश्याओं की चालाकियों तथा अन्त में उनकी दुर्दशा का वर्णन किया गया है।

अशान्त

सन् १९१७ ई० के ही लगभग **विनोद शंकर व्यास** ने 'अशान्त' नामक उपन्यास की रचना की, जो दस वर्ष बाद १९२७ ई० में हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय से प्रकाशित हुआ।[4] घटनाओं के स्वाभाविक वर्णन और विश्वसनीय चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह प्राक् प्रेमचन्द युग का उल्लेखनीय उपन्यास है।

हृदय की परख

सन् १९१७ ई० में ही **चतुरसेन शास्त्री** लिखित 'हृदय की परख' नामक उपन्यास

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मोहिनी (सामाजिक उपन्यास), लेखक अखौरी राधा प्रसाद सिंह, प्रकाशक अखौरी सच्चिदानन्द सिंह, सरस्वती भंडार, मुरादपुर, बाँकीपुर, प्रथम बार, संवत् १९७४, पृ० सं० १८६।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अद्भुत रहस्य वा सचित्र विचित्र वारांगना, तीसरा हिस्सा, "जो-सखुन-वर हैं, वही लुत्फे सखुन रहते हैं। वरना कहने को तो गूँगे भी दहन रखते हैं।" लेखक माधव केसीट, प्रकाशक पं० काशीनाथ शर्मा, श्रीभैरव विहारी कार्यालय, लाल दरवाजा, गऊघाट, नं० ४१ (मथुरा), अलीजाह दरबार प्रेस, ग्वालियर में छपी, सन् १९१७ ई०, पृ० सं० ८८।
चौथे हिस्से के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि उपरिवत्।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अशान्त, पंडित विनोद शंकर व्यास, हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय, रथयात्रा (आषाढ़) १९८४, पृ० सं० १२०।
समर्पण से ज्ञात होता है कि इस उपन्यास की रचना इसके प्रकाशन-काल के दस वर्ष पूर्व हो चुकी थी।

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[१] डॉ माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन काल १९१८ ई० में बताया है, जो अशुद्ध है।[2] १९५५ ई० में इस उपन्यास का दसवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ, जो परवर्त्ती काल में इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है।[३] दसवें संस्करण की भूमिका में इस उपन्यास की लोकप्रियता पर प्रकाश डालते हुए प्रकाशक ने लिखा है--"यह उपन्यास अल्प काल में ही इतना लोकप्रिय हुआ कि इसके ६ संस्करण प्रकाशित हो गये और बात की बात में बिक गये। द्वितीय महायुद्ध काल में जब कागज आदि प्राप्त करने की सुविधाएँ न थी, और मँहगाई बढ़ी हुई थी, हमने पाठकों के अनुरोध से पर्याप्त व्यय उठाकर इसके तीन संस्करण एक के बाद एक प्रकाशित किये जो हाथोहाथ बिक गये।"[४]

आदर्श विद्यार्थी

सन् १९१८ ई० में सिद्धनाथ दीक्षित रचित 'आदर्श विद्यार्थी' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण दीक्षित और द्विवेदी द्वारा दारागंज प्रयागसे प्रकाशित हुआ।[५] इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन काल प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को ज्ञात नहीं हो सका है। इस उपन्यास में यह दिखलाया गया कि स्थिति की प्रतिकूलता मनस्वियों की महत्त्वाकांक्षा को कुंठित नहीं कर सकती तथा अध्यवसाय और दृढ़ता के बल पर मनुष्य अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सकता है।

रात की वारदात अर्थात् डूबती हुई औरत

इसी युग (१८९०-१९१७) में सरदार बाबू गुरुमुख सिंह खत्री लिखित 'रात की वारदात अर्थात् डूबती हुई औरत' नामक २४ पृष्ठों की कथा बाबू बैजनाथ प्रसाद द्वारा बनारस से प्रकाशित हुई।[६] इस उपन्यास के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। पुस्तक के आवरणपृष्ठ पर इस उपन्यास के लेखक बालमुकुन्द खत्री बताये गये हैं।

---

१. प्रा० स्था०—रा० भा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हृदय की परख (एक स्वतन्त्र और सचित्र उपन्यास), लेखक आचार्य चतुरसेन शास्त्री आयुर्वेदाचार्य, चित्रकार श्रीयुत रविशंकर महाशंकर रावल, गोल्ड मेडलिस्ट, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, मार्गशीर्ष १९७४, दिसम्बर १९१७, प्रथमावृत्ति, मूल्य ।।।=)।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४३६।

३. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना।

४. आचार्य चतुरसेन शास्त्री, हृदय की परख, दसवाँ संस्करण, भूमिका।

५. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रात की वारदात अर्थात् डूबती हुई औरत, सर्दार बाबू गुरुमुख सिंह खत्री, नार्मली शहर, बलिया निवासी रचित, प्रकाशक बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, पृ० सं० २४।

मनःकल्पनात्मक पुस्तकें

मनःकल्पना या फेंटेसी के अन्तर्गत वे सभी कथापुस्तकें परिगणित की जा सकती हैं, जिनमें जीवन का यथार्थ चित्र न होकर किसी की मनःकल्पित कथा का वर्णन होता है। भूगर्भ, अज्ञात प्रदेशों तथा ग्रहों पर घटित होने वाली वैज्ञानिक कथाएँ मनःकल्पना के अन्तर्गत ही आती हैं। हिन्दी में सर्वप्रथम ठाकुर जगमोहन सिंह ने १८८५ ई० में 'श्यामा स्वप्न' नामक मनःकल्पना की रचना की थी। विवेच्य काल में इसकी परम्परा क्षीण रूप में बनी रही।

आश्चर्य वृत्तान्त

सन् १८९३ ई० में **पं० अम्बिका दत्त व्यास** रचित 'आश्चर्य वृतान्त' नामक मनःकल्पना व्यास यन्त्रालय, भागलपुर से प्रकाशित हुई।[1] बिहार बन्धु, भाग २२, नम्बर ८-९ (अगस्त सेप्टेम्बर १८९३), में प्रकाशित विवेच्य कथापुस्तक की समीक्षा से ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम यह 'पीयुष प्रवाह' नामक पत्र में प्रकाशित हुई थी[2]। 'आश्चर्य वृत्तान्त' के तीसरे संस्करण (१९४१ ई०) के 'दो शब्द' (ले० बलदेव प्रसाद मिश्र) से ज्ञात होता है कि इसकी रचना सं० १९४१ में (१८८४ ई०) आरम्भ हुई थी और समाप्ति संवत् १९४५ (१८८८ ई०) में।[3]

'आश्चर्य वृत्तान्त' के दूसरे संस्करण का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। इसका तीसरा संस्करण १९४१ ई० में कृष्णकुमार व्यास, व्यास पुस्तकालय, मान-मन्दिर, काशी द्वारा प्रकाशित किया गया।[4]

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'आश्चर्य वृत्तान्त' के प्रथम संस्करण के प्रकाशक के सम्बन्ध में गलत सूचना दी है।[5]

देवी या दानवी

सन् १९०९ ई० में **जयराम दास** रचित 'देवी या दानवी उपन्यास' शीर्षक मनः

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आश्चर्य वृत्तान्त, एक बड़े अचम्भे की बात जिसके आगे जादू इन्द्रजाल भूत विद्या आदि सब झख मारें और चुहचुहाती हिन्दी में लहराती कविता और तिस पर भी उपदेश साहित्याचार्य पंडित अंबिकादत्त व्यास विरचित, भागलपुर, व्यास यन्त्रालय में गणपति त्रिपाठी के प्रबन्ध से छपा, सन् १८९३, पहली बार ५००, पृ० सं० १९९।

२. बिहार बन्धु, भाग २२, नंम्बर ८-९ (अगस्त सेप्टेम्बर १८९३), पृ० १४३।

३. आश्चर्य वृतांत, ले० अम्बिका दत्त व्यास, तृतीय संस्करण, १९४१, दो शब्द (बलदेव प्रसाद मिश्र)

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३७६।

कल्पना स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित की गयी।[1] इस पुस्तक में साँवल सिंह और अचरज सिंह के अफ्रीका के एक अज्ञात स्थान पर जाने तथा अद्भुत और अतिलौकिक घटनाएँ देखने का वर्णन है। लगता है, यह उपन्यास किसी अँगरेजी मनः कल्पना का हिन्दी रूपान्तर है, क्योंकि कथा के अन्त में ईसाई धर्म की महत्ता प्रतिपादित की गयी है।

आदर्श नगरी

सन् १९१३ ई० में **वेणी प्रसाद** रचित 'आदर्श नगरी' नामक मनःकल्पनात्मक वैज्ञानिक कथा का प्रथम भाग माधो प्रसाद द्वारा पुस्तक कार्यालय, धर्मकूप काशी से प्रकाशित हुआ।[2] इसका दूसरा भाग १९२० ई० में प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में एक अद्भुत लौह नगर का वर्णन है, जहाँ अनेक प्रकार के अद्भुत शक्ति सम्पन्न क्षेपास्त्र निर्मित होते हैं।

चन्द्रलोक की यात्रा

विवेच्यकाल में ही **जयरामदास** लिखित 'चन्द्रलोक की यात्रा' नामक वैज्ञानिक कथा-पुस्तक काशी से स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुई।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस कथा-पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

---

१ प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—देवी या दानवी उपन्यास, बाबू जयरामदास रचित और प्रकाशित, १९०९।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श नगरी (प्रथम भाग) ले० बा० वेणी प्रसाद, प्र० माधो प्रसाद स्वामी, पुस्तक कार्यालय, धर्मकूप काशी, प्रथमवार १००० १९१३ ई०।

३. प्रा० स्था०—प० का० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श नगरी, द्वितीय भाग, बा० वेणी प्रसाद द्वारा लिखित, माधो प्रसाद स्वामी, पुस्तककार्यालय धर्मकूप, काशी द्वारा प्रकाशित, प्रिंटेड बाइ एस०-एन० बागची, ऐट दि मेडिकल हाल प्रेस, बनारस कैंट, प्रथमवार १०००, १९२०, मूल्य ॥), पृ० सं० ९०।

४. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

स्त्रीशिक्षा विषयक कथा पुस्तकें

पूर्ववर्ती काल की भाँति इस अवधि में भी कुछ स्त्रीशिक्षा विषयक कथापुस्तकें लिखी गयीं जिनका विवरण निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

बुद्धिवती

सन् १८९४ ई० में **श्री रोशनलाल बी० ए०** द्वारा लिखित 'बुद्धिवती' नामक स्त्रीशिक्षा प्रधान कथा क्वीन्स प्रेस में पंडित स्वामी दयाल के प्रबन्ध से मुद्रित हुई।[१] इस पुस्तक की रचना बालिकाओं को गृहस्थ धर्म का उपदेश देने के लिए हुई थी। इसमें बुद्धिवती नामक एक शिक्षित स्त्री की कर्मठता, धार्मिकता, गृहप्रबन्ध, मितव्ययिता, सज्जनता आदि का वर्णन कथा के रूप में किया गया है।

सुबोध कन्या

सन् १८९४ ई० में ही **लाला देवराज** लिखित 'सुबोध कन्या' नामक स्त्रीशिक्षा प्रधान गद्यकथा प्रकाशित हुई। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस कथा के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसका दूसरा संस्करण १९०५ ई० में प्रकाशित हुआ।[2] दूसरे संस्करण की 'भूमिका' के अन्त में "मई सन् १८९४" मुद्रित है,[3] जिससे इस कथा का रचनाकाल ज्ञात होता है। उक्त भूमिका के अनुसार इस पुस्तक की रचना इस उद्देश्य से की गयी थी कि इसे पढ़कर पाठिकाएँ "विपत्काल में मातापिता को सहायता देने, दुःख पड़ने पर धैर्यवती रहने, पराक्रम तथा बुद्धिमत्ता से दुःखनिवृत्त करने, देश तथा धर्मभक्ति में तत्पर होने, उत्तम जीवन व्यतीत करने, उत्तम कार्यों में उत्साहित होने और विद्या आदि शुभ गुणों में रुचि बढ़ाने का स्वभाव धारण करें मैं इन कथाओं को प्रकाश करता हूँ"[४]

ललना बुद्धि प्रकाशिनी

सन् १९०४ ई० में **पं० परमेश्वर मिश्र** रचित 'ललना बुद्धि प्रकाशिनी' शीर्षक

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बुद्धिवती, प्रथम भाग, ए बुक डेस्क्राइविंग डेली लाइफ ऑफ ए हिन्दू फेमिली एंड इलस्ट्रेटिंग सम ऑफ दि बेस्ट मोरल प्रिंसिपुल्स ऑफ दि रामायन सूटेड फॉर स्टडीऑफ यंग गर्ल्स बाई रोशन लाल, बी० ए०, इलाहाबाद, क्वीन्स प्रेस में पंडित स्वामी दयाल के प्रबन्ध से मुद्रित हुई, प्राइस पर कॉपी ८ आना, फर्स्ट एडीशन-१००० कॉपीज, १८९४।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुबोध कन्या, लाला देवराज, प्रधान कन्या महाविद्यालय, जालंधर, विरचित, १९०५ ई०, दूसरीबार, २०००।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. उपरिवत्।

स्त्रीशिक्षा विषयक कथापुस्तक लहरी प्रेस, काशी से वाबू देवकीनन्दन खत्री द्वारा प्रकाशित की गयी।[1]

आदर्श परिवार

सन्० १९१४ ई० में पं० मणिशंकर शर्मा रचित 'आदर्श परिवार' नामक कथा पुस्तक ओंकारनाथ वाजपेयी द्वारा प्रयाग से प्रकाशित हुई।[2] इस पुस्तक में कृष्णा देवी नामक आदर्श महिला का चरित्र प्रस्तुत किया गया है जो अपनी ससुराल जाकर एक सामान्य घर को आदर्श घर में परिणत कर देती है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ललना वुद्धि प्रकाशिनी, पंडित परमेश्वर मिश्र (हेडपंडित मिडिल वर्नाक्यूलर स्कूल, डुमरावाँ, जिला भागलपुर ने वनाया) और वाबू देवकीनन्दन खत्री ने निज काशी लहरी प्रेस में छापकर प्रकाशित किया, १८०४ ई०, पृ० सं० ६२।

२. प्राप्ति स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श परिवार, लेखक पं मणिशंकर शर्मा, प्रकाशक ओंकार नाथ वाजपेयी, प्रयाग, प्रथम वार १०००, सन् १९१४, पृ० सं० १९२।

धार्मिक उपदेशाख्यान

विवेच्यकाल में कतिपय मौलिक धार्मिक उपदेशाख्यान भी लिखे गये। इन उपाख्यानों में कथा के द्वारा धार्मिक विचारों और दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन प्रधान लक्ष्य है। जीवन के विश्वसनीय चित्रण का अभाव होने के कारण इन कथापुस्तकों को उपन्यास न कह कर धार्मिक उपाख्यान कहना ही अधिक उपयुक्त है।

सुकुमाल

सन् १९०५ ई० में **जैनेन्द्र किशोर** रचित 'सुकुमाल' शीर्षक धार्मिक उपाख्यान जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपाख्यान में जैन धर्मानुसार "पंच पापों का निराकरण करके शिव रमणी (मुक्ति) से संयोग" का वर्णन किया गया है।[2]

संसार वा महास्वप्न और परदेशी

सन् १९०६ ई० में **पं० बलदेव प्रसाद मिश्र** कृत 'संसार वा महास्वप्न और परदेशी' शीर्षक उपख्यान वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपाख्यान में वार्त्तालाप और दृष्टान्तों के द्वारा संसार को जाल या महास्वप्न के समान सिद्ध किया गया है।

माया

सन् १९१७ ई० में **पं० रामगोपाल मिश्र** लिखित 'माया' शीर्षक धार्मिक उपाख्यान कमरशल प्रेस, जुही, कानपुर से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपख्यान में माया के फन्दे का वर्णन किया गया है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुकुमाल (एक मनोहर उपन्यास) आरा निवासी, श्रीयुत बाबू जैनेन्द्र किशोर द्वारा लिखित, जिसको मुख्ययोस्थ—जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय के स्वामी ने बनारस के चन्द्रप्रभा यन्त्रालय में छपाकर प्रकाशित किया, वीर संवत् २४३१, ईस्वी सन् १९०५, पृ० सं० १६।

२. उपरिवत्, उपोद्घात।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—संसार वा महास्वप्न और परदेशी, भवानुरूपतत्तत्समयानुकूल कमल मुकुल विकास जिसको मुरादाबाद निवासी पं० बलदेव प्रसाद जी मिश्र ने निर्माण किया, और खेमराज श्री कृष्णदास ने बम्बई निज "वेंकटेश्वर" स्टीम प्रेस में मुद्रित कर प्रसिद्ध किया, संवत् १९६३, शके १८२८।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माया, लेखक वा प्रकाशक पं० रामगोपाल मिश्र, बी० एस० सी०, एफ़० टी० एल, डिपुटी कलेक्टर (वरनाकुलर ट्रांसलेशन सेक्रेटरी टी० एस०), लाला भगवान दास गुप्त द्वारा कमरशल प्रेस, जुही-कानपुर में छपी, प्रथमबार, १०००, १९१७।

प्रेमचन्दपूर्व युग

(१८९०-१९१७)

अनूदित कथा साहित्य

विवेच्य काल में मौलिक कथापुस्तकों की रचना के साथ साथ, इतर भाषाओं की अनेक कथापुस्तकों के हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किये गये। यह अनूदित कथासाहित्य परिमाणतः और प्रकारतः इतना महत्त्वपूर्ण है, तथा हिन्दी उपन्यास साहित्य पर इसका इतना प्रभाव है, कि इस पर विना सम्यक् रूप से विचार किये हिन्दी उपन्यास के विकास को ठीक ठीक नहीं समझा जा सकता। यहाँ हिन्दी में अनूदित समस्त कथासाहित्य का परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

विषय की दृष्टि से विवेच्यकालीन अनूदित कथा साहित्य को निम्नांकित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

१. अपराधप्रधान और जासूसी कथाएँ
२. वैज्ञानिक रोमांस
३. उपन्यास (सामान्य)
४. इतिहासाश्रित उपन्यास और रोमांस
५. धार्मिक पौराणिक कथाएँ
६. स्त्रीशिक्षा विषयक कथाएँ

परवर्ती पृष्ठों में अनूदित कथाओं का विवरण उपर्युक्त शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा रहा है।

अपराध प्रधान और जासूसी कथाएँ

विवेच्यकाल में सामान्य पाठकों की रुचि को ध्यान में रखकर गोपाल राम गहमरी, देवकीनन्द खत्री तथा हरिकृष्ण जौहर आदि ने मौलिक अपराधप्रधान और जासूसी कथापुस्तकों की रचना की थी। मानो अपने मौलिक लेखन को अपर्याप्त समझकर उक्त लेखकों तथा इस श्रेणी के अन्य लेखकों ने, अँगरेजी तथा बँगला कथापुस्तकों के हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किये। इस काल में अँगरेजी और बँगला के जिन दो कथा लेखकों के अनुवाद विशेष रूप से लोकप्रिय हुए, वे हैं जी डब्ल्यू एम० रेनाल्ड्स और पाँचकौड़ी दे। प्रमुखतः इन्हीं कथाकारों की अपराधप्रधान और जासूसी कथापुस्तकें हिन्दी में अनूदित हुईं। कुछ अन्य लेखकों की ऐसी कथापुस्तकें भी अनूदित हुईं, पर वे विशेष लोकप्रिय न हो सकीं। इनका परिचय परवर्ती पृष्ठों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

रेनाल्ड्स कृत अपराधप्रधान कथाएँ

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में देवकीनन्दन खत्री का ध्यान रेनाल्ड्स के रोमांसों की तरफ आकृष्ट हुआ, और उन्होंने केवल रेनाल्ड्स के अनूदित उपन्यास प्रकाशित करने के लिए **उपन्यास माला** नामक एक सचित्र मासिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया।

प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उक्त 'उपन्यास माला' का कोई अंक अब तक नहीं मिल सका है। सम्भव है, इसके कुछ ही अंक प्रकाशित हो पाए हों और पत्रिका बन्द हो गयी हो।

प्रवीन पथिक अथवा अलादीन और लैला

चैतन्य पुस्तकालय, पटना में बाबू देवकीनन्दन खत्री के अग्रज बाबू **देवी प्रसाद खजांची** द्वारा अनूदित 'प्रवीन पथिक अथवा अलादीन और लैला' नामक उपन्यास उपलब्ध है।[1] यह रेनाल्ड के 'लायला ऑर स्टार ऑफ मिंगरेलिया' नामक अँगरेजी उपन्यास का अनुवाद है। इसके मुखपृष्ठ पर मुद्रित सूचना से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद देवकीनन्दन खत्री के उत्साह से प्रस्तुत किया गया था। सम्भव है, यह उपन्यास सर्व प्रथम 'उपन्यासमाला' में प्रकाशित हुआ हो। ग्रन्थ के मुखपृष्ठ प्रर प्रकाशनकाल नहीं दिया हुआ है, पर इसकी भूमिका के नीचे "मुजफ्फरपुर ता० ५ मार्च सन् १८९९ ई०" अंकित है। **इससे अनुमान किया जा सकता है कि यह अनुवाद सर्वप्रथम १८९९ ई० में प्रकाशित हुआ था।**

'प्रवीन पथिक व अलादीन और लैला' का द्वितीय संस्करण लहरी प्रेस, बनारस से १९१० ई० में प्रकाशित हुआ।

नरपिशाच

सन् १९०१ ई० में रेनाल्ड के 'फाउस्ट' नामक उपन्यास का **श्रीहरिकृष्ण जौहर** कृत 'नरपिशाच' शीर्षक अनुवाद भारत जीवन यंत्रालय से मुद्रित होना आरम्भ हुआ। इस अनुवाद का पहला भाग १९०१ ई० में, दूसरा भाग १९०३ ई० में तथा तीसरे और चौथे भाग १९०४ ई० में मुद्रित हुए।[2]

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रवीन पथिक अथवा अलादीन और लैला, पहिला हिस्सा, बाबू देवी प्रसाद खजानची ने अपने कनिष्ट भ्राता चन्द्रकान्ता के रचयिता बाबू देवकीनन्दन के उत्साह से विलायत के अद्वितीय उपन्यास लेखक रिनाल्ड साहब के अँगरेजी उपन्यास "लायला और स्टार आफ मिंगरेलिया" का अनुवाद करके प्रकाश किया। मुजफ्फरपुर नारायण प्रेस में मुद्रित।

२. प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नरपिशाच (प्रथम भाग), एक अत्यन्त मनोहर उपन्यास, जी० डब्ल्यू रेनाल्ड्स कृत फोस्ट नामक अँग्रेजी ग्रन्थ का भाषानुवाद, श्री हरिकृष्ण जौहर द्वारा अनुवादित, काशी भारत जीवन यंत्रालय में मुद्रित, सन् १९०१ ई०, प्रथम वार १०००, प्रति। (इसके दूसरे और तीसरे भागों की अन्य सूचनाएँ तो पहले भाग की ही तरह हैं पर दोनों का प्रकाशन-काल क्रमशः १९०३ ई० और १९०४ ई० दिया हुआ है। चौथे भाग के मुखपृष्ठ पर अन्य सूचनाएँ तो हैं, पर प्रकाशन काल नहीं है। यह १९०४ ई० अथवा १९०५ में मुद्रित हुआ था। पृष्ठ संख्या २००+१९३+१९६+१५३=७४२।

सच्चा बहादुर

सन् १९०२ ई० में रेनाल्ड के 'राइ हाउस प्लाट' नामक उपन्यास का **चुन्नीलाल खत्री** कृत अनुवाद 'सच्चा बहादुर' देवकीनन्दन खत्री के लहरी प्रेस, बनारस से प्रथम बार मुद्रित होना शुरू हुआ। इसके प्रथम तीन भाग १९०२ ई० में तथा चौथा भाग १९०३ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है।[2]

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से ज्ञात होता है कि विवेच्य उपन्यास का कन्हैया लाल शर्मा कृत एक संक्षिप्त अनुवाद **'सत्यवीर'** शीर्षक से सी० एम० कम्पनी, मुरादाबाद से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय में यह पुस्तक उपलब्ध है, पर इसके आरम्भिक पृष्ठ इस प्रकार फटे हुए हैं कि अनुवादक, प्रकाशक, तथा प्रकाशन-काल का कुछ भी पता नहीं चलता। इस अनुवाद को पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह पहले की अपेक्षा निम्नकोटि का अनुवाद है। यह अविकल अनुवाद नहीं है, क्योंकि यह २३१ पृष्ठों में समाप्त हो गया है, जबकि पहला अनुवाद ९२० पृष्ठों में समाप्त हुआ था।

रंगमहल

सन् १९०४ ई० में रेनाल्ड्स के 'लव्ज आव दि हरम' नामक उपन्यास का **बाबू गंगा प्रसाद गुप्त** कृत छायानुवाद, 'रंगमहल' शीर्षक से, दो भागों में, सन् १९०४ ई० में पं० बांके बिहारी शर्मा द्वारा लहरी प्रेस, काशी से छपकर प्रकाशित हुआ[3]

अनंग रंग

सन् १९०८ ई० में **चुन्नी लाल खत्री** ने रेनाल्ड्स के किसी उपन्यास का 'अनंग रंग' शीर्षक से अनुवाद करके तीन भागों में प्रकाशित किया।[4] सम्भव है यह रेनाल्ड के 'लव्ज ऑफ दि हरम' का ही अनुवाद हो।

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। प्रथम भाग का मुखपृष्ठ नहीं है। द्वितीय भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सच्चा बहादुर, दूसरा हिस्सा, राई हाउस प्लाट नामी रेनाल्ड साहब के अँगरेजी उपन्यास का अनुवाद, बाबू चुन्नीलाल खत्री द्वारा लिखित और प्रकाशित, काशी लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित, १९०२ ई०। (तीसरे और चौथे हिस्सों की अन्य सूचनाएँ उपरिवत् हैं, केवल चौथे हिस्से के मुखपृष्ठ पर मुद्रणकाल १९०३ ई० और आवरण पृष्ठ पर १९०४ ई० दिया हुआ है। पृ० सं० २३९+२३७+२३८+२०६=९२०।

२. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४४२।

३ प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रंगमहल (पहिला हिस्सा), अर्थात् रेनल्ड्स के "लव्ज आव दि हरम" नामक उपन्यास का छायानुवाद बाबू गंगा प्रसाद गुप्त लिखित और शाहजादपुर निवासी भैया भोलानाथजी टंडन की सहायता से, पं० बाँके बिहारी शर्मा द्वारा प्रकाशित, काशी लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित, १९०४ ई०। (दूसरे हिस्से के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि भी उपरिवत् है।)

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। प्रथम भाग का मुखपृष्ठ गायब है। दूसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनंगरंग (दूसरा हिस्सा), बाबू चुन्नीलाल खत्री द्वारा लिखित और

जोजेफ विलमट

रेनाल्ड्स के 'जोजेफ विलमट' नामक उपन्यास का **यशोदानन्द अखौरी और चतुर्भुज औदीच्य** कृत अनुवाद, इसी शीर्षक से, १९०५ ई० में, वी० एल० प्रेस, कलकत्ता से मुद्रित होना आरम्भ हुआ। इसके प्रथम और द्वितीय खंड १९०५ ई० में, तीसरा खंड १९०६ ई० में तथा पाँचवाँ खंड १९०७ ई० में प्रकाशित हुआ।[1]

लन्दन रहस्य

रेनाल्ड्स के सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास **मिस्ट्रीज आफ दी कोर्ट ऑफ लन्दन** का अनुवाद सर्वप्रथम, **ठाकुर प्रसाद खत्री** ने दो भागों में, प्रस्तुत कर स्वयं प्रकाशित किया। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक सूची में इस अनुवाद का उल्लेख है, पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। मार्च १९०७ की 'सरस्वती' में विवेच्य अनुवाद के प्रथम खंड की समीक्षा प्रकाशित हुई थी।[2] इससे इस खंड का प्रकाशन-काल १९०७ ई० का आरम्भ अथवा १९०६ ई० का अन्त अनुमित होता है। इस समीक्षा में इस अनुवाद के कई खंडों में प्रकाशित होने की सूचना दी हुई है। प्रतीत होता है कि ठाकुर प्रसाद खत्री इसके दो से अधिक खंड प्रकाशित न कर पाए।

जान पड़ता है, रेनाल्ड्स के 'मिस्ट्रीज ऑफ दि कोर्ट ऑफ लन्दन' के अनुवाद की हिन्दी पाठकों में बहुत ज्यादा माँग थी। ठाकुर प्रसाद खत्री के अधूरे अनुवाद से इसकी माँग कदाचित् और भी तीव्र हो गयी। इधर इतने बड़े ग्रन्थ का अनुवाद करके उसे प्रकाशित करने का खतरा भी बहुत ज्यादा था। अन्ततः कलकत्ते की आर० एल० बर्म्मन एंड कम्पनी ने इस वृहत्काय उपन्यास का अनुवाद 'लन्दन रहस्य' शीर्षक से प्रतिमाह एक एक अंक करके प्रकाशित करने का निश्चय किया। **पं० सदानन्द शुक्ल** इसके अनुवादक नियुक्त किये गये। अनुमान किया गया कि यह लगभग १०० अंकों में समाप्त होगा। मई १९१४ तक इसके ४ अंक निकल चुके थे।[3]

प्रकाशित, प्रिंटेड वाइ पन्नालाल राय. मैनेजर एट दि लहरी प्रेस, वनारस सिटी. १९०८ (तीसरे हिस्से के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि दूसरे हिस्से की तरह) पृ० सं० ११७+१२०+११५=३५२।

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। प्रथम खंड का मुखपृष्ठ गायब है। दूसरे खंड के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जोजेफ विलमट, दूसरा खंड, अनुवादक यशोदानन्दन अखौरी और चतुर्भुज औदीच्य, कलकत्ता वी० एल० प्रेस में दक्षिणाचरण चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित, संवत् १९६२, पहली वार १०००, प्रति। (तीसरे खंड के मुखपृष्ठ की अन्य बातें उपरिवत्, केवल मुद्रण काल संवत् १९६३। चौथे खंड का मुखपृष्ठ गायब। पाँचवे खंड की अन्य सूचनाएँ उपरिवत्, पर इसमें कलकत्ता हिन्दी ट्रान्सलेटिंग कम्पनी द्वारा प्रकाशित और वी० एल० प्रेस में श्रीरामदयाल आढ्य द्वारा मुद्रित संवत् १९६४" यह अतिरिक्त सूचना है)।

२. सरस्वती, मार्च १९०७, पुस्तक समीक्षा, मिस्ट्रीज ऑफ दि कोर्ट ऑफ लन्दन (प्रथम खंड)

३. सरस्वती, भाग १५, जुलाई, लन्दन रहस्य।

आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में 'लन्दन रहस्य' की ४२ संख्याएँ (संख्या ४ से लेकर ४५ तक) उपलब्ध हैं। इन संख्याओं के मुखपृष्ठों तथा पुस्तक सूची से प्राप्त सूचनाओं को मिलाकर देखने से ज्ञात होता है कि इसकी चौथी से ४५ वीं संख्याएँ १९१४ ई० से आरम्भ होकर १९२२ ई० तक लगातार प्रकाशित हुई थीं। आर्यभाषा पुस्तकालय में 'लन्दन रहस्य' की संख्या ६, १०, ११, तथा १२ के द्वितीय संस्करण तथा संख्या ४ और ५ के तृतीय संस्करण उपलब्ध है।

आर्य भाषा पुस्तकालय में संगृहीत 'लन्दन रहस्य' की संख्याओं का विवरण—

संख्या ४—लन्दन रहस्य अर्थात् मिस्ट्रीज ऑफ दी कोर्ट ऑफ लन्दन, पहला भाग, पहला खंड, आर० एल० वर्म्मन द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित, कलकत्ता, ३६७ अपर चीतपुर रोड, "वर्म्मन प्रेस" में रामलाल वर्मा द्वारा मुद्रित। सं० १९८३ विक्रमीय (१९२६ ई०), तृतीय वार २००० ।

संख्या ५—उपरिवत् ।

संख्या ६—अन्य सूचनाएँ उपरिवत्, प्रकाशन काल सं० १९७८ वि० (१९२१ ई०), द्वितीय संस्करण २००० ।

संख्या ७—मुखपृष्ठ गायब रहने के कारण कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।

संख्या ८—दूसरा खंड, आर० एल० वर्म्मन द्वारा प्रकाशित, कलकत्ता, ४०१/२ अपर चीतपुर रोड, 'वर्म्मन प्रेस' में रामलाल वर्म्मा द्वारा मुद्रित सं० १९७१ विक्रमीय (१९१४), प्रथम वार ५००० ।

संख्या ९—उपरिवत् ।

संख्या १०—उपरिवत्, इसका दूसरा संस्करण भी है। अन्य सूचनाएँ उपरिवत्, दूसरा संस्करण १०००, सं० १९७९ वि० (१९२२)।

संख्या ११—उपरिवत्—द्वितीय संस्करण १५००, सं० १९७९ वि० (१९२२)।

संख्या १२—उपरिवत्—दूसरी वार १०००, सं० १९८० वि० (१९२३)।

संख्या १३—मुखपृष्ठ नहीं है।

संख्या १४—संख्या ८ की तरह, सं० १८७१ (१९१५ ई०)।

संख्या १५—तीसरा खंड, अन्य सूचनाएँ उपरिवत् ।

संख्या १६—मुखपृष्ठ नहीं है, तीसरा खंड।

संख्या १७—तीसरा खंड, पंडित सदानन्द शुक्ल अनुवादित और आर० एल० वर्म्मन द्वारा प्रकाशित, सं० १९७२ विक्रमीय (१९१५ ई०) प्रथम वार २००० ।

संख्या १८—उपरिवत् ।

संख्या १९ से २३ तक—पुस्तकालय में नहीं है।

संख्या २४—मुखपृष्ठ नहीं है। दूसरा भाग, पाँचवाँ खंड।

संख्या २५—दूसरा भाग, पाँचवाँ खंड, प्रकाशन काल का पता नहीं चलता।

संख्या २६—पाँचवाँ खंड, सं० १९७३ विक्रमीय (१९१७ ई०)।

संख्या २७—पाँचवाँ खंड, सं० १९७४ विक्रमीय (१९१७ ई०), प्रथम वार २००० ।

संख्या २८—उपरिवत् ।

संख्या २९—मुखपृष्ठ नहीं है ।

संख्या ३०—मुखपृष्ठ नहीं है ।

संख्या ३१—मुखपृष्ठ नहीं है ।

संख्या ३२—मुखपृष्ठ नहीं है ।

संख्या ३३—मुखपृष्ठ नहीं है । दूसरा भाग, छठा खंड ।

संख्या ३४—मुखपृष्ठ नहीं है ।

संख्या ३५—छठवाँ खंड, कलकत्ता ३७१ अपर चीतपुर रोड, "वर्म्मन प्रेस" में रामलाल वर्मा द्वारा मुद्रित । सं० १९७७ विक्रमीय (१९२० ई०) में प्रथम वार २००० ।

संख्या ३६—दूसरा भाग, सातवाँ खंड । मुखपृष्ठ नहीं है ।

संख्या ३७—सातवाँ खंड, सं० १९७७ विक्रमीय (१९२१), प्रथम संस्करण २००० ।

संख्या ३८—सातवाँ खंड, सं० १९७८ विक्रमीय (१९२१), प्रथम संस्करण २००० ।

संख्या ३९—उपरिवत् ।

संख्या ४०—मुखपृष्ठ नहीं है ।

संख्या ४१—सातवाँ खंड, संवत् १९७८ विक्रमीय (१९२२), प्रथम संस्करण २००० ।

संख्या ४२—आठवाँ खंड, सं० १९७८ विक्रमीय (१९२२), प्रथम संस्करण २००० ।

संख्या ४३—आठवाँ खंड, सं० १९७९ विक्रमीय (१९२२ ई०), प्रथम वार २००० ।

संख्या ४४—आठवाँ खंड, सं० १९७९ विक्रमीय (१९२२ ई०), प्रथम वार २००० ।

संख्या ४५—उपरिवत् ।

बाद में विवेच्य उपन्यास के प्रथम खंड का **सजल कुमार** कृत एक अनुवाद चिनगारी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ । यह अनुवाद मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय में उपलब्ध है । इसके मुखपृष्ठ पर इसका प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है ।

दुर्जन अथवा एक दुराचारी की दुर्दशा

रेनाल्ड के किसी उपन्यास का **श्री जैनेन्द्र किशोर** ने 'दुर्जन अथवा एक दुराचारी की दुर्दशा' शीर्षक से अनुवाद प्रस्तुत किया, जो १९०८ ई० में उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ ।[1]

रणवीर

श्री दुर्गा प्रसाद खत्री लिखित 'रामरखा का खून' (१९१४ ई०) के साथ संलग्न विज्ञापन से ज्ञात होता है कि रेनाल्ड के 'उमरपाशा' नामक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद "रणवीर" शीर्षक से १९१४ ई० के पूर्व लहरी प्रेस, बनारस सिटी से प्रकाशित हो चुका

---

१. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दुर्जन अथवा एक दुराचारी की

था ।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

किले की रानी

रेनाल्ड के 'दि यंग फिशरमैन' नामक उपन्यास का बाबू गंगा प्रसाद गुप्त कृत अनुवाद 'किले की रानी' शीर्षक से उपन्यास कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ । आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति है पर उसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचना नहीं दी हुई हैं ।[२] 'चन्द्रकान्ता सन्तति', भाग १४ (मुद्रण काल १११५ ई०) के साथ संलग्न विज्ञापन से ज्ञात होता है कि उक्त अनुवाद १९१५ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था ।[३] इस विज्ञापन से रेनाल्ड के उपन्यासों की लोकप्रियता के तथ्य पर भी प्रकाश पड़ता है ।

पीतल की मूर्ति

सन् १९१७ ई० में रेनाल्ड कृत 'ब्रोन्ज स्टैचू' नामक उपन्यास का 'पीतल की मूर्ति' शीर्षक अनुवाद रामलाल वर्मा द्वारा वर्म्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित किया गया ।[४] ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर अनुवादक का नाम नहीं दिया हुआ है । जान पड़ता है, पुस्तक रूप में छपने के पूर्व यह अनुवाद 'दारोगा दफ्तर' के अंकों में क्रमशः प्रकाशित हो चुका था । प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को 'दारोगा दफ्तर' के सभी अंक तो नहीं प्राप्त हो सके हैं, पर इसके १९१६ ई० के दो अंकों में (वर्ष ७, अंक ३, मार्च सन् १९१६ ई० और वर्ष ७, अंक ८, सितम्बर १९१६ ई०) विवेच्य अनुवाद के कुछ अंश प्रकाशित मिलते हैं ।"[५]

दुर्दशा, जे० डब्ल्यू रेनाल्ड के एक नाविल का अनुवाद, आरा नि० जैनेन्द्र किशोर गाँगिल (अग्रवाल जैन) कर्तृक—जिसे उपन्यास दर्पण के मासिक बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा ने निज व्यय से छपवाकर प्रकाशित किया, १९०८ ई०, पृ० सं० ७४ ।

१. रामरखा का खून, ले० दुर्गाप्रसाद खत्री, प्रकाशन काल १९१४, विज्ञापन (रणवीर) ।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—किले की रानी, रेनाल्ड साहब के "दि यंग फिशरमैन" नामक उपन्यास का भाषानुवाद, काशी निवासी बाबू गंगा प्रसाद गुप्त कृत काशी "उपन्यास कार्यालय" के मालिक बाबू बालमुकुन्द वर्मा द्वारा प्रकाशित, काशी हितचिंतक प्रेस में मुद्रित, पृ० सं० १३० ।

३. चन्द्रकान्ता संतति, भाग १४, (प्रकाशन काल १९१५ ई०), विज्ञापन (किले की रानी) ।

४. आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में इसका पहला भाग नहीं प्राप्त होता अतः तत्सवन्धी सूचनाओं के लिए वहाँ की पुस्तक-सूची पर निर्भर होना पड़ता है । शेष चार भाग पुस्तकालय में उपलब्ध हैं, जिनके मुखपृष्ठों की प्रतिलिपि नीचे दी जाती है—
पीतल की मूर्ति, उद्भुत घटनापूर्ण सचित्र उपन्यास, दूसरा भाग मिस्टर जार्ज विलियम रेनाल्ड्स कृत 'ब्रोन्ज स्टैचू' का अनुवाद, रामलाल वर्मा द्वारा ४०१/२, अपर चीतपुर रोड, "वर्मन प्रेस", कलकत्ता से मुद्रित और प्रकाशित, प्रथम वार २०००, सं० १९७४ वि० (शेष भागों के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपियाँ उपरिवत् ।)

५. हिन्दी दारोगा दफ्तर, वर्ष ७, अंक ३, मार्च सन् १९१६ ई० तथा वर्ष ७, अंक ८ सितम्बर, सन् १९१६ ई० । (प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी) ।

गुप्त रहस्य

रेनाल्ड के 'वर्जीना' नामक उपन्यास का **पं० रूपनारायण शर्मा कृत** 'गुप्त रहस्य' शीर्षक अनुवाद उपन्यास बहार ऑफिस, बनारस से प्रकाशित हुआ था। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस अनुवाद की दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं।[1] दोनों उपन्यास बहार ऑफिस से प्रकाशित हैं। एक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक तथा मूल उपन्यास का नाम लिखा हुआ है, पर दूसरे में यह सूचना नहीं मिलती है। एक की पृष्ठ संख्या १५५ है दूसरे की १३६। इससे ज्ञात होता है कि ये दोनों प्रतियाँ एक ही अनुवाद के दो संस्करण हैं। दोनों में से किसी में भी प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।

रावर्ट मैकेयर

रेनाल्ड्स के 'रावर्ट मैकेयर' नामक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद सेवक कार्यालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। इस अनुवाद की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है, पर यह इस प्रकार फटी हुई है कि इसके अनुवादक, प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती।

शैतान

आर्यभाषा पुस्तकालय में रेनाल्ड्स के किसी उपन्यास का 'शैतान' शीर्षक अनुवाद उपलब्ध है, पर इसके आरम्भिक पृष्ठों के गायब रहने के कारण अनुवादक, प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। पुस्तक सूची से भी कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।

---

१. आ० भा० पु० काशी। में उपलब्ध प्रतियों के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि (क) गुप्त रहस्य, अनुवादक पं० रूपनारायण शर्मा, इंगलैंड के जगतविख्यात मि० जार्ज रिनाल्डस के "वर्जीना" नामक उपन्यास का अविकल हिन्दी अनुवाद, प्रकाशक उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, बनारस, पृ० सं० १५५। (ख) गुप्त रहस्य, उपन्यास, रूपनारायण शर्मा द्वारा लिखित, पुस्तक मिलने का पता—उपन्यास बहार ऑफिस, राजघाट, बनारस, प्रथम बार।

गोपाल राम गहमरी द्वारा अनूदित

अपराधप्रधान और जासूस कथाएँ

जैसा गत पृष्ठों में लिखा जा चुका है, गोपाल राम गहमरी के नाम पर प्रचलित पुस्तकों के सम्बन्ध में यह निर्णय करना सबसे कठिन है कि इनमें से कौन मौलिक हैं और कौन अनुवाद। उन्होंने विवेच्य काल में बँगला के प्रसिद्ध जासूसी कथालेखक पाँचकौड़ी दे की प्राय: समस्त अपराध कथाओं के अनुवाद अपने 'जासूस' नामक मासिक पत्र में प्रकाशित किये थे। गहमरी जी ने प्राय: अनूदित उपन्यासों में मूल उपन्यास और उपन्यासकार का उल्लेख नहीं किया है और अनूदित उपन्यासों को भी इस रूप में प्रस्तुत किया है, मानो वे मौलिक हों। श्री कृष्णानन्द जोशी ने 'प्रतिभा' (फरवरी १९१८) में प्रकाशित अपने एक पत्र में यह दावा पेश किया था कि गहमरी जी के "सब उपन्यास बँगला या अँगरेजी भाषा के उपन्यासों के भद्दे अनुवाद मात्र हैं।"[2] उन्होंने यह भी सिद्ध किया था कि पाँच कौड़ी दे कॉनन डायल की जासूसी कथाओं को बँगला में रूपान्तरित कर उन्हें अपने नाम से प्रकाशित करा दिया करते थे। जोशी जी के अनुसार दे साहब का 'गोविन्द राम' कॉनन डायल के सरलकहोम्स का, और डॉ० बोस डॉ० वाटसन का, नामान्तरण मात्र है।[3] गहमरी जी की अनेक तथाकथित मौलिक अपराध-कथाओं में गोविन्द राम और डॉ० बोस आते हैं। इस बात की सम्भावना अधिक है कि ये कथाएँ अघोपित अनुवाद हों। गहमरी जी की कुछ तथाकथित मौलिक अपराध कथाओं के पात्रों और स्थानों के नाम बंगाल प्रदेशीय हैं। इनके भी अनुवाद होने की अधिक सम्भावना है। फिर भी ये पुस्तकें वस्तुत: अनुवाद है या नहीं, या ये किन पुस्तकों के अनुवाद हैं, यह तब तक निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता जब तक पाँचकौड़ी दे की बँगला जासूसी कथाओं और कॉनन डायल की अँगरेजी जासूसी कथाओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन न किया जाए।

प्रस्तुत प्रबन्ध में गहमरी जी की उन पुस्तकों को अनुवाद मान लिया गया है, जिनके अनुवाद होने की धारणा अन्य साक्ष्यों से पुष्ट होती है, यद्यपि जिन्हें स्वयं अनुवादक ने अनुवाद नहीं कहा है।

भानमती

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार गहमरी जी का 'भानमती' नामक उपन्यास सं० १९५१ वि० अथवा १८९४ ई० में प्रकाशित हुआ था। आचार्य शुक्ल और श्री शिवनारायण श्रीवास्तव इसे अनुवाद मानते हैं, जबकि डॉ० गुप्त और श्री ब्रजरत्न दास इसका उल्लेख

---

१. उपरिवत्, पृ०।

२. उपरिवत्, पृ०।

मौलिक उपन्यास के रूप में करते हैं। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

नेमा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त[1] और श्री शिवनारायण श्रीवास्तव[2] के अनुसार १८९४ ई० में गहमरी जी का 'नेमा' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। आचार्य शुक्ल और श्री व्रजरत्नदास ने इस पुस्तक का उल्लेख नहीं किया है। गहमरी जी द्वारा लिखित इस नाम की एक कथापुस्तक 'जासूस' मासिक पत्र के दो अंकों में (अगस्त और सितम्बर १९१२ ई०), ७७ पृष्ठों में प्रकाशित हुई थी।[3] यदि समान नाम वाली ये दोनों कथापुस्तकें एक हैं, और उपर्युक्त आलोचकों की सूचनाएँ सही हैं तो यह मानना पड़ेगा कि १८९४ ई० में प्रकाशित 'नेमा' ही पुनः 'जासूस' में प्रकाशित हुई। श्री शिवनारायण श्रीवास्तव के अनुसार 'नेमा' भावानुवाद है, जबकि डॉ० गुप्त इसे मौलिक मानते हैं। १९१२ ई० के जासूस में प्रकाशित 'नेमा' में कोई ऐसी सूचना नहीं दी हुई है, जिससे ज्ञात हो कि यह अनुवाद है, या मौलिक। उपन्यास के पात्रों और घटनाओं को देखकर अवश्य इसके अनुवाद होने का सन्देह होता है। पर निश्चय के साथ कुछ कहना कठिन है।

सौभद्रा

कदाचित् सन् १८९६ ई० के पूर्व गहमरी जी की 'सौभद्रा' नामक कथापुस्तक प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक की एक प्रति चैतन्य पुस्तकालय (गायघाट, पटना सिटी) में उपलब्ध है। उसके आवरणपृष्ठ पर प्रकाशक (काला काँकर, हनुमत् प्रेस) की सूचना तो दी हुई है, किन्तु प्रकाशन-काल का कोई उल्लेख नहीं है। चैतन्य पुस्तकालय में इस पुस्तक की प्रवेश-तिथि २७ दिसम्बर १८९६ ई० दी हुई है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि इसका रचना-काल दिसम्बर १८९६ ई० के पूर्व होगा। श्री व्रजरत्न दास ने भी इसका उल्लेख गहमरी जी के आरम्भिक उपन्यासों के रूप में 'चतुर चंचला' के साथ किया है, जो उपर्युक्त अनुमान की पुष्टि करता है।[4] यह कथा लघु आकार के १० पृष्ठों में समाप्त हुई है। पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर इसे "श्री गोपाल राम सम्पादित क्षुद्र उपन्यास" बताया गया है। इस वाक्यखंड से तथा पुस्तक पढ़ने से पता चलता है कि यह किसी बँगला कहानी का अनुवाद मात्र है।

हीरे का मोल

कदाचित् सन् १८९८ के अन्त या १८९९ ई० के जनवरी माह में गहमरी जी की

१. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० २८।

२. हिन्दी उपन्यास, पृ० ४८।

३. नेमा, जासूस, अगस्त और सितम्बर १९१२ ई०, पृष्ठ संख्या ७७, प्राप्ति स्थान—चैत्तन्य पुस्तकालय (गायघाट, पटना सिटी)।

४. व्रजरत्नदास, हिन्दी उपन्यास साहित्य, पृ० १६१।

ँगला से अनूदित 'हीरे का मोल' नामक कथापुस्तक प्रकाशित हुई थी।[१] 'पुस्तकावतरण' से ज्ञात होता है कि यह कथा बाबू नगेन्द्र नाथ गुप्त के किसी उपन्यास का, जो पहले पहल 'प्रदीप' नामक बँगला मासिक पत्र में प्रकाशित हुआ था, हिन्दी अनुवाद है और यह सर्वप्रथम 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' में छपी थी।[२] आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध इस पुस्तक के आवरणपृष्ठ पर अन्य सूचनाएँ तो हैं, पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। 'हिन्दी प्रदीप' जिल्द २२, संख्या २ (फरवरी १८९९ ई०) में प्रकाशित इसकी समीक्षा से ज्ञात होता है कि इसका रचना-काल १८९८ ई० का अन्त या जनवरी १८९९ ई० होगा।[३]

बड़ा भाई

सन् १८९८ ई० के अन्त या जनवरी १८९९ ई० में ही गहमरी जी का 'बड़ा भाई' नामक अनूदित उपन्यास प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है। 'हिन्दी प्रदीप' जिल्द २२, सं० २ (फरवरी १८९९ ई०) में प्रकाशित इस उपन्यास की समीक्षा से इसका प्रकाशन-काल संकेतित होने के साथ साथ यह भी ज्ञात होता है कि "यह बंगभाषा का अनुवाद है।" आचार्य शुक्ल ने इसका प्रकाशन-काल सं० १९५७ वि० बताया है, जो अशुद्ध है।

गुप्तचर

सन् १८९९ ई० में ही गहमरी जी का किसी अँगरेजी कथा के आधार पर लिखित 'गुप्तचर' नामक अपराधप्रधान कथापुस्तक प्रकाशित हुई।[४] पुस्तक की भूमिका में गहमरी जी ने लिखा है "एक विलायती गुप्त पुलिस की कहानी का यह निचोड़ है। विलायती नाम गाँव कर्णकटु होते हैं। इसी से उनकी जगह हिन्दुस्थानी नाम गाँव बना दिये गये।[५]"

जादूगरनी मनोरमा या पाँच खून

सन् १९०० ई० में, या उसके निकटपूर्व में, गहमरी जी ने बँगला के जासूसी कथाकार बाबू पाँचकौड़ी दे की जासूसी कथा 'मनोरमा' का अनुवाद 'जादूगरनी मनोरमा या पाँच खून' नाम से प्रस्तुत किया। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त नहीं हो सका है। इसका एक विज्ञापन 'जासूस' भाग १, अंक ५-६ (सितम्बर-

---

१. हीरे का मोल, प्र० खेमराज श्री कृष्णदास, 'श्री वेंकटेश्वर यंत्रालय' बम्बई, पृ० सं० ३६, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)।

२. उपरिवत्।

३. प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी।

४. गुप्तचर, प्र० भारतमित्र प्रेस, ९७ चोरबगान, कलकत्ता, संवत् १९५६ वि०, पृ० सं० १३८, प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी।

५. उपरिवत्।

अक्टूबर १९०० ई०) में छपा था, जिससे इसका रचना-काल संकेतित होता है।[१] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका रचना-काल १९०१ ई० दिया है, जो भ्रामक है।

हिन्दी के आलोचकों ने इस कथा का उल्लेख गहमरी जी के मौलिक उपन्यास के रूप में किया है,[२] जो भ्रामक है। गहमरी जी ने इसकी 'भूमिका' में स्पष्ट लिखा है "यह जादूगरनी मनोरमा बंगभाषा की मनोरमा का अनुवाद मात्र है।"[३]

इस कथा का दूसरा संस्करण भारत जीवन प्रेस, काशी से सन् १९११ ई० में प्रकाशित हुआ। दूसरे संस्करण में ११०० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं।[४] इसका तीसरा संस्करण १९२७ ई० में लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[५] इसका चौथा संस्करण कदाचित् १९३३ ई० में लहरी बुक डिपो से शीर्षक बदल कर ('जादूगरनी' मनोरमा से 'जुमेलिया', जुमेलिया इस उपन्यास की प्रधान पात्री है) निकला।[६] इस कथा का पाँचवाँ संस्करण भी प्रकाशित हुआ, पर कहाँ से, और किस वर्ष, इसका ठीक ठीक पता नहीं चलता।[७] आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध इस प्रति में प्रकाशन-काल तो नहीं ही दिया हुआ है, प्रकाशक के सम्बन्ध में भी बड़ी गड़बड़ सूचना है। आवरणपृष्ठ पर प्रकाशक का नाम 'श्री शारदा पुस्तक भंडार, ज्ञानवापी काशी,' और मुखपृष्ठ पर 'श्री महावीर पुस्तकालय, काशी' दिया हुआ है। पता नहीं दोनों में कौन सूचना सही है।

मायावी

सन् १९०१-०२ ई० में पाँच कौड़ी दे की किसी जासूसी कथा का अनुवाद 'मायावी' (फूल साहब) शीर्षक से प्रकाशित हुआ।[८] चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध इस पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर रचना काल नहीं दिया हुआ है, किन्तु जुलाई १९११ ई० के 'जासूस' में प्रकाशित 'मायावी' के विज्ञापन से ज्ञात होता है कि "फूल साहब के बीस खून का मामला दिसम्बर सन् १९०१ के जासूस से शुरू होकर सन् १९०२ ई० पूरा हुआ था"।[९]

---

१. प्राप्ति स्थान—चै० पु०, पटना।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३३; श्री शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास, पृ० ४९।

३. मनोरमा, द्वितीय संस्करण, प्र० रामकृष्ण वर्मा, भारतजीवन प्रेस, काशी, सन् १९११ ई०, पृ० सं० २०५, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

४. उपरिवत्।

५. मनोरमा (एक जादूगरनी का रहस्यपूर्ण विचित्र हाल), प्र० दुर्गाप्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर लहरी बुक डिपो, बुलानाला, काशी, तृतीय वार. १९२७।

६. आर्यभाषा पुस्तकालय, (ना० प्र० स० काशी) की पुस्तक-सूची से प्राप्त सूचना।

७. जुमेलिया, प्रप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र० स०, काशी।

८. मायावी (फूल साहव) प्र०—जी० आर० गुप्ता, मैनेजर, जासूस। प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

९. प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

जासूस, वर्ष ३, अंक ७, नवम्बर १९०२ ई० में मुद्रित विज्ञापन से ज्ञात होता है कि 'हरिदास की गिरफ्तारी' और 'इन्द्रजालिक जासूस' के बीच 'जासूस' के तीन अंकों में **'मायावी'**, **'मायावी परिशिष्ट'** और **'मायावी उपसंहार'** प्रकाशित हुए थे। 'जासूस', सितम्बर १९०५ ई० के आवरणपृष्ठ पर छपी उपन्यासों की सूची से भी इसकी पुष्टि होती है। चूँकि 'हरिदास की गिरफ्तारी' १९०२ ई० के 'जासूस' के मई अंक में और 'इन्द्रजालिक जासूस' सितम्बर अंक में प्रकाशित हुआ था, इसलिए 'मायावी' अवश्य ही १९०२ ई० के 'जासूस' के जून, जुलाई और अगस्त के अंकों में प्रकाशित हुआ होगा। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक 'जासूस' के इन अंकों को प्राप्त नहीं कर सका है। इन विज्ञापनों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि **'मायावी' दिसम्बर १९०१ से ही 'जासूस' में थोड़ा-थोड़ा करके प्रकाशित होना शुरू हुआ था पर यह पूरा हुआ १९०२ ई० में 'जासूस' के जून, जुलाई और अगस्त के अंकों में।** चैतन्य पुस्तकालय, पटना में संगृहीत 'मायावी' के साथ संलग्न निम्नलिखित विज्ञापन में इस उपन्यास की लोकप्रियता सिद्ध होती है "सवा तीन सौ पृष्ठ की बीस खून की बड़ी पोथी बिकने को तैयार है।..................जो लोग अगस्त महीने भर में नहीं मँगा लेंगे उनको फिर यह पुस्तक नहीं मिलेगी। छपते ही छपते इसकी ६०० कापी बिक गयी।"

'मायावी (फूल साहब का बीस खून)' का दूसरा संस्करण भी निकला, पर उसके प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता।[1] चैतन्य पुस्तकालय में उपलब्ध इस संस्करण की प्रति में प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। 'सरस्वती', भाग १२, सं० ९ (सितम्बर १९११) में इस संस्करण की समीक्षा निकली थी जिसको पढ़ने से पता चलता है कि सितम्बर १९११ के कुछ ही पूर्व यह संस्करण प्रकाशित हुआ होगा।

खूनी की खोज

जासूस के मई १९०३ के अन्त में **गहमरी जी** की 'खूनी की खोज' नामक कथा प्रकाशित हुई।[2] पुस्तक में कहीं भी यह सूचना नहीं दी गयी है कि यह अनुवाद है। उपन्यास के पात्रों के नामों, घटनास्थलों और घटनाओं को पढ़ने से भी नहीं ज्ञात होता कि यह अनुवाद है, पर 'नीलवसना सुन्दरी' की 'भूमिका' में स्पष्ट लिखा हुआ है कि "बाबू पाँच कौड़ी दे के मनोरमा, मायाविनी, मायावी, खूनी की खोज आदि उपन्यासों का अनुवाद फ्रेंड एंड कम्पनी, मथुरा से छपा था और जासूस ऑफिस, गहमर से प्राप्त होता था।[3]" डॉ० गुप्त ने इस उपन्यास के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं दी है।

यारों की लीला

जासूस के जून १९०३ के अंक में **गहमरी जी** की 'यारों की लीला' नामक अपराध

---

१. मायावी (फूल साहेब का बीस खून), दूसरा संस्करण १००० प्रतियाँ, पृ० सं० २६२, प्राप्ति स्थान—चै० पु० गायघाट, पटना सिटी।

२. खूनी की खोज, जासूस, चौथा वर्ष, अंक ३७, मई १९०३, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

३. नीलवसना सुन्दरी, द्वितीय संस्करण, १९१३, प्र० बाबू बनारसी दास वर्म्मा, अध्यक्ष फ्रेंड एंड

प्रधान कथा प्रकाशित हुई ।[1] पुस्तक में कहीं भी इसे अनुवाद नहीं बताया गया है, न पात्रों के नाम अथवा घटनाओं के द्वारा इसके अनुवाद होने का आभास मिलता है। घटनास्थल कलकत्ता है, किन्तु यह इसे अनुवाद मानने के लिए नितान्त अपर्याप्त कारण है। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास की जो प्रति है उसमें मुखपृष्ठ पर बाबू पाँचकौड़ी दे का भाचित्र देकर उसके नीचे लिखा हुआ है—"वंग साहित्य के प्रसिद्ध डिटेक्टिव औपन्यासिक मायावी के मूल ग्रन्थकार श्रीयुत बाबू पाँचकौड़ी दे।" एक मौलिक पुस्तक में किसी अन्य भाषा के लेखक का फोटो देने का क्या अर्थ हो सकता है ? इसी आधार पर इस कथापुस्तक को अनुवाद माना गया है।

जीवनमृत रहस्य

सम्भवत: १९०४ ई० में गहमरी जी ने पाँचकौड़ी दे की बँगला कथापुस्तक 'जीवन्मृत रहस्य' का अनुवाद इसी शीर्षक से प्रकाशित कराया था।[2] आर्यभाषा पुस्तकालय में इस पुस्तक की जो प्रति है उसके आरम्भिक पृष्ठ फटे हुए हैं। इस कारण इससे प्रकाशक तथा प्रकाशन काल का पता नहीं चलता। 'भूमिका' से केवल इतना ही ज्ञात हो पाता है कि यह अनुवाद है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है।[3] डॉ० गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल नहीं बताया है। 'हिन्दी प्रदीप' जिल्द २६, संख्या ११-१२ (नवम्बर-दिसम्बर १९०४)[4] में प्रकाशित इस उपन्यास की समीक्षा से इसका रचना काल १९०४ ई० अनुमानित किया जा सकता है।

नीलवसना सुन्दरी

सम्भवत: १९०४ ई० में ही गहमरी जी ने पाँचकौड़ी दे की बँगला कथापुस्तक 'नीलवसना सुन्दरी' का अनुवाद 'नीलम परी उर्फ नीलवसना सुन्दरी' शीर्षक से प्रकाशित कराया। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध नहीं हो सका है। डॉ० गुप्त ने भी इस पुस्तक का उल्लेख नहीं किया है। जासूस वर्ष ५, अंक ५३--५४ (सितम्बर अक्टूबर १९०४ ई०) में इस पुस्तक का विज्ञापन छपा है,[5] जिससे इसका रचना काल १९०४ ई० अनुमित होता है।

इस कथापुस्तक का द्वितीय संस्करण १९१३ ई० में फ्रेंड ऐंड कम्पनी, मथुरा से प्रकाशित हुआ।[6] इस संस्करण में इस उपन्यास की १००० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं।

कम्पनी, मथुरा, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय काशी।

१. यारों की लीला, जासूस, चौथा वर्ष, जून सन् १९०३ ई०, पृ० सं० १९, प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।

२. जीवन्मृत रहस्य, भूमिका, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

३. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०६।

४. प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

५. प्राप्ति स्थान—चै० पु०, पटना।

६. नीलवसना सुन्दरी, प्र० बाबू बनारसी दास वर्म्मा, फ्रेंड एंड कम्पनी, मथुरा, द्वितीय बार १०००,

कपट रूपवाला

जासूस के मई १९०५ के अंक में गहमरी जी की 'कपट रूपवाला' नामक कथा प्रकाशित हुई।[1] इस पुस्तक में कहीं भी इस बात की सूचना नहीं दी हुई है कि यह अनुवाद है, पर गहमरी जी की ही एक दूसरी अनूदित कथापुस्तक 'गोविन्दराम' की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह पाँचकौड़ी दे के 'छद्मवेशी' नामक उपन्यास का अनुवाद है।[2] इस उपन्यास के पात्रों, घटनास्थलों तथा घटनाओं को देखने से अनुमान होता है कि यह दे साहब का भी मौलिक उपन्यास न होकर अघोषित अनुवाद ही है।

गोविन्दराम

'जासूस' के जुलाई-सितम्बर १९०५ के तीन अंकों में गहमरी जी ने पाँचकौड़ी दे की 'गोविन्दराम' नामक कथापुस्तक का 'गोविन्दराम कन्सल्टिंग डिटेक्टिव' शीर्षक अनुवाद प्रस्तुत किया।[3] इसका दूसरा संस्करण १९२३ ई० में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण की १००० प्रतियाँ प्रकाशित हुई थीं और इस संस्करण के मुखपृष्ठ पर ही इसे पाँचकौड़ी दे के उपन्यास का अनुवाद बताया गया है। श्री कृष्णानन्द जोशी ने दे साहब के इस उपन्यास को सर ए० कॉनन डायल के 'ए स्टडी इन स्कार्लेट' का अघोषित अनुवाद सिद्ध करते हुए लिखा था कि अँगरेजी उपन्यास का प्रसिद्ध पात्र शर्लक होम्स बँगला और हिन्दी में 'गोविन्द राम' हो गया है और उसका मित्र डाक्टर वाटसन डाक्टर बोस के रूप में आ गया है।"[4] अगर इस कथन को कसौटी रूप में स्वीकार किया जाय तो गहमरी जी की वे सभी कथाएँ जिनमें गोविन्दराम और डॉ० बोस के नाम आते हैं, अस्वीकृत अनुवाद सिद्ध होंगी।

अद्भुत खून

'जासूस' के जनवरी-अक्टूबर १९०६ ई० के अंकों में गहमरी जी की 'अद्भुत खून' नामक कथा प्रकाशित हुई।[5] यह पुस्तक ४१२ पृष्ठों में समाप्त हुई है। यद्यपि गहमरी जी ने इसे अनुवाद नहीं बताया है, पर इसके सभी पात्र और घटनास्थल फ्रांस देश के हैं। इसकी घटनाओं को पढ़ने से यह निश्चय हो जाता है कि यह किसी अँगरेजी उपन्यास का, भले ही वह भी किसी फ्रेंच उपन्यास का अनुवाद हो, अनुवाद है। डॉ० गुप्त ने इसका

१९१३, पृ० सं० २७६, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

१. कपट रूपवाला, जासूस, छठा वर्ष, अंक ६१, मई १९०५ ई०, प्रा० स्था०—चै० पु०।

२. गोविन्दराम, कन्सल्टिंग डिटेक्टिव, संस्करण १९२३ ई०, भूमिका। प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

३. गोविन्दराम (कन्सल्टिंग डिटेक्टिव) (१) जासूस, वर्ष ६, अंक ६३, जुलाई १९०५, गोविन्दराम (२) जासूस, वर्ष ६, अंक ६४, अगस्त १९०५, गोविन्दराम (३) जासूस, वर्ष ६, अंक ६५, सितम्बर १९०५। प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।

४. कृष्णानन्द जोशी, हिन्दी उपन्यासों में डाकेजनी, प्रतिभा, फरवरी १९२८।

५. अद्भुत खून, (काशी चन्द्रप्रभा प्रेस से मुद्रित) के आवरण पृष्ठ से प्राप्त सूचना। प्राप्ति स्थान—

उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है।[१]

जासूस चक्कर में

'जासूस' के नवम्बर १९०६ से जनवरी १९०७ तक के तीन अंकों में गहमरी जी की 'जासूस चक्कर में' नामक कथा प्रकाशित हुई।[२] पुस्तक के आरम्भिक पृष्ठों में गहमरी जी ने कहीं भी इसके अनुवाद होने का संकेत नहीं दिया है, पर उपन्यास के अन्त में उपन्यासकार की एक रहस्यपूर्ण विज्ञप्ति है। "उस रानी गली वाले मामले पर नवीन बाबू ने एक उपन्यास छपाया। (नवीन बाबू उपर्युक्त उपन्यास के एक पात्र भी हैं)[३]......उस का अनुवाद हमने अपने जासूस प्रेमियों के लिये प्रकाश किया है।"[४]

यह उपन्यास लिखने की एक शैली भी हो सकती है। हजारी प्रसाद द्विवेदी, जैनेन्द्र कुमार आदि उपन्यासकार इस प्रकार की प्रविधि का प्रयोग करते हैं। पर गहमरी जी जी से इसकी आशा करना व्यर्थ है। उपन्यास के पात्रों, घटनास्थलों और घटनाओं को पढ़ने से भी यह अनुवाद ही ज्ञात होता है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है।[५]

विलायती जासूस

जासूस के मई १९०८ ई० से अगस्त १९०८ तक के ४ अंकों में गहमरी जी की 'विलायती जासूस' नामक कथा प्रकाशित हुई।[६] गहमरी जी ने इसे भी अनुवाद नहीं बताया है, पर इस उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनास्थल फ्रांस देश के हैं, अतः यह सिद्ध है कि यह किसी अँगरेजी उपन्यास का, भले ही वह भी किसी फ्रेंच उपन्यास का अनुवाद ही हो, अनुवाद है। डॉ० गुप्त ने इस पुस्तक का उल्लेख नहीं किया है।

लाख रुपया

जासूस के सितम्बर-नवम्बर १९०८ के तीन अंकों में गहमरी जी ने पाँचकौड़ी दे की 'लक्षटाका' नामक कथा का अनुवाद 'लाख रुपया' शीर्षक से प्रकाशित किया।[७] इस पुस्तक के प्रथम पृष्ठ की पादटिप्पणी में इसके अनुवाद होने की सूचना दी हुई है।[८] डॉ० गुप्त ने इस पुस्तक का उल्लेख नहीं किया है।

आ० भा० पु० काशी।

१. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०६।
२. जासूस चक्कर में, जासूस, नवम्बर १९०६, जनवरी १९०७, पृ० सं० १४४, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।
३. कोष्टक की पंक्ति प्रस्तुत लेखक की है।
४. जासूस चक्कर में, पृ० १४४।
५. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३३।
६. विलायती जासूस, जासूस मई-अगस्त १९०८, पृ० सं० १९०, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।
७. लाख रुपया, जासूस, सितम्बर-नवम्बर १९०८, पृ० सं० १००, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।
८. उपरिवत्।

'जासूस के जनवरी १९०९ के अंक में गहमरी जी ने पाँचकौड़ी दे की 'कालसपा' नामक कथापुस्तक का अनुवाद **'आँखों देखी घटना'** शीर्षक से प्रकाशित किया।[1] पुस्तक के प्रथम पृष्ठ की पादटिप्पणी में इसके अनुवाद होने का उल्लेख है। डॉ० गुप्त ने इस पुस्तक का उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है।

खूनी का भेद

'जासूस' के मई और जून १९०९ के दो अंकों में गहमरी जी की 'खूनी का भेद' नामक कथा प्रकाशित हुई।[2] गहमरी जी ने कहीं भी इस उपन्याम के अनुवाद होने का संकेत नहीं दिया है, पर इसमें आये विदेशी पात्रों का देखकर इसके अनुवाद होने का अनुमान दृढ़ होता है। डॉ० गुप्त ने इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है।[3]

शठ शिरोमणि

'जासूस' के जुलाई १९०९ ई० के अंक में गहमरी जी की 'शठ शिरोमणि' नामक कथा प्रकाशित हुई।[४] लेखक ने इसके अनुवाद होने की कोई सूचना नहीं दी है, पर 'लाइन पर लाश' के 'कृतज्ञता-स्वीकार' से स्पष्ट ज्ञात होता है कि यह पाँचकौड़ी दे की किसी कथा-पुस्तक का अनुवाद है।[५]

चिट्ठी की चोरी : वैरी का चक्र

'जासूस' के सितम्बर १९०९ ई० के अंक में 'चिट्ठी की चोरी' और 'वैरी का चक्र' नामक कथाएँ प्रकाशित हुई।[६] दोनों में से किसी को भी अनुवाद नहीं बताया गया है। पर दोनों के पात्रों, घटनास्थलों और घटनाओं को पढ़ने से इनके अनुवाद होने का अनुमान दृढ़ होता है। 'वैरी का चक्र' के सभी पात्र और घटनास्थल विदेशी, इंगलैंड के हैं।

ताँतिया टोपी की बहादुरी

जासूस के अगस्त १९०९ ई० के अंक में 'ताँतिया टोपी की बहादुरी' नामक कथा प्रकाशित हुई। इसको देख कर इसके मौलिक उपन्यास होने का भ्रम होता है। पर है यह अनुवाद ही। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक दूसरी प्रति किंचित् भिन्न शीर्षक के साथ उपलब्ध है, जिसकी अन्त्य पादटिप्पणी में "श्री मनीन्द्रनाथ

---

१. आँखों देखी घटना, जासूस, वर्ष ९, अंक १०५, जनवरी १९०९, पृ० सं० ४२, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

२. खूनी का भेद, जासूस, वर्ष १०, अंक १-२, मई-जून १९०९, पृ० सं० ८८, प्राप्ति स्थान—चै० पु०

३. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०९।

४. शठ शिरोमणि, जासूस, वर्ष १०, अंक १११, जुलाई १९०९, पृ० सं० २८, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

५. लाइन पर लाश, जासूस, फरवरी १९१०, कृतज्ञता स्वीकार, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

६. जासूस, वर्ष १०, अंक ११३, सितम्बर १९०९, चिट्ठी की चोरी (पृ० सं० २०), वैरी का चक्र (पृ० सं० २०) प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।

७. ताँतिया टोपी की बहादुरी, जासूस, वर्ष १०, अंक ११२, अगस्त १९०९, पृ० सं० ४३, प्राप्ति

वसु की ताँतिया की बहादुरी, अनूदित मुद्रित" लिखा है।[१] इस प्रमाण से इस उपन्यास का अनूदित होना सिद्ध होता है।

रमणी रहस्य : सर्व्वनाशिनी : लाइन पर लाश

'जासूस के सितम्बर-अक्टूबर १९०९ के अंक में रमणी रहस्य[२], अक्टूबर १९०९ के अंक में 'सर्व्वनाशिनी'[३] तथा अक्टूबर १९०९ ई० से लेकर फरवरी १९१० ई० तक के अंकों में 'लाइन पर लाश'[४] नामक कथाएँ प्रकाशित हुई। इनमें से प्रथम दो उपन्यासों के अनुवाद होने की कोई सूचना गहमरी जी ने नहीं दी है। पर 'जासूस', फरवरी १९१० में प्रदत्त कृतज्ञता स्वीकार[१] से ज्ञात होता है 'विन्दु' और 'सर्व्वनाशिनी' दोनों पाँचकौड़ी दे के उपन्यासों के अनुवाद हैं। विन्दु 'रमणी रहस्य' की नायिका है, अतः मेरा अनुमान है, दोनों एक ही कथापुस्तक हैं। 'लाइन पर लाश' के आरम्भ में तो नहीं, पर अन्तिम पृष्ठ की पादटिप्पणी में, महीन टाइप में, मुद्रित है—"रेलवे रहस्य का अनुवाद समाप्त हुआ। ढोल बाबू का आगे का हाल किसी अगले महीने में दिया जायगा।" 'जासूस', फरवरी १९१० में प्रकाशित 'कृतज्ञता-स्वीकार' से ज्ञात होता है कि यह कथापुस्तक अनुवाद है। 'लाइन पर लाश' को डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने मौलिक उपन्यास माना है, जो भ्रामक है।[५]

'जासूस' के मार्च १९१० के अंक में **भयंकर भूल**[६] तथा **सफेद ठग**,[७] मई–सितम्बर १९१० के पाँच अंकों में '**मृत्यु विभीषिका**',[८] सितम्बर १९१० के अंक में '**सूम का मंत्र**'[९] अक्टूबर १९१० ई० के अंक में '**देवटीका समाज**' और '**खून का चक्र**'[१०] आदि कथाएँ

स्थान—चै० पु० पटना सिटी।

१. डाकू की पहुनाई (मशहूर ताँतिया भील की बहादुरी) बाबू गोपालराम, गहमर निवासी, सम्पादित जासूस से उद्धृत, मिलने का पता—मैनेजर, जासूस, गहमर, गाजीपुर, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ३४, पुस्तक के अन्त की पादटिप्पणी—"श्रीमनीन्द्र वसु की ताँतिया की बहादुरी से अनूदित।"

२. रमणी रहस्य, जासूस, वर्ष १०, अंक ११३, सितम्बर १९०९, अंक ११४, अक्तूबर १९०९, पृ० सं० १८। प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

३. सर्व्वनाशिनी, जासूस, वर्ष १०, अंक ११४, अक्तूबर १९०९, पृ० सं० २२, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

४. लाइन पर लाश, जासूस, वर्ष १०, अंक ११४-११८, अक्तूबर १९०९, फरवरी १९१०

५. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०९।

६. जासूस, भाग १०, सं० ११९, मार्च १९१० ई० में भयंकर भूल के केवल २५ पृष्ठ छपे। इस उपन्यास के शेष १९, पृष्ठ अंक १२४, अगस्त १९१० प्रकाशित हुए। प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

७. सफेद ठग, जासूस, भाग १०, सं० ११९, मार्च १९१०, पृ० सं० १५, प्राप्ति स्थान—चै० पु०।

८. मृत्यु विभीषिका, जासूस, वर्ष ११, अंक १२१-१२५, मई-सितम्बर १९१०, पृ० सं० १९१। प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

९. सूम का मन्त्र, जासूस, वर्ष ११, अंक १२५, सितम्बर १९१०, पृ० सं० २२, प्रा० स्था०—चै० पु०।

१०. जासूस, वर्ष ११, अंक १२६, अक्तूबर १९१०, देवटीका समाज, पृ० सं० २३, खून का चक्र,

प्रकाशित हुई । 'भयंकर भूल' पाँचकौड़ी दे के 'भीषण भूल' का अनुवाद है, यह पुस्तक के प्रथम पृष्ठ में दी गयी सूचना से ज्ञात होता है।[1] 'सफेद ठग' के अन्तिम पृष्ठ की पादटिप्पणी में इसे 'अंग्रेजी से लिये हुए मामले का अनुवाद' बताया गया है।[2] 'मृत्यु विभीषिका' को कहीं भी अनुवाद नहीं कहा गया है, पर पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह कानन डायल की किसी कथापुस्तक का अनुवादमात्र है। पात्रों और घटनास्थलों के नाम बँगला के हैं, इससे अनुमान होता है कि सम्भवतः पाँचकौड़ी दे ने अँगरेजी से इसे अपहृत किया और गहमरी जी ने उनका सफल अनुकरण मात्र किया। 'सूम का मंत्र' के भी अनुवाद होने की सूचना पुस्तक में कहीं नहीं दी गयी है पर 'खून का चक्र' के अन्तिम पृष्ठ की पादटिप्पणी से ज्ञात होता है कि यह पाँचकौड़ी दे के बँगला उपन्यास 'कृपणेर मंत्र' का अनुवाद है।[3] 'देवटीका समाज' में भी कोई ऐसी सूचना नहीं दी हुई है, जिससे यह अनुवाद जान पड़े, पर उपन्यास के पात्रों, घटनास्थलों और घटनाओं पर विचार करने पर यह किसी बँगला उपन्यास का अनुवाद ही ज्ञात होता है। 'खून का चक्र' के अन्तिम पृष्ठ की पादटिप्पणी में दी गयी सूचना से ज्ञात होता है कि यह पाँचकौड़ी दे के 'खूनेर दाये' नामक पुस्तक का अनुवाद है।[4]

अदभुत जासूस

'जासूस' के दिसम्बर १९१० से लेकर जुलाई १९११ तक के आठ अंकों में अद्भुत जासूस नामक कथापुस्तक प्रकाशित हुई।[5] गहमरी जी ने इसके अनुवाद होने की सूचना कहीं भी नहीं दी है, पर इसके पात्रों, घटनास्थलों और घटनाओं पर विचार करने से यह किसी अँगरेजी अपराधप्रधान कथा का अनुवाद प्रतीत होती है।

विकट वदलौवल

१९१० ई० में ही गहमरी ने पाँचकौड़ी दे के 'विषम वैसूचन' नामक कथा का अनुवाद 'विकट वदलौवल' शीर्षक से किया था, जो फ्रेण्ड ऐण्ड कम्पनी, मथुरा से प्रकाशित हुई थी। प्रथम वार इस पुस्तक की १००० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं।[6]

पृ० सं० २० (२४-४३)। प्रा० स्था—चै० पु०।

१. जासूस, मार्च १९१०, प्रथम पृष्ठ।

२. उपरिवत्।

३. खून का चक्र, जासूस, अक्तूबर १९१०, अन्तिम पृष्ठ की पादटिप्पणी। प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।

४. उपरिवत्।

५. अद्भुत जासूस, दिसम्बर १९१० ई०—जुलाई ११९१ ई०, पृ० सं० ३३१। प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

६. विकट वदलौवल, प्र० बाबू नन्दलाल वर्मा, मैनेजर फ्रेंड ऐंड कम्पनी, मथुरा, प्रथम बार १९१० ई०, पृष्ठ संख्या २१० सूचनाएँ आवरणपृष्ठ से प्राप्त की गयी हैं। प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना।

मायाविनी

१९१० ई० में ही गहमरी जी की 'मायाविनी' नामक कथा, जो पाँचकौड़ी दे के किसी उपन्यास का अनुवाद है, भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित हुई ।[१] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने [२] और उनके अनुकरण पर श्री शिवनारायण श्रीवास्तव ने[३] 'मायाविनी' का प्रकाशन-काल १९०१ ई० दिया है, जो उपर्युक्त प्रमाण के प्रकाश में भ्रामक प्रतीत होता है । डॉ० गुप्त तथा श्रीवास्तव ने इसे मौलिक माना है जो असन्दिग्ध रूप से भ्रान्तिपूर्ण है, क्योंकि पुस्तक के आवरणपृष्ठ के ऊपर ही 'बंग भाषा के आश्रय' से मुद्रित है ।

जासूस के मई-जून १९१२ ई० के अंकों में गहमरी जी कृत **विद्या सागर विद्रोह**[४], जून-जुलाई १९१२ के अंकों में **सहधर्म्मिणी**[५], जुलाई-अगस्त १९१२ ई० में **पिशाच पिता**[६], तथा अक्टूबर-नवम्बर के अंकों में **मरे हुए की मौत**[७] नामक कथाएँ प्रकाशित हुईं । 'विद्या सागर विद्रोह' और 'सहधर्मिणी' के प्रथम पृष्ठ की पादटिप्पणी से इनके पाँचकौड़ी दे के उपन्यासों के अनुवाद होने की सूचना प्राप्त होती है । 'पिशाच पिता' को यद्यपि गहमरी जी ने अनुवाद नहीं बताया है, पर इसके पात्रों, घटनास्थलों और घटनाओं पर विचार करने से इसका अनुवाद होना बिलकुल सिद्ध हो जाता है । 'मरे हुए की मौत' को भी अनुवाद नहीं कहा गया है, पर पढ़ने से यह भी अनुवाद ही प्रतीत होता है ।

पान का नहला

जासूस वर्ष १४, अंक १५८--१६०, जून--अगस्त १९१३ के तीन अंकों में गहमरी जी की 'पान का नहला' नामक कथा प्रकाशित हुई ।[८] प्रथम पृष्ठ की पादटिप्पणी में इसे श्रीयुत बाबू पाँचकौड़ी दे सम्पादित और स्वर्गवासी बाबू शरच्चन्द्र सरकार लिखित पुस्तक के आधार पर रचित" बताया गया है ।

---

१. मायाविनी, प्र० बाबू श्रीकृष्ण वर्मा, अध्यक्ष, भारत जीवन प्रेस, प्रथम संस्करण १९१० ई०, पृ० सं० ८२ । प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना ।

२. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३३ ।

३. हिन्दी उपन्यास (१०), पृ० ४८ ।

४. विद्यासागर विद्रोह, मई-जून १९१२, पृ० सं० १९, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना ।

५. सहधर्मिणी, जून-जुलाई १९१२, पृ० सं० ८६, प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना ।

६. पिशाच पिता, जुलाई-अगस्त १९१२, पृ० सं० ९१ (८७-१७८), प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना ।

७. मरे हुए की मौत, जासूस, अक्तूबर-नवम्बर १९१२, पृ० सं० ८२ । प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय पटना सिटी ।

८. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना । पान का नहला, जासूस, वर्ष १४, अंक १५८-६०, जून-अगस्त १९०३, पृ० सं० १४० ।

अन्य अनूदित अपराध प्रधान उपन्यास

प्रमीला

सन् १८९६ ई० में **कार्तिक प्रसाद वर्मा** द्वारा बँगला से अनूदित 'प्रमीला' नामक अपराध प्रधान कथा भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुई।[१] इस कथा के मूल लेखक की सूचना अनुवाद में नहीं दी हुई है। इसे जासूसी कथा की संज्ञा दी जा सकती है।

संसार चक्र

सन् १८९९ ई० में **मिश्र जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी शर्मा** द्वारा बँगला से अनूदित 'संसार चक्र' नामक अपरावप्रधान कथा हरिप्रकाश यंत्रालय, बनारस से मुद्रित हुई।[२] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है।[३] उपन्यास के 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि इसके मूल रचयिता बँगला के उपन्यासकार बाबू प्रफुल्ल चन्द्र मुखर्जी थे। यह मूल उपन्यास का अविकल अनुवाद न होकर स्वतंत्र अनुवाद है।[४]

'संसार चक्र' का दूसरा संस्करण १९०९ ई० में मुक्ता राम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता से[५] तथा तीसरा संस्करण १९२४ ई० में हिन्दी पुस्तक भवन, हरिसन रोड, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।[६]

गोपाल राम गहमरी पाँचकौड़ी दे के बँगला अपरावप्रधान उपन्यासों के प्रमुख हिन्दी अनुवादक थे। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य लेखकों ने भी पाँचकौड़ी बाबू के उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किये थे, जिनका विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

कुलटा वा स्त्री बुद्धि प्रलयंकरी

सन् १९०० ई० में **दे साहब** के किसी उपन्यास का बाबू **रामकृष्ण वर्मा** कृत 'कुलटा वा स्त्री बुद्धि प्रलयंकरी' शीर्षक अनुवाद भारत जीवन प्रेस, काशी से छप कर प्रकाशित हुआ।[७]

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रमीला (उपन्यास) जिसे भारत जीवन प्रेस के सहकारी सम्पादक बाबू कार्तिक प्रसाद वर्म्मा ने बंगभाषा से हिन्दी में अनुवाद किया, पृ० सं० २२६। काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ, सन् १८९६ ई०, प्रथम बार १०००,

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—संसार चक्र, अर्थात् एक विलक्षण और मनोहर उपन्यास, 'वसंत मालती' के रचयिता माथुर वंशोद्भव मलयपुर निवासी मिश्र जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी शर्मा लिखित, बनारस, हरिप्रकाश यंत्रालय में मुद्रित, १८९९, प्रथम बार १०००।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २९।

४. संसारचक्र, ले० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, तृतीय संस्करण, हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता, संवत् १९८१, निवेदन।

५. उपरिवत्, दूसरी विज्ञप्ति।

६. प्रा० स्था०—आ० भा पु० काशी।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुलटा वा स्त्री बुद्धि प्रलयंकरी,

परिमल

सन् १९०४ ई० में **पाँचकौड़ी दे** के किसी उपन्यास का **श्री मनोहर लाल वर्मा** कृत 'परिमल' शीर्षक अनुवाद बावू नन्दलाल वर्मा द्वारा काशी से प्रकाशित हुआ।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक की सूचना नहीं दी हुई है। यह सूचना पुस्तक के 'निवेदन' से प्राप्त होती है।[2]

जासूसी चक्कर : पिशाच पिता

सन् १९१२ ई० में **दे साहब** के 'रहस्य विप्लव' नामक उपन्यास का **श्री रामलाल वर्मा** द्वारा प्रस्तुत 'जासूसी चक्कर' शीर्षक अनुवाद, पाँच खंडों में, हिन्दी दारोगा दफ्तर, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] इसी वर्ष दे साहब के किसी अन्य उपन्यास का मुकुन्दलाल वर्मा द्वारा किया हुआ 'पिशाच पिता' शीर्षक अनुवाद आर० एल० वर्म्मन ऐंड कम्पनी से प्रकाशित हुआ।[4]

भीषण डकैती

जनवरी १९१५ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व **दे साहब** के किसी उपन्यास का 'भीषण डकैती' शीर्षक अनुवाद आर० एल० वर्म्मन ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'इन्दु', जनवरी १९१५, में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं। विज्ञापन के अनुसार "जब यह उपन्यास सुप्रसिद्ध समाचार पत्र 'भारत मित्र' में 'भीषण डकैती' के नाम से और 'बड़ा बाजार गजट' में 'भयानक बदला' के नाम से क्रमशः प्रकाशित होता था, तब उक्त दोनों पत्रों की ग्राहक-संख्या सिर्फ इसी उपन्यास के पढ़ने के लिए ही बेतौर बढ़ गयी थी, किन्तु पूरा उपन्यास किसी में भी न छपा था।

बावू पाँचकौड़ी दे की बँगला पुस्तक का अनुवाद, बावू रामकृष्ण वर्म्मा, काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ। सन् १९०० ई०, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ३२।

१. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—परिमल, अर्थात् एक अत्याश्चर्य घटनामूलक डिटेक्टिव का किस्सा, श्री मनोहर लाल वर्म्मा द्वारा अनुवादित और मथुरा के बाबू नन्दलाल वर्म्मा द्वारा प्रकाशित, काशी लहरी प्रेस, लाहौरी टोला में मुद्रित, १९०४ ई०, प्रथम बार १०००।

२. उपरिवत्, 'निवेदन'।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जासूसी चक्कर, पहला खंड, एक जासूसी ढंग का सचित्र नवीन उपन्यास, वंग साहित्य के गौरव स्तम्भ सुप्रसिद्ध औपन्यासिक श्रीयुत बावू पाँचकौड़ी दे महाशय के "रहस्य विप्लव' नामक अपूर्व उपन्यास का हिन्दी अनुवाद, हिन्दी दारोगा दफ्तर, बड़ा बाजार गजट, आदि पत्रों के मालिक रामलाल वर्म्मा द्वारा अनुवादित और प्रकाशित, संवत् १९६९ विक्रमीय।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पिशाच पिता (गोविन्द राम की कीर्ति पर्याय)—मुकुन्द लाल वर्म्मा द्वारा 'अर्चना' से अनुवादित, आर० एल० वर्म्मन एंड कम्पनी, ४०१/२, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता से प्रकाशित, प्रथम बार १०००, संवत् १९६९ वि०।

अब यह उपन्यास हमारे यहाँ पूरा छप कर तैयार हो गया है।"[1] सन् १९२२ ई० में इस उपन्यास का तीसरा संस्करण उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से प्रकाशित हुआ।[2]

घटनाचक्र

जून १९१५ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व, दे साहब के किसी उपन्यास का **रामलाल वर्मा** द्वारा किया हुआ 'घटना चक्र' शीर्षक अनुवाद आर० एल० वर्म्मन ऐंड कों० कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'मर्यादा', जून १९१५ ई० में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं।[3] इसका दूसरा संस्करण १९१८ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से प्रकाशित हुआ।[4]

भीषण भूल

सन् १९१७ ई० में दे साहब के 'भीषण भूल' नामक उपन्यास का **रामलाल वर्मा** कृत अनुवाद स्वयं अनुवादक द्वारा "वर्म्मन प्रेस" कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[5]

शोणित चक्र

इसी के आसपास दे साहब के 'शोणित चक्र' नामक जासूसी उपन्यास का **चन्द्रशेखर पाठक** द्वारा प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद आर० एल० वर्म्मन ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

अब्दुल्ला का खून

पाँचकौड़ी दे के अपराधप्रधान उपन्यासों के अतिरिक्त कुछ अन्य उपन्यासों के अनुवाद भी हिन्दी में, इस युग में, प्रस्तुत किये गये। सन् १९०३ ई० में **बाबू गंगा प्रसाद गुप्त** कृत एक अँगरेजी कहानी का 'अब्दुल्ला का खून' शीर्षक परिवर्द्धित रूपान्तर बाबू रामकृष्ण वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ।[6] इसकी 'विज्ञप्ति' के अनुसार "कलकत्ते की अँगरेजी मासिक पत्रिका 'इम्प्रेस' में 'दि फेट ऑफ अब्दुलाह' नामक दो पृष्ठों की कहानी छपी

---

१. इन्दु, कला ६, खंड १, किरण १, जनवरी १९१५—भीषण डकैती (विज्ञापन)।

२. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

३. मर्यादा, भाग ९, सं० ६, जून १९१५, भीषण डकैती (विज्ञापन)।

४. आ० भा० पु० काशी, पुस्तक सूची।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भीषण भूल, एक रहस्यमय जासूसी उपन्यास, वंग साहित्य के सुप्रसिद्ध औपन्यासिक श्रीयुक्त बाबू पाँचकौड़ी दे के 'भीषण भूल' नामक उपन्यास का अनुवाद। रामलाल वर्मा द्वारा ३७१, अपर चीतपुर रोड, "वर्म्मन प्रेस" कलकत्ता से मुद्रित और प्रकाशित, प्रथम बार, सं० १९७४ विक्रमीय, पृ० सं० ५०।

६. प्रा० स्था०—माहेश्वरी पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अब्दुल्ला का खून, उपन्यास,

थी। उसी को बढ़ा कर और उपन्यास के ढंग पर हिन्दी में लिखकर मैंने जून महीने में प्रयाग समाचार में 'अब्दुल्ला का खून' के नाम से छपने के लिए भेज दिया था। वही लेख उद्धृत होकर आज पुस्तकाकार उपन्यास प्रेमियों के करकमलों में अर्पण किया जाता है।''[1]

दानवी लीला

सन् १९०५ ई० में बँगला के **'दस्यु दुहिता'** नामक उपन्यास का **पं० चन्द्रशेखर पाठक** कृत 'दानवी लीला' शीर्षक अनुवाद हिन्दी साहित्य प्रचार कार्यालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] आर्यभाषा पुस्तकालय में यह उपन्यास है, पर प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में समर्थ न हो सका। माहेश्वर पुस्तकालय, पटना में भी इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के न रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिलती। उपन्यास के वक्तव्य से ज्ञात होता है कि यह अविकल अनुवाद न होकर स्वच्छन्द अनुवाद है।

गुप्त रहस्य

दिसम्बर १९०९ की 'सरस्वती' में प्रकाशित 'पुस्तक परीक्षा' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व **बाबू प्रियनाथ मुखोपाध्याय** लिखित **'गुप्त कथा व्यक्त'** नामक जासूसी उपन्यास का **राधारमण गुप्त** कृत 'गुप्त रहस्य' शीर्षक अनुवाद, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3]

खूनी मामला

सन् १९१० ई० में **विट्ठल दास कोठारी** ने किसी बँगला पुस्तक के आधार पर 'खूनी मामला' नामक जासूसी उपन्यास की रचना की, जिसका प्रथम संस्करण १९१२ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण १९०९ ई० में हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। दूसरे संस्करण की भूमिका से इसका रचना-काल तथा प्रथम प्रकाशन-काल ज्ञात होता है।

विचित्र जाल

सन् १९१४ ई० में **दयाराम खत्री** द्वारा अनूदित 'विचित्र जाल' नामक उपन्यास

('प्रयाग समाचार' से उद्धृत) काशी निवासी बाबू गंगा प्रसाद गुप्त लिखित, भारत जीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा प्रकाशित और विक्रीत, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित, सन् १९०३।

१. उपरिवत्, विज्ञप्ति।

२. आ० भा० पु० काशी, पुस्तक सूची।

३. सरस्वती, दिसम्बर १९०९, पुस्तक परीक्षा, गुप्त रहस्य।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—खूनी मामला, लेखक विट्ठलदास कोठारी, प्रकाशक हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, २०१, हरिसन रोड, के नरसिंह प्रेस में बाबू रामप्रसाद भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९०९, दूसरी बार (२०००)।

निहाल चंद वर्मा द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।[1] इसका तीसरा संस्करण १९२४ ई० में कलकत्ता से ही प्रकाशित हुआ।[2]

साहसी डाकू

सन् १९१४ ई० में अँगरेजी के **'डिक्टरपिन'** नामक अपराधप्रधान उपन्यास का **दुर्गा प्रसाद खत्री** द्वारा प्रस्तुत 'साहसी डाकू' शीर्षक अनुवाद लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं। पर पुस्तकसूची से इसके अनुवाद होने की सूचना नहीं प्राप्त होती। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इसके अनुवाद होने की सूचना बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री से मिली है।

कालरात्रि

सन् १९१५ ई० में **बाबू उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय** लिखित 'काल रात्रि' नामक अपराधप्रधान उपन्यास का पं० कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद श्याम नारायण सिंह द्वारा विहार प्रिंटिंग ऐंड पब्लिशिंग सिंडिकेट प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है। यह सूचना 'वक्तव्य' में दी गयी है।[4]

पेरिस रहस्य

सन् १९१७ ई० में **राम प्रसाद लाल** द्वारा अनूदित और जयराम दास गुप्त द्वारा सम्पादित 'पेरिस रहस्य' नामक उपन्यास उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[5] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

शूर शिरोमणि

इसी समय के लगभग बाबू जयराम दास द्वारा अनूदित 'शूरशिरोमणि' नामक उपन्यास, उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[6] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विचित्र जाल, रहस्यमय जासूसी उपन्यास, अनुवादक दयाराम खत्री और प्रकाशक निहालचन्द वर्मा, संवत् १९७१ विक्रमीय, प्रथम बार १०००, पृ० ९८।

२. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कालरात्रि, लोमहर्षक घटनापूर्ण जासूसी उपन्यास, मिरजापुर, सीखड़ निवासी श्रीयुत पं० कृष्णनन्द शर्मा लिखित, बाँकीपुर, विहार प्रिंटिंग ऐंड पब्लिशिंग सिन्डिकेट प्रेस में श्याम नारायण सिंह द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, प्रथम बार १०००, संवत् १९७२, पृ० सं० १८८।

४. उपरिवत्, वक्तव्य।

५. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शूरशिरोमणि, उपन्यास, बाबू

इस अनुवाद की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ से इससे अधिक कोई सूचना नहीं मिलती। यह किसी यूरोपीय उपन्यास का अनुवाद ज्ञात होता है, क्योंकि इसके सभी पात्रों तथा स्थानों के नाम यूरोपीय हैं।

(२) वैज्ञानिक रोमांस

आश्चर्यजनक और कौतूहलप्रद घटनाओं से पूर्ण उपन्यासों में पाठकों की अत्यधिक रुचि देखकर कुछ लेखकों ने अँगरेजी की वैज्ञानिक कथाओं के हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किये।

भयानक भ्रमण

सन् १९०० ई० में **विलियम मरे ग्रेडन** रचित **'ओवर अफ्रीका इन ए बेलून'** नामक वैज्ञानिक कथापुस्तक का **हरिकृष्ण जौहर** द्वारा प्रस्तुत 'भयानक भ्रमण' शीर्षक अनुवाद भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[1]

हवाई नाव

सन् १९०३ ई० में **'दि ऐलेक्ट्रिक एयर केनो'** नामक अँगरेजी वैज्ञानिक कथा का **बाबू गंगा प्रसाद गुप्त** द्वारा प्रस्तुत 'हवाई नाव' शीर्षक अनुवाद बाबू रामकृष्ण वर्मा द्वारा रभात जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] इस कथा में हवा में उड़ने वाली एक नाव पर सवार होकर तीन आदमी अफ्रीका के एक अगम्य स्थान पर हीरा ढूँढ़ने जाते हैं। मार्ग में उन्हें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा जो जो दृश्य उन्हें दिखाई पड़ते हैं, उनका वर्णन इसमें किया गया है।

चन्द्रलोक की यात्रा

सन् १९०८ ई० में **पं० विनायक गोपाल वक्षी** ने **कृष्णा जी नारायण आठल्ले** द्वारा अँगरेजी से अनूदित 'चन्द्रलोक की यात्रा' नामक वैज्ञानिक कथा का हिन्दी अनुवाद इसी शीर्षक से प्रस्तुत किया, जो सन् १९१० ई० में श्री वेंकटेश्वर स्टीम मुद्रणालय, बम्बई से

जयरामदास द्वारा अनुवादित, उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित (पहली बार), पृ० सं० २०१।

१. प्रा० स्था०—वै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भयानक भ्रमण, एक विचित्र उपन्यास, हरिकृष्ण जौहर द्वारा अनुवादित, काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ, सन् १९०० ई०, प्रथम बार १०००, पृ० सं० २६०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हवाई नाव, दि एलेक्ट्रिक एयर केनो नामक अँगरेजी उपन्यास, बाबू गंगा प्रसाद गुप्त अनुवादित, जिसे भारत जीवन के अध्यक्ष बाबू रामकृष्ण वर्मा ने अनुवादक से सम्पूर्ण अधिकार ले निज व्यय से छपवाकर प्रकाशित किया, सन् १९०३ ई०, प्रथम बार, ११००।

प्रकाशित हुआ ।[१] भूमिका में इसका अनुवाद-काल दिया हुआ है ।[2]

रसातल यात्रा

सन् १९१२ ई० में फ्रेंच लेखक **जूल वर्न** की किसी वैज्ञानिक कथापुस्तक का **गिरिजा कुमार घोष** द्वारा प्रस्तुत 'रसातल यात्रा' शीर्षक अनुवाद माडर्न प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[३] यह मूल पुस्तक का स्वतंत्र अनुवाद है ।

सागर साम्राज्य

प्राक् प्रेमचन्द युग में ही **जूल वर्न** के **ट्वेंटी थाउजेंड लीग्स अंडर दि सी** नामक वैज्ञानिक कथापुस्तक का 'एक हिन्दी सेवक' द्वारा प्रस्तुत 'सागर साम्राज्य' शीर्षक अनुवाद मैनेजर, हिन्दी नावेल, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुआ ।[४] आ० भा० पु०, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती । यह मूल पुस्तक का अविकल अनुवाद नहीं है । अनुवादक ने हिन्दी पाठकों की रुचि का ध्यान रखते हुए पात्रों के नाम तथा कुछ घटनाओं में परिवर्तन कर दिये हैं ।

अनूदित उपन्यास (सामान्य)

विवेच्य काल में, हिन्दी में, तिलिस्म और ऐयारी प्रधान रोमांसों, अपराध प्रधान और जासूसी कथाओं, शृंगारचित्रणप्रधान उपन्यासों और ऐतिहासिक रोमांसों का बोलबाला था । उपन्यास रचना का प्रयत्न भी, यद्यपि, इस काल में हुआ था, पर पार्श्ववर्ती बँगला भाषा में जिस कोटि के उपन्यास लिखे जा रहे थे, उस कोटि के उपन्यास, कुछेक अपवादों के अतिरिक्त, हिन्दी में नहीं थे । हिन्दी लेखकों ने बँगला उपन्यासों के अनुवादों से इस अभाव की पूर्ति करने का प्रयास किया ।

विवेच्य काल में बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, 'एक बँगला उपन्यासकार' (नाम अज्ञात), योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, रमेशचन्द्र दत्त, दामोदर मुखोपाध्याय, सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य आदि प्रमुख बँगला लेखकों के उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद तो प्रस्तुत

---

१. प्रा० स्था०— आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रलोक की यात्रा, अर्थात् प्रेसिडेंट वार्विकेन आदि साहसी पुरुषों का पौरुषमय अपूर्व उपन्यास, जिसको सुप्रसिद्ध कृष्ण जी नारायण आठल्ले, सम्पादक केरल कोकिल के मराठी चन्द्रलोक की सफर का हिज हायनेस दि महाराजाधिराज होलकर बहादुर इन्दौर के इंग्लिश क्लर्क पं० विनायक गोपाल बक्षी द्वारा हिन्दी में अनुवाद कराय खेमराज श्रीकृष्ण दास ने बम्बई निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम मुद्रण यन्त्रालय में मुद्रित कर प्रकट किया । सवत् १९६७, शके १८३२ ।

२. उपरिवत्, भूमिका ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रसातल यात्रा, धरती के भीतर अति अद्‌भुत और अचरज पैदा करने वाले दृश्यों की वैज्ञानिक विनोदपूर्ण कथा, फरासीसी लेखक जूल वर्न की पुस्तक का परिवर्तित अनुवाद, लेखक गिरिजा कुमार घोष, प्रकाशक माडर्न प्रेस, मुट्ठीगंज प्रयाग, १९१२, पृ० सं० १०२ ।

४ आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची ।

किये ही गये, बँगला तथा अन्य हिन्दीतर भाषाओं के अनेक गौण उपन्यासकारों के उपन्यास भी अनूदित होकर हिन्दी में आ गये। इन अनूदित उपन्यासों का सविस्तर विवरण परवर्ती पृष्ठों में दिया जा रहा है।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

हिन्दी उपन्यास के विकास की प्रेरक शक्तियों में बँगला के उपन्यास, (विशेष कर बंकिम बाबू के) उल्लेखनीय हैं। पार्श्ववर्त्ती बँगला में उपन्यासों का अतिशय प्रचार देखकर हिन्दी लेखकों का, विशेषकर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का, ध्यान उनके अनुवाद की तरफ आकृष्ट हुआ। इस समय बँगला उपन्यासकारों में बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय मूर्धन्य थे। फलतः हिन्दी लेखकों का ध्यान इनके उपन्यासों की तरफ जाना स्वाभाविक ही था। भारतेन्दु ने बंकिम बाबू के उपन्यासों के अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए अन्य हिन्दी लेखकों को तो उत्साहित किया ही, स्वयं भी उन्होंने 'राजसिंह' का अनुवाद किया। उनकी प्रेरणा से, तथा हिन्दी लेखकों के उत्साह से, १९०० ई० के पूर्व बंकिम बाबू के अधिकांश उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद हो गये। फिर तो ये अनुवाद इतने लोकप्रिय हुए कि इनके अनेक संस्करण निकले। इनकी लोकप्रियता देखकर बंकिम बाबू के सभी उपन्यासों के एकाधिक अनुवाद और उनके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए, जिनका विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

राधारानी

बंकिम बाबू के 'राधारानी' नामक उपन्यास का अनुवाद १८९३ ई० में चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस से मुद्रित तथा मल्लिक चन्द्र और कम्पनी द्वारा प्रकाशित हुआ।[१] इसका अनुवाद करने वाली थीं **कोई प्रतिप्राणा अबला**। बाबू ब्रजरत्न दास के अनुसार ये 'अबला' और कोई नहीं वरन् भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रतिपालिता मल्लिका देवी थीं।[2] सन् १८९४ ई० में **पं० प्रताप नारायण मिश्र** द्वारा प्रस्तुत 'राधारानी' का एक अन्य अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से १८९४ ई० में प्रकशित हुआ।[3] तीन वर्ष बाद सन् १८९७ ई० में उक्त अनुवाद का पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय द्वारा संशोधित संस्करण खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[४] 'भूमिका' में उपाध्याय जी ने स्वीकार किया है कि इस उपन्यास के केवल उन्हीं अंशों का उन्होंने अनुवाद किया है, जो प्रताप नारायण मिश्र द्वारा संशोधित-परिवर्धित कर डाले गये थे। यह संशोधित संस्करण पुनः विक्रमाब्द

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राधारानी, वंगभाषा से कासी पतिप्राणा अवला द्वारा अनुवादित, इसके मुद्रणादि का अधिकार केवल मल्लिकचन्द्र और कम्पनी को प्राप्त है (रोमन अक्षरों में) बनारस, दि चन्द्रपभा प्रेस १८८३, पृ० सं० ३९।

२. ब्रजरत्नदास, चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश, साहित्य, जुलाई १९६१, पृ० ७९।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राय बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय......कृत राधारानी, ब्राह्मण सम्पादक पंडित प्रतापनारायण मिश्र द्वारा अनुवादित "खड्गविलास" प्रेस, बाँकीपुर, साहिब प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित, १८९४, प्रथम बार ७५०, पृ० सं० २०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

१९७५ (सन् १९१८) में मुद्रित हुआ। विहार राष्ट्रभाषा परिषद पुस्तकालय, पटना में इस संस्करण एक प्रति उपलब्ध हैं।

सन् १९११ ई० में 'राधारानी' का **गिरजा कुमार घोष** कृत एक दूसरा अनुवाद सुदर्शनाचार्य, वी० ए० द्वारा गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति उपलब्ध है।

सन् १९१८ ई० में 'राधारानी' का **पं० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी** द्वारा प्रस्तुत एक दूसरा अनुवाद हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रथम वार इस पुस्तक की एक हजार प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं।[१]

सन् १९१२ ई० में 'राधारानी' का **श्री कार्तिकेयचरण मुखोपाध्याय** द्वारा किया हुआ अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से 'वंकिम ग्रन्थमाला', खंड ३ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ।[२]

'राधारानी' का **श्री नारायण दास गुप्त** कृत एक अनुवाद हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, वनारस से भी प्रकाशित हुआ है, पर इसके प्रकाशन-काल के सम्वन्ध में कोई सूचना नहीं दी गयी है। यह भी नहीं ज्ञात हो पाता कि अद्यावधि इसके कितने संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। प्रकाशक ने जानवूझ कर, या असावधानी से, इन सूचनाओं के प्रति उपेक्षा दिखायी है।

'चारुलता' के अन्तिम आवरणपृष्ठ के विज्ञापन से ज्ञात होता है कि १९५७ ई० के पूर्व वंकिम वावू के 'राधारानी' नामक उपन्यास का एक अनुवाद किताव महल, ५६ ए, जीरो रोड, इलाहावाद से प्रकाशित हुआ।[३]

देवी चौधरानी

सन् १८९० ई० में **पं० वलदेव प्रसाद मिश्र** ने वंकिम वावू के 'देवी चौधरानी' नामक उपन्यास का **'देवी'** शीर्षक से एक अनुवाद प्रस्तुत किया, जो ९ वर्ष वाद १८९९ ई० में वेंकटेश्वर छापाखाना, वम्बई से छपकर प्रकाशित हुआ।[४] 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि अनुवादक ने इसका अनुवाद सर्वप्रथम १९४४ वि० में किया था और उस पांडु-लिपि के खो जाने पर पुनः १९४४ वि० में दुबारा अनुवाद किया।[५]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

२. विशेष सूचना के लिए द्रष्टव्य पृ० ५९।

३. चारुलता, ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्र० किताव महल, ५६ ए, जीरो रोड, इलाहावाद, १९५७, अन्तिम आवरणपृष्ठ का विज्ञापन।

४. प्रा० स्था०— आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—देवी (सत्य घटनापूर्ण सामाजिक उपन्यास) मुरादावादनिवासी पं० वलदेव प्रसाद मिश्र द्वारा वंगभाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद कराय खेमराज श्री कृष्णदास ने मुम्बई निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापेखाना में मुद्रित कर प्रसिद्ध किया। संवत् १९५६, शके १८२१'

५. उपरिवत्, भूमिका।

सन् १९०७ ई० में 'देवी चौधरानी' का **श्री जयरामदास गुप्त** द्वारा प्रस्तुत **'फूल कुमारी'** शीर्षक अनुवाद उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ। अनुवाद की भूमिका से ज्ञात होता है कि अनुवादक को, एक बार, रास्ते में पड़ा हुआ एक उर्दू का ग्रन्थ मिला। उसे पढ़ने से विदित हुआ कि वह किसी बँगला उपन्यास का अनुवाद है। लेखक के शब्दों में, "यही सोंचकर हम उस उपन्यास का अनुवाद करने लग गये और जहाँ कहीं हमारे रुचिकर हुआ तहाँ कुछ नाममात्र का फेर बदल भी कर दिया है।......................उपरोक्त पुस्तक पर टाइटिल पृष्ठ न रहने के कारण हमें उसके लेखक का नाम न मिल सका। इससे हम उसके ग्रन्थकर्त्ता के नाम को लिखने में असमर्थ हैं।"[१] इस अनुवाद की एक प्रति आ० भा० पु० काशी में उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची तथा पुस्तक की भूमिका से प्राप्त की गयी हैं। भूमिका के नीचे "२८ अप्रैल सन् १९०७ ई०" लिखा हुआ है, जिससे इसके प्रकाशन काल का अनुमान किया जा सकता है।

उपन्यास को पढ़ने के बाद स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि यह बंकिम बाबू के 'देवी चौधरानी' का हो अनुवाद है।

सन् १९१३ ई० में 'देवी चौधरानी' का **पं० अक्षयवट मिश्र** और **पं० प्रभुदयालु पांडेय** द्वारा किया हुआ एक अन्य और वढ़िया अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ। पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना में इस अनुवाद की एक प्रति उपलब्ध है। सन् १९१३ ई० में **पं० जनार्दन झा द्विज** द्वारा प्रस्तुत उक्त उपन्यास का एक अन्य अनुवाद मनमोहन पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक सूची से प्राप्त की गयी हैं। 'देवी चौधरानी' का एक दूसरा अनुवाद **श्रीरामाशीष सिंह** ने भी प्रस्तुत किया था, जिसका दूसरा संस्करण हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से १९३७ ई० (१९९४ वि०) में 'बंकिम ग्रन्थमाला' खंड २ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

'देवी चौधरानी' का एक दूसरा अनुवाद **श्री कमल जोशी** ने प्रस्तुत किया जो १९५४ ई० में श्री प्रभाकर साहित्यलोक, रानी कटरा, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। प्रथम बार इसकी दो हजार प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं।[2] इस उपन्यास का एक दूसरा अनुवाद हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, बनारस से प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में न तो अनुवादक का नाम दिया हुआ है, न संस्करण अथवा प्रकाशन-काल। अब तक इसके कितने संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, इसका पता दे पाना बहुत कठिन है।

'चारुलता' के अन्तिम आवरणपृष्ठ के विज्ञापन से ज्ञात होता है कि १९५७ के पूर्व

---

१. फूलकुमारी, अनु० जयरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी, १९०७, भूमिका।
२. प्राप्ति स्थान— वि० रा० भा० पु० पटना।

'देवी चौधरानी' का एक अनुवाद किताब महल, इलाहाबाद से प्रकाशित हो चुका था।[1]

सुरेन्द्र ऐंड कम्पनी, (कटरा इलाहाबाद) तथा इंडियन प्रेस, प्रयाग से भी १९५८ ई० के पूर्व 'देवी चौधरानी' के भिन्न भिन्न अनुवाद प्रकाशित हो चुके थे। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन अनुवादों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। ये सूचनाएँ उक्त प्रकाशन-संस्थाओं की १९५८ में मुद्रित पुस्तकसूचियों से प्राप्त की गयी हैं।

इन्दिरा

सन् १८९४ ई० में बंकिम बाबू के 'इन्दिरा' नामक उपन्यास का **पं० प्रताप नारायण मिश्र** द्वारा किया हुआ अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[2] बाद में **पं० किशोरी लाल गोस्वामी** ने भी 'इन्दिरा' का एक अनुवाद प्रस्तुत किया जो खड्गविलास प्रेस से ही, १९०८ ई० में, प्रकाशित हुआ।[3] गोस्वामी जी कृत, अनुवाद का दूसरा संस्करण, जिसकी १५०० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं, खड्गविलास प्रेस से १९१८ ई० में प्रकाशित हुआ।[4] सन् १९१६ ई० में 'इन्दिरा' का **रामेश्वर प्रसाद पाडेय** कृत एक दूसरा अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[5]

सन् १९१९ ई० में विवेच्य उपन्यास का **गिरिजाकुमार घोष** कृत अनुवाद रामनारायण लाल, इलाहाबाद के द्वारा प्रकाशित किया गया।[6]

सन् १९२३ ई० में 'इन्दिरा' का **पं० जनार्दन झा** कृत अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[7] 'इन्दिरा' का **श्री रामाशीष सिंह** द्वारा प्रस्तुत अनुवाद हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी कलकत्ता से बंकिम ग्रन्थमाला, द्वितीय खंड, के अन्तर्गत १९३५ ई० के लगभग प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थावली का १९३७ ई० (१९९४ वि०) में प्रकाशित दूसरा संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[8]

---

१. चारुलता, ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, किताब महल ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद १९५७, अन्तिम आवरण पृष्ठ का विज्ञापन।

२. प्रा० स्था—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राम बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय सी० आई० ई० कृत इंदिरा ब्राह्मण संपादक पं० प्रताप नारायण मिश्र द्वारा अनुवादित, सर ऐल्फ्रेड क्रफ्ट कौफ्ट, के सी० आई० ई० एम० ए० डाइरेक्टर औफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन बंगाल के आज्ञानुसार म० कु० बा० रामदीन सिंह द्वारा प्रकाशित "खड्गविलास" प्रेस, बाँकीपुर साहिब प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित, १८९४. प्रथम बार ६२५।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कृत 'इंदिरा' का म० कु० बा० रामदीन सिंह के आज्ञानुसार पंडित किशोरी लाल गोस्वामी कृत हिन्दी अनुवाद, पटना, "खड्गविलास" प्रेस, बाँकीपुर। बाबू चंडीप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित १९०८।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

८. द्रष्टव्य, प्रस्तुत प्रबन्ध, पृ०।

सन् १९५२ ई० में 'इन्दिरा' का **लालधर त्रिपाठी प्रवासी** कृत अनुवाद हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी से प्रथम बार प्रकाशित हुआ···इस अनुवाद का तृतीय संस्करण सितम्बर १९५८ में उक्त प्रकाशन संस्था से ही हुआ।[1]

'इन्दिरा' का एक अनुवाद किताब महल, इलाहाबाद से १९५७ ई० के पूर्व प्रकाशित हुआ था।[2]

इस प्रकार सन् १८९४ ई० से लेकर सन् १९५८ तक 'इन्दिरा' के कम से कम सात अनुवाद, जिनकी सूचना उपर्युक्त पृष्ठों में दी गयी है, और उनमें से प्रत्येक के एकाधिक संस्करण प्रकाशित हुए। यह तथ्य इस उपन्यास की लोकप्रियता का असन्दिग्ध प्रमाण है।

युगलांगुलीय

सन् १८९४ ई० में ही बंकिम बाबू के 'युगलांगुलीय' नामक उपन्यास का **पं० प्रताप नारायण मिश्र** द्वारा प्रस्तुत अनुवाद खड्‌गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[3] इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

सन् १९१० ई० में 'युगलांगुलीय' का श्रीयुत रुद्रनारायण कृत अनुवाद **'युगलांगुलीय' अर्थात् दो अँगूठियाँ**, शीर्षक से इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक विवेच्य संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। पर इसके तृतीय संस्करण के साथ संलग्न प्रथम संस्करण की 'भूमिका' के नीचे "प्रयाग ३० वृष सं० १९६७ वि०" मुद्रित है।[4] उक्त भूमिका से ज्ञात होता है कि यह मूल उपन्यास का अविकल अनुवाद न होकर छायानुवाद अथवा रूपान्तर है।[5]

विवेच्य अनुवाद का तीसरा संस्करण १९२३ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से ही प्रकाशित हुआ।[6] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके दूसरे संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर तीसरे संस्करण के साथ संलग्न 'परिचय' से दूसरे संस्करण का प्रकाशन-काल १९१४ ई० ज्ञात होता है।

---

१. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी।

२. चारुलता, ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्र० किताबमहल, ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद, १९५७, अन्तिम आवरण पृष्ठ का विज्ञापन।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राय बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कृत युगलांगुरीय, ब्राह्मण सम्पादक पंडित प्रताप नारायण मिश्र द्वारा अनुवादित, म० कु० बा० रामदीन सिंह द्वारा प्रकाशित "खड्‌गविलास प्रेस" बाँकीपुर साहिब प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित १८९४ प्रथम बार ७२५, पृ० सं० १९।

४. युगलांगुलीय, अर्थात् दो अँगूठियाँ, पं० रुद्रनारायण, इंडियन प्रेस, प्रयाग, तृतीयावृत्ति, १९२३, निवेदन।

५. उपरिवत्।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

सन् १९१८ ई० में 'युगलांगुलीय' का पं० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी द्वारा प्रस्तुत अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ [१]।

'युगलांगुलीय' का श्री रामाशीष सिंह कृत अनुवाद १९३५ ई० के आस पास हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से 'बंकिम ग्रन्थावली', खंड २ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थावली का १९३७ ई० में प्रकाशित दूसरा संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।

इस प्रकार सन् १८९४ ई० से लेकर १९३७ ई० तक 'युगलांगुलीय' के कम से कम ४ अनुवाद और कुल मिलाकर ७ संस्करण प्रकाशित हुए। यह इस उपन्यास की लोकप्रियता का प्रमाण है।

कृष्णकान्त का दानपत्र

सन् १८९८ ई० में बंकिम बाबू के 'कृष्णकान्तेर विल' नामक उपन्यास का पं० **अयोध्या सिंह उपाध्याय** कृत 'कृष्णकान्त का दानपत्र' शीर्षक अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[2] इस ग्रन्थ के 'उपसंहार' से ज्ञात होता है कि इसकी रचना १८९७ ई० में ही हो चुकी थी। उपसंहार के नीचे "३१-८-९७ तिथि दी हुई है।[3] इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १९१८ ई० में खड्गविलास प्रेस, पटना से ही प्रकाशित हुआ।[4]

सन् १९१६ ई० में विवेच्य उपन्यास का **गुलजारी लाल चतुर्वेदी** कृत अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[5] ग्रन्थ की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह भी मूल उपन्यास का भावानुवाद है।

सन् १९३४ ई० में विवेच्य उपन्यास का श्री **रामशीष सिंह** कृत एक अनुवाद हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से 'बंकिम ग्रन्थमाला', भाग १ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास का एक दूसरा अनुवाद साहित्यसेवा सदन या पुस्तक सदन, काशी से भी प्रकाशित हुआ था, जिसके अनुवादक के नाम पता नहीं चलता।[6]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

२. प्रा० स्था०— आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रायबहादुर बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कृत कृष्णकान्तेर विल अर्थात् कृष्णकान्त का दानपत्र, पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय द्वारा अनुवादित······म० कु० बाबू रामदीन सिंह द्वारा प्रकाशित, पटना, "खड्गविलास" प्रेस, बाँकीपुर साहब प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित। विक्रमाब्द १९५४ खीष्टाब्द १८९८, हरिश्चन्द्राब्द १४, प्रथम बार।

३. उपरिवत्, उपसंहार।

४. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

६. आ० भा० पु०, काशी की पुस्तक सूची।

विवेच्य उपन्यास का **श्री कमल, बी० ए०** कृत एक अनुवाद १९५३ ई० में श्री प्रभाकर साहित्य लोक, रानी कटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया था।[1] इस अनुवाद के अन्य संस्करण मुझे प्राप्त नहीं हो सके हैं।

'कृष्णकान्तेर विल' का एक अन्य अनुवादक श्री कृष्ण हसरत ने भी प्रस्तुत किया था, जिसका चौथा संस्करण दिसम्बर १९५८ ई० में, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-१ से प्रकाशित हुआ।[2] इस अनुवाद के प्रथम तीन संस्करणों को प्राप्त कर पाने में मैं असमर्थ रहा हूँ।

सन् १९५८ ई० में मुद्रित इंडियन प्रेस, प्रयाग की एक पुस्तक सूची से ज्ञात होता है कि विवेच्य उपन्यास का एक अनुवाद यहाँ से भी प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार सन् १८९८ ई० से १९५८ ई० के बीच युगलांगुलीय के कम से कम ७ अनुवाद और उनके कुल मिलाकर ११ संस्करण प्रकाशित हुए। यह तथ्य इस उपन्यास की लोकप्रियता का प्रमाण है।

कपाल कुंडला

सन् १९०१ ई० में बंकिम बाबू के 'कपाल कुंडला' नामक उपन्यास का **पं० प्रताप नारायण मिश्र** कृत अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[3] इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

'कपाल कुंडला' का **बाबू दामोदर दास खत्री** कृत एक अनुवाद **'नवकुमार या कपाल कुंडला'** शीर्षक से देवकीनन्दन सिंह द्वारा १९१४ ई० में प्रकाशित किया गया।[4] उक्त अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। 'मतवाला' के १ दिसम्बर १९२३ के अंक में इस अनुवाद का एक विज्ञापन प्राप्त होता है, जिसके नीचे "पता—मतवाला कार्यालय, २३ शंकर घोष लेन, कलकत्ता" अंकित है। कदाचित् इसका दूसरा संस्करण १९२३ ई० में 'मतवाला कार्यालय' से प्रकाशित हुआ हो।

'कपाल कुंडला' का अनुवाद पं० चन्द्रशेखर पाठक ने भी प्रस्तुत किया था। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ के फट जाने के कारण प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल का कुछ भी पता नहीं चलता। आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची से ज्ञात होता है कि इस अनुवाद का प्रथम संस्करण १९१९ ई० में हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।

---

१. प्रा० स्था—वि० रा० भा० प० पु० पटना।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राय बहादुर बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कृत कपालकुंडला···पं० प्रताप नारायण मिश्र द्वारा अनुवादित पटना, "खड्गविलास प्रेस", बाँकीपुर, साहिब प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित और प्रकाशित १९०१, पहली बार। पृ० सं० १०७।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
५. उपरिवत्, निवेदन।

सन् १९३२ ई० में 'कपाल कुंडला' का **श्री कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय** कृत अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से 'बंकिम ग्रन्थावली', खंड २ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ।[1]

'कपाल कुंडला' का एक अन्य अनुवाद श्री नाथ ब्रदर्स, बनारस सिटी से भी प्रकाशित हुआ था।[2] पर पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो अनुवादक का नाम दिया हुआ है न प्रकाशन काल।

पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने भी 'कपाल कुंडला' का एक अनुवाद प्रस्तुत किया था, जो १९४६ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3] विवेच्य उपन्यास का श्री कमल बी० ए० द्वारा प्रस्तुत किया हुआ एक अनुवाद १९५३ ई० में प्रभाकर साहित्य लोक, रानी कटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया।[4] इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

१९५८ ई० में मुद्रित हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, काशी की पुस्तक सूची से ज्ञात होता कि इस प्रकाशन संस्था से भी 'कपाल कुंडला' का कोई अनुवाद प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, इस कारण इसके सम्बन्ध में कोई सूचना दे पाना कठिन है। आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची में 'कपाल कुंडला, के साहित्य सेवा सदन या पुस्तक भवन, काशी से प्रकाशित एक अनुवाद की सूचना दी हुई है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

इस प्रकार सन् १९०१ ई० से लेकर १९५८ ई० तक कपाल कुंडला के कम से कम ७ अनुवाद प्रस्तुत किए गये।

आनन्दमठ

बंकिम बाबू के 'आनन्द मठ' नामक उपन्यास का **श्री कमलानन्द सिंह** कृत अनुवाद, सर्वप्रथम डाइमंड जुबिली प्रेस, कानपुर से १९०६ ई० में प्रकाशित हुआ।[5] इस अनुवाद के अन्य संस्करण मेरे देखने में नहीं आये हैं।

'आन्दमठ' का एक अनुवाद, जिसे पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने प्रस्तुत किया था,

---

१. विशेष ज्ञान के लिए द्रष्टव्य, पृ०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

३. प्रा० स्था० बि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कपाल कुंडला, मूल लेखक बंकिम चन्द्र, अनु० निराला सूर्यकान्त त्रिपाठी, प्र० इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग १९४६।

४. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० पु० पटना।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आनन्दमठ, राजनैतिक स्वदेशानुराग पूरित उपन्यास, पूर्निया जिलान्तर्गत श्रीनगरनराधिप साहित्य सरोज श्रीकमलानन्द सिंह द्वारा अनुवादित, डायमंड जुबिली प्रेस, कानपुर में मुद्रित, प्रथम बार १०००, सन् १९०६। पृ० सं० ३०६।

विवेच्य उपन्यास का **श्री कमल, बी० ए०** कृत एक अनुवाद १९५३ ई० में श्री प्रभाकर साहित्य लोक, रानी कटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया था।[1] इस अनुवाद के अन्य संस्करण मुझे प्राप्त नहीं हो सके हैं।

'कृष्णकान्तेर विल' का एक अन्य अनुवादक श्री कृष्ण हसरत ने भी प्रस्तुत किया था, जिसका चौथा संस्करण दिसम्बर १९५८ ई० में, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-१ से प्रकाशित हुआ।[2] इस अनुवाद के प्रथम तीन संस्करणों को प्राप्त कर पाने में मैं असमर्थ रहा हूँ।

सन् १९५८ ई० में मुद्रित इंडियन प्रेस, प्रयाग की एक पुस्तक सूची से ज्ञात होता है कि विवेच्य उपन्यास का एक अनुवाद यहाँ से भी प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार सन् १८९८ ई० से १९५८ ई० के बीच युगलांगुलीय के कम से कम ७ अनुवाद और उनके कुल मिलाकर ११ संस्करण प्रकाशित हुए। यह तथ्य इस उपन्यास की लोकप्रियता का प्रमाण है।

कपाल कुंडला

सन् १९०१ ई० में वंकिम बाबू के 'कपाल कुंडला' नामक उपन्यास का **पं० प्रताप नारायण मिश्र** कृत अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[3] इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

'कपाल कुंडला' का **बाबू दामोदर दास खत्री** कृत एक अनुवाद **'नवकुमार या कपाल कुंडला'** शीर्षक से देवकीनन्दन सिंह द्वारा १९१४ ई० में प्रकाशित किया गया।[4] उक्त अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। 'मतवाला' के १ दिसम्बर १९२३ के अंक में इस अनुवाद का एक विज्ञापन प्राप्त होता है, जिसके नीचे "पता—मतवाला कार्यालय, २३ शंकर घोष लेन, कलकत्ता" अंकित है। कदाचित् इसका दूसरा संस्करण १९२३ ई० में 'मतवाला कार्यालय' से प्रकाशित हुआ हो।

'कपाल कुंडला' का अनुवाद पं० चन्द्रशेखर पाठक ने भी प्रस्तुत किया था। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ के फट जाने के कारण प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल का कुछ भी पता नहीं चलता। आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची से ज्ञात होता है कि इस अनुवाद का प्रथम संस्करण १९१९ ई० में हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।

---

१. प्रा० स्था—वि० रा० भा० प० पु० पटना।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राय बहादुर बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कृत कपालकुंडला···पं० प्रताप नारायण मिश्र द्वारा अनुवादित पटना, "खड्गविलास प्रेस", बाँकीपुर, साहिब प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित और प्रकाशित १९०१, पहली बार। पृ० सं० १०७।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
५. उपरिवत्, निवेदन।

सन् १९३२ ई० में 'कपाल कुंडला' का **श्री कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय** कृत अनुवाद हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से 'वंकिम ग्रन्थावली', खंड २ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ।[1]

'कपाल कुंडला' का एक अन्य अनुवाद श्री नाथ ग्रदर्श, वनारस सिटी से भी प्रकाशित हुआ था।[2] पर पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो अनुवादक का नाम दिया हुआ है न प्रकाशन काल।

पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने भी 'कपाल कुंडला' का एक अनुवाद प्रस्तुत किया था, जो १९४६ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3] विवेच्य उपन्यास का श्री कमल बी० ए० द्वारा प्रस्तुत किया हुआ एक अनुवाद १९५३ ई० में प्रभाकर साहित्य लोक, रानी कटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया।[4] इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

१९५८ ई० में मुद्रित हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, काशी की पुस्तक सूची से ज्ञात होता कि इस प्रकाशन संस्था से भी 'कपाल कुंडला' का कोई अनुवाद प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, इस कारण इसके सम्वन्ध में कोई सूचना दे पाना कठिन है। आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची में 'कपाल कुंडला, के साहित्य सेवा सदन या पुस्तक भवन, काशी से प्रकाशित एक अनुवाद की सूचना दी हुई है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

इस प्रकार सन् १९०१ ई० से लेकर १९५८ ई० तक कपाल कुंडला के कम से कम ७ अनुवाद प्रस्तुत किए गये।

आनन्दमठ

वंकिम वावू के 'आनन्द मठ' नामक उपन्यास का **श्री कमलानन्द सिंह** कृत अनुवाद, सर्वप्रथम डाइमंड जुविली प्रेस, कानपुर से १९०६ ई० में प्रकाशित हुआ।[5] इस अनुवाद के अन्य संस्करण मेरे देखने में नहीं आये हैं।

'आन्दमठ' का एक अनुवाद, जिसे पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने प्रस्तुत किया था,

---

१. विशेष ज्ञान के लिए द्रष्टव्य, पृ०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

३. प्रा० स्था० वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कपाल कुंडला, मूल लेखक वंकिम चन्द्र, अनु० निराला सूर्यकान्त त्रिपाठी, प्र० इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग १९४६।

४. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० पु० पटना।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ को प्रतिलिपि—आनन्दमठ, राजनैतिक स्वदेशानुराग पूरित उपन्यास, पूर्निया जिलान्तर्गत श्रीनगरनराधिप साहित्य सरोज श्रीकमलानन्द सिंह द्वारा अनुवादित, डायमंड जुविली प्रेस, कानपुर में मुद्रित, प्रथम वार १०००, सन् १९०६। पृ० सं० ३०६।

१९२२ ई० में सर्व प्रथम हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[1]

इस अनुवाद के प्रकाशकीय निवेदन से ज्ञात होता है कि आनन्दमठ का पहला अनुवाद वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ था ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

सन् १९२२ ई० में ही 'आनन्दमठ' का **श्रीयुक्त मोहन** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद सरस्वती पुस्तकमाला कार्यालय से प्रकाशित हुआ ।[3] 'आनन्द मठ' का श्री कार्तिकेय चरण मुखोपध्याय कृत अनुवाद १९३२ ई० में हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से 'बंकिम ग्रन्थमाला', खंड ३ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ ।[4] विवेच्य उपन्यास का एक दूसरा अनुवाद **श्री कमल बी० ए०** ने भी प्रस्तुत किया, जिसका दूसरा संस्करण १९५५ ई० में प्रभाकर साहित्यालोक रानी कटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया ।[5] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण का प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । किताव महल इलाहाबाद से आनन्दमठ का एक अनुवाद १९५७ ई० के पूर्व प्रकाशित हुआ था ।[6]

आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक पंजी से ज्ञात होता है कि विवेच्य उपन्यास का एक अनुवाद मनमोहन पुस्तकालय, बनारस से भी प्रकाशित हुआ था । १९५८ ई० में मुद्रित हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय काशी, सुरेन्द्र एंड को०, कटरा, इलाहाबाद तथा इंडियन प्रेस, प्रयाग की पुस्तकसूचियों से ज्ञात होता है कि उक्त प्रकाशन संस्थाओं से भी 'आनन्दमठ' के एक एक अनुवाद प्रकाशित हो चुके थे । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन अनुवादों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

इस प्रकार १९०६ ई० में लेकर १९५८ ई० के बीच 'आनन्द मठ' के कम से कम ८ अनुवादों का, जिनकी सूचना ऊपर की पंक्तियों में दी गयी है, पता चलता है । यह तथ्य इस उपन्यास की लोकप्रियता को प्रमाणित करता है ।

विषवृक्ष

सन् १९१५ ई० बंकिम बाबू के प्रसिद्ध उपन्यास 'विषवृक्ष' का **गुलजारी लाल चतुर्वेदी** कृत अनुवाद, सर्व प्रथम, हरिदास वैद्य, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित किया गया ।[7]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

२. उपरिवत्, प्रकाशक का निवेदन ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

४. विशेष सूचना के लिए द्रष्टव्य, पृ० ।

५. प्रा० स्था० —बि० रा० भा० प० पु० पटना ।

६. चारुलता, ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्र० किताव महल, ५६ ए जीरो रोड, इलाहाबाद, १९५७, अन्तिम आवरण पृष्ठ का विज्ञापन ।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विषवृक्ष, ले० बंकिमचन्द्र चटर्जी अ० गुलजारी लाल चतुर्वेदी, प्र० हरिदास वैद्य, २०१, हरीसन रोड, कलकत्ता, प्रथम बार १०००, १९१५ ई० । पृ० सं० २६५ ।

'विषवृक्ष' का एक दूसरा अनुवाद पं० जनार्दन झा ने प्रस्तुत किया, जो १९२५ ई० में, या उसके कुछ पूर्व, हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'प्रभा' में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इस अनुवाद के प्रकाशित होने के पूर्व हिन्दी में इस उपन्यास के तीन चार अनुवाद निकल चुके थे।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक अब तक इन अनुवादों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से ज्ञात होता है कि १९३२ में इस अनुवाद का दूसरा संस्करण भी हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

उक्त पुस्तक-सूची से यह भी ज्ञात होता है कि विवेच्य उपन्यास का रामाशीष सिंह कृत अनुवाद हिन्दी पुस्तक ऐजेंसी से ही 'बंकिम ग्रन्थमाला', खंड १ के अन्तर्गत १९३४ ई० (१९९१ वि०) में प्रकाशित हुआ।

सन् १९४९ ई० में 'विषवृक्ष' का पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी कृत अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3]

'विषवृक्ष' का हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, काशी से भी प्रकाशित एक अनुवाद प्राप्त होता है। इस अनुवाद का १९५७ ई० में प्रकाशित तीसरा संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।

इस प्रकार सन् १९१५ ई० से लेकर सन् १९५७ ई० तक 'विषवृक्ष' के कम से कम ५ अनुवाद और उनके कुल मिलाकर ८ संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। यह तथ्य इस उपन्यास की लोकप्रियता का असन्दिग्ध प्रमाण है।

मृणालिनी

सन् १९१५ ई० में बंकिम बाबू के 'मृणालिनी' नामक उपन्यास का जयराम दास गुप्त कृत अनुवाद प्रथम बार, उपन्यास बहार आफिस, काशी से, प्रकाशित हुआ।[4] आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची में इस अनुवाद के १९१८ ई० में प्रकाशित द्वितीय संस्करण की सूचना दी हुई है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सन् १९१६ ई० में 'मृणालिनी' का पं० शुकदेव प्रसाद वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत दूसरा

---

१. सरस्वती, मार्च १९२५, पुस्तक परिचय: प्रभा, अप्रील १९२५, पुस्तक परिचय।

२. प्रभा, अप्रील, १९२५, पुस्तक परिचय, विषवृक्ष।

३. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विषवृक्ष, अनु० पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी, प्र० इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद, १९४९, प्रथम संस्करण, पृ० सं० २२४।

४. प्रा० स्था०—चैं० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मृणालिनी (एक मनोहर उपन्यास), मू० ले० बंकिमचन्द्र, अनुवादक, बाबू जयरामदास गुप्त, प्रकाशक, उपन्यास बहार आफिस राजघाट, काशी। चन्द्रप्रभा प्रेस में बाबू गौरी शंकर लाल, मैनेजर, द्वारा मुद्रित, प्रथम बार, मई सन् १९१५ ई०,

अनुवाद नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ[१] इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

'मृणालिनी' का **रामाशीष सिंह** द्वारा प्रस्तुत एक अनुवाद १९३४ ई० (१९९१ वि०) में हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से 'बंकिम ग्रन्थमाला' भाग १ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

'मृणालिनी' का हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, काशी से प्रकाशित अनुवाद भी प्राप्त होता है। इस अनुवाद का १९५५ ई० में प्रकाशित द्वितीय संस्करण बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असफल रहा है। ग्रन्थ में अनुवादक का नामक नहीं दिया हुआ है।

इस प्रकार १९१५ ई० से लेकर १९५५ ई० तक 'मृणालिनी' के कम से कम ४ अनुवाद, जिनकी सूचना ऊपर की पंक्तियों में दी गयी है, और उनके कुल मिलाकर छह संस्करण प्रकाशित हुए। यह तथ्य इस उपन्यास की लोकप्रियता का परिचायक है।

रजनी

बंकिम बाबू के 'रजनी' नामक उपन्यास का अनुवाद सर्वप्रथम **बाबू व्रजनन्दन सहाय** और **बाबू रघुनाथ प्रसाद सिंह** ने मिल कर प्रस्तुत किया, जो हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से १९१५ ई० में प्रकाशित हुआ था।[२] आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में इस अनुवाद की एक प्रति उपलब्ध है, पर उसमें प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।[३] सरस्वती, वर्ष १७, अंक २ (फरवरी १९१६ ई०) में प्रकाशित इस अनुवाद की समीक्षा से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह १९१६ ई० के जनवरी महीने में अथवा १९१५ ई० के अन्त में प्रकाशित हुआ होगा। उक्त समीक्षा से यह भी ज्ञात होता है कि यह अविकल अनुवाद न होकर स्वतन्त्र अनुवाद है।[४] आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से ज्ञात होता है कि इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १९१८ ई० में हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

'रजनी' का **अक्षयवट मिश्र** द्वारा प्रस्तुत एक अन्य अनुवाद १९१७ ई० में खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ था।[५]

'सोने की राख वा पद्मिनी' (प्रकाशन काल १९२१ ई०) नामक उपन्यास में

---

१. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना।

२. रजनी, हिन्दी अनुवाद, हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, सन् १९१५, संवत् १९७२, मूल्य आठ आना, पृ० संख्या १६४।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रजनी, बाबू व्रजनन्दन सहाय तथा बाबू रघुनाथ प्रसाद सिंह द्वारा अनुवादित, हरिदास ऐंड कम्पनी द्वारा प्रकाशित।

४. पुस्तक समीक्षा, (रजनी), सरस्वती, भाग १७, अंक २, फरवरी १९१६।

५. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रजनी, ले० श्रीराय बहादुर बंकिमचन्द्र, अनु० पटना कालिज के संस्कृत हिन्दी व्याख्याता, अक्षयवट मिश्र (विप्रचन्द्र),

मुद्रित विज्ञापन से ज्ञात होता है कि उपन्यास वहार आफिस, काशी से भी 'रजनी' का कोई अनुवाद १९२१ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

'रजनी' का रामाशीष सिंह कृत एक अनुवाद १९३५ ई० के लगभग हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से 'वंकिम ग्रन्थावली', खंड २ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थावली का १९३७ ई० में प्रकाशित दूसरा संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है।[1] साहित्य सेवासदन या पुस्तक भवन काशी से प्रकाशित एक अन्य अनुवाद की भी सूचना मिलती है।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में भी असफल रहा है।

'रजनी' का एक अनुवाद किताब महल, इलाहाबाद से १९५७ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था।[3]

१९५८ ई० में मुद्रित हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, काशी और इंडियन प्रेस, प्रयाग के सूचीपत्रों से ज्ञात होता है कि उक्त प्रकाशन-संस्थाओं से भी 'रजनी' के एक एक अनुवाद प्रकाशित हुए थे। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन अनुवादों को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

इस प्रकार सन् १९१५ ई० से लेकर १९५८ ई० तक 'रजनी' के हिन्दी में कम से कम ७ अनुवाद और कुल मिलाकर ९ संस्करण, जिनकी सूचना ऊपर की पंक्तियों में दी गयी है, प्रकाशित हो चुके थे। यह तथ्य इस उपन्यास की हिन्दी पाठकों के बीच लोकप्रियता प्रमाणित करता है।

वंकिम ग्रन्थमाला

सन् १९३४ ई० में हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से 'वंकिम ग्रन्थमाला' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इस ग्रन्थमाला का प्रथम खंड, जिसमें 'विषवृक्ष', 'मृणालिनी', 'कृष्णकान्त का वसीयतनामा' और 'सीताराम' उपन्यास सम्मिलित किये गये थे, इसी वर्ष प्रकाशित हुआ।[4] अनुवादक थे, श्री रामाशीश सिंह। विवेच्य 'ग्रन्थमाला' का दूसरा खंड, जिसमें' देवी चौधरानी', 'राजसिंह', 'इन्दिरा', 'रजनी' और 'युगलांगुलीय' सम्मिलित किये गये थे, भी उक्त प्रकाशन-संस्था, से प्रथम खंड के प्रकाशित होने के कुछ वाद, प्रकाशित हुआ। इसके भी अनुवादक ठाकुर रामाशीष सिंह थे। इस खंड का १९३७ ई० में प्रकाशित

खड्गविलास प्रेस, वाँकीपुर, वाबू चंडी प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, १९१७, प्रथम वार, पृ० सं० ११६।

१. विशेष के लिए द्रष्टव्य, पृ० २६६।
२. आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची।
३. चारुलता, ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्र० किताब महल, ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद १९५७, अन्तिम आवरणपृष्ठ का विज्ञापन।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वंकिम ग्रन्थमाला (भाग १) विषवृक्ष, मृणालिनी, कृष्णकान्त का वसीयतनामा, सीताराम, ले० वंकिमचन्द्र चटर्जी, अ० रामाशीष सिंह, प्र० हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता।

दूसरा संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है।[1] दो तीन वर्षों के भीतर इसके दो संस्करणों का प्रकाशित होना इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी पाठकों के बीच बंकिम बाबू के उपन्यास बहुत लोकप्रिय थे।

'बंकिम ग्रन्थमाला' का तीसरा खंड जिसमें, 'आनन्दमठ', 'दुर्गेश नन्दिनी', 'चन्द्रशेखर', 'कपालकुंडला', तथा 'राधा रानी' सम्मिलित किये गये थे, हिन्दी पुस्तक ऐजेंसी से १९३२ ई० में ही प्रकाशित हो चुका था।[2] यद्यपि प्रथम खंड के पहले तृतीय खंड का प्रकाशित हो जाना आश्चर्यजनक प्रतीत होता है, पर तथ्य यही है। इस खंड के अनुवाद थे कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय।

मनमोहन पुस्तकालय, काशी से भी 'बंकिम ग्रन्थावली, तीन खंडों में प्रकाशित हुई थी। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में विवेच्य ग्रन्थावली के तीनों खंड उपलब्ध हैं, किन्तु इनके आरम्भिक पृष्ठों के फटे रहने के कारण इनके अनुवादक या प्रकाशन-काल की सूचना नहीं प्राप्त हो पाती। आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से ज्ञात होता है कि उक्त ग्रन्थावली के तीनों खंड १९२३ ई० (१९८० वि०) में पन्नालाल गुप्त, मनमोहन पुस्तकालय, काशी द्वारा प्रकाशित किये गये थे। इस ग्रन्थावली के अनुवादक थे, विश्वनाथ शर्मा। इस गन्थावली में आनन्दमठ, लोकरहस्य, देवी चौधरानी, कृष्णकान्त का वसीयतनामा, कपाल कुंडला, रजनी, विषवृक्ष, मृणालिनी और सीताराम सम्मिलित किये गये थे।

एक बंगला उपन्यासकार

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में **किसी बंगला उपन्याकार** के, जिन्होंने अपने उपन्यासों में अपना नाम नहीं दिया है, कई उपन्यासों के अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत किये गये थे। इस अज्ञातनामा उपन्यासकार ने बँगला में 'मडेल भगिनी', 'काला चाँद', 'चिनीवास चरितामृत', 'राजलक्ष्मी' आदि कई उपन्यासों की रचना की थी।[3] इनके प्रायः सभी उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद वर्तमान शताब्दी के प्रथम दशक में प्रस्तुत किये गये थे।

शिक्षिता हिन्दूबाला

सर्वप्रथम विवेच्य उपन्यासकार के '**मडेल भगिनी**' नामक उपन्यास का छायानुवाद 'शिक्षिता हिन्दूबाला' शीर्षक से 'हिन्दी बंगवासी' में १९०० ई० के लगभग प्रकाशित

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बंकिम ग्रन्थमाला, द्वितीय खंड, स्व० बंकिमचन्द्र चटर्जी के देवी चौधरानी, राज सिंह, इन्दिरा और युगलांगुलीय का अविकल, अनुवाद, अनुवादक ठा० रामाशीष सिंह, प्रकाशक हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता, सं० १९९४, द्वितीय वार।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बंकिम ग्रन्थमाला, तृतीय खंड, स्व० बंकिम चन्द्र चटर्जी के आनन्दमठ, दुर्गेशनन्दिनी, चन्द्रशेखर, कपालकुंडला और राधारानी का अविकल अनुवाद, अनुवादक कार्त्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्र० हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी २०३ हरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम वार १९८९ वि०।

३. गंजा गोपाल, अ० सदानन्द शुक्ल, १९०२, भूमिका।

हुआ। "फिर बाबू शरच्चन्द्र सोम कविरंजन ने बाबू बालमुकुन्द द्वारा अनुवाद कराकर उसे पुस्तकाकार में छपवाया और 'शिक्षिता हिन्दूबाला' नाम रखा।"[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक विवेच्य उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सारी सूचनाएँ 'गंजा गोपाल' की भूमिका से प्राप्त की गयी हैं।

गंजा गोपाल

सन् १९०२ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के '**नेड़ा हरिदास**' नामक उपन्यास का श्री सदानन्द शुक्ल कृत 'गंजा गोपाल' शीर्षक अनुवाद अरुणोदय राय द्वारा मुद्रित और प्रकाशित किया गया।[२] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल लेखक का नाम दिया हुआ है, न अनुवादक का। एतत्सम्बन्धी सूचनाएँ उक्त अनुवाद की भूमिका से प्राप्त की गयी हैं।[३] 'गंजा गोपाल' की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच बहुत लोकप्रिय हुआ था। अनुवादक के शब्दों में "पहले कुछ दिन यह 'हिन्दी बंगवासी' में छपा था। फिर किसी कारण से बन्द कर दिया गया। बन्द होते देखकर 'हिन्दी बंगवासी' के ग्राहक तड़फड़ाने और इसे पूरा करने के लिए बार बार अनुरोध करने लगे, पर उस समय किसी विशेष कारण से हम उनकी इच्छा पूर्ण न कर सके। अब उन लोगों का विशेष आग्रह देखकर ग्रन्थकर्त्ता महाशय ने इसे अलग ही पुस्तकाकार छपवा डाला है।"[४]

चन्द्रभूषण चरितामृम

सन् १९०४ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के '**चिनीवास चरितामृत**' नामक उपन्यास का श्री सदानन्द शुक्ल कृत 'चन्द्रभूषण चरितामृत' शीर्षक अनुवाद श्री बिहारी राय द्वारा मुद्रित और प्रकाशित किया गया।[५] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर अनुवादक का नाम नहीं दिया हुआ है। यह सूचना आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी।

राजलक्ष्मी

विवेच्य उपन्यासकार के 'राजलक्ष्मी' नामक उपन्यास के श्री सदानन्द शुक्ल कृत

---

१. गंजा गोपाल, अ० सदानन्द शुक्ल, १९०२, भूमिका।

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गंजा गोपाल, कलकत्ता, ३८/२ भवानी चरण दत्त स्ट्रीट, बंगवासी स्टीम प्रेस में श्रीअरुणोदय राय द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, सितम्बर, सन् १९०२ ई०, पृ० सं० १५०।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. उपरिवत्, भूमिका।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रभूषण चरितामृत, सामाजिक उपन्यास (बंगभाषा से अनुवादित), कलकत्ता, ३८/२ भवानी चरण दत्त स्ट्रीट, बंगवासी इलेक्ट्री मेशीन प्रेस में श्री नटबिहारी राय द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९६१, पृ० सं० ११८।

अनुवाद का प्रथम भाग १९०५ ई० भी श्री नटवर चक्रवर्ती द्वारा प्रकाशित किया गया ।[१] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में विवेच्य उपन्यास का प्रथम भाग है, पर इसके दूसरे और तीसरे भाग नहीं हैं। इसके दूसरे और तीसरे भाग चैतन्य पुस्तकालय, पटना सिटी में उपलब्ध हैं। दूसरे भाग के मुखपृष्ठ के फटे रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिलती, पर तीसरे भाग के मुखपृष्ठ से पुस्तक के सम्बन्ध में ज्ञातव्य सूचनाएँ प्राप्त हो जाती हैं। इससे ज्ञात होता है कि विवेच्य उपन्यास का तीसरा भाग १९०७ ई० में प्रकाशित हुआ था ।[२]

शशि महल

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकालय की पुस्तक-सूची में सदानन्द शुक्ल द्वारा अनूदित और आर० ए० वर्मन एंड को०, कलकत्ता द्वारा १९२५ ई० में प्रकाशित (चौथा संस्करण) 'शशि महल' नामक उपन्यास की सूचना प्राप्त होती है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस कारण इसके सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना दे पाना कठिन है।

काला चाँद

सन् १९१२ ई० में प्रकाशित 'नवाब नन्दिनी वा आयशा' (ले० दामोदर मुखोपाध्याय, अ० ईश्वर प्रसाद शर्मा) के अन्त में उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित कुछ पुस्तकों का विज्ञापन निम्नलिखित है—

पाठक गण ! आपलोग तो नित्य ही सफेद चाँद की कारगुजारी देखते हैं, सो अब जरा इस काले चाँद को मँगाकर देखिये कि यह क्या करता है।

सम्भव है यह 'काला चाँद' विवेच्य उपन्यासकार के ही, इसी नाम के उपन्यास का अनुवाद हो। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

योगेद्रनाथ चट्टोपाध्याय

योगेन्द्र प्रसाद चट्टोपध्याय के दो उपन्यासों के 'बड़ा भाई' और 'कनेबी' शीर्षक अनुवाद हिन्दी में जुलाई १९०४ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुके थे। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन अनुवादों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचना गंगा प्रसाद गुप्त द्वारा

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीराजलक्ष्मी उपन्यास, (वंगभाषा से अनुवादित), मडेल भगिनी, कालाचाँद, चन्द्रभूषण चरितामृत, गंजागोपाल प्रभृति उपन्यास लेखक द्वारा विरचित, कलकत्ता, भवानी चरण दत्त स्ट्रीट, हिन्दी वंगवासी इलेक्टरी मेशीन प्रेस में श्री नटवर चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९६२, पृ० सं० १९२+१३७+१४०।

२. राजलक्ष्मी के तीसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीराजलक्ष्मी (उपन्यास), तृतीय भाग (वंगभाषा से अनुवादित), मडेल भगिनी, कालाचान्द, चन्द्रभूषण, चरितामृत्त, गंजा गोपाल प्रभृति उपन्यास लेखक द्वारा विरचित। कलकत्ता, ३८/२ भवानी चरण दत्त स्ट्रीट, हिन्दी

अनूदित 'कुली कहानी' की भूमिका से, जिसका लेखन-काल जुलाई १९०४ ई० है, प्राप्त की गयी हैं।[1]

कुली कहानी

सन् १९०४ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'चाकुलीर आत्म काहिनी' नामक बँगला उपन्यास का बाबू गंगा प्रसाद गुप्त कृत 'कुली कहानी' शीर्षक अनुवाद भारत जीवन यंत्रालय काशी से मुद्रित हुआ।[2] भूमिका से ज्ञात होता है कि हिन्दी में अनूदित होने के पूर्व इनके कई उपन्यास मराठी तथा गुजराती में अनूदित हो चुके थे।[3]

वनकन्या

सन् १९०४ ई० में ही योगेन्द्र बाबू के 'जंगली मेये' नामक उपन्यास का बाबू गंगा प्रसाद गुप्त कृत 'वनकन्या' शीर्षक अनुवाद भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] भूमिका में इसे 'मर्मानुवाद' कहा गया है। अनुवादक के अनुसार, "कहने की आवश्यकता नहीं कि अनुवाद में अवसर के अनुसार बहुत सी बातें घटायी बढ़ायी गयी हैं, और सब विषय, विचारपूर्वक, हिन्दी पाठकों की रुचि के अनुकूल बनाये गये हैं।"

मानवती

'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने सूचना दी है कि स० १९१४ ई० में योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय के 'मानवती' नामक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद सद्धर्म प्रचारक प्रेस, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[5] 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' के पृष्ठ ९८ पर इस उपन्यास का उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया गया है, जो भ्रमोत्पादक है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

बंगवासी, इलेक्टरी मशीन प्रेस में श्रीनटवर चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९६४।

१. कुली कहानी, मू० ले० बाबू योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, अनुवादक बाबू गंगा प्रसाद गुप्त, भारत जीवन यंत्रालय, काशी १९०४ ई०, भूमिका।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुली कहानी, श्रीयुत बाबू योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय प्रणीत, काशी निवासी बाबू गंगा प्रसाद गुप्त अनुवादित, काशी, भारत जीवन में मुद्रित, सन् १९०४ ई०, प्रथम बार ११००।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वनकन्या, श्रीयोगीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय प्रणीत, जंगली मेये नामक बंगला उपन्यास का हिन्दी अनुवाद, काशी निवासी, बाबू गंगा प्रसाद गुप्त कृत जिसे बाबू राम कृष्ण वर्मा ने स्वकीय भारत जीवन प्रेस में छापकर प्रकाशित किया, काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित। (मुखपृष्ठ का निचला हिस्सा फट गया है, अतः संस्करण की तिथि का पता नहीं चलता। 'भूमिका' के नीचे काशी, दिसम्बर १९०४ ई० अंकित है।)

५. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ५६३।

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

मुकुट

रवीन्द्र नाथ ठाकुर के 'मुकुट' नामक उपन्यास का अनुवाद सर्वप्रथम **पं० जनार्दन झा** ने, इसी शीर्षक से, प्रस्तुत किया, जो इंडियन प्रेस प्रयाग से १९१० ई० में प्रकाशित हुआ।[१] १९१५ ई० तक इस अनुवाद का दूसरा संस्करण हो चुका था, यह 'सरस्वती', १९१६, वर्ष २, अंक २ के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है। १९२७ ई० में इस अनुवाद का संशोधित संस्करण इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।

बहुत बाद में **धन्यकुमार जैन** ने उपर्युक्त उपन्यास का अनुवाद 'रवीन्द्र साहित्य' के पंद्रहवें भाग के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थागार, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता से प्रकाशित किया। प्रकाशन-काल, संस्करण-संख्या तथा मुद्रित प्रतियों की संख्या के सम्बन्ध में बिलकुल मौन धारण कर प्रकाशक ने अपनी व्यावसायिक बुद्धि का परिचय दिया है।

'मुकुट' का एक अन्य अनुवाद चौधरी ऐंड सन्स, वाराणसी से भी प्रकाशित हुआ था, जिसके सम्बन्ध में कोई विशेष सूचना नहीं प्राप्त होती।[२] 'आँख की किरकिरी' के आवरणपृष्ठ पर मुद्रित एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इसका एक अनुवाद **'राजतिलक'** शीर्षक से १९५३ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था।[३]

राजर्षि

१९१० ई० में ही **रवीन्द्र नाथ ठाकुर** के दूसरे उपन्यास 'राजर्षि' का अनुवाद इसी शीर्षक से, इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। इसके अनुवादक भी **पं० जनार्दन झा** थे।[४] 'राजर्षि' का एक दूसरा अनुवाद, १९५२ ई० में, कल्याण दास ऐंड ब्रदर्स, वाराणसी से प्रकाशित हुआ, जिसका दूसरा संस्करण १९५६ ई० में निकला।[५] अजय प्रेस व प्रकाशन, कल्याणी देवी, साउथ इलाहाबाद से भी इस उपन्यास का एक अन्य अनुवाद प्रकाशित हुआ, जिसके १९५८ ई० तक दो संस्करण निकल चुके थे।[६] 'आँख की किरकिरी' के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि सासाराम से इस उपन्यास का एक अनुवाद १९५३ ई० के

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मुकुट, अनु० पंडित जनार्दन झा, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१० ई०।

२. द्रष्टव्य—चौधरी ऐंड सन्स वारासणी की पुस्तक-सूची, १९५८।

३. आँख की किरकिरी, अनु० लक्ष्मी नारायण सरोज, प्र० विहार प्रकाशन मन्दिर, सासाराम, १९५३, विज्ञापन।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजर्षि, अनु० पं० जनार्दन झा, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१०।

५. प्रकाशक से प्राप्त सूचना।

६. उपरिवत्।

पूर्व प्रकाशित हो चुका था।[१]

नौका डूबी

सन् १९१३ ई० में **रवीन्द्र नाथ ठाकुर** कृत 'नौका डूबी' नामक उपन्यास का **पं० जनार्दन झा** द्वारा प्रस्तुत **आश्चर्य घटना** शीर्षक अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] इसका एक अन्य संस्करण १९२१ ई० में प्रकाशित हुआ था, पर मुखपृष्ठ पर इस बात की सूचना नहीं दी हुई है कि यह कौन सा संस्करण था।[3]

१९४९ ई० में **धन्य कुमार जैन** ने **'उलझन'** शीर्षक से इस उपन्यास का एक अन्य अनुवाद हिन्दी ग्रन्थागार, कलकत्ता से प्रकाशित किया।[४] इस उपन्यास का एक दूसरा अनुवाद **'नाव दुर्घटना'** शीर्षक से **धन प्रकाश अग्रवाल** ने प्रस्तुत किया जो हिन्दी साहित्य भंडार, कर्नल गंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। इसकी अन्य सूचनाएँ पुस्तक के मुखपृष्ठ पर नहीं दी हुई है।[५] **श्री कृष्ण वर्मा** नामक किसी सज्जन ने भी इस उपन्यास का एक अनुवाद **'नाव दुर्घटना'** शीर्षक से प्रस्तुत किया था, जो हिन्दी पुस्तकालय, बुलानाला, बनारस से प्रकाशित हुआ।[६] इस उपन्यास का एक अन्य अनुवाद **जय कृष्ण शुक्ल** द्वारा अनूदित होकर अजय प्रेस व प्रकाशन से प्रकाशित हुआ था, जिसका दूसरा संस्करण १९५८ ई० के पूर्व निकल चुका था।[७] विहार प्रकाशन मन्दिर, सासाराम से भी १९५३ ई० के पूर्व इस उपन्यास का एक अन्य अनुवाद प्रकाशित हो चुका था।[८]

आँख की किरकिरी

१९१३ ई० में ही रवीन्द्र नाथ ठाकुर के **'चोखेर बाली'** नामक उपन्यास का **रूप नारायण पांडेय** द्वारा प्रस्तुत 'आँख की किरकिरी' शीर्षक अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[२] सन् १९४९ ई० में इस उपन्यास का आठवाँ संस्करण

---

१. आँख की किरकिरी, अनु० लक्ष्मी नारायण सरोज, प्र० विहार प्रकाशन मन्दिर, सासाराम, १९२३, विज्ञापन।

२. द्रष्टव्य आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आश्चर्य घटना, अर्थात् श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर लिखित "नौका डूबी" का हिन्दी अनुवाद, सामाजिक उपन्यास, अनुवादक श्री जनार्दन झा, प्रकाशक इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग १९२१।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

५. पुस्तक विक्रेता से प्राप्त सूचना।

६. प्रा० स्था०—प० वि० पु० पटना।

७. प्रकाशक से प्राप्त सूचना।

८. आँख की किरकिरी, अनु० लक्ष्मी नारायण सरोज, प्र० विहार प्रकाशन मन्दिर, सासाराम, १९५३, विज्ञापन।

९. मर्यादा, भाग ७, अंक १, नवम्बर १९१३, पुस्तक समीक्षा।

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ ।[१] 'चोखेर बाली' का **कमला प्रसाद राय** द्वारा प्रस्तुत एक अन्य अनुवाद १९४४ ई० में हिन्दी पुस्तकालय, सोरा कुंआ, बनारस से प्रकाशित हुआ । **धन्य कुमार जैन** ने भी इसका एक अनुवाद रवीन्द्र साहित्य मंदिर, कलकत्ता से प्रकाशित किया । इसका एक दूसरा अनुवाद **लक्ष्मी नारायण सरोज** ने प्रस्तुत किया, जो विहार प्रकाशन मन्दिर, सासाराम से १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ । **धन्य प्रकाश अग्रवाल** द्वारा प्रस्तुत इसका एक अन्य अनुवाद गौतम पुस्तकालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[२] अजय प्रेस व प्रकाशन से भी 'चोखेर बाली' का एक अनुवाद, जिसके अनुवादक **जयकृष्ण शुक्ल** थे, १९५८ के पूर्व प्रकाशित हुआ था ।[३] **राजा राम गुप्त** नामक किसी सज्जन ने भी इस उपन्यास का एक अनुवाद किया, जो १९५८ ई० के पूर्व हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी से प्रकाशित हो चुका था ।[४]

बऊ ठाकुरानीर हाट

रवीन्द्र नाथ ठाकुर कृत 'बऊ ठाकुरानीर हाट' नामक उपन्यास का **पं० जनार्दन झा** द्वारा प्रस्तुत अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[५] इस अनुवाद का दूसरा संस्करण कदाचित् १९१५ ई० में और तीसरा संस्करण १९२२ ई० में हुआ । इस अनुवाद का एक अन्य संस्करण उक्त प्रकाशन-संस्था से ही 'सरस्वती सिरीज' के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ, जिसमें अनुवादक, संस्करण-संख्या, प्रकाशन-काल आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं दी हुई है ।

बाद में चलकर इस उपन्यास के और भी अनुवाद प्रस्तुत किये गये । **जयकृष्ण शुक्ल** द्वारा प्रस्तुत इसका एक अनुवाद अजय प्रेस व प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ, जिसका दूसरा संस्करण १९५८ ई० के पूर्व निकल चुका था ।[६] इसका एक अनुवाद **विपिन विहारी** नामक सज्जन ने प्रस्तुत किया, जो १९५६ ई० में प्रभात प्रकाशन, मथुरा से प्रकाशित हुआ । प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली से भी इस उपन्यास का एक अनुवाद १९५९ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था ।[७]

श्री दामोदर मुखोपाध्याय

राजभक्ति

सन् १९०६ ई० में श्री दामोदर मुखोपाध्याय का 'राजभक्ति' नामक बँगला उपन्यास एक लिपि विस्तार परिषद्, कलकत्ता की आर्थिक सहायता से हिन्दी ट्रैन्सलेटिंग कंपनी,

---

१. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी ।
२. प्रकाशक से प्राप्त सूचना ।
३. उपरिवत् ।
४. उपरिवत् ।
५. सरस्वती, १९१६, भाग १७, अंक १ ।
६. प्रकाशक से प्राप्त सूचना ।
७. अपनी दुनिया, गाँधी ग्रंथागार, वाराणसी, १९५६ ई० के अन्तिम पृष्ठ का विज्ञापन ।

कलकत्ता द्वारा नगराक्षरों में मुद्रित और प्रकाशित किया गया।[1] यह अपने ढंग का अभूतपूर्व प्रयास था। आज जबकि राष्ट्रीय एकता और संघटन के उद्देश्य से समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि के अपनाने की बात पर लोग सहमत नहीं हो रहे हैं, वहाँ आज से लगभग ६० वर्ष पूर्व बंगाल के कुछ देशभक्त नागरिकों ने इस विचार को कार्यरूप में परिणत करने का सफल प्रयास किया था। यदि एक लिपि विस्तार परिषद् को सरकार का अनुमोदन और सहायता प्राप्त हुई होती तो आज देश में क्षेत्रीय भाषाओं के संघर्ष की समस्या इतनी नाजुक नहीं होती।

मृण्मयी

सन् १९११ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'मृण्मयी' नामक उपन्यास का **पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा** कृत अनुवाद खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर से मुद्रित और प्रकाशित हुआ।[2] यह उपन्यास बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के **'कपाल कुंडला'** नामक उपन्यास का उपसंहार है। भूमिका के अनुसार 'कपाल कुंडला' के अन्त में बंकिम बाबू ने लिखा है—"अनन्त गंगा प्रवाह में बसंत वायु विक्षिप्त वीचि माला से आन्दोलित होते होते कपाल कुंडला और नवकुमार कहाँ गये?" इस वाक्य को पढ़कर अवश्य ही पढ़ने वालों को यह जानने की अभिलाषा होती है कि उनका आगे क्या हुआ? इसी कौतूहल का निवारण करने के लिए दामोदर बाबू ने यह पुस्तक लिखी थी, परन्तु अद्यावधि इसका हिन्दी अनुवाद न होने के कारण हिन्दी 'कपाल कुंडला' के पाठकों का कौतूहल निवारित नहीं हो सकता था। अतएव अपने कई मित्रों के अनुरोध से 'मृण्मयी' का अनुवाद कर हम आप लोगों की भेंट करते हैं।"[3]

दो बहन

सन् १९१२ ई० के पूर्व विवेच्य उपन्यासकार के 'दुइ भगिनी' नामक उपन्यास का 'दो बहन' शीर्षक अनुवाद उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से जयराम दास गुप्त द्वारा प्रकाशित किया गया। सम्भवत: इस उपन्यास के भी अनुवादक **पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा** ही थे क्योंकि 'मृण्मयी' के मुखपृष्ठ पर इस उपन्यास का उल्लेख है। प्रस्तुत प्रबन्ध का लेखक

---

१. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजभक्ति (उपन्यास), श्री दामोदर मुखोपाध्याय प्रणीत, एक लिपि विस्तार परिषद्, कलकत्ता द्वारा अनुमोदित एवं आर्थिक साहाय्य प्राप्त हिन्दी ट्रैन्सलेटिंग कम्पनी, बड़ा बाजार कर्तृक प्रकाशित, कलिकाता, १८२८ शक, प्रथम संस्करण १००० प्रति।

२. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्री दामोदर मुखोपाध्याय विद्यानन्द प्रणीत, मृण्मयी (कपाल कुंडला का उपसंहार), हिरण्यमयी, स्वर्णमयी, कोकिला, चन्द्रकुमार, मागधी कुसुम, आदर्श भगिनी, दो बहन, मानसिंह, लक्ष्मी पति, नलिनी बाबू, प्रभृति उपन्यासों के रचयिता आरा निवासी पंडित ईश्वरी प्रसाद शर्म्मा द्वारा बंगभाषा से अनुवादित, खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर, बाबू चंडी प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, १९११ ई०, प्रथम बार १०००।

३. उपरिवत्, भूमिका।

इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'नवाब नन्दिनी' के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर मुद्रित विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं।[1]

पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा अनूदित 'दो बहिन' का द्वितीय संस्करण १९२० ई० में उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ, आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में, इस संस्करण की एक प्रति उपलब्ध है।[2]

नवाब नन्दिनी वा आयेशा

सन् १९१२ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'नवाबनन्दिनी वा आयेशा' नामक उपन्यास का **ईश्वरी प्रसाद शर्मा** कृत अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] यह उपन्यास बंकिम बाबू के 'दुर्गेश नन्दिनी' नामक उपन्यास के उपसंहार रूप में लिखा गया था।

स्वर्णकमल वा भयानक भंडाफोड़

सन् १९१३ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के **'सोनार कमल'** नामक उपन्यास का **ईश्वरी प्रसाद शर्मा** कृत 'स्वर्णकमल वा भयानक भंडाफोड़' शीर्षक अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक और पुस्तक का नाम नहीं दिया हुआ है, न पुस्तक को अनुवाद कहा गया है। 'लेखक की दो दो बातों' से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद है। इसी से इसके मूल लेखक और मूल पुस्तक का भी पता चलता है।[5]

शरद कुमारी

सन् १९१६ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के **'मा ओ मेये'** नामक उपन्यास का **जगमोहन**

---

१. नवाबनन्दिनी वा आयेशा, ले०, दामोदर मुखोपाध्याय, अनु० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, १९१२, अन्तिम आवरण पृष्ठ का विज्ञापन।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दो बहिन, बँगला का अविकल अनुवाद, पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्रकाशक बा० शिवराम दास गुप्त, उपन्यास बहार आफिस, काशी बनारस, दूसरी बार, अगस्त १९२० पृ० सं० १०६।

३. नवाब नन्दिनी वा आयेशा (दुर्गेशनन्दिनी उपन्यास का उपसंहार) जिसे अपने "उपन्यास ग्रंथमाला" के ग्राहकों तथा उपन्यास प्रेमीपाठकों के मनोरंजन के लिए पंडित ईश्वरी प्रसाद शर्म्मा द्वारा बंगभाषा से अनुवादित कराकर अनेक पुस्तकों के प्रणेता काशीनिवासी बाबू जयरामदास ने उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित किया, काशी चन्द्रप्रभा प्रेस में बाबू गौरीशंकर लाल मैनेजर द्वारा मुद्रित हुआ, सन् १९१२ ई०, प्रथम बार ११००।

४. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी, (द्विवेदी संग्रह) मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्वर्ण कमल वा भयानक भंडाफोड़, अद्भुत रहस्यपूर्ण अनेक घटनाओं से भरा प्रेमरस का सामाजिक उपन्यास, विविध उपन्यासों के रचयिता, 'मनोरंजन' सम्पादक पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्रकाशक-हरिदास ऐंड कम्पनी, २०१ हरीसन रोड, कलकत्ता, प्रथम बार १०००, १९१३ ई०।

५. उपरिवत्, दो दो बातें।

कृत 'शरदकुमारी' शीर्षक अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ सरस्वती (जून १९१६ ई०) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद की पुस्तक-समीक्षा से प्राप्त की गयी है।

रमेशचंद्र दत्त

रमेशचन्द्र दत्त, यों ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में विशेष प्रसिद्ध हैं, पर इन्होंने कुछ सामान्य उपन्यासों की भी रचना की थी, जिनके हिन्दी अनुवाद विवेच्य काल में प्रस्तुत किये गये थे।

संसार

रमेशचन्द्र दत्त के 'संसार' नामक उपन्यास का अनुवाद हिन्दी में हुआ था। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इसकी दो प्रतियाँ हैं, पर दोनों के आरम्भिक पृष्ठ गायब हैं। इस उपन्यास का अनुवाद माहेश्वरी पुस्तकालय, पटना में भी उपलब्ध है, पर उसके भी आरम्भिक पृष्ठ नहीं हैं। इस कारण इन अनुवादों के अनुवादक, प्रकाशन संस्था तथा प्रकाशनकाल का बिलकुल पता नहीं चलता। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक-सूची से अनुवादक का नाम **बाबू बेणी प्रसाद**, प्रकाशक का नाम बाबू माधो प्रसाद, पुस्तक कार्यालय, काशी और प्रकाशन-काल प्रथम संस्करण १९११ ई० ज्ञात होता है। माहेश्वर पुस्तकालय, पटना की पुस्तक सूची में अनुवादक का नाम तो नहीं लिखा हुआ है, पर प्रकाशन संस्था का नाम, भारत जीवन प्रेस, बनारस लिखा हुआ है।

'संसार' का **कमला प्रसाद राय शर्मा** कृत एक अनुवाद वैदिक पुस्तकालय, नीची बाग, बनारस से प्रकाशित हुआ। माहेश्वरी पुस्तकालय, पटना में इस अनुवाद की एक प्रति उपलब्ध है।[1] पर पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिये रहने के कारण इस सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। कागज का नयापन देखते हुए यह हाल का प्रकाशन ज्ञात होता है।

समाज

रमेशचन्द्र दत्त के 'समाज' नामक उपन्यास का अनुवाद **श्री जनार्दन झा** ने प्रस्तुत किया था, जिसका दूसरा संस्करण १९१७ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, इस कारण इसके प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में कोई सूचना दे पाना कठिन है।

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दुःखी विधवा (सामाजिक उपन्यास). मूललेखक—सर रमेशचन्द्र दत्त, अनुवादक कमलप्रसाद राय शर्म्मा बी० ए०, प्रकाशक वैदिक पुस्तकालय, नीची बाग, बनारस, पृ० सं० २५३।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—समाज, मिस्टर आर० सी०

प्राणनाथ

विवेच्य उपन्यासकार के 'दि लेक ऑफ पाम्स' नामक उपन्यास का श्रीयुत **जी० पी० श्रीवास्तव** कृत 'प्राणनाथ' शीर्षक अनुवाद सर्वप्रथम १९२४ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] यह उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हुआ। जून १९२४ से लेकर जून १९२८ ई० के बीच इसके तीन संस्करण (प्रत्येक संस्करण दो दो हजार का) प्रकाशित हो गये। इसका चौथा संस्करण १९४९ ई० में प्रकाशित हुआ, जो इस बात का प्रमाण है कि इस उपन्यास की भी लोकप्रियता ज्यादा दिनों तक नहीं बनी रह सकी।

विवेच्य अनुवाद के 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि यह मूल उपन्यास का अविकल अनुवाद न होकर स्वतन्त्र अनुवाद है। सर्वप्रथम यह १९१२ ई० में 'स्त्री दर्पण' नामक पत्र में प्रकाशित होना आरम्भ हुआ था और लगभग दो वर्षों में समाप्त हुआ।[2] इस अनुवाद का प्रथम संस्करण चाँद कार्यालय से प्रकाशित हुआ था।

सुधा

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से ज्ञात होता है कि १९२५ ई० में रमेश चन्द्र दत्त के किसी उपन्यास का **श्री जीवन शंकर याज्ञिक और केदारनाथ भट्ट** कृत अनुवाद 'सुधा' शीर्षक से इंडिया प्रेस लिमिटेड, प्रयाग से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सुरेन्द्रमोहन भट्टाचार्य

प्रतिमा

सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य के **'छिन्नमस्ता'** नामक उपन्यास का **श्री शिवनारायण द्विवेदी** कृत 'प्रतिमा' शीर्षक अनुवाद सर्वप्रथम १९१५ ई० में प्रकाशित हुआ।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है, पर "लेखक की दो बात" के नीचे "जनवरी १९१५ ई०" लिखा हुआ है। *'दो बात' से ज्ञात होता है कि "प्रस्तुत पुस्तक*

दत्त लिखित, बँगला उपन्सास का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक श्री जनार्दन झा, प्रकाशक इंडियन प्रेस, प्रयाग, द्वितीय संस्करण, पृ० सं० २४१।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्राणनाथ, अँगरेजी और बँगला के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीरमेशचन्द्र दत्त आई० सी० एस० के मशहूर अँगरेजी उपन्यास दि लेक ऑफ पाम्स का स्वतन्त्र अनुवाद, श्रीयुत् जी० पी० श्रीवास्तव, प्रकाशक भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, चतुर्थ संस्करण १९४९, पहला संस्करण २०००, जून १९२४, दूसरा संस्करण २०००, दिसम्बर १९२५, तीसरा संस्करण २०००, जून १९२८, चौथा संस्करण २०००, जनवरी १९४९।

२. प्राणनाथ, रमेशचन्द्रदत्त के 'दि लेक ऑफ पाम्स' का अनुवाद, अनुवादक श्री जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, चतुर्थ संस्करण, १९४९, प्रथम संस्करण की भूमिका।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रतिमा (उपन्यास), अनुवादक शिवनारायण द्विवेदी, प्रकाशक मक्खन लाल अग्रवाल, नागरी प्रचारक कार्यालय, देहली, प्रथम बार १०००, पृ० सं० ३४५।

श्री सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य के "छिन्नमस्ता" नामक उपन्यास का परिवर्तित और परिवर्द्धित अनुवाद है।"[1]

'छिन्नमस्ता' का कृष्णलाल वर्मा कृत 'अपूर्व आत्मत्याग' शीर्षक एक अन्य अनुवाद ग्रन्थ भंडार, माँटूंगा, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यास का नाम दिया हुआ है न प्रकाशन काल की सूचना। पर 'प्रतिमा' से उसकी तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह भी 'छिन्नमस्ता' का ही अनुवाद है। अन्तर इतना ही है कि जहाँ 'प्रतिमा' स्वतन्त्र अनुवाद है, वहाँ 'अपूर्व आत्मत्याग' मूल के अधिक निकट है।

मिलन मन्दिर

सन् १९१७ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'मिलन मन्दिर' नामक उपन्यास का **विश्वभरनाथ शर्मा** कृत अनुवाद भीष्म एंड ब्रदर्स, कानपुर से बाबू नारायण प्रसाद अरोड़ा द्वारा प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची तथा सरस्वती (अप्रैल १९१७) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद की पुस्तक समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं।[3] इस उपन्यास में घर की फूट, पारस्परिक विरोध, कुसंगति आदि का कुपरिणाम तथा विपत्तिकाल में सज्जनों के धैर्य का चित्रण किया गया है।[4]

'मिलन मन्दिर' का एक अन्य अनुवाद १९२८ ई० में एस० बी० सिंह एंड को०, काशी पुस्तक भंडार, बनारस से प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद का द्वितीय संस्करण १९३३ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[5] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर अनुवादक का नाम नहीं दिया हुआ है, पर 'पुस्तक-परिचय' के नीचे **सूर्यबली सिंह** मुद्रित है। **सम्भवतः सूर्यबली सिंह** ही इस उपन्यास के अनुवादक हैं। यह मूल उपन्यास का अविकल अनुवाद है, जबकि इससे पहले वाला अनुवाद स्वतन्त्र अनुवाद था।

पुस्तक-परिचय से ज्ञात होता है कि उस समय तक बँगला में इस उपन्यास के अठारह संस्करण हो चुके थे। हिन्दी में यह उपन्यास बँगला जितना तो नहीं, पर काफी लोकप्रिय हुआ था, यह इसके संस्करणों की संख्या देखकर अनुमान होता है। सुरेन्द्र बाबू के एक उपन्यास 'कनक प्रतिमा' के हिन्दी अनुवाद के 'वक्तव्य' से भी इनके उपन्यासों की,

---

१. उपरिवत्, लेखक की दो बात।
२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।
३. सरस्वती, भाग १८, सं० अप्रील १९१७, पुस्तक समीक्षा (मिलन मन्दिर)।
४. उपरिवत्।
५. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मिलन मन्दिर (गार्हस्थ्य जीवन की समस्याओं को हल करने वाला, सामाजिक स्त्रियोपयोगी अनूठा उपन्यास) सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य की बँगला पुस्तक का अनुवाद, प्रकाशक एस० बी० सिंह एंड को, काशी पुस्तक भंडार, बनारस सिटी, प्रथम बार २०००, सं० १९८५, द्वितीय बार २०००, सं० १९९०, पृ० सं० ३४०,

विशेषकर 'मिलन मन्दिर', की लोकप्रियता का पता चलता है :[१]

"पंडित सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य वँगला के एक बड़े नामी गरामी उपन्यास लेखक हैं। हिन्दी में आपके 'मिलन मंदिर' का अनुवाद बहुत ही चाव से पढ़ा जाता है। अभी तक आपकी और कोई पुस्तक हिन्दी में नहीं अनुवादित हुई है। कितने ही पाठकों के अनुरोध से हमने सुरेन्द्र बाबू के और उपन्यासों के अनुरोध प्रकाशित करने का विचार किया है।"

प्रेत तर्पण

विवेच्य उपन्यासकार के 'प्रेत तर्पण' नामक उपन्यास का **श्रीकृष्ण हसरत** कृत अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति है, पर उसका मुखपृष्ठ गायब है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

अन्य फुटकल अनूदित उपन्यास

पुलिस वृत्तान्त माला

सन् १८९० ई० में **रामकृष्ण वर्मा** द्वारा अँगरेजी से अनूदित 'पुलिस वृत्तान्तमाला' नामक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से मुद्रित हुआ।[२] इस उपन्यास में इस्ट इंडिया कम्पनी के कुशासन, नीलहे साहबों और स्थानीय जमींदारों के संघर्षों तथा पुलिस कर्मचारियों के अत्याचार और रिश्वतखोरी का वर्णन किया गया है।

विरजा

सन् १८९१ ई० में श्री **श्री राधाचरण गोस्वामी** द्वारा वँगला से अनूदित 'विरजा' नामक उपन्यास भारतेन्दु मासिक पुस्तक ५, अंक ७ से ११ तक में (जुलाई दिसम्बर १८९१ ई०) प्रकाशित हुआ, जो इसी वर्ष भारत जीवन प्रेस, काशी से पुस्तक रूप में भी मुद्रित हुआ।[३]

---

१. स्वर्ण प्रतिमा, मू० ले० सुरेन्द्रमोहन भट्टाचार्य, अ० रामचन्द्र वर्मा, भारत पुस्तक भंडार, कलकत्ता, सं० १९७७, वक्तव्य।

२. प्राप्ति स्थान—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पुलिस वृत्तान्तमाला, जिसमें पचास वर्ष पूर्व के पुलिस के अत्याचारों और चालाकियों का वर्णन है, और जिसे बाबू रामकृष्ण वर्मा, 'भारत जीवन' सम्पादक ने सर्वसाधारण के जानने के लिए अँगरेजी भाषा से हिन्दी भाषा में उल्था किया। काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ, सन् १८९० ई०, प्रथम बार १०००।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विरजा (उपन्यास), श्रीराधाचरण गोस्वामी द्वारा वंगभाषा से अनुवादित, (भारतेन्दु विविध विषय विभूषित मासिक पत्र, पुस्तक ५, अंक ७, ८, ९, १० ११, १२ (तारीख १ जुलाई, अगस्त, सितम्बर, आक्टोबर नोवम्बर, दिसम्बर सन् १८९१-ई०), काशी, भारत जीवन यंत्रालय, बाबू राम कृष्ण वर्मा, अधिपति, सन् १८९१ ई०, प्रथम बार १०००, मूल्य ।।), पृ० सं० ४३।

स्वर्ण बाई

सन् १८९१ ई० में ही **राधिकानाथ वंद्योपाध्याय** द्वारा वँगला से अनूदित 'स्वर्ण बाई' नामक उपन्यास धर्मामृत प्रेस, वनारस से प्रकाशित हुआ।[1]

सुखसर्वरी

सन् १८९१ ई० में **किशोरी लाल गोस्वामी** ने "वंगभाषा के आश्रय से" 'सुख-सर्वरी' नामक उपन्यास की रचना की जो सं० १९४९ वि० (१८९२ ई०) में भारत जीवन यंत्रालय (काशी) से प्रकाशित हुआ।[2]

स्वर्णलता

सन् १८९३ ई० में **राधाकृष्ण दास** द्वारा वँगला से अनूदित 'स्वर्णलता' नामक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से मुद्रित हुआ। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके आवरण तथा मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्वन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। 'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस' में इस उपन्यास का मुद्रण काल १८९२ ई० दिया हुआ है।[3] 'स्वर्णलता' के 'उपक्रम' से ज्ञात होता है कि इस उपन्यास का अनुवाद भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रेरणा से हुआ था। 'स्वर्णलता' सर्वप्रथम भारतेन्दु सम्पादित 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में प्रकाशित होना शुरू हुआ था, किन्तु उनकी मृत्यु के कारण 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' अस्त हो गयी और यह उपन्यास अधूरा ही प्रकाशित होकर रह गया। वाद में यह उपन्यास पं० प्रताप नारायण मिश्र द्वारा सम्पादित 'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित होना शुरू हुआ, पर इसमें भी पूरा नहीं छप सका। १८९३ ई० में वावू रामकृष्ण वर्मा के अनुरोध से अनुवाद पूरा हुआ। यह एक स्वतंत्र अनुवाद है।[४]

'स्वर्णलता' का तीसरा संस्करण १९२२ ई० में भारत जीवन प्रेस, वनारस में मुद्रित और मोहन लाल वर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ।[५]

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्वर्ण वाई (उपन्यास), जिसे हिन्दी पाठकों के चित्तविनोदार्थ चौवीस परगनान्तर्गत इछापुर निवासी श्री राधिकानाथ वन्द्योपाध्याय ने वंग भाषा से शुद्ध आर्यभाषा में अनुवाद किया, वनारस सिटी, धर्मामृत प्रेस १८९१।

२. सुखसर्वरी, प्रथम संस्करण १८९२ ई०, भारत जीवन यंत्रालय, काशी, मुखपृष्ठ, प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।

३. स्वर्णलता, ए नॉवेल ट्रांसलेटेड फ्रॉम दि वंगाली, वाई राधाकृष्ण दास, पीपी २, ३३६, वनारस १८९३—कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस।

४. स्वर्णलता, अ० राधाकृष्ण दास, प्र० भारतजीवन प्रेस, काशी, उपक्रम (प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी)

५. प्रा० स्था०—प० वि० पु० पटना।

चतुर चंचला

प्रायः सभी प्रमुख आलोचकों के मातानुसार, जिनमें रामचन्द्र शुक्ल,[१] डॉ० माता प्रसाद गुप्त,[२] ब्रजरत्न दास[३] और शिवनारायण श्रीवास्तव[४] विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, 'चतुर चंचला' **गहमरी जी** का प्रथम उपन्यास है। आचार्य शुक्ल और शिवनारायण श्रीवास्तव इसे क्रमशः अनुवाद और भावानुवाद मानते हैं, पर डॉ० गुप्त और ब्रजरत्न दास इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में करते हैं। उपर्युक्त सभी आलोचक इसके प्रकाशन काल (सं० १९५० वि० अथवा सन् १८९३ ई०) के सम्बन्ध में एकमत हैं। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को उपलब्ध करने में असमर्थ रहा है।

नये बाबू

सन् १८९४ ई० में प्रकाशित **गहमरी जी** के कई, अनूदित उपन्यासों का पता चलता है। इस वर्ष के सितम्बर माह में **गहमरी जी** का 'नये बाबू' नामक उपन्यास जबलपुर के यूनियन प्रेस से प्रकाशित हुआ।[५] प्रथम संस्करण में इस उपन्यास की १००० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं। मुखपृष्ठ पर इसे "बाबू गोपाल राम गहमर निवासी रचित" बताया है और पुस्तक में कोई ऐसी सूचना नहीं दी हुई है, जिससे पता चले कि यह अनुवाद है। पर रामचन्द्र शुक्ल[६] ने इसे अनुवाद और शिवनारायण श्रीवास्तव[७] ने इसे भावानुवाद बताया है। किन्तु, इन्होंने यह नहीं बताया है कि यह किस उपन्यास का अनुवाद या भावानुवाद है। इस उपन्यास के अधिकतर पात्रों के नाम बंगाली हैं, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि यह किसी बँगला उपन्यास का अनुवाद होगा, पर लेखक के उपदेशों तथा पाठकों को सम्बोधित कर कही गयी बातों को पढ़ने से प्रतीत होता है कि यह अविकल अनुवाद न होकर भावानुवाद अथवा किसी बँगला उपन्यास के आधार पर लिखित स्वतंत्र अनुवाद है।

उथेलो

सन् १८९४ ई० में गदाधर सिंह द्वारा बँगला से अनूदित 'उथेलो' नामक कथा-पुस्तक, जिसे पुस्तक के मुखपृष्ठ पर 'एक यूनान देश का उपन्यास' कहा गया है, भारत जीवन प्रेस, काशी से मुद्रित और स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[८] जान पड़ता है,

---

१. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ४६७।
२. हि० पु० सा०, पृ० २८।
३. ब्रजरत्नदास, हिन्दी उपन्यास साहित्य (६) पृ० १६१।
४. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास (१०) पृ० ४८।
५. 'नये बाबू' के प्रथम संस्करण के मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।
६. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ४६७।
७. हिन्दी उपन्यास, पृ० ४८।
८. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उथेलो, एक युनान देश का उपन्यास, जिसको गदाधर सिंह ………… इटवा ने वंग भाषा से शुद्ध हिन्दी भाषा में

शेक्सपीयर कि 'ओथेलो' नामक नाटक के आधार पर बँगला में किसी ने एक गद्यकथा की रचना की होगी, जिसका हिन्दी अनुवाद गदाधर सिंह ने प्रस्तुत किया।

अमला वृत्तान्तमाला अथवा समरे दियानत

१८९४ ई० में ही **रामकृष्ण वर्मा** द्वारा उर्दू से अनूदित 'अमला वृत्तान्तमाला अथवा समरे दियानत, नामक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से मुद्रित-प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास के मूल लेखक **अजीजुलद्दीन अहमद साहब** थे, जिन्होंने उर्दू और अँगरेजी में इस उपन्यास को लिखा था। भूमिका से ज्ञात होता है कि उर्दू में इस पुस्तक का नाम 'समरे दियानत' और अँगरेजी में 'फ्रूट्स ऑफ अनिस्टी' था। रामकृष्ण वर्मा ने उर्दू उपन्यास, 'समरे दियानत' का ही नागरी लिप्यतन्र किया। इस कारण इस उपन्यास की भाषा उर्दू ही रह गयी है।

इस उपन्यास में हिन्दुस्तानी सरकारी अमलों की रिश्वतखोरी और बेईमानी का वर्णन करते हुए दियानत हुसैन नामक मुसलमान पदाधिकारी की ईमानदारी और कर्त्तव्य-निष्ठा का वर्णन किया गया है।

संसार दर्पण

काजी **अजीजुलद्दीन अहमद साहब** के किसी अन्य उपन्यास का **रामकृष्ण वर्मा** कृत 'संसार दर्पण' शीर्षक अनुवाद भारत जीवन प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। भूमिका से भी, अन्य सूचनाएँ तो मिलती हैं, पर प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता। इस उपन्यास में अँगरेजी शिक्षा और फैशन के दोष दिखाये गये हैं।

श्री शिवनारायण श्रीवास्तव के अनुसार 'संसार दर्पण' १८९५ ई० में प्रकाशित हुआ था।[2] 'कैटेलग ऑफ द इंडिया ऑफिस' लाइब्रेरी आफिस' से भी इस कथन की पुष्टि होती है।[3]

अनुवाद करके प्रकाशित किया। काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ, १८९४ ई०, पहिली बार १००० पुस्तकें। मूल्य =)

१. प्रा० स्थान—चै० पु० पटना। आवरण पृष्ठ की प्रतिलिपि—अमला वृत्तान्तमाला अथवा समरे दियानत, जिसमें यह भली प्रकार दिखालाया गया है कि अदालत के अमले कैसी २ कार्रवाइयाँ करते हैं और जिससे यह साबित किया गया है कि दियानत और नेकनीमती का नतीजा सदा अच्छा रहता है। इस ग्रंथ को काजी अजीजुलद्दीन अहमद साहब डिप्टी कलेक्टर गढ़वाल (हाल जौनपुर) व मेम्बर ऐशियाटिक सुसाइटी की आज्ञा से उनके अँगरेजी और उर्दू ग्रंथ से अनुवाद करके भारत जीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्मा ने प्रकाश किया, काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ, संवत् १९५१, प्रथम बार १०००।

२. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास, पृ० ५३।

३. 'कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस' (२) से प्राप्त सूचना : संसार दर्पण ए नॉवेल ऑन दि इविल्स ऑफ एडॉप्टिंग इंगलिश फैशन्स, ट्रासलेटेड फ्रॉम ए हिन्दुस्तानी वर्क बाइ अजीज उल दीन अहमद, पीपी ५, ४६३, बनारस १८९५।

महाश्वेता

सन् १८९५ ई० में **श्री लक्ष्मीनाथ शर्मा** द्वारा बाणभट्ट की 'कादम्बरी' के आधार पर रचित **महाश्वेता** (प्रथम भाग) नामक कथापुस्तक बिहार वन्धु छापाखाना, बाँकीपुर से प्रकाशित हुई।[1]

वीरेन्द्र

सन् १८९६ ई० में **पुरोहित गोपीनाथ** ने 'वीरेन्द्र' नामक उपन्यास की रचना किसी अँगरेजी उपन्यास के आधार पर की[2] जो १८९७ ई० में वेंकटेश्वर यंत्रालय, बम्बई से मुद्रित हुआ।[3]

चन्द्रकला

आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची में **ऋषीश्वरनाथ भट्ट** द्वारा लिखित, **शिव शंकर भट्ट** द्वारा अनूदित और भार्गव बुक कम्पनी, जबलपुर द्वारा १८९७ ई० में प्रकाशित **चन्द्रकला** नामक उपन्यास की सूचना दी हुई है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने भी इसकी सूचना 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में दी है।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मधुमालती : कुलटा

श्री शिवनारायण श्रीवास्तव के अनुसार १८९७ ई० में **कार्त्तिक प्रसाद खत्री** द्वारा अनूदित दो उपन्यास '**मधुमालती**' और '**कुलटा**' प्रकाशित हुए थे।[5] 'मधुमालती' का दूसरा संस्करण भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[6] आवरणपृष्ठ पर इसके संस्करण का प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है।

दलित कुसुम

सन् १८९८ ई० में ही **कार्त्तिक प्रसाद वर्म्मा** द्वारा बँगला से अनूदित **दलित कुसुम**

---

१. प्र० स्थान—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—महाश्वेता, प्रथम भाग, जिसे हिन्दी भाषा में श्री लक्ष्मी नाथ शर्म्मा ने लिखा, बाँकीपुर, बिहार वन्धु छापाखाना, १८९५ पहली वार ५००, मूल्य ≡)

२. पुस्तक की भूमिका में रचनाकाल सम्बन्धी सूचना निम्नलिखित रूप में दी गयी है—"यह एक छोटा सा उपन्यास कि जो अँगरेजी के सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक के एक विख्यात उपन्यासान्तर्गत कहानी के आधार से रचा गया है, पाठकों के विनोदार्थ अर्पण किया जाता है, आबू ७-१०-९६।

३. प्रा० स्थान—आ० भा पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीरेन्द्र अर्थात् वीर शिरोमणि, क्षत्रिय युवक वीरेन्द्र सिंह सम्बन्धी एक दूरदेशीय ऐतिहासिक घटना का मनोहर उपन्यास, पुरोहित गोपीनाथ जयपुर राजवकील (आबू) ने हिन्दीभाषा प्रेमियों के विनोदार्थ रचना किया जिसका खेमराज श्री कृष्ण दास ने स्वकीय "वेंकटेश्वर" यंत्रालय में छापकर प्रसिद्ध किया सं० १९५४ पृ० सं० २१।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६४२।

५. हिन्दी उपन्यास (१०), पृ० ५२।

६. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मधुमालती, श्री कार्त्तिकप्रसाद द्वारा अनुवादित, काशी, भारत जीवन प्रेस में बाबू श्रीकृष्ण वर्म्मा द्वारा मुद्रित हुई। दूसरी वार

नामक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[1]

सास पतोहू

सं० १९५५ वि० में (ई० सन् १८९८ के अन्त या १८९९ के जनवरी माह में)[2] **गहमरी जी** का किसी बँगला उपन्यास पर आधारित 'सास पतोहू' श्री वेंकटेश्वर मुद्रण यंत्रालय बम्बई से प्रकाशित हुआ।[3] 'मुखबन्ध' में गहमरी जी ने बताया है कि "यह पुस्तक एक बँगाली उपन्यास के आश्रय से लिखी गयी है।[4] इससे इसका मौलिक न होना सिद्ध है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अतिरिक्त डॉ० माताप्रसाद गुप्त, श्री ब्रजरत्नदास, तथा श्री शिवनारायण श्रीवास्तव ने इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है। डॉ० गुप्त तथा श्री शिवनारायण श्रीवास्तव ने इसका प्रकाशनकाल १८९९ ई० दिया है।

रमा और माधव

सन् १८९९ ई० में **श्री स्वरूप चन्द्र जैन** ने मराठी उपन्यासकार **श्री काशीनाथ रघुनाथ मित्र** के **'रामा अणि'** माधव नामक उपन्यास का 'रमा और माधव' शीर्षक अनुवाद प्रस्तुत किया, जो १९०३ ई० में लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[5] भूमिका के अन्त में मुद्रित "१ मई सन् १८९९ तिथि" से इसके रचना काल का पता चलता है। इस उपन्यास में वृद्ध विवाह के कुपरिणाम चित्रित किये गये हैं।

मनहरण

सन् १८९९ ई० में **सूर्य नारायण विद्यार्थी** द्वारा अँगरेजी से अनूदित मनहरण शीर्षक उपन्यास लक्ष्मी वेंकटेश्वर यंत्रालय, बम्बई से मुद्रित हुआ।[6]यह एक स्वतंत्र अनुवाद या रूपान्तर है।

१०००, पृ० सं० २५२।

१. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दलित कुसुम, उपन्यास, जिसे भारत जीवन के सहकारी सम्पादक बाबू कात्तिक वर्म्मा ने वंगभाषा से हिन्दी में अनुवाद किया काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ, सन् १८९८ ई०, पृ० सं० १३७।

२. अधिक सम्भव है कि यह उपन्यास १८९९ ई० के जनवरी माह में प्रकाशित हुआ हो, क्योंकि हिन्दी प्रदीप, जिल्द २२, सं० २ (फरवरी १८९९ ई०) में इस उपन्यास की समीक्षा निकली थी। प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय (गायघाट, पटना सिटी)।

३. सास पतोहू प्र० खेमराज श्री कृष्ण दास, श्री वेंकटेश्वर मुद्रण यंत्रालय बम्बई, शके १८२०, सं० १९५५ के मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना। प्रा० स्थान—आर्यभाषा पु० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

४. उपरिवत्।

५. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रमा और माधव (उपन्यास) बाबू काशीनाथ रघुनाथ मित्र (मासिक मनोरंजन के सम्पादक) इन्हीं की आज्ञा से मुरादाबाद निवासी स्वरूप चंद्र जैन ने महाराष्ट्र भाषा से उल्था किया जिसे गंगा विष्णु श्री कृष्णदास ने अपने "लक्ष्मी वेंकटेश्वर" छापेखाने में छापकर प्रसिद्ध किया, संवत् १९६०, सन् १९०३ कल्याण, मुम्बई, पृ० सं० १००।

६. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मनहरण उपन्यास (एक इंग्लिश

कपटी मित्र

सन् १९०० ई० में गुजराती के जीवे जान वो दोस्त नामक उपन्यास का **महता लज्जाराम शर्मा (नागर)** कृत 'कपटी मित्र' शीर्षक अनुवाद मनीषी समर्थदान द्वारा राजस्थान यंत्रालय, अजमेर से प्रकाशित किया गया।[1] इस उपन्यास में मित्रता का आदर्श स्वरूप दिखाया गया है। अनुवाद की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह वार्ता गुजराती भाषा के मासिक पत्र "मधुर वचन" में 'जीवे जान वो दोस्त' नाम से छपी थी।"[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ या भूमिका से मूल उपन्यासकार का नाम नहीं ज्ञात हो पाता।

भाग्य का फेर

सन् १९०० ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व, **पुरुषोत्तम दास टंडन** द्वारा अनूदित 'भाग्य का फेर' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ हिन्दी प्रदीप, मई-अगस्त १९०१ ई० में प्रकाशित समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं।[3]

प्रणयी माधव

सन् १९०१ ई० में **वासुदेव मोरेश्वर पोद्दार** कृत एक मराठी गद्यकथा का **गंगा प्रसाद अग्निहोत्री** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'प्रणयी माधव' शीर्षक अनुवाद लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, वम्वई से प्रकाशित हुआ।[4] मूल मराठी कथा भी भवभूति के 'मालती माधव' नामक नाटक पर आधारित है। विवेच्य पुस्तक की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद १८९४ ई० के ईषत्पश्चात् ही पूरा हो चुका था, पर कतिपय कठिनाइयों के कारण, जिसमें प्रकाशक का अभाव भी एक था, यह १९०१ ई० के पूर्व प्रकाशित न हो सका।[5]

भूतों का मकान

सन् १९०१ ई० में **बाबू हरिकृष्ण जौहर** और **रामकृष्ण वर्मा** द्वारा **श्री वैष्णव चरण वसाक** जी के किसी वँगला उपन्यास के आधार पर लिखित 'भूतों का मकान' शीर्षक

नाविल का अनुवाद) अवध मण्डलान्तर्गत—लखीमपुरस्थ श्री पंडित हरिप्रसाद दीक्षित वकीलात्मज श्री सूर्य नारायण विद्यार्थी अनुवादित······जिसको गंगा विष्णु श्री कृष्णदास ने अपने "लक्ष्मी वेंकटेश्वर" यंत्रालय में मुद्रित किया। संवत् १९५६, कल्याण. मुम्बई, पृ० सं० ५३।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कपटी मित्र, जिसको महता लज्जा राम शर्मा (नागर) बूँदी (राजपूताना) निवासी ने गुजराती से हिन्दी भाषा में अनुवाद किया जो सबलोगों के उपकार के लिए मनीषी समर्थनदान यंत्राधीश, राजस्थान यंत्रालय अजमेर ने छाप के प्रकाशित किया, अजमेर राजस्थान यंत्रालय में छपा, १९०० ई०। प्रथम वार १०००, पृ० सं० ५२।

२. उपरिवत्, भूमिका।

३. हिन्दी प्रदीप, जिल्द २४, सं० ५-६-७, मई-जुन-जुलाई १९०१ ई०।

४. आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से कोई सूचना नही प्राप्त होती। 'भूमिका' के अंत में ३०-६-१९०१ मुद्रित होने से इसके रचना-काल का पता चलता है। अन्य सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

५. उपरिवत्, भूमिका।

उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ ।[1] पुस्तक की 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि इसे बाबू हरिकृष्ण जौहर ने लिखना शुरू किया था, पर वे इसे किसी कारण वश पूरा न कर सके । शेष ग्रन्थ को बाबू रामकृष्ण वर्मा ने पूरा किया ।[2]

श्री या अवश्य माननीय

सन् १९०२ ई० में अँगरेजी उपन्यासकर्त्ता **आर० एच हेगर्ड** के शी नामक उपन्यास का **बाबू कन्हैया लाल अग्रवाल** द्वारा प्रस्तुत 'श्री या अवश्य माननीय' शीर्षक अनुवाद दो भागों में, स्वयं लेखक द्वारा इलाहाबाद से प्रकाशित किया गया ।[3] हिन्दी पाठकों और तत्कालीन पत्रों ने इस अनुवाद की काफी सराहना की थी । 'पायनियर' (१८ अक्टूबर १९०२), 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' (५ सितम्बर १९०२), 'अवध समाचार' (७ अक्टूबर १९०२), 'भारत जीवन' (६ अक्टूबर १९०२) तथा 'उर्दू अखबार ए आम' (१ नवम्बर १९०२) में इस पुस्तक के प्रथम भाग की प्रशंसात्मक समीक्षाएँ प्रकाशित हुई थीं ।[4] इससे यह सिद्ध है कि यह उपन्यास तत्कालीन पाठकों का ध्यान आकृष्ट करने में समर्थ हुआ था ।

भूमिका से ज्ञात होता है कि यह अविकल अनुवाद है ।[5]

विचित्र स्त्री चरित्र

सन १९०३ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व, **मेहता लज्जा राम शर्मा** द्वारा अँगरेजी से अनूदित 'विचित्र स्त्री चरित्र' नामक उपन्यास वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई मे प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची तथा लज्जाराम शर्मा कृत 'हिन्दूगृहस्थ' (प्रकाशन काल १९०३) के अन्तिम पृष्ठ पर मुद्रित विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं । पुस्तक सूची में इस अनुवाद का प्रकाशन काल १९०९ ई० दिया हुआ है, जो या तो अशुद्ध है,

---

१. प्रा० स्थान—चै० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भूतों का मकान अथवा एक आश्चर्यमय प्रेम कथा, जिसे भारत जीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा ने बंगभाषा के ग्रंथ का आशय लेकर स्वच्छ हिन्दी भाषा में प्रकाश किया, "काशी" भारत जीवन प्रेस, में छापा गया, सन् १९०१ ई०, प्रथमबार १००० ।

२. उपरिवत्, भूमिका ।

३. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्री या अवश्य माननीय अर्थात् इंगलिस्तान के प्रसिद्ध उपन्यास रचयिता आर० एच० हेगर्ड साहिब का अछूता और अद्भुत उपन्यास "शी" जिसको श्रीमान् बाबू कन्हैया लाल अग्रवाल, ट्रांसलेटर सदर बोर्ड माल संयुक्त प्रदेश इलाहाबाद ने हिन्दी भाषा में अनुवाद करके प्रकाश किया । "इस सृष्टि आकाश समुन्दर में बहु चित्र विचित्र पदार्थ अहैं ।" पहिला भाग सं० १९०२, (पृ० सं० १९२ दूसरे भा० की प्रतिलिपि पहले भाग के समान । पृ० सं० २३०)

४. श्री या अवश्य माननीय, दूसरा भाग, पुस्तक के अन्त में छपी सम्मतियाँ ।

५. उपरिवत्, भाग १, भूमिका ।

अथवा उसके किसी अन्य संस्करण का प्रकाशन काल है। 'हिन्दू गृहस्थ' के विज्ञापन के अनुसार "यह एक सत्य घटनापूर्ण विलायती उपन्यास का भाषानुवाद है। विलायत के राजद्रोही लोग क्योंकर अपने प्रपंच में लोगों को फँसाकर पुलिस को छकाते और बड़े राजपुरुषों को चकित करते हैं, त्रियाचरित्र किस तरह बड़े बड़े बुद्धिमानों को मोम बनाकर मनमाने मार्ग पर चलाता है, विलायती डिटेक्टिव पुलिस किस प्रकार से काम कर दुष्टों और दुराचारियों का पता लगाती है, इंगलैंड के समाज की स्थिति कैसी है, बस इन बातों का बहुत ही मनोरंजन भाषा में वर्णन किया गया है।[1]

सत्यवती या हीरे की अँगूठी

सन् १९०३ ई० में **शेक्सपीयर** *के* **'सिंबेलिन'** *नामक नाटक के आधार पर* **श्री जैनेन्द्र किशोर** द्वारा लिखित 'सत्यवती या हीरे की अँगूठी' शीर्षक गद्यकथा ब्रह्म प्रकाश यंत्रालय, बिठूर, कानपुर से प्रकाशित हुई।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर इसे "एक अँगरेजी नाविल का छायानुवाद" और भूमिका में "इंगलैंड के प्रसिद्ध कवि शेक्सपीयर की विचित्र मनमोहिनी लेखनी का चित्र" कहा गया है। पुस्तक पढ़ने पर स्पष्ट हो जाता है कि यह कथा शेक्सपीयर के **सिम्बेलीन** नामक नाटक का कथारूप में रूपान्तरण है।

बदरुन्निसा की मुसीबत

सन् १९०३ ई० में ही **मौलवी अब्दुल हलीम साहब शरर** कृत 'बदरुन्निसा की मुसीबत' नामक उर्दू उपन्यास का **मुंशी जगन्नाथ प्रसाद** हकीम द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3]

स्वर्णबाई

इसी वर्ष बँगला उपन्यासकार **नवकुमार दत्त** के किसी उपन्यास का **बाबू रामकृष्ण वर्मा** कृत 'स्वर्ण बाई' शीर्षक अनुवाद भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4]

---

१. लज्जाराम शर्मा, हिन्दू गृहस्थ, प्रकाशन-काल १९०३, विज्ञापन।

२. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सत्यवती वा हीरे की अँगूठी, साँच को आँच क्या? एक अँगरेजी नाविल का छायानुवाद, आरा निवासी जैनेन्द्र किशोर, अनेक ग्रंथों के रचयिता आरा नागरी प्रचारणी सभा अधिकृत पुस्तकालय के कार्य सम्पादक द्वारा, अनुवादित और विरचित पं० गुरुप्रसाद शुक्ल के स्वकीय ब्रह्म प्रकाश यंत्रालय, बिठूर, कानपुर से मुद्रित और प्रकाशित। संवत् १९५९, सन् १९०३, प्रथम वार २०००, पृ० सं० ३७।

३. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बदरुन्निसा की मुसीबत, उपन्यास, मौलवी अब्दुल हलीम साहब शरर के बदरुन्निसा की मुसीबत नामक उर्दू उपन्यास का अविकल अनुवाद, बुर्हानपुर नवासी मुंशी जगन्नाथ प्रसाद हकीम लिखित, भारत जीवन प्रेस के स्वामी बाबू रामकृष्ण वर्मा द्वारा प्रकाशित, काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित, १९०३ ई०, प्रथम वार १०००, प्र० सं० ६६।

४. प्रा० स्थान—वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्वर्णबाई (एक शिक्षायुक्त उपन्यास) जिसको बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारत जीवन, काशी ने।

माया

सन् १९०४ ई० में **पं० सखाराम भंडारी** द्वारा अनूदित 'माया' नामक उपन्यास हितचिन्तक प्रेस, काशी में मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[1] मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास अथवा उसके लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है।

गिरिजा

सन् १९०४ ई० में **पं० गोपीदत्त** द्वारा अनूदित 'गिरिजा' नामक उपन्यास काशी से **बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा** द्वारा प्रकाशित किया गया।[2] मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यासकार का नाम दिया हुआ है न मूल उपन्यास का; न यही बताया गया है कि यह किस भाषा के उपन्यास का अनुवाद है। उपन्यास के पात्रों के नाम से यह किसी बँगला उपन्यास का अनुवाद ज्ञात होता है।

वीर बालिका

सन् १९०५ ई० में **वामनाचार्य गिरि** द्वारा बँगला से अनूदित 'वीर बालिका' नामक उपन्यास, उपन्यास लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास अथवा उसके लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है। 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह किसी बँगला उपन्यास का अनुवाद है।

कथा सरित्सागर

मई १९०५ ई० के पूर्व सोमदेव रचित 'कथा सरित्सागर' के तीन भिन्न भिन्न अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित हो चुके थे। इसका पहला अनुवाद लगभग १८९७ ई० में **पं० कालीचरण** और **पं० क्षमापति वाजपेयी** द्वारा अनूदित होकर नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[4] 'कथासरित्सागर' का दूसरा अनुवाद १९०५ ई० के लगभग भारत जीवन प्रेस, काशी से **श्री रामकृष्ण वर्मा** द्वारा क्रमशः प्रकाशित हो रहा था। 'सरस्वती'

कलकत्ता निवासी बाबू नवकुमार दत्तजी के बंगले ग्रंथ से हिन्दी में अनुवाद किया, काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित, सन् १९०३ ई०, प्रथम बार १०००।

१. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माया, अद्भुत उपन्यास, काशी निवासी पं० सखाराम भण्डारी द्वारा अनुवादित और प्रकाशित, काशी हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित, १९०४, प्रथम बार १०००।

२. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गिरिजा, उपन्यास, मुरादाबाद निवासी पं० गौरीदत्त द्वारा अनुवादित और काशी 'उपन्यास' दर्पण के अध्यक्ष बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्म्मा द्वारा प्रकाशित, प्रथमवार १०००, १९०४।

३. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीर बालिका [एक छोटा सा सुन्दर उपन्यास], मिर्जापुर निवासी विचित्र कवि वामनाचार्य गिरि, सेक्रेटरी "पाखण्ड मतमर्दिनी सभा" द्वारा लिखित, काशी लहरी प्रेस द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, सन् १९०५ ई०।

४. सरस्वती, भाग ६, संख्या ५, मई १९०५ ई० सम्पादकीय।

सम्पादक के शब्दों में "कुछ दिनों से कथा सरित्सागर के एक और अनुवाद की धूम है। यह अनुवाद भी हिन्दी में हो रहा है। बनारस के श्री रामकृष्ण वर्म्मा इस अनुवाद को लिख रहे हैं और हर महीने इस का एक एक भाग निकाल रहे हैं। तीन वर्ष में यह अनुवाद खतम होगा। इस पुस्तक का नाम 'कथासरित्सागर का भाषानुवाद' है।[१] 'सरस्वती' सम्पादक ने इस अनुवाद के नाम तथा इसकी भाषा की कड़ी आलोचना की है।

दशकुमार चरित

'हिन्दी प्रदीप', जिल्द २८, संख्या २, फरवरी १९०६ ई० में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व कलकत्ते के श्री विशुद्धानन्द विद्यालय के संस्कृत अध्यापक **पं० अक्षयवट मिश्र** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ दंडीकृत 'दशकुमार चरित' का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

फूल में काँटा

नवम्बर १९०६ ई० के पूर्व **बाबू रामजी दास वैश्य** द्वारा किसी अँगरेजी पुस्तक के आधार पर लिखित 'फूल में कांटा' शीर्षक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचना 'सरस्वती' (नवम्बर १९०६ ई०) की 'पुस्तक परीक्षा' से प्राप्त की गयी है।[२] समीक्षाकार के शब्दों में "लेखक अभी नवयुवक विद्यार्थी है। आपने अपने रुचिर रूप का फोटो भी पुस्तकारम्भ में दिया है। लाड़ चाव में साहूकारों के लड़के कहाँ तक बिगड़ जाते हैं। नवशिक्षित लोग विलायत जाकर अपने देश के गुणों को खोकर वहाँ से दुर्गुण सीख आते हैं। वहाँ पर वे अपना उद्देश्य भूल जाते हैं और विलायत की भूमि को स्वर्ण समझ ऐश आराम में मस्त होकर नाना प्रकार के बुरे व्यसनों में फँसकर अपना जीवन नष्ट कर देते हैं। यही सब बातें पुस्तक में दिखलायी गयी है।"[३]

याकूती तख्ती वा यमज सहोदरा

सन् १९०६ ई० में **गोस्वामी जी** ने **बाबू दीनेन्द्र कुमार राय** के बँगला उपन्यास 'हमीदा' की छाया पर 'याकूती तख्ती वा यमज सहोदरा' नामक उपन्यास लिखा। मूल उपन्यास वियोगान्त है, पर **गोस्वामी जी** ने अपनी या अपने पाठकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए अपने अनुवाद में इसे संयोगान्त बना डाला है।[४] यह उपन्यास सन् १९०६ ई० में 'उपन्यास मासिक' पत्र के अप्रील और मई के अंकों में प्रकाशित हुआ था।[५]

---

१. सरस्वती, भाग ६, संख्या ५, मई १९०५ ई० सम्पादकीय।

२. सरस्वती भाग ७, सं० ११, नम्वबर १९०६, पुस्तक समीक्षा।

३. उपरिवत्।

४. याकूती तख्ती, १९०८, कृतज्ञता स्वीकार। प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र० स० काशी।

५ सरस्वती, जून १९०८, याकूती तख्ती वा यमज सहोदरा की समीक्षा।

प्रायश्चित्त तथा अपूर्व सम्मिलन

सन् १९०७ ई० में **बाबू चम्पा लाल जौहरी** (सुधाकर कवि) द्वारा प्रस्तुत किया हुआ, **श्री नारायण हेमचन्द्र** जी रचित किसी गुजराती उपन्यास का 'प्रायश्चित्त तथा अपूर्व सम्मिलन' शीर्षक अनुवाद 'राम प्रेस', कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[१] 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि इस उपन्यास में वेश्यागमन के कुपरिणामों का चित्रण किया गया है।[२]

परिणाम

सन् १९०७ ई० में बंगला उपन्यासकार **श्री तारक नाथ विश्वास** के 'परिणाम' नामक उपन्यास का **पं० मुरलीधर शर्मा** कृत अनुवाद, मूल शीर्षक से ही, लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[३] पुस्तक के मुखपृष्ठ को देखने से इसके मौलिक होने का भ्रम होता है। 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद है।

सती उपन्यास

सन् १९०७ ई० में **पं० गयाचरण त्रिपाठी** द्वारा अनूदित 'सती उपन्यास' वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[४] अनुवाद के मुखपृष्ठ पर न तो मूल पुस्तक का नाम दिया हुआ है न मूल उपन्यासकार का, न यहीं सूचना दी हुई है कि यह किस भाषा का अनुवाद है। **डॉ० माताप्रसाद गुप्त** ने अपने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नामक ग्रन्थ में इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है।[५]

कौशल किशोर

सन् १९०९ ई० में **बाबू चुन्नी लाल खत्री** द्वारा प्रस्तुत अँगरेजी के **अर्नेस्ट माल ट्रेवस**' नामक उपन्यास का 'कौशल किशोर' शीर्षक अनुवाद फ्रेंड ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से, दो

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रायश्चित्त तथा अपूर्व सम्मिलन (एक शिक्षाप्रद सामाजिक कहानी), मध्य प्रदेशान्तर्गत खंडवा निवासी श्री बाबू चम्पालाल जौहरी (सुधाकर कवि) द्वारा अनूदित श्रीयुत बाबू रामलाल जी नेमाणी, अध्यक्ष 'राम प्रेस' द्वारा प्रकाशित, कलकत्ता, प्रथमावृत्ति, १९०७, पृ० सं० २४।

२. उपरिवत्, निवेदन।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—परिणाम, उपन्यास, लखनऊ निवासी पंडित मुरलीधर जी शर्मा लिखित और बाबू देवकीनन्दन खत्री, प्रोप्राइटर, लहरी प्रेस द्वारा प्रकाशित, काशी, लहरी प्रेस में मुद्रित, १९०७ ई०, प्रथम बार १०००, पृ० सं० १७६।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सती उपन्यास (एक परमोपदेशक गार्हस्थ्य चरित्र), जिसको, चिरली, कानपुर निवासी पं० गयाचरण त्रिपाठी जी से अनुवाद कराय, खेमराज श्री कृष्ण दास ने बम्बई निज 'श्री वेंकटेश्वर' स्टीम प्रेस में मुद्रितकर प्रगट किया, संवत् ११६४, शके १८२९।

५. हि० पु० सा०, पृ० २७ तथा ४१८।

भागों में प्रकाशित हुआ।[1]

प्राणघातक माला

स्वर्ण कुमारी देवी के 'फूलेर माला' नामक सामाजिक उपन्यास का **कृष्णकान्त मालवीय** कृत 'प्राणघातक माला' शीर्षक अनुवाद १९०९ ई० के पूर्व अभ्युदय प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका था।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर **कृष्णकान्त मालवीय** को 'अनुवादक' न कहकर 'सम्पादक' कहा गया है। इसका कारण कदाचित् यह है कि यह अविकल अनुवाद नहीं है। पुस्तक की 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि 'फूलेर माला' का अँगरेजी अनुवाद इसके पूर्व 'मार्डन रिव्यू' में क्रमशः प्रकाशित हो चुका था। इस अनुवाद में अनुवादक ने मूल उपन्यास की घटनाओं में कुछ हेर फेर करने की स्वतन्त्रता बरती थी। विवेच्य हिन्दी अनुवाद के प्रथम तीन परिच्छेद उक्त अँगरेजी अनुवाद से अनूदित हैं। शेष परिच्छेदों में मूल उपन्यास का आधार ग्रहण किया गया है।[3]

विवेच्य अनुवाद के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचना नहीं दी हुई है। यह सूचना 'नागरी हितैषिणी पत्रिका' (१९०९) के विज्ञापन से प्राप्त की गयी है।[4]

'फूलेर माला' का **रामचन्द्र शर्मा** कृत एक दूसरा अनुवाद **'फूलों का हार'** शीर्षक से १९१८ ई० में हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ के न रहने से पुस्तक सम्बन्धी सूचनाएँ नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची तथा अनुवाद की भूमिका से प्राप्त की गयी हैं।[5]

वसन्तलता

सन् १९०९ ई० में ही **पं० नारायणपति जी तिवारी** द्वारा अनूदित 'वसन्तलता'

---

१. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। पहले भाग का मुखपृष्ठ नहीं है। दूसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—'कौशल किशोर' (दूसरा हिस्सा) अँगरेजी के एक शिक्षापूर्ण और रोचक उपन्यास "अर्नेष्ट माल ट्रैवल" का बाबू चुन्नी लाल खत्री द्वारा हिन्दी अनुवाद और बाबू नन्दलाल वर्मा मैनेजर, फ्रेंड ऐंड कं० मथुरा द्वारा प्रकाशित १९०६, प्रथम बार १०००, पृ० सं० १३०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—साधारण शिक्षा निबंधावली, अंक ६, प्राणघातक माला, बंगला की प्रसिद्ध लेखिका तथा "भारती" पत्रिका की सम्पादिका श्रीमती स्वर्ण कुमारी देवी के "फूलेर माला" का अनुवाद, सम्पादक कृष्णकान्त मालवीय, बद्री प्रसाद पांडेय ने अभ्युदय प्रेस, प्रयाग में छापकर प्रकाशित किया, प्रथम बार १०००, प्रति। पृ० सं० १६२।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. नागरी हितैषिणी पत्रिका (त्रैमासिक) १९०९ ई०, वर्ष ६, संख्या ३ और ४, विज्ञापन (प्राण घातक माला)।

५. फूलों का हार, ले० स्वर्ण कुमारी देवी, अ० रामचन्द्र शर्मा, हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता १९१८, भूमिका।

शीर्षक उपन्यास लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ। पुस्तक में कहीं भी मूल उपन्यास अथवा उसके लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है।[1]

कर्मवीर

१९०९ ई० में ही बँगला उपन्यासकार **श्री यदुनाथ भट्टाचार्य** के किसी उपन्यास का **कृष्णकान्त मालवीय** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'कर्मवीर' शीर्षक अनुवाद अभ्युदय प्रेस, प्रयाग से मुद्रित होकर पं० बद्री प्रसाद पाण्डेय द्वारा प्रकाशित हुआ।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, पर भूमिका के अन्त में "२६ सेप्टेम्बर १९०९" मुद्रित होने से इसके प्रकाशन-काल का पता चल जाता है। इस अनुवाद का द्वितीय संस्करण १९१४ ई० में अभ्युदय प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3] द्वितीय संस्करण की 'भूमिका के अनुसार "प्रायः दो मास में ही इसका प्रथम संस्करण सब बिक गया था।" इससे इस उपन्यास की लोकप्रियता सिद्ध होती है।[4]

जाली कुंजलाल

सन् १९०९ ई० में **श्री गौरचरण गोस्वामी** द्वारा बँगला से अनूदित 'जाली कुंजलाल' नामक उपन्यास श्री कृष्ण चैतन्य पुस्तकालय, श्री वृन्दावन से प्रकाशित हुआ। यह भावानुवाद या छायानुवाद है।[5] अनुवाद के मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यासकार का नाम दिया हुआ है, न मूल उपन्यास का, न यही सूचना दी हुई है कि किस भाषा का अनुवाद है। यह पुस्तक केवल ९ पृष्ठों की है, फिर भी इसे उपन्यास की संज्ञा दी गयी है।

दिया तले अँधेरा

सन् १९०९ ई० में ही **श्री नाथूराम प्रेमी** द्वारा मराठी से अनूदित 'दिया तले अँधेरा' शीर्षक २४ पृष्ठों की 'आख्यायिका' जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, गिरगांव,

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वसन्तलता, उपन्यास, भाषान्तरित, श्री पंडित नारायणपति जी तिवारी लिखित और बाबू देवकी नन्दन खत्री, प्रोप्राइटर, लहरी प्रेस, द्वारा प्रकाशित, प्रिंटेड बाइ पन्ना लाल राय, मैनेजर ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, १९०९, पहिली बार १०००।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कर्मवीर, बंगाल के प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत् यदुनाथ भट्टाचार्य के मनोरंजक और शिक्षाप्रद उपन्यास का अनुवाद, सम्पादक कृष्णकान्त मालवीय, पं० बद्री प्रसाद पांडेय ने अभ्युदय प्रेस, प्रयाग में छापकर प्रकाशित किया. पृ० सं० ६४।

३. प्रा० स्था०—आ० भा पु० काशी।

४. कर्मवीर, द्वितीय संस्करण, भूमिका।

५. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जाली कुंजलाल (उपन्यास) श्री राधाचरण गोस्वामी के पुत्र श्री गौरचरण गोस्वामी द्वारा बंगभाषा से मर्मानुवादित, प्रकाशक श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय, श्री वृन्दावन, प्रथम बार ५००, १९०९ ई०, पृ० सं० ९।

बम्बई से प्रकाशित हुई। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस गद्यकथा को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' (अक्टूबर १९०९) में प्रकाशित पुस्तक-परीक्षा से प्राप्त की गयी हैं।[1]

हेमलता

सन् १९०९ ई० में ही, या उसके कुछ पूर्व, **श्री बैद्यनाथ सिंह** द्वारा बँगला से अनूदित 'हेमलता' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' (मई १९०९) की 'पुस्तक-परीक्षा' से प्राप्त की गयी हैं।[2] समीक्षाकार के अनुसार "अनुवादक ने मूल लेखक का नाम पुस्तक में कहीं नही लिखा है।"[3]

अर्थ में अनर्थ या प्रवाल दीप

सन् १९०९-१६ ई० की अवधि में **चंद्रशेखर पाठक** द्वारा अनूदित 'अर्थ में अनर्थ या प्रवाल दीप' नामक उपन्यास, तीन भागों में, लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर इसके अनुवाद होने की सूचना नहीं दी हुई है, पर उसके सभी पात्रों तथा स्थानों के नाम यूरोपीय होने से इसके अनुवाद होने का अनुमान होता है। इस उपन्यास में इटली के पादरियों का दबदबा, धर्म के नाम पर इनके द्वारा किये जाने वाले अत्याचार, राजा, राजकुमारों तथा राजकुमारियों की विलासिता और चरित्रहीनता तथा डाकुओं का प्राबल्य और प्रजा पर उनका अत्याचार आदि वर्णित हैं।

असभ्य रमणी

सन् १९१० ई० में **गोस्वामी ब्रजनाथ शर्मा** द्वारा मराठी से अनूदित 'असभ्य

---

१. सरस्वती, भाग १०, सं० १०, अक्तूबर १९०९।
२. सरस्वती, भाग १०, सं० ५, मई १९०९, हेमलता (पुस्तक परीक्षा)।
३. उपरिवत्।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। प्रथम भाग का मुखपृष्ठ गायब है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा के व्यक्तिगत पुस्तकालय में यह भाग उपलब्ध है, जिसे उन्होंने मुझे कृपापूर्वक देखने को दिया।
मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अर्थ में अनर्थ या प्रवाल दीप (उपन्यास), प्रथम भाग। (अवस्थान्तरित) रमा बाई, मदालसा, विलासिनी विलास, इत्यादि उपन्यासों के रचयिता, बिहार निवासी पं० चन्द्रशेखर पाठक लिखित तथा बाबू देवकीनन्दन खत्री, प्रोप्राइटर लहरी प्रेस द्वारा प्रकाशित प्रिंटेड बाइ पन्ना लाल राय, मैनेजर ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम बार १०००, १९०९; अर्थ में अनर्थ या प्रवाल दीप, द्वितीय भाग, (अवस्थान्तरित) बिहार निवासी पंडित चन्द्रशेखर पाठक लिखित तथा बाबू देवकीनन्दन खत्री, प्रोप्राइटर, लहरी प्रेस द्वारा प्रकाशित, १९१०, (१९१०); तृतीय भाग, बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर लहरी प्रेस द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १९१६, (अन्य सूचनाएँ उपरिवत्)।

रमणी' नामक उपन्यास हिन्दी साहित्य समिति, आगरा से प्रकाशित हुआ ।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल पुस्तक और उसके लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है । 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह मराठी मासिक पत्र 'मनोरंजन' में प्रकाशित एक कथा का मर्मानुवाद है । इस उपन्यास में स्त्रीशिक्षा तथा स्त्रीस्वातंत्र्य का विरोध किया गया है ।

निर्मोल की कथा

१९१० ई० में ही **मिस मार्सटन** लिखित **निर्मोल्स च्वायस** नामक कथा का 'निर्मोल की कथा' शीर्षक अनुवाद क्रिश्चियन लिटरेचर सोसाइटी फार इंडिया, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ ।[2]

चुड़ैल

सन् १९१० ई० में **बाबू जैनेन्द्र किशोर** द्वारा फ्रेंच उपन्यासकार पाल डी काक के **'दि वेम्पायर'** नामक उपन्यास के आधार पर लिखित 'चुड़ैल' शीर्षक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ ।[3] यह अविकल अनुवाद न होकर रूपान्तरण है । हिन्दी पाठकों की रुचि के अनुसार मूल उपन्यास के पात्रों और स्थानों के नाम तथा घटनाओं में परिवर्तन कर दिया गया है ।

विमला

सन् १९११ ई० में **श्री चन्द्रशेखर चटर्जी** कृत किसी बँगला उपन्यास का **नरोत्तम व्यास** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ, 'विमला' शीर्षक अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । इसके दूसरे संस्करण की 'भूमिका' के नीचे "सरस्वती सभा, मुरादाबाद १९६८" मुद्रित है, जिससे इसके अनुवाद-काल का पता चलता है । इसका

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—असभ्य रमणी, अर्थात् सोशल रिफार्म सम्बन्धी एक शिक्षापूर्ण उपन्यास, सम्पादक गोस्वामी ब्रजनाथ शर्मा, आगरा, प्रकाशक हिन्दी साहित्य समिति, आगरा, आर्य भास्कर यन्त्रालय आगरा में मुद्रित, सन् १९१० ई० । पृ० सं० ४३ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—निर्मोल्स च्वायस, निर्मोल की कथा, दोनों लोक का वर्णन, रचित मिस मार्सटन साहिबा, लिटरेचर सोसाइटी फॉर इंडिया, यूनाइटेड प्राविन्सेज ब्रान्च, इलाहाबाद, १९१०, फर्स्ट एडीशन २०००, प्रथम संस्करण २०००, पृ० सं० ६६ ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चुड़ैल, उपन्यास, प्रथम भाग (एक फ्रांसीसी उपन्यास का आशयानुवाद), आरा निवासी स्वर्गवासी बाबू जैनेन्द्र किशोर (अग्रवाल जैन) लिखित, काशी, भारत जीवन प्रेस में बाबू श्री कृष्ण वर्मा द्वारा मुद्रित, सन् १९१० ई०, प्रथम बार २०००, (दूसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि भी उपरिवत्), पृ० सं० १२२+१२१ ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विमला (बंगभाषा से अनुवादित),

दूसरा संस्करण १९१८ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से ही प्रकाशित हुआ।

पार्वती और यशोदा

सन् १९११ ई० में **कामता प्रसाद गुरु** द्वारा प्रस्तुत उड़िया उपन्यास **'मालती ओ भाग्यवती'** का 'पार्वती और यशोदा' शीर्षक अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में स्त्रियों को अनेक प्रकार की शिक्षाएँ दी गयी हैं। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है।[2] इस उपन्यास का सातवाँ संस्करण १९५१ ई० में ज्ञान मन्दिर, जबलपुर से प्रकाशित हुआ।[3]

चाची

इसी वर्ष बँगला उपन्यासकार **श्री वंकू बिहारी धर** कृत **काकी मा** नामक उपन्यास का पं० रामानन्द द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'चाची' शीर्षक अनुवाद रामलाल वर्मा द्वारा, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4]

लक्ष्मी बहू

सन् १९१२ ई० में **मेजर वामनदास बसु** कृत **'लक्खी बऊ'** नामक बँगला उपन्यास का **श्रीमती गोपाल देवी** कृत **'लक्ष्मी बहू'** शीर्षक छायानुवाद गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[5] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक या मूल उपन्यास का नाम देने की बात तो दूर रहे, ऐसा भ्रम उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है, मानो यह मौलिक उपन्यास हो। 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद है। भूमिका से यह भी पता चलता है कि पुस्तक रूप में प्रकाशित होने के पूर्व यह उपन्यास 'गृहलक्ष्मी' पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित हुआ था। 'गृहलक्ष्मी' में जब यह उपन्यास छप गया तब बहुत से पाठक पाठिकाओं ने इसको पुस्तकाकार प्रकाशित करने का अनुरोध किया। उन्हीं लोगों की

अनुवादक नरोत्तम व्यास, प्रकाशक हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, सन् १९१८ ई०, दूसरी बार १०००, पृ० सं० ५०।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पार्वती और यशोदा (उड़िया "मालती ओ भाग्यवती" की छाया) लेखक कामता प्रसाद गुरु, प्रकाशक इंडियन प्रेस, प्रयाग प्रथम बार १९११, पृ० सं० १४५।

२. हि० पु० सा०, पृ० ३९७।

३. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चाची, गार्हस्थ उपन्यास, वंगभाषा के सुप्रसिद्ध लेखक, वसुधा सम्पादक श्री युक्त वाबू वंकू विहारी धर को 'काकी मा' का हिन्दी अनुवाद, 'वीर भारत' के भूतपूर्व सम्पादक और 'हिन्दी वंगवासी' के भूतपूर्व संयुक्त सम्पादक पंडित रामानन्द द्विवेदी द्वारा अनुवादित, दारोगा दफ्तर, उपन्यास सागर तथा बड़ा बाजार गजट आदि पत्रों के अध्यक्ष बाबू रामलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित, देवनागरी यन्त्रालय, कलकत्ता में मुद्रित, सं० १९६८, पृ० सं० १७३।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लक्ष्मी बहू, स्त्रीपाठ्य अपूर्व

इच्छा पूर्ण करने के लिए यह पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाता है ।"[1]

प्रकाशक के अनुसार "इस पुस्तक को हिन्दी पाठकों के उपयोगी बनाने के लिए, मूल पुस्तक से कहीं कहीं स्वतन्त्रता लेनी पड़ी है। यह इस ढंग से लिखी गयी है कि हिन्दी पाठिकाओं को हृदयंगम हो ।"[2]

इस अनुवाद का द्वितीय संस्करण १९१५ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से ही प्रकाशित हुआ ।[3]

स्वर्णलता

सन् १९१२ ई० में तारकनाथ गंगोपाध्याय लिखित 'स्वर्णलता' नामक उपन्यास का पं० श्री जनार्दन झा द्वारा किया हुआ अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[4]

भैरवी अर्थात् वीर कुमारी

सन् १९१२ ई० में श्री कृष्ण कुमार देव शर्मा द्वारा अनूदित 'भैरवी अर्थात् वीर कुमारी' शीर्षक उपन्यास श्याम काशी प्रेस, मथुरा से मुद्रित और प्रकाशित हुआ ।[5] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास, उपन्यासकार अथवा मूल उपन्यास की भाषा की सूचना नहीं दी हुई है ।

चोर सुलतान

सन् १९१२ ई० में श्री कृष्ण कुमार देव शर्मा द्वारा बँगला से अनूदित 'चोर सुलतान' शीर्षक उपन्यास श्याम काशी प्रेस, मथुरा से लाला श्याम लाल अग्रवाल द्वारा प्रकाशित किया गया ।[6] अनुवाद के 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि मूल उपन्यासकार ने

उपन्यास, श्रीमती गोपाल देवी, प्रकाशक पं० सुदर्शनाचार्य, बी० ए०, 'गृहलक्ष्मी कार्यालय', प्रयाग, १९१२, प्रथम संस्करण ।

१. उपरिवत्, भूमिका ।
२. उपरिवत् ।
३. प्रा० स्था०—वि० रा० प० पु० पटना ।
४. प्रा० स्था०—पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्वर्णलता, मनोरंजक और शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास, मू० ले० तारकनाथ गंगोपाध्याय, अनु० पं० श्री जनार्दन झा, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग, १९१२ ।
५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनुवादक श्री कृष्णकुमार देव शर्मा, भैरवी अर्थात् वीर कुमारी, लाला श्यामलाल अग्रवाल द्वारा श्याम काशी प्रेस, मथुरा से मुद्रित और प्रकाशित, सं० १९६९ (मुखपृष्ठ पर मुद्रण-काल १९६८ सं० दिया हुआ है) पृ० सं० १७ ।
६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चोर सुलतान, एक विचित्र मनोहर बंगभाषा के उपन्यास का अनुवाद, अनुवादक मथुरा निवासी श्री कृष्णकुमार देव शर्मा, जिसको लाला श्याम लाल अग्रवाल ने अपने काशी प्रेस, मथुरा में छापकर प्रकाशित किया । सं०

उपन्यास में अपना नाम नहीं प्रकट किया है ।[1]

रोमियो जुलिएट

सन् १९१२ ई० में ही, अथवा उसके कुछ पूर्व, **शेक्सपीयर** के 'रोमियो जुलिएट' नामक नाटक का **पंडित चतुर्भुज औदीच्य** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ आख्यानात्मक रूपान्तर अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता से, रामलाल वर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस गद्यकथा को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' (जुलाई १९१२ ई०) में प्रकाशित विवेच्य गद्यकथा को 'पुस्तक परीक्षा' से प्राप्त की गयी हैं ।[2]

वीर हरि सिंह

सन् १९१२ ई० में ही **लार्ड मेकाले** कृत **'ले आव होरेशरा'** नामक उपन्यास का **"हिन्दी के एक लघु सेवक"** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'वीर हरि सिंह' शीर्षक भावानुवाद प्रकाशित हुआ ।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशक का नाम नहीं दिया हुआ है ।

रमाबाई

सन् १९१२ ई० में ही **पं० रामानन्द द्विवेदी** द्वारा बँगला से अनूदित 'रमाबाई' नामक उपन्यास आर० एल० वर्मा ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[4]

युगल मालती

इसी वर्ष गुजराती नाटक **'युगल जुगाड़ी'** की छाया पर **श्री वल्लभ दास वर्मा** द्वारा रचित 'युगल मालती' उपन्यास दिल्ली प्रिंटिंग वर्क्स से मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ ।[5] इसमें जुआ खेलने के दुष्परिणाम का चित्रण किया गया है ।

पारस्य उपन्यास

सन् १९१३ ई० में 'पर्शियन नाइट्स' के बँगला अनुवाद का **श्री जनार्दन झा** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'पारस्य उपन्यास' शीर्षक हिन्दी अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से

१९६९, पृ० सं० १७० ।

१. उपरिवत्, निवेदन ।

२. सरस्वती, भाग १३, सं० ७, जुलाई १९१२, रोमियो जुलिएट (पुस्तक परीक्षा) ।

३. प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीर हरि सिंह (होरेशारा) लार्ड मेकाले कृत "ले आव होरेशरा" कार्म्मानुवाद, लेखक. हिन्दी का "एक लघु सेवक" (राम), मूल्य चार आना संवत् १९६९, आवरणपृष्ठ पर इसका शीर्षक 'हारेशरा कुमारी' दिया हुआ है ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रमा बाई, एक रहस्यमय सामाजिक उपन्यास, "वीर भारत" सम्पादक पं० रामानन्द द्विवेदी द्वारा बंगभाषा से अनुवादित, आर० एल० वर्म्मन ऐंड कम्पनी, ४०१/२, अपर चीतपुत रोड. कलकत्ता के प्रकाशित, श्री मिहिर चन्द्र घोष, नं० २५/ए, शंभु चटर्जीष्ट्रिट, "निज सरस्वती प्रेस, कलकत्ता, प्रथम वार १०००, सं० १९६९ वि०, पृ० सं० ५५ ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—युगल मालती उपन्यास, अर्थात्

प्रकाशित हुआ ।[1] इस कथापुस्तक में एक शाहजादी की पुरुषों के प्रति घृणा का वर्णन है। शाहजादी को पुरुषों की कठोरता पर इतनी आन्तरिक घृणा हो गयी थी कि वह यौवनावस्था को प्राप्त होकर भी किसी पुरुष के साथ विवाह करने को तैयार न थी। जब बादशाह की वृद्धा नानी ने शाहजादी को अनेक ऐसी कहानियाँ सुनायीं, जिनमें पुरुषों की सहृदयता और प्रेम का वर्णन किया गया था, तो इन कहानियों के प्रभाव से शाहजादी का पुरुषों के प्रति घृणाभाव समाप्त हो गया। तब उसने विवाह किया। उन्हीं कहानियों का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है।

भूलभुलैया या धोखे की टट्टी

सन् १९१३ ई० में **मुंशी व्रजमोहन लाल** द्वारा अनूदित 'भूल भूलैया या धोखे की टट्टी' नामक गद्यकथा का द्वितीय संस्करण आर० एल० वर्म्मन एंड को०, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] पुस्तक में न मूल उपन्यासकार का नाम दिया हुआ है, न मूल उपन्यास का; न यही बताया गया है कि यह किस भाषा को किस पुस्तक का अनुवाद है।

प्रतिमा

सन् १९१३ ई० में बँगला के प्रसिद्ध उपन्यासकार **बाबू अविनाशचन्द्र दास** के **'कुमारी'** नामक उपन्यास का **श्री नाथूराम प्रेमी** कृत 'प्रतिमा' शीर्षक अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[3] इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १९१६ ई० में और तीसरा संस्करण १९१९ ई०[4] में प्रकाशित हुआ। तीसरे संस्करण के मुखपृष्ठ से ज्ञात होता है कि इस अनुवाद के प्रथम संस्करण की २००० प्रतियाँ और दूसरे संस्करण की १५०० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं। इस प्रकार, हिन्दी पाठकों में यह उपन्यास काफी लोकप्रिय हुआ था। 'प्रतिमा' के 'निवेदन' से जान पड़ता है कि उस समय हिन्दी में किसी

द्यूत परिणाम-जुए खेलने का नतीजा, जिसको मुलतान निवासी बाबू आत्मारामात्मज वल्लभ दास वर्मा ने रचकर दिल्ली प्रिंटिंग वर्क्स से मुद्रित कराके सर्वसाधारण के लिये प्रकाशित किया, प्रथम वार १०००, संवत् १९६६, पृ० सं० ८८।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पारस्य उपन्यास, पर्शियन नाइट्स का बँगला से हिन्दी अनुवाद, अनुवादक श्री जनार्दन झा, प्रकाशक इंडियन प्रेस, प्रयाग १९१३, प्रथम संस्करण, पृ० सं० २६०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भूल भूलैया या धोखे की टट्टी, एक अद्भुत आश्चर्यजनक कहानी, भारतीय व्यवस्थापक विभाग के द्वितीय उर्दू अनुवादक मुंशी व्रजमोहन लाल अनुवादित, आर० एल० वर्म्मन एंड को, ४०१/२, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित, द्वितीय वार २०००, सं० १९७० वि०, पृ० सं० २८।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रतिभा, श्रीयुत् बाबू अविनाशचन्द्र दास के 'कुमारी' उपन्यास का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक श्री नाथूराम प्रेमी, प्रकाशक श्री हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, ईसवी सन् १९१३, प्रथमावृत्ति, पृ० सं० २५२।

४. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना।

अच्छे उपन्यास के लिए परिष्कृत रुचि के ५०० पाठक भी प्राप्त कर लेना आसान काम नहीं था। प्रकाशक के शब्दों में "यदि आपलोगों ने हमारी सहायता की और अधिक नहीं, केवल ५०० ग्राहक ही हमें स्थायी मिल गये—जिस भाषा के बोलनेवालों की संख्या ८ करोड़ के लगभग है, उसमें इतने ग्राहक मिल जाना कुछ कठिन भी नहीं—तो हम विश्वास दिलाते हैं कि थोड़े ही दिनों में आप हमारी प्यारी भाषा को अनेक अच्छे ग्रन्थों से सुसज्जित पाएँगे।"[1] यह उल्लेखनीय है कि प्रकाशक को हिन्दी पाठकों से निराश नहीं होना पड़ा। छह वर्षों के भीतर इस उपन्यास की ३५०० प्रतियाँ बिक जाना इस बात का प्रमाण है कि हिंदी में परिष्कृत रुचि के पाठकों की संख्या उतनी कम नहीं थी, जितनी प्रकाशक समझते थे।

राबिन्सन क्रूसो

डेनियल डीफो कृत 'राबिन्सन क्रूसो' का अनुवाद हिन्दी में सर्वप्रथम १८६० ई० में पं० बद्रीलाल पाठक द्वारा प्रस्तुत किया गया था।[2] यह अनुवाद विवेच्य उपन्यास के बँगला अनुवाद का हिंदी अनुवाद था।

सन् १९१३ ई० में 'राबिन्सन क्रूसो' का **चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा** कृत अनुवाद नेशनल प्रेस, कटरा, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3] यह अनुवाद अविकल न होकर स्वतन्त्र है।

'राबिन्सन क्रूसो' का एक अनुवाद इंडियन प्रेस प्रयाग से भी प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'सरस्वती', भाग १७, संख्या २ (फरवरी १९१६ ई०) में इस अनुवाद की समीक्षा निकली थी। इससे ज्ञात होता है कि यह अनुवाद १९१६ ई० के फरवरी महीने के पूर्व प्रकाशित हो चुका था। कदाचित् इस अनुवाद का दूसरा संस्करण भी १९३० ई० में निकला था, यद्यपि प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसे प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'सरस्वती' के मई १९३० के अंक में मुद्रित "इस महीने की प्रकाशित पुस्तकें" शीर्षक विज्ञापन के अन्तर्गत 'राबिन्सन क्रूसो' का भी नाम है। इसे दूसरा संस्करण ही होना चाहिए।

बनवासिनी

सन् १९१४ ई० में **श्रीयुत वाड़ीलाल मोतीलाल शाह** कृत **ऋषि** नामक गुजराती उपन्यास का **उदयलाल काशलीवाल** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'बनवासिनी' शीर्षक रूपान्तर हिंदी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[4] अनुवादक के

---

१. प्रतिमा, मू० ले० अविनाशचन्द्र दास, अ० नाथूराम प्रेमी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण १९१३, विवेदन।

२. द्रष्टव्य, पृ० २६।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राबिंसन क्रूसो अर्थात् डेनियल डीफो के संशोधित राबिंसन क्रूसो नामक अँगरेजी पुस्तक का सरल अनुवाद, संग्रहकर्त्ता—चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, प्रकाशन—नेशनल प्रेस, कटरा, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१३ ई०।

४. प्राप्ति स्था०—आ० भा पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बनवासिनी (एक सुन्दर सामा-

शब्दों में "इसके पात्रों के नाम भी हमने बदल दिये हैं। कथाभाग का भी कहीं कहीं हमने परिवर्तन कर दिया है। वह केवल सुन्दरता और प्राकृतिकता के लिहाज से"[१] इस उपन्यास में विवाह और प्रेम की विविध समस्याओं पर विचार किया गया है।[२]

सती लक्ष्मी

सन् १९१४ ई० में ही श्री अर्जुनचन्द्र वसु प्रणीत 'सती लक्ष्मी' नामक बँगला उपन्यास का पं० सुदर्शनाचार्य द्वारा प्रस्तुत किया हुआ छायानुवाद गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[३]

शेक्सपीयर ग्रन्थावली

सन् १९१४ ई० में पं० शिवप्रसाद दूबे द्वारा प्रस्तुत शेक्सपीयर के नाटकों का कहानी के रूप में भाषान्तरण 'शेक्सपीयर ग्रन्थावली' शीर्षक से इलेक्ट्रिक मशीन प्रेस से पं० सदाशिव तिवारी द्वारा मुद्रित और प्रकाशित किया गया।[४]

लवंगलता

सन् १९१४ ई० में ही 'प्रवासिनी' नामक मराठी उपन्यास का बाबू प्यारे लाल गुप्त द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'लवंगलता' शीर्षक अनुवाद हरिदास वैद्य द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[५] इस उपन्यास में स्त्रियों को धर्मशून्य अँगरेजी शिक्षा देने की बुराइयाँ दिखायी गयी हैं। पाश्चात्य सभ्यता की नकल करने वालों की, जो अपनी कन्याओं को मेम बनाने की चिन्ता में लगे रहते है, भर्त्सना इस उपन्यास में की गयी है।

सुरेन्द्र सुन्दरी

सन् १९१४ ई० में ही विलियम शेक्सपीयर कृत 'रोमियो जुलिएट' नामक नाटक

जिक आख्यायिका), लेखक उदयलाल कासलीलाल और प्रकाशक हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, अप्रैल १९१४, पृ० सं० ४३।

१. उपरिवत्, लेखक के दो शब्द।

२. उपरिवत्।

३. प्राप्ति स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ को प्रतिलिपि—सती लक्ष्मी, श्रीयुत अर्जुन चन्द्र वसु प्रणीत, सती लक्ष्मी नामक स्त्रीपाठ्य उपन्यास का छायानुवाद, सम्पादक पं० सुदर्शनाचार्य बी० ए०, प्रकाशक गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१४, पृ० सं २०४।

४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शेक्सपियर ग्रंथावली, सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् विलियम शेक्सपियर के कितने ही नाटकों का कहानी के रूप में अनुवाद, वीर भारत के स्वत्वाधिकारी श्री युक्त बाबू उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय की अनुमति से, फोर्थ इयर क्लास के प्रतिभाशाली छात्र, स्व० पं० शिवप्रसाद दुबे द्वारा भाषान्तरित, कलकत्ता, १९६ बो बाजार स्ट्रीट, वीर भारत इलेक्ट्रीक मशीन प्रेस में, पं० सदाशिव तिवारी द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९७१।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लवंगलता, सामाजिक उपन्यास, लेखक बाबू प्यारे लाल गुप्त, रतनपुर (बिलासपुर), प्रकाशक हरिदास वैद्य, कलकत्ता, २०१ हरिसन

के आधार पर **प्रसू सरस्वती प्रिय** द्वारा लिखित 'सुरेन्द्र सुन्दरी' नामक गद्यकथा नर्मदा लहरी रायल प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर से प्रकाशित हुई ।[1] इस रूपान्तर में स्थानों और पात्रों के नाम बदल कर भारतीय कर दिये गये हैं ।

सरस्वती

इसी वर्ष बाबू **प्यारे लाल गुप्त** द्वारा मराठी से अनूदित **सरस्वती** नामक उपन्यास श्री गोपाल कृष्ण मंडली, लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित हुआ ।[2] इस उपन्यास में अशिक्षा के परिणामस्वरूप भारतीय परिवारों में अक्सर दिखायी पड़ने वाले फूट और कलह का चित्रण किया गया है ।

हृदय कंटक

१९१४ ई० में ही **पं० रामेश्वर दत्त शर्मा** द्वारा अनूदित 'हृदय कंटक' नामक उपन्यास दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ ।[3] पुस्तक में इस बात की सूचना नहीं दी हुई है कि यह किस भाषा के किस उपन्यास का अनुवाद है । भूमिका के अनुसार "मेरे अनेक मित्रों ने सम्मति दी कि तुम देहली निवासी लाला चंद्रलाल चावलवाले ने जो अँगरेजी से 'दिल का काँटा' तैयार किया है उसका नागरी में अनुवाद करो", सम्भवतः लाला चन्द्रलाल लिखित पुस्तक उर्दू में रही हो ।

अभागे का भाग्य

सन् १९१४-१५ ई० में **विक्टर ह्यूगो** के 'ला मिजरेबुल' नामक उपन्यास का **दुर्गा प्रसाद खत्री** द्वारा प्रस्तुत 'अभागे का भाग्य' शीर्षक अनुवाद, पाँच भागों में, लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ ।[4] इसके प्रथम दो भाग १९१४ ई० में तथा शेष तीन भाग १९१५ ई० में प्रकाशित हुए । यह अविकल अनुवाद नहीं है । डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने

रोड के नरसिह प्रेस में, बाबू राम प्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१४, प्रथम वार १०००, पृ० सं० २१९ ।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुरेन्द्र सुन्दरी, उपन्यास, अर्थात् प्रसिद्ध शेक्सपियर के उत्तम शृंगार रस के ड्रामा "रोमियो जुलियट" का छायानुवाद, हिन्दी में गद्यपद्यमय एक अनूठा उपन्यास अवश्य देखिये, लेखक प्रसू सरस्वती प्रिय, जबलपुर, सी पी०, नर्मदा लहरी रायल प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, प्रथम वार १०००, जिल्द १९१४ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सरस्वती, लेखक बाबू प्यारे लाल गुप्त, सम्पादक ठाकुर सूर्य कुमार वर्मा, प्रकाशक श्री गोपाल कृष्ण मंडली, लश्कर, ग्वालियर (प्रथम संस्करण), १९१४, पृ० सं० (लगभग) १८० ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हृदय कंटक, उपन्यास, श्रीमान पंजाब परिक्षोत्तीर्ण पंडित रामेश्वर दत्त शर्मा संस्कृताध्यापक एम० बी० स्कूल, सोनीपत जिला, देहली निवासी द्वारा अनुवादित और बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित, प्रिंटेड बाइ पन्ना लाल राय, मैनेजर ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम वार १०००, १९१४, पृ० सं० ५५ ।

४. प्रा० स्था०—दुर्गाप्रसाद खत्री का व्यक्तिगत का पुस्तकालय; दूसरे भाग के मुखपृष्ठ के

इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है।[1]

शैलबाला अथवा आदर्श वहू

सन् १९१५ ई० में **पाण्डेय मुरलीधर और पांडेय मुकुटधर शर्मा** द्वारा उड़िया भाषा से अनूदित 'शैलबाला अथवा आदर्श वहू' नामक उपन्यास हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। एक आदर्श वधू का चरित्र ही इस उपन्यास का प्रतिपाद्य है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'मनोरंजन' (ज्येष्ठ १९७२) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के 'पुस्तक परिचय' से प्राप्त की गयी हैं।[2]

कुमारी

सन् १९१५ ई० में ही वँगला उपन्यास **पाषाणमयी** का **श्री शिवनारायण द्विवेदी** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'कुमारी' शीर्षक अनुवाद नागरी प्रचारक कार्यालय, दिल्ली से मक्खन लाल अग्रवाल द्वारा प्रकाशित किया गया।[3] 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि यह छायानुवाद है। अनुवादक के शब्दों में "प्रस्तुत पुस्तक उसी पाषाणमयी का परिवर्तित अनुवाद है। कई स्थानों पर मुझे घटना, भाव और भाषा आदि का परिवर्तन करना पड़ा है और बहुत से स्थानों पर सर्वथा नूतनता लानी पड़ी हैं।"[4] 'निवेदन' के नीचे अक्टूबर १९१४ अंकित है, जिससे इसका रचना काल १९१४ ई० सिद्ध होता है।

शान्तिकुटीर

जनवरी सन् १९१५ ई० में ही **अविनाशचन्द्र दास** के एक अन्य उपन्यास **'पलाशवन'** का **पं० रूपनारायण पांडेय** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'शांति कुटीर' शीर्षक अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[5] इसका द्वितीय संस्करण सितम्बर

की प्रतिलिपि—अभागे का भाग्य दूसरा भाग (एक अँगरेजी उपन्यास का आशयानुवाद) बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री लिखित और प्रकाशित, प्रिंटेड बाइ पन्ना लाल राय, मैनेजर, ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम बार १०००, १९१४ (तीसरे, चौथे और पाँचवे भागों के मुखपृष्ठों की प्रतिलिपियाँ दूसरे भाग की तरह, केवल प्रकाशन-काल १९१४ के स्थान पर १९१५।)

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४७८।
२. मनोरंजन, पृष्ठ १९७२, शैलबाला (पुस्तक परिचय)।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुमारी अर्थात् एक सजीव सामाजिक उपन्यास, अनुवादक शिवनारायण द्विवेदी, प्रका० मक्खन लाल अग्रवाल, नागरी प्रचारक कार्यालय, देहली, प्रथम बार १०००, १९१५, पृ० सं० १७५।
४. उपरिवत्, निवेदन।
५. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शान्ति कुटीर (गार्हस्थ्य चित्र) श्रीयुत् बाबू अविनाशचन्द्र दास, एम० ए०, बी० एल० "पलाशवन" नामक वँगला ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक पं० रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, बम्बई, वि० सं० १९७१, पृ० सं० १७६।

१९१८ ई० में निकला ।[1]

मँझली वहू

सन् १९१५ ई० में ही किसी बँगला उपन्यास का **पं० पारसनाथ त्रिपाठी** द्वारा प्रस्तुत 'मँझली वहू' शीर्षक अनुवाद हरिदास एँड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । उपर्युक्त सूचनाएँ विवेच्य उपन्यास के द्वितीय संस्करण के 'वक्तव्य' से प्राप्त की गयी हैं । इसका द्वितीय संस्करण १९१८ ई० में हरिदास एँड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यास का नाम दिया हुआ है, न उपन्यासकार का, न यही सूचना दी हुई है कि यह किस भाषा के उपन्यास का अनुवाद है ।

अन्नपूर्णा का मन्दिर

सन् १९१५ ई० में **श्रीमती निरुपमा देवी** लिखित 'अन्नपूर्णा मन्दिर' नामक बँगला उपन्यास का **पं० ईश्वरी प्रसाद मिश्र** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'अन्नपूर्णा का मंदिर' शीर्षक अविकल अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, वम्बई से प्रकाशित हुआ ।[3] इस उपन्यास में स्त्रीचरित्र का आदर्श प्रस्तुत किया गया है ।

सावित्री

सन् १९१५ ई० में ही बँगला उपन्यासकार **श्री शारदा प्रसाद चक्रवर्ती** के 'सावित्री' नामक उपन्यास का **श्री गुलजारी लाल चतुर्वेदी** कृत अनुवाद, उक्त शीर्षक से ही हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[4] इसका द्वितीय संस्करण १९१९ ई० में मुद्रित हुआ ।[5] इस उपन्यास में एक पतिव्रता स्त्री के आदर्श चरित्र का चित्रण कर पातिव्रत्य और धर्माचरण का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है ।

मन्दार कुसुम

सन् १९१५ ई० में ही **श्रीमती प्रफुल्ल नलिनी मित्र 'सरस्वती'** कृत 'मन्दार कुसुम'

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मझली वहू, अनुवादक शाहपुर पट्टी (आरा), निवासी पं० पारसनाथ त्रिपाठी, काव्यतीर्थ, प्रकाशक हरिदास ऐंड कम्पनी कलकत्ता, सन् १९१८ ई०, द्वितीय वार १००० ।

३. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अन्नपूर्णा का मन्दिर, वंगभाषा की सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखिका श्रीमती निरुपमा देवी के अन्नपूर्णार मन्दिर का हिन्दी अनुवाद । अनुवादक पं० ईश्वरी प्रसाद मिश्र, सम्पादक, 'मनोरंजन', प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, वम्बई, भाद्र १९७२ वि०, सितम्बर १९१५, पृ० सं० १८५ ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सावित्री, अनुवादक गुलजारी लाल चतुर्वेदी, प्रकाशक हरिदास ऐंड कम्पनी, २०१, हरिसन रोड, के नरसिंह प्रेस में बाबू राम प्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१५ ई०, पहली वार १०००, पृ० सं० २०४ ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

नामक उपन्यास का **लाला भगवान दीन** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद सूर्योदय समिति, मुरारपुर, गया से प्रकाशित हुआ।[१]

दिशाभूल

सन् १९१६ ई० में, या उसके कुछ पूर्व, **बाबूलाल मायाशंकर दूबे** द्वारा अनूदित 'दिशा भूल' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त नहीं कर सका है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'प्रताप' (२४ अप्रैल १९१६) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं। समीक्षक के शब्दों में "पुस्तक में यह नहीं लिखा है कि यह उपन्यास किस पुस्तक का अनुवाद है? भाषा इसकी वैसी ही है जैसी किसी किसी नवीन महाराष्ट्र लेखक की होती है।[२] इसके प्रकाशक स्वयं अनुवादक महोदय ही थे।

राजपथ का पथिक

सन् १९१६ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व, **राल्फ वाल्डो ट्राइन** के **'वे फेअरर ऑन दि ओपेन रोड'** नामक उपन्यास का **कृष्णलाल वर्मा** कृत 'राजपथ का पथिक' शीर्षक अनुवाद प्रेम कार्यालय, गोहना (रोहतक) से प्रकाशित हुआ।[३] 'सरस्वती' (दिसम्बर १९१६) में प्रकाशित इसकी समीक्षा के अनुसार "अनुवाद में इस पुस्तक के गुजराती रूपान्तर से सहायता ली गयी है। जीवन के उच्चपद पर ले जाने और मन को सुसंस्कृत करने के लिए इस पुस्तक के आदेश बड़े ही दिव्य हैं। इसके सदुपदेश सन्मार्ग दर्शक और सद्विचार पूर्ण हैं।"

जापान रहस्य

सन् १९१६ ई० में ही **द्विवेदी रामानन्द शर्मा** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ बँगला उपन्यास 'जापान रहस्य' का हिन्दी अनुवाद स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित किया गया।[४] मुखपृष्ठ पर मूल लेखक और उपन्यास का नाम देना तो अलग रहे, यह सूचना तक नहीं दी हुई है कि यह अनुवाद है। प्रथम दृष्टि में इसे मौलिक उपन्यास समझने की ही भूल होती है। 'मुखबन्ध' में इसके अनुवाद होने का रहस्य खोला गया है। 'मुखबन्ध' से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद सर्वप्रथम १९१३ ई० में 'वीर भारत' नामक पत्र में क्रमशः

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मन्दार कुसुम, अनुवादक लाला भगवान् दीन, सम्पादक पं० गंगाधर शर्मा, काव्यतीर्थ, प्रकाशक सूर्योदय समिति, मुरारपुर-गया, १९७२ वि०, प्रथमावृत्ति, २०००, पृ० सं० ११०।

२. प्रताप, २४ अप्रील १९१६, दिशाभूल (पुस्तक समीक्षा)।

३. सरस्वती, भाग १७, सं० १२, दिसम्बर १९१६।

४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जापान रहस्य, जापानी की आत्मबलि देशभक्त महात्मा सोजोरो की अद्भुत और अपूर्व आत्मबलि का प्रेमपूर्ण एवं परम कारुणिक औपन्यासिक वृत्तान्त, लेखक-प्रकाशक-मिरजापुर सीखड़ निवासी द्विवेदी रामानन्द शर्मा, प्रथम

प्रकाशित होना शुरू हुआ था, पर पूरा नहीं छप सका था।[१]

कालग्रास या अद्भुत हरकारा

सन् १९१६ ई० में ही **श्री देवनाथ पाठक** द्वारा अँगरेजी के किसी **"दि ग्रोन टूथ"** नामक उपन्यास के आधार पर लिखित 'कालग्रास या अद्भुत हरकारा' नामक उपन्यास उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] अनुवाद की "भूमिका" की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

"यह उपन्यास अँगरेजी के एक उपन्यास के आधार पर लिखा गया है। पुस्तक लिखते समय अँगरेजी उपन्यास मेरे सामने नहीं था। इसलिए बहुत सी जगहों पर मैंने बहुत सी बातों को बदल दिया है। स्थान स्थान पर मैंने कुछ अपनी ओर से भी लिख दिया है।"[३]

शारदा

सन् १९१६ ई० में ही **पं० शिवनाथ शास्त्री** कृत 'मेज बऊ' नामक बँगला उपन्यास का **पं० शिवसहाय चतुर्वेदी** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'शारदा' शीर्षक अनुवाद हिन्दी हितैषी कार्यालय, देवरी (सागर) से प्रकाशित हुआ।[४] यह अविकल अनुवाद न होकर छायानुवाद है। इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १९२४ ई० में **आदर्श बहू** शीर्षक से ग्रन्थ भंडार लेडी हार्डिज रोड, माटूँगा, (बम्बई) से प्रकाशित हुआ।[५] इसके 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि अबतक मूल उपन्यास के बँगला में १९ संस्करण हो चुके थे। हिन्दी में इसके दो ही संस्करण हो पाये।

वार १०००, १९७३ वि०।

१. उपरिवत्, मुखबन्ध।

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कालग्रास या अद्भुत हरकारा, लेखक देवनाथ पाठक, सम्पादक और प्रकाशक जयराम दास गुप्त, उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, श्री लक्ष्मी नारायण प्रेस, जतनबड़, काशी में ग० कृ० गुर्जर द्वारा मुद्रित, प्रथम वार, मार्च सन् १९१६ ई०, पृ० सं० ५८।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वनिता हितैषी ग्रन्थमाला, छठा पुष्प, शारदा, बँगला के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत् पंडित शिवनाथ शास्त्री एम० ए० के मेजबऊ नामक उपन्यास का परिवर्तित अनुवाद, अनुवादक—देवरी, सागर निवासी पंडित शिवसहाय चतुर्वेदी, प्रकाशक—हिन्दी हितैषी कार्यालय, देवरी (सागर) सी० पी०, चैत्र सं० १९७३, प्रथम संस्करण। अप्रील १९१६, पृ० सं० ८०।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श बहू (सुन्दर सुन्दर चित्रों से सुशोभित स्त्रियोपयोगी सामाजिक उपन्यास) श्री शिवनाथ शास्त्री के मेजबऊ नामक बंगाली उपन्यास का अनुवाद, अनुवादक श्रीशिवनाथ चतुर्वेदी, प्रकाशक ग्रन्थ भंडार, लेडी हार्डिंज रोड, माटूंगा (बम्बई), दूसरा संस्करण १९२४, पृ० सं० ११६।

छोटी वहू

सन् १९१६ ई० में ही बँगला उपन्यासकार **बाबू फणीनाथ पाल** कृत 'छोटी बऊ' नामक उपन्यास का **पं० पारसनाथ त्रिपाठी** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'छोटी वहू' शीर्षक अनुवाद एक्सप्रेस प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ [1] इस उपन्यास में एक बंगाली परिवार का विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत किया गया है।

टाम काका की कुटिया अर्थात् गुलामी पर कुठार

इसी वर्ष **श्रीमती हेरिएट वीयर स्टो** कृत **'अंकल टॉम्स केबिन'** नामक उपन्यास के **श्री चंडीशरण सेन** कृत **'टाम काकार कुटीर'** शीर्षक बँगला अनुवाद का **बाबू महावीर प्रसाद पोद्दार** द्वारा प्रस्तुत 'टाम काका की कुटिया अर्थात् गुलामी पर कुठार' शीर्षक हिन्दी अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में हब्शियों पर अमरीकों द्वारा किये जानेवाले अत्याचारों का वर्णन है।

चन्द्रप्रभा चरित

इसी वर्ष **महाकवि वरनंदि** रचित किसी पुस्तक का **रूपनारायण पाण्डेय** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'चन्द्रप्रभा चरित' शीर्षक अनुवाद हिन्दी जैन साहित्य कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

तिलस्माती मुँदरी या कश्मीर के राजा की लड़की

सन् १९१६ ई० में **पं० श्रीधर पाठक** द्वारा अँगरेजी से अनूदित 'तिलस्माती मुँदरी या कश्मीर के राजा की लड़की' नामक उपन्यास श्री गिरिधर पाठक द्वारा लूकर गंज, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[4] उपन्यास के 'नोट' से, जो अँगरेजी भाषा में लिखित है, ज्ञात होता है कि यह कहानी १८६१ ई० में किसी अँगरेजी पत्र में, जिसके सम्पादक तथा कहानी के लेखक का नाम अज्ञात है, प्रकाशित हुई थी। श्रीधर पाठक ने उसी पत्र

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—छोटी वहू, एक गार्हस्थ उपन्यास, अनुवादक पंडित पारसनाथ त्रिपाठी, काव्यतीर्थ, बाँकीपुर, एक्सप्रेस प्रेस से श्याम नारायण सिंह द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, २००० प्रति, सं० १९७३, पृ० सं० ५५।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—टाम काका की कुटिया अर्थात् गुलामी पर कुठार, "संसार में हो कष्ट कम तो नरक में पहुँचाइये, पर हे दयानिधि दासता के दुःख मत दिखलाइये," अनुवादक (गोरखपुर निवासी) बाबू महावीर प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक इंडियन प्रेस, प्रयाग १९१६, पृ० सं० ५५८।

३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची,

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—तिलस्माती मुँदरी या कश्मीर के राजा की लड़की, अँगरेजी से, लेखक पं० श्रीधर पाठक, प्रकाशक श्री गिरिधर पाठक, लूकर गंज, इलाहाबाद, १९१६, पहली बार, पृ० सं० ६६।

से (पत्र का नाम नहीं दिया गया है) इस कहानी को हिन्दी में रूपान्तरित किया। इस रूपान्तर के आरम्भिक अंश, सर्वप्रथम, 'काशी पत्रिका' में फारसी अक्षरों में प्रकाशित हुए थे।

अनाथ बालक

सन् १९१६ ई० में ही **श्रीयुत चन्द्रशेखर कर** लिखित बँगला उपन्यास 'अनाथ बालक' का **पं० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1] यह अविकल अनुवाद है। इस उपन्यास में एक हिन्दू गृहस्थ की दशा का चित्र खींचा गया है।

१९१६ ई० में ही विवेच्य उपन्यास का **पं० पारसनाथ त्रिपाठी** कृत अनुवाद हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] इस अनुवाद के 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि पं० पारसनाथ त्रिपाठी ने इसके पूर्व '**मँझली बहू**' और '**संयोगिता**' नामक अनूदित उपन्यास प्रकाशित कराये थे।[3]

शुक्लवसना सुन्दरी

सन् १९१६ ई० में ही **पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा** द्वारा अनूदित 'शुक्लवसना सुन्दरी' नामक उपन्यास हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4] यह उपन्यास तीन भागों में प्रकाशित हुआ है। मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यासकार का नाम दिया हुआ है, न मूल उपन्यास का, न यही सूचना दी हुई है कि यह किस भाषा का अनुवाद है।

शान्ति निकेतन

'सरस्वती' अगस्त १९१७ ई० में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व प्रसिद्ध बँगला लेखक **बाबू दुर्गा दास लाहिरी** लिखित **सुख ओ शान्ति** नामक उपन्यास का **श्रीयुत गह्या भाई रामचन्द्र म्हेता** कृत 'शान्ति निकेतन' शीर्षक अनुवाद

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनाथ बालक (गार्हस्थ उपन्यास), बंगभाषा के सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक श्रीयुत् चन्द्रशेकर कर, विद्याविनोद महोदय के बंगला 'अनाथ बालक' का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक पं० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी, प्रकाशक इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्रथम बार १०००, १९१६ ई०, पृ० सं० १८४।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनाथ बालक (एक गार्हस्थ्य उपन्यास), अनुवादक पं० पारसनाथ त्रिपाठी, काव्यतीर्थ, प्रकाशक हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, सन् १९१६ ई०, प्रथम बार १०००, पृ० सं० २०७।

३. उपरिवत्, वक्तव्य।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। इसके प्रथम भाग का मुखपृष्ठ नहीं है। दूसरे मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शुक्लवसना सुन्दरी, दूसरा भाग, (उपन्यास), अनुवादक पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्रकाशक हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, सं० १९७३ वि०, प्रथम बार १०००। तीसरे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि उपरिवत्, पृ० सं० २७४।

सस्ती वार्तामाला, अहमदाबाद से प्रकाशित हुआ।[1] समीक्षक के अनुसार यह स्वतन्त्र अनुवाद है तथा "इसमें कथाछल से धर्म के तत्वों का निरूपण योग्यतापूर्वक किया गया है।"[2]

दशकुमार चरित

सन् १९१७ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व दंडी कृत संस्कृत गद्यकाव्य 'दशकुमार चरित' का **पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र** कृत हिन्दी अनुवाद वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[3] यह भावानुवाद है।

सूरजदेई

सन् १९१७ ई० में **चन्द्रशेखर कर** लिखित बँगला उपन्यास **'सुरबाला'** का **कृष्णानन्द द्विवेदी** कृत 'सूरजदेई' शीर्षक मुक्त अनुवाद श्री कृष्ण प्रसाद सिंह द्वारा पाटलीपुत्र से प्रकाशित किया गया।[4] यह एक स्वतन्त्र अनुवाद है। अनुवादक के शब्दों में "मैंने सोचा, कि ज्यों का त्यों अनुवाद न कर यदि इसका नाम धाम बदल इसे हिन्दी भाषाभाषियों के उपयुक्त कर दिया जाये, तो बहुत उत्तम हो। तद्नुसार न केवल इस पुस्तक में पात्रपात्रियों के नाम धाम ही बदले गये हैं, वरन् अनेक स्थानों में कुछ कुछ कथाभाग भी हिन्दी भाषाभाषियों के अनुकूल बना लिया गया है। फलतः पुस्तक अनुवाद होने पर भी अनेकांश में मूल सी बन गयी है।[5]

उपन्यास के विषय के सम्बन्ध में अनुवादक का कथन है कि 'सूरज देई' में प्रधानतः स्वामी के प्रति स्त्री का प्रभाव प्रदर्शन करने की चेष्टा की गयी है। साथ ही साथ पितृमातृ, भक्ति, मातृवात्सल्य, पारिवारिक प्रेम प्रभृति के भी छोटे छोटे चित्र अंकित किये गये हैं। यह दिखाना भी इस पुस्तक का एक लक्ष्य है कि पितृमातृ भक्ति के अभाव से मनुष्य का कहाँ तक अधःपतन हो सकता है।[6]

दामिनी

सन् १९१७ ई० में ही **बाबू संजीवनचन्द्र चटर्जी** के बँगला उपन्यास 'दामिनी' का **पं० ब्रजनन्दन प्रसाद मिश्र** वैद्य और **पं० रघुनन्दन प्रसाद मिश्र** द्वारा प्रस्तुत किया हुआ हिन्दी अनुवाद ब्रह्म प्रेस, इटावा से प्रकाशित हुआ।[7] अनुवाद के 'वक्तव्य' के अनुसार

---

१. सरस्वती, अगस्त १९१७, पुस्तक परिचय, (शान्ति निकेतन)।

२. उपरिवत्।

३. सरस्वती, भाग १८, संख्या ५, मई १९१७, पुस्तक परिचय (दशकुमार चरित)।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सूरज देई, ले० चन्द्रशेखर कर, अनुवादक कृष्णानन्द द्विवेदी, प्र० श्रीकृष्ण प्रसाद सिंह, मैनेजर पाटलिपुत्र, बाँकीपुर, प्रथम बार १०००, १९७४ वि०।

५. उपरिवत्, भूमिका।

६. उपरिवत्।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दामिनी, वंगभाषा के प्रसिद्ध

इसका (दामिनी का) बंगाल के पठित समाज में अच्छा प्रचार हुआ है। इसमें बंगाल के घरू जीवन का अथवा यह कहना ठीक होगा कि भारतवर्ष की एक गृह घटना का एक वृत्तान्त है। इसमें एक अनाथ बालक का चित्र खींचा गया है जो कि एक भले लड़के को बड़े आदर की दृष्टि से देखता था। इसमें विवाहित दम्पति के आनन्दमय जीवन का एक चित्र है तथा एक मुसलमान सिपाही की क्रूरता, हिन्दुओं की वीरता, सौतेली सास का कठोर वर्ताव और माता तथा पति का स्नेह दिखाये गये हैं।"[१]

उमा

सन् १९१७ ई० में ही **श्री पाँचकौड़ी वंद्योपाध्याय** लिखित 'उमा' नामक उपन्यास का **पं० पारसनाथ त्रिपाठी** कृत हिन्दी अनुवाद उपन्यास वहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] अनुवाद की भूमिका से ज्ञात होता है कि "इस पुस्तक के अनुवाद में कोई भी स्वतन्त्र परिवर्तन नहीं किया गया है। केवल कहीं कहीं पर भाव और विषय की स्पष्टता तथा सरसता के लिए वाक्यों की योजना में कुछ फेरफार कर दिया गया है। फिर भी कोई वात निज उत्पत्ति की नहीं है।"[३]

मोहिनी

सन् १९१७ ई० में ही **श्री भैया लाल जैन** द्वारा **रूपासुन्दरी** नामक गुजराती पुस्तक की छाया पर रचित 'मोहिनी' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[४] इसका दूसरा संस्करण १९२२ ई० में महावीर ग्रन्थ कार्यालय, आगरा से प्रकाशित हुआ।[५] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। द्वितीय संस्करण के 'प्राक्कथन' के अन्त में "फाल्गुनी पूर्णिमा सं० १९७३" मुद्रित होने से इसके प्रथम

लेखक वा० संजीवनचन्द्र चटर्जी लिखित, बँगला दामिनी का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक पं० ब्रजनन्दन प्रसाद मिश्र वैद्य, पं० रघुनन्दन प्रसाद मिश्र, पीली भीत, प्रकाशक—ब्रह्म प्रेस, इटावा, प्रथम वार १०००, सन् १९१७, पृ० सं० ३२।

१. उपरिवत्, वक्तव्य।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उमा (गार्हस्थ्य उपन्यास) श्रीयुत पाँचकौड़ी वंद्योपाध्याय वी० ए० के लिखे "उमा" नामक प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी अनुवाद, विहार निवासी पं० पारसनाथ त्रिपाठी काव्यतीर्थ द्वारा अनुवादित, जिसे काशीस्थ उपन्यास वहार ऑफिस के अध्यक्ष "उपन्यास वहार", "उपन्यास ग्रन्थ माला" और 'साहित्य सरोजमाला' के सम्पादक तथा अनेक उपन्यासों के लेखक वाबू जयराम दास गुप्त ने संशोधन कर प्रकाशित किया, प्रथम वार, दिसम्बर १९१७ ई०, पृ० सं० १७२।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. मोहिनी, द्वितीय संस्करण, १९२२, प्रस्तावना।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मोहिनी (अर्थात् विगड़े का सुधार और पतित का उद्धार) एक स्त्रियोपयोगी आख्यायिका लेखक श्रीयुत् भैयालाल जी जैन गाडखारा, सम्पादक व प्रकाशक—महेन्द्र कुमार जैन, महावीर ग्रन्थ कार्यालय, आगरा, द्वितीय संस्करण १०००, आश्विन शु० १, सं० १९७९, वीरसंवत् २४४८।

संस्करण का प्रकाशन-काल अनुमित होता है।[१] इस उपन्यास में सत्संग से चरित्र-संशोधन का दृश्य अंकित किया गया है।

गृहलक्ष्मी

१९१७ ई० में ही **राय परिवार** नामक किसी बँगला उपन्यास के **श्री छगन लाल नारायण भाई** कृत गुजराती अनुवाद **'गृहलक्ष्मी'** का **पण्डया मोती लाल नागर** द्वारा प्रस्तुत किया 'गृहलक्ष्मी' शीर्षक हिन्दी अनुवाद जयराम दास गुप्त द्वारा काशी से प्रकाशित हुआ।[2] न तो गुजराती अनुवाद अविकल था, न गुजराती से प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद ही अविकल है।

शकुन्तला की कथा

१९१७ ई० में ही **श्री चन्द्रशेखर शर्मा** द्वारा 'अभिज्ञान शाकुन्तल' के आधार पर लिखित 'शकुन्तला की कथा' प्रयाग से लाला राम दयाल अगरवाल द्वारा प्रकाशित की गयी।[3] ग्रन्थ की 'एक बात' से ज्ञात होता है कि इससे पूर्व विवेच्य लेखक द्वारा प्रस्तुत की हुई **मुद्राराक्षस की कथा** प्रकाशित हो चुकी थी और लोगों ने उसे पसन्द किया था।[४]

इलियड काव्यसार

१९१७ ई० में ही **होमर** कृत प्रसिद्ध महाकाव्य 'इलियड' के आधार पर **पं० उदय नारायण वाजपेयी** द्वारा लिखित 'इलियड काव्य सार' नामक कथापुस्तक पं० ओंकार नाथ वाजपेयी द्वारा प्रकाशित की गयी।[५]

---

१. मोहिनी, द्वितीय संस्करण, प्राक्कथन।

२. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गृहलक्ष्मी (स्त्री शिक्षा का एक अपूर्व उपन्यास) वंगभाषा के प्रसिद्ध 'रायपरिवार' नमाक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक पंड्या मोती लाला नागर, हाथरस.........जिसे काशीस्थ उपन्यास बहार के ऑफिस के अध्यक्ष "उपन्यास बहार", "उपन्यास ग्रन्थमाला" और 'साहित्य सरोजमाला' के सम्पादक तथा अनेक उपन्यासों के लेखक बाबू जयराम दास गुप्त ने संशोधन कर प्रकाशित किया, चन्द्र प्रभा प्रेस, बनारस सिटी में मैनेजर मुंशी गौरीशंकर लाल द्वारा मुद्रित, प्रथम बार, दिसम्बर सन् १९१७ ई०।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शकुन्तला की कथा, कविकुल गुरुकालिदास रचित संस्कृत अभिज्ञान शाकुन्तल का आलोचनात्मक कथा भाग, लेखक श्रीचन्द्रशेखर शर्म्मा, प्रकाशक लाला राम दयाल अगरवाल, बुक्सेलर कटरा, प्रयाग, प्रथम बार १९१७।

४. उपरिवत्, एक बात।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—इलियड काव्य सार, अर्थात् कवि चूणामणि होमर के जगद्विख्यात महाकाव्य 'इलियड' का मूल आख्यान, पं० उदय नारायण वाजपेयी, प्रणीत, प्रकाशक पं० ओंकारनाथ वाजपेयी, प्रथम संस्करण १९१७, पृ० सं० १२१।

अनूदित
ऐतिहासिक उपन्यास

विवेच्य काल में हिन्दी में उच्चस्तरीय पाठकों की रुचि के अनुकूल उत्कृष्ठ मौलिक ऐतिहासिक उपन्यासों का अभाव देखकर हिन्दी लेखकों का ध्यान हिन्दीतर भाषाओं के ऐतिहासिक उपन्यासों की ओर गया और मुख्यत: बँगला से तथा गौणत: अन्य भारतीय भाषाओं से पचासों ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी में अनूदित हुए। इन ऐतिहासिक उपन्यासाकारों में बँगला के बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, रमेशचन्द्र दत्त, चंडी चरण सेन, ननी लाल वंद्योपाध्याय आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। परवर्ती पृष्ठों में हिन्दी में अनूदित ऐतिहासिक उपन्यासों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

दुर्गेशनन्दिनी

सर्वप्रथम सन् १८८२ ई० में **बंकिम बाबू** के 'दुर्गेशनन्दिनी' नामक उपन्यास के अनुवाद का प्रथम खंड प्रकाशित हुआ। अनुवादकर्त्ता थे **बाबू गदाधर सिंह**।[१] उपन्यास की 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम यह अनुवाद 'कविवचन सुधा' में क्रमशः प्रकाशित हुआ था।[2]

"दुर्गेशनदिन्नी" के अनुवाद का दूसरा खंड प्रथम खंड के प्रकाशित होने के दो वर्ष वाद १८८४ ई० में प्रकाशित हुआ।[३] पता नहीं इसके प्रकाशन में इतना विलम्ब क्यों हुआ, पर पाठकों की कमी इसके मूल में अवश्य रही होगी। अनुवादक ने सूचना में इतना ही लिखा है कि "इसके प्रकाश में इतना विलम्ब क्यों हुआ, इसका कारण न लिखना ही उचित है।"[४]

'दुर्गेशनन्दिनी' का दूसरा संस्करण १८९६ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र० स० काशी की पुस्तक-सूची से उपर्युक्त सूचना प्राप्त होती है।

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीयुत् बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कृत दुर्गेशनन्दिनी, जिसको गदाधर सिंह, नायब तहसीलदार तहसौली देवगाँव, जिला आजमगढ़ ने वंगभाषा से अनुवाद किया, १८८२ ई०।

२. उपरिवत्, सूचना।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीयुत् बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कृत दुर्गेशनन्दिनी, जिसको गदाधर सिंह नायब तहसीलदार तहसौली देवगाँव, जिला आजमगढ़ ने वंगभाषा में अनुवाद किया, दूसरा खंड, १८८४ ई०,

४. उपरिवत्, अन्तिम आवरणपृष्ठ पर मुद्रित सूचना।

वाबू गदाधरसिंह द्वारा अनूदित 'दुर्गेशनन्दिनी' का तीसरा संस्करण १९०४ ई० में[1] और चौथा संस्करण १९१८ ई० में[2] लहरी प्रेस, काशी से मुद्रित तथा वाबू माधो प्रसाद द्वारा प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद का पाँचवाँ संस्करण भी कदाचित् वाबू माधो प्रसाद (धर्मकूप, बनारस सिटी) ने ही १९२१ ई० में प्रकाशित किया था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची में इसकी सूचना दी हुई है।

वाबू व्रजनन्दन सहाय ने 'दुर्गेशनन्दिनी' के वाबू राधाकृष्ण दास द्वारा प्रस्तुत एक अनुवाद की सूचना दी है। उन्हीं के शब्दों में, "पहले वाबू गदाधर सिंह ने इसका अनुवाद किया। फिर रामदीन सिंह के अनुरोध से वाबू राधाकृष्ण दास ने इसका दूसरा हिन्दी अनुवाद किया है। इसमें सन्देह नहीं कि पहले से दूसरा अनुवाद अच्छा है।[3] सन् १८९४ ई० में खड्गविलास प्रेस, से प्रकाशित 'राजसिंह' (अ० प्रताप नारायण मिश्र) के अन्तिम पृष्ठ पर मुद्रित विज्ञापन से ज्ञात होता है कि वाबू राधाकृष्ण दास कृत 'दुर्गेशनन्दिनी' का अनुवाद १८९४ ई० में उक्त प्रकाशन-संस्था से छप रहा था। इससे इस अनुवाद का प्रकाशन-काल १८९४ के लगभग सिद्ध होता है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। वाद में चलकर 'दुर्गेशनन्दनी' के और भी अनुवाद प्रस्तुत किये गये। सन् १९३२ ई० में इस उपन्यास का श्री कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय कृत अनुवाद हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से वंकिम ग्रन्थमाला, खंड ३ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ। १९४० ई० में श्री नाथ व्रदर्श, बनारस सिटी द्वारा प्रकाशित 'कपालकुंडला' के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर मुद्रित विज्ञापन से ज्ञात होता है कि 'दुर्गेशनन्दिनी' का कोई एक अनुवाद उक्त प्रकाशन संस्था से भी १९४० ई० के पूर्व प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असफल रहा है। लक्ष्मीनारायण सरोज ने इसका एक अनुवाद प्रस्तुत किया जिसका तीसरा संस्करण हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, बनारस से १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ। १९५४ ई० में कविराज कृष्ण कुमार अवस्थी द्वारा किया हुआ 'दुर्गेशनन्दनी' का एक अन्य अनुवाद श्री प्रभाकर साहित्यालोक (रानी कटरा, लखनऊ) द्वारा प्रकाशित किया गया। १९५८ ई० में हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय ने गोविन्द सिंह द्वारा सम्पादित कराकर 'दुर्गेशनन्दिनी' का एक वालसंस्करण प्रकाशित किया।

उपर्युक्त तथ्य इस वात के प्रमाण हैं कि १९५० ई० के वाद भी वंकिम वाबू के उपन्यासों की लोकप्रियता कुछ न कुछ वनी हुई है।

राजसिंह

वंकिम वाबू के 'राज सिंह' नामक उपन्यास का अनुवाद सर्वप्रथम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

१. प्रा० स्था०—आ० भा पु० काशी।
२. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना।
३. वाबू व्रजनन्दन सहाय, चन्द्रशेखर, प्र० खडगविलास प्रेस, वांकीपुर, १९०७ संक्षिप्त

ने प्रस्तुत किया था। उनकी मृत्यु के बाद यह अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से १८९४ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] इस अनुवाद के प्रत्येक परिच्छेद के आरम्भ में भारतेन्दु ने स्वरचित कविताओं के उद्धरण दिये हैं। १८९४ ई० में ही खड्गविलास प्रेस ने 'राजसिंह' का **पं० प्रताप नारायण मिश्र** द्वारा किया हुआ एक दूसरा अनुवाद प्रकाशित किया।[2]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और प्रताप नारायण मिश्र के बाद **श्री किशोरी लाल गोस्वामी** ने 'राजसिंह' का एक अनुवाद प्रस्तुत किया, जिसे खड्गविलास प्रेस ने ही १९१० ई० में प्रकाशित किया। इस पुस्तक की प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में उपलब्ध है, पर उसके आरम्भिक पृष्ठों के फटे रहने के कारण प्रकाशन काल अथवा संस्करण का पता नहीं चलता।

सन् १९१२ ई० में 'राजसिंह' का **पं० रामानन्द द्विवेदी** कृत अनुवाद रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर, वर्म्मन प्रेस, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इस अनुवाद का प्रथम संस्करण नहीं मिल सका है, पर इसके चतुर्थ संस्करण के साथ संलग्न प्रथम संस्करण की 'भूमिका' के नीचे "कलकत्ता, कार्तिक, कृष्ण ५, सं० १९६९" मुद्रित है।

इसकी भूमिका से ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में दत्त महाशय ने[3] इसके पात्रों का नाम बदल दिया था तथा अधिकांश में इसे नये ढंग का बनाना चाहा था, किन्तु इस संस्करण में अनुवादक तथा सम्पादक ने 'राजसिंह' पुस्तक से मिला उन्हें ठीक कर दिया है, फलतः बहुत कुछ संशोधन तथा परिवर्द्धन हुआ है।"[4]

प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक उक्त अनुवाद के प्रथम, द्वितीय या तृतीय संस्करणों को प्राप्त कर सकने में असमर्थ रहा है। इसका चौथा संस्करण १९२३ ई० में रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर, वर्म्मन प्रेस, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुआ था।[5]

जीवनी, द्रष्टव्य पृ० ३०६।

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राय बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, सी आई ई० कृत राजसिंह, अथवा राजपूताने का अंतिम वीर, भारत, भूषण भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द द्वारा अनुवादित, हिन्दी भाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिए क्षत्रिय पत्रिका सम्पादक म० कु० बाबू रामदीन सिंह द्वारा प्रकाशित, "खड्गविलास" प्रेस, बाँकीपुर, साहिब प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित, १८९४, प्रथम बार, ८००।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राय बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय······ कृत राजसिंह, ब्राह्मण सम्पादक पंडित प्रताप नारायण मिश्र द्वारा अनुवादित······म० कु० बाबू रामदीन सिंह द्वारा प्रकाशित, "खड्गविलास" प्रेस, बाँकीपुर, साहिब प्रसाद द्वारा मुद्रित, १८९४, प्रथम बार ८००, पृ० सं० ६०।

३. प्राणतोषदत्त, वीरभारत के, जिसमें यह उपन्यास क्रमशः प्रकाशित हुआ था, अध्यक्ष।

४. राजसिंह, अ० पं० रामानन्द द्विवेदी, प्र० रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर "वर्म्मन प्रेस" और आर० एल० वर्म्मन ऐंड को०, अपर चीतपुर रोड कलकत्ता, चतुर्थ संस्करण, १९८० वि०, भूमिका।

५. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी।

हरिदास वैद्य ने भी 'राजसिंह' का एक अनुवाद प्रस्तुत किया था, जिसका दूसरा संस्करण १९१८ ई० में हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद के प्रथम या द्वितीय दोनों में से किसी भी संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

'राज सिंह' का एक अन्य अनुवाद **रामदीप सिंह** ने भी प्रस्तुत किया था, जिसका दूसरा संस्करण १९३७ ई० (१९९४ वि०) में हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से वंकिम ग्रन्थ-माला, द्वितीय खंड के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।[1] इस अनुवाद का तीसरा संस्करण १९४६ ई० में प्रकाशित हुआ।[2]

'राजसिंह' का एक अन्य अनुवाद **श्री कृष्ण हसरत** ने भी प्रस्तुत किया, जिसका तीसरा संस्करण १९५४ ई० में हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[3] इस अनुवाद के प्रथम दो संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं प्राप्त हो सके हैं, इस कारण उनके सम्बन्ध में कोई सूचना दे पाना सम्भव नहीं हो सका है।

चन्द्रशेखर

वंकिम बाबू के 'चन्द्रशेखर' नामक उपन्यास का, बाबू **व्रजनन्दन सहाय** कृत अनुवाद १९०७ ई० में खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[4] इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

'चन्द्रशेखर' का एक अन्य अनुवाद **पारसनाथ त्रिपाठी** ने भी प्रस्तुत किया था, जिसका पहला संस्करण १९१५ ई० में और दूसरा संस्करण १९१८ ई० में प्रकाशित हुआ था। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद के दूसरे संस्करण की एक प्रति उपलब्ध है पर उसके मुखपृष्ठ के फटे रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिलती। सौभाग्यवश ग्रन्थ में प्रथम संस्करण की भूमिका और द्वितीय संस्करण का 'वक्तव्य' संलग्न है, जिनके नीचे क्रमशः "शाहपुर पट्टी, आरा, जेष्ठ शु० १३ सं० १९७२" और "१-८-१८" मुद्रित हैं।[5]

सन् १९३२ ई० में विवेच्य उपन्यास का **श्री कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय** कृत

---

१. द्रष्टव्य, पृ० २६१।

२. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना।

३. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वंकिमचन्द्र चटर्जी, सी० आई० कृत, चन्द्रशेखर, वृजविनोद, हनुमान लहरी, कलंक मोचन, अद्भुत प्रायश्चित, सहम प्रतिमा और अर्थशास्त्र आदि ग्रंथों के रचयिता अखतियारपुर, जिला आरा निवासी बाबू वृजनन्दन सहाय (उपनाम वृजवल्लभ), वकील, आरा कृत हिन्दी अनुवाद, म० कु० बाबू रामरण विजय सिंह द्वारा प्रकाशित, पटना, "खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, बाबू चंडी प्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित, १९०७।

५. चन्द्रशेखर, अ० पारसनाथ त्रिपाठी, द्वितीय संस्करण, १९१८, वक्तव्य।

अनुवाद हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, कलकत्ता से बंकिम ग्रन्थमाला, खंड ३ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ।[1]

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-पंजी में इस अनुवाद का शीर्षक **चन्द्रशेखर वा शैवालिनी** दिया हुआ है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि इसका दूसरा संस्करण १९१८ ई० में हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।

'चन्द्रशेखर' का **श्री कमल, बी० ए०** कृत एक अनुवाद १९५३ ई० में श्री प्रभाकर साहित्यलोक, रानी कटरा, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[2] इसका एक अनुवाद किताब महल, इलाहाबाद से १९५७ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था।[3] १९५८ ई० में मुद्रित इंडियन प्रेस, इलाहाबाद तथा हिन्दी प्रचारक पुस्कालय की पुस्तक सूचियों से ज्ञात होता है कि उक्त प्रकाशन-संस्थाओं से भी 'चन्द्रशेखर' के एक एक अनुवाद प्रकाशित हो चुके थे।

इस प्रकार सन् १९०७ ई० से लेकर १९५८ ई० तक 'चन्द्रशेखर' के कम से कम ५ अनुवाद हो चुके थे। यह इस उपन्यास की लोकप्रियता का परिचायक है।

रमेशचन्द्र दत्त

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में जिन बँगला उपन्यासकारों के ग्रन्थों के अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत किये गये उनमें रमेशचन्द्र दत्त भी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने बँगला में 'बंग विजेता', 'माधवी कंकण', 'जीवन प्रभात' और 'जीवन संध्या में' नाम ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की थी। हिन्दी में उपर्युक्त सभी उपन्यासों के अनुवाद प्रस्तुत किये गये और तत्कालीन पाठकों के बीच लोकप्रिय भी हुए।

बंग विजेता

सर्व प्रथम **बाबू गदाधर सिंह** ने रमेशचन्द्र दत्त के 'बंग विजेता' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का अनुवाद प्रस्तुत किया जिसके कुछ अंश 'सारसुधानिधि' के १९७९ ई० के अंकों में प्रकाशित हुए।[4] पुस्तक रूप में यह अनुवाद कदाचित् १८८६ ई० में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। पर 'आनन्द कादंबिनी' (श्रावण तथा भाद्रपद वि० सं० १९४३) और 'हिन्दी प्रदीप' (अगस्त १८८६) में प्रकाशित इस उपन्यास की समीक्षाओं को पढ़ने से इसका प्रकाशन-काल

---

१. विशेष सूचना के लिए द्रष्टव्य पृ० २६२।

२. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० पु० पटना।

३. चारुलता, ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्र० किताब महल, ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद, १९५७, अन्तिम आवरणपृष्ठ का विज्ञापन।

४. बंगविजेता, सारसुधानिधि, अंक २०, २६ मई १८७९, अंक ३१, ११ अगस्त १८७९। प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

१८८६ ई० अनुमित होता है ।[1] 'आनन्द कादंबिनी' में प्रकाशित समीक्षा में इस उपन्यास के प्रत्येक परिच्छेद की अलग अलग समालोचना की गयी है, जिससे ज्ञात होता है कि यह अकबर कालीन किसी घटना के आधार पर प्रस्तुत किया गया है ।

इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १९२१ ई० में माधो प्रसाद, धर्मकूप कार्यालय, धर्मकूप, काशी द्वारा प्रकाशित किया गया । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस द्वितीय संस्करण को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से संकलित की गयी हैं ।

श्याम कुमारी

आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक-सूची से ज्ञात होता है किसी रूप नारायण नामक सज्जन ने रमेशचन्द्र दत्त के किसी उपन्यास का श्याम कुमारी शीर्षक से अनुवाद प्रस्तुत किया था, जो बाल मुकुन्द वर्मा, सती चौरा, काशी द्वारा १८९६ ई० में प्रकाशित हुआ था । आर्यभाषा पुस्तकालय में उपर्युक्त पुस्तक उपलब्ध नहीं होती । किसी अन्य स्रोत से भी मैं इसके सम्बन्ध में कोई सूचना उपलब्ध कर पाने में असमर्थ रहा हूँ ।

माधवी कंकण

रमेशचन्द्र दत्त के 'माधवी कंकण' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का अनुवाद १९०१ ई० के पूर्व हो चुका था । पं० बलदेव प्रसाद मिश्र ने 'जीवन प्रभात' के अनुवाद की भूमिका में इस तथ्य का उल्लेख करते हुए लिखा है ।

"बाबू रमेशचन्द्र दत्त जी के तीन उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी भाषा में, हो चुका है । माधवी कंकण का अनुवाद अत्यन्त नीरस और कठिन हुआ है । विभक्तियाँ ज्यों की त्यों रख दी हैं । और जीवन प्रभात का अनुवाद मैंने किया है ।[2]

इस उद्धरण से यह नहीं ज्ञात होता कि उक्त अनुवाद के अनुवादक कौन थे अथवा इसका प्रकाशन किस समय, किस प्रकाशन-संस्था से, हुआ था । चैतन्य पुस्तकालय, पटना में गोपालराम गहमरी कृत 'माधवी कंकण' का एक अनुवाद उपलब्ध है ।[3] 'माधवी कंकण' का एक दूसरा अनुवाद पं० जनार्दन झा ने प्रस्तुत किया, जो इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इस अनुवाद का प्रथम संस्करण नहीं प्राप्त हो सका है; अतः उसके प्रकाशन-काल की सूचना दे पाना कठिन है । फरवरी १९१६ ई०

---

१. आनन्द कादम्बिनी, श्रावण तथा भाद्रपद वि० सं० १९४३, पुस्तक समीक्षा (बंग विजेता); प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी; हिन्दी प्रदीप, जिल्द ९, सं० १२ (अगस्त १८८६), बंग विजेता उपन्यास ।

२. शिवाजी विजय अर्थात् जीवन प्रभात, ले० रमेशचन्द्रदत्त, अ०—पं० बलदेव प्रसाद मिश्र, प्र० वेंकटेश्वर मुद्रणालय, सं० १९६६, प्रथम संस्करण, भूमिका ।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि —माधवी कंकण, ऐतिहासिक घटना सम्बन्धित एक उत्तम उपन्यास, बाबू गोपाल राम गहमर निवासी द्वारा अनुवादित ।

की 'सरस्वती' में इस अनुवाद का एक विज्ञापन प्राप्त होता है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि यह इसके पूर्व प्रकाशित हो चुका था।

पं० जनार्दन झा कृत उपर्युक्त अनुवाद का तीसरा संस्करण १९२२ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1]

'माधवी कंकण' का एक अन्य अनुवाद **रूपनारायण पांडेय** ने भी प्रस्तुत किया, जो माया प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में है। ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर न रचनाकाल दिया हुआ है, न संस्करण-संख्या। इस कारण इसके सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी कह पाना सम्भव नहीं है।

शिवाजी विजय अर्थात् जीवन प्रभात

रमेशचन्द्रदत्त के 'जीवन प्रभात' उपन्यास का अनुवाद सर्वप्रथम **पं० बलदेव प्रसाद मिश्र** ने लगभग १८८९ ई० में पूरा किया था।[2] यह अनुवाद, सर्वप्रथम, १९०१ ई० में 'शिवाजी विजय अर्थात् जीवन प्रभात' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसकी एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है पर इसके आरम्भिक पृष्ठों के फट जाने के कारण प्रकाशक या प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती।

विवेच्य अनुवाद का द्वितीय संस्करण १९०९ ई० में वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[3] इस संस्करण में प्रथम संस्करण की भूमिका (ता० २२-६-१९०१ ई०-लिखित) संलग्न है, जिससे उसका प्रकाशन-काल ज्ञात हो जाता है।

सन् १९१३ ई० में विवेच्य उपन्यास का **श्री रुद्रनारायण** द्वारा किया हुआ अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[4]

जीवन सन्ध्या

रमेशचन्द्र दत्त के 'जीवन सन्ध्या' नामक उपन्यास का अनुवाद सर्वप्रथम **उदित नारायण लाल वर्मा** ने प्रस्तुत किया, जो बाबू रामकृष्ण वर्मा, सम्पादक, भारतजीवन द्वारा प्रकाशित किया

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माधवी कंकण, रोचक और शिक्षादायक उपन्यास, परलोकवासी श्रीरमेशचन्द्र दत्त लिखित बँगला उपन्यास का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक श्री जनार्दन झा, प्रकाशक इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, तृतीय संस्करण, १९२२, पृ० सं० २२६।

२. 'शिवाजी विजय अर्थात् जीवन प्रभात' की १९०१ ई० में लिखित भूमिका में अनुवादक ने लिखा है कि "कोई १२ वर्ष बीते होंगे कि इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद मैंने किया।"

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भारतहितैषी बंगगौरव रवि, सर रमेशचन्द्र दत्त (सी० एस० आई० ई०) कृत शिवाजी विजय अर्थात् जीवन प्रभात, मुरादाबाद निवासी पंडित बलदेव प्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित, जिसको खेमराज श्रीकृष्ण दास ने बम्बई निज "श्री वेंकटेश्वर" स्टीम मुद्रणालय में मुद्रित कर प्रकाशित किया। संवत् १९६६, शके १८३१।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

गया। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति उपलब्ध है, किन्तु उसके आरम्भिक पृष्ठ फटे हुए हैं, जिस कारण इसके प्रकाशक, प्रकाशन-काल अथवा संस्करण-संख्या आदि का कुछ भी पता नहीं चल पाता। अनुवाद की भूमिका से, जो बची हुई है, केवल इतना ही ज्ञात हो पाता है कि इसे 'भारत जीवन' सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्मा ने प्रकाशित किया था।

सन् १९१३ ई० में विवेच्य उपन्यास का **श्री जनार्दन झा** कृत अनुवाद **राजपूत जीवन संध्या** शीर्षक से इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ[1]

चंडीशरण सेन

चंडीशरण सेन बँगला के एक लब्धप्रतिष्ठ ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। हिन्दी में तिलस्मी, जासूसी और कामोत्तेजक उपन्यासों की बाढ़ देखकर १९०५ ई० के लगभग हिन्दी हितैशियों का ध्यान इनके ऐतिहासिक उपन्यासों की ओर आकृष्ट हुआ था।

अवध की बेगम

सर्वप्रथम १९०५ ई० विवेच्च उपन्यासकार के किसी उपन्यास का बाबू **गंगाप्रसाद गुप्त** कृत अनुवाद 'अवध की बेगम' शीर्षक से भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी के 'द्विवेदी संग्रह' में इस अनुवाद की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ पर अनुवादक, प्रकाशक तथा प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं दी हुई है।[2] उपर्युक्त सूचनाएँ उक्त पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। उपलब्ध प्रति की भूमिका के नीचे "काशी अप्रैल १९०५ ई०" लिखा हुआ है तथा 'सरस्वती' (सितम्बर १९०५) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा में उसे भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित बताया गया है,[3] जिससे ऊपर दिये हुए प्रकाशन-काल की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

विवेच्य अनुवाद की 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद कई भागों में समाप्त होने वाला था। आर्यभाषा पुस्तकालय में इसके दो भाग उपलब्ध हैं। शेष भाग प्रकाशित हुए अथवा नहीं, इसका पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

'अवध की बेगम' एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें अँगरेजी शासन के प्रारम्भिक दिनों में अवध की दयनीय अवस्था तथा अवध की बेगमों पर अँगरेजों द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजपूत जीवन सन्ध्या, मिस्टर आर० सी० दत्त लिखित बँगला पुस्तक का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक श्री जनार्दन झा, प्रकाशक इंडियन प्रेस, प्रयाग, १९१३, प्रथम संस्करण, पृ० सं० २२१।

२. आ० भा० पु०, द्विवेदी संग्रह, अवध की बेगम, गंगा प्रसाद गुप्त, पृ० सं० ७४।

३. सरस्वती, भाग ६, संख्या ९, सितम्बर १९०५, पुस्तक परीक्षा (अवध की बेगम)।

मानकुमारी

सन् १९१५ ई० में चंडी बाबू के रामेर कि एइ अयोध्या नामक उपन्यास का बाबू ब्रजचन्द कृत अनुवाद 'मानकुमारी' शीर्षक से केदारनाथ पाठक ऐंड सन्स द्वारा प्रकाशित हुआ।[1] ग्रन्थ के 'उपक्रम' से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद १९०८ ई० में ही पूरा हो चुका था, और १९०८ के अक्टूबर महीने में मुद्रणार्थ लहरी प्रेस, काशी को दे दिया गया था, पर लेखक के अस्वस्थ रहने तथा अन्य कारणों से यह ६ वर्ष बाद १९१५ ई० में प्रकाशित हो पाया। 'मानकुमारी' हिन्दी के उन थोड़े से अनूदित उपन्यासों में गणनीय है, जिनके अनुवाद में अनुवादक को मूल लेखक से कम श्रम नहीं करना पड़ता। इसके 'उपक्रम' को पढ़ने से यह भलीभाँति स्पष्ट हो जाता है कि अनुवादक ने इस अनुवाद को प्रस्तुत करने में अधिक सम्भव प्रयास किया है। अनुवाद को रोचक बनाने के लिए, तथा ऐतिहासिक पात्रों का परिचय प्रस्तुत करने के लिए, अनुवादक ने अवध के इतिहास से सम्बन्ध रखनेवाली भिन्न भिन्न भाषाओं की पुस्तकों का अध्ययन किया "जिनमें तवारीख अवध, लखनऊ की नवाबी (बाबू ठाकुर प्रसाद खत्री द्वारा अनुवादित), मि० हंटर कृत लखनऊ गाइड (अँगरेजी), मसनवी मीरहसन (उर्दू) इत्यादि प्रधान हैं।[2] इन ग्रन्थों की सहायता से लेखक ने परिशिष्ट में उपन्यास के ऐतिहासिक पात्रों का संक्षिप्त परिचय दिया है, तथा मूल उपन्यास में यत्किंचित परिवर्तन भी करने से नहीं हिचका है। फिर भी यथासम्भव मूल ग्रन्थकार के भावों की रक्षा करने का प्रयत्न अनुवादक ने किया है। इस उपन्यास में इसके ऐतिहासिक पात्रों के अनेक सुन्दर चित्र दिये गये हैं। इस चित्रों को प्राप्त करने में लेखक को कैसी कैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, इसका वर्णन अनुवादक ने 'उपक्रम' में किया है।[3]

प्रकाशकीय वक्तव्य से ज्ञात होता है कि चंडीशरण सेन ने इस उपन्यास की रचना किसी अँगरेजी पुस्तक के आधार पर की थी। उस पुस्तक तथा उसके लेखक का उल्लेख नहीं किया गया है।[4]

हिन्दी में अनूदित होने के पूर्व विवेच्य उपन्यास के अनुवाद मराठी, उर्दू तथा गुजराती में हो चुके थे। मराठी में इसका अनुवाद श्रीयुक्त पं० काशी नाथ राव रघुनाथ मित्र ने तथा गुजराती में प्रसिद्ध साप्ताहिक "गुजराती" के संपादक ने किया था।[5]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मानकुमारी, अर्थात् अवध के नवाबी शासन से सम्बन्ध रखने वाला एक विचित्र ऐतिहासिक उपन्यास, बाबू ब्रजचन्द द्वारा अनुवादित तथा केदारनाथ पाठक ऐंड सन्स द्वारा प्रकाशित, प्रिंटेड बाइ पन्नालाल राय, मैनेजर ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम बार १०००, १९१५, पृ० सं० ८१+३३४+५=४२०।

२. मानकुमारी, अ० बाबू ब्रजचन्द, प्र० केदारनाथ पाठक ऐंड सन्स, १९१५, उपक्रम।

३. उपरिवत्।

४. उपरिवत्, वक्तव्य।

५. उपरिवत्।

'मानकुमारी' का दूसरा संस्करण १९३६ ई० या उसके निकटपूर्व में लीडर प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[1] दिसम्बर १९३६ ई० की 'सरस्वती' में 'पुस्तक-परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत विवेच्य संस्करण की समीक्षा प्रकाशित हुई थी।[2]

नवाबी के अन्तिम दिन

'रामेर कि एइ अयोध्या' का श्री **प्रफुल्लचन्द्र शर्मा** कृत अनुवाद 'नवाबी के अन्तिम दिन' शीर्षक से, आनन्द पुस्तक माला कार्यालय, पूर्णिया से, १९३६ ई० में प्रकाशित हुआ।[3] 'मान कुमारी' की तुलना मेंइस अनुवाद का स्तर बहुत निम्न है। अनुवादक ने मूल ग्रन्थ के अनेक स्थलों को, जान बूझकर या असावधानी वश छोड़ दिया है। इस अनुवाद के किसी अन्य संस्करण का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

ननीलाल वंद्योपाध्याय

ननीलाल वद्योपाध्याय के तीन ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुवाद हिन्दी में हुए थे। ये उपन्यास है—'अमृतपुलिन', 'कोहेनूर' और 'शैलबाला'।

अमृत पुलिन

सर्वप्रथम सन् १९०६ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'अमृत पुलिन' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का **श्री मुरलीधर शर्मा** कृत अनुवाद भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] इसके अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

विलास कुमारी वा कोहेनूर

विवेच्य उपन्यासकार के **कोहेनूर** नामक ऐतिहासिक उपन्यास का अनुवाद **पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा** ने 'विलास कुमारी वा कोहेनूर' शीर्षक से प्रस्तुत किया था। इस अनुवाद का प्रथम संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं प्राप्त हो सका है। किसी अन्य स्रोत से भी इस अनुवाद का प्रकाशन-काल नहीं ज्ञात हो सका है। 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद 'अमृत पुलिन' के हिन्दी अनुवाद को पढ़कर उसी की प्रेरणा से,

---

१. प्रा० स्था०—प० वि० पु०. पटना।
२. सरस्वती, भाग ३७, खंड २, अंक ६, दिसम्बर १९३६, पुस्तक परिचय (मानकुमारी)।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नवाबी के अन्तिम दिन (ऐतिहासिक उपन्यास) लेखक श्री चंडीशरण सेन, अनुवादक श्री प्रफुल्लचन्द्र शर्मा। प्रकाशक राघव प्रसाद गुप्त आनन्द पुस्तक माला कार्यालय, पूर्णिया, प्रथम बार २०००, अक्तूबर १९३६, पृ० सं० २५६।
४. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीयुत बाबू ननीलाल वंद्योपाध्याय प्रणीत अमृत पुलिन, ऐतिहासिक उपन्यास, मुरलीधर शर्मा द्वारा अनुवादित, इसके छपने इत्यादि का पूर्ण अधिकार भारत जीवन के अध्यक्ष बाबू रामकृष्ण वर्मा को है। काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ, सन् १९०६ ई०, प्रथम बार ११००, पृ० सं० १६०।

प्रस्तुत किया गया था। सर्वप्रथम, इसके प्रथम खंड का अधिकांश अनुवादक द्वारा सम्पादित 'मनोरंजक' मासिक पत्र में क्रमशः प्रकाशित हुआ था। अनुवादक इसे पुस्तक रूप में भी स्वयं ही प्रकाशित करना चाहता था, पर आर्थिक कठिनाइयों के कारण विवश होकर उसे इसे प्रकाशित करने का अधिकार हरिदास ऐंड कंम्पनी, कलकत्ता से देना पड़ा।[१]

कदाचित् इस अनुवाद का प्रथम संस्करण उक्त प्रकाशन-संस्था से ही प्रकाशित हुआ। 'विलास कुमारी वा कोहेनूर' का द्वितीय संस्करण हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से सन् १९१८ ई० में प्रकाशित हुआ।[२]

शैलबाला

सन् १९१७ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'शैलबाला' नामक उपन्यास का **पं० रामानन्द्र द्विवेदी** कृत अनुवाद पटना से श्री कृष्ण प्रसाद सिंह चौधरी द्वारा प्रकाशित हुआ।[३] पापपुण्य के संग्राम में पुण्य की विजय और पातिव्रत धर्म की महिमा दिखाना उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य है।

शैलबाला का **श्रीमती सावित्री देवी** कृत अनुवाद पुस्तक भवन, बनारस सिटी से १९२४ ई० में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'माधुरी' के मई १९२४ ई० के अंक में प्रकाशित 'शैल वाला' की समीक्षा तथा आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।[४] उक्त समीक्षा से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास इस्ट इंडिया कम्पनी के आरम्भिक दिनों की ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर लिखा गया है।

हरिसाधन मुखोपाध्याय

रंगमहल रहस्य

सन् १९१५ ई० के लगभग हिन्दी लेखकों और प्रकाशकों का ध्यान हरिसाधन मुखोपाध्याय के ऐतिहासिक रोमांसों की ओर आकृष्ट हुआ। हरिसाधन मुखोपाध्याय ने

---

१. विलास कुमारी वा कोहेनूर, अ० पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता दूसरी बार, १९१८, भूमिका।
२. प्रा० स्थान—आ० भा पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विलास कुमारी वा कोहेनूर, ऐतिहासिक उपन्यास, 'मनोरंजन' सम्पादक पं० ईश्वर प्रसाद शर्मा द्वारा अनुवादित, प्रकाशक हरिदास ऐंड कम्पनी, २०१ हरिसन रोड के नरसिंह प्रेस में बाबू राम प्रसाद भार्गव द्वारा मुद्रित, दूसरी बार, सन् १९१८ ई०, पृ० सं० २१८।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शैलबाला, एक शिक्षापूर्ण मनोहर उपन्यास, मिरजापुर सीखड़ निवासी पं० रामानन्द द्विवेदी अनुवादित, पाटलिपुत्र के प्रवन्धकर्त्ता श्रीकृष्ण प्रसाद सिंह चौधरी द्वारा प्रकाशित, बाँकीपुर एक्सप्रेस प्रेस से श्री श्याम नारायण सिंह कर्तृक मुद्रित, १०००, १९७४।
४ माधुरी, वर्ष २, खंड २, सं० ४, मई १९२४, शैलबाला।

रेनाल्ड के 'मिस्ट्रीज ऑफ दि कोर्ट ऑफ लन्दन' के अनुकरण पर बँगला में 'रंगमहल रहस्य अर्थात् मिस्ट्रीज ऑफ दि मुगल हरम' नामक ऐतिहासिक रोमांस लिखा था। इस उपन्यास में, 'लन्दन रहस्य' की पद्धति पर पात्रों के रूप में ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम तो आए हैं, पर इसकी घटनाएँ कल्पनाप्रसूत और अनैतिहासिक हैं। अकबर के पुत्र सलीम के अपराधों और व्यभिचारों का वर्णन कर अपरिष्कृत पाठकों को सन्तुष्ट करना ही प्रस्तुत उपन्यास का लक्ष्य है।

हिंदी पाठकों में रेनाल्ड के 'लन्दन रहस्य' की लोकप्रियता देख श्री एम० पी० सेठ (गऊघाट, मिरजापुर) ने हरिसाधन मुखोपाध्याय के 'रंगमहल रहस्य' का श्री रामानन्द द्विवेदी कृत अनुवाद १९१५ ई० में खंडशः प्रकाशित करना आरम्भ किया। इसका प्रथम खंड १९१५ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] उपन्यास के सभी खंडों का छपना कब समाप्त हुआ इसकी सर्वथा प्रामाणिक सूचना दे पाना प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक के लिए कठिन है। इसके सभी खंड मुझे अब तक प्राप्त नहीं हो सके हैं। माहेश्वरी पुस्तकालय, पटना में इसका चौथा खंड उपलब्ध है, पर इसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल सम्बन्धी सूचना नहीं दी हुई है।[2] इतना स्पष्ट है कि अप्रील १९१६ ई० के पूर्व इस अनुवाद के सभी खंड प्रकाशित हो चुके थे। 'सरस्वती', भाग १७, संख्या ४ (अप्रैल १९१६ ई०) में इस अनुवाद की समीक्षा प्रकाशित हुई थी।[3] उक्त समीक्षा के अनुसार इस ग्रन्थ की पृष्ठसंख्या ६७० है।

'रंगमहल रहस्य' की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में भी है, पर इसके आरम्भिक पृष्ठों के न रहने के कारण इसके प्रकाशन काल आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। यह प्रति विवेच्य अनुवाद का कोई अन्य संस्करण मालूम पड़ती है। सरस्वती (अप्रील १९१६) में समालोचित संस्करण से इस संस्करण की भिन्नता कई बातों में है। इस प्रति की पृष्ठसंख्या ६२१ है जबकि प्रथम प्रति की पृष्ठसंख्या ६७२ है। पुनरपि यह संस्करण पूर्वोल्लिखित संस्करण की तरह खंडों में विभाजित नहीं है। दोनों प्रतियों के प्रकाशक के नामों में भी भिन्नता है। पहली प्रति एम० पी० सेठ द्वारा प्रकाशित है जबकि इस प्रति में प्रकाशक का नाम मतवाला कार्यालय, कलकत्ता दिया हुआ है। इससे प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक का अनुमान है कि आर्यभाषा पुस्तकालय में संगृहीत प्रति विवेच्य अनुवाद का द्वितीय संस्करण है।

---

१. प्र० स्था०—मै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रंगमहल रहस्य (ऐतिहासिक उपन्यास), अर्थात् मिस्ट्रीज ऑफ दी मुगल हरम, मुगल बादशाहों के अन्तःपुर की गोपनीय बातें, पहला खंड, श्रीयुक्त हरिसाधन मुखोपाध्याय के बँगला ग्रन्थ "रंगमहल रहस्य" का हिन्दी अनुवाद। गऊ घाट, मिरजापुर के श्रीयुक्त एम० पी० सेठ द्वारा प्रकाशित।
आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीयुक्त हरिसाधन मुखोपाध्याय के बँगला ग्रन्थ से मिरजापुर सांखड़ निवासी वीर भारत सम्पादक रामानन्द द्विवेदी अनुवादित। महादेव प्रसाद सेठ द्वारा नं० १२. हरी सरकार लेन, बड़ा बाजार, कलकत्ता से प्रकाशित, सन् १९२५ ई०।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि पहले खंड के मुखपृष्ठ की तरह।

३. सरस्वती, भाग १७, संख्या ४, अप्रील १९१६ ई०।

सलीमा बेगम

विवेच्य उपन्यासकार के 'सलीमा बेगम' नामक उपन्यास का **पारसनाथ त्रिपाठी** कृत अनुवाद हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से १९१६ ई० में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

फुटकल

अनूदित ऐतिहासिक उपन्यास

सच्चा सपना

सन् १८९० ई० में पं० **विजयानन्द द्वारा** बँगला से अनूदित 'सच्चा सपना' नामक उपन्यास, जिसे ऐतिहासिक उपन्यास की संज्ञा दी गयी है, भारत जीवन यंत्रालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] बँगला में इस उपन्यास की रचना **श्रीयुत भूदेव मुखोपाध्याय** ने एक अँगरेजी ग्रन्थ **रोमांस ऑफ हिस्टरी** के प्रथम उपाख्यान के आधार पर की थी।[2]

अकबर

सन् १८९१ ई० में **पानलिम्बर्ग ब्राउमर** लिखित 'अकबर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का **रामकृष्ण वर्मा** कृत अनुवाद भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] यह उपन्यास सर्वप्रथम १८७२ ई० में हालैंड के हेग नामक नगर में, डच भाषा में, प्रकाशित हुआ। सन् १८७७ ई० में इसका जर्मन अनुवाद लिपजिग से प्रकाशित हुआ।[4] रामकृष्ण वर्मा ने अपना अनुवाद जर्मन अनुवाद के अँगरेजी अनुवाद से प्रस्तुत किया। यह एक स्वतन्त्र अनुवाद या रूपान्तर है।[5]

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सच्चा सपना, ऐतिहासिक उपन्यास, जिसे श्रीकवि पं० विजयानन्द जी भदैनी बनारस ने हिन्दी रसिकों के विनोदार्थ वंग भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद किया। जिसे यह ग्रन्थ लेना हो वह भारत जीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्मा को लिखे। काशी, भारत जीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ। सन् १८९० ई० मूल्य ≡)।

२. उपरिवत्, निवेदन।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अकबर, प्रथम भाग, जिसमें शाहंशाह बादशाह अकबर के समय का वृत्तान्त राजकाज का हाल और तत्समय की राज्य परिपाटी का प्रचार उपन्यास की रीति से वर्णन किया गया है, जिसे भारत जीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्मा ने सर्वसाधारण के उपकार के लिए हिन्दी भाषा में प्रकाश किया। काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ, सन् १८९१।

४. उपरिवत्, भूमिका।

५. उपरिवत्।

दीप निर्वाण

१८९१ ई० में ही मुंशी उदित नारायण लाल वर्मा द्वारा बँगला से अनूदित 'दीप निर्वाण' नामक ऐतिहासिक उपन्यास जिसमें पृथ्वीराज के पराजय की कहानी वर्णित है, भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास की रचयित्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अग्रजा श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी थीं जिन्होंने १८ वर्ष की अवस्था में, सन् १८७५ ई० में, इस उपन्यास की रचना की थी। अनुवाद के मुखपृष्ठ पर मूल लेखिका का नाम नहीं दिया हुआ है। यह सूचना 'हुगली का इमामवाड़ा' (ले० स्वर्णकुमारी देवी) की व्रजरत्नदास लिखित भूमिका से प्राप्त होती है।[२]

खुशबू कुमारी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १८९१ ई० में जादे श्री उन्नत जी कवि लिखित 'खुशबू कुमारी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का 'रिप्रिंट' गुजरात से जीवाराम अजरामर भूज द्वारा मुद्रित किया गया।[३] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। डॉ० गुप्त भी, जान पड़ता है, पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं। उन्होंने इसके सम्बन्ध में गजट से निम्नलिखित सूचना दी है—"जादे श्री उन्नत जी कवि कृत 'खुशबू कुमारी' (१८९१ रिप्रिंट) भी इसी परम्परा का (ऐतिहासिक) उपन्यास ज्ञात होता है, यद्यपि कथावस्तु अज्ञात होने के कारण निश्चय पूर्वक उसके विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। यह उपन्यास व्रजभाषा में है और आकार में भी बड़ा है, इसलिए महत्त्वपूर्ण है।"[४] मेरे जानते इसे अनुवाद होना चाहिए।

मुद्राकुलीन

सन् १८९२ ई० में जहाँगीर शाहजी आरदेशरजी तालेयार खाँ लिखित गुजराती ऐतिहासिक उपन्यास 'मुद्राकुलीन' का पं० किशन लाल श्रीधर कृत हिन्दी अनुवाद श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[५] इस उपन्यास में मैसूर राज्य में हिन्दुओं पर मुसलमानों द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन है।

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दीप निर्वाण, जिसको मुंशी उदित नारायण लाल वर्मा, वकील, जिला गाजीपुर ने भारतवर्षीय इतिहास और हिन्दी भाषा रसिकों के विनोदार्थ बंगभाषा से आर्यभाषा में अनुवाद किया और इस पुस्तक के छपाने का अधिकार श्रीयुत बाबू रामकृष्ण वर्मा, सम्पादक भारत जीवन को है. काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ सन् १८९१ ई०।

२. हुगली का इमामवाड़ा, मूल लेखिका स्वर्ण कुमारी देवी घोषाल, अ० मुरारी दास अग्रवाल, प्र० पुस्तक भवन, बनारस सिटी, प्रथमावृत्ति, अप्रील १९३६, भूमिका।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३० तथा ४५५।

४. उपरिवत्, पृ० ३०।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मुद्राकुलीन, अर्थात इतिहास चन्द्रोदय,

चित्तौर चातकिनी

सन् १८९५ ई० में **बाबू रामकृष्ण वर्मा** द्वारा बँगला से अनूदित 'चित्तौर चातकिनी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हुआ।[1] यह उपन्यास चित्तौर के राजवंश की मर्यादा के इतना प्रतिकूल समझा गया कि लोगों ने इसके विरुद्ध आन्दोलन किया और इसकी सभी प्रतियाँ गंगा में डुबो दी गयीं। सौभाग्य से ही चैतन्य पुस्तकालय में इसकी एक प्रति सुरक्षित है।

इस उपन्यास के मूल लेखक कौन थे, इसका पता नहीं चलता। 'भूमिका' में अनुवादक ने सूचना दी है कि "हम उनका (मूल लेखक) नाम इसलिए प्रकाश नहीं करते हैं कि उन्होंने बंगभाषा के ग्रन्थ में भी अपना नाम केवल इतना ही लिखा है कि "**मित्र सभा के एक सभ्य द्वारा विचरित**"। इस ग्रन्थ में राजा जयसिंह की नीचता और औरंगजेब के विरुद्ध स्वयं उसकी पत्नी उदयपुरी बेगम और बंदी रौशनआरा की सहायता से संचालित राजद्रोह का वर्णन किया गया है।

इला

सन् १८९५ ई० में **बाबू कार्तिक प्रसाद वर्म्मा** द्वारा बँगला से अनूदित 'इला' नामक ऐतिहासिक उपन्यास भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में राजा सांगा के सेनापति माधो राव की पुत्री इल्लिला (इला) के हेमू की बेगम बनने तथा हेमू और चित्तौर के राणा उदय सिंह के बीच संग्राम का वर्णन कर हिन्दू गौरव और राजपूतों की वीरता का चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। पर इस उपन्यास की घटनाएँ इतिहास विरुद्ध हैं, इस कारण प्रकाशित होते ही इसके सम्बन्ध में एक विवाद उठ खड़ा हुआ, जिसके परिणामस्वरूप इस पुस्तक का प्रचार रोक दिया गया था। सरस्वती सम्पादक के अनुसार "बात यह थी कि वह अँगरेजी के एक प्रसिद्ध लेखक शेरीडिन के एक नाटक का अनुवाद मात्र था। बँगला के अनुवादक महोदय ने उसके पात्रों के नाम बदलकर ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम कर दिये। फल यह हुआ कि उसमें उदयपुर के महाराणा उदय सिंह आ गये और हेमू के साथ उनका घोर युद्ध हुआ। अब यह कहा जा सकता है

अट्ठारह शताब्दी के हिन्दुस्तान का वर्णन, पहिले यह पुस्तक मेहेरबान साहेब श्रीयुत जहाँगीर शाहजी आरदेशरजी तालेयार खाँ कृत गुर्जर भाषा में थी, जिस्को मुम्बई मध्य पंडित किसन लाल श्रीधर ने हिन्दुस्तानी भाषा में बनाया और श्रीयुत पंडित श्री ज्वाला प्रसाद जी मुरादाबाद वाले से शुद्ध करवा के प्रसिद्ध किया, ठि० श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापाखाना श्रीयुत गंगा विष्णु जी श्री कृष्ण दास जी प्रबोध रत्नाकर छापखाने में छापी, सं० १९४९ आश्विन शुक्ल १०, पृ० सं० १९०।

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चित्तौर चातकिनी (एक ऐतिहासिक उपन्यास) भारत जीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्मा द्वारा बंगभाषा से अनुवादित, काशी, भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुई। सं० १९५२, प्रथम बार १०००, मूल्य ≡)।

२. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—इला (उन्यास), जिसे भारत जीवन के

कि इन लेखकों ने इतिहास विरुद्ध बातें लिखीं क्यों ?"[१]

वँगला में इस उपन्यास के लेखक कौन थे तथा इसका क्या शीर्षक था, यह पता नहीं चलता ।

वीरेन्द्र

सन् १८९६ ई० में **पुरोहित गोपीनाथ** ने 'वीरेन्द्र' नामक ऐतिहासिक उपन्यास की रचना किसी अँगरेजी उपन्यास के आधार पर की[2] जो १८९७ ई० में वेंकटेश्वर यंत्रालय, बम्बई से मुद्रित हुआ ।[३]

मरहठा सरदार और रौशनआरा

सन् १८९८ ई० में **सूर्यनारायण सिंह** द्वारा अनूदित 'मरहठा सरदार और रौशन आरा' नामक ऐतिहासिक उपन्यास लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ ।[४] इसकी भूमिका से ज्ञात होता है कि मूल उपन्यास अँगरेजी में था और इसके लेखक थे कोई श्रीमान पादरी ह्यूबर्ट कान्टर ।[५] इस उपन्यास में औरंगजेब की पुत्री रोशनआरा का शिवाजी द्वारा हरण, दोनों के गान्धर्व विवाह तथा उनसे उत्पन्न पुत्र शम्भाजी की वीरता आदि की कहानी वर्णित है ।

जयन्ती

सन् १९०३ ई० में बँगला भाषा के 'जयन्ती' नामक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[६] पुस्तक में न तो मूल लेखक का नाम दिया

सहकारी सम्पादक बाबू कार्तिक प्रसाद वर्मा ने वंगभाषा से हिन्दी में अनुवाद किया। काशी भारत जीवन प्रेस में मुद्रित हुआ। सन् १८९५ ई०। प्रथम बार १०००, मूल्य ग्यारह आना।

१. ऐतिहासिक उपन्यास और नाटक (सम्पादकीय), सरस्वती, मई १९२२।

२. भूमिका की पंक्तियाँ—यह एक छोटा सा उपन्यास कि जो अँगरेजी के सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक के आधार से रचा गया है, पाठकों के विनोदार्थ अर्पण किया जाता है। आबू ७-१०-९६, वीरेन्द्र, ले० पुरोहित गोपीनाथ, "श्री वेंकटेश्वर" यन्त्रालय, बम्बई, सं० १९५४।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीरेन्द्र अर्थात् वीर शिरोमणि, सचित्र, युवक वीरेन्द्र सिंह सम्बन्धी एक दूरदेशीय ऐतिहासिक घटना का मनोहर उपन्यास, पुरोहित गोपीनाथ, एम० ए०, जयपुर राज वकील (आबू) ने हिन्दी भाषा प्रेमियों के विनोदार्थ रचना किया, जिसको खेमराज श्री कृष्णदास ने स्वकीय "श्री वेंकटेश्वर" यन्त्रालय में छापकर प्रसिद्ध किया, सं० १९५४, पृ० सं० २१।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मरहठा सरदार और रौशन आरा औरंगजेब की पुत्री का प्रेम, जो श्रीयुत बाबू सूर्य नारायण सिंह जी की आज्ञानुसार गंगा विष्णु श्री कृष्ण दास ने अपने "लक्ष्मी वेंकटेश्वर" छापेखाने में छापकर प्रगट किया, संवत् १९५५, शके १८२० कल्याण, मुम्बई।

५. उपरिवत्, भूमिका।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। (द्विवेदी संग्रह) मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जयन्ती, सं०

हुआ है न अनुवादक का। पुस्तक के 'परिचय' से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास गुमनाम रूप में सर्वप्रथम बँगला की साप्ताहिक पत्रिका 'संजीवनी' में क्रमशः प्रकाशित हुआ था। यह तो मूल लेखक के नाम न दिये जाने का कारण हुआ। पर अनुवादक का नाम क्यों अप्रकाशित रखा गया, यह भी नहीं ज्ञात होता। इस उपन्यास की कथावस्तु सन् १८३१-३२ में हुए कोलों के बलवे पर आधृत है।

पद्मा सुन्दरी

सन् १९०३ ई० में **पं० मथुरा प्रसाद मिश्र** द्वारा प्रस्तुत किसी बँगला ऐतिहासिक उपन्यास का 'पद्मासुन्दरी' शीर्षक अनुवाद ज्ञानभास्कर प्रेस, बाराबंकी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' (अक्टूबर १९०३) ई० में प्रकाशित विवेच्य उपन्याम की 'समालोचना' से प्राप्त की गयी हैं।[1] अनुवादक के अनुसार "स्वाधीन भारत के अधःपतन के समय राजन्य वर्ग की राजशक्ति किस प्रकार से हीनता को प्राप्त हो रही थी, संकेत से उसका किंचित् आभास देना इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है।"[2]

नूरजहाँ अर्थात् ज्योतिर्मयी

सन् १९०३ ई० में ही **राय हाराणचन्द्र** कृत किसी बँगला उपन्यास का **श्याम सुन्दर लाल त्रिपाठी** द्वारा प्रस्तुत 'नूरजहाँ अर्थात् ज्योतिर्मयी' शीर्षक अनुवाद लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। इस उपन्यास में जहाँगीर के स्वार्थ और अत्याचार, शेर अफगान की वीरता, नूरजहाँ की बुद्धिमानी, ईश्वर महिमा और प्रेम के फल का चित्रण किया गया है।

पन्ना राज्य का इतिहास

सन् १९०४ ई० में बँगला के **'पन्नार महाराजा'** (पन्ना के महाराजा) नामक पुस्तक का **बाबू गंगा प्रसाद गुप्त** कृत 'पन्ना राज्य का इतिहास' शीर्षक अनुवाद भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' (नवम्बर १९०४ ई०) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद की समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं।[3] इस समीक्षा से जात होता है कि इस

विद्रोह का एक ऐतिहासिक चित्र, वंगभाषा से अनुवादित। कलकत्ता ९७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट भारत मित्र प्रेस से पं० कृष्णानन्द शर्मा द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, सन् १९०३ ई०, पृ० सं० २५९।

१. सरस्वती, भाग ४, संख्या १०, अक्तूबर १९०३; पद्मा सुन्दरी।

२. उपरिवत्।

३. सरस्वती, भाग ५, अंक ११, नवम्बर १९०४, पुस्तक समीक्षा (पन्ना राज्य का इतिहास)

पुस्तक में पन्ना राज्य के महाराजा पन्ना के, जिन पर १९०१ ई० में अपने चाचा राव राजा खुमान सिंह को विष दिलाने का अपराध लगाया गया था, मुकदमे का वर्णन किया गया है।

वीरव्रत पालन

सन् १९०५ ई० में बँगला के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार **हारानचन्द्र रक्षित** ने 'मन्त्र साधन' नामक उपन्यास का **श्री बनवारी लाल तिवारी** द्वारा प्रस्तुत 'वीरव्रत पालन' शीर्षक अनुवाद मेडिकल हाल प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[1] सन् १९२६ ई० में इस उपन्यास का **ईश्वरी प्रसाद शर्मा** कृत एक अन्य अनुवाद, 'वीरव्रत पालन' शीर्षक से ही वर्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

प्रभात सुन्दरी

इसी वर्ष बँगला उपन्यासकार **बाबू श्रीशचन्द्र चट्टोपाध्याय** रचित 'काला पहाड़' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का **पं० मुरलीधर शर्मा** कृत 'प्रभात सुन्दरी' नामक अनुवाद देवकीनन्दन खत्री द्वारा लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] उपन्यास की 'सूचना' से ज्ञात होता है कि यह मूल का अविकल अनुवाद है। इस उपन्यास में जगदीशपुरी पर मुसलमानों के आक्रमण, सेनापति काला पहाड़ के मुसलमान होने, उसके द्वारा हिन्दू जाति पर किये जाने वाले अत्याचारों, तथा अन्त में उसके परिताप का वर्णन किया गया है।

लखनऊ की नवाबी

बाबू ठाकुर प्रसाद खत्री ने अँगरेजी की किसी पुस्तक का अनुवाद 'लखनऊ की नवाबी' शीर्षक से प्रस्तुत किया था, जिसका प्रथम भाग अगस्त १९०६ ई० के पूर्व और दूसरा भाग मार्च १९०७ के पूर्व स्वयं अनुवादक द्वारा प्रकाशित किया जा चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ सरस्वती, अगस्त १९०६ और मार्च १९०७ के अंकों में प्रकाशित उक्त अनुवाद की पुस्तक-समीक्षाओं से प्राप्त की गयी हैं।[3] समीक्षक के अनुसार इसे लखनऊ के नवाब वजीर नसीरुद्दीन हैदर की दिनचर्या कहना चाहिए।"[4]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बंगभाषा के विख्यात लेखक राय साहब बाबू हारान चन्द्र रक्षित प्रणीत मन्त्र साधन का हिन्दी अनुवाद, वीरव्रत पालन (ऐतिहासिक उपन्यास), अनुवादक बनवारी लाल तिवारी, मेडिकल हाल प्रेस, बनारस, प्रथमावृत्ति, संशोधित संस्करण, १९०५।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रभात सुन्दरी, उपन्यास, लखनऊ निवासी पंडित मुरलीधर शर्मा लिखित और बाबू देवकीनन्दन खत्री, प्रोप्राइटर "लहरी प्रेस" द्वारा प्रकाशित, काशी लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित, १९०५, पृ० सं० १८१।

३. सरस्वती, भाग ७, सं० ८, अगस्त १९०६ ई० तथा भाग ८, अंक ३, मार्च १९०७ ई०, पुस्तक समीक्षाएँ (लखनऊ की नवाबी, प्रथम खंड और द्वितीय खंड)।

४. सरस्वती, अगस्त १९०६, पुस्तक परिचय (लखनऊ की नवाबी, प्रथम खंड)।

सुरसुन्दरी

सन् १९०७ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व **बाबू ज्योतिरिन्द्र नाथ मजूमदार** द्वारा लिखित **सुन्दरी** नामक बँगला ऐतिहासिक उपन्यास का **पं० मुरलीधर शर्मा** कृत 'सुर सुन्दरी' शीर्षक अनुवाद लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[1] 'सरस्वती' में प्रकाशित समीक्षा के अनुसार "उपन्यास की बातें मेवाड़ के राणा अमर सिंह के समय की हैं। कथा कुछ ऐतिहासिक है कुछ काल्पनिक। पुस्तक मनोरंजक और शिक्षाप्रदायक है।"[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मैसूर का नवाब हैदर अली

सन् १९०७ ई० में **लिविन बी० बावरिंग** द्वारा लिखित किसी पुस्तक का **बाबू ठाकुर प्रसाद खत्री** द्वारा प्रस्तुत 'मैसूर का नवाब हैदर अली' शीर्षक पुस्तक कल्पतरु प्रेस से प्रकाशित हुआ।[3] पुस्तक की प्रस्तावना में इसे 'ऐतिहासिक जीवनी' कहा गया है।

अमर सिंह

सन् १९०७ ई० में **बाबू नगेन्द्र नाथ गुप्त** कृत बँगला उपन्यास 'अमर सिंह' का **पं० प्रताप नारायण मिश्र** द्वारा प्रस्तुत अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से श्री रामरण विजय सिंह द्वारा प्रकाशित किया गया।[4] इस उपन्यास में सिपाही विद्रोह की कतिपय घटनाओं को कथा का मुख्य आधार बनाया गया है। पुस्तक की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद १८९५ ई० के लगभग प्रस्तुत किया गया था और उसी समय खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से इसके कुछ अंश प्रकाशित हो चुके थे, पर कतिपय विघ्नों के कारण अनुवाद पूरा नहीं छप सका था।[5]

---

१. सरस्वती, भाग ८, सं० ८, अगस्त १९०७ में प्रकाशित पुस्तक समीक्षा, सुरसुन्दरी, ले० बाबू ज्योतिरिन्द्र नाथ मजूमदार, अ० सोधी टोला, लखनऊ निवासी पं० मुरलीधर शर्मा, प्र० प्रोप्राइटर लहरी प्रेस, बनारस।

२. उपरिवत्।

३. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मैसूर का नवाब हैदर अली, (लिविन बी० बावरिंग, सी० एस० आई० द्वारा लिखित और सर डब्ल्यू हन्टर के० सी० एस० आई० ई० एम० ए० एल० एल० डी० द्वारा सम्पादित) लखनऊ की नवाबी, पदार्थ विज्ञान, भूगर्भ विद्या, रासायनिक कोश आदि के लेखक काशी निवासी बाबू ठाकुर प्रसाद खत्री द्वारा कृत और बाबू गंगा प्रसाद गुप्त द्वारा संशोधित, जिसे बाबू गंगा प्रसाद वर्मा, अध्यक्ष, कल्पतरु प्रेस ने निज व्यय से प्रकाशित किया। मार्च १९०७ ई०।

४. प्रा० स्थ.०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्रीयुक्त बाबू नगेन्द्र नाथ गुप्त प्रणीत, अमर सिंह, सिपाही विद्रोह मूलक उपन्यास का कात्यायन कुमार पं० प्रताप नारायण मिश्र, ब्राह्मण सम्पादक कृत हिन्दी अनुवाद, श्री रामरणविजय सिंह द्वारा प्रकाशित, १९०७, प्रथम बार, पृ० सं० १०२।

५. उपरिवत्, भूमिका।

चाँद बीबी या वीर पत्नी

सन् १९०८ ई० में **मीडोज टेलर** कृत 'नोबुल क्वीन' नामक उपन्यास का **श्री जयराम दास** द्वारा प्रस्तुत 'चाँद बीबी वा वीर पत्नी' शीर्षक अनुवाद, चार भागों में, उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[१] 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह मूल का अविकल अनुवाद है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस उपन्यास का प्रकाशन-काल १९०९ ई० देते हुए इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है, जो भ्रामक है।[२]

गुलबदन या रजिया बेगम

इसी वर्ष **रामलाल वर्मा** द्वारा उर्दू से अनूदित 'गुलबदन या रजिया बेगम' नामक उपन्यास का प्रथम भाग हितचिन्तक प्रेस, काशी से मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[३] इसका दूसरा भाग १९०९ ई० में प्रकाशित हुआ।[४] इस उपन्यास में रजिया बेगम के गुप्त प्रेम-व्यापारों का वर्णन किया गया है।

काला पहाड़

सन् १९१० ई० में बँगला उपन्यासकार **श्री रसिक चन्द्र घोस** के 'काला पहाड़' नामक उपन्यास का **वैद्य शिव नारायण मिश्र** द्वारा प्रस्तुत अनुवाद, मूल शीर्षक से ही प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर से प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण १९३० ई० में प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर से निकला।[५] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर दूसरे संस्करण में प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल दिया हुआ है। इस उपन्यास में काला पहाड़ के, जो जन्मना हिन्दू होकर भी कर्मणा हिन्दू-द्वेषी हो गया था, चरित्र का चित्रण किया गया है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। चाँद बीबी वा वीर पत्नी, ले० मीडोज टेलर अ० जयराम दास, प्रकाशक उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी, १९०८ ई०, पृ० सं० १५२+१४१+१२६+१२६।

२. हि० पु० सा०, पृ० १५१।

३. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गुलबदन या रजिया बेगम, प्रेम रस का एक दिलचस्प उपन्यास, राम लाल वर्मा द्वारा यवन भाषा से अनुवादित और प्रकाशित, बी०.एल० पावगी द्वारा काशी हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित, सं० १९६५ विक्रमीय, पृ० सं० ११०।

४. दूसरा भाग (अन्य सूचनाएँ उपरिवत्), सं० १९६६ विक्रमीय।

५. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—काला पहाड़, सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास (काशी, कामाख्या और जगन्नाथ जी के मन्दिरों की ध्वंस कहानी), ग्रन्थकार वैद्य शिवनारायण मिश्र, प्रकाशक प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर, द्वितीयसंस्करण (पृष्ठ भाग की सूचना) वैद्य शिवनारायण मिश्र भिषग्रत्न द्वारा प्रकाश औषधालय के प्रकाश आयुर्वेदीय प्रिंटिंग प्रेस, कानपुर में मुद्रित और प्रकाशित, १९१०, पृ० सं० ९७।
('काला पहाड़' का एक अनुवाद 'प्रभात सुन्दरी' शीर्षक से १९०५ ई० में हुआ था (प्रबन्ध, पृ० ३२३) 'प्रभात सुन्दरी' की भूमिका ('सूचना') में मूल लेखक का नाम श्रीशचन्द्र चट्टोपाध्याय दिया हुआ है।)

रानी मेरी

सन् १९१२ ई० में **सर वाल्टर स्काट** कृत **'दि एवर'** नामक उपन्यास का **लाला चन्द्रलाल** द्वारा प्रस्तुत 'रानी मेरी' शीर्षक अनुवाद नेशनल प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। 'भूमिका' के अन्त में "१ दिसम्बर १९१२" मुद्रित होने से इसके प्रकाशन-काल का पता चलता है। भूमिका से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद विद्यार्थियों की रुचि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया था।[2]

सेलिमा बेगम

इसी वर्ष किसी मराठी उपन्यास का **पं० त्र्यम्बक बाबू राव सर्वटे** और **पं० दुर्गा प्रसाद खेबरिया** कृत 'सेलिमा बेगम' शीर्षक अनुवाद लाला श्यामलाल अग्रवाल द्वारा श्याम काशी प्रेस, मथुरा से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में मुगल सम्राट् शाहजहाँ की सेलिमा नामकी बेगम के माहरुण नाम के एक साधारण व्यक्ति से प्रेम का चित्रण किया गया है।

शिवाजी का आत्मदमन वा रौशनआरा

सन् १९१२ ई० में मराठी भाषा के **'सूभे कल्याण'** नामक उपन्यास का **पं० काशीनाथ शर्मा** कृत 'शिवाजी का आत्मदमन वा रौशनआरा' शीर्षक अनुवाद **पं० खुन्नू लाल रावत** द्वारा प्रकाशित किया गया।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर इसके मूल लेखक तथा प्रकाशन-स्थान का पता नहीं दिया हुआ है।

सेवाजी वा रौशनआरा

आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में **पं० काली चरण शर्मा** द्वारा अनूदित और सन् १९१३ ई० में श्यामलाल वर्मा, आर्यभाषा बुक्सेलर, बरेली द्वारा प्रकाशित 'सेवाजी वा

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्काटलैंड की रानी मेरी, सर वाल्टर स्काट के प्रसिद्ध उपन्यास दि एवर से उद्धृत, अनुवादक श्रीयुत लाला चन्द्रलाल, प्रकाशक नेशनल प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्करण, पृ० सं० २१२।

२. उपरिवत्, भूमिका।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सेलिमा बेगम, एक प्रेम कहानी, पंडित त्र्यंम्बक बाबू राव सर्वटे और पंडित दुर्गा प्रसाद खेबरिया, सागर निवासी कृत, जिसको लाला श्याम लाल अग्रवाल ने अपने श्याम काशी प्रेस, मथुरा में छापकर प्रकाशित किया, सन् १९१२, प्रथम बार २०००, पृ० सं० ६०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शिवाजी का आत्मदमन अर्थात् रौशनआरा, मराठी सूभे कल्याण का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक काशीनाथ शर्मा, प्रकाशक पं० खुन्नू लाल रावत, प्रथम संस्करण १०००, सं० १९६९ वि०, पृ० सं० ६७।

रोशनआरा' नामक एक उपन्यास उपलब्ध है ।[१] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक अथवा मूल उपन्यास का उल्लेख नहीं किया गया है । सम्भव है कि यह भी 'सूभे कल्याण' का ही अनुवाद हो ।

सम्राट् अशोक

सन् १९१३ ई० में **पं० हरिभाऊ उपाध्याय** द्वारा मराठी से अनूदित 'सम्राट् अशोक' नामक ऐतिहासिक उपन्यास गाँधी हिन्दी पुस्तक भंडार, वम्बई से प्रकाशित हुआ ।[२]

लावण्य और अनंग

सन् १९१३ ई० में ही **श्री योगीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय** कृत बँगला उपन्यास **अनाथिनी** का **चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा** द्वारा प्रस्तुत 'लावण्य और अनंग' शीर्षक अनुवाद प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[३] अनुवाद के 'पूर्वाभाष' से ज्ञात होता है कि यह अविकल न होकर स्वतन्त्र अनुवाद है । इस उपन्यास में महमूद गजनवी के सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण का मुख्य घटना के रूप में चित्रण किया गया है ।

राजराजेश्वरी

सन् १९१४ ई० में बँगला के 'राजराजेश्वरी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का **बाबू रामचन्द्र वर्मा** कृत अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ ।[४] मुखपृष्ठ पर मूल लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है ।

बादशाह का बुलावा

सन् १९१५ ई० में **मिस मारस्टर साहिबा** कृत **दि कॉल ऑव दि किंग** नामक कथा का **पादरी जे० एन० मुकुन्द** द्वारा प्रस्तुत 'बादशाह का बुलावा' शीर्षक अनुवाद मिशन

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शिवाजी व रौशन आरा अर्थात् औरंगजेब की पुत्री का विवाह समाचार, जिसको पं० कालीचरण शर्मा, कस्बा आभापुर, जिला बदायूँ, ने भाषानुवाद किया और महाशय श्यामलाल वर्मा, आर्य बुकसेलर, शहर बरेली ने देशहितार्थ छपाकर प्रकाशित किया। प्रथम बार १०००, सन् १९१३ ई०, पृ० सं० १११ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सम्राट् अशोक, मराठी भाषा के एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक श्रीयुत पं० हरिभाऊ उपाध्याय, भूतपूर्व उपसम्पादक 'सरस्वती', प्रकाशक गाँधी हिन्दी पुस्तक भंडार, कालवा देवी, बम्बई, प्रथम संस्करण, श्रावण १९७०, पृ० सं० ४६६ ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लावण्य और अनंग, एक सत्य घटनामूलक ऐतिहासिक उपन्यास, संग्रहकर्त्ता चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, प्रकाशक रामदयाल अगरवाल, कटरा, प्रयाग, सन् १९१३, प्रथम संस्करण, पृ० सं० ११८ ।

४. प्रा० स्था०—चै० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजराजेश्वरी (बंगभाषा के एक मनोहर शिक्षाप्रद उपन्यास का अनुवाद), काशी निवासी बाबू रामचन्द्र वर्मा द्वारा अनुवादित, जिसे उपन्यास प्रेमी पाठकों के चित्तरंजनार्थ बाबू जयराम दास गुप्त, अध्यक्ष, उपन्यास बहार ऑफिस, राजघाट, काशी ने प्रकाशित किया, काशी, प्रथम बार १०००, फरवरी १९१४, पृ० सं० १६९ ।

प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ ।[१]

लच्छमा

सन् १९१५ ई० में **फकीर मोहन सेनापति** के उड़िया उपन्यास **लक्ष्मा** का **पांडेय मुरलीधर और पांडेय मुकुटधर शर्मा** कृत अनुवाद हरिदास वैद्य ने प्रकाशित किया ।[२]

संयोगिता

सन् १९१५ ई० में ही बँगला उपन्यासकार **बाबू सतीश चन्द्र** के 'संयोगिता' नामक उपन्यास का **पं० पारसनाथ त्रिपाठी** कृत अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इस अनुवाद का प्रथम संस्करण नहीं प्राप्त हो सका है । उपर्युक्त सूचनाएँ उक्त उपन्यास के द्वितीय संस्करण की 'भूमिका' से प्राप्त की गयी हैं ।

विवेच्य अनुवाद का दूसरा संस्करण १९२१ ई० में हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ । इस संस्करण की एक प्रति राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है ।[३]

सरस्वती चन्द्र

सन् १९१६ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व **श्री वल्लभदास वर्म्मा** द्वारा अनूदित 'सरस्वती चन्द्र' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ ।[४]

सिराजुद्दौला

सन् १९१६ ई० में बँगला के **'बंगेर शेष नवाब'** नामक एतिहासिक उपन्यास का **पं० गुलजारी लाल चतुर्वेदी** कृत 'सिराजुद्दौला' शीर्षक अनुवाद हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[५] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक की सूचना नहीं दी हुई है ।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दि कॉल ऑव दि किंग, बादशाह का बुलावा, यूरोप के महायुद्ध की एक कहानी, रचक मिस मारस्टन साहिवा उल्थाकरस्त पादरी जे० एन० मुकुन्द, बी० ए०, मिशन प्रेस, इलाहावाद, १९१५, पृ० सं० ९७ ।

२. प्राप्ति स्थान—बि० रा० भा० प० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लच्छमा अर्थात् उड़ीसा में भोंसला सेनापति, अनुवादक—पांडेय मुरलीधर और पांडेय मुकुटधर शर्मा, प्रकाशक हरिदास वैद्य, २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता, २०१ हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१५ ई०, पहली वार १००० ।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सचित्र संयोगिता, मू० ले०—बाबू सतीशचन्द्र, अनु० पं० पारसनाथ त्रिपाठी, प्र० हरिदास ऐंड कं०, कलकत्ता, सन् १९२१, दूसरी वार २००० ।

४. सरस्वती, भाग १७, अंक ११, नवम्बर १९१६, पुस्तक-प्राप्ति ।

५. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सचित्र सिराजुद्दौला अर्थात् बंगाल का अन्तिम नवाब (बंगभाषा से अनुवादित), अनुवादक पं० गुलजारी लाल चतुर्वेदी,

विवेच्य उपन्यास में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अँगरेजों के संघर्ष का वर्णन किया गया है। अनुवाद अविकल न होकर स्वतन्त्र है।

छत्रसाल

सन् १९१६ ई० में **वालचन्द नानचन्द शहा** कृत 'छत्रसाल' शीर्षक मराठी उपन्यास का **रामचन्द्र वर्मा** कृत अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[१] इसका तृतीय संस्करण उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से १९२६ ई० में प्रकाशित हुआ।[२]

नवाबी महल

सन् १९१७ ई० में किती **स्नेहलता प्रेमलता** नामक बँगला उपन्यास लेखिका के **'लुत्फुन्निसा'** नामक ऐतिहासिक उपन्यास का **पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा** कृत 'नवाबी महल' शीर्षक अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[३]

नूरजहाँ

सन् १९१७ ई० में ही बँगला से **पं० रामचन्द्र द्विवेदी** द्वारा अनूदित 'नूरजहाँ' नामक ऐतिहासिक उपन्यास श्री कृष्ण प्रसाद सिंह चौधरी द्वारा प्रकाशित किया गया।[४] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है। 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि इसके मूल लेखक **वृजेन्द्र नाथ** नामक कोई व्यक्ति थे।

मनीपुर के सेनापति टिकेन्द्रजित सिंह

सन् १९१७ ई० में **प्रियनाथ मुखोपाध्याय** के 'मनीपुर के सेनापति' नामक

प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी। (आवरणपृष्ठ पर १९१६ और मुखपृष्ठ पर १९२५ तिथि दी हुई है)।

१. प्रा० स्था०—पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना।

२. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची।

३. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नवाबी महल (सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास) बंगभाषा की सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखिका स्नेहलता प्रेमलता रचयित्री के लुत्फुन्निसा का सचित्र हिन्दी अनुवाद। 'अन्नपूर्णा का मन्दिर' इत्यादि ग्रन्थों के अनुवादक मनोरंजन के सम्पादक पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा अनुवादित। जिसे काशीस्थ उपन्यास बहार मालिक "उपन्यास ग्रन्थमाला" और 'साहित्य सरोजमाला' के सम्पादक तथा अनेक उपन्यासों के लेखक काशीनिवासी बाबू जयराम दास गुप्त ने उपन्यास प्रेमियों के मनोविनोदार्थ सम्पादित कर प्रकाशित किया। काशी चन्द्रप्रभा प्रेस के मैनेजर बाबू गौरीशंकर लाल द्वारा मुद्रित, प्रथम बार, फेब्रुअरी १९१७ ई०।

४. प्रा० स्था—चै० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
नूरजहाँ, मुगल सम्राटी नूरजहाँ का इतिहास सम्मत जीवन चरित्र, मिरजापुर, [illegible] निवासी पं० रामानन्द द्विवेदी अनूदित, पाटलिपुत्र के प्रबन्धकर्त्ता श्रीकृष्ण प्रसाद सिंह चौधरी द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १०००, सं० १९७४।

बँगला ऐतिहासिक उपन्यास का रामलाल वर्मा द्वारा प्रस्तुत 'मनीपुर के सेनापति टिकेन्द्रजित सिंह' शीर्षक अनुवाद स्वयं अनुवादक द्वारा वर्म्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में टिकेन्द्रजित सिंह के अँगरेजों के विरुद्ध विद्रोह तथा उनकी वीरता, गुरुभक्ति, परदुःखकातरता और धर्मनिष्ठा का चित्रण किया गया है।

कोहेनूर

सन् १९१९ ई० में शिवप्रसाद द्विवेदी द्वारा अनूदित 'कोहेनूर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का तृतीय संस्करण रामलाल वर्मा द्वारा वर्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इसका पाँचवा संस्करण १९४३ ई० में वर्मन प्रेस से छपा।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के किसी भी संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मनीपुर के सेनापति टिकेन्द्रजित सिंह (अर्थात् टिकेन्द्रजित सिंह के जन्म से लेकर १३ वीं अगस्त फाँसी होने के दिन तक की सब घटनाओं का आश्चर्य रहस्य) श्री प्रियोनाथ मुखोपाध्याय के बँगला उपन्यास 'मनीपुर के सेनापति' का अनुवाद, अनुवादक रामलाल वर्मा ३७१, अपर चीतपुर रोड, "वर्म्मन प्रेस", कलकत्ता में रामलाल वर्म्मा द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, प्रथम बार १०००, सं० १९७४, पृ० सं० १०७।

२. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची।

अनूदित

धार्मिक-पौराणिक कथाएँ

विवेच्य काल में विशेषतः किशोरों और पाठिकाओं की रुचि को ध्यान में रखकर अनेक पौराणिक कथापुस्तकें अनूदित और प्रकाशित हुईं जिनका विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

सन् १८९१ ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से पं० रविदत्त द्वारा अनूदित **आदि ब्रह्मपुराण भाषा**[1] और पं० महेशदत्त शुक्ल द्वारा अनूदित **पद्मपुराण भाषा**[2] प्रकाशित हुए।

सन् १८९२ ई० में अ० ल० ओ० ई० (?) कृत **हसन डकैत का वृत्तान्त** नामक गद्यकथा इंडियन क्रिस्चियन प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई।[3] इस पुस्तक में कथा के माध्यम से ईसाई धर्म का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है।

सन् १८९३ ई० में पं० महेश्वरदत्त शुक्ल द्वारा अनूदित **'पद्मपुराण भाषा'** नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[4]

सन १८९३ ई० में ही कृष्णवल्लभ पं० महाराज द्वारा लिखित **महारामायण (विशूचिका आख्यान)** नामक कथापुस्तक का तीसरा संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[5] इस पुस्तक में कर्कटी राक्षसी का आख्यान वर्णित है।

सन् १८९८ ई० में भट्ट लक्ष्मी नाथ लिखित **'नल दयमन्ती'** नामक गद्यकथा का

---

१. प्रा० स्था०— रा० भा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदि ब्रह्मपुराण, जिसके श्री रोहतक प्रदेशान्तर्गत बेरी ग्राम निवासि पं० रविदत्त जी ने श्रीमान् मुंशी नवल किशोर की आज्ञानुसार संस्कृत से देश भाषा में प्रतिश्लोक भाषानुवाद किया, वाजपेयी पंडित रामरत्न के प्रबन्ध से प्रथम बार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छपा, जनवरी १८९१ ई०, पृ० सं० ६६८।

२. प्राप्ति स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पद्मपुराण भाषा, प्रथम सृष्टि खंड, मुंशी नवल किशोर ने श्री पंडित महेशदत्त सुकुल से संस्कृत पद्मपुराण से प्रतिश्लोक प्रतिचरण वा प्रतिपद अति सरल व मधुर भाषा में अनुवाद कराया, प्रथम बार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छपा, मार्च सन् १८९१ ई०, पृ० सं० ८२३।

३. प्राप्ति स्था०—वि० रा० भा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हसन डकैत का वृत्तान्त, अ० ल० ओ० ई० कृत, इलाहाबाद, इंडियन क्रुश्चियन प्रेस में छापी गई, सन १८९२ ई०, ३००० कॉपीज, मोल ३ पाई।

४. प्रा० स्थान—वि० रा० भा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पद्मपुराण भाषा, चतुर्थ पातालखंड, जिसको मुंशी नवल किशोर ने श्री पंडित महेशदत्त सुकुल के द्वारा संस्कृत पद्मपुराण से प्रतिश्लोक प्रतिचरण व प्रतिपद अति सरल व मधुर भाषा में अनुवाद कराया, प्रथम बार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छपा, जोलाई सन् १८९३ ई०।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—महारामायण विशूचिका आख्या

दूसरा संस्करण बिहार वन्धु छापाखाना, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस कथा के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सन् १८९९ ई० में **देवी भागवत** के पं० महेश्वरदत्त शुक्ल कृत अनुवाद का छठा संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ।[2] इस अनुवाद के प्रथम पाँच संस्करणों को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है।

सन् १८९९ ई० में ही पं० रामविहारी शुक्ल ने **पद्म पुराण के चतुर्थ ब्रह्म खंड और षष्ठ उत्तर खंड** का अनुवाद प्रस्तुत किया। ये दोनों पुस्तकें नवल किशोर प्रेस में प्रथम वार, इसी वर्ष, मुद्रित हुईं।[3]

सन् १९०६ ई० में पं० दुर्गा प्रसाद द्वारा अनूदित **भविष्य पुराण** का चौथा संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ।[4]

सन् १९०८ ई० में पं० मोहन लाल द्वारा अनूदित **महाभारत (वनपर्व)** का तीसरा संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ।[5]

सन् १९०८ ई० में ही **सेतु माहात्म्य खंड** के पं० दुर्गाप्रसाद कृत अनुवाद का पाँचवाँ संस्करण नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित हुआ।[6] पिछली तीनों पुस्तकों के प्रथम

जिसमें सर्वोपकारार्थ कर्कटी राक्षसी का आख्यान मंत्रादि विधि सहित है, जिसके पठन पाठन, श्रवण इत्यादि से विशूचिका अर्थात् हैजे इत्यादि का भय नहीं होता। श्री पटिनी मालय की आज्ञानुसार भट्टपती कृष्णवल्लभ पंडित महाराज की संग्रह की हुई, तीसरी वार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखने में छापी गई। जुलाई, सन् १८९३ ई०, पृ० सं० ३०।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नल दमयन्ती जिसे लक्ष्मीनाथ भट्ट ने (हिन्दी भाषा में) लिखा, दूसरी आवृत्ति, पटना विहार वन्धु छापाखाना, वाँकीपुर, १८९८, पृ० सं० ५३।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्री देवीभागवत भाषा, पंडित महेश दत्त सुकुल ने देवी भागवत का यथाकथित भाषानुवाद किया, छठवीं वार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छपा, सन् १८९९ ई०, पृ० सं० ९५०।

३. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—(क) पद्मपुराण भाषा, चतुर्थ ब्रह्म खंड, जिसका वाबू प्रयाग नारायण जी की आज्ञानुसार उन्नाम प्रदेशान्तर्गत तारगांग निवासी पंडित राम विहारी शुकुल ने संस्कृत से प्रत्यक्षर का भाषानुवाद किया है। पहली वार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छपा, सन् १७९९ ई०।
(ख) पद्मपुराण भाषा, षष्ठ उत्तर खंड (शेष उपरिवत्), पृ० सं० ९५८।

४. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भविष्य पुराण भाषा… जिसको मुंशी नवल किशोर के निदेश से श्री पं० दुर्गाप्रसाद ने संस्कृत भविष्य पुराण से आर्यभाषा में अनुवाद किया। चौथी वार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेछाने में छापा गया। मार्च, सन् १९०६ ई०, पृ० सं० ७२६।

५. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना। आवरणपृष्ठ की प्रतिलिपि—महाभारत भाषा वन पर्व……जिसको……मुंशी नवल किशोर ने……श्री पंडित मोहन लाल सुनु पं० कुंजविहारी लाल जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक का भाषानुवाद कराया। तीसरी वार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छपा। सन् १९०८ ई०।

६. प्राप्ति स्थान—वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्कंद पुराणान्तर्गत सेतु

संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध नहीं हो सके हैं, पर अनुमानतः इनका प्रकाशन-काल १९०० ई० के पूर्व होना चाहिए।

सन् १८९९ ई० में ही भट्ट लक्ष्मी नाथ द्वारा 'महाभारत' की एक कथा के आधार पर लिखित 'सावित्री सत्यवान' नामक कथापुस्तक विहारबन्धु छापाखाना, बाँकीपुर से प्रकाशित हुई।[1]

महाभारतोधृत नल दमयन्ती चरित्र, ले० पं० रामनारायण दुवे, प्र० कमर्शल प्रिंटिंग वर्क्स, लाहौर, प्रथम संस्करण १९०० ई०।[2]

सावित्री चरित, श्री सत्यानन्द अग्निहोत्री, जीवन प्रेस, देवाश्रम, लाहौर, प्रथम संस्करण १९०१, द्वितीय सं० १९१४।[3]

मदालसाख्यानभाषा, ले० कन्हैयालाल, प्र० खेमराज श्रीकृष्ण दास, वेंकटेश्वर स्टीम यंत्रालय, बम्बई १९०२ ई०।[4]

श्रीहनुमानजी, ले० सुखराम दास चौहान, प्र० नेशनल बुक डिपो, दिल्ली, १९०२ ई०।[5] तीसरा संस्करण १९१३।[6]

पौराणिक कथा त्रिशंकु, ले० लक्ष्मी शंकर मिश्र, प्र० लक्ष्मी प्रेस, काशी १९०२ ई०।[7]

महिषासुर, राम बहादुर लक्ष्मी शंकर मिश्र, लक्ष्मी प्रेस, बनारस १९०३ ई०।[8]

श्री महाराज भगवान् रामचन्द्र जी, ले० श्रीमती एनी विसेंट, अ० बाबू मोहन लाल गुजराती, प्र० लक्ष्मी नारायण यन्त्रालय, मुरादाबाद, प्रथम बार १९०५ ई०।[9]

बाल भारत (पहला भाग), ले० ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग द्वितीय सं० १९०६ ई०।[10]

महात्म्य खंड का भाषानुवाद, जिसको श्री पंडित दुर्गा प्रसाद ने संस्कृत से आर्यभाषा में किया, पाँचवी बार, लखनऊ, मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छपा। सन् १८०८ ई०।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सावित्री सत्यवान, जिसे लक्ष्मीनाथ भट्ट ने (हिन्दी भाषा में) लिखा, पटना विहार बन्धु छापाखाना, १८९९।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

६. उपरिवत्।

७. आ० भा० पु०. पुस्तक-सूची।

८. उपरिवत्।

९. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

१०. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।

नलदमयन्ती की कथा, ले० ठाकुर जाहर सिंह वर्मा, प्र० वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, १९०६ ई० ।[1]

सीता जी का जीवन चरित्र, ले० कुँअर हनुमन्त सिंह, प्र० राजपूत ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस, आगरा, दिसम्बर १९०७ ।[2]

राजर्षि भीष्म पितामह का जीवन चरित्र, ले० कुँअर हनुमन्त सिंह रघुवंशी, प्र० लेखक, अध्यक्ष, राजपूत ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस, फरवरी, १९०८ ई० ।[3]

बालभारत (दूसरा भाग) ले० ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा, प्र० इंडियन प्रेस प्रयाग, दूसरा संस्करण १९०८ ई० ।[4]

बालरामायण, ले० पं० रामजी लाल शर्मा, प्र० लेखक, मेरठ, द्वितीय संस्करण १९०८ ई० ।[5]

रामकहानी बाल कांड, ले० सुधाकर द्विवेदी, १९०८ ई० ।[6]

मदालसा, ले० पं० चन्द्रशेखर पाठक, प्र० देवकीनन्दन खत्री, लहरी प्रेस, काशी ।[7]

श्री कृष्ण चरित्र, ले० ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा, प्र० मनोरंजक हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मंडली, ग्वालियर, प्रथम संस्करण १९०९ ई० ।[8]

कैकेयी जी की जीवनी, ले० रामचन्द्र वर्मा, प्र० विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा, उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी, प्रथम संस्करण १९०९ ई० ।[9]

सीताजी की जीवनी, ले० रामचन्द्र वर्मा, प्र० विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा, उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी । प्रथम संस्करण १९०९ ई० ।[10]

सरोज रामायण, ले० पं० चतुर्भुज मिश्र, प्र० लेखक, नोआगढ़ी, गया, प्रथम संस्करण १९१० ई० ।[11]

रामायणीय संग्रह, ले० चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, प्र० नेशनल प्रेस, प्रयाग, प्रथम

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी ।
२. उपरिवत् ।
३. उपरिवत् ।
४. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना ।
५. प्रा० स्था०—चै० पु० गायघाट, पटना सिटी ।
६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
७. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची । पुस्तक सूची में प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है । चंद्रशेखर पाठक द्वारा अनूदित 'अर्थ में अनर्थ या प्रवाल दीप' (प्रकाशन-काल १९०९ ई०) में इस पुस्तक की सूचना है ।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
९. उपरिवत् ।
१०. उपरिवत् ।
११. उपरिवत् ।

संस्करण, १९१० ई० ।[१]

वीर बालक अभिमन्यु का जीवन चरित्र, ले० कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी व पंडित पन्ना लाल शर्मा, प्र० राजपूत ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस, आगरा, अप्रील सन् १९१० ई० ।[२]

सीता चरित्र, ले० पं० रामजी लाल शर्मा, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१० ई० ।[३]

प्रभुचरित्र, ले० पं० शिवरत्न शुक्ल, प्र० ग्रन्थकर्त्ता बछरावां, रायबरेली, प्रथम संस्करण, १९१० ई० ।[४]

भरत मिलाप, ले० श्रीनाथ चन्द्र, अ० श्री प्रकाश देव, प्रकाशक का पता नहीं चलता । प्रकाशन-काल १ अगस्त, १९११ ई० के कुछ पूर्व ।[५]

महर्षि नारद का जीवन चरित्र, ले० और प्र० का पता नहीं चलता । प्रकाशन-काल १ अगस्त १९११ ई० के कुछ पूर्व ।[६]

प्रभुचरित्र, ले० पं० नीलकंठ द्वारका प्रसाद, प्रकाशक का पता नहीं चलता । प्रकाशन-काल अक्तूबर १९११ ई० से कुछ पूर्व ।[७]

वाल्मीकि विजय, ले० हरप्रसाद शास्त्री, डॉ० माधव प्रसाद पाठक, प्र० अनुवादक कर्णघंटा, काशी, प्रथम संस्करण १९११ ई० ।[८]

महात्मा विदुरजी का जीवन चरित्र, ले० की सूचना नहीं दी हुई है, प्र० चिम्मन-लाल वैश्य, तिलहर, यू० पी०, प्रथम वार, सन् १९१२ ई० ।[९]

महात्यागी वीर भ्राता लक्ष्मण, ले० पांडेय लोचन प्रसाद शर्मा, प्र० कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी, प्रथमावृत्ति, सन् १९१२ ई० ।[१०] यह पुस्तक पं० चन्द्रशेखर नन्द कृत एक उड़िया पुस्तक पर आधृत है ।

राजा युधिष्ठिर का जीवन चरित्र, ले० चिम्मनलाल वैश्य, प्र० लेखक, तिलहर, यू० पी०, प्रथम वार सन् १९१२ ई० ।[११]

सावित्री सत्यवान, ले० चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा, प्र०. रामदयाल अगरवाल,

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
२. उपरिवत् ।
३. उपरिवत् ।
४. उपरिवत् ।
५. प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । इसकी समीक्षा सरस्वती, भाग १२, सं० ८, अगस्त १९११ ई० में प्रकाशित हुई थी ।
६. उपरिवत् ।
७. सरस्वती, भाग १२, सं० १० अक्टूबर १९११ ई० ।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
९. उपरिवत् ।
१०. उपरिवत् ।
११. उपरिवत् ।

कटरा, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१२ ई०।[१] इस पुस्तक की रचना बाबू सुरेन्द्रनाथ राय की इसी नाम की पुस्तक के आधार पर हुई है।

पाप परिणाम, ले० **पं० नरोत्तम व्यास**, प्र० हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, दूसरा संस्करण १९१९ ई०।[२] वक्तव्य के अन्त में १९१२ ई०, तिथि मुद्रित है, जिससे अनुमान होता है कि इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल १९१२ ई० है। 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि यह पुस्तक बँगला की 'पापेर परिणाम' नामक पुस्तक पर आधृत है इस में महाभारत की दो कथाएँ 'कीचक वध' और 'जयद्रथ वध' वर्णित हैं।

रामायण रहस्य या राम राज्य, ले० **पं० चन्द्रशेखर पाठक**, प्र० हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९१२ ई०।[३]

पौराणिक उपाख्यान, ले० **चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा**, प्र० नेशनल प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१२ ई०।[४]

राजा कर्ण की कथा, ले० **पं० विश्राम लक्ष्मण कोरे गाँव**, अ० कृष्णानन्द लीलाधर जोशी, प्रकाशक का पता नहीं चलता। प्रकाशन-काल नवम्बर १९१२ ई० के कुछ पूर्व।[५] मराठी से अनूदित।[६]

द्रौपदी स्वयंवर, अन्य सूचनाएं उपरिवत्।[७]

श्री हनुमान चरित्र, ले० **सुखचान्द पद्मशाह खंडवा**, प्र० मूलचन्द किसन दास कापड़िया, सूरत, प्रथम संस्करण, १९१२ ई०।[८]

आदर्श पुरुष श्री रामचन्द्र, ले० **बाबू हरज्ञान सिंह**, प्र० लेखक, सिकन्दराबाद, १९१२ ई०।[९]

सीताराम, ले० **चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा**, प्र० रामदयाल अगरवाल, कटरा, प्रयाग, प्रथम संस्करण, सन् १९१३ ई०।[१०] रचना-काल १९१२ ई०।[११]

सीता देवी

ले० श्री जलधर सेन, अनुवादक और प्रकाशक बाबू रघुनन्दन शरण बी० ए०,

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
२. उपरिवत्।
३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
५. प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसकी समीक्षा सरस्वती भाग १३, सं० ११, नवम्बर १९१२ ई० में प्रकाशित हुई थी।
६. आ० भा० पु० काशी।
७. उपरिवत्।
८. उपरिवत्।
९. उपरिवत्।
१०. उपरिवत्।
११. भूमिका के अन्त में वैशाख शुक्ला १५, सं० १९६९ तिथि दी हुई है।

मेरठ शहर। प्रथम बार सन् १९१३ ई०।[1]

भीष्म पितामह, लेखक और प्रकाशक, कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी, राजपूत एंग्लो ओरियंटल प्रेस, आगरा से मुद्रित, प्रथमावृत्ति, नवम्बर १९१३ ई०।[2]

महात्मा भरत जी, ले० कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी व पं० पन्नालाल शर्मा, प्र० कुँवर सिंह रघुवंशी, राजपूत एंग्लो ओरियंटल प्रेस, आगरा, प्रथमावृत्ति १९१३ ई०।[3]

अंगराज कर्ण, सम्पादक व प्रकाशक, उपाध्याय पं० इन्दु शर्मा भारद्वाज, निरुक्तनिधि महाविद्यालय, ज्वालापुर आर्य संवत् १९७२९४०१३, प्रथम वार। उपक्रमके अन्त में 'श्रावण शुक्ला पंचमी १९६९' मुद्रित है। जिससे इसका रचना काल १९१२ ई० सिद्ध होता है।[4]

रणवीर अभिमन्यु, लेखक और प्रकाशक उपाध्याय इन्दु शर्मा भारद्वाज, महाविद्यालय ज्वालापुर (जिला सहारनपुर), प्रकाशन काल अप्रैल १९१३ ई० के कुछ पूर्व।[5]

श्रीमान् हनुमान जी का जीवन चरित, ले० सुखरामदास चौहान, प्र० लेखक, लाहौर, तीसरा संस्करण १९१३ ई०।[6]

भीष्म पितामह, ले० ब्रजमोहन झा, प्र० हिन्दी साहित्य प्रचारिणी समिति, कानपुर, प्रथम संस्करण १९१३ ई०।[7]

रामाश्वमेध, ले० सुन्दर लाल द्विवेदी, प्र०, इंडियन प्रेस प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१३ ई०।[8]

सती लक्ष्मी, ले० अर्जुन प्रसाद बसु, सं० सुदर्शनाचार्य, प० गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१४ ई०[9]

दमयन्ती चरित्र, ले० पं० रामनरेश त्रिपाठी, प्र० पं० सुदर्शनाचार्य, बी० ए०, गृह लक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१४ ई०।[10]

भीष्म पितामह, ले० चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, प्र० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी १९१४ ई०।[11] इसका तीसरा संस्करण इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग से १९३१ ई० में प्रकाशित हुआ[12] 'विज्ञप्ति' के अंत में पौप शुक्ला ११ संवत् १९६९ अंकित है, जिससे इसका रचना काल १९१३ ई० सिद्ध होता है। 'विज्ञप्ति' से यह भी ज्ञात होता

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

२. उपरिवत्।

३. उपरिवत्।

४. उपरिवत्।

५. सरस्वती, भाग १४, अंक ४, अप्रैल १९१३ में प्रकाशित पुस्तक समीक्षा।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

७. उपरिवत्।

८. उपरिवत्।

९. उपरिवत्।

१०. उपरिवत्।

११. आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची।

१२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

है यह पुस्तक श्रीयुत रजनीकान्त गुप्त की 'भीष्म चरित' नामक बँगला पुस्तक पर आधृत है।[१]

श्री राम कथा, ले० **चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा**, प्र० रामनारायण लाल, पब्लिशर ऐंड बुकसेलर, प्रयाग, प्रथम संस्करण, १९१४ ई०।[२]

श्री कृष्ण कथा, ले० **चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा**, प्र० रामनारायण लाल, पब्लिशर ऐंड बुकसेलर, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१४ ई०।[३]

वचन प्रतिपालक महाराजा दशरथ का जीवन चरित, लेखक और प्रकाशक **चिम्मन लाल वैश्य**, तिलहर, प्रथम बार १०००, १९१४ ई०।[४]

श्रमण नारद, ले० और प्र० **नाथू राम प्रेमी**, मालिक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई, प्रथम संस्करण १९१४ ई०, द्वितीय संस्करण १९१८ ई०, तृतीय संस्करण १९२६ ई०।[५]

धनुर्धर अर्जुन, ले० **ब्रजमोहन झा**, प्र० छेदीलाल मर्चेण्ट प्रेस, कानपुर, प्रथम संस्करण १९१४ ई०।[६]

जानकी वा आदर्श सुन्दरी, ले० **हरिहर प्रसाद गुप्त**, प्र० विश्वम्भर कार्यालय, मथुरा, प्रथम संस्करण १९१४ ई०।[७]

नरशार्दूल अभिमन्यु, ले० **ब्रजमोहन झा**, प्र० सिद्धगोपाल शुक्ल, कानपुर, प्रथम संस्करण १९१४ ई०।[८]

कृष्णकहानी, **विखाहूराम शिरोमणिदास**, प्र० यूनियन प्रेस कं० लिमिटेड, जबलपुर, प्रथम संस्करण १९१४।[९]

पाप परिणाम, ले० का पता नहीं चलता। प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, प्रकाशन काल १९१५ ई० के पूर्व।[१०]

प्रह्लाद, ले० **पं० नरोत्तम व्यास**, प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता, पहली बार सन् १९१५ ई०।[११] 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह

---

१. भीष्म पितामह, ले० द्वारका प्रसाद शर्मा, तीसरा संस्करण, १९३१, विज्ञप्ति।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन तिथि नहीं है। 'हमारा वक्तव्य' के अन्त में "ता० २८ अक्तूबर १९१७" मुद्रित है।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन तिथि नहीं है, पर भूमिका के अन्त में "ता० १३ अप्रील, सन् १९१४" मुद्रित है।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची।

६. आ० भा० पु० काशी।

७. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी।

८. उपरिवत्।

९. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।

१०. प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। सूचना फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास से प्राप्त की गयी है।

११. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

कथा श्री योगेन्द्रनाथ गुप्त प्रणीत 'भक्तेर कथा' की शैली पर लिखी गयी है ।[1]

दाशरथी श्री रामचन्द्र, सं० चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, प्र० बाबू मनोहर लाल भार्गव, मु० नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ। प्रथम संस्करण १९१६ ई० ।[2] रचना काल १९१५ ई० ।[3]

सचित्र हिन्दी महाभारत, ले० पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्रकाशन काल जनवरी १९१६ ई० के पूर्व ।[4]

सती सुचरित्र, ले० श्रोत्रिय जगदीश दत्त, प्र० लेखक दीनबन्धु प्रेस, बिजनौर, दूसरा संस्करण १९१६ ई० ।[5]

धर्मोपाख्यान, ले० सुन्दर लाल शर्मा, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१६ ई० ।[6]

ध्रुव चरित्र, ले० रामकृष्ण उपासनी, प्र० लेखक कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९१६ ई० ।[7]

पतिव्रता सुनीति, ले० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी, प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी, हरिसन रोड, कलकत्ता। प्रकाशन काल अप्रैल १९१६ ई० के पूर्व ।[8]

राजर्षि ध्रुव, ले० पं० रामकृष्ण उपासनी, प्र० पाठक ऐंड कम्पनी, कलकत्ता प्रथम सं० १९१६, द्वितीय सं० १९२४ ।[9]

सचित्र भीम चरित, ले० गणेश दत्त शर्मा गौड़ (इन्द्र), प्र० सुलभ ग्रन्थ प्रचारक मंडल, १२ हरि सरकार लेन, कलकत्ता, प्रथम वार १९१८ ई० ।[10] रचना काल १९१६ ई० ।[11]

परशुराम, ले० पं० नरोत्तम व्यास, प्र० निहाल चन्द ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, प्रथम सं० १९१७ ई० ।[12]

दशावतार कथा, ले० अक्षयवट मिश्र (विप्रचन्द), प्र० खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, पहली वार १९१७ ई० ।[13]

---

१. प्रह्लाद, ले० नरोत्तम व्यास, प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी।
२. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० काशी।
३. पुस्तक की भूमिका के अन्त में "२२-८-१९१५" तिथि अंकित है।
४. सरस्वती, भाग १७, अंक १, जनवरी १९१६ ई० विज्ञापन।
५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
८. सरस्वती, भाग १७, अंक ४, अप्रील १९१६ ई०।
९. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
१०. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
११. भीम चरित्र, ले० गणेशदत्त शर्मा गौड़, प्रथम संस्करण १९१८ ई०, प्राक्कथन।
१२. आ० भा० पु०, पुस्तक-सूची।
१३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

महाभारतीय सुनीति कथा, ले० पं० रामदहिन मिश्र काव्य तीर्थ, प्र० ग्रन्थ माला कार्यालय, बाँकीपुर, प्रथम संस्करण १९१७ ई० ।[१]

पतिव्रता गान्धारी, ले० पं० कात्यायानी दत्त त्रिवेदी, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्रथम बार १९१७ ई० ।[2]

दमयन्ती, ले० बद्री प्रसाद भार्गव, प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, दूसरा संस्करण १९१८ ई० ।[३]

सावित्री, ले० बद्री प्रसाद भार्गव, प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, तीसरा संस्करण १९१९ ई० ।[४]

पार्वती, ले० हरिराम भार्गव, प्र० हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, तीसरा संस्करण १९१९ ई० ।[५]

सीता वनवास व लवकुश, ले० कनक प्रसाद चौधरी, प्रकाशक और प्रकाशन काल का पता नहीं चलता ।[६]

तपस्वी भरत जी का जीवन चरित्र, लेखक और प्रकाशक, चिम्मनलाल वैश्य तिलहर, प्रकाशन काल का पता नहीं चलता ।[७]

---

१. प्राप्ति स्थान—मा० पु०, पटना ।

२. प्रा० स्थान—आ० भा० पु० पटना ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

४. उपरिवत् ।

५. उपरिवत् ।

६. प्रा० स्थान—मा० पु० पटना ।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

अनूदित
स्त्री शिक्षा प्रधान पुस्तकें

सीता चरित्र

"हिन्दी प्रदीप", जिल्द १८, सं० ८-९-१० (अप्रैल-मई,जून १८९५ ई०) में मुन्शी दयाराम लिखित 'सीता चरित्र' नावल के प्रथम भाग की समीक्षा प्रकाशित हुई थी।[१] इससे स्पष्ट होता है कि 'सीता चरित्र' का प्रथम भाग जून १८९५ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था। इस भाग का पाँचवाँ संस्करण १९१० ई० में प्रकाशित हुआ।[२] 'सीता चरित्र' के दूसरे भाग का तीसरा संस्करण जून १९०६ ई० में, तीसरे भाग का तीसरा संस्करण जून १९०६ ई० में, चौथे भाग का तीसरा संस्करण नवम्बर १९०६ ई० में, पाँचवें भाग का दूसरा संस्करण १९११ ई० में और छठे भाग का पहला संस्करण १९१३ ई० में प्रकाशित हुआ।[३] इस प्रकार यह कथा पुस्तक ६ भागों में समाप्त हुई है। यह उर्दू से अनूदित है।

मर्द औरत का किस्सा

सन् १८९५ ई० में एक अग्रवाल श्रेष्ठ कुल की कुलीन जैनमती स्त्री का रचा हुआ 'मर्द और औरत का किस्सा' नामक गद्यकथा का चौथा संस्करण नवल किशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[४] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असफल रहा है।

---

१. प्रा० स्था०—चै० पु० पटना।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सीता चरित्र, प्रथम भाग, स्त्री शिक्षा विषयक—उत्तम २ कहानी और स्त्री धर्म सम्बन्धी उपाख्यान युक्त सरल मनोहर पुस्तक जिसको मुंशी दयाराम साहब ने अपने रचे हुए 'सीता चरित्र नावल' से देवनागरी में उल्था करके प्रकाशित किया। पं० शंकरदत्त शर्मा ने अपने धर्म दिवाकर प्रेस, मुरादाबाद में छापा। पाँचवीं बार २०५० सन् १९१०।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मर्द औरत का किस्सा, एक अग्रवाल श्रेष्ठ कुल की कुलीन जैनमती स्त्री का रचा हुआ मुंशी उजागर मल साहिब तहसीलदार सिकन्दरा राज जिला अलीगढ़, प्रति जिसमें स्त्री पुरुष की उत्तमोत्तम वार्त्ता से पुरुष कल्पित स्त्री दोषों का निर्णय किया गया है। ग्रन्थकार की अनुमति से लखनऊ से चौथी बार मुंशी नवल किशोर के छापेखाने में छपी, फरवरी सन् १८९५ ई० ४ जून पृ० सं० ७०।

हिन्दी कथा साहित्य

(एक दृष्टि में)

यहाँ सन् १८००-१९१७ ई० की अवधि में रचित और प्रकाशित मौलिक कथापुस्तकों की तिथिक्रमानुसारी एवं विषयानुसारी तालिका प्रस्तुत की जा रही है। विषयगत वर्गीकरण का रूप यहाँ भी वही है, जो पुस्तक में है। तिथिक्रम में पुस्तक के रचना-काल को आधार बनाया गया है। जिन ग्रन्थों के केवल प्रकाशन-काल का पता चलता है उनके लेखन-काल और प्रकाशन-काल को एक मान लिया गया है; पर जिन पुस्तकों के रचना-काल और प्रकाशन-काल भिन्न हैं, उनका रचना-काल तो पुष्ट अक्षरों में मुद्रित है और प्रकाशन-काल महीन अक्षरों में कोष्ठक के अन्तर्गत दे दिया गया है। पुस्तकों के पूरे नाम दिये गये हैं। किसी एक वर्ष के अन्तर्गत रचित पुस्तकों को अक्षर क्रम में सजा दिया गया है। प्रत्येक पंक्ति के अन्त में प्रदत्त पृष्ठ संख्या प्रस्तुत कोश की है, जिसमें तत्तद् ग्रन्थ का विवरण उपलब्ध हो सकता है।

मौलिक उपन्यास (सामान्य)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१८७०	देवरानी जेठानी की कहानी	गौरी दत्त	३३
१८७२ [प्र० का० १८८३]	वामाशिक्षक	मुंशी ईश्वरी प्रसाद, मुंशी कल्याण राय	३३-३४
१८७५	स्त्री दर्पण	माधव प्रसाद	३४
	मालती उपन्यास		३४
१८७७ [प्र० का० १८८७]	भाग्यवती	श्रद्धाराम फुल्लौरी	३४-३५
१८७९	तपस्विनी	— —	३५
	रहस्यकथा उपन्यास	बालकृष्ण भट्ट	३५
१८७०-७९	एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	३५-३६
१८८०	अमृत चरित्र	देवकीनन्दन त्रिपाठी	३५
१८८१ [प्र० का० १८९०]	निस्सहाय हिन्दू	राधाकृष्ण दास	३६
१८८२	परीक्षा गुरु	लाला श्रीनिवास दास	३७
	गुप्त वैरी	बालकृष्ण भट्ट	३९
१८८४	उचित दक्षिणा	बालकृष्ण भट्ट	
१८८५ [प्र० का० १८८६]	स्त्री उपदेश	माधव प्रसाद	

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१८८५ [प्र० का० १८८८]	श्यामा स्वप्न	ठाकुर जगमोहन सिंह	४१
१८८६	नूतन ब्रह्मचारी	बालकृष्ण भट्ट	४१-४२
१८८७ [प्र० का० १८९३]	नूतन चरित्र	रतनचन्द्र प्लीडर	५५
१८८७ [प्र० का० १८९०]	प्रणयिनी परिणय	किशोरीलाल गोस्वामी	४२,१५८
१८८८ [प्र० का० १८९०]	त्रिवेणी या सौभाग्य श्रेणी	किशोरीलाल गोस्वामी	४२,१५८
	विधवा विपत्ति	देवी प्रसाद शर्मा	४३
१८८९ [प्र० का० १९०१]	स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी	किशोरीलाल गोस्वामी	४३
	सद्भाव का अभाव	बालकृष्ण भट्ट	४३
	परस्पर ठग उपन्यास	— —	४३
१८९०	सुहासिनी	किसी साध्वी सती प्राण अबला लिखित	१७५
	सौदामिनी	राधाचरण गोस्वामी	१७६
१८९०-९५	सौ अजान एक सुजान	बालकृष्ण भट्ट	१७६
१८९१	सच्चा मित्र	देवदत्त	१७७
१८९२	धर्मराज की कहानी	बालकृष्ण भट्ट	१७७
	रसातल यात्रा	,,	१७७
	हमारी घड़ी	,,	१७७
१८९३	घराऊ घटना	भुवनेश्वर मिश्र	१६३
	चन्द्रकला	कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी	१७८
	वचन तरंगिणी	भवदेव पंडित	१७८
	समुद्र में गिरीन्द्र	ल० ना० शर्मा	१७८
[प्र० का० १८९४]	हुकुम देवी	श्रीमती हरदेवी	१७८
१८९४	चतुरा अर्थात् साधवी सुरेन्द्र	सतीश चन्द्र वसू	१६१
	पुष्पवती	गोकुलनाथ शर्मा	१७९
	प्रेमकान्ता	अयोध्या सिंह उपाध्याय	१६४
	बुद्धिवती	रोशनलाल, बी० ए०	२२०
	सुबोध कन्या	लाला देवराज	२२०
	सुवामा	राम गुलाम	१७९
१८९५	ललित लता	रामप्रकाश लाल	१७९
१८९५-९६	भाग्य की परख	बालकृष्ण भट्ट	१८०

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१८९६	इलामती	तुलसी प्रसाद	१८०
	नीलमणि	जगन्नाथ शरण	१८०
	बलवन्त भूमिहार	भुवनेश्वर मिश्र	१६४
[प्र० का० १९०१]			
१८९७	राजेन्द्र मालती	ब्रजनन्दन सहाय	१६६
१८९८	अपूर्व सन्यासी	रुद्रदत्त शर्मा	१८१
	राजकुमारी चन्द्रमुखी	रामदास वर्मा	१८०
१८९८	सरस्वती	दुर्गादत्त मिश्र	१८१
१८९९	वसन्त मालती	जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी	१८१
	जन्माष्टमी	बलदेव प्रसाद मिश्र	१८२
	ठेठ हिन्दी का ठाट	अयोध्या सिंह उपाध्याय	१६५
	दीनानाथ व गृहचरित्र	कार्तिक प्रसाद खत्री	१८२
	धूर्त रसिकलाल	मेहता लज्जाराम शर्मा	१६९
	मुग्धामुखी	रामस्वरूप शर्मा	१८२
	स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी	मेहता लज्जाराम शर्मा	१७०
१९००	अपना यथार्थ हक्क	हनुमान प्रसाद	१८२
	उपन्यास भंडार	कन्हैयालाल श्याम सुन्दर त्रिपाठी	१८२
	सत्कुलाचार	मुरलीधर शर्मा	१८२
१९०१	अद्‌भुत प्रायश्चित्त	ब्रजनन्दन सहाय	१६७
[प्र० का० १९०६]			
	लीलावती	किशोरीलाल गोस्वामी	१६०
	शीला	हरिहर प्रसाद जिजल	१८२
१९०१-०२	कर्कशा सास	लाला देवराज	१८३
[प्र० का० १९०४]			
१९०२	आदर्श दम्पती	मेहता लज्जाराम शर्मा	१७१
[प्र० का० १९०४]			
	चन्द्रावली	लालजी सिंह	१८४
	चम्पा	श्यामलाल चक्रवर्त्ती	१८३
	देवरानी जेठानी	गोपालराम गहमरी	१७२
	श्याम विनोद	श्यामजी शर्मा काव्यतीर्थ	१८३
	सती सुखदेई	अमृतलाल चक्रवर्ती	१८३
	हिन्दू गृहस्थ	महता लज्जाराम शर्मा	१७०
[१९०३ प्र० का०]			

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९०३	उपन्यास कुसुम	अमृतलाल चक्रवर्ती	१८४
	चपला वा नव्य समाज चित्र	किशोरीलाल गोस्वामी	१६१
	दुनिया अर्थात् संसार की कुछ बातें	गंगाप्रसाद मिश्र	१८४
	नरदेव	राम प्रताप शर्मा	१८४
	प्रेमपथ	शारदा प्रसाद वर्मा	१८४
	हृदय का कोना	अनन्त प्रसाद विद्यार्थी	१८४
१९०४	कनक सुन्दर	शिवचन्द्र भारतिया	१८५
	कान्ति माला	मनोहर लाल	१८६
	कुलवन्ती	रामचीज सिंह	१८५
	चतुरा की चतुराई	स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती	१८५
	चन्द्रावली वा कुलटा कुतूहल	किशोरी लाल गोस्वामी	१६१
	चन्द्रिका वा जड़ाऊ चम्पाकली	,,	१६१
	चम्पा दुर्दशा	रामफेरन सिंह	१८६
	दो मित्र	पांडेय लोचन प्रसाद	१८६
(प्र० का० १९०६)			
	ललना बुद्धि प्रकाशिनी	परमेश्वर मिश्र	२२०
	विद्याधरी	गिरिजानन्दन तिवारी	१८५
१९०५	उर्दू बेगम	एक बी० ए० लिखित	१८७
	किस्मत का खेल	विट्ठलदास नागर	१८६
	कुल कलंकिनी	कमला प्रसाद वर्मा	१८७
	तरुण तपस्विनी वा कुटीरवासिनी	किशोरीलाल गोस्वामी	१६१
	तीन पतोहू	गोपालराम गहमरी	१७२
	तीन बहिन	हजारी लाल	१८८
	तीन शिक्षामय कथाएँ	लाला देवराज	१८७
	निर्मला	एस० एन० गुप्त जैनी	१८८
	मनमोहिनी	शीतल प्रसाद	१८८
	रम्भा	रामनारायण दीक्षित	१८८
	सरला	चक्रपाणि त्रिपाठी	१८७
१९०६	अधखिला फूल	अयोध्या सिंह उपाध्याय	१६५
	अलबेला रागिया	गोपाललाल खत्री	१८८
	इन्दुमती वा वनविहंगिनी	किशोरीलाल गोस्वामी	१६२
	पवित्र जीवन	गोकुलानन्द प्रसाद वर्मा	१८९
	फूल में काँटा	रामजीदास वैद्य	१९०
	भयानक भूल	रूप नारायण पाण्डेय	१८९

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१९०६	मंजरी	कुँवर लक्ष्मीनारायण	१९०
	मोती	गोकुलानन्दन प्रसाद वर्मा	१८९
	विचित्र उपन्यास अर्थात्		
	बुढ़ापे का व्याह	चन्द्रसेन जैनी	१८९
	सुलोचना	गिरिजानन्दन तिवारी	१८९
१९०७	अपराजिता	सकल नारायण पाण्डेय	१९१
	गुलेनार	जैनेन्द्र किशोर	१९१
	दो स्त्री का पति	मुंशी हजारी लाल	१९२
	धोखे की टट्टी	रामजीदास वैश्य	१९२
	नलिनी वा चितचोर	लक्ष्मीनारायण गुप्त	१९१
	पुनर्जन्म वा सौतियाडाह	किशोरीलाल गोस्वामी	१६२
	प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह	नवाव राय वनारसी	१९३
	विगड़े का सुधार अथवा सती सुखदेवी	मेहता लज्जाराम शर्मा	१७१
	मेरी सूरज	— —	१९०
	रमा बाई	चन्द्रशेखर पाठक	१७३
	लक्ष्मी कान्ता	लाला प्यारे लाल वृष्णी	१९०
	वीर वाला वा अपूर्व नारीत्व	कुमार प्रतिपाल सिंह	१९२
	सुशीला विधवा	मेहता लज्जाराम शर्मा	१७१
१९०८	झगड़ू लाल की करतूत	महादेव प्रसाद मिश्र	१९५
	मनोरमा	जैनेन्द्र किशोर	१९४
	राजवीर	वदरीनाथ	१९४
	लक्ष्मी	प्रियंवदा देवी	१९४
	सुशीला	गोपालदास वरैया	१९४
	सुशीला विधवा	लोलाराम शर्मा	१९४
	हिरण्यमयी	ईश्वरी प्रसाद शर्मा	१७४
१९०९	अनन्त	राम प्रसाद सन्याल	१९७
	किरण शशी	पुरोहित राम प्रसाद सन्याल	१९६
	खुदीराम वा गरीबदास	इन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय	१९६
	गृहस्थ चरित्र	कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी	१९५
	चन्द्रकुमारी	झावरमल दारुका	१९७
	जहर का प्याला वा राजराजेश्वरी	जयराम दास	१९८
	त्रैलोक्य सुन्दरी	आत्माराम देवकर	१९६
	पार्वती	कुन्ती देवी	१९५
	प्रेमलता	रामप्रसाद सन्याल	१९६

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
	भीपण भविष्य	गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य	१९७
१९०९	माधवी माधव वा मदन मोहिनी	किशोरीलाल गोस्वामी	१६२
	मिस्ट्रीज ऑफ शेखावाटी	चुन्नीलाल ज्योतिषी	१९५
	राजदुलारी	जयराम दास	१९८
	वन विहंगिनी	रामचीज सिंह वल्लभ	१९७
	विपत्ति की कसौटी	मेहता लज्जाराम शर्मा	१७१
	वीर सिंह या वहादुर	श्रीकृष्ण हसरत	१९५
१९१०	असभ्य रमणी	गोस्वामी व्रजनाथ शर्मा	१९८
	चन्द्रावती	व्रजमोहन लाल झा	१९९
	चपला	परानमल सारस्वत ओझा	१९९
	प्रेम का फल	ह० स० गुप्त	१९९
	लक्ष्मी देवी	गंगा प्रसाद गुप्त	१९८
	स्वर्णमयी वा जैसी करनी वैसी भरनी	ईश्वरी प्रसाद शर्मा	१७५
१९११	आदर्श रमणी	शालिग्राम गुप्त	१९९
	किशोरी नरेन्द्र	ब्रह्मदत्त शर्मा "शान्त"	२००
	गौहरजान	काशी प्रसाद	२०१
	तारामती	केदार नाथ शर्मा	२०१
	नलिनी वावू	ईश्वरी प्रसाद शर्मा	१७५
	प्रेम वा प्राणसमर्पण	रामनाथ पाण्डेय	२००
	मागधी कुसुम वा सरला सुन्दरी	ईश्वरी प्रसाद शर्मा	१७५
	माधवी	रूपकिशोर जैन	२००
	लक्ष्मी	रामनरेश त्रिपाठी	१९९
	सच्चा पतिप्रेम	यशोदा देवी	२००
	सौन्दर्योपासक	व्रजनन्दन सहाय	१६८
१९१२	आदर्श कन्या पाठशाला	ओंकार नाथ वाजपेयी	२०३
	आदर्श माता	हेमन्त कुमारी चौधरी	२०३
	कल्याणी	शंकर लाल अग्रवाल	२०३
	ठनठन वावू	रामदत्त ज्योतिर्विद	२०४
	दिया तले अँधेरा	नाथूराम प्रेमी	२०२
	दुर्भाग्य परिवर्त्तन	जमुना प्रसाद	२०४
	प्रेमलता वा आदर्श दम्पत्ति	उमराव सिंह गुप्त	२०३
	धूल भरा हीरा	वाँकेलाल चतुर्वेदी	२०४
	भुवन कुमारी	विश्वंभर दयाल गुप्त	२०४
	माधवी	कृष्णलाल गोस्वामी	२०१

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
	मारवाड़ी और पिशाचिनी	रामनरेश त्रिपाठी	२०३
	मूर्ख और बुद्धिमान	चुन्नीलाल खत्री	२०२
१९१२	लक्ष्मी	ओंकारनाथ वाजपेयी	२०१
	राधाकान्त	व्रजनन्दन सहाय	१९८
	लालू और कालू	देवीप्रसाद तिवारी	२०२
	शान्ता	ओंकारनाथ वाजपेयी	२०१
१९१३	आदर्श बहू	उमराव सिंह गुप्त	२०४
	छोटी बहू	गिरिजा कुमार घोष	२०५
	जवाकुसुम अथवा नयी सृष्टि	लक्ष्मीदत्त जोशी	२०६
	देवकली	अनर्चित लाल	२०५
	मिस्टर व्यास की कथा	शिवनाथ शर्मा	२०६
	मृगांक लेखा	शिवनाथ शर्मा	२०५
	राजभक्ति	लाला राधेलाल अग्रवाल	२०५
	सत्यप्रेम	जगतचन्द रमोला	२०६
१९१४	अघट घटना	लाला भगवान दीन	२०८
	आदर्श परिवार	मणिशंकर शर्मा	२२१
	आदर्श मित्र	आत्माराम देवकर	२०७
	केसर	झावरमल दारुका	२०८
	चंडूल दास	शिवनाथ शर्मा	२०७
	चम्पा फूल	अनादिधन वंद्योपाध्याय	२०७
	मनमोहिनी	आत्माराम देवकर	२०७
	रामलाल	मन्नन द्विवेदी गजपुरी	२०९
	लवंगलता	प्यारे लाल गुप्त	२०६
	सौन्दर्य कुमारी	ब्रह्मकुमारी : भगवानदेवी दूबे	२०८
	सौभाग्यवती	प्राणनाथ	२०८
	हमारी दाई	पारसनाथ त्रिपाठी	२०७
१९१४-१८	वारांगना रहस्य वा स्त्री वैचित्र्य	चन्द्रशेखर पाठक	१७३
१९१५	आदर्श विद्यार्थी	सिद्धनाथ द्विवेदी	२०९
	आदर्श हिन्दू	मेहता लज्जा राम शर्मा	१७२
	आरण्यबाला	व्रजनन्दन सहाय	१९९
	चंचला	म० कृष्ण अमृतसरी आर्य्योंदेशक	२०९
	भारत माता	हरस्वरूप पाठक	२१०
	मालती	वाल मुकुन्द वर्मा	२०९
	माया मरीचिका	आत्माराम देवकर	२०९

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
	मेरी दुःख गाथा	कुंवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी	२१०
	विमला	— —	२१०
	सुशीला	देवेन्द्र	२१०
१९१६	कॉलेज होस्टल	चाँद करण सारदा	२१३
	कैसा अँधेर	अनादिघन वंद्योपाध्याय	२१२
	जावित्री	छबीले लाल गोस्वामी	२१२
	जोगी की फेरी	रामविलासजी शारदा	२१४
	तरल तरंग	सोमेश्वर दत्त शुक्ल	२१०
	नकली साधु	अयोध्या प्रसाद शुक्ल	२१२
	रामप्रताप	जालिम सिंह	२१३
	रोहिणी	नवल किशोर सहाय	२११
	विमाता	अवध नारायण	२१२
	शिरोमणि	शंकर दयाल श्रीवास्तव	२११
	श्यामाश्याम	शंकर प्रसाद मिश्र	२११
	सदाचारी बालक	शय्यद अमीर अली 'मीर'	२११
१९१७	अँगूठी का नगीना	किशोरी लाल गोस्वामी	१६२
[१९१८ प्र० का०]			
	अद्भुत रहस्य वा सचित्र विचित्र वारांगना	माधव केसीट	२१६
	अलका मन्दिर	(महथा) देवनारायण प्रसाद सिंह	२१४
	अशान्त	विनोद शंकर व्यास	२१६
[१९२७ प्र० का०]			
	आचरण परिशोध	गुरुनारायण खन्ना	२१४
	आदर्श विद्यार्थी	सिद्धनाथ दीक्षित	२१७
	दो कान्ता	धन्नालाल जैन	२१४
	पीयूष धारा	गुरुदत्त जी शर्मा	२१५
	प्रेम	श्रीकृष्ण मिश्र	२१५
	मोहिनी	(अखौरी) राधा प्रसाद सिंह	२१६
	रात की वारदात अर्थात् डूबती हुई औरत	गुरुमुख सिंह खत्री	२१७
	सदाचारिणी	कुमुद बाला देवी	२१४
	सुभद्रा	रामनरेश त्रिपाठी	२१५
	हृदय की परख	चतुरसेन शास्त्री	२१६

इतिहासाश्रित कथापुस्तकें तथा उपन्यास

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१८९०	हृदयहारिणी वा आदर्श रमणी	किशोरीलाल गोस्वामी	१२६
१८९०	लवंगलता वा आदर्श वाला	किशोरीलाल गोस्वामी	१२६
[१९०४ प्र० का०]			
	निहाल दे की पुस्तक	भेदी राम	१३५
	विद्रोही राजा	के० एन० भारद्वाज	१३६
१८९३	महाराज विक्रमादित्य का जीवनचरित्र	कार्तिक प्रसाद क्षत्री	१३६
१८९४	महाराज छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र	कार्तिक प्रसाद	१३६
	वीर नारायण	हरिचरण सिंह चौहान	१३६
[१८९५ प्र० का०]			
१८९७	जया	कार्तिक प्रसाद खत्री	१३६
१९००	अनारकली	वलदेव प्रसाद मिश्र	१३७
	बारहवी सदी का वीर जगदेव परमार	रामजीवन नागर	१३७
[१८१२ प्र० का०]			
१९०१	पृथ्वीराज चौहान	जयन्ती प्रसाद उपाध्याय	१३८
१९०२	कोटारानी	व्रज विहारी सिंह	१३८
	तांतिया भील	मदनमोहन ज्योतिषी	१३८
	पानीपत	वलदेव प्रसाद मिश्र	१३८
	पृथ्वीराज चौहान	,,	१३८
	गुलवहार वा आदर्श भ्रातृस्नेह	किशोरीलाल गोस्वामी	१२७
	तारा वा क्षत्रकुलकमलिनी	,,	१२७
	तांतिया की वहादुरी	— —	१३९
	नूरजहाँ वा संसार सुन्दरी	गंगा प्रसाद गुप्त	१३१
१९०३	पूना में हलचल वा वनवासी कुमार	,,	१३१
	वीरपत्नी	,,	१३१
	कुँवर सिंह सेनापति	,,	१३२
	वीर जयमल वा कृष्णकान्ता	गंगा प्रसाद गुप्त	१३२
	वीरवाला	वाबू लालजी सिंह	१३९
[१९०६ प्र० का०]			
	नरदेव	राम प्रताप शर्मा	१३९
१९०३-०५	पद्मा कुमारी	विट्ठल दास नागर	१३९
१९०४	रणधीर सिंह	मिट्ठूलाल मिश्र	१३९

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१९०४	पंजाब पतन	श्याम सुन्दर वैद्य	१३९
	रानी भवानी	गंगा राम गुप्त	१४०
	हम्मीर	गंगा प्रसाद गुप्त	१३२
	कनक कुसुम वा मस्तानी	किशोरीलाल गोस्वामी	१२७
	हीरावाई वा वेहयायी का वोरका	,,	१२८
१९०४-०५	सुलताना रजिया वेगम	,,	१२८
१९०५	मल्लिका देवी वा वंग सरोजिनी	,,	११८
	नूरजहाँ वेगम व जहाँगीर	मथुरा प्रसाद	१४०
	पद्मिनी	गिरिजानन्दन तिवारी	१४०
१९०६	सौतेली माँ या अन्तिम युवराज	जयरामलाल रस्तोगी	१४०
	रूठी रानी	मुंशी देवी प्रसाद	१४१
	लखनऊ की नवाबी	ठाकुर प्रसाद खत्री	१४१
१९०६-१८	लखनऊ की कब्र वा शाही महलसरा	किशोरी लाल गोस्वामी	१२९
१९०७	काश्मीर पतन	जयराम दास गुप्त	१३३
	किशोरी वा वीरवाला	,,	१३३
	अपराजिता	सकल नारायण : व्रजनन्दन सहाय	१४१
	महाराणा प्रताप सिंह की वीरता	हरिदास माणिक	१४२
	ताजमहल या फतहपुरी वेगम	जयराम लाल रस्तोगी	१४१
	वीर मालोजी भोंसले	रामजीवन नागर	१४१
१९०८	मायारानी	जयराम दास गुप्त	१३३
	नवावी परिस्तान वा वाजिदअली शाह	,,	१३३
१९०९	कलावती	,,	१३४
	प्रभात कुमारी	,,	१३४
	वीर वीरांगना वा आदर्श ललना	,,	१३४
	सोना और सुगन्ध वा पन्नावाई	किशोरीलाल गोस्वामी	१२९
	लाल कुँवर वा शाही रंगमहल	,,	१३०
(१९१३ प्र० का०)			
	रणवीर	चुन्नीलाल खत्री	१४२
	सौन्दर्य कुसुम वा महाराष्ट्र का उदय	ठाकुर वलभद्र सिंह	१४२
१९१०	रानी पन्ना वा राज ललना	जयराम दास गुप्त	१३५
१९११	वीरांगना	रामनरेश त्रिपाठी	१४२
	वीरवाला	रामनरेश त्रिपाठी	१४३
	जयश्री व वीर वालिका	ठाकुर वलभद्र सिंह	१४३

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
	सौन्दर्य प्रभा वा अद्भुत अँगूठी	ठाकुर वलभद्र सिंह	१४३
१९१२	महारानी पद्मिनी	वसन्तलाल शर्मा	१४३
	यमुना बाई	स्वामी अनुभवानन्द सरस्वती	१४३
	राणा सांगा और बाबर	हरिदास माणिक और कालिदास माणिक	१४४
१९१३	गुप्त गोदना	देवकी नन्दन खत्री	१३०
	मेवाड़ का उद्धारकर्त्ता	हरिदास माणिक और कालिदास माणिक	१४४
	महाराष्ट्र वीर	रामप्रताप गुप्त	१४४
१९१४	पैशाचिक काण्ड		१४५
	जुझार तेजा	मेहता लज्जाराम शर्मा	१४५
१९१५	रजिया बेगम	व्रजनन्दन सहाय	१४५
	प्रणपालन	सिद्धनाथ सिंह	१४६
	वीर चूड़ामणि	अखौरी कृष्ण प्रकाश	१४६
	भीम सिंह	चन्द्र शेखर पाठक	१४६
१९१६	कृष्ण कुमारी बाई	मुंशी देवी प्रसाद	१४७
	अनंग पाल	दुर्गा प्रसाद खत्री	१४७
	राजपूत रमणी	युगल किशोर नारायण सिंह	१४७
	लाल चीन	व्रजनन्दन सहाय	१४८
	विचित्र वीर	मुरारी लाल	१४८
१९१७	वीरमणि	श्याम विहारी मिश्र शुकदेव विहारी मिश्र	१४८
	सोने की राख या पद्मिनी	रूप नारायण	१४९
	रानी दुर्गावती	वाबू श्याम लाल गुप्त	१४९
	सुप्यार दे की आरती	मुंशी देवी प्रसाद	१४९
१९१८	आदर्श वीरांगना दुर्गा	शेर सिंह	१४९
	पतिपत्नी प्रेम	कविराज जयगोपाल विद्याभंडार	१५०
	उल्लंघन और प्रायश्चित्त अथवा फैजावाद की बेगम		१५०
	सुर सुन्दरी	हरे कृष्ण जौहर	१५०

ऐयारी तिलस्म प्रधान उपन्यास

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१८९१	चन्द्रकान्ता	देवकीनन्दन खत्री	७४-७८
१८९४-०५	चन्द्रकान्ता सन्तति	देवकीनन्दन खत्री	७८-८२
१८९८-१९००	कुसुमलता	हरेकृष्ण जौहर	८४
१८९९-०४	मायाविलास अथवा सत्यजित प्रकाश	मदनमोहन पाठक	८७
१९००	कामिनी	बालमुकुन्द वर्मा	८७-८८
	भयानक भ्रम	हरेकृष्ण जौहर	८४
१९०१	नारी पिशाच	हरेकृष्ण जौहर	८५
	मयंक मोहिनी या माया महल	हरेकृष्ण जौहर	८५
	राजेन्द्र मोहिनी	बालमुकुन्द वर्मा	८८
१९०१-०२	कमल कुमारी या तिलिस्म नीलम	हरेकृष्ण जौहर	८५
१९०१-०२	जादूगर	हरेकृष्ण जौहर	८५-८६
१९०२	निराला नकावपोश	हरेकृष्ण जौहर	८६
	राजकुमारी	किशोरीलाल गोस्वामी	८८
	आनन्द सुन्दरी	मदन मोहन पाठक	८८
१९०३	भयानक खून	हरेकृष्ण जौहर	८६
१९०४	चन्द्रभागा	विनायक लाल दादू	८८-८९
	कटे मूड़ की दो दो बातें वा तिलस्मी सीसमहल	किशोरीलाल गोवास्मी	८९
१९०५	रमा या पिशाचपुरी	रूप नारायण पाण्डेय	८९
१९०६	धूर्त ऐयारा	कुँवर लक्ष्मीनारायण गुप्त	८९
१९०७	वीरेन्द्र कुमार वा चाँदी का तिलिस्म	विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा	९०
	शेर सिंह	,,	९०
	राजेन्द्र कुमार या वसन्त कुमारी	ठाकुर जंग बहादुर सिंह	९०
१९०७-३५	भूतनाथ	देवकी नन्दन खत्री दुर्गा प्रसाद खत्री	८२-८४
१९०८	महेन्द्र कुमार वा मदन मंजरी	शंकरदयाल श्रीवास्तव	९१
	पुतली महल या गुलाव कुँवरी	रामलाल वर्मा	९१
१९१०	दो नकावपोश	वृन्दावन विहारी सिंह	९१
१९११	प्रेमा का खून	ब्रह्मदत्त शर्मा	९२
	शशिबाला वा भयंकर मठ	चन्द्रशेखर पाठक	९२
	मदन मोहिनी	गोविन्द राव तैलंग	९२
१९१२-१४	मधुपलतिका वा इश्क की आग	जगन्नाथ मिश्र	९२

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१९१२	सूर्यकुमार सम्भव	रूपकिशोर जैन	९२
	मोती महल या लक्ष्मी देवी	निहालचन्द्र वर्मा	८६
	जादू का महल या रूपवती	,,	८७
१९१३	सोमलता	प्रभु सरस्वती प्रिय	९३
	सूरजमुखी	ज्योतिषी हरदेव प्रसाद मुदरिस	९३
१९१४	हवाई महल	चतुर्भुज औदिच्य	९४
	हेमलता	चन्द्रशेखर पाठक	९४
१९१५	स्वर्णकान्ता	नन्दलाल शर्मा	९४
१९१६	तिलिस्माती सुन्दरी	श्रीधर पाठक	९५
१९१८	सूर्यकान्ता	— —	९५
	शैतान या पत्थर की खोह	जगन्नाथ प्रसाद अग्निहोत्री	९५
	तिलिस्मी बुर्ज	गुलाब दास	९५
	सुन्दरी	बाल मुकुन्द वर्मा	९५
	चन्द्रप्रभा	रामनारायण दीक्षित	९५

अपराधप्रधान तथा जासूसी कथापुस्तकें

१८९३	ठग लीला	गोपाल प्रसाद	१२१
१८९५	संदूक में लाश	— —	१२१
	वीरेन्द्र वीर अथवा कटोरा भर खून	देवकीनन्दन खत्री	११५
१८९७	होनहार	उत्तम सिंह वर्मा	१२१
१८९९	नौलखाहार	देवकीनन्दन खत्री	११५
१९००	अजीब लाश	गोपालराम गहमरी	१०१
	जासूस	,,	१०१
	जोड़ा जासूस	,,	१०१
	खूनी डाकू	बालमुकुन्द वर्मा	१२१
	वीर सिंह दारोगा	रुद्रदत्त शर्मा	१२१
	बेकसूर की फांसी	गोपालराम गहमरी	१०१
	सिरकटी लाश	,,	१०१
	डबल जासूस	,,	१०१
	डबल चोर	,,	१०१
	खूनी कौन है	,,	१०१
	गाड़ी में खून	,,	१०१

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१९००	बेगुनाह का खून	,,	१०१
१९०१	लड़की की चोरी	,,	१०२
	फिरोजा बीबी	,,	१०२
	वाह रे जासूस	,,	१०२
	जमना का खून	,,	१०२
	काशी की गोलकधंधारी	,,	१०२
	जासूस की भूल	,,	१०२
	भयंकर चोरी	,,	१०२
	थाना की चोरी	,,	१०२
	छाती का छुरा	हरेकृष्ण जौहर	११५
	जवाहरात की पेटी	,,	११६
१९०२	सन्दूक का मुरदा	गोपालराम गहमरी	१०१
	निराला नकाबपोश	हरेकृष्ण जौहर	११६
	अन्धे की आँख	गोपालराम गहमरी	१०३
	जाल काका	,,	१०३
	जाल राजा	,,	१०३
	जासूस की चोरी	,,	१०३
	हरिदास की गिरफ्तारी	,,	१०३
	इन्द्रजालिक जासूस	,,	१०३
	मालगोदाम में चोरी	,,	१०३
	जाली बीबी और डाकू साहब	,,	१०३
	गश्ती काका	,,	१०३
	डबल बीबी	,,	१०३
	काजर की कोठरी	देवकीनन्दन खत्री	११५
१९०३	भयानक खून	हरेकृष्ण जौहर	११६
	डाकू उपन्यास	,,	११७
	सती सोभना	गोपालराम गहमरी	१०४
	जासूस पर जासूस	,,	१०४
	डाक्टर की कहानी	,,	१०४
	किले में खून	,,	१०४
	डाक पर डाका	,,	१०४
	घर का भेदी	,,	१०४
	दो बहन	,,	१०५
१९०३-०४	चक्करदार चोरी	,,	१०४

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१९०४	लड़का गायब	गोपालराम गहमरी	१०५
	केतकी की शादी	,,	१०५
	रूप संन्यासी	,,	१०५
	देवी सिंह	,,	१०५
	भयानक भूल वा कनक कामिनी	कमला प्रसाद वर्मा	१२२
	विना सवार का घोड़ा	जयराम दास	११७
	चंपा	,,	११७
१९०५	मेरी और मेरीना	गोपालराम गहमरी	१०५
	लटकती लाश	,,	१०५
	सुमित्रा देवी	,,	१०५
	कोचवान का खून	,,	१०५
	हम हवालात में	,,	१०५
	खूनी गायब	,,	१०५
	जासूस आखेट	हरि नारायण टंडन	१२२
१९०६	जिन्दे की लाश	किशोरीलाल गोस्वामी	१२२
	खूनी गिरफ्तार	गोपालराम गहमरी	१०६
१९०७	अद्भुत रहस्य वा विचित्र वारांगना	माधव केसीट	१२२
	दो खून	जयराम दास	११८
	चन्द्रशाला वा युवती चोरी	,,	११८
	लँगड़ा खूनी	,,	११७
	साहब जासूस	गोपालराम गहमरी	१०६
	विकट खूनी	,,	१०६
	वजीरन बीबी	,,	१०६
	जय पराजय	,,	१०६
	कटा सिर	,,	१०६
	ठगों का ठाट	,,	१०६
१९०७-०८	प्रतिज्ञा पालन	,,	१०६
१९०८	लाश किसकी है	,,	१०७
	कोकिला वा पाप का भीषण प्रतिफल	ईश्वरी प्रसाद शर्मा	१२३
	भयानक भेदिया वा विषम रहस्य	जयराम दास	११८
	कनकलता	,,	११९
	रौशनआरा वा चाँदनी और अँधेरा	,,	११८
१९०९	मरियम	गोपालराम गहमरी	[illegible]
	विफल प्रयास	,,	

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१९०९	लीलाधर का खून	गोपालराम गहमरी	१०७
	गुप्त फोटू	,,	१०७
	हीरों का कंठा	,,	१०७
	चोरी है कि दगावाजी	गौरचरण गोस्वामी	१२३
	विचित्र जाल	,,	१२३
	विचित्र खून	ठाकुर जंग वहादुर सिंह	११९
१९१०	अमर सिंह या भूत से टक्कर	एक हिन्दी सेवी	१२३
	चोर चौकड़ी पर	— —	१२३
	देवी जालिया	श्रीकृष्ण हसरत	१२३
	केंचुए के विल में साँप	गोपालराम गहमरी	१०७
	त्रिवेणी	,,	१०७
	विन्दा	,,	१०७
	खूनी का भेद	,,	१०७
	शेर सिंह विलक्षण जासूस वा सात खून	ठाकुर जंग वहादुर सिंह	११९
१९११	नौलखा हार	किशोरीलाल गोस्वामी	१२४
	अमीरअली ठग या ठग वृत्तान्त	चन्द्रशेखर पाठक	१२४
	चाचा का खून व एक नहीं तीन खून	ठाकुर जंगवहादुर सिंह	११९
	भयानक घटनावली	,,	११९
	राजेन्द्र कुमार अर्थात् चन्द्र कुमारी	,,	११९
	संसार चक्र या चन्द्र कुमारी	,,	११९
	वूढ़ा जासूस या सन्दूक में लाश	,,	११९
	हत्या	गोपाल राम गहमरी	१०८
	कृष्णा	,,	१०८
	योग महिमा	,,	१०८
	भोजपुर की ठगी	,,	१०८
	भूतों का डेरा वा विचित्र खून	जयराम दास	११७
१९११-१२	हत्या रहस्य	गोपाल राम गहमरी	१०९
१९१२	वलिहारी वुद्धि	,,	१०९
	नेमा	,,	१०९
१९१२-१३	अर्थ का अनर्थ	,,	१०९
१९१३	खूनी की रिहाई	,,	१०९
	भयंकर जाल या जोड़ा जासूस	,,	११०
	ताया का खून	गौरचरण गोस्वामी	१२४
	गुप्त भेद	गोपालराम गहमरी	११०

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१९१३	घटना घटाटोप-तस्वीरदार जासूस	गोपालराम गहमरी	११०
१९१३-१४	वे बादल का वज्र	,,	११०
१९१४	विलायती डाकू	चतुर्भुज औदीच्य	१२४
	जर्मन जासूस	सोमेश्वर दत्त शुक्ल	१२५
	जासूसी कहानियाँ	रामलाल वर्मा	१२५
	केशिनी बाई	गोपाल राम गहमरी	११०
	मत्तो और पत्तो	,,	१११
	जासूस का झोंपड़ा	,,	१११
	जासूस की ऐयारी	,,	१११
	अटल प्रतिज्ञा	,,	१११
	जासूस की बुद्धि	,,	१११
	प्रेमभूल	,,	१११
	रामरखा का खून	दुर्गा प्रसाद खत्री	१२०
	श्यामा	,,	१२०
१९१५	तीन जासूस	गोपाल राम गहमरी	१११
	मुहम्मद सरवर की जासूसी	,,	११२
	घड़े में थाली	,,	११२
	लँगड़े की सैर	,,	११२
१९१५-१६	चक्करदार खून	,,	११२
	जासूस की डाली	,,	११३
१९१६	ठन ठन जासूस	,,	११३
	अद्भुत भूत	दुर्गा प्रसाद खत्री	१२०
१९१७	कुन्दन लाल	गोपाल राम गहमरी	११३
	परिचय	,,	११३
	साहब की गिरफ्तारी	,,	११४
	गुप्त भेद	,,	११४
१९१८	खूनी औरत का सात खून	किशोरीलाल गोस्वामी	१२५
	मायावती	— —	१२५
	अलकापुरी	— —	१२५
	निरपराध	अनन्त प्रसाद विद्यार्थी	१२५

मनः कल्पनात्मक कथाएँ

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ०सं०
१८८५	श्यामा स्वप्न	ठाकुर जगन्मोहन सिंह	२१८
[१८८८ प्र० का०]			
१८८८	आश्चर्यवृत्तान्त	अम्बिकादत्त व्यास	२१८
[१८९३ प्र० का०]			
१९०९	देवी या दानवी	जयराम दास	२१८
१९१३	आदर्श नगरी	वेणी प्रसाद	२१९
	चन्द्रलोक की यात्रा	जयराम दास	२१९

सामान्य रूमानी कथाएँ

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ०सं०
१८०३	रानी केतकी कहानी	इंशा अल्ला खाँ	३
१८९०	चतुर सखी उपन्यास	काशीनाथ शर्मा	१५१
	कामलता	क्षेत्रपाल शर्मा	१५१
१८९१	कमलिनी	जैनेन्द्र किशोर	१५१
१८९३	सुन्दर सरोजिनी	देवी प्रसाद शर्मा (उपाध्याय)	१५२
	नरेन्द्र मोहिनी	देवकीनन्दन खत्री	१५२
	विचित्र चरित्र	कुंज बिहारी लाल	१५३
	भोजदीन महताव	उदयराम कवि	१५३
१८९४	कुसुम कुमारी	देवकीनन्दन खत्री	१५३
[१८९४-९७]			
१८९६	श्याम कुमारी	रूपनारायण दर	१५३
१८९९	शीरी फरहाद	हरेकृष्ण जौहर	१५३
१९००	राजकुमार	सरस्वती गुप्ता	१५४
१९०३	कामोद कला	हरिहर प्रसाद जिंजल	१५४
	स्वतंत्र वाला	पुत्तनलाल सारस्वत	१५४
१९०४	मदन किशोरी	रामेश्वर प्रसाद खत्री	१५४
	चम्पक वरणी	अनिरुद्ध चौवे	१५५
	चम्पा	जयराम दास	१५५
१९०५	अनूठी वेगम	देवकीनन्दन खत्री	१५५
१९०६	कुमारी चन्द्रकिरण	चतुर्भुज सहाय	१५५
	सच्चा मित्र या जिन्दे की लाश या रहस्यमय गुप्तचर	अम्बिका प्र० गुप्त	१५६
१९०७	रंग में भंग	जयराम दास गुप्त	१५६

अन्य पुस्तकें

(इस शीर्षक के अन्तर्गत उन पुस्तकों की सूची प्रस्तुत की जा रही है, जिनके बारे में यह निश्चय के साथ नहीं कहा जा सकता कि वे मौलिक हैं या अनुवाद।)

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृ० सं०
१८८२	हास विलास	रामचरित्र सिंह	५८
१८८५	सालिगा सदैवृज	भेदीराम	६१
१८८६	मनफूल की कहानी	— —	६२
	छबीली भटियारी	— —	६३
१८८७	रामकथा (खंड १)	— —	६३-६४
	बाल बोध रामायण	— —	६४
	रणधीर सुन्दरी उपन्यास	हरदेव प्रसाद	६५
१८८८	हिकायते अकबर	— —	६६
	द्रौपदी सत्यभामा	लक्ष्मीनाथ भट्ट	६७
१९००	किस्सा गुल व सनोवर	रामभजन मिश्र	५२
१९०७	शुकसारिका उर्फ तोते मैने का किस्सा	युगलानन्द जी	५२

अनूदित उपन्यास

(बंगला से)

प्रकाशन-काल	पुस्तक का नाम	मूललेखक/पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१८८२	आख्यान मंजरी	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	४५
१८७४	सीता वनवास	,, *(सीतार वनवास)*	४७
१८७७	तपस्विनी राबिया	— —	५२
१८८०	एक जोड़ा अँगूठी	— —	५४
	कुलीन कन्या अथवा चन्द्रप्रभा और पूर्ण प्रकाश	— —	५४
१८८१	मधुमती	— —	५८
१८८३	राधारानी	— —	५९
१८८४	मरता क्या न करता अर्थात् रामेश्वर का अदृष्ट	— —	६०
१८८७	सौन्दर्यमयी	— —	६३
१८८८	लावण्यमयी	— —	६७
१८८९	प्रेममयी	— —	६८
१८९१	देवी	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय *(देवी चौधरानी)*	२५१
१८९१	विरजा	— —	२७४
	स्वर्णबाई	— —	२७५

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१८९१	सुखसर्वरी	— —	२७५
१८९३	स्वर्णलता	— —	२७५
१८९४	नये बाबू	— —	२७६
	इन्दिरा	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	२५३
	युगलांगुलीय	,,	२५४
१८९८	कृष्णकान्त का दानपत्र	,,	२५५
	दलित कुसुम	— —	२७८
	सास पतोहू	— —	२७९
१९००	शिक्षिता हिन्दूबाला	*(मडेल भगिनी)*	२६२
१९०१	भूतों का मकान	वैष्णव चरण बसाक	२८०
	कपाल कुण्डला	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	२५६
१९०२	गंजा गोपाल	*(नेड़ा हरिदास)*	२६३
१९०३	स्वर्णबाई	नवकुमार दत्त	२८२
१९०४	गिरिजा	— —	२८३
	बड़ा भाई	योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय	२६४
	कनेवी	,,	२६५
	कुली कहानी	,, *(चाकुलीर आत्मकाहिनी)*	२६५
	वन कन्या	,, *(जंगली मेये)*	२६५
	चन्द्रभूषण चरितामृत	*(चिनीवास चरितामृत)*	२६३
१९०५	वीर बालिका	बामनाचार्य गिरि	२८३
	राजलक्ष्मी	— —	२६३
१९०६	याकूती तख्ती वा यमज सहोदरा	दीनेन्द्र कुमार राय *(हमीदा)*	२८४
	राजभक्ति	दामोदर मुखोपाध्याय	२६८
	आनन्दमठ	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	२५७
१९०७	परिणाम	तारकनाथ विश्वास	२८५
	फूलकुमारी	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय *(देवी चौधरानी)*	२५२
१९०९	प्राणघातक माला	स्वर्णकुमारी देवी *(फूलेरमाला)*	८६
	कर्मवीर	यदुनाथ भट्टाचार्य	२८७
	जाली कुंजलाल	— —	२८७
	हेमलता	— —	२८८
१९१०	मुकुट	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२६६

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९१०	राजर्षि	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२६६
१९११	विमला	चन्द्रशेखर चटर्जी	२८९
	चाची	वंकू विहारी धर (*काकी माँ*)	२९०
	संसार	रमेशचन्द्र दत्त	२७१
	मृण्मयी	दामोदर मुखोपाध्याय	२६९
१९१२	लक्ष्मी वहू	मेजर वामनदास वसु (*लक्खी बऊ*)	२९०
	स्वर्णलता	तारकनाथ गंगोपाध्याय	२९१
	चोर सुलतान	— —	२९१
	रमाबाई	— —	२९२
	दो वहन	दामोदर मुखोपाध्याय (*दुई भगिनी*)	२६९
	नवाव नंदिनी वा आयेशा	,,	२७०
१९१३	प्रतिमा	अविनाशचन्द्र दास (*कुमारी*)	२९३
	स्वर्ण कमल या भयानक भंडाफोड़	दामोदर मुखोपाध्याय (*सोनार कमल*)	२७०
	आश्चर्य घटना	रवीन्द्रनाथ ठाकुर (*नौका डूवी*)	२६७
	आँख की किरकिरी	,, (*चोखेरैवाली*)	२६७
	देवी चौधरानी	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	२५२
१९१४	सती लक्ष्मी	अर्जुनचन्द्र वसु	२९५
	मानवती	योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय	२६५
१९१५	शान्ति कुटीर	अविनाशचन्द्र दास (*पलाशवन*)	२९७
	मंझली वहू	— —	२९८
	अन्नपूर्णा का मन्दिर	निरुपमा देवी (*अन्नपूर्णार मन्दिर*)	२९८
	सावित्री	शारद प्र० चक्रवर्ती	२९८
	मन्दार कुसुम	प्रफुल्ल नलिनी मित्र	२९८
	प्रतिमा (द्वि० सं०)	सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य (*छिन्नमस्ता*)	२७२
	वहू ठाकुरानीर हाट	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२६८
	विषवृक्ष	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	२५८
	मृणालिनी	,,	२५९
	रजनी	,,	२६०
१९१६	जापान रहस्य	— —	२९९
	शारदा	शिवनाथ शास्त्री (*मेजबऊ*)	३००
	छोटी वहू	फणीन्द्रनाथ पाल (*छोटी वऊ*)	३०१
	अनाथ वालक	चन्द्रशेखर कर	३०२

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक/पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९१६	शरद कुमारी	दामोदर मुखोपाध्याय (*मा ओ मेये*)	२७०
१९१७	शान्ति निकेतन	दुर्गादास लाहिरी (*सुख ओ शान्ति*)	३०२
	सूरजदेई	चन्द्रशेखर कर (*सुरबाला*)	३०३
	दामिनी	संजीव चन्द्र चटर्जी	३०३
	उमा	पाँचकौड़ी वंद्योपाध्याय	३०४
	गृहलक्ष्मी	(*रायपरिवार*)	३०५
	मिलन मन्दिर	सुरेन्द्रमोहन भट्टाचार्य	२७३
	प्रेत तर्पण	,,	२७४
	वंकिम ग्रन्थमाला (तीन खंड में)	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	२६१
	शशि महल	— —	२६४
	काला चाँद (द्वि० सं०)	— —	२६४
	समाज	रमेशचन्द्र दत्त	२७१
१९२५	सुधा	,,	२७२

अँगरेजी

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक/पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१८६०	राबिन्सन क्रूसो	डैनियल डीफो	२९४
१८७७	सेंडफोर्ड और मरटन	— —	५२
१८८३	सतीत्व रक्षिणी	— —	५९
	टेल्स फ्राम शेक्सपीयर (खंड १)	शेक्सपीयर	५९
१८८४	टेल्स फ्राम शेक्सपीयर (खंड २)	,,	६०
१८८८	राजा भोज का स्वप्न	(*राजाज ड्रीम*)	६६
	वेनिस का वाँका	(*मरचेंट आफ वेनिस*)	६६
	धोखे की टट्टी	— —	६७
१८८९	ठग वृत्तान्त माला	मेडोज टेलर	६८
१८९०	पुलिस वृतान्त माला	— —	२७४
१८९४	उथेलो	— —	२७६
१८९७	वीरेन्द्र	— —	२७८
१८९९	मनहरण	— —	२७९
१९०२	श्री या अवश्य माननीय	आर० एच० हेगर्ड (शी)	२८१
१९०३	सत्यवती या हीरे की अंगूठी	शेक्सपीयर (*सिंबेलीन*)	२८२
	विचित्र स्त्री चरित्र	— —	२८१
१९०६	फूल में काँटा	— —	२८४
१९०९	कौशल किशोर	(*अर्नेष्ट माल ट्रेवर्स*)	२८५
१९०९-१६	अर्थ में अनर्थ वा प्रवाल दीप	— —	२८८

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक/पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९१०	निर्मोल की कथा	मिस मार्सटन (*निर्मोल्स च्वायस*)	२८९
	चुड़ैल	पालडी काक (*दि वेम्पायर*)	२८९
१९१२	रोमियो जुलिएट	शेक्सपीयर के नाटक के आधार पर	२९२
	वीर हरि सिंह	मेकाले (*ले आव होरेशरा*)	२९२
१९१३	पारस्य उपन्यास	(*पर्शियन नाईट्स*)	२९२
१९१४	शेक्सपीयर ग्रन्थावली	शेक्सपीयर के नाटकों के आधार पर	२९५
	सुरेन्द्र सुन्दरी	शेक्सपीयर (*रोमियो जुलिएट*)	२९५
१९१४-१५	अभागे का भाग्य	विक्टर ह्यूगो (*ला मिजरेबुल*)	२९६
१९१६	राजपथ का पथिक	राल्ड वाल्डो ट्राइन (*वेफेअरर ऑन दि ओपेन रोड*)	२९९
	कालग्रास या अद्भुत हरकारा	(*दि ग्रोन टुथ*)	३००
१९१६	टाम काका की कुटिया	हेरिस्ट वीयर स्टो (*अंकिल टाम्स केबिन*)	३०१
	तिलिस्माती मुँदरी या कश्मीर के राजा की लड़की	— —	३०१
१९१७	इलियड काव्यसार	होमर (*इलियड*) केआधार पर	३०५
१९२४	प्राणनाथ	रमेशचन्द्र दत्त	२७२

मराठी

१९०१	प्रणयिमाधव	वासुदेव मोरेश्वर पोद्दार	२८०
१९०३	रमा और माधव	काशी रघुनाथ मित्र (*रमा आणि माधव*)	२७९
१९०९	दिया तले अन्धेरा	— —	२८७
१९१०	असभ्य रमणी	— —	२८८
१९१४	लवंगलता	(*प्रवासिनी*)	२९५
	सरस्वती	— —	२९६
१९१६	दिशाभूल	— —	२९९

गुजराती

१८८७	संसार सुख	— —	६५
१८८०-८१	अपूर्व कारावास	— —	५५
१८९१	खुशबू कुमारी	जादे श्री उनन्त जी	३१९

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९००	कपटी मित्र	(*जीवेजान वो दोस्त*)	२८०
१९०७	प्रायश्चित तथा अपूर्व सम्मिसन	श्रीनारायण हेमचन्द्रजी	२९२
१९१४	वनवासिनी	वाड़ी लाल मोती लाल साह	२९४
१९१७	मोहिनी	रूपासुन्दरी	३०४
	उड़िया		
१९११	पार्वती और यशोदा	(*मालती ओ भाग्यवती*)	२९०
१९१५	शैलवाला अथवा आदर्श बहू	— —	२९७
	लच्छमा	फकीर मोहन सेनापति	३२८
	राजस्थानी		
१८२४	गोरा वादल की वात	— —	१७
	उर्दू		
१९०९	गुलवदन या रजिया वेगम (भाग २)	— —	३२५
१८१०	लतायफे हिन्दी	— —	१६
१८३८	किस्सा हातिमताई	— —	१८
१८४७	चहार दरवेश	वागोवहार	२०
१८६५	फुलमणि और करुणा का वृत्तान्त	— —	२७
	सिकन्दरशाह पातशाह के शाहजादे रमनशाह का किस्सा	— —	२७
१८६८	गुलवकावली	— —	२८
१८६९	किस्सा अफीमची	— —	२९
१८७३	मोहिनी चरित्र	*फसाने अजायब*	४५
१८७६	मनसुखी और सुन्दर सिंह का वृत्तान्त	*रसूमे हिन्द*	५०
१८७७	खुशहाल चन्द और हीरा	*रूस्तमे हिन्द*	५०
	चतुर सभा	*नक्ले मजलिस*	५१
१८७७	गुलसनोवर	— —	५१
१८७९	त्रिया चरित्र	— —	५२
	अमीर हमजा की दास्तान	— —	५३
१८८५	किस्सा शाहरूम	— —	६१
१८८६	सभा शीरी फरहाद	— —	६२
१८८९	छल दर्पण उपन्यास	तफरीहुल उकला	६९
१८९४	अमला वृत्तान्तमाला अथवा समरैदियानत	काजीअजीजुद्दीन (*समरे दियानत*)	२७७

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक/पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९१०	निर्मोल की कथा	मिस मार्सटन (*निर्मोल्स च्वायस*)	२८९
	चुड़ैल	पालडी काक (*दि वेम्पायर*)	२८९
१९१२	रोमियो जुलिएट	शेक्सपीयर के नाटक के आधार पर	२९२
	वीर हरि सिंह	मेकाले (*के आव होरेशस*)	२९२
१९१३	पारस्य उपन्यास	(*पर्शियन नाईट्स*)	२९२
१९१४	शेक्सपीयर ग्रन्थावली	शेक्सपीयर के नाटकों के आधार पर	२९५
	सुरेन्द्र सुन्दरी	शेक्सपीयर (*रोमियो जुलिएट*)	२९५
१९१४-१५	अभागे का भाग्य	विक्टर ह्यूगो (*ला मिजरेबुल*)	२९६
१९१६	राजपथ का पथिक	राल्ड वाल्डो ट्राइन (*वेफेअरर ऑन दि ओपेन रोड*)	२९९
	कालग्रास या अद्भुत हरकारा	(*दि ग्रीन डुथ*)	३००
१९१६	टाम काका की कुटिया	हेरिस्ट वीयर स्टो (*अंकिल टाम्स केबिन*)	३०१
	तिलिस्माती मुँदरी या कश्मीर के राजा की लड़की	— —	३०१
१९१७	इलियड काव्यसार	होमर (*इलियड*) के आधार पर	३०५
१९२४	प्राणनाथ	रमेशचन्द्र दत्त	२७२

मराठी

१९०१	प्रणयिमाधव	वासुदेव मोरेश्वर पोद्दार	२८०
१९०३	रमा और माधव	काशी रघुनाथ मित्र (*रमा आणि माधव*)	२७९
१९०९	दिया तले अन्धेरा	— —	२८७
१९१०	असभ्य रमणी	— —	२८८
१९१४	लवंगलता	(*प्रवासिनी*)	२९५
	सरस्वती	— —	२९६
१९१६	दिशाभूल	— —	२९९

गुजराती

१८८७	संसार सुख	— —	६५
१८८०-८१	अपूर्व कारावास	— —	५४
१८९१	खुशबू कुमारी	जादे श्री उनन्त जी	३१९

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम		पृ० सं०
१९००	कपटी मित्र	(जीवेजान वो दोस्त)		२८०
१९०७	प्रायश्चित्त तथा अपूर्व सम्मिलन	श्रीनारायण हेमचन्द्रजी		२९२
१९१४	वनवासिनी	वाड़ी लाल मोती लाल शाह		२९४
१९१७	मोहिनी	रूपासुन्दरी		३०४

उड़िया

१९११	पार्वती और यशोदा	(मालती ओ भाग्यवती)		२९०
१९१५	शैलबाला अथवा आदर्श बहू	—	—	२९७
	लच्छमा	फकीर मोहन सेनापति		३२८

राजस्थानी

१८२४	गोरा बादल की बात	—	—	१७

उर्दू

१९०९	गुलबदन या रजिया बेगम (भाग २)	—	—	३२५
१८१०	लतायफे हिन्दी	—	—	१६
१८३८	किस्सा हातिमताई	—	—	१८
१८४७	चहार दरवेश	बागोबहार		२०
१८६५	फुलमणि और करुणा का वृत्तान्त	—	—	२७
	सिकन्दरशाह पातशाह के शाहजादे रमनशाह का किस्सा	—	—	२७
१८६८	गुलबकावली	—	—	२८
१८६९	किस्सा अफीमची	—	—	२९
१८७३	मोहिनी चरित्र	फसाने अजायब		४५
१८७६	मनसुखी और सुन्दर सिंह का वृत्तान्त	रसूमे हिन्द		५०
१८७७	खुशहाल चन्द और हीरा	रुस्तमे हिन्द		५०
	चतुर सभा	नक्ले मजलिस		५१
१८७७	गुलसनोवर	—	—	५१
१८७९	त्रिया चरित्र	—	—	५२
	अमीर हमजा की दास्तान	—	—	५३
१८८५	किस्सा शाहरूम	—	—	६१
१८८६	सभा शीरीं फरहाद	—	—	६२
१८८९	छल दर्पण उपन्यास	तफरीहुल उकला		६९
१८९४	अमला वृत्तान्तमाला अथवा समरैदियानत	काजीअजीजुद्दीन (समरे दियानत)		२७७

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१८९५	संसार दर्पण	मौलवी अब्बुल हमीम	२७७
	सहस्त्र रजनी चरित्र (पाँ० सं०)	*अलिफ लैला*	५०
१८९७	तोता कहानी	—	२५
१९०३	बदरून्निसा की मुसीबत	मौलवी अब्बुल हमीम	२८२
१९१४	हृदय कंटक	लालचन्द्र लाल (*दिल का काँटा*)	२९६

संस्कृत

१८०१	सिंहासन बत्तीसी	(*द्वात्रिंशतिका*)	५
	बैताल पचीसी	(*बेताल पंचविंशति*)	८
	माधोनल	—	११
१८०२	राजनीति	हितोपदेश	११
१८०३	प्रेमसागर	भागवत पुराण, दशम स्कन्ध	१३
	नासिकेतोपाख्यान	—	१५
१८१७	माधव विलास	क्रियायोग सार	१७
१८२२	नीतिकथा	—	१७
१८४७	सुखसागर	श्रीमद्‌भागवत	२०
१८५९	शुकबहत्तरी भाषा	—	२४
१८६०	नल प्रसंग	—	२६
१८६५	शनैश्चरजी की कथा	—	२७
१८६७	कृष्ण जन्मखण्ड	ब्रह्मवैवर्त्त पुराण	२७
१८६९	रामाश्वमेघ	पद्‌मपुराण	२६
१८७०	भोजप्रबन्ध सार	भोज प्रबन्ध	४३
१८७३	कादम्बरी	बाणभट्ट कृत कादम्बरी	४७
१८७५	मालती माधव की कथा	भवभूति कृत 'मालती माधव'	४६
१८८५	वाराह पुराण भाषा	—	६०
१८८६	भाषा रामायण	—	६१
	हर्ष चरित्र	बाणभट्ट	६२
	शिव पुराण भाषा	—	६३
१८८७	बृहन्नारदीय पुराण भाषा	—	६४
१८८८	महाभारत	—	६५
१८८९	महाभारत भाषा	—	६७
	महारामायाण	—	६८
	श्री मद्‌वाराह पुराण	—	६८

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१८८५	महाश्वेता	वाणभट्ट की कादम्बरी के आधार पर	२७८
१८९७	कथा सरित्सागर	सोमदेव	२८३
१९०६	दशकुमार चरित	दंडी	२८४
१९१७	शकुन्तला की कथा	अभिज्ञान शाकुंतल (कालिदास कृत)	३०५
	दशकुमार चरित	दंडी	३०३

अनूदित ऐतिहासिक उपन्यास

बँगला

१८८२-८४	दुर्गेशनन्दिनी	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	५८, ३०६
१८८६	वंगविजेता	रमेशचन्द्र दत्त	५३, ३१०
१८९०	सच्चा सपना	भूदेव मुखोपाध्याय	३१८
१८९१	दीपनिर्माण	स्वर्ण कुमारी देवी	३१९
१८९४	राज सिंह	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	३०७
१८९५	चित्तौर चातकिनी	— —	३२०
	इला	— —	३२०
१८९६	श्यामकुमारी	रमेशचन्द्र दत्त	३११
१९०१	माधवी कंकण	,,	३११
	शिवाजी विजय अथवा जीवन प्रभात	,,	३१२
१९०३	जयन्ती	— —	३२१
	पद्मा सुन्दरी	— —	३२२
	नूरजहाँ अथवा ज्योतिर्मयी	राय हारानचन्द्र	३२२
१९०४	पन्ना राज्य का इतिहास	पन्नार महाराज	३२२
१९०५	वीरव्रत पालन	हारानचन्द्र रक्षित (*मंत्रसाधन*)	३२३
१९०५	प्रभात सुन्दरी	श्रीशचन्द्र चट्टोपाध्याय (*काला पहाड़*)	३२३
	अवध की वेगम	चंडी शरण सेन	३१३
१९०६	अमृत पुलिन	ननीलाल वन्द्योपाध्याय	३१५
१९०७	सुर सुन्दरी	ज्योतिरिन्द्रनाथ मजूमदार (सुन्दरी)	३२४
	अमर सिंह	नगेन्द्रनाथ गुप्त	३२४
	चन्द्रशेखर	वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	३०६
१९१०	काला पहाड़	रसिकचन्द्र वोस	३२५

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तकका नाम	पृ० सं०
१९१३	लावण्य और अंनग	योगीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय (*अनाथिनी*)	३२७
	जीवन संध्या	रमेशचन्द्र दत्त	३१२
१९१४	राज राजेश्वरी	— —	३२७
१९१५	संयोगिता	सतीशचन्द्र	३२८
१९१५	मान कुमारी	चंडीशरण सेन (*रामेर कि रङ्ग अयोध्या*)	३१४
१९१५-१६	रंगमहल रहस्य	हरिसाधन मुखोपाध्याय	३१६
१९१६	सिराजुद्दौला	वंगेरशेष नवाव	३२८
१९१६	सलीमा वेगम	हरिसाधन मुखोपाध्याय	३१८
१९१७	नवावी महल	स्नेहलता प्रेमलता (*कुत्फुन्निसा*)	३२९
	नूरजहाँ	वृजेन्द्रनाथ	३२९
	मनीपुर के सेनापति टिकेन्द्रजित सिंह	प्रियनाथ मुखोपाध्याय	३२९
	शैलवाला	ननीलाल वंद्योपाध्याय	३१६
१९१९	कोहेनूर	— —	३३०
	विलास कुमारी वा कोहेनूर	ननीलाल वंद्योपाध्याय	३१५

अँगरेज़ी

१८९१	अकवर	पानलिम्वर्ग (*ब्राउमर*)	३१८
१८९७	वीरेन्द्र	— —	३२१
१८९८	मरहठा सरदार और रौशन आरा	— —	३२१
१९०६-०७	लखनऊ की नवावी		३२३
१९०७	मैसूर का नवाव हैदर अली	लिविन वी० वार्वारिंग	३२४
१९०८	चाँद बीवी वा वीर रमणी	मीडोज टेलर (*नोबुल क्वीन*)	३२५
१९१२	रानी मेरी	सर वाल्टर (*दि एब्बर*)	३२६
१९१५	वादशाह का वुलावा	मिस मारस्टर (*दि कॉल ऑफ दि किंग*)	३२७

मराठी

१९१२	सेलिमा वेगम	यम्वक वावू राव सर्धरे	३२६
	शिवाजी का आत्मदमन वा रौशनआरा (*सुभे कल्याण*)		३२६

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९१२	सेवाजी वा रोशनआरा	—	३२६
१९१३	सम्राट अशोक	—	३२७
१९१६	छत्रसाल	बालचंद नानचंद शाह (छत्रसाल)	३२९

गुजराती

१८९२	मुद्राकुलीन	जहाँगीर शाहजी आरदेशरजी तालेयार खाँ	३१९

अनूदित अपराधप्रधान कथापुस्तकें
(बँगला)

१८९४	भानमती	— —	२३१
	नेमा	— —	२३२
१८९६	सौभद्रा	— —	२३२
	प्रमीला	— —	२४३
१८९८-९९	हीरे का मोल	नगेन्द्रनाथ गुप्त	२३२
	बड़ा भाई	— —	२३३
१८९९	संसार चक्र	प्रफुल्लचन्द्र मुखर्जी	२४३
१९००	कुलटा वा स्त्री बुद्धि प्रलयंकरी	पाँचकौड़ी दे	२४३
	जादूगरनी मनोरमा या पाँच खून	पाँचकौड़ी दे (*मनोरमा*)	२३३
१९०१-०२	मायावी	पाँचकौड़ी दे	२३४
१९०३	खूनी की खोज	,,	२३५
	यारों की लीला	,,	२३५
१९०४	परिमल	,,	२४४
	जीवन्मृत रहस्य	,,	२३६
	नीलवसना सुन्दरी	,,	२३६
१९०५	दानवी लीला	(*दस्यु दुहिता*)	२४६
	कपट रूपवाला	पाँचकौड़ी दे (*छद्मवेशी*)	२३७
	गोविन्दराम	,,	२३७
१९०६-०७	जासूस चक्कर में	— —	२३८
१९०८	लाख रुपया	पाँचकौड़ी दे (*लक्ष टाका*)	२३८
१९०९	गुप्त रहस्य	प्रिय मुखोपाध्याय (*गुप्त कथा व्यक्त*)	२४६
	आँखों देखी घटना	पाँचकौड़ी दे (*काल सपा*)	२३९
	शठ शिरोमणि	,,	२३९

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९०९	चिट्ठी की चोरी	— —	२३९
	ताँतिया टोपी की बहादुरी	— --	२३९
	रमणी रहस्य	पाँच कौड़ी दे	२४०
	सर्व्वनाशिनी	,,	२४०
१९०९-१०	लाइन पर लाश	,,	२४०
१९१०	भयंकर भूल	,, (*भीषण भूल*)	२४०
	मृत्यु विभीषिका	,,	२४०
	सूम का मंत्र	,, (*कृपणेरमंत्र*)	२४०
	देवटीका समाज	— —	२४०
	खून का चक्र	पाँचकौड़ी दे (*खूनेर दाये*)	२४०
	विकट वदलौवल	पाँचकौड़ी दे (*विषम वैसूचन*)	२४१
	मायाविनी	पाँचकौड़ी दे	२४२
१९१२	जासूसी चक्कर	पाँचकौड़ी दे (*रहस्य विप्लव*)	२४४
	खूनी मामला	,,	२४६
	विद्यासागर विद्रोह	,,	२४२
	सहधर्मिणी	,,	२४२
	पिशाच पिता	— —	२४२
	मरे हुए की मौत	— —	२४२
१९१३	पान का नहला	शरदचन्द्र सरकार	२४२
१९१४	विचित्र जाल	— —	२४६
१९१५	भीषण डकैती	पाँचकौड़ी दे	२४४
	घटना चक्र	,,	२४५
	कालरात्रि	उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय (*कालरात्रि*)	२४७
१९१७	भीषण भूल	पाँचकौड़ी दे	२४५
	शोणित चक्र	,,	२४५
	पेरिस रहस्य	— —	२४७

(अँगरेजी)

१८९९	गुप्तचर	— —	२३३
	प्रवीन पथिक अथवा अलादीन और लैला	रेनाल्ड (*कायला ऑर स्टार आफ मिंगरेलिया*)	२२४
१९०१-०४	नर पिशाच	रेनाल्ड (*फाउस्ट*)	२२४
१९०२-३	सच्चा बहादुर	,, (*राई हाउस प्लाट*)	२२५
	सत्यवीर	रेनाल्ड (*राई हाउस प्लाट*)	२२५

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९०३	अब्दुल्ला का खून	(द फेट ऑफ अब्दुल्ला)	२४५
१९०४	रंगमहल	रेनाल्ड (लव्ज आव दि हरम)	२२५
१९०५-०७	जोजेफ विलमट	रेनाल्ड (जोजेफ विलमट)	२२६
१९०६	अद्भुत खून	— —	२३७
	लन्दन रहस्य	रेनाल्ड (मिस्ट्रीज आफ दि कोर्ट आफ लन्दन)	२२६
१९०८	दुर्जन अथवा एक दुराचारी की दुर्दशा	रेनाल्ड	२२८
	अनंगरंग	रेनाल्ड	२२५
	विलायती जासूस	— —	२३८
१९०९	खूनी का भेद	— —	२३९
	बैरी का चक्र	— —	२३९
१९१०	सफेद ठग	— —	२४०
१९१०-११	अद्भुत जासूस	— —	२४१
१९१४	रणवीर	रेनाल्ड (उमर पाशा)	२२८
	साहसी डाकू	(विक्टर पिन)	२४७
१९१५	किले की रानी	रेनाल्ड (दि यंग फिशर मैन)	२२९
१९१७	पीपल की मूर्ति	रेनाल्ड (ब्रोन्ज स्टैचू)	२२९
	गुप्त रहस्य	रेनाल्ड (वर्जीना)	२३०
	राबर्ट मैकेयर	रेनाल्ड	२३०
	शैतान	रेनाल्ड	२३०
	शूर शिरोमणि	— —	२४७

वैज्ञानिक रोमांस
(अँगरेजी)

१९००	भयानक भ्रमण	विलियम मरे ग्रेडेन (ओवर अफ्रिका इन ए बेलून)	२४८
१९०३	हवाई नाव	(दि एलेक्ट्रिक एयर केनो)	२४८
१९०८	चन्द्रलोक की यात्रा	— —	२४८
१९१२	रसातल यात्रा	जूल वर्न	२४९
	सागर साम्राज्य	,, (ट्वेन्टी थाउजेंड लीग्स अंडर दी सी)	२४९

अन्य उपन्यास

(इस शीर्षक के अन्तर्गत उन अनूदित पुस्तकों की तालिका प्रस्तुत की गयी है जिनके मूल का पता नहीं चलता।)

१८९३	चतुर चंचला	— —	२७६
१८९७	चन्द्रकला	कृपीश्वर नाथ भट्ट	२७८

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूल लेखक	पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१८९७	मधुमालती	—	—	२७८
	कुलटा	—	—	२७८
१९००	भाग्य का फेर	—	—	२८०
१९०४	माया	—	—	२८३
१९०५	सुकुमाल	—	—	२२२
१९०६	संसार वा महास्वप्न और परदेशी	—	—	२२२
१९०७	सती उपन्यास	—	—	२८५
१९०९	वसंतलता	—	—	२८६
१९१२	भैरवी अथात् वीर कुमारी	—	—	२९१
१९१३	भूलभुलैया या धोखे की टट्टी	—	—	२९३
१९१६	चन्द्रप्रभा चरित	महाकवि वरनंदि		३०१
	शुक्लवसना सुन्दरी	—	—	३०२
१९१७	माया	—	—	२२२

धार्मिक-पौराणिक कथाएँ

१८७१	आदि ब्रह्मपुराण भाषा	—	—	३३१
	पद्म पुराण भाषा	—	—	३३१
१८९२	हसन डकैत का वृत्तान्त	—	—	३३१
१८९३	पदम् पुराण भाषा (*चतुर्थ पाताल खण्ड*)	—	—	३३१
१८९३	महारामायण (*विशूचिका आख्यान*)	—	—	३३१
१८९५	सीता चरित्र	मुंशी दयाराम		३४१
	मर्द औरत का किस्सा	जैनमती		३४१
१८९८	नल दयमन्ती	—	—	३३२
१८९९	देवीभागवत	—	—	३३२
१८९९	पद्मपुराण (चतुर्थ ब्रह्मखण्ड और षष्ठ उत्तर खण्ड)		—	३३१
	सेतु माहात्म्य खण्ड (पंचम संस्करण)	—	—	३३२
	सावित्री सत्यवान	—	—	३३३
१९००	महाभारतोधृत नल दयमन्ती चरित्र	राम नारायण दूबे		३३३
१९०१	सावित्री चरित्र	सत्यानन्द अग्निहोत्री		३३३
१९०२	मदालसाख्यान भाषा	कन्हैया लाल		३३३
	श्री हनुमान जी	सुखराम दास चौहान		३३३
१९०३	पौराणिक कथा त्रिशंकु	लक्ष्मीशंकर मिश्र		३३३
	महिषासुर	रायबहादुर लक्ष्मीशंकर मिश्र		३३३

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
१९०५	श्री महाराज भगवान रामचन्द्रजी	एनी विसेंट	३३३
१९०६	भविष्य पुराण	—	३३२
	वाल भारत (पहला भाग)	सूर्यकुमार वर्मा	३३३
	नल दमयन्ती कथा	जाहर सिंह वर्मा	३३४
१९०७	सीताजी जीवनचरित्र	हनुमन्त सिंह	३३४
१९०८	राजर्षि भीष्मपितामह का जीवनचरित्र	हनुमन्त सिंह रघुवंशी	३३४
	वाल भारत (दूसरा भाग)	सूर्यकुमार वर्मा	३३४
	वाल रामायण	रामजीलाल शर्मा	३३४
	रामकहानी वालकाण्ड	सुधाकर द्विवेदी	३३४
	मदालसा	चन्द्रशेखर पाठक	३३४
	महाभारत (वन पर्व)	—	३३२
१९०९	श्री कृष्णचरित्र	ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा	३३४
	कैकेयीजी की जीवनी	रामचन्द्र वर्मा	३३४
	सीताजी की जीवनी	द्वारका प्रसाद शर्मा	३३४
१९१०	सरोज रामायण	चतुर्भुज मिश्र	३३४
	रामायणीय संग्रह	—	३३४
	वीर वालक अभिमन्यु का जीवन-चरित्र	हनुवन्त सिंह रघुवंशी वा पन्नालाल शर्मा	३३५
	सीता चरित्र	रामजी लाल शर्मा	३३५
	प्रभु चरित्र	शिवरत्न शुक्ल	३३५
१९११	भरत मिलाप	नाथ चन्द्र	३३५
	महर्षि नारद का जीवन चरित्र	—	३३५
	प्रभु चरित्र	नीलकंठ द्वारका प्रसाद	३३५
	वाल्मीकि विजय	हरप्रसाद शास्त्री, डॉ० माधव प्रसाद पाठक	३३५
१९१२	अंगराज कर्ण	इन्दु शर्मा भारद्वाज	३३७
	महात्मा विदुरजी का जीवन चरित्र	—	३३५
	महात्यागी वीर भ्राता लक्ष्मण	लोचन प्रसाद शर्मा	३३५
	राजा युधिष्ठर का जीवन चरित्र	चिम्मनलाल वैश्य	३३५
	सावित्री सत्यवान	द्वारका प्रसाद शर्मा	३३५
	पाप परिणाम	नरोत्तम व्यास	३३६
	रामायण रहस्य या रामराज्य	चन्द्रशेखर पाठक	३३६
	पौराणिक उपाख्यान	द्वारका प्रसाद शर्मा	३३६
	राजा कर्ण की कथा	विश्राम लक्ष्मण कोरे गाँव	३३६

प्र०-वर्ष	पुस्तक का नाम	मूललेखक।पुस्तक का नाम	पृ० सं०
	द्रौपदी स्वयंवर	—	३३६
	श्री हनुमान चरित्र	सुखचन्द पद्मशाह खंडवा	३३६
	आदर्श पुरुष श्री रामचन्द्र	हरज्ञान सिंह	३३६
	सीताराम	द्वारका प्रसाद शर्मा	३३६
१९१३	सीता देवी	जलधर सेन	३३६
	भीष्म पितामह	हनुमन्त सिंह	३३७
	महात्मा भरतजी	—	३३७
	रणवीर अभिमन्यु	—	३३७
	श्री मान् हनुमानजी का जीवन-चरित्र	सुखराम दास चौहान	३३७
	भीष्म पितामह	व्रजमोहन झा	३३७
	भीष्म पितामह	द्वारका प्रसाद शर्मा	३३७
	रामाश्वमेघ	सुन्दरलाल द्विवेदी	३३६
१९१४	सती लक्ष्मी	अर्जुन प्रसाद वसु	३३६
	दमयन्ती चरित्र	रामनरेश त्रिपाठी	३३७
	श्री रामकथा	द्वारिका प्रसाद शर्मा	३३८
	वचन प्रतिपालक महाराजा दशरथ का जीवन चरित	चिम्मनलाल वैश्य	३३८
	धनुर्धर अर्जुन	व्रजमोहन झा	३३८
	जानकी वा आदर्श सुन्दरी	हरिहर प्रसाद गुप्त	३३८
	नरशार्दूल अभिमन्यु	व्रजमोहन झा	३३८
	कृष्ण कहानी	विखाहूराम शिरोमणि दास	३३८
१९१५	पाप परिणाम	—	३३८
	प्रह्लाद	नरोत्तम व्यास	३३८
१९१६	दाशरथी श्रीराम चन्द्र	द्वारका प्र० शर्मा	३३९
	सचित्र हिन्दी महाभारत	महावीर प्रसाद	३३९
	सती सुचरिता	जगदीश दत्त	३३९
	धर्मोपाध्यान	सुन्दरलाल शर्मा	३३९
	धुव्रचरित्र	रामकृष्ण उपासनी	३३९
	पतिव्रतासुनीति	कात्यायनी दत्त त्रिवेदी	३३९
	राजर्षि धुव्र	रामकृष्ण उपासनी	३३९
१९१७	परशुराम	नरोत्तम व्यास	३३९
	दशावतार कथा	अक्षयवट मिश्र (विप्रचन्द्र)	३३९
	महाभारतीय सुनीति कथा	रामदहिन मिश्र काव्यतीर्थ	३४०
१९१८	पतिव्रता गान्धारी	कात्यायनी दत्त त्रिवेदी	३४०
	दमयन्ती	वद्रीप्रसाद भार्गव	३४०
	सचित्र भीम चरित्र	गणेशदत शर्मा गौड़ (इन्द्र)	३४०
१९१९	सावित्री	--	३४०
	पार्वती	हरिराम भार्गव	३४०
	सीता वनवास व लवकुश	कनक प्रसाद चौधरी	३४१
	तपस्वी भरतजी का जीवन चरित्र	चिम्मनलाल वैश्य	३४१

लेखकानुक्रमणिका

(मौलिक उपन्यास)

अनूदित उपन्यास

धार्मिक कथाएँ

ग्रन्थानुक्रमणिका

[illegible]

[illegible]

संदर्भ ग्रन्थ और पत्र-पत्रिकाएँ

—o—

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखन में विशेष सहायता विभिन्न पुस्तकालयों में संगृहीत पुस्तकों से ली गया है। मैंने विशेष रूप से आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता, चैतन्य पुस्तकालय, पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकलय, पटना, पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय, पटना, पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना, माहेश्वर पुस्तकालय, पटना आदि पुस्तकालयों की सहायता ली है। इस तालिका में केवल उन्हीं पुस्तकों और पत्रपत्रिकाओं का उल्लेख किया जा रहा है, जिनका निर्देश पादटिप्पणियों में अक्सर किया गया है।

प्रथम परिच्छेद

१. **कृष्णाचार्य**, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुंड मार्ग, वाराणसी-५, १९६६

२. **ब्लूमहार्ट जे० एफ०**, कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, खंड २, भाग ३, हिन्दी, पंजाबी, पश्तो एंड सिंधी बुक्स, लन्दन, १९०२।

३. **रामचन्द्र शुक्ल**, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्र०—नागरी प्रचारिणी सभा, २००९ वि०।

४. **लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय**, फोर्ट विलियम कॉलिज, प्र० युनिवर्सिटी इलाहाबाद, २००४ वि०।

५. **व्रजरत्नदास**, इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी, प्र० कमलमणि ग्रन्थमाला कार्यालय, काशी, प्रथम संस्करण, १९८५ वि०।

६. **व्रजरत्न दास**, हिन्दी उपन्यास साहित्य, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, २०१३ वि०।

७. **श्यामसुन्दर दास**, चन्द्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान, प्र० नागरी प्रचारिणी सभा, १९०१।

८. **हजारी प्रसाद द्विवेदी**, हिन्दी साहित्य, अत्तरचन्द कपूर एंड सन्स, दिल्ली १९५२।

९. **हरिमोहन श्रीवास्तव**, मध्यकालीन हिन्दी गद्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९५९।

१०. **श्याम सुन्दर दास** (सं०), रानी केतकी की कहानी (ले० सैयद इंशा अल्ला खाँ), प्र० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, १९२५ ई०।

११. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १०, सं० ५, नवम्बर १९१२।
१२. हिन्दी अनुशीलन, वर्ष, १४, अंक २, अप्रैल-जून १९६१ ई०।
१३. मर्यादा, भाग ३, सं० १, नवम्बर १९११।

द्वितीय परिच्छेद

१. ब्लूमहार्ट जे० एफ०, कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, खंड २, भाग ३, हिन्दी, पंजाबी, पश्तो एंड सिंधी बुक्स, लन्दन १९०२।

२. देवराज उपाध्याय, हिन्दी साहित्य कोश, (सं०) डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मंडल, बनारस, प्र० सं० २०१५ वि०।

३. राम विलास शर्मा, भारतेंदु युग, प्रथम संस्करण।

४. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिन्दी साहित्य का विकास, संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण, १९५४ ई०, प्र० हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद युनिवर्सिटी।

५. ब्रजरत्नदास, हिन्दी उपन्यास साहित्य, प्र० हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, प्र० सं०, २०१३ वि०।

६. माता प्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, हिन्दुस्तान एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, १९४५।

७. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास, सरस्वती मन्दिर, वाराणसी, नूतन प्रथम संस्करण, २०१६।

पत्र पत्रिकाएँ

८. आलोचना—१३ (उपन्यास विशेषांक), अक्टूबर १९५४।

९. सारसुधानिधि, ११ अक्टूबर १८८०, २४ जनवरी १८८१, ७ फरवरी, १८८१, २२ सेप्टेम्बर, सन् १८९७ ई०।

१०. सरस्वती, भाग १, सं ५, १९००।

११. हिन्दी प्रदीप, जिल्द ३—सं ३ से ६, जिल्द ४—सं० २, ८,१०,१२, जिल्द ५, सं० ७ से १२, जिल्द ६, सं० ४।

तृतीय परिच्छेद

१. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, चिठ्ठी पत्री—१, विविध प्रसंग ३, हंस प्रकाशन इलाहाबाद।

२. ब्लूमहार्ट, जे० एफ०, कैटेलग ऑफ दि लाइब्रेरी ऑफ दि इंडिया ऑफिस, खंड २, भाग ३, हिन्दी, पंजाबी, पश्तो एंड सिंधी बुक्स, लन्दन १९०२,

३. माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, हिन्दुस्तानी ऐकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, १९४५

४. रामदीन गुप्त, प्रेमचन्द और गाँधीवाद, हिन्दी साहित्य संसार, १९६१।

५. रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, सं० २००९।

६. रामरतन भटनागर, प्रेमचन्द एक अध्ययन।

७. रुद्र काशिकेय, देवकीनन्दन खत्री, व्यक्तित्व और कृतित्व (श्री देवकीनन्दन खत्री की शतवार्षिकी जन्मतिथि के अवसर पर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित और प्रचारित, ४ जुलाई १९६१ ई०।

८. राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द एक अध्ययन, मध्यप्रदेशीय प्रकाशक समिति, भोपाल १९२८।

९. ब्रजरत्नदास, हिन्दी उपन्यास साहित्य, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, सं० २०१३ वि०।

१०. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास, सरस्वती मन्दिर, वाराणसी, नूतन संस्करण।

११. हंसराज रहबर, प्रेमचन्द—जीवन और कृतित्व, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, १९५२।

१२. हरिहर नाथ, ब्रजनन्दन सहाय ब्रजवल्लभ—जीवनी तथा कृतियाँ [पटना विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग, एम० ए० की परीक्षा के लिए प्रस्तुत शोधप्रबन्ध (अप्रकाशित)]

१३. कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदिमुद्रित ग्रन्थ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण १९६६

पत्र पत्रिकाएँ

१३. आत्मविद्या, फरवरी १९१३

१४. इंदु, कला ६, खंड १

१५. जासूस—आ० भा० पु० काशी और चैं० पु० पटना में उपलब्ध सभी प्रतियाँ।

१६. प्रताप, जून १९१६

१७. प्रतिभा, फरवरी १९१८

१८. प्रभा, अप्रैल १९२५

१९. भारतेन्दु, पुस्तक ५—अंक १,२,३,४,५,६

२०. मनोरंजन, मई जून १९१४, जेष्ठ १९७२

२१. मर्यादा, भाग १—सं० ३,४,५,६, भाग २—सं० १,२,३, भाग ७—अंक १, भाग २, सं० ६, भाग १३—सं० २, भाग १८—सं० ३

२२. माधुरी, वर्ष २, सं० ४

२३. दारोगा दफ्तर, वर्ष ७, अंक ३

२४. सरस्वती—जून १९००, जुलाई १९०२, अक्टूबर १९०२, अक्टूबर १९०३, नवम्बर १९०४, जनवरी १९०५, मई १९०५, फरवरी १९०६, जून १९०६, अगस्त १९०६, मार्च १९०७, अगस्त १९०७, फरवरी १९०८, अगस्त १९०८, अक्टूबर

१९०८, मई १९०९, अक्टूबर १९०९, दिसम्बर १९०९, सितम्बर १९११, जुलाई-दिसम्बर १९१२, अगस्त १९१३, जुलाई १९१४, अगस्त १९१५, नवम्बर १९१५, जनवरी १९१६, फरवरी १९१६, जून १९१६, नवम्बर-दिसम्बर १९१६, अप्रैल १९१७, अगस्त १९१७, अक्टूबर १९१७, मार्च १९२५, नवम्बर १९२६।

२५. हिन्दी प्रदीप—जिल्द १३, सं० ११—१२, जिल्द १४, अंक १—१२, जिल्द १५, सं० ३—४, ६ — १०, जिल्द १७, सं० ५—१०, जिल्द १८, सं० १-२, ५—१२, जिल्द १९, सं० १-४, ५-८, जिल्द २३, सं० ११-१२, जिल्द २४, सं० ५-६-७, जिल्द २५, सं० ५—८, जिल्द २८, सं० ७, जिल्द २९, संख्या ७।